॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके

ॐ ह्रीं महासरस्वत्यै नमः

ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे।।

राजा सूर्य

मन्त्री मंगल

श्री आर्यभट्ट - पञ्चांगम् नई दिल्ली

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पिते

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट - पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०६१ शकः- १९२६ सन्-२००४-२००५ भारतीय गणराज्य संवत् ५५-५६

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
सम्पादक: धर्मपाल अग्रवाल, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

मूल्य: 30.00 रु

धर्मसन प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-११०००६

वर्ष ११

दिल्ली-110006, दूरभाष : 23264986, 23285234 कार्यालय : 25193194
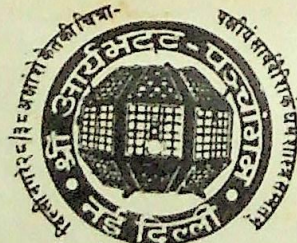
श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०६१ शकः- १९२६ सन्-२००४-२००५ भारतीय गणराज्य संवत् ५६-५७

— प्रधान सम्पादक —
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

— सम्पादकः —
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू
मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

प्रकाशक : **धर्मसन प्रकाशन**
नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 23285234, 23264986

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
❑ प्रमुख पृष्ठ	१
❑ विषय सूची	२
❑ पंचांग देखने की विधि	३
❑ वक्तव्य	४
❑ एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त	५
❑ महर्षि आर्यभट्ट	६
❑ व्रतोत्सव, त्यौहार, छुट्टियां, मेले, जयन्तियां, अमावस्या, संक्रांति आदि	७-११
❑ दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र	१२-१५
❑ ग्रहण विवरण संवत् २०६१	१६
❑ व्यापारिक भविष्य व्यापारिक अनुसंधान पर (पोरसा वाले)	१७-१८
❑ विवाह मुहूर्त, द्विरागमन, उपनयन, गृहारम्भ मुहूर्त्तादि	१९-२३
❑ त्रिबलशुद्धि कोष्ठक	२४-२५
❑ सवार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्य योग	२६
❑ द्वादश राशिफल सं. २०६१	२७
❑ ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार	२८-२९
❑ ५.३० बजे से अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने की तालिका	३०
❑ दैनिक ग्रह स्पष्ट	३१-४३
❑ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर फल श्रवण	४४
❑ अथ सम्वत्सर मध्ये वर्ष राजादि फलम्	४५
❑ शनि की साढ़ेसाती ढैय्या विचार	४६-४७
❑ चैत्रादि १२ मास २६ पक्ष वि.सं. २०६१	४८-७६
❑ केवल स्टैण्डर्ड समय से सूक्ष्म पंचांग के २६ पक्ष	७७-८०
❑ भौगोलिक परिचय	८१-८२
❑ दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि, नवांश शोधन, स्मार्त वैष्णव विचार	८३
❑ अंग्रेजी मास के अनुसार भा.स्टै.टा. में दैनिक लग्न सारिणी	८४-८९
❑ सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार	९०-९१
❑ इष्टकाल बनाने की विधि	९२-९३
❑ चर सारिणी	९३-९४
❑ रवि क्रान्ति सारिणी	९५
❑ वेलान्तर कोष्टक (मिनट में)	९५
❑ पंचांग परिवर्तन पद्धति, चरान्तर सारिणी	९६
❑ प्रमुख नगरों की अक्षांशादि सारिणी	९७-९९
❑ अक्षांशादि सारिणी विदेश	१००
❑ चालन कोष्ठक	१०१
❑ सूर्य बिम्ब, द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त अक्षांश सारिणी	१०२-५
❑ सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना	१०६
❑ सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी	१०७
❑ लग्न सारिणी अक्षांश	१०८-१३
❑ इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारिणी	११३
❑ अकहड़ा चक्र: भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्	११४
❑ अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र	११५
❑ षट्वर्ग फलादेश	११५
❑ षट् वर्ग सारिणी चक्र	११६
❑ जन्म समय, प्रसूति लग्न विचार, गण्डमूल विचार	११८-२१
❑ बाल कष्टावली विवेचन, नक्षत्र-कष्टावली विवेचन, अन्य शुभाशुभ योग	१२२-२४
❑ बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ	१२५-२६
❑ बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग	१२७-२८
❑ आयुर्दाय विचार बोधक चक्र	१२८
❑ द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव	१२९
❑ नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी	१३०
❑ वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग	१३१
❑ ग्रह शील चक्र	१३२
❑ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष	१३३-३५
❑ विंशोत्तरी दशा गणित	१३६
❑ चन्द्र स्पष्ट	१३७
❑ विंशोत्तरीय दशा गणित	१३८-४०
❑ विंशोत्तरीय दशा पद्धति	१४१-४२
❑ ग्रह दशा फल	१४३
❑ ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि	१४४
❑ ग्रहों का वर्ष कुण्डली लग्न व गोचर फल	१४५
❑ फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण चक्र	१४६
❑ नवग्रहों की शान्ति हेतु मंत्र	१४७
❑ अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय चक्रम्	१४८
❑ जन्म राशि से ग्रहों के गोचर फल, घात चक्र	१४९
❑ मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार	१५०-५६
❑ वर वधू मेलापक कोष्टक	१५७
❑ वर वधू मेलापक सारिणी	१५८-५९
❑ ताराबल बोधिनी तालिका	१६०
❑ चौघड़िया, मुहूर्त्त, दिशाशूल, राहु चक्रम	१६१
❑ यात्रा में त्याज्य तिथियां	१६२
❑ गृहारम्भ-द्वारशाखा-गृहप्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः	१६३-६४
❑ विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः	१६५
❑ सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहुर्त्त	१६६
❑ गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)	१६७
❑ हस्त रेखाएं बोलती हैं	१६८-६९
❑ मुखाकृति से भविष्य ज्ञान	१७०
❑ स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा विचार	१७१
❑ प्रश्न विचार	१७२-७३
❑ मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार	१७३
❑ श्री भैरव भविष्य ज्ञान प्रश्नावली	१७४-१७७
❑ स्वप्न विचार	१७८
❑ छिपकली पतन फल, अंग स्फुरण विचार, योगासनों का अभ्यास, वर्षा ज्ञान, चक्रासन की विधि	१७९
❑ अशौच व्यवस्था	१८०
❑ संवत् विक्रम २०६१ का सामूहिक व्यापार भविष्य	१८१-१८४
❑ पाठकों की समस्याएं और ज्योतिषीय समाधान	१८५
❑ भारतीय मानसून एवं आकाशीय लक्षण २००४	१८६
❑ मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव	१८७
❑ कुछ अकाट्य सत्य योग	१८८
❑ राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र एवं आर्थिक हालात	१८९
❑ व्यापारीक वस्तुओं की तेजी-मंदी समीक्षा २००४ ई.	१९०-१९१
❑ शेयर बाजार की चाल क्या है? संभावनाएं भविष्य में।	१९२-१९४
❑ व्यापार भविष्य सन् २००४ ई.	१९५-१९८
❑ चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव	१९९
❑ सन् २००४ ई. में ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव	२००
❑ श्री पुरुषोत्तम (अधिक मास) के लक्षण और कर्त्तव्य	२०१
❑ काल सर्प योग की शान्ती का उपाय	२०१
❑ व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी का ब्यौरा	२०२-२०४
❑ चन्द्र श्रृंगोन्नत: व्यापार वाणी सं. २०६१ वि.	२०५
❑ ग्रहों का अधिकार-प्रभाव	२०६
❑ सुख की खान वास्तु द्वारा निर्माण	२०७
❑ अविवाहित वर/कन्या के लिए उत्तम है वायव्य कोण	२०८
❑ द्वादशी राशिफल का शेष	२०९-२१३
❑ व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर	२१४
❑ दैवज्ञ की दृष्टि का शेष	२१५
❑ विज्ञापन: राशि-रत्न-उपरत्न	२१६
❑ विज्ञापन: हरदेव द्विवेदी	२१७-२१८
❑ विज्ञापन : लियो पाम	२१९
❑ अथ व्यापार-विमर्श सम्वत् २०६१ वि.	२२०-२२४

चालन कोष्ठक १०१ | ग्रन्थ में त्याज्य तिथियां १६३ | अथ व्यापार विमर्श सम्वत् २०६१ वि. २२०-२२४

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अत: प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रात: ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई है। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रात: ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आपा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंसित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **"शतक मार्त्तण्ड"** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्य भटीय" कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्ही महापुरुष के नाम पर **"आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र"** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

"शतक मार्त्तण्ड" जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने "श्री आर्यभट्ट पंचांग" ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

—सम्पादक

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्ञनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्ञन इसके मुद्रण औ साज सज्ञा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्ञन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'बृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०६१ विक्रमी, शाके १९२६, सन् २००४-२००५ ई.

व्रतोत्सव	तिथि
नववर्षारंभ, नवरात्रा प्रा., गुड़ी पड़वा	२१ मार्च
आर्य समाज स्थापना दि., गौतम जयंती	२१ "
सिन्धारा, चेटीचंड, झुलेलाल जयंती	२२ "
मत्स्य जयंती, मनोरथ तृतीया	२३ "
सौभाग्य तृतीया, गणगौरी पूजा	२३ "
विनायक चौथ व्रत	२४ "
हय व्रत पंचमी, स्कन्द षष्ठी व्रत	२६ "
जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ	२८ "
दुर्गा ८, अन्नपूर्णा पूजा	२९ "
श्री राम नवमी, नवरात्रा समाप्त	३० "
कामदा ११ व्रत, विश्व स्वास्थ्य दि.	१ अप्रैल
हरिदमनोत्सव	२ "
शनि प्रदोष व्रत, महावीर जयंती जैन	३ "
दमनक चतुर्दशी, पाम सण्डे	४ "
सत्यव्रत, चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	५ "
आर्यंबिल ओली समा.,बैशाख स्नान प्रा.	५ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	८ "
गुड फ्राईडे	९ "
शीतला पूजन, ईस्टर सण्डे	११ "
चेहल्लम शहीद करबला मु.	११ "
कालाष्टमी	१२ "
बैशाखी (पंजाब)	१३ "
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ "
वरूथिनी एकादशी व्रत	१५ "
श्री बल्लभाचार्य जयंती	१५ "
प्रदोष व्रत	१६ "
मास शिवरात्रि व्रत	१७ "
देवपितृकार्य अमावस्या, सोमवती ३०	१९ "
श्री शुकदेव ज., शहादते इमाम हसन	१९ "
देव दामोदर पुण्य तिथि	२० "
शिवाजी जयंती	२१ "
परशुराम ज, अक्षय तृतीया, मातंगी ज.	२२ "
विनायक चतुर्थी व्रत	२३ "
आद्य शंकराचार्य जयंती	२४ "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	२५ "
गंगा सप्तमी पूजन	२७ "
दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती	२८ "
जानकी नवमी	२९ "

व्रतोत्सव	तिथि
आखिरी चाहर शम्बा मु.	३० अप्रैल
मोहिनी एका. व्रत, विश्व मजदूर दिवस	१ मई
रुकमणी द्वादशी, प्रदोष व्रत	२ "
श्री नृसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती	३ "
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	३ "
वैशाखी पूर्णिमा, सत्यव्रत, कूर्म जयंती	४ "
वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा	४ "
चन्द्रग्रहण, अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति	४ "
श्री नारद जयंती	६ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, मां आनन्दमयी ज.	७ "
रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ "
कालाष्टमी, दादुदयाल पुण्यं	११ "
अपरा एका. व्रत	१४ "
मधुसूदन द्वादशी	१५ "
प्रदोष व्रत	१६ "
मास शिवरात्रि व्रत, वट सावित्री व्रत	१७ "
पितृकार्यामावस्या	१८ "
देवकार्या अमावस्या, भावुका अमा.	१९ "
वट सावित्री व्रत पूर्ति	१९ "
करवीर व्रत	२० "
रंभा व्रत	२१ "
महाराणा प्रताप जंयती	२२ "
विनायक चतुर्थी व्रत	२३ "
श्रुति पंचमी (जैन)	२४ "
विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य छठ	२५ "
दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती	२७ "
जवाहरलाल नेहरू पुण्य दिवस	२७ "
श्री माहेश्वरी नवमी	२८ "
गंगा दशहरा, मेला हरिद्वार	२९ "
निर्जला एका. व्रत, गायत्री जयंती	३० "
चम्पक द्वादशी, फातिहा यजदहुम मु.	३१ "
भौम प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारंभ गुज.	१ जून
सत्यव्रत, ज्येष्ठी पूर्णिमा	३ "
कबीर जयंती, कोजागरी व्रत	३ "
वट सावित्री व्रत पूर्ति (गुजरात)	३ "
वट सावित्री व्रत पारणा	४ "
गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती	४ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, विश्व पर्यावरण दि.	५ "
उर्स निजामुद्दीन ओलिया प्रा.	५ "

व्रतोत्सव	तिथि
नाग पंचमी (बंगाल)	६ जून
कालाष्टमी	१० "
योगिनी एकादशी व्रत	१३ "
भौम प्रदोष व्रत	१५ "
मास शिवरात्रि व्रत	१६ "
देवपितृकार्याऽमावस्या	१७ "
श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	१९ "
विनायक चतुर्थी व्रत	२१ "
स्कन्द पंचमी, कुमार षष्ठी व्रत	२३ "
विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा	२४ "
दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)	२६ "
भड्डली ९, मेला शरीफ भवानी (क.)	२७ "
आशा दशमी, उल्टी रथयात्रा (उड़ीसा)	२८ "
देवशयनी एका., चातुर्मास नियमादि प्रा.	२९ "
प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारंभ	३० "
चौमासी चौदश (जैन), वायु परीक्षा	१ जुलाई
गुरु पूर्णिमा, सत्यव्रत	२ "
आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूजा	२ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत	५ "
नाग पंचमी (मरुस्थले)	६ "
शीतला सप्तमी (उड़ीसा)	८ "
कालाष्टमी	९ "
गुरु हरिकिशन जयंती	१० "
कामदा एका. व्रत स्मा., सोमवार व्रत	१२ "
कामदा एकादशी व्रत वैष्णव	१३ "
प्रदोष व्रत	१४ "
मास शिवरात्रि व्रत	१५ "
देवपितृकार्या अमा., हरियाली अमा.	१७ "
विनायक चतुर्थी व्रत	२१ "
दुर्गाष्टमी	२५ "
कमला एकादशी व्रत	२८ "
प्रदोष व्रत	२९
सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	३१ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	३ अग.
कालाष्टमी	८ "
भारतीय क्रान्ति दिवस	९ "
कमला एकादशी व्रत	११ "
प्रदोष व्रत	१३ "

व्रतोत्सव	तिथि
मास शिवरात्रि व्रत	१४ अग.
देवपितृकार्या अमावस्या	१५ "
५८वाँ भारतीय स्वतंत्रता दिवस	१५ "
सोमवती देवकार्याऽअमा.	१६ "
नक्त व्रत प्रारम्भ, सोमेश्वर पूजा	१७ "
सिंधारा	१८ "
हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज	१९ "
विनायक ४, वरद चतुर्थी व्रत	१९ "
नाग पंचमी देशाचारे	२१ "
कल्की जयंती, तुलसी जयंती	२२ "
दुर्गाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत	२३ "
उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती (अजमेर)	२३ "
पवित्रा एकादशी व्रत (पुत्रदा)	२६ "
प्रदोष व्रत	२७ "
सत्यव्रत, हयग्रीव जयंती	२९ "
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन	३० "
हजरत अली जन्म दिवस	३० "
श्रावण सोमवार व्रत, अमरनाथ दर्शन	३० "
सातूड़ी तीज, कज्जली तृतीया व्रत	१ सितं.
कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला चौथ	२ "
रक्षा पंचमी (उड़ीसा)	३ "
चन्द्र षष्ठी व्रत	४ "
डॉ. राधाकृष्णन जन्म दि., शिक्षक दि.	५ "
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त	६ "
सन्त ज्ञानेश्वर जयंती	६ "
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्ण., कालाष्टमी	७ "
गोगा नवमी, नन्दोत्सव	८ "
जया एकादशी व्रत	१० "
वत्स द्वादशी, बच्छ बारस	११ "
प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत	१२ "
पर्यूषण पर्व प्रा. जैन, शब्बे मिराज	१२ "
अघोरा चतुर्दशी व्रत	१३ "
देवपितृकार्या अमा., कुशोत्पाटनी अमा.	१४ "
पिठौरी ३०, नक्तव्रत पूर्ति	१४ "
मेला सुथरेशाह दिल्ली, भा. हिन्दी दि.	१४ "
भारतीय इन्जीनियर्स डे	१५ "
नक्त व्रत उद्यापन	१६ "
हरितालिका ३ व्रत, वाराह जयंती	१७ "
श्री गणेश जन्म चतुर्थी	१८ "

विनायक ४ व्रत, पत्थर चौथ	१८ सितं.
ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी	१९ "
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	२० "
मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान सप्तमी	२१ "
महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	२१ "
दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वा अष्टमी	२२ "
दधीची ज.,चन्द नवमी, अदुःख नवमी	२२ "
दशावतार दशमी	२३ "
पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत	२४ "
श्री वामन जयंती, भुवनेश्वरी जयंती	२५ "
प्रदोष व्रत, गोत्रि रात्रि व्रतारंभ	२६ "
अनन्त चतुर्दशी व्रत	२७ "
सत्यव्रत, गोत्रि रात्रि व्रत पूर्ति	२८ "
भाद्रपदी पूर्णिमा, महालयारंभ	२८ "
पितृ पक्ष प्रा.	२९ "
शब-ए-बारात मु.	३० "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	१ अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ "
महालक्ष्मी व्रत समाप्त	५ "
कालाष्टमी	६ "
मातृ नवमी, भूदान जयंती	७ "
भारतीय वायु सेना दिवस	८ "
इन्दिरा एकादशी व्रत	१० "
सोम प्रदोष व्रत	११ "
मास शिवरात्रि व्रत	१२ "
देवपितृ कार्या अमा., सर्वपितृ विसर्जन	१३ "
शारदीय नवरात्रा प्रारम्भ	१४ "
अग्रसेन जयंती	१५ "
रमजान रोजा प्रारम्भ (मुस्लिम)	१६ "
विनायक चौथ व्रत	१७ "
उपांग ललिता पंचमी व्रत	१८ "
सरस्वती आवाहन	१९ "
सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा	२० "
श्री सरस्वती बलिदान, दुर्गाष्टमी	२१ "
अन्नपूर्णा परिक्रमा पूर्ति	२१ "
सरस्वती विसर्जन, महानवमी	२२ "
दुर्गा नवमी, नवरात्र पूर्ति	२२ "
विजया दशमी, माधवाचार्य जयंती	२३ "
पापांकुशा एकादशी व्रत	२४ "
सोम प्रदोष व्रत	२५ "
शरद् पूर्णिमा, सत्यव्रत	२७ "

चन्द्रग्रहण, कोजागरी व्रत	२७ अक्टू.
बाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रा.	२८ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, करवा चतुर्थी व्रत	३१ "
सरदार पटेल जयंती, इन्दिरा गांधी पुण्य	३१ "
कालाष्टमी, अहोई अष्टमी	५ नवं.
शहादते हजरत अली (मुस्लिम)	५ "
रमा एकादशी व्रत	८ "
गोवत्स द्वादशी	९ "
प्रदोष व्रत,धन तेरस, धन्वन्तरी जयंती	१० "
शब-ए-कद्र (मुस्लिम)	१० "
मास शिवरात्री व्रत	११ "
नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी	११ "
महालक्ष्मी पूजन, दीपावली	१२ "
देवपितृकार्यऽमा., जमातुल विदा (मु.)	१२ "
महावीर निर्वाण दिवस जैन	१२ "
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट	१३ "
भैया दूज, यम द्वितीया, विश्वकर्मा पूजा	१४ "
पं. नेहरू जयंती, बाल मेला	१४ "
ईदुलफितर ईद (मु.)	१४ "
विनायक चौथ व्रत	१५ "
पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी	१६ "
गुरु गोविन्द सिंह बलिदान दिवस	१६ "
सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट	१७ "
गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी	१९ "
इन्दिरा गांधी गांधी जन्म दिवस	१९ "
कुष्मांड ९, आंवला नवमी, अक्षय ९	२० "
देव प्रबोधिनी एका., तुलसी विवाह	२२ "
भीष्मपंचक प्रा., चातुर्मास व्रत नियम पूर्ति	२२ "
प्रदोष व्रत	२४ "
वैकुण्ठ १४ व्रत, चौमासी चौदश जैन	२५ "
सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, नानक जयंती	२६ "
देव दिवाली, कार्तिक स्ना. समा.	२६ "
भीष्म पंचक पूर्ति, निम्बाकार्चाय जयंती	२६ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	२९ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	३० "
विश्व एड्स डे	१ दिसं.
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो (दिल्ली)	१ "
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दि., विकलांग दि.	३ "
भारतीय नौसेना दिवस	४ "
श्री महाकाल भैरवाष्टमी	५ "
भारतीय झण्डा दिवस	७ "

उत्पत्ति एकादशी व्रत	८ दिसं.
प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य	९ "
मास शिवरात्रि व्रत	१० "
देव पितृकार्याऽमावस्या	११ "
विनायक चौथ व्रत	१५ "
नाग पंचमी (द. भारत)	१६ "
गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस	१६ "
चम्पा षष्ठी व्रत	१७ "
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती	१८ "
दुर्गाष्टमी	१९ "
महानन्दा नवमी	२० "
मोक्षदा एका. व्रत, श्री गीता जयंती	२२ "
प्रदोष व्रत, व्यंजन द्वादशी	२३ "
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३ "
अनंग त्रयोदशी	२४ "
गुरु ग्रन्थ साहिब वार्षिकोत्सव	२४ "
पं. मदनमोहन मालवीय जन्म दिवस	२५ "
क्रिसमस डे, बड़ा दिन	२५ "
सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	२६ "
दत्तात्रेय जयंती, अन्नपूर्णा जयंती	२६ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	३० "

सन् २००५ ई.

ईसाई नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.
कालाष्टमी	४ "
सफला एकादशी व्रत स्मा., अपोफैनी डे	६ "
सफला एकादशी व्रत वैष्णव	७ "
स्वरूप द्वादशी	७ "
शनि प्रदोष व्रत	८ "
मास शिवरात्रि व्रत	९ "
देवपितृकार्यामावस्या	१० "
वकुला व सोमवती अमावस्या	१० "
लोहड़ी उत्सव (पं.), विनायक ४ व्रत	१३ "
मकर संक्रांति, पोंगल पर्व	१४ "
माघ विहू (असम)	१४ "
भारतीय थल सेना दिवस	१५ "
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	१६ "
दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी यात्रा	१७ "
पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी व्रत	२० "
ईद-उल-जुहा (बकरीद) मु.	२१ "
शनि प्रदोष व्रत	२२ "

श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ जन.
सत्यव्रत, पौषी पूर्णिमा, माघ स्नान प्रा.	२५ "
५६वाँ भा. गणतन्त्र दिवस	२६ "
लाला लाजपतराय जयंती	२८ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ	२९ "
महात्मा गांधी पुण्य दिवस	३० "
स्वा. विवेकानन्द व रामानन्दाचार्य ज.	१ फर.
कालाष्टमी	२ "
षट्तिला एकादशी व्रत	५ "
प्रदोष व्रत, वंजुली महाद्वादशी	६ "
मास शिवरात्रि व्रत	७ "
मौनी अमावस्या, देवपितृकार्यऽमा.	८ "
श्री वल्लभाचार्य जयंती (द.भा.)	९ "
गौरी तृतीया, तिल चौथ	११ "
हिजरी सन् १४२६ प्रा.	११ "
विनायक चतुर्थी व्रत	१२ "
बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन	१३ "
वैलेन्टाइन डे	१४ "
आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी	१५ "
दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी	१६ "
जया एकादशी व्रत	१९ "
भीष्म द्वादशी, मुहर्रम ताजिया मु.	२० "
सोम प्रदोष व्रत	२१ "
श्री रामचरण स्नेह जयंती	२२ "
पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत	२३ "
रविदास जयंती	२४ "
माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति	२४ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२७ "
कालाष्टमी, सीताष्टमी	४ मार्च
गुरु रामदास जयंती	५ "
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	५ "
विजया एकादशी व्रत स्मार्त	६ "
विजया एकादशी व्रत वैष्णव	७ "
भौम प्रदोष व्रत, महाशिवरात्रि व्रत	८ "
वैद्यनाथ ज., विश्व महिला दिवस	८ "
शिव खप्पर पूजा	९ "
देवपितृकार्यऽमावस्या	१० "
फुलरिया दोज, रामकृष्ण परमहंस ज.	१२ "
विनायक ४ व्रत	१३ "
याज्ञवल्क्य जयंती	१५ "
दुर्गाष्टमी, होलाष्टक प्रा.	१८ "

श्री दादूदयाल जयंती	१८ मार्च
मेला खाटू श्यामजी प्रा. (राज.)	२० ''
आमलकी एकादशी व्रत	२१ ''
गोविन्द द्वादशी	२२ ''
मेला खाटू श्यामजी पूर्ति (राज.)	२२ ''
प्रदोष व्रत	२३ ''
सत्यव्रत, होलिका दहन	२५ ''
चैतन्य महाप्रभु ज., होलाष्टक पूर्ति	२५ ''
गुड फ्राईडे	२५ ''
वसन्त प्रतिपदा, छरेंड़ी, फूलडोल	२६ ''
तुकाराम ज., ईस्टर सण्डे	२७ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ	२९ ''
चेहल्लम शहीद करबला मु.	१ अप्रैल
कालाष्टमी, शीतला पूजा	२ ''
ऋषभदेव जयंती	३ ''
दशमाता व्रत	४ ''
पापमोचनी एकादशी व्रत	५ ''
प्रदोष व्रत, आखरी चाहर शम्बा मु.	६ ''
मास शिवरात्रि व्रत	७ ''
देवपितृकार्याऽमावस्या	८ ''
चान्द्र संवत्सर पूर्ति	८ ''

इस्लामी त्योहार

चैहल्लम शहीद करबला	११ अप्रैल
शहादते इमाम हसन	१९ ''
आखरी चहार शम्बा	३० ''
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	३ मई
फतीहा यजदहूम (११वीं शरीफ)	३१ ''
उर्स निजामुद्दीन ओलिया प्रा.	५ जून
वफात् सरसैयद हैमद खाँ	१६ जुलाई
उर्स ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेर	२३ अग.
हजरत अली जन्म	३० ''
शब-ए-मिराज	१२ सितं.
शब-ए-रात	३० ''
रमजान (रोजा) प्रा.	१६ अक्टू.
उर्स अलीशाह कलन्दर पानीपत	२८ ''
शहादते हजरती अली	५ नवं.
शब-ए-कद्र	१० ''
जुमातुल विदा	१२ ''
ई-दुल-फितर	१४ ''
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो दिल्ली	१ दिसं.
वफात कायदे मो. अली जिन्हा	२० ''

सन् २००५ ई.

उर्स बाबा शाह लाल दयाल, कैथल	१० जन.
हज्ज	२० ''
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	२१ ''
मोहरम हिजरी सन् १४२६ प्रा.	११ फर.
मुहर्रम ताजिया	२० ''
चेहल्लम शहीद करबला	१ अप्रैल
आखरी चाहर शम्बा	६ ''

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमति नाथ	जयंती	३१ मार्च
'' महावीर स्वामी	''	२ अप्रैल
'' सुव्रत नाथ	''	१४ ''
'' कुन्थ नाथ	''	२० ''
'' अनन्त नाथ	''	१५ मई
'' शान्ति नाथ	''	१९ ''
'' सुपार्श्वनाथ	''	३१ ''
'' नमिनाथ	''	१२ जून
'' नेमिनाथ	''	२१ अग.
'' पद्म प्रभु	''	९ नवं.
'' सम्भव नाथ	''	२६ ''
'' पुष्पदन्त नाथ	''	१२ दिसं.
'' मल्लि नाथ	''	२२ ''
'' अरह नाथ	''	२५ ''

सन् २००५ ई.

'' पार्श्व नाथ	''	६ जन.
'' चन्द्र प्रभु	''	७ ''
'' यतीन्द्र सुरीश्वर नाथ	''	१२ ''
'' राजेन्द्र सुरीश्वर नाथ	''	१६ ''
'' शीतल नाथ	''	६ फर.
'' विमल नाथ	''	१२ ''
'' अजित नाथ	''	१८ ''
'' अभिनन्दन नाथ	''	१९ ''
'' धर्म नाथ	''	२१ ''
'' श्रेयांश नाथ	''	६ मार्च
'' वासुपूज्य नाथ	''	९ ''
'' ऋषभ नाथ	''	१९ ''

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	२१ मार्च
श्री झूलेलाल जयंती	२२ ''
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ अप्रै.
श्री वल्लभाचार्य जयंती	१५ ''
श्री शुकदेव जयंती	१९ ''
श्री शिवाजी जयंती	२१ ''
श्री परशुराम जयंती	२२ ''
श्री आद्य शंकराचार्य जयंती	२४ ''
बाबू कुँवर सिंह जयंती	२४ ''
श्री रामानुजाचार्य जयंती	२५ ''
देव ऋषि नारद जयंती	६ मई
कवि रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ ''
श्री मां आनन्दमयी जयंती	७ ''
श्री महाराणा प्रताप जयंती	२२ ''
सन्त कबीर जयंती	३ जून
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुला
गो. तुलसीदास जयंती	२२ अग.
डॉ. राधाकृष्णन जयंती	५ सितं
संत ज्ञानेश्वर जयंती	६ ''
श्री दधीचि जयंती	७ ''
श्री विनोबा भावे जयंती	११ ''
सन्त सुथरेशाह जयंती	१४ ''
श्री विश्वकर्मा जयंती	१७ ''
श्री महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू.
श्री अग्रसेन जयंती	१५ ''
श्री माधवाचार्य जयंती	२३ ''
महर्षि बाल्मीकि जयंती	२८ ''
श्री सरदार पटेल जयंती	३१ ''
श्री धन्वन्तरि जयंती	१० नवं.
श्री नेहरू जयंती	१४ ''
श्री जलराम जयंती	१८ ''
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ ''
श्री कवि कालीदास जयंती	२३ ''
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसं.
भक्त नरसी मेहता जयंती	१८ ''
महामना मदनमोहन मालवीय ज.	२५ ''
श्री ईसा जयंती	२५ ''
श्री दत्तात्रेय जयंती	२६ ''

सन् २००५ ई.

श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३ जन.
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ ''
स्वा. विवेकानन्द जयंती	१ फर.
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	१ ''
योगी बाबा लालदयाल जयंती	१० ''
श्री माधवाचार्य जयंती	१५ ''
गुरु रविदास जयंती	२४ ''
गुरु रामदास जयंती	५ मार्च
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	५ ''
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	१२ ''
श्री याज्ञवल्क जयंती	१५ ''
श्री दादूदयाल जयंती	१८ ''
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	२५ ''
श्री संत तुकाराम जयंती	२७ ''

प्राचीन मेला-दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	२१ मार्च
'' चीमा नानक सर (पंजाब)	२१ ''
'' गणगौर जयपुर (राज.)	२३ ''
'' माई सरखाना (पंजाब)	२७ ''
'' मनसा देवी (हरियाणा)	२९ ''
'' बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	२९ ''
'' ज्वालामुखी (हरचोवाल)	२९ ''
'' ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	२९ ''
'' रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	३० ''
'' कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	३ अप्रैल
'' देवी थीहरा (कैथल)	४ ''
'' बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	४ ''
'' मानकपुर शरीफ (रोपड़)	५ ''
'' कशाधा नहयाणी सह-कुल्लू	११ ''
'' पिंजोर (हरियाणा)	१९ ''
'' पीपल जातर (कुल्लू)	२३ ''
'' आनी आउडर सिराज (कुल्लू)	४ मई
'' डूंगरीजातर (मनाली)	१० ''
'' बंजार (कुल्लू)	१० ''
'' चनानी माताजी	११ ''
'' शाढ़ी जातर नगर (हि.प्र.)	१३ ''
'' हल्दीघाटी (राज.)	२२ ''

मेला	तिथि
मेला क्षीरभवानी कश्मीर	२७ मई
,, गंगा दशहरा (हरिद्वार)	२९ ,,
,, सपोर यात्रा धारलदा-बुधमपुर	२९ ,,
,, बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	३० ,,
,, पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	३० ,,
,, शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	३ जून
,, भून्तर (हि.प्र.)	१० ,,
,, शरीफ भवानी (कश्मीर)	२७ ,,
,, ज्वालामुखी (कश्मीर)	१ जुला.
,, नैमिषारण्य (उ.प्र.)	२ ,,
,, गुरु पूर्णिमा (कुराली)	२ ,,
,, नानकसर (चीमा)	५ ,,
,, हरियाली अमा. (उदयपुर)	१७ ,,
,, चिन्तपूर्णी व नयना देवी-हि.प्र.	२३ अग.
,, अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	३० ,,
,, द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	४ सितं.
,, जन्माष्टमी (मथुरा)	७ ,,
,, कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	१२ ,,
,, सुथरेशाह (दिल्ली)	१४ ,,
,, गुसांई आंणा (कुराली)	१६ ,,
,, रुणीचा रामदेव (जैसलमेर) प्रा.	१६ ,,
,, गणेशोत्सव मण्डी (हि.प्र.)	१८ ,,
,, गणेशोत्सव (महाराष्ट्र)	१८ ,,
,, पात (कश्मीर) प्रा.	१९ ,,
,, ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	२० ,,
,, रुणीचा रामदेव (जैसलमेर) समा.	२३ ,,
,, चारभुजा नाथ (मेवाड़)	२४ ,,
,, वामन द्वादशी (पटियाला)	२५ ,,
,, सोडल (जालन्धर)	२७ ,,
,, छपार (पंजाब)	२७ ,,
,, गोयन्दवाल (पंजाब)	२८ ,,
,, श्री आशापति यात्रा (का.)	१३ अक्टू.
,, ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	२१ ,,
,, तारा देवी (हि.प्र.)	२१ ,,
,, हरचोवाल (गुरदासपुर)	२१ ,,
,, दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	२३ ,,
,, शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२७ ,,
,, देवी थीहरा (कैथल)	२७ ,,
,, दीपावली (अमृतसर)	१२ नवं.
,, अन्नकूट (गोवर्धन) पूजा	१३ ,,
,, बाल मेला (दिल्ली)	१४ ,,
,, बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	२२ ,,
मेलारेणुका स्नान नाहन (हि.प्र.)	२२ नवं.
,, वीरबैरागी नकोदर (पं.)	२४ ,,
,, पुष्करराज (राज.)	२६ ,,
,, रामतीर्थ (अमृतसर)	२६ ,,
,, कपालमोचन (हरियाणा)	२६ ,,
,, गढ़गंगा (उ.प्र.)	२६ ,,
,, पुरमण्डल देवी का स्ना. (ज.)	११ दिसं.
,, जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	२२ ,,
,, संगीत हरबल्लभ प्रा.	२३ ,,

सन् २००५ ई.

मेला	तिथि
,, लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
,, मुक्तसर (पंजाब), पोंगल (द.भा.)	१४ ,,
,, मस्तुआणां (पंजाब)	२९ ,,
,, मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	८ फर.
,, बसंत पंचमी (हि.प्र.)	१३ ,,
,, पंचखण्ड पीठ विराटनगर	२१ ,,
,, डेजर्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	२१ ,,
,, वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	२४ ,,
,, महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	८ मार्च
,, नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	८ ,,
,, श्यामजी खाटू (राज.)	२०-२२ ,,
,, होलामेला आनन्दपुर सा. पं.	२६ ,,
,, मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२६ ,,
,, पंखा (झझर)	२६ ,,
,, बीरमदास बछौली (पटि.)	३० ,,
,, गुरु रामराय (देहरादून)	३० ,,
,, शीतला माता (कुराली) पंजाब	१ अप्रैल
,, पृथूदक पिहोवा (हरियाणा)	७ ,,

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
अप्रैल फूल डे	१ अप्रैल
गुड फ्राईडे	९ ,,
ईस्टर सण्डे	११ ,,
क्रिसमस डे पहली सांझ	२४ दिसं.
क्रिसमस डे	२५ ,,
ईस्वी सन् प्रारंभ की पहली सांझ	३१ ,,
ईस्वी नव वर्ष २००५ प्रारंभ	१ जन.
ऐपीफेनी डे	६ ,,
गुड फ्राईडे	२५ मार्च
ईस्टर सण्डे	२७ ,,
अप्रैल फूल डे	१ अप्रैल

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु		तिथि
गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	९ अप्रैल
,, अर्जुनदेव जी	,,	११ ,,
,, अंगद देव जी	,,	२० ,,
,, अमरदास जी	,,	३ मई
,, हरगोविन्द जी	,,	४ जून
,, हरकिशन जी	,,	१० जुलाई
,, रामदास जी	,,	३० अक्टू.
,, नानकदेव जी	,,	२६ नवं.

सन् २००५ ई.

गुरु		तिथि
,, गोविन्द सिंह जी	,,	१६ जन.
,, हरराय जी	,,	२१ फर.

गुरुयाई मिली

गुरु	तिथि
गुरु अमरदास जी	२१ मार्च
,, तेगबहादुर जी	३ अप्रैल
,, हरगोविन्द जी	११ मई
,, अर्जुनदेव जी	१६ सितं.
,, रामदास जी	२६ ,,
,, अंगद देव जी	३ अक्टू.
,, हरकिशन जी	६ नवं.
,, गोविन्द सिंह जी	१३ दिसं.
,, हरराय जी सन् २००५ ई०	६ अप्रैल

ज्योति जोत समाए

गुरु	तिथि
गुरु अंगद देव जी	२५ मार्च
,, हरगोविन्द जी	२६ ,,
,, हरकिशन जी	३ अप्रैल
,, अर्जुनदेव जी	२३ मई
,, रामदास जी	१७ सितं.
,, अमरदास जी	२८ ,,
,, नानकदेव जी	९ अक्टू.
,, हरराय जी	६ नवं.
,, गोविन्द सिंह जी	१६ ,,
,, तेग बहादुर जी	१६ दिसं.

दशावतार जयन्तियाँ

जयंती	तिथि
श्री मत्स्य जयंती	२३ मार्च
श्री राम जयंती (राम नवमी)	३० ,,
श्री परशुराम ज.	२२ अप्रैल
श्री नृसिंह जयंती	३ मई
श्री कूर्म जयंती	४ ,,
श्री बुद्ध जयंती	४ मई
श्री कल्कि जयंती	२२ अग.
श्री कृष्ण जयंती	६-७ सितं.
श्री वाराह जयंती	१७ ,,
श्री वामन जयंती	२५ ,,

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

श्राद्ध	तिथि
पूर्णिमा का श्राद्ध	२८ सितं.
प्रतिपदा ,, ,,	२९ ,,
द्वितीया ,, ,,	३० ,,
तृतीया ,, ,,	१ अक्टू.
चतुर्थी ,, ,,	२ ,,
पंचमी ,, ,,	३ ,,
षष्ठी ,, ,,	४ ,,
सप्तमी ,, ,,	५ ,,
अष्टमी ,, ,,	६ ,,
नवमी ,, ,,	७ ,,
दशमी ,, ,,	८ ,,
एकादशी ,, ,,	९ ,,
द्वादशी ,, ,,	१० ,,
त्रयोदशी ,, ,,	११ ,,
चतुर्दशी ,, ,,	१२ ,,
सर्व पितृ अमावस	१३ ,,

संक्रांतियां

राशि	वार	तिथि
मेष	मंगलवार	१३ अप्रै.
वृष	शुक्रवार	१४ मई
मिथुन	सोमवार	१४ जून
कर्क	शुक्रवार	१६ जुला.
सिंह	सोमवार	१६ अग.
कन्या	गुरुवार	१६ सितं.
तुला	शनिवार	१६ अक्टू.
वृश्चिक	सोमवार	१५ नवं.
धन	बुधवार	१५ दिसं.
मकर सन् २००५ ई.	गुरुवार	१३ जन.
कुंभ	शनिवार	१२ फर.
मीन	सोमवार	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

चैत्र	५ अप्रै.
बैशाख	४ मई
ज्येष्ठ	३ जून
आषाढ़	२ जुला.
प्र. श्रावण	३१ ,,
द्वि. श्रावण	२९ अग.
भाद्रपद	२८ सितं.
आश्विन	२७ अक्टू.
कार्तिक	२६ नवं.
मार्गशीर्ष	२६ दिसं.
पौष सन् २००५ ई.	२४ जन.
माघ	२३ फर.
फाल्गुन	२५ मार्च

गणेश चतुर्थी व्रत

बैशाख	८ अप्रै.
ज्येष्ठ	७ मई
आषाढ़	५ जून
प्र. श्रावण	५ जुला.
द्वि. श्रावण	३ अग.
भाद्रपद	२ सितं.
आश्विन	१ अक्टू.
कार्तिक	३१ ''
मार्गशीर्ष	३० नवं.
पौष	३० दिसं.
माघ सन् २००५ ई.	२९ जन.
फाल्गुन	२७ फर.
चैत्र	२९ मार्च

अमावस्याएं

बैशाख	सोमवती	१९ अप्रै.
ज्येष्ठ		१९ मई
आषाढ़		१७ जून
प्र. श्रावण		१७ जुला.
द्वि. श्रावण	सोमवती	१६ अग.
भाद्रपद	भौमवती	१४ सितं.
आश्विन		१४ अक्टू.
कार्तिक		१२ नवं.
मार्गशीर्ष		११ दिसं.
सन् २००५ ई.		
पौष	सोमवती	१० जन.
माघ	भौमवती	८ फर.
फाल्गुन		१० मार्च
चैत्र		८ अप्र.

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	१ अप्रै.
बैशाख	कृष्ण	१५ ,,
,,	शुक्ल	१ मई
ज्येष्ठ	कृष्ण	१४ मई
,,	शुक्ल	३० मई
आषाढ़	कृष्ण	१३ जून
,,	शुक्ल	२९ ,,
प्र.श्रावण	कृष्ण	१२-१३ जुला.
,,	शुक्ल	२८ ,,
द्वि.श्रावण	कृष्ण	११ अग.
,,	शुक्ल	२६ ,,
भाद्रपद	कृष्ण	१० सितं.
,,	शुक्ल	२४ ,,
आश्विन	कृष्ण	१० अक्टू.
,,	शुक्ल	२४ ,,
कार्तिक	कृष्ण	८ नवं.
,,	शुक्ल	२२ ,,
मार्गशिर	कृष्ण	८ दिसं.
,,	शुक्ल	२२ ,,
पौष	कृष्ण	६-७ जन.
,,	शुक्ल	२० ,,
माघ	कृष्ण	५ फर.
,,	शुक्ल	१९ ,,
फाल्गुन	कृष्ण	६-७ मार्च
,,	शुक्ल	२१ ,,
चैत्र	कृष्ण	५ अप्रैल

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	शनि	३ अप्रै.
बैशाख	कृष्ण		१६ ,,
,,	शुक्ल		२ मई
ज्येष्ठ	कृष्ण		१६ ,,
,,	शुक्ल	भौम	१ जून
आषाढ़	कृष्ण	भौम	१५ ,,
,,	शुक्ल		३० ,,
प्र.श्रावण	कृष्ण		१४ जुला.
,,	शुक्ल		२९ ,,
द्वि.श्रावण	कृष्ण		१३ अग.
,,	शुक्ल		२७ ,,
भाद्रपद	कृष्ण		१२ सितं.
,,	शुक्ल		२६ ,,
आश्विन	कृष्ण	सोम	११ अक्टु.
,,	शुक्ल	सोम	२५ ,,
कार्तिक	कृष्ण		१० नवं.
,,	शुक्ल		२४ ,,
मार्गशीर्ष	कृष्ण		९ दिसं.
,,	शुक्ल		२३ ,,
पौष	कृष्ण	शनि	८ जन.
,,	शुक्ल	शनि	२२ ,,
माघ	कृष्ण		६ फर.
,,	शुक्ल	सोम	२१ ,,
फाल्गुन	कृष्ण	भौम	८ मार्च
,,	शुक्ल		२३ ,,
चैत्र	कृष्ण		६ अप्रै.

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास		घं.मि.	से	ता. मास		घं.मि.	तक
१८ मार्च	२००४ ई.	१०-१३	''	२२ मार्च	२००४ ई.	२३-५६	''
१४ अप्रैल	''	१६-०१		१९ अप्रैल	''	७-२४	''
११ मई	''	२१-३४	''	१६ मई	''	१३-३२	''
७ जून	''	२८-३८	''	१२ जून	''	१९-१०	''
५ जुलाई	''	१३-४६	''	९ जुलाई	''	२५-३२	''
१ अगस्त	''	२४-०४	''	६ अगस्त	''	९-२२	''
२९ ''	''	९-५८	''	२ सितम्बर	''	१८-२५	''
२५ सितंबर	''	१८-०५	''	२९ ''	''	२७-३८	''
२२ अक्टूबर	''	२४-१०	''	२७ अक्टूबर	''	११-४६	''
१८ नवम्बर	''	२९-३७	''	२३ नवम्बर	''	१८-१४	''
१६ दिसम्बर	''	१२-४३	''	२० दिसम्बर		२३-४७	''
१२ जनवरी	२००५ ई.	२२-३१	''	१६ जनवरी	२००५ ई.	३०-१३	''
९ फरवरी	''	९-४८	''	१३ फरवरी	''	१४-४५	''
८ मार्च	''	२०-११	''	१२ मार्च	''	२४-४८	''
४ अप्रैल	''	२८-०६	''	९ अप्रैल	''	१०-३३	''

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२१ मार्च २००४ ई.	२२-३९	''	२३ मार्च २००४ ई.	२५-४८	''
३१ ''	२०-०१	''	२ अप्रैल	२१-२४	''
९ अप्रैल	१०-४७	''	११ ''	७-१४	''
१७ ''	२९-५२	''	२० ''	९-२४	''
२७ ''	२८-३०	''	३० ''	६-५५	''
६ मई	१९-३४	''	८ मई	१४-३४	''
१५ ''	११-४२	''	१७ ''	१५-४६	''
२५ ''	११-३९	''	२७ ''	१५-०७	''
३ जून	६-०८	''	४ जून	२४-१०	''
११ ''	१७-२१	''	१३ ''	२१-३०	''
२१ ''	१७-३८	''	२३ ''	२१-३८	''
३० ''	१६-४८	''	२ जुलाई	१०-५६	''
८ जुलाई	२४-०८	''	१० ''	२७-३७	''
१८ ''	२३-२३	''	२० ''	२७-११	''
२७ ''	२५-५४	''	२९ ''	२१-०६	''
५ अगस्त	८-३५	''	७ अगस्त	११-००	''
१४ ''	२९-४९	''	१७ ''	९-०८	''
२४ ''	८-४३	''	२५ ''	२९-१८	''
१ सितम्बर	१८-०५	''	३ सितम्बर	१९-३१	''
११ ''	१३-२६	''	१३ ''	१६-२८	''
२० ''	१४-०८	''	२२ ''	११-२१	''
२८ ''	२७-२१	''	३० ''	२८-३२	''
८ अक्टूबर	२१-५३	''	१० अक्टूबर	२५-१४	''
१७ ''	२०-११	''	१९ ''	१६-४७	''
२६ ''	११-०९	''	२८ ''	१२-५०	''
४ नवम्बर	३०-१७	''	७ नवम्बर	१०-२९	''
१३ ''	२८-४०	''	१५ ''	२३-५०	''
२२ ''	१७-१३	''	२४ ''	१९-४०	''
२ दिसम्बर	१३-४४	''	४ दिसम्बर	१८-४७	''
११ ''	१५-२८	''	१३ ''	९-३८	''
१९ ''	२२-४६	''	२१ ''	२५-२३	''
२९ ''	२०-०७	''	३१ ''	३५-२९	''
७ जन. २००५ ई.	२६-३९	''	९ जनवरी २००५ ई.	२१-०६	''
१५ ''	२९-४७	''	१८ ''	७-२६	''
२५ ''	२६-१०	''	२८ ''	७-१७	''
४ फरवरी	११-५६	''	६ फरवरी	७-४७	''
१२ ''	१५-०६	''	१४ ''	१५-१५	''
२२ ''	८-४२	''	२४ ''	१३-३०	''
३ मार्च	१८-३२	''	५ मार्च	१५-५३	''
११ ''	२५-३४	''	१३ ''	२४-४३	''
२१ ''	१६-०७	''	२३ ''	२०-५४	''
३० ''	२३-५६	''	१ अप्रैल	२१-४०	''
८ अप्रैल	११-१३	''	१० ''	१०-२४	''

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

विक्रम संवत् २०६१ (दिनांक २१ मार्च २००४ ई. से ८ अप्रैल २००५ ई. तक)

- राजा रवि, मंत्री भौम तथा धनेश गुरु के अतिरिक्त अन्य ग्रहों के योग से प्राकृतिक बाधा तथा राजनीति में परिवर्तन युद्ध के बादल मंडराते हुए भयावह बनाये रखेंगे।
- दुर्गेश चन्द्र के स्वभाव गुण तथा कारकत्व के कारण शासन तंत्र स्थिर तथा दृढ़ निश्चयी होगा।
- अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर के विषयों पर दृढ़ तथा कड़ा रुख रहेगा। घुसपैठ बढ़ेगी।
- औद्योगिक तथा वैज्ञानिक दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय शोध पत्र-पुस्तकों का प्रकाशन भी होगा। क्रूर ग्रहों के योग के कारण आतंकवादी अकारण घटना, बम-विस्फोट, महामारी, भूकम्प, तेल तथा वायुयान दुर्घटनाओं का योग के साथ जन-धन की हानि होगी। पशु धन की हानि भी होगी।
- शत्रु पक्षीय कार्यों की करतूतों का सख्ती से प्रत्युत्तर दिया जायेगा। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भारत का वर्चस्व बढ़ेगा।
- इस वर्ष में पूर्वी प्रदेशों में सत्ता संघर्ष, सत्ता गिराने का खेल योग बनेगा। शत्रुपक्ष, सत्ता पक्ष पर तीव्र प्रहार योग बनता है।
- मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली राज्यों में सत्ता परिवर्तन योग दो राज्यों में साक्षी साझा सरकारें बनेंगी।
- केन्द्र में पुनः साझा सरकार बनेगी। भारतीय जनता पार्टी अपना जनाधिकार (मत घटना) खोयेगी।
- प्रधानमंत्री तथा गृह मंत्री के लिए समय अशुभ है।
- समाजवादी पार्टी, कांग्रेस तथा दक्षिणी भारत की स्थानीय पार्टियों का वर्चस्व बढ़ेगा। सत्ता पक्ष में बाहुल्य कांग्रेस का रहेगा तथा सोनियां गांधी सत्तारूढ़ होंगी, ऐसे प्रबल योग बनते हैं।
- समुद्री मार्ग में प्राकृतिक आपदाएं बढ़ेंगी। पूर्वी प्रान्तों में जन धन की हानि तथा प्राकृतिक प्रकोप बढ़ेगा।

विगत डेढ़ दशक से "श्री आर्यभट्ट पंचांग" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गईं उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैव विद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अतः संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैव विद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अतः समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों को कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "वाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

अथ संवत्सर वर्ष राजादि मय विश्वादि फलम्

आकाशीय (कौंसिल) परिषद एवं विभागानुसार फलम्

सूर्य-राजा—उत्पादन न्यून, कम वर्षा, पशुओं में पीड़ा, अग्नि काण्ड ज्यादा।

भौम-मंत्री—शासक कठोरता से उपस्थित होंगे। चोर डाकुओं को कष्ट रहेगा। खाद्यान्न उत्पादन कम। किराणा बाजार तेज रहेगा। दुर्भिक्ष योग

शुक्र-सस्येश—स्वल्प वर्षा फिर भी पृथ्वी हरी-भरी रहेगी, गेहूं, चावल, फल, मेवा, गुड़ आदि का उत्पादन बढ़ेगा। स्त्री वर्ग के लिए वर्ष अच्छा।

बुध-धान्येश—वर्षा सामान्य, खेती अच्छी, उपज श्रेष्ठ, अन्नादि का भाव मन्दा, मध्य प्रदेश, नर्मदा तथा पूर्वी भारत में उन्नति ज्यादा होगी।

चन्द्र-मेघेश—मगध देश में विशेष लाभ। राजस्थान, दिल्ली, उत्तरांचल में भी सौख्य भाव, उत्पादन अच्छा तथा व्यापार बढ़ेगा।

शनि-रसेश—गाय-भैंस, बकरी अर्थात् दुधारू पशुओं को विशेष कष्ट, रोगोपद्रव तथा गृह युद्ध जैसा वातावरण बना रहेगा।

गुरु-नीरसेश—हल्दी, पीले वस्त्र, पीले रंग की वस्तुएं, स्वर्ण आदि की अधिकता सर्वत्र खुशहाली का वातावरण युद्ध योग बनकर शान्ति।

चन्द्र-फलेश—शासन न्यायादि क्षेत्र में विशेष विधि-विधान बनायेगा। पुरानी आकांक्षाओं की पूर्ति का योग बनेगा। फल अधिक होंगे।

गुरु-धनेश—क्रय-विक्रय में वृद्धि तथा विदेशी व्यापार तथा बैंकिंग प्रक्रिया में अभिवृद्धि होगी। रोजगार उपलब्धि योग है।

चन्द्र-दुर्गेश—गन्ना का उत्पादन बढ़ेगा। जनता में सौख्य लहर तथा सामाजिक समरसता बढ़ेगी। नये कार्य में सफलता भी।

वर्ष नाम-फाल्गुन—उड़ीसा, बंगाल तथा बिहार में दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। आंधी तूफान से जन हानि भी होगी। धोखा योग भी है।

रोहिणी निवास-समुद्र तटे—चक्रवात, कम्पन तथा असामयिक वर्षा योग बनेगा। तृण तथा तिलहन का उत्पादन ठीक। पशुओं में रोगादि योग भी है।

विश्वा गणना सारणी दृश्य

नाम	समय	उत्पत्ति	खपति	वर्षा	धान्य	तृण	शीत	तेज	वायु	वृद्धि	क्षय
विश्वा	१८	९९	९३	१३	१३	९	१५	११	१३	१५	१५

नाम	विग्रह	ऐक्यम्	सत्यं	धर्म	पापं	समय वाहन	स्तंभ	सोमवती अमा.	रवि दशमी
विश्वा	११	११३	आधा	डेढ़	१८	अश्व	नैव	३	२

मेघनाम आवर्त्त। समय निवास रजक गृहे, सोमवती पंचमी २, अंगारकी चतुर्थी २, बुधाष्टमी ३, भानु सप्तमी ३, समय मुहूर्त्ता ३३०, समय दिन ३८२, तिथि क्षय , तिथि वृद्धि १०, शनि दृष्टि पूर्व दिशा, चन्द्र ग्रहण २, सूर्य ग्रहण नहीं।
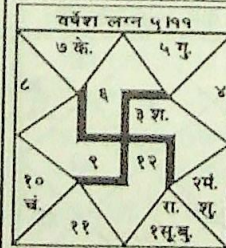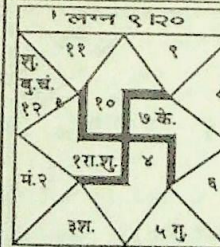
विक्रम संवत् २०६१ के प्रवेश के समय उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, योग शुक्ल, करण नाग तथा मकर लग्न आया है। ईष्ट काल ५३।४२। इस वर्ष का हेमलम्बी नाम से गणना में आया है। इसका फल **हेमलम्बी** वर्ष के कारण इस वर्ष में झंझावता युक्त वायु का प्रकोप रहेगा। आंधी तूफान के साथ वर्षा होगी। समुद्र तटीय लोग प्रायः कष्टमय रहेंगे।

नववर्ष प्रवेश चक्रानुसार मकर चर लग्न तथा शनि का प्रभाव क्षेत्र रहेगा। वर्ष का राजा रवि लग्नेश शनि। दोनों ग्रहों में परस्पर शत्रुता का राष्ट्र पर भेद नीति का प्रभाव पड़ेगा। बड़े नेताओं के साथ अचानक मृत्यु तुल्य धोखा होगा। देश में राजनैतिक अस्थिरता रहेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अपनी पहचान बनाये रखने में बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा। देश की आर्थिक स्थिति में विचारणीय बात होगी। वर्षा सामान्य ही रहेगी। देश की राजधानी को अधिक सुरक्षा की आवश्यकता रहेगी। गुप्त वार मुख्य सड़कों पर मुख्य राजनेता को हानि का योग बनता है। पश्चिमी सीमा पर अशांति का वातावरण बना रहेगा। सेना के पराक्रम में वृद्धि होगी। दूर संचार, अन्तरिक्ष तथा विज्ञान के क्षेत्र में साझेदारी रूप में प्रगति होगी। वर्ष में कट्टरवाद का ताण्डव बना रहेगा। कुछ पार्टियां स्वार्थपरता से विद्रोह गुप्त रूप में शनि लग्नेश के प्रभाव से करायेगा। बैंक तथा राजकीय उपक्रमों में जनता का विश्वास कम होगा। राष्ट्रीय उत्पादन में अधिकता (वृद्धि) रहेगी। सूर्य की राशि में गुरु तथा गुरु की राशि में सूर्य की उपस्थिति से कुछ सुखद योग बनायेंगे। पंचम भाव में मंगल की स्थिति विचारणीय (युद्ध कारक) अचानक धोखा रूप से होगी। व्यापार व्यवसाय के क्षेत्र में कोई नयापन नहीं होगा। जनता पर अनावश्यक करों का भार बढ़ेगा। विद्युत तथा जल संकट छायेगा। श्रम संगठनों में असन्तोष बढ़ेगा। न्याय प्रणाली में आश्चर्यजनक घटनाएं घटेंगी। लोग दांतों तले अंगुली दबायेंगे। उत्तरदायित्व हीन फैसलों से जनता में रोष बढ़ेगा। शनि जो लग्नेश भी है, उसका वर्चस्व वर्ष पर्यन्त रहेगा। संक्रामक रोग बढ़ेंगे। खेल क्षेत्र में विशेष प्रगति होगी। किसी बड़े ३ राजनेताओं का अवसान होगा। पूर्वोत्तर प्रान्तों में असामायिक बीमारी का प्रकोप बढ़ेगा। वर्शेष लग्न बुध जो दशमेश भी है तथा व्यापारिक गतिविधियों यानि सट्टा व शेयर्स बाजार में वृद्धि करेगा। लाभ स्थान पर चन्द्रमा लाभदायक कार्यों में शुभ तथा नवम भाव में स्वराशि का शुक्र भी शुभदायक रहेगा और नवीन योजनाओं तथा नारी शक्ति का वर्चस्व बढ़ायेगा। शिक्षा में, प्रशासन में, सौन्दर्य में अनेक प्रतियोगिताओं के आयोजन में स्त्री शक्ति का वर्चस्व बढ़ेगा। अष्टम में राहु तथा बुध की युक्ति धोखा-अविश्वास एवं आसती का सोप वाली उक्ति को सिद्ध करेगा। दर्दनाक घटनाएं घटेंगी।

आर्द्रा प्रवेश लग्न

११ | ९ | १२ | १० | ८ | ७ के. | १रा. | ४ मं.चं. | बु.२ | ६ | ३सू.बु.श. | ५ गु.

आषाढ़ शुक्ल ३ सं. २०६१ सोमवार दिनांक २१ जून २००४ रात्रि ९।१० मि. पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। आर्द्रा लग्न मकर है। अष्टम भाव में सिंह के गुरु के कारण शुभकारी योग बनेगा। आर्द्रा प्रवेश लग्न काल सर्पयोग से ग्रस्त है। शंखपाल कालसर्प उदित योग है। इस योग के कारण वाहन दुर्घटनाएं व्यापार व्यवसाय में अचानक नयी नीति परिवर्तन योग तथा आत्मघात जन्य घटना शंखपाल योग से घटेगी। शत्रु पक्ष पश्चिम देश अपनी हरकतों को तेज करेगा। सूर्य, बुध, शनि की षष्ठभाव में युक्ति दबाव योग बनता है। युद्ध का योग दबाव के कारण रुकेगा। जनता में रोगादि की वृद्धि होगी। वर्षा की अनिश्चितता रहेगी। अनावृष्टि का योग भी बनेगा। गेहूं, दुग्ध के भावों में मंदी का योग बनता है। धार्मिक कट्टर वाद योग में ईस्लाम धर्म की बदनामी का योग बनेगा। मन्दिर मस्जिद मामला से जनता में भड़काऊ स्थिति बनेगी। मन्दिर निर्माण योग संवत् २०६१ से २०६७ तक बनता है।

मेदनीय ज्योतिष एवं ग्रह योगानुसार भविष्य फल बोध

अन्तर्राष्ट्रीय (विदेशी) भविष्य संक्षिप्त में

अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, अलजीरिया एवं इंग्लैण्डः इन देशों में प्राकृतिक आपदा जून ०४ से सितंबर ०४ तक योग बनेगा। व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। अप्रैल से जून २००४ तक प्राकृतिक हानि तथा जनान्दोलन योग बनता है। अमेरिका में वयोवृद्ध राजनेता का पदावसान योग भी है। अगस्त से दिसंबर २००४ तक नवीन खोज का योग भी बनता है। अचानक विद्युत द्वारा अग्नि भय तथा सरकार पक्ष में विपक्ष का वर्चस्व बढ़ेगा। तीन नेताओं का अपहरण योग भी बनता है। विस्फोटक एवं अग्नि संबंधी घटनाएं घटेंगी। अन्तर्राष्ट्रीय वर्चस्व में परिवर्तन योग भी बनता है। चक्रवात का प्रभाव बढ़ेगा। भूमिगत सर्वे बढ़ेगा।

विभिन्न लग्नों का अंकन एवं पठन से भविष्य फल

जगत लग्न कुण्डली

५ चं. | ३ श. | ६ | गु. ४ | २ रा. | ७ | १ बु.सू. | ८ के. | १० | १२ | ९ मं. | ११शु.

यूरोपीय देशों की कुं. नं. १

७मं.शु. | ५ | ८के. चं. | ६ | ४ गु. | ९ सू. | ३श. | १०बु. | १२ | २ रा. | ११ | १

यूरोपीय देशों की कुं. नं. २

७के. | ५गु. | ८ | ६ | ४ | ९सू.बु. | ३श. | १०शु. | १२मं. | २ | ११ | १रा.चं.

मुस्लिम देशों की कुण्डली

६ | ४ गु. | ७ | ५ | ३ | ८के. | २श.रा. | ९मं. | ११बु.सू. | १ | १०शु. | १२चं.

श्री [illegible] की कुण्डली

६ चं.गु. | ५मं. | ३सू. | ४ शु. बु.श. | २रा. | ७ | १ | ८के. | १० | १२ | ९ | ११

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

३मं. | १ | सू.४ चं.शु.बु. श. | २रा. | १२ | ५ | ११ | ६ | ८के. | १० | ७गु. | ९

भारत के राष्ट्रपति जी की शपथ काल लग्न

७ | ५शु. | ८के. | ६ | ४मं. सू.बु.गु. | ९ | ३श. | १०चं. | १२ | २रा. | ११ | १

उपराष्ट्रपति जी की कुण्डली

३ | १ | ४ | २ | १२चं. | ५रा. | ११ के. | ६मं. बु. | ८गु. | १० | ७सू.श.शु. | ९

कुण्डली भाजपा पार्टी की

४ | २शु. | ५गु. श.मं.रा. | ३ | १ | ६ | १२ | ७ | ९ | ११ बु.के. | ८चं. | १०

कुण्डली कांग्रेस पार्टी की

१०मं. | ८बु.सू. | ११रा. | ९ | ७शु. गु. | १२ | ६ | १श. चं. | ३ | ५के. | २ | ४

अटल बिहारी वाजपेयी जी

८शु.चं. | ६ | ९बु. गु.सू. | ७श. | ५ | १०के. | ४ रा. | ११ | १ | ३ | १२मं. | २

कांग्रेस आई की कुण्डली

१चं. | ११ | २ | १२ रा. | १०गु. सू.शु. | ३ | ९बु. | ४ | ६के.मं. | ८ | ५श. | ७

ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण कौशिक

५बु.शु.के. | ३ | ६श. | ४ मं.सू. | २ | ७ | १ | ८चं. | १० | १२गु. | ९ | ११रा.

श्रीमती सोनिया गांधी जी

५ | ३चं. | ६ | ४ श. | २ रा. | ७गु.शु. | १ | ८के. बु.सू. | १० | १२ | ९मं. | ११

श्री लालकृष्ण आडवाणी की कुण्डली

९ | ७मं.बु.सू. | १० | श.८के. | ६शु. | ११ | ५ | १२गु. | २ रा. | ४ | १चं. | ३

प्रियंका गांधी की कुण्डली

३चं. | १श. | ४ | २ | १२ | ५के. | ११ रा. | ६ | ८शु.गु. | १० | ७मं. | ९सू.बु.

चीन, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, जर्मनी एवं जापानः इन देशों में प्रशासन अच्छा रहेगा। व्यापार की दृष्टि से भारत के साथ सम्पर्क बढ़ेगा। जर्मनी का राजदूत का समय अशुभ रहेगा। राहु, केतु, शनि के कारण गृह कलह योग घटेगा। नया सरकारी कर तथा अन्य योजनाएं लागू होंगी, जिसका विरोध होगा। हवाई दुर्घटनाएं अधिक होंगी। औषधि बाजार में नया शोध कार्य होगा। शासन का दबदबा के साथ एक मेला का आयोजन योग भी बनता है। चार नेताओं का अवसान योग बनेगा। वर्ष सामान्य रहेगा। प्राकृतिक आपदाओं की परेशानी बढ़ेगी।

अफगानिस्तान, मारिशस, नागालैण्ड, रूस, उत्तर पूर्वी देश, ब्रिटिशः शनि तथा मंगल तथा राहु एवं केतु के प्रभाव से इन देशों में राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन योग, सत्ता बदलाव योग बनता है। आतंकवाद के साथ-साथ प्राकृतिक आपदाओं एवं श्रमिकों का शोषण तुल्य योग घटेगा। हुलड़ तथा अनैतिक कार्यों का प्रभाव बढ़ेगा। ३ नेताओं का मोटर वाहन या गिरने से मृत्यु तुल्यकष्ट योग बनेगा। मारिशस में औद्योगिक स्थिति में कॉफी सुधार होगा। विश्व व्यापार क्षेत्र में भारत के साथ तीन बार वार्ता होगी। वायुयान अपहरण योग जून से २५ जुलाई २००४ तक बनता है। शिक्षा के क्षेत्र नयी योजना का उद्भव होगा। कोयला व खनिज सामग्री का नया शोध होगा। युद्ध जैसा वातावरण बना रहेगा। तूफान तथा चोरी डकैती का मामला बढ़ेगा।

एशिया, यूरोप, नागा पर्वत, कंचनजंगा, तुर्की, सूडान, रोम, ईराक, ईरान, फ्रांस, केपटाऊन, तेहरान, ताशकन्दः इन देशों में मंगल तथा राहु-केतु के प्रभाव असामाजिक घटनाओं का बोलबाला रहेगा। सत्ता पक्ष में अन्तर्कलह चलेगा। हत्या तथा अनैतिक कर्त्तव्यों का बाहुल्य रहेगा। मई से सितम्बर २००४ तक का समय अनुकूल नहीं रहेगा। प्राकृतिक प्रकोप से नयी बीमारी का उदय होगा। शनि प्राकृतिक प्रकोप का मुख्य कारक रहेगा। रोगोपद्रव से भी जनधन हानि काफी समय तक चलेगा। शिक्षा की दृष्टि में नारी योजनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। स्त्री पक्ष का प्रभाव निर्बल रहेगा। साहित्यविदों का अपमान जन्य घटनाएं घटेंगी। रेल यान में टक्करों का बाहुल्य रहेगा। युवा वर्ग का प्रभाव यत्र-तत्र बढ़ेगा। खनन व्यापार में वृद्धि योग है।

प्रान्तीय भविष्य फल बोध

राजस्थानः राजस्थान की प्रभाव राशि कर्क तथा नाम राशी तुला है। ग्रह योगानुसार सन् २००४ में तथा आगे २००५ तक राजस्थान में खण्ड वृष्टि योग बनेगा। वर्षा कहीं अधिक तो कहीं सूखा योग है। भावी सरकार मिश्रित योग वाली बनेगी तथा कांग्रेस का वर्चस्व वर्तमान की बजाय घटेगा। विजय योग में राजस्थान का वर्चस्व सुरक्षा बल पर ज्यादा रहेगा। दिनांक ३० जून से ११ दिसम्बर २००४ तक अशुभ घटनाएं राजनैतिक दलों द्वारा घटेंगी। नव पदासीन मुख्यमंत्री को तीन बार संकट का सामना करना पड़ेगा। पशु धन की स्थिति बिगड़ेगी। वर्षा योग यत्र-तत्र सर्वत्र होगा। पश्चिमी राजस्थान का मरु मेला विश्व में आश्चर्यजनक होगा।

दिल्लीः प्रभावित राशि वृषभ तथा नाम राशि मीन रहेगी जो कि अशोभनीय घटनाओं का द्योतक रहेगी। तरंग रूप में वैचारिक स्थितियां परिवर्तन होंगी। दिल्ली में भी भावी चुनाव में किसी एक दल का बहुमत नजर नहीं आता। विस्फोटक कार्यों का बोलबाला रहेगा। श्रीमती शीला दीक्षित का भविष्य सामान्य नजर आ रहा है। मुख्यमंत्री के रूप में नया चेहरा का योग बनता है। वर्षा ठीक होगी।

मध्य प्रदेशः राजनैतिक दृष्टि से कांग्रेस का वर्चस्य कम होगा। भाजपा का सत्तापक्ष योग बनता है। शासन की ओर से काफी व्यवस्थाओं के कारण जन धन की हानि कम होगी। वर्षा दक्षिणी मध्य प्रदेश में अच्छी, पूर्व में बाढ़ तथा पश्चिमोत्तर में विशेष कार्य हो तो जाने वालों को सावधान रहना ठीक है। एक नया दल का उदय योग बनता है।

छत्तीसगढ़ः इस राज्य का वर्चस्व यथावत रहेगा। बाढ़ के प्रभाव से जनता आदि का ध्यान शासन की ओर सामान्य रहेगा। दुर्घटनाओं का वातावरण रहेगा। स्त्री पक्ष की सुरक्षा की आवश्यकता है। वर्षा अच्छी, कृषि भी अच्छी होगी।

गुजरात, महाराष्ट्र एवं कर्नाटकाः इन राज्यों में प्राकृतिक आपदा का प्रभाव जून व नवम्बर में मंगल एवं शनि के कारण बनता है। राजनेताओं की हत्या एवं अदालती मामला बढ़ेगा। भाजपा एवं कांग्रेस में विवाद फूट का कारण तथा जातिवाद सम्प्रदाय को बढ़ावा देगा। राज्य सरकारें २-२ बार पदच्युत या अविश्वास प्रस्ताव योग बनेगा। जल संकट तथा वर्षा की वृष्टि से जनता दुःखी। नये रोगोपद्रव से चिकित्सा विभाग में खलबली मचेगी।

आसाम, अरुणाचल प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, शिमला, काश्मीर, पंजाब एवं हिमाचल प्रदेशः इन प्रान्तों एवं नगरों में पर्यटन स्थलों का विकास होगा। क्षेत्रीय दलों का वर्चस्व रहेगा। नेताओं में व्यक्तिगत मतभेद होंगे तथा भूस्खलन-भूकम्प, ज्वालामुखी या गैसीय रिसाव से जनधन हानि का योग राहु, केतु व शनि के कारण बनता है। राजनैतिक पार्टियों को सावधान रहना आवश्यक है। वरिष्ठ घरों के व्यक्तियों का अपहरण का योग तीन बनेंगे।

उतरांचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, भूटान, लक्षद्वीप, दमन द्वीप, पश्चिमी बंगाल, कर्नाटका, चेन्नई, केरला तथा बिहारः इन प्रान्तों में मंगल ग्रह के कारण अग्नि काण्ड तथा गृह क्लेश या मुठभेड़ जन्य घटनाएं घटेंगी। रेलयान व जलयान दुर्घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। व्यापारिक गतिविधियां तेज होंगी। क्षेत्रीय विधायकों यानि स्थानीय पार्टियों का बाहुल्य रहेगा। सरकारी कर्मचारी अधिकारी भी दुःखी रहेंगे। भ्रमण कर्त्ताओं का अपहरण जन्य योग बनता है। मंगल, शनि, राहु, केतु तथा सिंह का गुरु मतभेदों का जाल बिछेगा। नारी अस्मिता की रक्षा भगवान् ही करेंगे। सिनेमा घरों में डकैती की घटनाएं ३० मई से २४ अगस्त २००४ तक बनती है। सावधान रहें तो बचाव होगा।

शेष पृष्ठ 215 पर...

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् २०६१

विक्रम संवत् २०६१ में अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चार ग्रहण होंगे जिनमें से भारतीय भू-भाग पर केवल दो ग्रहण ही दिखाई देंगे। अन्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे।

१. खण्ड ग्रास सूर्यग्रहण—वैशाख कृष्ण ३० सोमवार ता. १९ अप्रैल २००४ ई. को अश्विनी नक्षत्र व मेष राशि के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। यह ग्रहण भारतीय भू-भाग पर दिखाई देगा। दक्षिणी अफ्रीका, एटलांटिक महासागर व एंटार्टिका आदि क्षेत्रों पर देखा जा सकेगा।

२. खग्रास चन्द्र ग्रहण—वैशाख शुक्ला पूर्णिमा मंगलवार ता. ४ उप. ५ मई २००४ ई. की रात्री में स्वाती एवं विशाखा नक्षत्र तथा तुला राशि के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। ग्रहण भारत सहित एशिया, यूरोप, अफ्रीका, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, अण्टार्टिका, एटलांटिक के दक्षिण पूर्वी भाग एवं हिन्द महासागर आदि स्थानों पर देखा जा सकेगा।

३. खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण—आश्विन कृष्णा ३० गुरुवार ता. १४ अक्टूबर २००४ ई. को चित्रा नक्षत्र एवं कन्या राशि के चन्द्रमा में होगा, जो एशिया के पूर्वोत्तर भाग, जापान एवं प्रशांत महासागर आदि स्थानों पर दिखाई देगा। भारत के भू-भाग पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

४. ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र ग्रहण—आश्विन शुक्ला १५ गुरुवार ता. २८ अक्टूबर २००४ ई. प्रातः अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। भारतीय भू-भाग पर यह ग्रहण राजस्थान के दक्षिण पश्चिमी कुछ भाग व गुजरात के पश्चिमी छोर पर ही ग्रस्तास्त स्पर्श मात्र ही दिखाई देगा। अतः देखे जाने वाले स्थानों पर वेध (सूतक) आदि पुण्य पर्व काल माना जाएगा। ग्रहण को पूर्णतया यूरोप, अफ्रीका, ग्रीनलैण्ड, अमेरिका व पश्चिमी एशिया, एटलांटिक महासागर और हिन्द महासागर के पश्चिमी भागों में देखा जा सकेगा।

॥ विक्रम संवत् २०६१ में भारत में दिखाई देने वाले ग्रहणों का विवरण ॥

खग्रास चन्द्र ग्रहण-वैशाख शुक्ला पूर्णिमा मंगलवार ता. ४ उपरांत ५ मई २००४ ई.-चन्द्रमा तुला राशिस्थ तथा नक्षत्र स्वाती एवं विशाखा परम ग्रास मान १.३१०।

इस ग्रहण का वेध (सूतक) ता. ४ मई २००४ ई. मंगलवार को दोपहर ३ बजकर १७ मिनट से लगेगा। रोगियों, बालकों व वृद्धों को छोड़कर अन्य पुरुष वा स्त्रियों को भोजनादि करना निषेध है। ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) ३ घंटा २४ मिनट का जप-दान धर्मार्थ कार्य हेतु पुण्य प्रदाता है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- रात्री २४.१७ बजे
खग्रासारंभ (सम्मीलन) :- रात्री १.२१ बजे
मध्य काल:- रात्री १.५९ बजे
खग्रास पूर्ति (उन्मीलन) :- रात्री २.३७ बजे
ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- रात्री ३.४१ बजे

ग्रहण काल में स्व इष्ट साधना, यंत्र-मंत्र, तन्त्रादि कृत्यों की साधना तथा अनेक स्तोत्रादि का पठनादि शीघ्र सिद्धि दायक होता है। यह मंगलवार की रात्री में होने के कारण उक्त कार्यों के प्रति विशेष प्रभावशाली योगप्रद है।

॥ ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	स्त्री कष्ट	उत्साह वृद्धि	उद्वेग	अरिष्ट	अर्थ लाभ	धन हानि	देहारिष्ट	द्रव्य हानि	धन लाभ	मनोसुख	मान हानि	देह पीड़ा

ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्र ग्रहण:- आश्विन शुक्ला पूर्णिमा गुरुवार ता. २८ अक्टूबर २००४ ई.-चन्द्रमा मेष राशिस्थ एवं अश्विनी नक्षत्रे-परम ग्रासमान १.३१४।

भारतीय भू-भाग पर यह ग्रहण ग्रस्तास्त एवं स्पर्श मात्र ही दिखाई देगा। नीचे दिये गए मानचित्र की रेखा अ-ब से पश्चिमी भाग में ही ग्रहणारंभ देखा जा सकेगा। अतः देखे जाने वाले स्थानों पर ही वेध (सूतक) पर्व पुण्यादि माना जाएगा।

ग्रहण का वेध (सूतक) ता. २७ अक्टूबर २००४ ई. की रात्री के ९ बजकर ४४ मिनट से लगेगा। ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) ३ घंटा ४० मिनट है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- प्रातः ६.४४ बजे
खग्रासारंभ (सम्मीलन) :- प्रातः ७.५६ बजे
मध्य काल:- प्रातः ८.३४ बजे
खग्रास पूर्ति (उन्मीलन) :- ९.१२ बजे
ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- प्रातः १०.२४ बजे
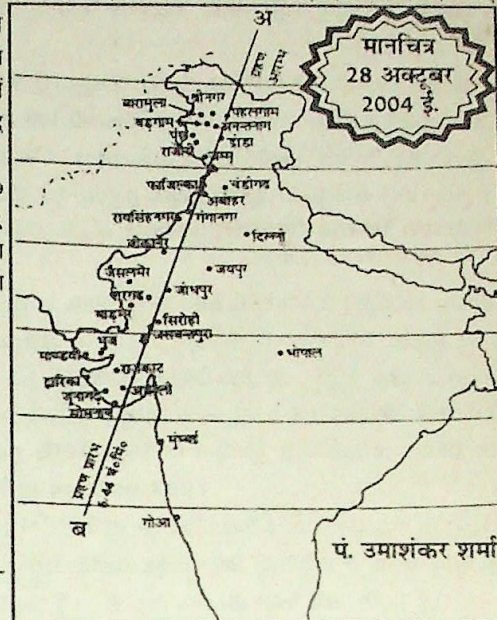
॥ ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ प्रभाव ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	अरि-ष्ट	धन हानि	अर्थ लाभ	सौख्य	अप-मान	देहा-रिष्ट	स्त्री कष्ट	सुख	मनोद्वेग	अस्थिरता	धन लाभ	धन हानि

मानचित्र के अनुसार श्रीनगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जूनागढ़, पोरबन्दर, भुज, राजकोट, जामनगर, सुरेन्द्र नगर आदि नगरों व निकटवर्ती स्थानों पर यह ग्रहण दिखाई देगा। रेखांशानुसार उत्तर में ७६° व दक्षिण में ६८° रेखांश की तिरछी रेखा से पश्चिम में ग्रहण देखा जा सकेगा।

व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर

(जन. 2004 से अप्रैल 2005 तक)

परिलेखकर्ता—मनीष कुमार जैन पोरसा वाले सुपुत्र पी.सी. जैन पोरसा वाले
इन्दौर बैंक के पीछे, लाल कोठी के सामने, बारादरी चौराहा मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-474006
एस.टी.डी.-0751 फोन : 5040389, 2367182, 2335045, 2334675 पी.पी., मोबाईल : 09827250045

जनवरी 2004 ई.

25 जनवरी 2003 से 11 जनवरी 2004 तक सोयाबीन D.O.C. 705, अरहर 45 तेजी, उड़द 145 की तेजी तो देशी घी, रुई में मंदी आवेगी। 11-1-2004 से 21 जनवरी 2004 तक बड़ी इलायची, सोयाबीन 255 तथा सौंठ, लाल मिर्च 500 की तेजी तो सोना-चांदी में मंदी आवेगी। 15-1-2004 से फरवरी 2004 तक किशमिश 1551, ज्वार 505, जीरा, उड़द 55, चीनी 65 तेजी। चना में 75 की तेजी आवेगी। 9-1-2004 से 1 फरवरी के बीच चना 111 की तेजी बाद में आवेगी। 27-12-2003 Inferior Conjunction, 15 दिसम्बर 03 से 19-1-2004 तक के बीच रिलाइंस Infosys शेयर्स में जोरदार मंदी का धमाका। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

फरवरी 2004 ई.

25 जनवरी से 9 फरवरी 2004 उड़द 277 भड़कती तेजी, काबुली चना 299, जीरा 505, धनिया, रुई, किशमिश 707, मूंग 251, तिल 150 की तेजी, इमली में 55 की तेजी, इसके अलावा अरण्डी, सौंफ, पिपरमेंट, छोटी इलायची 75 की तेजी व लौंग, काली मिर्च, अरहर में तेजी। मगर जौ, बादाम में मंदी आवेगी। 18 फरवरी से 7 मार्च तक जीरा, जौ 25 में भारी तेजी आवेगी।

मार्च 2004 ई.

2 मार्च 2004 से 11 मार्च तक राजमाँ, कालीमिर्च 707, छोटी इलायची 707 मंदी, सोना-चांदी, पिपरमेंट में भारी मंदी आवेगी। 7 मार्च से 21 मार्च तक जीरा, बादाम, गुड़ 50, काबुली चना 250 में तेजी, बाजरा, गेहूँ में तेजी आवेगी। 23 मार्च 2004 से 5 अप्रैल तक गुड़ 155 में तेजी, सोयाबीन 707, जई 25, सरसों 75 की तेजी, इसके अलावा गेहूँ, मसूर, पीतल 25, मार्च से 15 अप्रैल 2004 तक सुतली, बारदाना, अरहर, कलौंजी 999, सोयाबीन में तेजी आवेगी। सुपारी, सौंठ में मंदी आवेगी। 3 से 18 मार्च चना मंदी तो 21-3-2004 से 5 अप्रैल चना, उड़द में भारी तेजी आ सकती है। 4 मार्च 2004 Superior Conjunction। शेयर में सोना-चांदी में मंदी चल सकती है।

अप्रैल 2004 ई.

1 अप्रैल 2004 से 15 अप्रैल 2004 तक सोयाबीन 605 की भड़कती तेजी। रुई, लालमिर्च 707, बादाम, लौंग, चीनी 55, देशी घी 75 रु. प्रति टीन की तेजी तथा लौंग, पिपरमेंट में तेजी आवेगी। इसके अलावा जीरा 707, काबली चना, चीनी में तेजी मगर किशमिश में मंदी आवेगी। 16-4-2004 से 30 अप्रैल तक उड़द 299, रुई 211, गेहूँ 15, कलौंजी, मसूर में भारी तेजी चल सकती है। जीरा 999, लौंग, पिपरमेंट, सौंफ505 में मंदी, छोटी इलायची में मंदी आवेगी। 5-4-2004 से 15 अप्रैल तक मंदी, 15 अप्रैल से 15 मई 2004 चना 111-205 की तेजी बन सकती है। 17 अप्रैल 2004 Inferior Conjunction, 21 अप्रैल से 25 जून तक रिलाइंस, इंफोसिस, एसीसी शेयर्स में तूफानी तेजी आ सकती है। किन वस्तुओं में डोढ़े-दूने-4 गुने सन् 2004-2005 के बीच हो सकते हैं। ग्राफीकल सदस्य बन कर जानकारी हासिल करें।

मई 2004 ई.

25-4-2004 से 15 मई 2004 तक सरसों 155 100 किलो की भड़कती तेजी तथा उड़द 225, मूँग 155, सुपारी 509, छोटी इलायची 25 रु. तेज, पिपरमेंट 55 रु. की भड़कती [illegible] बन सकती है। इसके अलावा मूँगफली तेल 551 [illegible] 509, चावल, सौंठ में तेजी आवेगी। मगर ज्वार 150, जई, हल्दी, सोना में मंदी आवेगी। 16 मई से 27 मई तक सोना-चांदी में मंदी तथा पिपरमेंट, मूँग 250, उड़द, मौठ 360, लौंग आदि में जोरदार मंदी चल सकती है। 18 मई से 31 मई तक सुपारी 505, कलौंजी 700, मटर में तेजी। सौराष्ट्र साईड में पानी की वर्षा हो [illegible]। 16 मई तक तैल, लालमिर्च, उड़द में मंदी आ सकती है। 15 मई से 18 जून तक चना में मंदी तो 21 जून से 18 जुलाई तक तेजी आ सकती है।

जून 2004 ई.

22 मई से 7 जून तक फली तैल 299 की जोरदार मंदी आवेगी। 27 मई से 11 जून के बीच पिपरमेंट 175, सुपारी 909 तेज, अजवाईन में तेजी तथा किशमिश 299, पिस्ता 15, गुड़ 55 की जोरदार तेजी, उड़द 551, राजमाँ, ज्वार, हल्दी 150, बारदाना में मंदी आवेगी। 11 जून से 25 जून 2004 जीरा 506, अमचूर में 991, मक्का 77 की तेजी, काबुली चना, बड़ी इलायची 999, गुड़ 65 की जोरदार तेजी, मगर उड़द, मूँग में जोरदार मंदी आवेगी। 16 जून से 27 जून सोयाबीन तैल, फली तैल 99 की जोरदार मंदी आवेगी। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। 27 जून से 9 जुलाई तक सोयाबीन, सरसों, बिनौला में 155 की तेजी आ सकती है। 21 जून से 5 जुलाई जीरा 909, सोयाबीन 405, किशमिश 777, बड़ी इलायची, बादाम में तेजी आवेगी। 19-6-2004 Superior Conjunction, 15 मई से 25 जून शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी। 15 जून से 30 जून शेयर्स में मंदी।

जुलाई 2004

23 जून 2004 से 19 जुलाई सरसों, फली तैल 555 की भड़कती तेजी तथा जीरा 999, कलौंजी 707, उड़द 150, लौंग 25 किलो, काबुली चना 551, छोटी इलायची 77, लालमिर्च 599 की भड़कती तेजी आ सकती है। मगर ज्वार 150, जई में मंदी चल सकती है। 19-7-2004 से 31 तक [illegible]मिर्च 707 में मंदी में भारी तेजी। 15 से 31 जुलाई तक अरहर, गेहूं, चावल, छोटी इलायची, पिपरमेंट, लौंग में भारी का दौर चल सकता है। 1 जुलाई से 3 अगस्त के बीच सरसों, फली तैल, सोयाबीन [illegible] भारी तेजी आ सकती है।

अगस्त 2004 ई.

22 जुलाई 2004 से 11 अगस्त के बीच देशी घी में तेजी। तैल, अरण्ड 399, काबली 555 तेज, उड़द 77, मूंग 99, बारदाना आदि में अच्छी तेजी आ सकती है। 12 अगस्त पश्चिम बंगाल साईड में भारी वर्षा। मगर सोयाबीन 990, [illegible] की जोरदार मंदी आ सकती है। 12 अगस्त से 21 अगस्त तक कलौंजी 801, अमचूर 505, किशमिश में भारी तेजी। मगर अजवाइन 999, छोटी इलायची 55 मंदी तथा काबली चना, चांदी-सोना में मंदी आवेगी। 21 से 31 अगस्त में छोटी इलायची 75, तिल, सौंठ 505, अरहर 45, उड़द 255, मूंग 99 की तेजी। इस समय पानी की वर्षा भारी हो सकती है। 15 से 30 अगस्त तक जीरा 909, मक्का, गुड़, चीनी में मंदी चल सकती है।

सितम्बर 2004 ई.

27 अगस्त 2004 से 11 सितम्बर 2004 के बीच कभी तैल गोलाटीन 441 की जोरदार मंदी। जौ 170, अरहर 251 की मंदी आवेगी। 29 अगस्त से 15 सितम्बर के बीच तेजी बन सकती है। 1 से 18 सितम्बर के बीच चावल 151, धनियां 505, बारदाना 599, जीरा 707 की तेजी बन सकती है। 23 सितम्बर सोयाबीन की तेजी। सरसों 159, चना, मूंग 55 में तेजी बन सकती है। जीरा, लाल-मिर्च, हल्दी, सौंठ में मंदी आ सकती है। 19-9-2004 से 5-10-2004 के बीच मूंगफली तैल, सोयाबीन, बिनौला में भारी मंदी चल सकती है। 5 सितम्बर से 27 सितम्बर तक मसूर 70, चना 155-299 की भड़कती तेजी बन सकती है।

अक्टूबर 2004 ई.

21 सितम्बर 2004 से 9 अक्टूबर 2004 जीरा 999 की भड़कती मंदी आवेगी। 21-9-2004 से 15-10-2004 सौंफ 505, मसूर 99 की तेजी। पिपरमेंट 255 की भयंकर तेजी। चावल 255, लौंग, जौ, छोटी इलायची में अच्छी तेजी आ सकती है। 15-10-04 से 31-10-04 तक काली मिर्च, बादाम, लाल मिर्च, जीरा, धनियां में मंदी चल सकती है। 14-10-04 से 9 नवंबर तक पिपरमेंट, उड़द, मूंग, छोटी इलायची में तेजी चल सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। 3-10-04 से 11-10-04 तक चना में 25 की तेजी आवे, बाद में मंदी आवेगी। 27-10-2004 से 21-11-2004 तक चना में 150-255 की जोरदार मंदी बन सकती है। 6-10-04 से सुपरियर कंजक्शन। 25 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक रिलायंस शेयर्स में तेजी तो 7-10-04 से 15 नवंबर 2004 शेयर्स मार्केट में भयंकर तेजी का तूफान चल सकता है।

नवम्बर 2004 ई.

1 नवंबर 04 से 11 नवंबर तक सौंठ 111, अजवाइन 707 की मंदी व चांदी 199, अरण्डी तैल 75, धनियां 309 मंदी। लालमिर्च 707, राजमां 75 की मंदी आ सकती है। 27-10-2004 से 15-11-2004 के बीच कभी उड़द 155, चना, तिल 255 की तेजी, गुंवार 99, पिपरमेंट 299 तेज बन सकती है। समुद्री हवाओं, तूफान से तबाही मंच सकती है। देशी घी, गेहूं, चीनी में मंदी चल सकती है। 15-11-2004 से 30-11-2004 देशी तेल, गोला 405, जौ 10, सोयाबीन 405, इमली 55, चना 255 की भारी मंदी आ सकती है। मगर सरसों तैल 161 तेज। गुड़, छोटी इलायची 75, जौ, तिल में 75 तेजी बन सकती है।

दिसम्बर 2004 ई.

29-11-2004 से 11-12-2004 के बीच उड़द 277 की, मसूर 155, चना 255, पिपरमेंट, पोस्तादाना 707, काली मिर्च में जोरदार मंदी। देशी घी, चांदी 299, बारदाना में तेजी तथा वर्षा हो सकती है। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। 5 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक जीरा 505, छोटी इलायची आदि में तेजी। लौंग, पीतल, तांबा में तेजी आ सकती है। मगर सौंठ 777, काबली चना 505, सुपारी, पिपरमेंट, मसूर 250, अजवाइन में भारी मंदी। तो गुंवार, गेहूं, गुड़ में तेजी आ सकती है। 15 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 04 के बीच लालमिर्च 707 मंदी। देशी घी, गुड़ मंदी तो लौंग, अरहर, मक्का, गेहूं, उड़द 250, मूंग आदि में तेजी बन सकती है। 1-12-2004 से 11-12-2004 के बीच चना 155, मसूर 99 की जोरदार मंदी। 25 तक चना में 75 की तेजी तो 30 तक मंदी होकर फिर 11-1-2005 तक चना, मसूर, मटर में अच्छी तेजी आ सकती है। 10-12-2004 Inferior Conjunction, तैलों में तेजी, शेयर्स में तेजी बन सकती है।

जनवरी 2005 ई.

1-1-2005 से 19-1-05 के बीच उड़द 399 की भड़कती तेजी। डालडा, काबली चना 199, बड़ी इलायची, पाम ऑयल में भारी परंतु जीरा, मूंग, पिपरमेंट में मंदी चल सकती है। 21-1-2005 से 7-2-2005 के बीच सिंगदाना 555, सरसों 151 की तूफानी मंदी का दौर चल सकता है। 15-1-2005 के बीच बड़ी इलायची 777, लालमिर्च, गेहूं, बारदाना, चीनी, सौंफ, गुड़ देशी में तेजी चल सकती है। 11-1-2005 से 25-1-2005 तक चना 99 हो सकता है। 2-2-2005 तक चना में 75 की तेजी बन कर 27-2-2005 तक चना 255 जोरदार मंदी आ सकती है। 15 फरवरी 2005 Superior Conjunction होने से 3 जनवरी 2005 से 21 मार्च 2005 तक रिलायंस 99 तेजी, ACC Infosys शेयर्स में 999 की भड़कती तेजी, तो 21 मार्च 05 से 5 अप्रैल तक जोरदार मंदी आवेगी।

फरवरी 2005 ई.

1-2-2005 से 15-2-2005 तक जीरा 1199, छोटी इलायची 25, चीनी 65 भड़कती तेजी। मूंग, राजमां, चांदी में 199 तेजी चल सकती है। मगर सरसों 75, कालीमिर्च 309, मसूर 155 की भारी मंदी आकर बाद में तेजी चलने की आशा है। सन् 2004 में तैलों में तेजी होकर भयंकर मंदी। चीनी, गुड़ में भारी तेजी। लालमिर्च, चना, गुंवार नीचे 877 ऊँचे में 2599, सुपारी, हल्दी में भारी घटाबढ़ी से तेजी फिर मंदी चलने की आशा है। लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

मार्च 2005 ई.

2-3-2005 से 11-4-2005 के बीच सोना 259, चांदी की तेजी तथा जीरा, छोटी इलायची, धनियां, मैथी 75 की तेजी। चीनी 171, गुड़ में तूफानी तेजी आ सकती है। अरहर, छोटी इलायची में मंदी आ सकती है। 11-3-2005 से 5-4-2005 के बीच उड़द 399 तेजी। कलौंजी 707, मूंग 155 की भारी तेजी। इसके अलावा जीरा 27-3-2005 सूर्य-बुध की Inferior Conjunction, 5 अप्रैल 2005 से 27-4-2005 तक सरसों, रिलायंस, एसीसी, जे.पी., इंफोसिस शेयर्स व BSE Index में भारी तेजी आ सकती है। मैथी, लौंग, सौंठ में भारी तेजी आ सकती है। सन् 2004 में पिपरमेंट नीचे में 351, ऊँचे में 1131-2151 टॉप क्वालिटी में भाव होकर बाद में 290 के भाव पिपरमेंट के हो सकते हैं।

अप्रैल 2005 ई.

25 मार्च 2005 के बीच लालमिर्च 707, जीरा 1199, उड़द 299 की भारी तेजी, 281 की भारी तेजी। अरहर 75, सोयाबीन 505, मूंग 195, मक्का 25 की तेजी आ सकती है। 3 जून 2005 सूर्य-बुध Superior Conjunction, 30 जून से 15 जुलाई 05 तक शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी चल सकती है। लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

चांदी-सोना तेजी-मंदी रिपोर्ट

(23-02-13Y) (1) 25 जुलाई 2003 से 11 नवंबर 2003 के बीच, चांदी 500-777 की तेजी की आशा है। 11 नवंबर 2003 से 27-12-2003 या 5 फरवरी 2004 तक चांदी में 700-899 की तेजी चल सकती है। (2) 27-12-03 या 7-2-04, 7 फरवरी 2004 से 15 मार्च 2004 के बीच चांदी 555-777 की तेजी, तो 21 अप्रैल 2004 के बीच चांदी 999 की प्रचंड मंदी तो 29 जून 2004 से 11 अगस्त 2004 तक चांदी में 505-777 की जोरदार तेजी आ सकती है। रोज-रोज का व्यापार नहीं करें। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। दूसरी रिपोर्ट तैयार होने पर भेजी जाएगी।

दूसरे हिसाब से चांदी-सोना तेजी-मंदी चांस

(1) (2-1-4:26D-1M4) 25 जुलाई 2003 से 27 सितम्बर 2003 के बीच चांदी-सोना में अच्छी तेजी की आशा है। अत: 2-5 दिन की मंदी आने पर सोना-चांदी लेते रहें। 15 दिन में 250-306 की तेजी आने पर बेचते चलें।

(2) 27-9-2003 से 21-10-2003 के बीच चांदी में अच्छी मंदी आवे तो खरीदें। 5-11-2003 से 27-12-2003 या 7 फरवरी 2004 के बीच चांदी 999 की प्रचंड तेजी बन सकती है। हमेशा नियमित व्यापार करें। बड़ी तेजी आने पर माल बेचकर अलग हो जाएं। नीचे भावों में माल लेकर छोड़ दें। 15-25 दिन में तेजी आने पर माल बेचा करें। मतलब रोज-रोज के भावों के चक्कर में पड़े नहीं।

शेयरर्स मार्किट

शेयर्स मार्किट Force—जोर से चलने वाले चांस-लिखी तारीखों में 25 या 15 दिन पूर्व से भयंकर तेजी। रिलाइंस, A.C.C. शेयर्स की खतरनाक घटबढ़ की तारीखें। (1)(827-D)15 दिसंबर 2003 या 31-12-2003 के एक महीने पूर्व से BSC-Index-259-361 Point की भारी जोरदार तेजी आ सकती है। **नोट**-वैसे 15 सितम्बर 2003 से 7-11-2003 के बीच BSE Index 599-999 Point की भयंकर मंदी का दौर चल सकता है। तो 7-11-2003 से 15-12-2003 के बीच 505 Point, इन्फोसिस 1199 की तेजी बनकर 29-12-2003 तक एक मंदी चलने की आशा है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। 11-15 दिन की अच्छी तेजी आने पर बेचना नहीं भूलें। बम्बई स्टॉक एक्सचेंज 2199 कम्पनी है। अत: किसी शेयर में मंदी तो किसी शेयर में तेजी चल रही होगी। अत: 3-5 फार्मूले उपयोग करने पर तेजी-मंदी उपयोग करने पड़ेंगे।

(2)(827D)15 मार्च 2004 यहां तक 15-25 दिन पूर्व से इन्फोसिस 999, रिलाइंस 77, ए.सी.सी. टिस्को आदि शेयर्स में भयंकर मंदी का दौर चल कर नीचे के भाव टच हो सकते हैं। बाद में 11-15 दिन एक अस्थाई तेजी बन सकती है। ध्यान रहे कि BSE Index 23-10-1998 को 2741 के करीब व 14 फरवरी 2000 को 6150, फिर 21-9-2001 को 2595 के करीब होकर अगस्त 2003 में 4277, फिर सवा साल में घटकर 2195 होकर करीब 21-9-2007 या 23 दिसम्बर 2007 के आसपास BSE Index करीब-करीब कोई ऐसा 7377 या 8137 के स्तर को छू सकता है।

(3) 31-3-2004 से 21-4-2004 तक शेयर्स मार्केट में भयंकर मंदी का दौर चल कर नीचे भाव बने तो आगे 25 दिन में अच्छी तेजी आएगी।

(4) 15-5-2004 से 15-25 दिन पूर्व से अच्छी तेजी शेयर्स मार्किट में चल सकती है। सावधानी से व्यापार करें या ग्राफीकल सदस्य बनकर सलाह मंगायें। फोन-0751-5040389, पी.पी.09827250045, 2335045, 2334675, 2367182 पर संपर्क करें। नया पता व फोन नम्बर ज्ञात करें।

(5) 15-6-2004 के 15 दिन पूर्व से भयंकर मंदी चल सकती है।

(6) 31-8-2004 के एक महीने पहले से शेयर्स में तेजी चलकर 299-599 Point की जोरदार तेजी आ सकती है। 25-9-2004 से 5 नवंबर या 5 दिसंबर 2004 तक 1199 Point की भयंकर मंदी आकर के अब नीचे भाव बनकर आगे 2005 का वर्ष शेयर्स मार्किट में टॉप भाव बनने की संभावना है। यहां Index 2299-2151 होकर अगले डेढ वर्ष में कभी 4651-4700 के स्तर छूने की संभावना है। ए.सी.सी. जो अभी 2003 में 218 वो नीचे में 65-401 के स्तर पर है। 11-12-2004 के करीब 155 होकर आगे 2 वर्ष कभी 451 के स्तर को छू सकता है। ध्यान रहे अगस्त 2003 में बी.एस.ई. इन्डैक्स ऊंचे से 4277 हो चुका है। दान-पुण्य, धर्म-ध्यान करें।

शेष पृष्ठ 214 पर...

शेष पृष्ठ 214 पर...

विक्रम सम्वत् २०६१ शाके १९२६ मध्ये विवाह मुहूर्त्ताः

समय शुद्धिः

शुक्र अस्तः-इस वर्ष संवत् २०६१ वि. में ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार दिनांक ३ जून २००४ ई. से आषाढ़ कृष्ण एकादशी रविवार दिनांक १३ जून २००४ ई. तक पश्चिमास्त रहेगा। माघ शुक्ल दशमी शुक्रवार दिनांक १८ फरवरी २००५ ई. से वर्ष पर्यन्त पूर्वास्त रहेगा।

गुरु अस्तः-इस वर्ष संवत् २०६१ वि. में भाद्रपद कृष्ण अष्टमी मंगलवार दिनांक ७ सितंबर २००४ ई. से आश्विन कृष्ण अष्टमी बुधवार दिनांक ६ अक्टूबर २००४ ई. तक पश्चिमास्त रहेगा।

अधिक मासः-प्र. श्रावण शुक्ल प्रतिपदा रविवार दिनांक १८ जुलाई से द्वि. श्रावण कृष्ण अमावस्या सोमवार दिनांक १६ अगस्त तक।

धनु राशि में सूर्य (मल मास):-मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी बुधवार दिनांक १५ दिसंबर २००४ ई. से पौष शुक्ल चतुर्थी गुरुवार दिनांक १३ जनवरी २००५ ई. तक।

मीन राशि में सूर्य (मल मास):-फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी सोमवार दिनांक १४ मार्च २००५ ई. से वर्ष पर्यन्त।

होलाष्टकः-फाल्गुन शुक्ल अष्टमी शुक्रवार दिनांक १८ मार्च २००५ ई. से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार दिनांक २५ मार्च २००५ ई. तक।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्त काल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्व काल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए। तदनुसार ही मुहूर्त्तादि लिखे गए हैं।

नोटः-नीचे लिखे विवाह मुहूर्तों में जहां कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं, वे विवाह मुहूर्त भी लिखे गए हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

सिंह राशिस्थ गुरु (सिंह सठ) विचार

उद्यान चूड़ा व्रत बन्ध दीक्षा, विवाह यात्रा च वधु प्रवेशः।
तड़ाग कूप त्रिदश प्रतिष्ठां, बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात्॥

उपरोक्त शास्त्र वचनानुसार बृहस्पति के सिंह राशि पर गोचर भ्रमण काल में विवाह यात्रा प्रतिष्ठादि समस्त शुभ कार्य वर्जित होते हैं। तथाऽपि-

गोदावर्युत्तरे भागे भागीरथ्याश्च दक्षिणे। विवाहादि न कर्तव्य सिंहस्थे बृहस्पतौ॥
मेषेऽर्के सन्त्रतोद्वाही गंगा गोदाऽन्तरेऽपिच। सर्वः सिंहः गुरुर्वर्ज्यः कलिंग गौड़ गुर्जरे॥

इस परिहार वाक्यानुसार गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में सिंहस्थ गुरु काल में भी तथा सूर्य जब मेष राशि पर हो तब सर्वत्र विवाहादि शुभ कार्य किए जाना शुभफल प्रद है। किन्तु मेष राशिस्थ सूर्य काल में भी कलिंग, गौड़ व गुर्जर देशों में शुभ कर्म वर्जित हैं। तदनुसार ही विवाहादि मुहूर्त्त दिये गए हैं।

अथ शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

ति. वार	ता. मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
वैशाख कृष्ण पक्षः			
९ भौम	१३ अप्रैल	श्रवण	रे. ८ऽबु.ऽ॥॥॥ ल.कुंभ रात्री ३।०५ बजे (रविर्निरंश)
१३ शनि	१७ अप्रैल	उ.भा.	रे. १०॥॥॥॥॥ ल.कर्क दिवा ११।३२ बजे
वैशाख शुक्ल पक्षः			
३ गुरु	२२ अप्रैल	रोहि.	रे. ९॥ऽशु. ॥॥॥। ल.कुंभ रात्री २।३० बजे (रिक्ता तिथि आवश्यके)
४ शुक्र	२३ अप्रैल	रोहि.	रे. ९॥ऽशु. ॥॥॥। ल.कर्क दिवा ११।०८ बजे। ल.सिंह दिवा १।२८ बजे (रिक्ता तिथि आवश्यके)
९ गुरु	२९ अप्रैल	मघा	रे. ७ऽरा॥ऽचौर॥ऽ। ल.कर्क दिवा१०।४४ बजे(गणितेन क्रांति साम्य नाऽस्ति) ल.कुंभ रात्री २।०२ बजे
११ शनि	१ मई	उ.फा.	रे. ७॥ऽबु।ऽरोगऽ॥। ल.कर्क दिवा ११।४० से। ल.सिंहदिवा १२।५५ बजे। ल.धूलि मुखे सायंकाले। (पादवेधेन बुध वेधाभाव)
१२ रवि	२ मई	हस्त	रे. ८ऽसू.श.ऽ॥॥॥ ल.कर्क दिवा १०।३२ बजे। ल.सिंह दिवा १२।५१ बजे। ल.धूलिमुखे सायं काले
ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः			
४ शनि	८ मई	मूल	रे. ८॥॥ऽचौरऽ॥ ल.सिंह दिवा १२।२८ से १४।३४ बजे
५ रवि	९ मई	उ.षा.	रे. ७ऽ।ऽशु. ॥॥ऽल.सिंह दिवा १२।३० बजे। ल.कुंभ रात्री १।२२ बजे (दग्धा तिथि आवश्यके)
६ सोम	१० मई	श्रवण	रे. ७ऽबु॥ऽरोगऽ॥ ल.धूलिमुखे सायंकाले। ल.कुंभ रात्री १।१८ बजे। (सप्तमस्थ गुरु पूज्य)
८ भौम	११ मई	श्रवण	रे. ८ऽबु॥ऽरोग॥॥ ल.प्रातःवृष ५।४७ बजे।
८ भौम	११ मई	धनि.	रे. ९॥॥ऽ॥ ल.धूलिमुखे सायंकाले।
९ बुध	१२ मई	धनि.	रे. ९॥॥ऽ॥ ल.वृष प्रातः ५।४३ बजे।
गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य विवाह मुहूर्त्ताः			
११ शुक्र	१४ मई	उ.भा.	रे. ८॥॥ऽऽ॥ ल.कुंभ रात्री १।२ बजे (सप्तमस्थ गुरु पूज्य रविर्निरंश)
१३ रवि	१६ मई	अश्वि.	रे. ६ऽशु. ऽबु.ऽगु. ऽऽग्नि॥॥ ल.कुंभ रात्री १२।५५ बजे (सप्तमस्थ गुरु पूज्य) (पादवेधेन गुरु वेधाभाव)
ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः			
१ गुरु	२० मई	रोहि.	रे १०॥॥॥॥ ल.कर्क दिवा ९।२२ बजे। ल.सिंह दिवा ११।४१ बजे।
१ गुरु	२० मई	मृग.	रे. ८॥ऽशु. ॥ऽचौर॥॥ ल.कुंभ रात्री १२।३९ बजे। (सप्तमस्थ गुरु पूज्य)

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

२ शुक्र २१ मई मृग. रे. ८।ऽशु.॥ऽचौर॥॥ ल.कर्क दि.९।१८बजे। ल.सिंह दि.११।३७ बजे।
२ शुक्र २१ मई मृग. रे. ९।ऽशु.॥॥॥। ल.कुंभ रात्री १२।३५ बजे। (सप्तमस्थ गुरु पूज्य)
७ बुध २६ मई मघा रे. ७॥॥ऽग्निऽऽ॥ ल.कुंभ रात्री १२।१५ से १।९ बजे तक। (सप्तमस्थ गुरु पूज्य)
९ शुक्र २८ मई उ.फा. रे. ८॥॥ऽनृप॥। ल.धूलिमुखे सायंकाले। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
१० शनि २९ मई उ.फा. रे. १०॥॥॥॥॥ ल.कर्क दिवा ८।४७ बजे। ल.सिंह दिवा ११।६ बजे
१० शनि २९ मई हस्त रे. ८ऽश.॥॥ऽ॥ ल.गौधूलि सायं काले
१२ सोम ३१ मई चित्रा रे. १०॥॥॥॥॥ ल.कर्क दिवा ८।३९ बजे। ल.सिंह दिवा १०।५८ बजे।

आषाढ शुक्ल पक्षः

४ भौम २२ जून मघा रे. ७ऽमं.॥॥ऽऽ॥ ल.कुंभ रात्री १०।३० बजे। ल.वृष २।५९ बजे।
५ बुध २३ जून मघा रे. ६ऽमं.॥॥ऽरोगऽऽ॥ ल.कन्या दिवा ११।४४ बजे।
८ शनि २६ जून चित्रा रे. ७ऽश.॥॥ऽग्निऽ॥। ल.वृष रात्री २।४४ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
९ रवि २७ जून चित्रा रे. ७ऽश.॥॥ऽग्निऽ॥। ल.सिंह दिवा ९।११बजे(रिक्ता तिथि आवश्यके)
९ रवि २७ जून चित्रा रे. ८ऽश.॥॥ऽ॥। ल.कन्या दिवा ११।२९ बजे।

सभी जगह करने योग्य विवाह मुहूर्त्ताः कार्तिक शुक्ल पक्षः

११ सोम २२ नवंबर रेवति रे. ८॥॥ऽगुऽग्नि॥॥ ल.कन्या रात्री १।४१ बजे।
१५ शुक्र २६ नवंबर रोहि. रे. ७॥॥ऽसूऽग्निऽ॥ ल. कन्या रात्री १।२५ बजे।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः

१ शनि २७ नवंबर रोहि. रे. ७॥॥ऽसूऽअग्निऽ॥ ल.मिथुन रात्री ६।३२बजे। ल.सिंह रात्री ११।५ बजे
१ शनि २७ नवंबर मृग. रे. १०॥॥॥॥॥ ल.कन्या रात्री २।८ बजे उपरांत।
२ रवि २८ नवंबर मृग. रे. ९॥॥ऽनृप॥॥ ल.सिंह रात्री ११।२ बजे। ल.कन्या रात्री १।१० बजे।
९ सोम ६ दिसं. उ.फा. रे. ७ऽशु॥॥ऽग्निऽ॥ ल.धनु प्रातः ७।४६ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
९ सोम ६ दिसं. हस्त रे. ७॥ऽगु.॥॥ऽऽ ल.सिंह रात्री १०।२८ बजे।
११ बुध ८ दिसं. स्वाती रे. ८॥॥ऽराहु॥ऽ॥ ल.सिंह रात्री १०।२२ बजे। ल.कन्या रात्री १२।४० बजे।
१२ गुरु ९ दिसं. स्वाती रे. ८॥॥ऽराहु॥ऽ॥ ल.धनु प्रातः ७।३५ बजे।

पौष शुक्ल पक्षः

७ रवि १६ जन. रेवति रे. ८॥॥ऽग्निऽ॥ ल.कन्या रात्री १०।१० बजे।
१२ शुक्र २१ जन. मृग. रे. ८ऽसू॥ऽमं.॥॥। ल.कन्या रात्री ९।४९ बजे।
१२ शनि २२ जन. मृग. रे. ८ऽसू॥ऽमं.॥॥। ल.मीन दिवा १०।०० बजे।

माघ कृष्ण पक्षः

४ शनि २९ जन. उ.फा. रे. ९॥॥॥ऽ॥ ल.वृश्चिक १।५३ बजे।
५ रवि ३० जन. उ.फा. रे. ९॥॥॥ऽ॥ ल.मीन दिवा ९।२७ बजे।
५ रवि ३० जन. हस्त रे. ८॥॥ऽरोगऽ॥ ल.वृश्चिक रात्री १।४९ बजे।
६ सोम ३१ जन. हस्त रे. ८॥॥ऽरोगऽ॥ ल. मीन दिवा ९।२३ बजे।

ति. वार ता. मास नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण

९ गुरु ३ फर. अनु. रे. ८ऽशु.॥॥॥ऽ॥ ल.कन्या रात्री ८।५७ बजे।
१३ सोम ७ फर. उ.षा. रे. ७ऽमं.॥ऽश.ऽचौर॥॥ ल.मीन दिवा ८।५७ बजे।
१३ सोम ७ फर. उ.षा. रे. ८ऽमं.॥ऽश.॥॥। ल. कन्या रात्री ८।४२ बजे।

माघ शुक्ल पक्षः

४ शनि १२ फर. रेवति रे. ८।ऽ॥॥ऽ॥ ल.कन्या रात्री ८।२१ बजे। (रविनिरंश)

पंजाब आदि द्विगर्तदेशीय प्रांतों हेतु विवाह मुहूर्त्ताः

प्र.श्रावण कृष्ण पक्षः

७ गुरु ८ जुलाई उ.भा. रे. ९॥॥ऽनृप॥॥ ल.कुंभ रात्री ९।२७ बजे।
७ गुरु ८ जुलाई रेवती रे. ७ऽशु.॥॥॥ऽ।ऽ ल.वृष रात्री १।५६ बजे।
८ शुक्र ९ जुलाई रेवती रे. ७ऽशु.॥॥॥ऽ।ऽ ल.कन्या दिवा १०।४१ बजे। ल.कुंभ रात्री ९।२३ बजे।
८ शुक्र ९ जुलाई अश्वि.रे. ६॥।ऽगुरु।ऽचौर।ऽ।ऽ ल.वृष रात्री १।५२ बजे। (पाद वेधेन गुरु वेधाऽभाव)
९ शनि १० जुलाई अश्वि.रे. ७॥।ऽगुरु।ऽचौर।ऽ॥ ल.कुंभ रात्री ९।१९ बजे। (पाद वेधेन गुरु वेधाऽभाव)
११ भौम १३ जुलाई रोहि. रे. ७।ऽऽशु.॥॥ऽ॥ ल.कुंभ रात्री ९।८ बजे।

द्वि.श्रावण शुक्ल पक्षः

२ बुध १८ अग. उ.फा. रे. ७ऽमं.।ऽगुरु॥ऽग्नि॥॥ ल.कर्क रात्री ३।२३ बजे।
४ शुक्र २० अग. चित्रा रे. ७ऽश.॥॥ऽनृपऽ॥ ल.कर्क रात्री ३।१५ बजे।
१३ शनि २८ अग. धनि. रे. ७॥॥।ऽग्निऽऽ॥ ल.वृष रात्री २२।५७ बजे। ल.कर्क रात्री २।४४ बजे।

भाद्रपद कृष्ण पक्षः

२ भौम ३१ अग. उ.भा. रे. ७।ऽ॥ऽ।ऽ॥। ल.वृष रात्री १०।२७ बजे। ल.कर्क रात्री २।३४ बजे।

आश्विन शुक्ल पक्षः

८ गुरु २१ अग. उ.षा. रे. ७॥॥ऽऽनृपऽ॥ ल.वृश्चि.दिवा ८।२९ बजे। ल.धनु दिवा १०।४६ बजे।
९ शुक्र २२ अक्टू. श्रवण रे. १०॥॥॥॥॥ ल.वृश्चिक दिवा८।२५ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
१३ भौम २६ अक्टू. रेवती रे. ७।ऽ।ऽशु.।ऽनृप॥॥ ल.वृष सायं ६।४३ बजे। (पाद वेधेन शुक्र वेधाऽभाव)(रिक्ता तिथि आवश्यके)

कार्तिक कृष्ण पक्षः

३ रवि ३१ अक्टू. मृग. रे. ७॥॥ऽनृपऽऽ॥ ल.सिंह रात्री १२।५० बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
४ सोम १ नवं. मृग. रे. ९॥॥॥ऽ॥ ल.वृश्चिक प्रातः ७।४६ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
९ शनि ६ नवं. मघा रे. ८॥॥ऽग्निऽ॥ ल.धनु दिवा ९।४३ बजे। ल.वृष सायं ५।५९ बजे। ल.कन्या रात्री २।४३ बजे।
१२ भौम ९ नवं. उ.फा. रे. ७।ऽ॥॥ऽ।ऽ ल.धनु दिवा ९।३२ बजे।
१२ भौम ९ नवं. हस्त रे. ७॥ऽगु.शु.॥॥ऽ।ऽ ल.वृष सायं ५।४९ बजे। ल.सिंह रात्री १२।१५ बजे।

सं. २०६१ के दोष विवरण सहित अशुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
14 अप्रै.	बुध	धनि	मृत्युबाण दोष
17 अप्रै.	शनि	उ.भा.	कृष्ण त्रयोदशी दोष
23 अप्रै.	शुक्र	मृग	मंगल की युति, मृत्युबाण
24 अप्रै.	शनि	मृग	मंग-शुक्र युति, मृत्युबाण
3 मई	सोम	चित्रा	ग्रहण पूर्व दिन वर्ज्य
3 मई	सोम	स्वा.	ग्रहण पूर्वादि, केतु युति
4 मई	मंगल	स्वा.	ग्रहण शूल नक्षत्र
5 मई	बुध	अनु.	ग्रहण शूल दिन
6 मई	गुरु	अनु.	ग्रहण शूल
7 मई	शुक्र	मूला	ग्रहण शूल
18 जून	शुक्र	मृग	क्षीण चन्द्र, लग्नाऽभाव
20 जून	रवि	पुन	शनि की युति
21 जून	सोम	पुष्य	मंगल की युति
25 जून	शुक्र	उ.फा.	मृत्युबाण दोष
27 जून	रवि	स्वा.	केतु युति, ग्रहण शूल
28 जून	सोम	स्वा.	केतु युति, ग्रहण शूल
29 जून	मंगल	अनु.	राहु का वेध
30 जून	बुध	अनु.	राहु का वेध
1 जुला.	गुरु	मूला	शनि का वेध
2 जुला.	शुक्र	मूला	शनि का वेध
4 जुला.	रवि	धनि.	रात्रि १९/३० के बाद मृत्युबाण
14 जुला.	बुध	रोह.	दिवसे मृत्युबाण दोष
15 जुला.	गुरु	मृग.	कृष्ण त्रयो., मासान्त
17 अग.	मंगल	मघा	क्षीण चन्द्र, मृत्युबाण
19 अग.	गुरु	उ.फा.	लग्नाऽभावः
20 अग.	शुक्र	हस्त	लग्नाऽभावः
21 अग.	शनि	स्वा.	केतु युति, ग्रहण शूल
22 अग.	रवि	स्वा.	केतु युति, ग्रहण शूल
26 अग.	गुरु	उ.षा.	रात्रि लग्ने मृत्युबाण दोष
27 अग.	शुक्र	श्रवण	सूर्य का वेध
28 अग.	शनि	श्रवण	सूर्य का वेध
31 अग.	मंगल	उ.भा.	शूल योगे भुजंगपात
1 सितं.	बुध	उ.भा.	शूल योगे भुजंगपात
2 सितं.	गुरु	अश्वि	राहु की युति क्रांति साम्य (१३/१७ से १७/१६ तक)
3 सितं.	शुक्र	अश्वि	राहु की युति
15 अक्टू.	शुक्र	स्वा.	मासान्त
16 अक्टू.	शनि	अनु.	संक्रांति दोष
18 अक्टू.	सोम	मूला.	शनि का वेध
19 अक्टू.	मंगल	मूला.	शनि का वेध
22 अक्टू.	शुक्र	श्रवण	शूल योगे भुजंगपात
27 अक्टू.	बुध	रेव.	भद्रा दोष व्याप्त
27 अक्टू.	बुध	अश्वि	राहु की युति
28 अक्टू.	गुरु	अश्वि	राहु की युति
14 नवं.	रवि	मूला	मासान्त
15 नवं.	सोम	मूला	संक्रांति दोष
16 नवं.	मंगल	उ.षा.	भुजंगपात
17 नवं.	बुध	उ.षा.	मृत्युबाण दोष
19 नवं.	शुक्र	धनि.	भद्रा दोष व्याप्त
23 नवं.	मंगल	अश्वि.	राहु की युति
3 दिसं.	गुरु	मघा	भद्रा दोष व्याप्त
8 दिसं.	बुध	चित्रा	केतु-युति दोषः
14 दिसं.	मंगल	उ.षा.	मासान्त
15 जन.	शनि	उ.भा.	दिने मृत्युबाण दोषः
17 जन.	चन्द	अश्वि	राहु-युति, भद्रा
21 जन.	शुक्र	मृग	सूर्य का वेध
22 जन.	शनि	मृग	सूर्य का वेध
26 जन.	बुध	मघा	सूर्य का वेध
27 जन.	गुरु	मघा	सूर्य का वेध
1 फर.	मंगल	चित्रा	केतु-युति, भुजंगपात
1 फर.	मंगल	स्वा.	भुजंगपात, मृत्युबाण
2 फर.	बुध	स्वा.	मृत्युबाण
5 फर.	शनि	मूला	भौम युति, शनि वेध
6 फर.	रवि	मूला	भौम युति, शनि वेध
7 फर.	सोम	उ.षा.	कृष्ण त्रयोदशी

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
17 अप्रै.	शनि	वैशा.कृ. १३	उ.भा.	अभि. (नूतन)
22 अप्रै.	गुरु	वै.शु. ३	रोहि.	दोप.२।३३ बाद, स्वयं सिद्ध
24 अप्रै.	शनि	वै. शु. ५	मृग	मुहूर्त ६।५८ से ८।५२ तक
26 अप्रै.	सोम	वै.शु. ६	पुन.	दि. ल. वृष व सिंह, अभि.
1 मई	शनि	वै.शु. ११	उ.फा.	भद्रोत्तरे अभि. ११।३९ के बाद
2 मई	रवि	वै.शु. १२	हस्त	दि. ल. २।५ अभि. आवश्यके
10 मई	सोम	ज्ये.कृ.६।७	उषा.	प्रातः ७।१२ तक भद्रापूर्वे
12 मई	बुध	ज्ये.कृ. ९	धनि.	प्रातः ५।४६ से ७।४१ तक
15 मई	शनि	ज्ये.कृ. १२	उ.भा.	मिथुन (नूतन)
15 मई	शनि	ज्ये.कृ. १२	रेवती	सिंह (नूतन)
29 मई	शनि	ज्ये. शु. १०	उ.फा.	सिंह, अभि. (नूतन)
31 मई	सोम	ज्ये.शु. १२	चित्रा	सिंह, अभि. (नूतन)
23 अग.	सोम	द्वि.श्रा.शु.८	अनु.	धनु १५।४३ से (नूतन)
8 नवं.	सोम	का.कृ. ११	उ.फा.	कुंभ (नूतन)
10 नवं.	बुध	का.कृ. १३	चित्रा	कुंभ (नूतन)
18 नवं.	गुरु	का.शु. ७	श्रवण	ल. ९, अभिजित
19 नवं.	शुक्र	का.शु. ८	धनि.	अभि. ११।२५ के बाद
22 नवं.	सोम	का.शु. ११	रेव.	प्रा. ९।०६ तक भीष्म पं. वि.
27 नवं.	शनि	मार्ग.कृ. १	मृग.	दिने मुहूर्त्त अभिजित
2 दिसं.	गुरु	मा.कृ. ५	पुष्य	अभिजित, गुरु पुष्य योगे
8 दिसं.	बुध	मा.कृ. ११	चित्रा	धनु, कुंभ (नूतन)
9 दिसं.	गुरु	मा.कृ. १२	स्वा.	मु. ७।४९ से ९।५० तक

सन् 2005 ई. में

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
20 जन.	गुरु	पौ.शु. ११	रोहि.	अभिजित ११।४४ उप.
21 जन.	शुक्र	पौ.शु. १२	रोहि.	दिने ल. मीन, गुरु का दान
30 जन.	रवि	माघ कृ. ५	उ.फा.	ल. मीन (चं. गु. दान), आ.
31 जन.	सोम	मा. कृ. ६	हस्त	ल. मीन (चं. गु. का दान)
2 फर.	बुध	मा. कृ. ८	स्वा.	ल. मीन प्रा. १०।२० के बाद, अभि.,२ (वृष ल. दोप. १४।१० तक)
4 फर.	शुक्र	मा. कृ. १०	अनु.	दिने लग्न १२ (चन्द्र दान)
7 फर.	सोम	मा.कृ. १३	उ.षा.	कुंभ, मीन (नूतन)
17 फर.	गुरु	मा.शु. ९	रोहि.	मीन, वृष (नूतन)

पुरातन (जीर्ण) गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
18 जून	शुक्र	आ.शु. १	मृग.	मुहूर्त ९।१८ तक
20 जून	रवि	आ.शु.२।३	पुन.	प्रातः ९।४५ से १२।०५ तक
18 अग.	बुध	प्र.श्रा.शु.२।३	उ.फा.	प्रातः १०।११ के बाद, अभि.
19 अग.	गुरु	श्रा.शु. ३	उ.फा.	मुहूर्त प्रातः ८।१२ तक
20 अग.	शुक्र	श्रा.शु. ५	हस्त	प्रातः ७।५२ के बाद, अभि.
21 अग.	शनि	श्रा.शु. ५।६	चित्रा	प्रातः ८।०२ से १०।२० तक

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
27 अग.	शुक्र	श्रा.शु. १२	उ.षा.	दोपहर २।३० के बाद
30 अग.	सोम	श्रा.शु. १५	शत.	चं.दा. मु. ७।२६ से ९।४५ तक
2 सितं.	गुरु	भा.कृ. ४	रेव.	लग्न ६, ८, अभिजित्
20 अक्टू.	बुध	भा.कृ. ७	उ.षा.	दोपहर १५।१२ से १६।३० तक
21 अक्टू.	गुरु	भा.कृ. ८	उ.षा.	ल. ८, ९, अभिजित्
23 अक्टू.	शनि	आश्वि.शु.१०	धनि.	ल. ८, ९, अभिजित्
25 अक्टू.	सोम	आ.शु. १३	उ.भा.	ल.८,९ (धनु प्रा. ११।०९ तक)
1 नवं.	सोम	कार्ति.कृ.४	मृग.	दि.ल. ९ (धनु), चं. दा.
3 नवं.	बुध	का.कृ. ६	पुर्न.	९ (चन्द दानं), अभिजित्
4 नवं.	गुरु	का.कृ. ७	पुष्य	प्रातः ९।०८ तक (भद्रा पूर्वं अभिजित्, गुरु पुष्य योगः)
8 नवं.	सोम	का.कृ. ११	हस्त	ल. ९, प्रातः ११।३६ के बाद
20 नवं.	शनि	कार्ति. शु. ९	शत.	अभि. (जीर्ण)
13 नवं.	शनि	का.कृ. १	अनु.	लग्न ९ (चन्द्र दान)

नींव रखना एवं गृहारंभ मुहूर्त्त सं. २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
22 अप्रै.	गुरु	वै. शु. ३	रोहि.	दोप. २।३३ उप., स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त (आवश्यकता में)
24 अप्रै.	शनि	वै. शु. ५	मृग.	दिने ६।५८ से ८।५२ तक
26 अप्रै.	सोम	वै. शु. ६	पुन.	दिने वृष व सिंह लग्न, अभि.
1 मई	रवि	वै. शु. ११	उ.फा.	अभि. ११।३९ के बाद भद्रोत्तरे
६ मई	गुरु	ज्ये. कृ. २	अनु.	अभिजिते
10 मई	सोम	ज्ये. कृ. ६	उ.षा.	मु. ७।१२ तक, भद्रापूर्वे
29 मई	शनि	ज्ये. शु. १०	उ.फा.	सिंह
31 मई	सोम	ज्ये.शु. १२	चित्रा	सिंह
26 जून	शनि	आ.शु. ८	हस्त	सिंह (प्रा. ९।२२ से ११।४१ तक)
18 अग.	बुध	प्र.श्रा.शु. ३	उ.फा.	मुहूर्त्त प्रातः १०।११ उप.
19 अग.	गुरु	प्र.श्रा.शु. ३	उ.फा.	मुहूर्त्त १०।५३ तक
21 अग.	शनि	प्र.श्रा.शु.५।६	चित्रा	ल. ६ (प्रातः ८।०३ से १०।२० तक)
23 अग.	सोम	प्र.श्रा.शु. ८	अनु.	भद्रा स्वर्गेशुभा ९।५५ उप.
30 अग.	सोम	प्र.श्रा.शु. १५	शत.	ल. ८ (दोप. १२।०७ से १४।२७ तक) अभि. च.

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
18 नवं.	गुरु	का.शु. ७	श्रवण	दिने ९।१२ से ११।१५ तक
20 नवं.	शनि	कार्ति. शु. ९	शत.	धनु, अभिजिते
22 नवं.	सोम	का.शु. ११	उ.भा.	दिने ९।०६ तक
27 नवं.	शनि	मार्ग कृ. १	रोहि.	दि. १२।२१ से १३।४६ तक, अभि. च.
1 दिसं.	बुध	मा.कृ. ५	पुष्य	मं. के. दान १०।४७ के बाद
2 दिसं.	गुरु	मा.कृ. ५	पुष्य	अभिजित, गुरु पुष्य योगे
9 दिसं.	गुरु	मा.कृ. १२	स्वाती	ल. ९ (धनु ७।४९ से ९।५२ तक)

सन् 2005 ई. में

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
20 जन.	गुरु	पौ.शु.११	रोहि.	अभिजित मुहूर्त्त
31 जन.	सोम	माघ कृ. ६	हस्त	ल. १२ (चं.गु.दा.)(प्रातः ९।३० से १०।५२ तक) अभि.
4 फर.	शुक्र	मा. कृ. १०	अनु.	मीन ल. (प्रा. ९।२५ से १०।३५ तक), अभि. (मीने चं.गु. का दान)
17 फर.	गुरु	माघ शु. ९	रोहि.	मीन, वृष

सं. २०६१ में सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०६१ वि.

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
15 अप्रै.	गुरु	वै.कृ. ११	शत.	अभिजित्, सिंह
17 अप्रैल	शनि	वै.कृ. १३	उ.भा.	ल. मिथुन व अभिजिते
22 अप्रै.	गुरु	वै.शु. ३	रोहिणी	दोपहर २/३३ के बाद
23 अप्रै.	शुक्र	वै.शु. ४	रोहिणी	श्री गणेश
24 अप्रै.	शनि	वै.शु. ५	मृग	६/५८ से ८/५२ तक
26 अप्रै.	सोम	वै.शु. ६	पुर्न.	लग्न २, ५, अभिजित्
1 मई	शनि	वै.शु. ११	उ.फा.	मु. ११/३९ के बाद, अभि.
2 मई	रवि	वै.शु. १२	हस्त	लग्न २, ५, अभिजित्
6 मई	गुरु	ज्ये.कृ. २	अनु.	ल. सिंह
9 मई	रवि	ज्ये.कृ. ५/६	उ.षा.	अभि. (१२/१० उप.), आवश्यकत्वेन
10 मई	सोम	ज्ये.कृ. ६	उ.षा.	प्रातः ७/१२ तक
12 मई	गुरु	ज्ये.कृ. १०	शत.	ल. मिथुन
18 जून	शुक्र	आ.शु. १	मृग.	प्रातः ९/१८ तक
20 मई	गुरु	ज्ये.शु. १	रोहि.	ल. मिथुन व सिंह
24 मई	सोम	ज्ये.शु. ५	पुष्य	ल. सिंह

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
29 मई	शनि	ज्ये.शु. १०	उ.फा.	ल. अभिजिते
31 मई	सोम	ज्ये.शु. १२	चित्रा	ल. सिंह
20 जून	रवि	आ.शु. २/३	पुर्न.	प्रातः ९/४५ से १२/०५ तक (शनि युत्या, शनि पूज्य आवश्यके)
21 जून	सोम	आ.शु. ३	पुष्य	ल. ५, अभि., भौम युति भौम युत्यां भौम पूज्यं दानं
27 जून	रवि	आषा. शु. ९	चित्रा	ल. सिंह
28 जून	सोम	आषा.शु. १०	स्वाती	ल. सिंह
27 नवं.	शनि	मार्ग. कृ. १	रोहिणी	ल. धन
2 दिसं.	गुरु	मार्ग. कृ. ५	पुष्य	ल. धन अभिजिते
6 दिसं.	सोम	मार्ग. कृ. ९	उ.फा.	ल. अभिजिते
8 दिसं.	बुध	मार्ग. कृ. ११	चित्रा	ल. अभिजिते
9 दिसं.	गुरु	मार्ग. कृ. १२	स्वाती	ल. अभिजिते

सन् 2005 ई.

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
16 जन.	रवि	पौ.शु. ७	रेवती	लग्न ९, गु. दा., अभिजित्
20 जन.	गुरु	पौ.शु. ११	रोहिणी	मु. ११/४४ उप., अभि.
21 जन.	शुक्र	पौ.शु. १२	रोहिणी	मीन (गुरु दान), अभि.
22 जन.	शनि	पौष शु. १२	मृग.	ल. मीन
30 जन.	रवि	माघ कृ. ५	उ.फा.	मीन (चन्द्र गुरु दान)
31 जन.	सोम	मा.कृ. ६	हस्त	मीन (चन्द्र गुरु दान)
2 फर	बुध	मा.कृ. ८	स्वाती	मीन १०/२० के बाद, अभि., २
4 फर	शुक्र	मा.कृ. १०	अनु.	मीन (चन्द्र दान), अभि.
9 फर.	बुध	माघ शु. १	धनि.	ल. मीन-वृष
10 फर.	गुरु	माघ शु. २	शत.	ल. मीन-वृष

द्विरागमन मुहूर्त्त सं. २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
15 अप्रै.	गुरु	वै.कृ. ११	शत.	लग्न ५ (दोप. २।०५ से ४।२४ तक)
22 अप्रै.	गुरु	वैशा.शु. ३	रोहि.	दोप. २।३३ के बाद
26 अप्रै.	सोम	वैशा शु. ६	पुर्न.	लग्न वृष सिंह, सिंह, अभिजित्
3 मई	सोम	वैशा.शु. १३	चित्रा	लग्न वृष, सिंह

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
10 मई	सोम	ज्ये.कृ. ६	उ.षा.	द्वि.मु. ७।१२ तक, भद्रा पूर्वे
12 मई	बुध	ज्ये.कृ. ९	धनि.	प्रातः ५।४६ से ७।४१ तक
18 नवं.	गुरु	का.शु. ७	श्रवण	दि.ल. ९।१२ से ११।१५ तक
19 नवं.	शुक्र	का.शु. ८	धनि.	दोप. ११।२५ उप. भद्रा के बाद अभि.
22 नवं.	सोम	का.शु. ११	उ.भा.	मुहूर्त्त प्रातः ९।०६ तक
1 दिसं.	बुध	मार्ग. कृ. ५	पुष्य	मीन लग्न मं. के दान १०।७ के बाद
2 दिसं.	गुरु	मार्ग.कृ. ५	पुष्य	अभि. गुरु-पुष्य योग
8 दिसं.	बुध	मार्ग.कृ. ११	चित्रा	ल. धनु (७।५२ से ९।५५ तक)
9 दिसं.	गुरु	मार्ग.कृ. १२	स्वाति	ल. धनु ७।४९ से ९।५२ तक)

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त सं. २०६१ वि.

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
15 अप्रै.	गुरु	वै. कृ. ११	शत	मुहूर्त्त अभिजित
22 अप्रै.	गुरु	वै. शु. ३	रोहि.	मुहूर्त्त दोपहर १४।३३ के बाद स्वयं सिद्ध मुहूर्त
26 अप्रै.	सोम	वै. शु. ६	पुन.	लग्न २, अभिजित
6 मई	गुरु	ज्ये. कृ. २	अनु.	प्रातः ८।०४तक, अभि. (राहु वेध दान व पू. अत्यावश्यके)
10 मई	सोम	ज्ये.कृ. ६।७	श्रवण	मु. प्रातः ७।१२ तक, अभि. (अभि. में भद्रा का परिहार है)
12 मई	बुध	ज्ये.कृ. ९	धनि.	मु. ७।४० तक तदुपरांत सिंह ल. (१२।१८ से १४।३९ तक)
18 जून	शुक्र	आ.शु. १	मृग.	मुहूर्त्त प्रातः ९।१८ तक घं. मि.

(सन् 2005 ई.)

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
16 जून	रवि	पौष शु. ७	रेवती	कुं. ल. प्रातः ९।१५ से १०।२९ गुरु दान व पूजा, विप्राणां
17 जन.	सोम	पौष शु. ८	अश्वि.	ल. कुं. (प्रातः ९ से १०।२५), अभि. (राहु का दा. व पू.)
31 जन.	सोम	माघ कृ. ६	हस्त	ल. मीन (प्रातः ९।३० से १०।५२ तक), (चन्द्र गुरु का दान, अभि.)
2 फर.	बुध	माघ कृ. ८	स्वाती	ल. कुंभ (प्रातः ७।५७ से ९।२२)(गुरु की पूजा व दान)
4 फर.	शुक्र	माघ कृ. १०	अनु.	मु. ९।५६ तक, भद्रा पूर्वे

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)

विपणी (दुकान आदि व्यवसाय) शुरू करने के मुहूर्त्त २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
16 अप्रै.	शुक्र	वै.कृ. १२	पू.भा.	मुहूर्त्त अभि., सिंह लग्नं च.
22 अप्रै.	गुरु	वै.कृ. ३	रोहि.	दोपहर २।३३ उप. स्वयं सिद्ध मु.
24 अप्रै.	शनि	वै.कृ. ५	मृग.	प्रातः ६।५८ से ८।५२ तक, अभि.
26 अप्रै.	सोम	वै.कृ. ६	पुन.	लग्न २, ५ एवं अभिजित्
1 मई	शनि	वै.कृ. ११	उ.फा.	मु. ११।३९ के बाद, भद्रोत्तरे, अभि.
2 मई	रवि	वै.कृ. १२	हस्त	ल. दिन २, ४, अभिजित्
8 मई	शनि	ज्ये.कृ. ५	मूला	मु. दोपहर १२।३४ के बाद
9 मई	रवि	ज्ये.कृ. ५	उ.षा.	दिन लग्न सिंह
10 मई	सोम	ज्ये.कृ. ६	उ.षा.	मु. प्रा. ७।१२ तक, भद्रापूर्वे
18 जून	शुक्र	आ.शु. १	मृग.	प्रा. ९।१८ तक, चं. पू. व दा.
26 जून	शनि	आ.शु. ८	हस्त	लग्न सिंह, अभिजित्
27 जून	रवि	आ.शु. १०	चित्रा	ल. सिंह (११।१० बाद), अभि.
3 जुला.	शनि	प्र.श्रा.कृ. १	उ.षा.	लग्न सिंह, कन्या, अभिजित्
4 जुला.	रवि	प्र.श्रा.कृ. २	श्रवण	लग्न कन्या, वृश्चिक अभि.
5 जुला.	सोम	प्र.श्रा.कृ. ३	धनि.	लग्न ६, ७ (शुक्र दान)
7 जुला.	बुध	प्र.श्रा.कृ. ६	पू.भा.	ल.सिंह (चं.दा.) अभि.
8 जुला.	गुरु	प्र.श्रा.कृ. ७	उ.भा.	अभि. ल. कन्या (१२।७५ उप.)
9 जुला.	शुक्र	प्र.श्रा.कृ. ८	रेवती	अभिजित, कन्या
18 जुला.	बुध	प्र.श्रा.शु. २	उ.फा.	मु.प्रा. १०।११ उपरांत, अभि.
19 अग.	गुरु	श्रा.शु. ३	उ.फा.	मु. प्रातः ८।१२ तक, अभि.
21 अग.	शनि	श्रा.शु. ८	चित्रा	लग्न कन्या, अभिजित्
25 अग.	बुध	श्रा.शु. १०	मूल	ल. कन्या (मं.दा.), अभि.

कार्तिक में सूर्य की पूजा व दान आदि करना प्रशस्त होगा।

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
21 अक्टू.	गुरु	आश्वि. शु. ८	उ.षा.	ल. वृश्चिक, धनु, अभि.
23 अक्टू.	शनि	आश्वि. शु.१०	धनि.	वृश्चिक व धनु (११।७५ तक)
25 अक्टू.	सोम	आश्वि.शु. १३	उ.भा.	८ व ९ (धनु ११।०९ तक)
21 अक्टू.	रवि	का. कृ. ३	रोहि.	वृश्चिक (चंदा.) अभिजित
1 नवं.	सोम	का. कृ. ५	मृग.	मुहूर्त्त दोपहर २।५७ उपरांत
3 नवं.	बुध	का. कृ. ६	पुन.	लग्न धनु (चन्द्र दान), अभि.
4 नवं.	गुरु	का. कृ. ७	पुष्य	वृश्चिक लग्न (प्रातः ९।०८ तक, भद्रा पू.) अभि.
8 नवं.	सोम	का. कृ. ११	हस्त	दोपहर ११।३६ के बाद
13 नवं.	शनि	का. शु. १	अनु.	लग्न धनु (चन्द्र दान)
18 नवं.	गुरु	का. शु. ७	श्रवण	लग्न धनु. अभिजित्
19 नवं.	शुक्र	का. शु. ८	धनि.	दोपहर ११।२५ के बाद (भद्रा
22 नवं.	सोम	का. शु. ११	रेवती	मुहूर्त्त प्रातः ९।०६ तक
27 नवं.	शनि	मार्ग. कृ. १	मृग.	अभिजित्
2 दिसं.	गुरु	मार्ग. कृ. ५	पुष्य	अभिजित् (गुरु पुष्य योग)
9 दिसं.	गुरु	मार्ग. कृ. १२	स्वा.	प्रातः ७।४९ से ९।५० तक

(सन् 2005 ई.)

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
16 जन.	रवि	पौष शु. ७	रेव.	लग्न ९, गुरु दान
20 जन.	गुरु	पौष शु. ११	रोहि.	मु. ११।४४ उप. अभिजित्
21 जन.	शुक्र	पौष शु. १२	रोहि.	मीन (गुरु का दान)
30 जन.	रवि	माघ कृ. ५	उ.फा.	मीन (चन्द्र गुरु दान)
31 जन.	सोम	माघ कृ. ६	हस्त	मीन (चन्द्र गुरु दान)
2 फर.	बुध	माघ कृ. ८	स्वा.	मीन १०।२० के बाद अभि. २
4 फर.	शुक्र	माघ कृ. १०	अनु.	दि.ल. मीन. (चं.दा.) अभि.

उपनयन यज्ञोपवीत मुहूर्त्त सं. २०६१

ता.मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं.मि.)
25 अप्रैल	रवि	वैशा. शु. ५	आर्द्रा	आर्द्रायां शनि युति दोषः
26 अप्रैल	सोम	वैशा. शु. ६	पुन.	लग्न अभि. कर्क, सिंह
28 अप्रैल	बुध	वैशा. शु. ८	आश्ले.	ल.मु. २, ५ (वृष सिंह), अभि.
2 मई	रवि	वैशा. शु. १२	हस्त	लग्न मु. २, ४ अभिजित्
6 मई	गुरु	ज्ये.कृ. २	अनु.	ल. मिथुन
9 मई	रवि	ज्ये. कृ. ५	उ.षा.	२ (चं. ८वें पू. गु. केन्द्रे प्रशस्त)
12 मई	गुरु	ज्ये.कृ. १०	शत.	ल. मिथुन
24 जून	गुरु	आषा. शु. ६	पू.षा.	मु. ल. ५ (चं.दा.), अभि.
26 मई	बुध	ज्ये.शु. ७	आश्ले.	ल. कर्क
30 मई	रवि	ज्ये.शु. ११	हस्त	ल. कर्क
31 मई	सोम	ज्ये.शु. १२	चित्रा	ल. कर्क-सिंह

शेष पृष्ठ 80 पर...

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०६१ विक्रमी (दिनांक २१ मार्च २००४ से ८ अप्रैल २००५ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर को सूर्य व कन्या को गुरु बल विचार सहित) बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उन राशिवाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेषः-अप्रैल-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१४ अप्रैल से १५ जून तक	**मेषः-अप्रैल**-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	२७ अगस्त से वर्ष पर्यन्त
वृषः-मई-१४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	१४ मई से १४ जून १५नवं. से १५दिसं. १३जन. से १२ फर. तक	**वृषः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, **मई**-१, २, ९, १०, ११, १२, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ अगस्त तक
मिथुनः-अप्रैल-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, १२, **जून**-२२, २३, २७, **नवंबर**-२२, २८, **दिसंबर**-८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	१४ जून से १६जुला. १३जन. से १२फर. तक	**मिथुनः-अप्रैल**-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, २६, २८, ३१, **जून**-२२, २३, २७, **नवंबर**-२२, २८, **दिसंबर**-८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त
कर्कः-अप्रैल-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१५नवं. से १५दिसं. १३ जन. से १२फर. तक	**कर्कः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	२७ अगस्त से वर्ष पर्यन्त
सिंहः-अप्रैल-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१३अप्रैल से १४ मई १२फर. से १४ मार्च तक	**सिंहः-अप्रैल**-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ अगस्त तक

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
कन्याः-मई-१४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	१४ मई से १४ जून १३ जन. से १२फर. तक	**कन्याः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, **मई**-१,२, ९, १०, ११, १२, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त
तुलाः-अप्रैल-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, १२, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **फरवरी**-१२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त	**तुलाः-अप्रैल**-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, १२, १४, १६, २१, २६, २८, ३१, **जून**-२२, २३, २७, **नवंबर**-२२, २८, **दिसंबर**-८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३१ **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	२७ अगस्त से वर्षान्त तक
वृश्चिकः-अप्रैल-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१४ मई से १४ जून १५ नवं.से १५ दिसं. तक	**वृश्चिकः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७,१२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ अगस्त तक
धनुः-अप्रैल-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१३ अप्रै. से १४ मई १४ जून से १६ जुला. १३ जन. से १२ फर.	**धनुः-अप्रैल**-१३, १४, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, ११, १२, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	२७ अगस्त से वर्ष पर्यन्त
मकरः-मई-१४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	१४ मई से १४ जून १३ जन. से १४ मार्च	**मकरः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, **मई**-१, २, ९, १०, ११, १२, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, ३१, **जून**-२२, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ अगस्त तक
कुंभः-अप्रैल-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, १२, **जून**-२२, २३, २७, **नवंबर**-२२, २८, **दिसंबर**-८, ९, **फरवरी**-१२ शुभ हैं।	१४ जून से १६ जुला. १२ फर. से १४ मार्च	**कुंभः-अप्रैल**-१४, १७, २९, **मई**-१, ८, ९, १०, १२, १४, १६, २१, २६, २८, ३१, **जून**-२२, २३, २७, **नवंबर**-२२, २८, **दिसंबर**-८, ९, **जनवरी**-१६, २१, २२, २९, ३१ **फरवरी**-३, ७, १२ शुभ हैं।	२७ अगस्त से वर्ष पर्यन्त
मीनः-अप्रैल-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७ शुभ हैं।	१३ अप्रैल से १४ मई १६ नवं. से १५ दिसं.	**मीनः-अप्रैल**-१३, १४, १७, २२, २३, २९, **मई**-१, २, ८, ९, १०, १४, १६, २०, २१, २६, २८, २९, **जून**-२२, २३, २६, २७, **नवंबर**-२२, २६, २७, २८, **दिसंबर**-६, ७, ८, **जनवरी**-१६, २१, २९, ३०, ३१, **फरवरी**-३, ७,१२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ अगस्त तक

विक्रम संवत् २०६१ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि योगों का विवरण

उपरोक्त शुभ योगों में किए गए सभी शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। जिनका प्रा. व समाप्ति अंग्रेजी ता. में भा.स्टै.टा. अनुसार दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२१ मार्च	६।२५	से	२१ मार्च	२२।३९	तक
२३ "	६।२३	"	२३ "	२५।४८	"
२४ "	२८।११	"	२५ "	६।२१	"
२७ "	६।१८	"	२७ "	१०।०१	"
४ अप्रै.	६।०९	"	५ अप्रै.	६।०८	"
८ "	१२।४९	"	९ "	१०।४७	"
११ "	६।०१	"	११ "	७।१४	"
१२ "	२८।५०	"	१३ "	५।५९	"
२० "	५।५२	"	२० "	९।२४	"
२१ "	११।४८	"	२२ "	५।५०	"
२६ "	२६।१७	"	२७ "	५।४५	"
२७ "	२८।३०	"	२८ "	५।४४	"
२ मई	५।४१	"	२ मई	२९।००	"
५ "	२२।१४	"	६ "	१९।१४	"
९ "	१२।३०	"	१० "	५।३५	"
१० "	१०।५५	"	११ "	५।३४	"
१८ "	१८।२१	"	२० "	५।२९	"
२४ "	९।०८	"	२५ "	५।२७	"
२५ "	११।३९	"	२६ "	५।२६	"
३० "	०५।२६	"	३० "	१५।०५	"
२ जून	९।००	"	३ जून	६।०८	"
६ "	५।२४	"	६ "	१९।५	"
७ "	५।२४	"	७ "	१७।२७	"
११ "	१७।२१	"	१२ "	५।२४	"
१५ "	५।२४	"	१५ "	२७।११	"
१६ "	५।२५	"	१७ "	५।२५	"
२० "	१५।०५	"	२१ "	१७।३८	"
२२ "	५।२६	"	२२ "	१९।५७	"
३० "	५।२८	"	३० "	१६।४८	"
८ जुला.	२४।८	"	१० जुला.	५।३२	"
१३ "	५।३४	"	१३ "	९।१२	"
१४ "	५।३४	"	१५ "	५।३५	"
१६ "	१८।१७	"	१७ "	५।३६	"
१८ जुला.	५।३६	से	१८ जुला.	२३।२३	तक
२६ "	२७।४२	"	२७ "	५।४१	"
३१ "	१५।४१	"	१ अग.	५।४४	"
५ अग.	८।३५	"	७ "	५।४७	"
९ "	१५।५७	"	१० "	५।४९	"
११ "	५।४९	"	११ "	२२।०२	"
१२ "	२४।५६	"	१३ "	२७।३४	"
२१ "	११।१०	"	२२ "	५।५५	"
२३ "	९।५५	"	२३ "	५।५६	"
२७ "	२५।०४	"	२८ "	२२।५७	"
३१ "	१८।२८	"	१ सितं.	६।००	"
२ सितं.	६।०१	"	३ "	१९।३१	"
६ "	६।०३	"	७ "	६।०३	"
९ "	८।२८	"	१० "	११।०९	"
१५ "	१७।३०	"	१६ "	६।०८	"
१८ "	६।०९	"	१८ "	१६।१५	"
२० "	६।१०	"	२० "	१४।०८	"
२४ "	८।१६	"	२५ "	६।४७	"
२८ "	६।१४	"	२८ "	२७।२१	"
३० "	६।१५	"	३० "	२८।३२	"
४ अक्टू.	६।१७	"	५ अक्टू.	६।१८	"
७ "	६।१९	"	८ "	६।१९	"
१३ "	६।२२	"	१३ "	२५।३७	"
२२ "	६।२८	"	२२ "	.१२।३९	"
२६ "	६।३१	"	२६ "	११।०९	"
२८ "	६।३२	"	२८ "	१२।५०	"
३० "	१६।२३	"	३१ "	६।३४	"
१ नवं.	६।३५	"	१ नवं.	२१।३५	"
४ "	६।३७	"	४ "	३०।१७	"
१० "	६।४१	"	११ "	११।३८	"
१४ "	२६।१४	"	१५ "	६।४५	"
२१ "	१६।४१	"	२२ "	६।५१	"
२३ "	१८।१४	"	२४ "	६।५३	"
२७ "	६।५५	"	२७ "	२६।०८	"
२ दिसं.	६।५९	"	२ दिसं.	१३।४४	"
५ "	२०।३२	"	६ "	७।०२	"
१० "	१७।५७	"	११ "	७।०५	"
१२ "	१२।३८	"	१३ "	७।०७	"
१९ "	७।१०	"	१९ "	२२।४६	"
२१ "	७।११	"	२१ "	२५।२३	"
२२ "	२७।२६	"	२३ "	७।१२	"
२५ दिसं.	७।१३	से	२५ दिसं.	८।३८	तक

सन् २००५ ई.

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२ जन.	७।१६	"	३ जन.	७।१६	"
६ "	२८।४१	"	७ "	२६।३९	"
९ "	७।१७	"	९ "	२१।०६	"
१८ "	७।१६	"	१८ "	७।२६	"
१९ "	९।२०	"	२० "	७।१६	"
२४ "	२३।२०	"	२५ "	७।१४	"
२५ "	२६।१०	"	२६ "	७।१४	"
३० "	७।१२	"	३१ "	७।११	"
३ फर.	१३।०८	"	४ फर.	११।५६	"
६ "	७।०८	"	६ "	७।४७	"
७ "	२६।०९	"	८ "	७।०६	"
१५ "	१६।३२	"	१७ "	६।५९	"
२० "	२९।५४	"	२२ "	६।५५	"
२२ "	८।४२	"	२३ "	६।५४	"
२७ "	६।५०	"	२७ "	१८।१०	"
२ मार्च	१९।१०	"	३ मार्च	१८।३२	"
६ "	१३।५६	"	७ "	६।४१	"
७ "	११।४४	"	८ "	६।४०	"
११ "	२५।३४	"	१२ "	६।३६	"
१५ "	६।३२	"	१५ "	२६।४८	"
१६ "	६।३१	"	१७ "	६।३०	"
२० "	१३।१६	"	२१ "	१६।०७	"
२२ "	६।२४	"	२२ "	१८।४२	"
३० "	६।१५	"	३० "	२३।५६	"
३ अप्रैल	६।११	"	३ अप्रै.	१८।३७	"
४ "	६।०९	"	४ "	१६।५७	"
८ "	११।१३	"	९ "	६।०४	"

अमृत-सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२३ मार्च	६।२३	से	२३ मार्च	२५।४८	तक
२७ "	६।१८	"	२७ "	१०।०१	"
४ अप्रैल	२०।०५	"	५ अप्रै.	६।०८	"
२० "	५।५२	"	२० "	९।२४	"
२ मई	६।२०	"	२ मई	२९।०७	"
५ "	२२।१४	"	६ "	५।३८	"
३० "	५।२६	"	३० "	१५।०५	"
२ जून	९।००	"	३ जून	५।२५	"
११ "	१७।२१	"	१२ "	५।२४	"
[illegible]					
९ जुला.	५।३२	से	९ जुला.	२५।३२	तक
६ अग.	५।४७	"	६ अग.	९।२२	"
६ सितं.	२६।३३	"	७ सितं.	६।०३	"
४ अक्टू.	१०।४४	"	५ अक्टू.	६।१८	"
७ "	१९।२४	"	८ "	६।१९	"
३० "	१६।२७	"	३१ "	६।३४	"
१ नवं.	६।३५	"	१ नवं.	२१।३५	"
४ "	६।३७	"	४ "	३०।१७	"
२३ "	१८।१४	"	२४ "	६।५३	"
२७ "	६।५५	"	२७ "	२६।०८	"
२ दिसं.	६।५९	"	२ दिसं.	१३।४४	"
२१ "	७।११	"	२१ "	२५।२३	"
२५ "	७।१३	"	२५ "	८।३८	"

सन् २००५ ई.

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२ जन.	२९।१९	"	३ जन.	७।१६	"
१८ "	७।१६	"	१८ "	७।२६	"
३० "	११।१७	"	३१ "	७।११	"
२७ फर.	६।५०	"	२७ फर.	१८।१०	"
२ मार्च	१९।१०	"	३ मार्च	६।४६	"
११ "	२५।३४	"	१२ "	६।३६	"
३० "	६।१५	"	३० "	२३।५६	"
८ अप्रै.	११।१३	"	९ अप्रै.	६।०४	"

रवि पुष्य, गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग तंत्र, मंत्र, यंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

रवि पुष्य योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२० जून	१५।५	से	२१ जून	५।२५	तक
१८ जुला.	५।३६	"	१८ जुला.	२३।२३	"

सन् २००५ ई.

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२० फर.	२९।५४	"	२१ फर.	६।५६	"
२० मार्च	१३।१६	"	२१ मार्च	६।२६	"

गुरु पुष्य योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
७ अक्टू.	१९।२४	से	८ अक्टू.	६।१९	तक
४ नवं.	६।३७	"	४ नवं.	३०।१७	"
[illegible]	[illegible]	"	२ दिसं.	१३।४४	"

द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले ये योग अपने नामानुसार शुभाशुभ सभी कार्यों का फल द्विगुणित तथा त्रिगुणित कर देते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२८ मार्च	६।१७	से	२८ मार्च	१३।४	तक
६ अप्रैल	१४।०४	"	६ अप्रै.	१६।५३	"
३० मई	२२।३२	"	३१ मई	५।२५	"
८ जून	१५।०१	"	८ जून	१६।१०	"
२४ जुला.	५।५०	"	२४ जुला.	२१।४२	"
१ अग.	२०।२४	"	२ अग.	५।४४	"
२५ सितं.	६।४७	"	२५ सितं.	२३।१९	"
५ अक्टू.	६।१८	"	५ अक्टू.	१३।३६	"
२७ नवं.	२७।४०	"	२८ नवं.	२८।५२	"

सन् २००५ ई.

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
१ फर.	७।११	"	१ फर.	१३।२७	"
२६ मार्च	२६।३८	"	२७ मार्च	२५।०५	"
५ अप्रै.	१०।०५	"	५ अप्रै.	१५।१६	"

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
१ मई	११।४०	से	२ मई	६।२०	तक
१९ जून	१२।१७	"	२० जून	५।२५	"
२९ "	६।५१	"	२९ "	१९।१८	"
३ जुला.	१२।५२	"	३ जुला.	२९।०८	"
१३ "	७।२३	"	१३ "	९।१२	"
२२ अग.	१०।४५	"	२२ अग.	२८।३७	"
३१ "	६।००	"	३१ "	१८।२८	"
४ सितं.	२९।३४	"	५ सितं.	२३।४४	"
२४ अक्टू.	११।११	"	२५ अक्टू.	६।३०	"
३० "	६।३३	"	३० "	१०।५६	"
९ नवं.	६।४१	"	९ नवं.	११।५९	"
१८ दिसं.	७।१०	"	१८ दिसं.	१०।३६	"
२८ "	७।१४	"	२८ "	१७।१२	"

सन् २००५ ई.

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
२ जन.	१०।०४	"	२ जन.	२९।१९	"
११ "	१३।०४	"	११ "	१४।४७	"
१५ फर.	१६।३२	"	१५ फर.	१७।०८	"
१९ "	२६।५६	"	२० "	२८।१०	"
२६ "	६।५१	"	२६ "	१२।५६	"
६ मार्च	२६।४४	"	७ मार्च	६।४१	"

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०६१ विक्रमी

मेष–चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ

अप्रैल—राशीस्थ राहु अनेक भ्रम कारक है। व्यवसायिक कामों में चिन्ता, पारिवारिक तनाव व आर्थिक तंगी से मन में क्षुब्धता रहेगी। मास उत्तरार्द्ध में उच्च राशि का सूर्य मनोबल वृद्धि, रुके हुए कामों में वृद्धि, नवीन, सम्मेलन बनकर आर्थिक प्रगति रहेगी और मनोत्साह बढ़ेगा।

मई—नवीन व्यवसायिक योजना, भूमि भवन के प्रति रुचि, समान कार्य कर्ताओं के मध्य सम्मान व प्रभाव की वृद्धि, सामाजिक कामों में सफलता एवं स्वजनों में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। मासांत में स्वयं को सामान्य उदर विकार अथवा काल व्याधि रहकर स्वास्थ्य हीनता जन्य परेशानी रहेगी।

जून—पूर्वार्द्ध में मनोद्वेग, अस्थिरता एवं शारीरिक निर्बलता चलेगी। अर्द्ध मासोपरांत राजकीयादि कामों में सफलता, रुके हुए व्यापारिक कामों की पूर्ति, पुरानी रुकी हुई रकम का आगमन रहेगा। और रिश्ते नातेदारों व मित्रों का सहयोग श्रेष्ठ प्राय रहेगा। स्वजनों में मान सम्मान व प्रतिष्ठा की वृद्धि रहेगी।

जुलाई—व्यवसायिक कामों में प्रगति किन्तु शारीरिक रक्त विकारादि देहारिष्ट उत्पात रहेंगे। यात्रादि कार्यों में चोटादि के संयोग योग हैं। अतः वाहन आदि सतर्कता पूर्वक चलाना हितकर होगा। जबकि सामाजिक व्यक्तियों में मान-सम्मान श्रेष्ठ रहकर मनोत्साह एवं मनोबल तेज रहेगा।

अगस्त—राजकीय व कानूनी कार्यों में सफलता, शत्रुओं पर विजय, पारिवारिक व्यक्तियों से श्रेष्ठ सम्मेलन एवं नवीन व्यवसाय की योजना बनकर आत्म विश्वास की वृद्धि होगी। सामान्यतः पारिवारिक जनों के स्वास्थ्य स्थिति हेतु मानसिक चिन्ता, मनोद्वेग एवं आर्थिक व्यय की वृद्धि रहेगी।

सितंबर—चतुर्थ शनि राजकीय कार्यों एवं शत्रु वर्ग पर प्रभाव वृद्धि पूर्ण रहकर व्यवसायिक कामों में सिद्धि व विजय कारक रहेगा। किन्तु स्वयं को मानसिक अस्थिरता व अशांति, दौड़-धूप की अधिकता तथा भ्रमण आदि काम रहकर देह में थकान व परिश्रम सन्ताप रहेगा। मासांत में नवीन कार्य योजना बनेगी।

अक्टूबर—स्वजनों का सहयोग, पारिवारिक जनों का आवागमन, विशेष परिश्रम रहते हुए भी मनोत्साह रहेगा। राजकीय व कानूनी कामों में सफलता, व्यवसायिक कार्यों में प्रगति, पुरानी दी गई रकम का आगमन तथा देह में स्वस्थता रहेगी। दाम्पत्य सुख में वृद्धि रहकर मनोबल बढ़ेगा।

नवंबर—मास पूर्वार्द्ध में नवीन व्यवसाय कामों में प्रगति, कार्यक्षेत्र में प्रभाव व सम्मान की वृद्धि रहेगी। अर्द्ध मासोपरांत अष्टम सूर्य से स्वजनों द्वारा अनेक उपद्रव होकर मानसिक चिन्ताओं की वृद्धि होगी एवं पारिवारिक जनों के साथ क्रोध वृद्धि रहकर वाद-विवाद व तनाव बनेगा।

दिसंबर—देह में आलस्यता व सामान्य स्वास्थ्य हीनता चलेगी। अनेक विरोध होने पर भी सामाजिक व राजकीय कामों में विजय रहने के कारण मासांत में हर्षोल्लास बढ़ेगा। किसी मांगलिक काम में सहयोग होकर खर्च वृद्धि भी होगी। यात्रादि कामों में अनेक परेशानियां व तेज व्यय रहेगा।

जनवरी २००५ ई.—अष्टम मंगल स्वराशिस्थ शत्रु पराजित कारक है किन्तु स्वयं को रक्तास्पता एवं स्वास्थ्य हीनता चलेगी। घरेलू सदस्यों को शारीरिक परेशानियां, मौसमी रोगों का प्रकोप रहने से स्वयं को मनोमालिन्यता एवं अन्तर्घुटन चलेगी। आर्थिक आय के साधनों में मित्रादिक सहयोग रहकर श्रेष्ठ अर्जन रहेगा।

फरवरी—नवीन व्यवसाय के प्रति जिज्ञासा बढ़कर श्रेष्ठ योजना बनेगी, जो प्रायः सफल रहेगी। कार्य क्षेत्र व सामाजिक जनों के मध्य सम्मान वृद्धि व प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। आय के नये श्रोत का लाभ रहेगा। दाम्पत्य सुख की वृद्धि, घरेलू व्यक्तियों का सहयोग एवं संरक्षण से मनोबल बढ़ेगा।

मार्च—शत्रु वर्ग पराजित, राजकीय स्थानों पर प्रभाव वृद्धि एवं स्वयं में आत्म विश्वास की बढ़ोत्तरी रहेगी। घर में मांगलिक उत्सवों का आयोजन रहेगा। पड़ोसी संपर्क बढ़कर किसी संस्थान में पद प्राप्ति एवं मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी। सामान्यतः स्त्री-संतान स्वास्थ्य में न्यूनता के योग हैं।

वृष–ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—मास में भ्रमण कार्यों की विशेषता तथा व्यय वृद्धि रहेगी। स्वजनों से मधुर सम्मेलन, घर में उत्साह वृद्धि के आयोजन रहेंगे। मास उत्तरार्द्ध में १२ रवि पारिवारिक सदस्यों, स्त्री-संतानादि को स्वास्थ्य हीनता कारक है। तथा स्वयं को मानसिक अस्थिरता प्रायः रहेगी।

मई—राजकीय कानूनी कामों में सफलता, व्यापारिक क्षेत्रों व सामाजिक स्थानों पर प्रभाव वृद्धि रहेगी। नवीन आय कार्य की योजना बनकर प्रगति होगी। पारिवारिक जनों का सहयोग, मित्रों से लाभ और रिश्तेदारों के मध्य मान-सम्मान बढ़कर प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। आत्म बल की वृद्धि रहेगी।

जून—शुक्रास्त से मनोबल में गिरावट एवं अस्थिर मानसिकता का वातावरण रहेगा। किन्तु लोगों में मान-सम्मान श्रेष्ठ रहकर प्रशंसा वृद्धि रहेगी। सामान्य परिश्रम से आर्थिक लाभ उत्तम, कर्मचारियों को पदवृद्धि एवं राजकीय कामों से लाभ होगा। स्त्री-संतानादि के द्वारा सहयोग व सुख वृद्धि रहेगी।

जुलाई—यात्रादि भ्रमण कार्य विशेष रहेंगे। नवीन व्यक्तियों से संपर्क वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों से मधुर सम्मेलन बढ़ेगा। व्यापारिक कामों में प्रगति, नवीन आय कार्य की योजना एवं उत्तम आत्मविश्वास की वृद्धि होकर कानूनी व राजकीय कामों में सफलता रहेगी। शत्रु वर्ग पराजित होंगे।

अगस्त—चतुर्थ मंगल से पारिवारिक तनाव, क्रोध वृद्धि व स्वजनों से विवादकता रहेगी। मानसिक अशांति एवं अस्थिरता रहकर अस्वस्थता चलेगी। व्यवसायिक कामों में अवरोध, अनावश्यक खर्च की वृद्धि और आंतरिक घुटनशीलता से परेशानी रहेगी।

सितम्बर—मास में राज्यादिक कामों में सफलता, शत्रुवर्ग परास्त एवं उच्चाधिकारियों पर प्रभाव की वृद्धि बनेगी। व्यवसायिक कामों में अनेक श्रेष्ठ संपर्क बढ़कर आय की वृद्धि रहेगी। स्वयं को हर्षोत्साह बढ़ेगा एवं स्वजनों के बीच सम्मान की वृद्धि व प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

अक्टूबर—नवीन आय साधन बढ़ने की योजनाएं बनेगी। स्वजनों व मित्रों का सहयोग बनेगा। दाम्पत्य सुख की वृद्धि एवं मांगलिक उत्सवादि का आयोजन बनकर मानसिक हर्ष की बढ़ोत्तरी रहेगी। राजकीयादि कामों व व्यापारिक लेन के कामों में परिश्रम व व्यस्तता रहकर लाभ होगा।

नवंबर—यात्रादि कामों के द्वारा आर्थिक प्रगति, नवीन व्यक्तियों से संपर्क बढ़कर उन पर श्रेष्ठ प्रभाव बढ़ेगा। व्यवसाय एवं राजनैतिक कामों में सफलता, देह-सुख और मित्रों, रिश्ते-नातेदारों से सहयोग बनकर पारिवारिक, सामाजिक स्थिति में प्रशंसा व प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

दिसंबर—मासारंभ में मांगलिक कामों व उत्सवादि कार्यों में सहयोग रहकर हर्ष वृद्धि रहेगी। व्यापारिक कामों से अर्थिक लाभ रहेगा। उत्तरार्द्ध में शारीरिक निर्बलता व शत्रुओं की नवीन चालों से मानसिक तनाव तथा दौड़-धूप की विशेषता रहेगी। स्त्री-संतान स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी।

जनवरी २००५ ई.—मौसमी वातावरण का दुष्प्रभाव व शत्रुजनों से विवादकता, मानसिक परेशानियां एवं इधर-उधर की मिथ्या भागदौड़ और अनावश्यक खर्च की विशेषता रहेगी। मासांत में स्वजनों, मित्रों का सहयोग रहेगा तथा स्वकीय श्रम का लाभ मिलकर शत्रु पराजित होंगे।

फरवरी—शनि का पुनः आगमन, शत्रुओं द्वारा परेशानी व राजकीयादि कानूनी कामों में रुकावटें तथा खर्च की विशेषता रहेगी। व्यापारिक आय साधन कामों में भी अवरोध रहकर मानसिक अस्थिरता एवं खिन्नता रहेगी। स्वयं के स्वभाव में भी परिवर्तन होकर क्रोध वृद्धि रहेगी।

मार्च—अपने निजी व्यक्तियों के द्वारा आंतरिक शत्रुता बनकर बनते कामों में रुकावटें बनेंगी तथा मिथ्या खर्च से आर्थिक तंगी का प्रभाव रहेगा। जबकि मित्रों व अन्यान्य व्यक्तियों का सहारा बनकर मासांत में कामों में सुधार होगा। स्त्री-सन्तानादि सहयोग श्रेष्ठ होगा।

शेष पृष्ठ २०९ पर.....

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी वक्री व उदयास्त सं. २०६१ वि.

सूर्य नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
२० मार्च	उ.भा.	२	मीन
२४ "	"	३	"
२७ "	"	४	"
३० "	रेवती	१	"
३ अप्रै.	"	२	"
६ "	"	३	"
१० "	"	४	"
१३ "	अश्वि.	१	मेष
१६ "	"	२	"
२० "	"	३	"
२३ "	"	४	"
२७ "	भरणी	१	"
३० "	"	२	"
४ मई	"	३	"
७ "	"	४	"
१० "	कृत्ति.	१	"
१४ "	"	२	वृष
१७ "	"	३	"
२१ "	"	४	"
२४ "	रोहि.	१	"
२८ "	"	२	"
३१ "	"	३	"
४ जून	"	४	"
७ "	मृग.	१	"
११ "	"	२	"
१४ "	"	३	मिथुन
१८ "	"	४	"
२१ "	आर्द्रा	१	"
२५ "	"	२	"
२८ "	"	३	"
२ जुला.	"	४	"
५ "	पुन.	१	"
९ "	"	२	"
१२ "	"	३	"
१६ "	"	४	कर्क
१९ "	पुष्य	१	"
२३ "	"	२	"
२६ "	"	३	"
३० "	"	४	"

सूर्य नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
२ अग.	अश्ले.	१	कर्क
६ "	"	२	"
९ "	"	३	"
१३ "	"	४	"
१६ "	मघा	१	सिंह
१९ "	"	२	"
२३ "	"	३	"
२६ "	"	४	"
३० "	पू.फा.	१	"
२ सितं.	"	२	"
६ "	"	३	"
९ "	"	४	"
१३ "	उ.फा.	१	"
१६ "	"	२	कन्या
१९ "	"	३	"
२३ "	"	४	"
२६ "	हस्त	१	"
३० "	"	२	"
३ अक्टू.	"	३	"
६ "	"	४	"
१० "	चित्रा	१	"
१३ "	"	२	"
१६ "	"	३	तुला
२० "	"	४	"
२३ "	स्वा.	१	"
२७ "	"	२	"
३० "	"	३	"
२ नवं.	"	४	"
५ "	विशा.	१	"
९ "	"	२	"
१२ "	"	३	"
१५ "	"	४	वृश्चि.
१९ "	अनु.	१	"
२२ "	"	२	"
२५ "	"	३	"
२९ "	"	४	"
२ दिसं.	ज्ये.	१	"
५ "	"	२	"
९ "	"	३	"

सूर्य नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
१२ दिसं.	ज्येष्ठा	४	वृश्चि.
१५ "	मूल	१	धनु
१८ "	"	२	"
२२ "	"	३	"
२५ "	"	४	"
२८ "	पू.षा.	१	"
३१ "	"	२	"
सन् २००५ ई.			
४ जन.	"	३	"
७ "	"	४	"
१० "	उ.षा.	१	"
१४ "	"	२	मकर
१७ "	"	३	"
२० "	"	४	"
२३ "	श्रवण	१	"
२७ "	"	२	"
३० "	"	३	"
२ फर.	"	४	"
५ "	धनि.	१	"
९ "	"	२	"
१२ "	"	३	कुम्भ
१५ "	"	४	"
१९ "	शत.	१	"
२२ "	"	२	"
२५ "	"	३	"
१ मार्च	"	४	"
४ "	पू.भा.	१	"
७ "	"	२	"
११ "	"	३	"
१४ "	"	४	मीन
१७ "	उ.भा.	१	"
२१ "	"	२	"
२४ "	"	३	"
२७ "	"	४	"
३१ "	रेवती	१	"
३ अप्रै.	"	२	"
६ "	"	३	"

मंगल नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
२२ मार्च	कृति.	४	वृष
२७ "	रोहि.	१	"
१ अप्रैल	"	२	"
६ "	"	३	"
१२ "	"	४	"
१७ "	मृग.	१	"
२२ "	"	२	"
२७ "	"	३	मिथुन
३ मई	"	४	"
८ "	आर्द्रा	१	"
१३ "	"	२	"
१८ "	"	३	"
२४ "	"	४	"
२९ "	पुन.	१	"
३ जून	"	२	"
८ "	"	३	"
१४ "	"	४	कर्क
१९ "	पुष्य	१	"
२४ "	"	२	"
३० "	"	३	"
५ जुला.	"	४	"
१० "	अश्ले.	१	"
१५ "	"	२	"
२१ "	"	३	"
२६ "	"	४	"
३१ "	मघा	१	सिंह
६ अग.	"	२	"
११ "	"	३	"
१६ "	"	४	"
२१ "	पू.फा.	१	"
२७ "	"	२	"
१ सितं.	"	३	"
६ "	"	४	"
११ "	उ.फा.	१	"
१६ "	"	२	कन्या
२२ "	"	३	"
२७ "	"	४	"
२ अक्टू.	हस्त	१	"

मंगल नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
१२ अक्टू.	हस्त	३	कन्या
१७ "	"	४	"
२२ "	चित्रा	१	"
२७ "	"	२	"
२ नवं.	"	३	तुला
७ "	"	४	"
१२ "	स्वा.	१	"
१७ "	"	२	"
२२ "	"	३	"
२७ "	"	४	"
२ दिसं.	विशा.	१	"
६ "	"	२	"
११ "	"	३	"
१६ "	"	४	वृश्चि.
२१ "	अनु.	१	"
२६ "	"	२	"
३१ "	"	३	"
सन् २००५ ई.			
५ जन.	"	४	"
९ "	ज्येष्ठा	१	"
१४ "	"	२	"
१९ "	"	३	"
२४ "	"	४	"
२९ "	मूल	१	धनु.
२ फर.	"	२	"
७ "	"	३	"
१२ "	"	४	"
१६ "	पू.षा.	१	"
२१ "	"	२	"
२६ "	"	३	"
३ मार्च	"	४	"
७ "	उ.षा.	१	"
१२ "	"	२	मकर
१६ "	"	३	"
२१ "	"	४	"
२६ "	श्रवण	१	"
३० "	"	२	"

बुध नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
२१ मार्च	रेवती	३	मीन
२३ "	"	४	"
२६ "	अश्वि.	१	मेष
२८ "	"	२	"
२ अप्रैल	"	३	"
११ "	व. "	२	"
१७ "	व. "	१	"
२२ "	रेवती	४	मीन
९ मई	मा.अश्वि.	१	मेष
१३ "	"	२	"
१६ "	"	३	"
१९ "	"	४	"
२२ "	भरणी	१	"
२४ "	"	२	"
२७ "	"	३	"
२९ "	"	४	"
३१ "	कृत्ति.	१	"
२ जून	"	२	वृष
४ "	"	३	"
५ "	"	४	"
७ "	रोहि.	१	"
९ "	"	२	"
१० "	"	३	"
१२ "	"	४	"
१४ "	मृग.	१	"
१५ "	"	२	"
१७ "	"	३	मिथुन
१८ "	"	४	"
२० "	आर्द्रा	१	"
२१ "	"	२	"
२३ "	"	३	"
२४ "	"	४	"
२६ "	पुन.	१	"

बुध नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
२९ जून	पुन.	३	मिथुन
१ जुला.	"	४	कर्क
३ "	पुष्य	१	"
४ "	"	२	"
६ "	"	३	"
८ "	"	४	"
१० "	अश्ले.	१	"
१३ "	"	२	"
१५ "	"	३	"
१७ "	"	४	"
२० "	मघा	१	सिंह
२३ "	"	२	"
२६ "	"	३	"
२९ "	"	४	"
३ अग.	पू.फा.	१	"
१५ "	व.मघा	४	"
२० "	"	३	"
२४ "	"	२	"
२८ "	"	१	"
७ सितं.	मा.मघा	२	"
१० "	"	३	"
१३ "	"	४	"
१५ "	पू.फा.	१	"
१७ "	"	२	"
१९ "	"	३	"
२१ "	"	४	"
२३ "	उ.फा.	१	"
२५ "	"	२	कन्या
२७ "	"	३	"
२८ "	"	४	"
३० "	हस्त	१	"
२ अक्टू.	"	२	"
४ "	"	३	"

बुध नक्षत्र चार			
ता. मास	नक्षत्र	पाद	
८ अक्टू.	चित्रा	१	कन्या
१० "	"	२	"
१२ "	"	३	तुला
१४ "	"	४	"
१६ "	स्वाति	१	"
१८ "	"	२	"
२० "	"	३	"
२२ "	"	४	"
२४ "	विशा.	१	"
२६ "	"	२	"
२९ "	"	३	"
३१ "	"	४	वृश्चि.
२ नवं.	अनु.	१	"
५ "	"	२	"
७ "	"	३	"
९ "	"	४	"
१२ "	ज्ये.	१	"
१४ "	"	२	"
१७ "	"	३	"
२० "	"	४	"
२४ "	मूल	१	धनु.
६ दिसं.	व.ज्ये.	४	वृश्चि.
८ "	"	३	"
११ "	"	२	"
१४ "	"	१	"
१८ "	अनु.	४	"
२१ "	मा.ज्ये.	१	"
२७ "	"	२	"
३० "	"	३	"
सन् २००५ ई.			
२ जन.	"	४	"
५ "	मूल	१	धनु.
८ "	"	२	"
१० "	"	३	"
१२ "	"	४	"

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी वक्री व उदयास्त सं. २०६१ वि.

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ जन.	पू.षा.	१ धनु
१७ "	"	२ "
१९ "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२४ "	उ.षा.	१ "
२६ "	"	२ मकर
२८ "	"	३ "
३० "	"	४ "
१ फर.	श्रवण	१ "
३ "	"	२ "
५ "	"	३ "
७ "	"	४ "
९ "	धनि	१ "
११ "	"	२ "
१३ "	"	३ कुम्भ
१५ "	"	४ "
१७ "	शत.	१ "
१८ "	"	२ "
२० "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२४ "	पू.भा.	१ "
२५ "	"	२ "
२७ "	"	३ "
१ मार्च	"	४ मीन
३ "	उ.भा.	१ "
५ "	"	२ "
७ "	"	३ "
९ "	"	४ "
१२ "	रेवती	१ "
१८ "	"	२ "
२१ "	व. "	१ "
२७ "	उ.भा.	४ "
३१ "	"	३ "
५ अप्रैल	"	२ "

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१ अप्रै.	व.पू.फा.	१ सिंह
७ जून	मा. "	२ "
४ जुला.	"	३ "
२४ "	"	४ "
११ अग.	उ.फा.	१ "
२७ "	"	२ कन्या
१२ सितं.	"	३ "
२७ "	"	४ "
१३ अक्टू.	हस्त	१ "
२९ "	"	२ कन्या
१५ नवं.	"	३ "
५ दिसं.	"	४ "
३१ "	चित्रा	१ "
सन् २००५ ई.		
६ मार्च	व.हस्त	४
३ अप्रै.	"	३

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२१ मार्च	भरणी	४ मेष
२४ "	कृति.	१ "
२८ "	"	२ वृष
३१ "	"	३ "
४ अप्रै.	"	४ "
७ "	रोहि.	१ "
११ "	"	२ "
१५ "	"	३ "
१९ "	"	४ "
२४ "	मृग.	१ "
२९ "	"	२ "
६ मई	"	३ मिथुन
२८ "	व. "	२ वृष
३ जून	"	१ "
९ "	रोहिणी	४ "
१५ "	"	३ "
२२ "	"	२ "
७ जुला.	मा. "	३ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ जुला.	मा.रोहि.	४ वृष
२१ "	मृग.	१ "
२६ "	"	२ "
३१ "	"	३ मिथुन
४ अग.	"	४ "
८ "	आर्द्रा	१ "
११ "	"	२ "
१५ "	"	३ "
१८ "	"	४ "
२२ "	पुन.	१ "
२५ "	"	२ "
२८ "	"	३ "
१ सितं.	"	४ कर्क
४ "	पुष्य	१ "
७ "	"	२ "
१० "	"	३ "
१३ "	"	४ "
१६ "	अश्ले.	१ "
१९ "	"	२ "
२२ "	"	३ "
२५ "	"	४ "
२८ "	मघा	१ सिंह
१ अक्टू.	"	२ "
४ "	"	३ "
७ "	"	४ "
९ "	पू.फा.	१ "
१२ "	"	२ "
१५ "	"	३ "
१८ "	"	४ "
२१ "	उ.फा.	१ "
२३ "	"	२ कन्या
२६ "	"	३ "
२९ "	"	४ "
१ नवं.	हस्त	१ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
४ नवं.	हस्त	२ कन्या
६ "	"	३ "
९ "	"	४ "
१२ "	चित्रा	१ "
१४ "	"	२ "
१७ "	"	३ तुला
२० "	"	४ "
२२ "	स्वाति	१ "
२५ "	"	२ "
२८ "	"	३ "
१ दिसं.	"	४ "
३ "	विशा.	१ "
६ "	"	२ "
९ "	"	३ "
११ "	"	४ वृश्चिक
१४ "	अनु.	१ "
१७ "	"	२ "
१९ "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२५ "	ज्येष्ठा	१ "
२७ "	"	२ "
३० "	"	३ "
सन् २००५ ई.		
२ जन.	"	४ "
४ "	मूल	१ धनु
७ "	"	२ "
१० "	"	३ "
१२ "	"	४ "
१५ "	पू.षा.	१ "
१८ "	"	२ "
२० "	"	३ "
२३ "	"	४ "
२६ "	उ.षा.	१ "
२८ "	"	२ मकर
३१ "	"	३ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
३ फर.	उ.षा.	४ मकर
५ "	श्रवण	१ "
८ "	"	२ "
११ "	"	३ "
१३ "	"	४ "
१६ "	धनि.	१ "
१९ "	"	२ "
२१ "	"	३ कुम्भ
२४ "	"	४ "
२७ "	शत.	१ "
१ मार्च	"	२ "
४ "	"	३ "
७ "	"	४ "
९ "	पू.भा.	१ "
१२ "	"	२ "
१५ "	"	३ "
१७ "	"	४ मीन
२० "	उ.भा.	१ "
२३ "	"	२ "
२५ "	"	३ "
२८ "	"	४ "
३१ "	रेवती	१ "
२ अप्रैल	"	२ "
५ "	"	३ "
८ "	"	४ "

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
९ अप्रै.	आर्द्रा	३ मिथुन
१८ मई	"	४ "
१५ जून	पुन.	१ "
११ जुला.	"	२ "
७ अग.	"	३ "
५ सितं.	"	४ कर्क
२९ अक्टू.	पुष्य	१ "
१७ नवं.	व.पुन.	४ "

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
सन् २००५ ई.		
१३ जन.	व.पुन.	३ मिथुन
७ मार्च	"	२ "
५ अप्रैल	मा.पुन.	३ "

राहु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१४ मई	भरणी	१ मेष
१६ जुला.	अश्वि.	४ "
१७ सितं.	"	३ "
१९ नवं.	"	२ "
सन् २००५ ई.		
२१ जन.	"	१ "
२४ मार्च	रेवती	४ मीन

केतु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१४ मई	स्वाति	३ तुला
१६ जुला.	"	२ "
१७ सितं.	"	१ "
१९ नवं.	चित्रा	४ "
सन् २००५ ई.		
२१ जन.	"	३ "
२४ मार्च	"	२ कन्या

हर्षल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२० सितं.	व.शत.	१ कुम्भ
सन् २००५ ई.		
१ जन.	मा.शत.	२ "
६ मार्च	"	३ "

नेपच्यून नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ अग.	व श्रव.	३ मकर
सन् २००५ ई.		
३ जन.	मा.श्रव.	४ मकर

प्लूटो नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२३ जन.	व ज्ये.	३ वृश्चि.
२ नवं.	मा. ज्ये.	४ "
सन् २००५ ई.		
८ फर.	मूल	१ धनु

मंगल का उदयास्त

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२५ जुलाई	अस्त	पूर्व
४ नवम्बर	उदय	पश्चिम

बुध का उदयास्त

ता. मास		
९ अप्रैल	अस्त	पश्चिम
२४ "	उदय	पूर्व
७ जून	अस्त	"
१ जुलाई	उदय	पश्चिम
७ अगस्त	अस्त	"
३१ "	उदय	पूर्व
१८ सितं.	अस्त	"
२८ अक्टू.	उदय	पश्चिम
४ दिसंबर	अस्त	"
१५ "	उदय	पूर्व
सन् २००५ ई.		
२३ जनवरी	अस्त	"
३ मार्च	उदय	पश्चिम
२२ "	अस्त	"
५ अप्रैल	उदय	पूर्व

गुरु का उदयास्त

ता. मास		
७ सितं.	अस्त	पूर्व
६ अक्टू.	उदय	पश्चिम

शुक्र का उदयास्त

ता. मास		
३ जून	अस्त	पश्चिम
१३ "	उदय	पूर्व
सन् २००५ ई.		
१८ फर.	अस्त	पूर्व

शनि का उदयास्त

ता. मास		
१९ जून	अस्त	पूर्व
२८ जुलाई	उदय	पश्चिम

मंगल वक्री-मार्गी

मंगल इस वर्ष २०६१ वि. में वक्री नहीं होगा।

बुध वक्री-मार्गी

ता. मास	
६ अप्रैल	वक्री
३० "	मार्गी
९ अगस्त	वक्री
२ सितंबर	मार्गी
३० नवंबर	वक्री
२० दिसंबर	मार्गी
सन् २००५ ई.	
१९ मार्च	वक्री

गुरु वक्री-मार्गी

ता. मास	
५ मई	मार्गी
सन् २००५ ई.	
२ फरवरी	वक्री

शुक्र वक्री-मार्गी

ता. मास	
१७ मई	वक्री
२९ जून	मार्गी

शनि वक्री-मार्गी

ता. मास	
८ नवंबर	वक्री
सन् २००५ ई.	
२२ मार्च	मार्गी

हर्षल वक्री-मार्गी

ता. मास	
१२ जून	वक्री
१३ नवम्बर	मार्गी

नेपच्यून वक्री-मार्गी

ता. मास	
२० मई	वक्री
२६ अक्टू.	मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

ता. मास	
२७ मार्च	वक्री
२ सितं.	मार्गी
सन् २००५ ई.	
२९मार्च	वक्री

साढ़े पांच बजे (प्रात: ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रात: ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रात: ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अत: ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्तराल १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अत: १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट** ३-२९-१४-४३ बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अत: उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अत: क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अत: **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (✤ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१ ✤	०।०२ ★	०।०५	०।०७ ★	०।१०	०।१२ ★	०।१५	०।१७ ★	०।२०	०।२२ ★	०।२५	०।२७ ★	०।३०
२	०।०२ ★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३ ●	०।०७ ★	०।१५	०।२२ ★	०।३०	०।३७ ★	०।४५	०।५२ ★	१।००	१।०७ ★	१।१५	१।२२ ★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६ ✤	०।१२ ★	०।२५	०।३७ ★	०।५०	१।०२ ★	१।१५	१।२७ ★	१।४०	१।५२ ★	२।०५	२।१७ ★	२।३०
६	०।०७ ★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८ ●	०।१७ ★	०।३५	०।५२ ★	१।१०	१।२७ ★	१।४५	२।०२ ★	२।२०	२।३७ ★	२।५५	३।१२ ★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११ ✤	०।२२ ★	०।४५	१।०७ ★	१।३०	१।५२ ★	२।१५	२।३७ ★	३।००	३।२२ ★	३।४५	४।०७ ★	४।३०
१०	०।१२ ★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३ ●	०।२७ ★	०।५५	१।२२ ★	१।५०	२।१७ ★	२।४५	३।१२ ★	३।४०	४।०७ ★	४।३५	५।०२ ★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६ ✤	०।३२ ★	१।०५	१।३७ ★	२।१०	२।४२ ★	३।१५	३।४७ ★	४।२०	४।५२ ★	५।२५	५।५७ ★	६।३०
१४	०।१७ ★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८ ●	०।३७ ★	१।१५	१।५२ ★	२।३०	३।०७ ★	३।४५	४।२२ ★	५।००	५।३७ ★	६।१५	६।५२ ★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१ ✤	०।४२ ★	१।२५	२।०७ ★	२।५०	३।३२ ★	४।१५	४।५७ ★	५।४०	६।२२ ★	७।०५	७।४७ ★	८।३०
१८	०।२२ ★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३ ●	०।४७ ★	१।३५	२।२२ ★	३।१०	३।५७ ★	४।४५	५।३२ ★	६।२०	७।०७ ★	७।५५	८।४२ ★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६ ✤	०।५२ ★	१।४५	२।३७ ★	३।३०	४।२२ ★	५।१५	६।०७ ★	७।००	७।५२ ★	८।४५	९।३७ ★	१०।३०
२२	०।२७ ★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८ ●	०।५७ ★	१।५५	२।५२ ★	३।५०	४।४७ ★	५।४५	६।४२ ★	७।४०	८।३७ ★	९।३५	१०।३२ ★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१ ✤	१।०२ ★	२।०५	३।०७ ★	४।१०	५।१२ ★	६।१५	७।१७ ★	८।२०	९।२२ ★	१०।२५	११।२७ ★	१२।३०
२६	०।३२ ★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३ ●	१।०७ ★	२।१५	३।२२ ★	४।३०	५।३७ ★	६।४५	७।५२ ★	९।००	१०।०७ ★	११।१५	१२।२२ ★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६ ✤	१।१२ ★	२।२५	३।३७ ★	४।५०	६।०२ ★	७।१५	८।२७ ★	९।४०	१०।५२ ★	१२।०५	१३।१७ ★	१४।३०
३०	०।३७ ★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८ ●	१।१७ ★	२।३५	३।५२ ★	५।१०	६।२७ ★	७।४५	९।०२ ★	१०।२०	११।३७ ★	१२।५५	१४।१२ ★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१ ✤	१।२२ ★	२।४५	४।०७ ★	५।३०	६।५२ ★	८।१५	९।३७ ★	११।००	१२।२२ ★	१३।४५	१५।०७ ★	१६।३०
३४	०।४२ ★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३ ●	१।२७ ★	२।५५	४।२२ ★	५।५०	७।१७ ★	८।४५	१०।१२ ★	११।४०	१३।०७ ★	१४।३५	१६।०२ ★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६ ✤	१।३२ ★	३।०५	४।३७ ★	६।१०	७।४२ ★	९।१५	१०।४७ ★	१२।२०	१३।५२ ★	१५।२५	१६।५७ ★	१८।३०
३८	०।४७ ★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८ ●	१।३७ ★	३।१५	४।५२ ★	६।३०	८।०७ ★	९।४५	११।२२ ★	१३।००	१४।३७ ★	१६।१५	१७।५२ ★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१ ✤	१।४२ ★	३।२५	५।०७ ★	६।५०	८।३२ ★	१०।१५	११।५७ ★	१३।४०	१५।२२ ★	१७।०५	१८।४७ ★	२०।३०
४२	०।५२ ★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३ ●	१।४७ ★	३।३५	५।२२ ★	७।१०	८।५७ ★	१०।४५	१२।३२ ★	१४।२०	१६।०७ ★	१७।५५	१९।४२ ★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६ ✤	१।५२ ★	३।४५	५।३७ ★	७।३०	९।२२ ★	११।१५	१३।०७ ★	१५।००	१६।५२ ★	१८।४५	२०।३७ ★	२२।३०
४६	०।५७ ★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८ ●	१।५७ ★	३।५५	५।५२ ★	७।५०	९।४७ ★	११।४५	१३।४२ ★	१५।४०	१७।३७ ★	१९।३५	२१।३२ ★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१ ✤	२।०२ ★	४।०५	६।०७ ★	८।१०	१०।१२ ★	१२।१५	१४।१७ ★	१६।२०	१८।२२ ★	२०।२५	२२।२७ ★	२४।३०
५०	१।०२ ★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३ ●	२।०७ ★	४।१५	६।२२ ★	८।३०	१०।३७ ★	१२।४५	१४।५२ ★	१७।००	१९।०७ ★	२१।१५	२३।२२ ★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६ ✤	२।१२ ★	४।२५	६।३७ ★	८।५०	११।०२ ★	१३।१५	१५।२७ ★	१७।४०	१९।५२ ★	२२।०५	२४।१७ ★	२६।३०
५४	१।०७ ★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८ ●	२।१७ ★	४।३५	६।५२ ★	९।१०	११।२७ ★	१३।४५	१६।०२ ★	१८।२०	२०।३७ ★	२२।५५	२५।१२ ★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११ ✤	२।२२ ★	४।४५	७।०७ ★	९।३०	११।५२ ★	१४।१५	१६।३७ ★	१९।००	२१।२२ ★	२३।४५	२६।०७ ★	२८।३०
५८	१।१२ ★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३ ●	२।२७ ★	४।५५	७।२२ ★	९।५०	१२।१७ ★	१४।४५	१७।१२ ★	१९।४०	२२।०७ ★	२४।३५	२७।०२ ★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

मार्च सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
२१	११ ०६ ४७ ५१	११ ०७ २६ ०७	०१ ०५ ५२ ५६	११ २२ १३ २५	०४ १७ ५५ ३७	०० २२ ३० ५८	०२ १२ ३२ १८	०० १९ ३३ २०	१० १० २६ १६	०९ २० ३६ ४४	०७ २८ १९ ४६	२१
२२	११ ०७ ४७ २६	११ २० १७ ५२	०१ ०६ ३१ २२	११ २३ ५४ २५	०४ १७ ४८ ३५	०० २३ ३३ १५	०२ १२ ३३ ५०	०० १९ ३० १०	१० १० २९ २६	०९ २० ३८ २६	०७ २८ १९ ५३	२२
२३	११ ०८ ४७ ००	०० ०२ ५२ ५६	०१ ०७ ०९ ४९	११ २५ ३१ २५	०४ १७ ४१ ३८	०० २४ ३५ ११	०२ १२ ३५ २८	०० १९ २६ ५९	१० १० ३२ ३५	०९ २० ४० ०७	०७ २८ १९ ५७	२३
२४	११ ०९ ४६ ३१	०० १५ १२ २८	०१ ०७ ४८ १५	११ २७ ०३ ५९	०४ १७ ३४ ४७	०० २५ ३६ ४५	०२ १२ ३७ १४	०० १९ २३ ४८	१० १० ३५ ४३	०९ २० ४१ ४६	०७ २८ १९ ५९	२४
२५	११ १० ४६ ००	०० २७ १८ ४५	०१ ०८ २६ ४०	११ २८ ३१ ४२	०४ १७ २८ ०३	०० २६ ३७ ५७	०२ १२ ३९ ०५	०० १९ २० ३८	१० १० ३८ ४९	०९ २० ४३ २४	०७ २८ १९ ५९	२५
२६	११ ११ ४५ २७	०१ ०९ १५ ०६	०१ ०९ ०५ ०६	११ २९ ५४ १०	०४ १७ २१ २५	०० २७ ३८ ४६	०२ १२ ४१ ०३	०० १९ १७ २७	१० १० ४१ ५५	०९ २० ४५ ०१	०७ २८ १९ ५७	२६
२७	११ १२ ४४ ५१	०१ २१ ०५ ३७	०१ ०९ ४३ ३१	०० ०१ ११ ०१	०४ १७ १४ ५४	०० २८ ३९ ११	०२ १२ ४३ ०८	०० १९ १४ १६	१० १० ४४ ५८	०९ २० ४६ ३६	०७ २८ १९ ५३	२७
२८	११ १३ ४४ १३	०२ ०२ ५४ ५७	०१ १० २१ ५५	०० ०२ २१ ५६	०४ १७ ०८ ३०	०० २९ ३९ ११	०२ १२ ४५ १९	०० १९ ११ ०५	१० १० ४८ ०१	०९ २० ४८ ०९	०७ २८ १९ ४८	२८
२९	११ १४ ४३ ३३	०२ १४ ४८ ०५	०१ ११ ०० २०	०० ०३ २६ ३८	०४ १७ ०२ १३	०१ ०० ३८ ४६	०२ १२ ४७ ३६	०० १९ ०७ ५४	१० १० ५१ ०२	०९ २० ४९ ४१	०७ २८ १९ ४०	२९
३०	११ १५ ४२ ५१	०२ २६ ५० ०४	०१ ११ ३८ ४३	०० ०४ २४ ५०	०४ १६ ५६ ०४	०१ ०१ ३७ ५४	०२ १२ ४९ ५९	०० १९ ०४ ४३	१० १० ५४ ०१	०९ २० ५१ ११	०७ २८ १९ ३०	३०
३१	११ १६ ४२ ०६	०३ ०९ ०५ ४२	०१ १२ १७ ०६	०० ०५ १६ २१	०४ १६ ५० ०३	०१ ०२ ३६ ३५	०२ १२ ५२ २९	०० १९ ०१ ३३	१० १० ५६ ५९	०९ २० ५२ ४०	०७ २८ १९ १९	३१

अप्रैल सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५५' ४१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
१	११ १७ २५ ५३	०८ ०३ ४९ ३२	०९ १४ १२ २६	११ १३ १० ३२व	०५ २० २३ ००व	११ १७ ३८ ५५	०२ २६ ३३ २०	११ २९ ३७ ४६	१० १४ ४४ ३०	०९ २३ ०२ ०६	०८ ०० ३४ ४६व	१
२	११ १८ २५ ०५	०८ १७ ५६ ०८	०९ १४ ५५ ५६	११ १२ २१ ३४	०५ २० १५ १७	११ १८ ५३ २४	०२ २६ ३४ २८	११ २९ ३४ ३५	१० १४ ४७ ३१	०९ २३ ०३ ३६	०८ ०० ३४ ३५	२
३	११ १९ २४ १५	०९ ०२ १० ०४	०९ १५ ३९ २६	११ ११ ३४ ५५	०५ २० ०७ ३४	११ २० ०७ ५३	०२ २६ ३५ ४३	११ २९ ३१ २४	१० १४ ५० ३०	०९ २३ ०५ ०४	०८ ०० ३४ २३	३
४	११ २० २३ २३	०९ १६ २८ ५१	०९ १६ २२ ५७	११ १० ५१ २०	०५ १९ ५९ ५०	११ २१ २२ २१	०२ २६ ३७ ०५	११ २९ २८ १३	१० १४ ५३ २९	०९ २३ ०६ ३१	०८ ०० ३४ ०८	४
५	११ २१ २२ ३०	१० ०० ४९ २०	०९ १७ ०६ २९	११ १० ११ ३०	०५ १९ ५२ ०६	११ २२ ३६ ४८	०२ २६ ३८ ३३	११ २९ २५ ०३	१० १४ ५६ २५	०९ २३ ०७ ५६	०८ ०० ३३ ५२	५
६	११ २२ २१ ३५	१० १५ ०७ ३९	०९ १७ ५० ०१	११ ०९ ३५ ५७	०५ १९ ४४ २३	११ २३ ५१ १४	०२ २६ ४० ०७	११ २९ २१ ५२	१० १४ ५९ २०	०९ २३ ०९ १९	०८ ०० ३३ ३४	६
७	११ २३ २० ३८	१० २९ १९ ३१	०९ १८ ३३ ३४	११ ०९ ०५ ०६	०५ १९ ३६ ४०	११ २५ ०५ ४०	०२ २६ ४१ ४८	११ २९ १८ ४१	१० १५ ०२ १३	०९ २३ १० ४१	०८ ०० ३३ १४	७
८	११ २४ १९ ३९	११ १३ २० ३८	०९ १९ १७ ०६	११ ०८ ३९ १७	०५ १९ २८ ५८	११ २६ २० ०४	०२ २६ ४३ ३५	११ २९ १५ ३१	१० १५ ०५ ०५	०९ २३ १२ ०१	०८ ०० ३२ ५१	८

अप्रैल सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रैल	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रैल
१	११ १७ ४१ १९	०३ २१ ३९ ०९	०१ १२ ५५ २९	०० ०६ ०१ ००	०४ १६ ४४ ०९	०१ ०३ ३४ ४८	०२ १२ ५५ ०५	०० १८ ५८ २२	१० १० ५९ ५५	०९ २० ५४ ०८	०७ २८ १९ ०५	१
२	११ १८ ४० ३०	०४ ०४ ३३ ३५	०१ १३ ३३ ५१	०० ०६ ३८ ३८	०४ १६ ३८ २४	०१ ०४ ३२ ३२	०२ १२ ५७ ४७	०० १८ ५५ ११	१० ११ ०२ ५०	०९ २० ५५ ३३	०७ २८ १८ ५०	२
३	११ १९ ३९ ३८	०४ १७ ५० ४१	०१ १४ १२ १३	०० ०७ ०९ १२	०४ १६ ३२ ४७	०१ ०५ २९ ४५	०२ १३ ०० ३५	०० १८ ५? ०१	१० ११ ०५ ४३	०९ २० ५६ ५७	०७ २८ १८ ३२	३
४	११ २० ३८ ४४	०५ ०१ ३० २७	०१ १४ ५० ३३	०० ०७ ३२ ३८	०४ १६ २७ १८	०१ ०६ २६ २७	०२ १३ ०३ २९	०० १८ ४८ ५०	१० ११ ०८ ३५	०९ २० ५८ २०	०७ २८ १८ १३	४
५	११ २१ ३७ ४८	०५ १५ ३० ५२	०१ १५ २८ ५४	०० ०७ ४८ ५८	०४ १६ २१ ५९	०१ ०७ २२ ३७	०२ १३ ०६ २९	०० १८ ४५ ३९	१० ११ ११ २५	०९ २० ५९ ४१	०७ २८ १७ ५१	५
६	११ २२ ३६ ५०	०५ २९ ४८ ०९	०१ १६ ०७ १३	०० ०७ ५८ १६व	०४ १६ १६ ४८	०१ ०८ १८ १४	०२ १३ ०९ ३४	०० १८ ४२ २९	१० ११ १४ १३	०९ २१ ०१ ००	०७ २८ १७ २८	६
७	११ २३ ३५ ५०	०६ १४ १७ ०८	०१ १६ ४५ ३२	०० ०८ ०० ४०	०४ १६ ११ ४६	०१ ०९ १३ १६	०२ १३ १२ ४६	०० १८ ३९ १८	१० ११ १६ ५९	०९ २१ ०२ १७	०७ २८ १७ ०३	७
८	११ २४ ३४ ४८	०६ २८ ५१ ५५	०१ १७ २३ ५०	०० ०७ ५६ २२	०४ १६ ०६ ५३	०१ १० ०७ ४३	०२ १३ १६ ०३	०० १८ ३६ ०७	१० ११ १९ ४४	०९ २१ ०३ ३३	०७ २८ १६ ३६	८
९	११ २५ ३३ ४४	०७ १३ २६ ४२	०१ १८ ०२ ०८	०० ०७ ४५ ४१	०४ १६ ०२ ०९	०१ ११ ०१ ३३	०२ १३ १९ २७	०० १८ ३२ ५६	१० ११ २२ २६	०९ २१ ०४ ४७	०७ २८ १६ ०८	९
१०	११ २६ ३२ ३९	०७ २७ ५६ २५	०१ १८ ४० २६	०० ०७ २८ ५६	०४ १५ ५७ ३६	०१ ११ ५४ ४५	०२ १३ २२ ५६	०० १८ २९ ४५	१० ११ २५ ०७	०९ २१ ०६ ००	०७ २८ १५ ३७	१०
११	११ २७ ३१ ३२	०८ १२ १७ ०९	०१ १९ १८ ४२	०० ०७ ०६ ३५	०४ १५ ५३ ११	०१ १२ ४७ १८	०२ १३ २६ ३०	०० १८ २६ ३५	१० ११ २७ ४६	०९ २१ ०७ १०	०७ २८ १५ ०५	११
१२	११ २८ ३० २३	०८ २६ २६ १३	०१ १९ ५६ ५९	०० ०६ ३९ ०९	०४ १५ ४८ ५७	०१ १३ ३९ ११	०२ १३ ३० १०	०० १८ २३ २४	१० ११ ३० २३	०९ २१ ०८ १९	०७ २८ १४ ३१	१२
१३	११ २९ २९ १२	०९ १० २१ ५७	०१ २० ३५ १५	०० ०६ ०७ १४	०४ १५ ४४ ५२	०१ १४ ३० २२	०२ १३ ३३ ५६	०० १८ २० १३	१० ११ ३२ ५९	०९ २१ ०९ २६	०७ २८ १३ ५५	१३
१४	०० ०० २८ ००	०९ २४ ०३ ३३	०१ २१ १३ ३१	०० ०५ ३१ २९	०४ १५ ४० ५७	०१ १५ २० ५०	०२ १३ ३७ ४७	०० १८ १७ ०२	१० ११ ३५ ३२	०९ २१ १० ३२	०७ २८ १३ १७	१४
१५	०० ०१ २६ ४५	१० ०७ ३० ४६	०१ २१ ५१ ४६	०० ०४ ५२ ४०	०४ १५ ३७ १३	०१ १६ १० ३४	०२ १३ ४१ ४४	०० १८ १३ ५१	१० ११ ३८ ०३	०९ २१ ११ ३५	०७ २८ १२ ३८	१५
१६	०० ०२ २५ ३०	१० २० ४३ ३९	०१ २२ ३० ०१	०० ०४ ११ ३३	०४ १५ ३३ ३९	०१ १६ ५९ ३१	०२ १३ ४५ ४६	०० १८ १० ४१	१० ११ ४० ३२	०९ २१ १२ ३७	०७ २८ ११ ५६	१६
१७	०० ०३ २४ १२	११ ०३ ४२ ३१	०१ २३ ०८ १५	०० ०३ २८ ५७	०४ १५ ३० १५	०१ १७ ४७ ४०	०२ १३ ४९ ५४	०० १८ ०७ ३०	१० ११ ४२ ५९	०९ २१ १३ ३७	०७ २८ ११ १३	१७
१८	०० ०४ २२ ५३	११ १६ २७ ४६	०१ २३ ४६ २९	०० ०२ ४५ ३९	०४ १५ २७ ०२	०१ १८ ३४ ५९	०२ १३ ५४ ०७	०० १८ ०४ १९	१० ११ ४५ २४	०९ २१ १४ ३५	०७ २८ १० २९	१८
१९	०० ०५ २१ ३२	११ २८ ५९ ५९	०१ २४ २४ ४३	०० ०२ ०२ ३०	०४ १५ २३ ५९	०१ १९ २१ २७	०२ १३ ५८ २५	०० १८ ०१ ०९	१० ११ ४७ ४७	०९ २१ १५ ३१	०७ २८ ०९ ४२	१९
२०	०० ०६ २० ०८	०० ११ २० ०१	०१ २५ ०२ ५६	०० ०१ २० १६	०४ १५ २१ ०७	०१ २० ०७ ००	०२ १४ ०२ ४८	०० १७ ५७ ५८	१० ११ ५० ०८	०९ २१ १६ २६	०७ २८ ०८ ५४	२०
२१	०० ०७ १८ ४३	०० २३ २९ १२	०१ २५ ४१ ०९	०० ०० ३९ ४०	०४ १५ १८ २६	०१ २० ५१ ३८	०२ १४ ०७ १७	०० १७ ५४ ४७	१० ११ ५२ २६	०९ २१ १७ १८	०७ २८ ०८ ०५	२१
२२	०० ०८ १७ १६	०१ ०५ २९ १९	०१ २६ १९ २१	०० ०० ०१ २३	०४ १५ १५ ५५	०१ २१ ३५ १८	०२ १४ ११ ५०	०० १७ ५१ ३७	१० ११ ५४ ४२	०९ २१ १८ ०९	०७ २८ ०७ १३	२२
२३	०० ०९ १५ ४७	०१ १७ २२ ४६	०१ २६ ५७ ३३	११ २९ २६ ०१	०४ १५ १३ ३६	०१ २२ १७ ५७	०२ १४ १६ २८	०० १७ ४८ २६	१० ११ ५६ ५६	०९ २१ १८ ५८	०७ २८ ०६ २०	२३
२४	०० १० १४ १६	०१ २९ १२ २९	०१ २७ ३५ ४४	११ २८ ५४ ०४	०४ १५ ११ २७	०१ २२ ५९ ३३	०२ १४ २१ १२	०० १७ ४५ १५	१० ११ ५९ ०८	०९ २१ १९ ४५	०७ २८ ०५ २६	२४
२५	०० ११ १२ ४३	०२ ११ ०१ ५६	०१ २८ १३ ५५	११ २८ २५ ५९	०४ १५ ०९ ३०	०१ २३ ४० ०३	०२ १४ २६ ००	०० १७ ४२ ०४	१० १२ ०१ १७	०९ २१ २० २९	०७ २८ ०४ ३०	२५
२६	०० १२ ११ ०७	०२ २२ ५५ ०५	०१ २८ ५२ ०५	११ २८ ०२ ०६	०४ १५ ०७ ४३	०१ २४ १९ २६	०२ १४ ३० ५३	०० १७ ३८ ५३	१० १२ ०३ २४	०९ २१ २१ १२	०७ २८ ०३ ३२	२६
२७	०० १३ ०९ ३०	०३ ०४ ५६ १६	०१ २९ ३० १४	११ २७ ४२ ४१	०४ १५ ०६ ०८	०१ २४ ५७ ३८	०२ १४ ३५ ५१	०० १७ ३५ ४२	१० १२ ०५ २८	०९ २१ २१ ५४	०७ २८ ०२ ३३	२७
२८	०० १४ ०७ ५०	०३ १७ १० ०३	०२ ०० ०८ २३	११ २७ २७ ५६	०४ १५ ०४ ४३	०१ २५ ३४ ३६	०२ १४ ४० ५३	०० १७ ३२ ३२	१० १२ ०७ ३०	०९ २१ २२ ३३	०७ २८ ०१ ३३	२८
२९	०० १५ ०६ ०९	०३ २९ ४० ५३	०२ ०० ४६ ३१	११ २७ १७ ५८	०४ १५ ०३ ३०	०१ २६ १० १७	०२ १४ ४६ ००	०० १७ २९ २१	१० १२ ०९ ३०	०९ २१ २३ १०	०७ २८ ०० ३१	२९
३०	०० १६ ०४ २५	०४ १२ ३२ ४३	०२ ०१ २४ ३९	११ २७ १२ ५२मा	०४ १५ ०२ २८	०१ २६ ४४ ३९	०२ १४ ५१ ११	०० १७ २६ १०	१० १२ ११ २७	०९ २१ २३ ४५	०७ २७ ५९ २७	३०

मई सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ५०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	०० १७ ०२ ३९	०४ २५ ४८ ३६	०२ ०२ ०२ ४५	११ २७ १२ ३९	०४ १५ ०१ ३७	०१ २७ १७ ३८	०२ १४ ५६ २७	०० १७ २२ ५९	१० १२ १३ २२	०९ २१ २४ १९	०७ २७ ५८ २२	१
२	०० १८ ०० ५२	०५ ०९ ३० ०८	०२ ०२ ४० ५२	११ २७ १७ १५	०४ १५ ०० ५७	०१ २७ ४९ ११	०२ १५ ०१ ४८	०० १७ १९ ४९	१० १२ १५ १४	०९ २१ २४ ५०	०७ २७ ५७ १६	२
३	०० १८ ५९ ०२	०५ २३ ३६ ५९	०२ ०३ १८ ५७	११ २७ २६ ३८	०४ १५ ०० २७	०१ २८ १९ १४	०२ १५ ०७ १२	०० १७ १६ ३८	१० १२ १७ ०४	०९ २१ २५ १९	०७ २७ ५६ ०९	३
४	०० १९ ५७ १०	०६ ०८ ०६ ३०	०२ ०३ ५७ ०२	११ २७ ४० ४३	०४ १५ ०० ०९	०१ २८ ४७ ४५	०२ १५ १२ ४१	०० १७ १३ २७	१० १२ १८ ५१	०९ २१ २५ ४७	०७ २७ ५५ ००	४
५	०० २० ५५ १७	०६ २२ ५३ ३५	०२ ०४ ३५ ०६	११ २७ ५९ २१	०४ १५ ०० ०२मा.	०१ २९ १४ ४१	०२ १५ १८ १४	०० १७ १० १६	१० १२ २० ३६	०९ २१ २६ १२	०७ २७ ५३ ५०	५
६	०० २१ ५३ २२	०७ ०७ ५१ ०८	०२ ०५ १३ ०९	११ २८ २२ २७	०४ १५ ०० ०६	०१ २९ ३९ ५६	०२ १५ २३ ५१	०० १७ ०७ ०६	१० १२ २२ १८	०९ २१ २६ ३६	०७ २७ ५२ ३८	६
७	०० २२ ५१ २५	०७ २२ ५० ५३	०२ ०५ ५१ १२	११ २८ ४९ ५१	०४ १५ ०० २१	०२ ०० ०३ ३०	०२ १५ २९ ३२	०० १७ ०३ ५५	१० १२ २३ ५८	०९ २१ २६ ५७	०७ २७ ५१ २६	७
८	०० २३ ४९ २७	०८ ०७ ४४ ३५	०२ ०६ २९ १४	११ २९ २१ २५	०४ १५ ०० ४६	०२ ०० २५ १७	०२ १५ ३५ १७	०० १७ ०० ४४	१० १२ २५ ३५	०९ २१ २७ १७	०७ २७ ५० १२	८
९	०० २४ ४७ २८	०८ २२ २५ १०	०२ ०७ ०७ १६	११ २९ ५७ ०१	०४ १५ ०१ २३	०२ ०० ४५ १४	०२ १५ ४१ ०६	०० १६ ५७ ३३	१० १२ २७ ०९	०९ २१ २७ ३५	०७ २७ ४८ ५७	९
१०	०० २५ ४५ २७	०९ ०६ ४७ २७	०२ ०७ ४५ १७	०० ०० ३६ २९	०४ १५ ०२ ११	०२ ०१ ०३ १९	०२ १५ ४६ ५८	०० १६ ५४ २२	१० १२ २८ ४१	०९ २१ २७ ५०	०७ २७ ४७ ४०	१०
११	०० २६ ४३ २५	०९ २० ४८ ३१	०२ ०८ २३ १८	०० ०१ १९ ४१	०४ १५ ०३ ०९	०२ ०१ १९ २७	०२ १५ ५२ ५५	०० १६ ५१ ११	१० १२ ३० १०	०९ २१ २८ ०४	०७ २७ ४६ २३	११
१२	०० २७ ४१ २२	१० ०४ २७ ३०	०२ ०९ ०१ १९	०० ०२ ०६ ३०	०४ १५ ०४ १८	०२ ०१ ३३ ३५	०२ १५ ५८ ५६	०० १६ ४८ ००	१० १२ ३१ ३६	०९ २१ २८ १६	०७ २७ ४५ ०५	१२
१३	०० २८ ३९ १७	१० १७ ४५ १३	०२ ०९ ३९ १९	०० ०२ ५६ ४६	०४ १५ ०५ ३८	०२ ०१ ४५ ४०	०२ १६ ०५ ००	०० १६ ४४ ५०	१० १२ ३३ ००	०९ २१ २८ २६	०७ २७ ४३ ४५	१३
१४	०० २९ ३७ ११	११ ०० ४३ ३२	०२ १० १७ १९	०० ०३ ५० २३	०४ १५ ०७ ०८	०२ ०१ ५५ ३९	०२ १६ ११ ०७	०० १६ ४१ ३९	१० १२ ३४ २१	०९ २१ २८ ३३	०७ २७ ४२ २५	१४
१५	०१ ०० ३५ ०४	११ १३ २४ ५६	०२ १० ५५ १८	०० ०४ ४७ १४	०४ १५ ०८ ५०	०२ ०२ ०३ २८	०२ १६ १७ १९	०० १६ ३८ २८	१० १२ ३५ ३९	०९ २१ २८ ३९	०७ २७ ४१ ०३	१५
१६	०१ ०१ ३२ ५६	११ २५ ५२ ०२	०२ ११ ३३ १७	०० ०५ ४७ १२	०४ १५ १० ४२	०२ ०२ ०९ ०३	०२ १६ २३ ३४	०० १६ ३५ १८	१० १२ ३६ ५४	०९ २१ २८ ४३	०७ २७ ३९ ४१	१६
१७	०१ ०२ ३० ४६	०० ०८ ०७ २४	०२ १२ ११ १६	०० ०६ ५० ११	०४ १५ १२ ४५	०२ ०२ १२ २३व	०२ १६ २९ ५२	०० १६ ३२ ०७	१० १२ ३८ ०७	०९ २१ २८ ४५	०७ २७ ३८ १७	१७
१८	०१ ०३ २८ ३५	०० २० १३ २१	०२ १२ ४९ १४	०० ०७ ५६ ०६	०४ १५ १४ ५८	०२ ०२ १३ २४	०२ १६ ३६ १४	०० १६ २८ ५६	१० १२ ३९ १७	०९ २१ २८ ४५	०७ २७ ३६ ५३	१८
१९	०१ ०४ २६ २३	०१ ०२ १२ ०२	०२ १३ २७ १२	०० ०९ ०४ ५१	०४ १५ १७ २२	०२ ०२ १२ ०५	०२ १६ ४२ ३९	०० १६ २५ ४५	१० १२ ४० २४	०९ २१ २८ ४३	०७ २७ ३५ २८	१९
२०	०१ ०५ २४ ०९	०१ १४ ०५ ३०	०२ १४ ०५ ०९	०० १० १६ २२	०४ १५ १९ ५६	०२ ०२ ०८ २२	०२ १६ ४९ ०७	०० १६ २२ ३५	१० १२ ४१ २८	०९ २१ २८ ३९व.	०७ २७ ३४ ०१	२०
२१	०१ ०६ २१ ५४	०१ २५ ५५ ४७	०२ १४ ४३ ०७	०० ११ ३० ३५	०४ १५ २२ ४१	०२ ०२ ०२ १५	०२ १६ ५५ ३९	०० १६ १९ २४	१० १२ ४२ २९	०९ २१ २८ ३३	०७ २७ ३२ ३५	२१
२२	०१ ०७ १९ ३७	०२ ०७ ४५ ०४	०२ १५ २१ ०३	०० १२ ४७ २८	०४ १५ २५ ३६	०२ ०१ ५३ ४३	०२ १७ ०२ १३	०० १६ १६ १३	१० १२ ४३ २८	०९ २१ २८ २५	०७ २७ ३१ ०७	२२
२३	०१ ०८ १७ १९	०२ १९ ३५ ४४	०२ १५ ५९ ००	०० १४ ०६ ५६	०४ १५ २८ ४१	०२ ०१ ४२ ४४	०२ १७ ०८ ५१	०० १६ १३ ०२	१० १२ ४४ २३	०९ २१ २८ १५	०७ २७ २९ ३८	२३
२४	०१ ०९ १५ ००	०३ ०१ ३० ३३	०२ १६ ३६ ५६	०० १५ २८ ५७	०४ १५ ३१ ५६	०२ ०१ २९ २१	०२ १७ १५ ३१	०० १६ ०९ ५१	१० १२ ४५ १६	०९ २१ २८ ०३	०७ २७ २८ ०९	२४
२५	०१ १० १२ ३९	०३ १३ ३२ ४२	०२ १७ १४ ५१	०० १६ ५३ ३०	०४ १५ ३५ २२	०२ ०१ १३ ३४	०२ १७ २२ १५	०० १६ ०६ ४०	१० १२ ४६ ०६	०९ २१ २७ ४९	०७ २७ २६ ४०	२५
२६	०१ ११ १० १६	०३ २५ ४५ ५२	०२ १७ ५२ ४६	०० १८ २० ३२	०४ १५ ३८ ५७	०२ ०० ५५ २४	०२ १७ २९ ०१	०० १६ ०३ २९	१० १२ ४६ ५३	०९ २१ २७ ३४	०७ २७ २५ ०९	२६
२७	०१ १२ ०७ ५२	०४ ०८ १४ ००	०२ १८ ३० ४१	०० १९ ५० ०२	०४ १५ ४२ ४३	०२ ०० ३४ ५६	०२ १७ ३५ ५०	०० १६ ०० १९	१० १२ ४७ ३७	०९ २१ २७ १६	०७ २७ २३ ३८	२७
२८	०१ १३ ०५ २७	०४ २१ ०१ ०६	०२ १९ ०८ ३५	०० २१ २२ ००	०४ १५ ४६ ३८	०२ ०० १२ १२	०२ १७ ४२ ४१	०० १५ ५७ ०८	१० १२ ४८ १८	०९ २१ २६ ५७	०७ २७ २२ ०७	२८
२९	०१ १४ ०३ ००	०५ ०४ १० ४९	०२ १९ ४६ २८	०० २२ ५६ २४	०४ १५ ५० ४३	०१ २९ ४७ १९	०२ १७ ४९ ३६	०० १५ ५३ ५७	१० १२ ४८ ५६	०९ २१ २६ ३६	०७ २७ २० ३५	२९
३०	०१ १५ ०० ३२	०५ १७ ४६ ०२	०२ २० २४ ११	०० २४ ३३ १३	०४ १५ ५४ ५८	०१ २९ २० २२	०२ १७ ५६ ३२	०० १५ ५० ४७	१० १२ ४९ ३१	०९ २१ २६ १२	०७ २७ १९ ०२	३०
३१	०१ १५ ५८ ०२	०६ ०१ ४८ ११	०२ २१ ०२ १४	०० २६ १२ २८	०४ १५ ५९ २२	०१ २८ ५१ २९	०२ १८ ०३ ३२	०० १५ ४७ ३६	१० १२ ५० ०४	०९ २१ २५ ४७	०७ २७ १७ २९	३१

जून सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ५५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	०१ १६ ५५ ३२	०६ १६ १६ ३२	०२ २१ ४० ०६	०० २७ ५४ ०७	०४ १६ ०३ ५५	०१ २८ २० ४९	०२ १८ १० ३३	०० १५ ४४ २५	१० १२ ५० ३३	०९ २१ २५ २०	०७ २७ १५ ५६	१
२	०१ १७ ५२ ५९	०७ ०१ ०७ ३४	०२ २२ १७ ५७	०० २९ ३८ ११	०४ १६ ०८ ३८	०१ २७ ४८ ३२	०२ १८ १७ ३७	०० १५ ४१ १४	१० १२ ५१ ००	०९ २१ २४ ५२	०७ २७ १४ २२	२
३	०१ १८ ५० २६	०७ १६ १४ ४८	०२ २२ ५५ ४८	०१ ०१ २४ ३८	०४ १६ १३ ३०	०१ २७ १४ ४९	०२ १८ २४ ४३	०० १५ ३८ ०३	१० १२ ५१ २४	०९ २१ २४ २१	०७ २७ १२ ४८	३
४	०१ १९ ४७ ५२	०८ ०१ २९ १४	०२ २३ ३३ ३९	०१ ०३ १३ २९	०४ १६ १८ ३१	०१ २६ ३९ ५१	०२ १८ ३१ ५२	०० १५ ३४ ५२	१० १२ ५१ ४४	०९ २१ २३ ४९	०७ २७ ११ १४	४
५	०१ २० ४५ १७	०८ १६ ४० ३९	०२ २४ ११ २९	०१ ०५ ०४ ४०	०४ १६ २३ ४१	०१ २६ ०३ ५२	०२ १८ ३९ ०२	०० १५ ३१ ४१	१० १२ ५२ ०२	०९ २१ २३ १५	०७ २७ ०९ ३९	५
६	०१ २१ ४२ ४१	०९ ०१ ३९ १६	०२ २४ ४९ १९	०१ ०६ ५८ ११	०४ १६ २९ ००	०१ २५ २७ ०६	०२ १८ ४६ १५	०० १५ २८ ३०	१० १२ ५२ १७	०९ २१ २२ ३९	०७ २७ ०८ ०४	६
७	०१ २२ ४० ०५	०९ १६ १७ १०	०२ २५ २७ ०९	०१ ०८ ५३ ५९	०४ १६ ३४ २८	०१ २४ ४९ ४६	०२ १८ ५३ ३०	०० १५ २५ २०	१० १२ ५२ २९	०९ २१ २२ ०१	०७ २७ ०६ २९	७
८	०१ २३ ३७ २८	१० ०० २९ २१	०२ २६ ०४ ५९	०१ १० ५१ ५९	०४ १६ ४० ०५	०१ २४ १२ ०८	०२ १९ ०० ४७	०० १५ २२ ०९	१० १२ ५२ ३८	०९ २१ २१ २२	०७ २७ ०४ ५४	८
९	०१ २४ ३४ ५०	१० १४ १३ ५२	०२ २६ ४२ ४८	०१ १२ ५२ ०८	०४ १६ ४५ ५१	०१ २३ ३४ २६	०२ १९ ०८ ०६	०० १५ १८ ५८	१० १२ ५२ ४५	०९ २१ २० ४०	०७ २७ ०३ १८	९
१०	०१ २५ ३२ १२	१० २७ ३१ ३०	०२ २७ २० ३७	०१ १४ ५४ १८	०४ १६ ५१ ४५	०१ २२ ५६ ५५	०२ १९ १५ २६	०० १५ १५ ४७	१० १२ ५२ ४८	०९ २१ १९ ५८	०७ २७ ०१ ४३	१०
११	०१ २६ २९ ३३	११ १० २४ ५७	०२ २७ ५८ २६	०१ १६ ५८ २३	०४ १६ ५७ ४८	०१ २२ १९ ४९	०२ १९ २२ ४९	०० १५ १२ ३६	१० १२ ५२ ४८	०९ २१ १९ १३	०७ २७ ०० ०७	११
१२	०१ २७ २६ ५४	११ २२ ५८ ००	०२ २८ ३६ १५	०१ १९ ०४ १२	०४ १७ ०३ ५९	०१ २१ ४३ २३	०२ १९ ३० १३	०० १५ ०९ २६	१० १२ ५२ ४६व	०९ २१ १८ २७	०७ २६ ५८ ३१	१२
१३	०१ २८ २४ १४	०० ०५ १४ ५२	०२ २९ १४ ०४	०१ २१ ११ ३६	०४ १७ १० १९	०१ २१ ०७ ४९	०२ १९ ३७ ३९	०० १५ ०६ १५	१० १२ ५२ ४१	०९ २१ १७ ३९	०७ २६ ५६ ५६	१३
१४	०१ २९ २१ ३४	०० १७ १९ ४३	०२ २९ ५१ ५३	०१ २३ २० २२	०४ १७ १६ ४७	०१ २० ३३ २१	०२ १९ ४५ ०६	०० १५ ०३ ०४	१० १२ ५२ ३२	०९ २१ १६ ४९	०७ २६ ५५ २०	१४
१५	०२ ०० १८ ५४	०० २९ १६ १७	०३ ०० २९ ४२	०१ २५ ३० १६	०४ १७ २३ २३	०१ २० ०० ११	०२ १९ ५२ ३६	०० १४ ५९ ५३	१० १२ ५२ २१	०९ २१ १५ ५८	०७ २६ ५३ ४५	१५
१६	०२ ०१ १६ १३	०१ ११ ०७ ५०	०३ ०१ ०७ ३०	०१ २७ ४१ ०३	०४ १७ ३० ०७	०१ १९ २८ २९	०२ २० ०० ०६	०० १४ ५६ ४३	१० १२ ५२ ०७	०९ २१ १५ ०५	०७ २६ ५२ ०९	१६
१७	०२ ०२ १३ ३१	०१ २२ ५७ ०७	०३ ०१ ४५ १९	०१ २९ ५२ २८	०४ १७ ३७ ००	०१ १८ ५८ २७	०२ २० ०७ ३८	०० १४ ५३ ३२	१० १२ ५१ ५०	०९ २१ १४ १०	०७ २६ ५० ३४	१७
१८	०२ ०३ १० ४९	०२ ०४ ४६ २२	०३ ०२ २३ ०७	०२ ०२ ०४ १४	०४ १७ ४४ ००	०१ १८ ३० १२	०२ २० १५ १२	०० १४ ५० २१	१० १२ ५१ ३०	०९ २१ १३ १४	०७ २६ ४८ ५९	१८
१९	०२ ०४ ०८ ०७	०२ १६ ३७ ३०	०३ ०३ ०० ५५	०२ ०४ १६ ०३	०४ १७ ५१ ०८	०१ १८ ०३ ५३	०२ २० २२ ४७	०० १४ ४७ १०	१० १२ ५१ ०७	०९ २१ १२ १७	०७ २६ ४७ २४	१९
२०	०२ ०५ ०५ २३	०२ २८ ३२ १४	०३ ०३ ३८ ४४	०२ ०६ २७ ४१	०४ १७ ५८ २४	०१ १७ ३९ ३६	०२ २० ३० २३	०० १४ ४३ ५९	१० १२ ५० ४१	०९ २१ ११ १८	०७ २६ ४५ ५०	२०
२१	०२ ०६ ०२ ४०	०३ १० ३२ १७	०३ ०४ १६ ३२	०२ ०८ ३८ ५०	०४ १८ ०५ ४८	०१ १७ १७ २८	०२ २० ३८ ००	०० १४ ४० ४८	१० १२ ५० १३	०९ २१ १० १७	०७ २६ ४४ १५	२१
२२	०२ ०६ ५९ ५६	०३ २२ ३९ ४०	०३ ०४ ५४ २०	०२ १० ४९ १६	०४ १८ १३ १९	०१ १६ ५७ ३३	०२ २० ४५ ३८	०० १४ ३७ ३७	१० १२ ४९ ४२	०९ २१ ०९ १५	०७ २६ ४२ ४१	२२
२३	०२ ०७ ५७ ११	०४ ०४ ५६ ४७	०३ ०५ ३२ ०८	०२ १२ ५८ ४५	०४ १८ २० ५७	०१ १६ ३९ ५५	०२ २० ५३ १७	०० १४ ३४ २७	१० १२ ४९ ०८	०९ २१ ०८ ११	०७ २६ ४१ ०८	२३
२४	०२ ०८ ५४ २५	०४ १७ २६ ३१	०३ ०६ ०९ ५५	०२ १५ ०७ ०४	०४ १८ २८ ४३	०१ १६ २४ ३६	०२ २१ ०० ५८	०० १४ ३१ १६	१० १२ ४८ ३१	०९ २१ ०७ ०६	०७ २६ ३९ ३५	२४
२५	०२ ०९ ५१ ३९	०५ ०० १२ ०७	०३ ०६ ४७ ४३	०२ १७ १४ ०२	०४ १८ ३६ ३६	०१ १६ ११ ३९	०२ २१ ०८ ३९	०० १४ २८ ०५	१० १२ ४७ ५१	०९ २१ ०६ ००	०७ २६ ३८ ०२	२५
२६	०२ १० ४८ ५२	०५ १३ १६ ५८	०३ ०७ २५ ३०	०२ १९ १९ २९	०४ १८ ४४ ३६	०१ १६ ०१ ०५	०२ २१ १६ २१	०० १४ २४ ५४	१० १२ ४७ ०९	०९ २१ ०४ ५२	०७ २६ ३६ ३०	२६
२७	०२ ११ ४६ ०५	०५ २६ ४४ १७	०३ ०८ ०३ १७	०२ २१ २३ १९	०४ १८ ५२ ४३	०१ १५ ५२ ५३	०२ २१ २४ ०३	०० १४ २१ ४४	१० १२ ४६ २३	०९ २१ ०३ ४३	०७ २६ ३४ ५८	२७
२८	०२ १२ ४३ १७	०६ १० ३६ २९	०३ ०८ ४१ ०४	०२ २३ २५ २३	०४ १९ ०० ५७	०१ १५ ४७ ०४	०२ २१ ३१ ४६	०० १४ १८ ३३	१० १२ ४५ ३६	०९ २१ ०२ ३२	०७ २६ ३३ २७	२८
२९	०२ १३ ४० २९	०६ २४ ५४ २७	०३ ०९ १८ ५१	०२ २५ २५ ३७	०४ १९ ०९ १८	०१ १५ ४३ ३८मा.	०२ २१ ३९ ३०	०० १४ १५ २२	१० १२ ४४ ४५	०९ २१ ०१ २०	०७ २६ ३१ ५७	२९
३०	०२ १४ ३७ ४०	०७ ०९ ३६ ३७	०३ ०९ ५६ ३८	०२ २७ २३ ५८	०४ १९ १७ ४५	०१ १५ ४२ ३२	०२ २१ ४७ १५	०० १४ १२ ११	१० १२ ४३ ५२	०९ २१ ०० ०७	०७ २६ ३० २७	३०

जुलाई सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५५' ।०१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
१	०२ १५ ३४ ५१	०७ २४ ३८ १८	०३ १० ३४ २५	०२ २९ २० २१	०४ १९ २६ २०	०१ १५ ४३ ४५	०२ २१ ५५ ००	०० १४ ०९ ००	१० १२ ४२ ५६	०९ २० ५८ ५३	०७ २६ २८ ५८	१
२	०२ १६ ३२ ०२	०८ ०९ ५१ ४३	०३ ११ १२ ११	०३ ०१ १४ ४५	०४ १९ ३५ ००	०१ १५ ४७ १५	०२ २२ ०२ ४६	०० १४ ०५ ४९	१० १२ ४१ ५७	०९ २० ५७ ३८	०७ २६ २७ २९	२
३	०२ १७ २९ १२	०८ २५ ०६ ४३	०३ ११ ४९ ५८	०३ ०३ ०७ ०८	०४ १९ ४३ ४७	०१ १५ ५२ ५९	०२ २२ १० ३२	०० १४ ०२ ३८	१० १२ ४० ५६	०९ २० ५६ २१	०७ २६ २६ ०२	३
४	०२ १८ २६ २३	०९ १० १२ ३२	०३ १२ २७ ४४	०३ ०४ ५७ ३०	०४ १९ ५२ ४०	०१ १६ ०० ५५	०२ २२ १८ १८	०० १३ ५९ २७	१० १२ ३९ ५३	०९ २० ५५ ०३	०७ २६ २४ ३५	४
५	०२ १९ २३ ३४	०९ २४ ५९ ३१	०३ १३ ०५ ३१	०३ ०६ ४५ ४८	०४ २० ०१ ४०	०१ १६ १० ५९	०२ २२ २६ ०४	०० १३ ५६ १६	१० १२ ३८ ४७	०९ २० ५३ ४४	०७ २६ २३ ०८	५
६	०२ २० २० ४५	१० ०९ २० ४३	०३ १३ ४३ १८	०३ ०८ ३२ ०४	०४ २० १० ४६	०१ १६ २३ ०९	०२ २२ ३३ ५१	०० १३ ५३ ०६	१० १२ ३७ ३८	०९ २० ५२ २४	०७ २६ २१ ४३	६
७	०२ २१ १७ ५६	१० २३ १२ ३५	०३ १४ २१ ०५	०३ १० १६ १६	०४ २० १९ ५७	०१ १६ ३७ २०	०२ २२ ४१ ३८	०० १३ ४९ ५५	१० १२ ३६ २७	०९ २० ५१ ०३	०७ २६ २० १८	७
८	०२ २२ १५ ०७	११ ०६ ३४ ५५	०३ १४ ५८ ५२	०३ ११ ५८ २६	०४ २० २९ १५	०१ १६ ५३ ३०	०२ २२ ४९ २५	०० १३ ४६ ४४	१० १२ ३५ १३	०९ २० ४९ ४०	०७ २६ १८ ५४	८
९	०२ २३ १२ १९	११ १९ ३० ०६	०३ १५ ३६ ३९	०३ १३ ३८ ३२	०४ २० ३८ ३९	०१ १७ ११ ३३	०२ २२ ५७ १३	०० १३ ४३ ३३	१० १२ ३३ ५७	०९ २० ४८ १७	०७ २६ १७ ३२	९
१०	०२ २४ ०९ ३२	०० ०२ ०२ १२	०३ १६ १४ २७	०३ १५ १६ ३५	०४ २० ४८ ०८	०१ १७ ३१ २८	०२ २३ ०५ ००	०० १३ ४० २३	१० १२ ३२ ३८	०९ २० ४६ ५३	०७ २६ १६ १०	१०
११	०२ २५ ०६ ४४	०० १४ १६ ११	०३ १६ ५२ १५	०३ १६ ५२ ३४	०४ २० ५७ ४४	०१ १७ ५३ ०९	०२ २३ १२ ४७	०० १३ ३७ १२	१० १२ ३१ १८	०९ २० ४५ २८	०७ २६ १४ ४९	११
१२	०२ २६ ०३ ५८	०० २६ १७ ०६	०३ १७ ३० ०३	०३ १८ २६ ३०	०४ २१ ०७ २५	०१ १८ १६ ३३	०२ २३ २० ३४	०० १३ ३४ ०१	१० १२ २९ ५४	०९ २० ४४ ०२	०७ २६ १३ २९	१२
१३	०२ २७ ०१ ११	०१ ०८ ०९ ५०	०३ १८ ०७ ५१	०३ १९ ५८ २१	०४ २१ १७ ११	०१ १८ ४१ ३७	०२ २३ २८ २१	०० १३ ३० ५०	१० १२ २८ २९	०९ २० ४२ ३४	०७ २६ १२ १०	१३
१४	०२ २७ ५८ २५	०१ १९ ५८ ४१	०३ १८ ४५ ४०	०३ २१ २८ ०७	०४ २१ २७ ०४	०१ १९ ०८ १७	०२ २३ ३६ ०८	०० १३ २७ ४०	१० १२ २७ ०१	०९ २० ४१ ०७	०७ २६ १० ५२	१४
१५	०२ २८ ५५ ४०	०२ ०१ ४७ १६	०३ १९ २३ २९	०३ २२ ५५ ४७	०४ २१ ३७ ०१	०१ १९ ३६ २९	०२ २३ ४३ ५४	०० १३ २४ २९	१० १२ २५ ३०	०९ २० ३९ ३८	०७ २६ ०९ ३५	१५
१६	०२ २९ ५२ ५५	०२ १३ ३८ २६	०३ २० ०१ १८	०३ २४ २१ २०	०४ २१ ४७ ०४	०१ २० ०६ ०९	०२ २३ ५१ ४०	०० १३ २१ १८	१० १२ २३ ५८	०९ २० ३८ ०८	०७ २६ ०८ २०	१६
१७	०३ ०० ५० ११	०२ २५ ३४ १९	०३ २० ३९ ०८	०३ २५ ४४ ४३	०४ २१ ५७ १२	०१ २० ३७ १६	०२ २३ ५९ २६	०० १३ १८ ०७	१० १२ २२ २३	०९ २० ३६ ३८	०७ २६ ०७ ०५	१७
१८	०३ ०१ ४७ २७	०३ ०७ ३६ २९	०३ २१ १६ ५८	०३ २७ ०५ ५४	०४ २२ ०७ २५	०१ २१ ०९ ४४	०२ २४ ०७ ११	०० १३ १४ ५६	१० १२ २० ४७	०९ २० ३५ ०७	०७ २६ ०५ ५२	१८
१९	०३ ०२ ४४ ४३	०३ १९ ४६ ०४	०३ २१ ५४ ४८	०३ २८ २४ ५२	०४ २२ १७ ४४	०१ २१ ४३ ३२	०२ २४ १४ ५५	०० १३ ११ ४५	१० १२ १९ ०८	०९ २० ३३ ३५	०७ २६ ०४ ४०	१९
२०	०३ ०३ ४२ ००	०४ ०२ ०४ ०४	०३ २२ ३२ ३८	०३ २९ ४१ ३३	०४ २२ २८ ०७	०१ २२ १८ ३५	०२ २४ २२ ३९	०० १३ ०८ ३४	१० १२ १७ २७	०९ २० ३२ ०३	०७ २६ ०३ २९	२०
२१	०३ ०४ ३९ १७	०४ १४ ३१ ३५	०३ २३ १० २९	०४ ०० ५५ ५५	०४ २२ ३८ ३५	०१ २२ ५४ ५२	०२ २४ ३० २२	०० १३ ०५ २४	१० १२ १५ ४४	०९ २० ३० ३०	०७ २६ ०२ २०	२१
२२	०३ ०५ ३६ ३५	०४ २७ १० ०८	०३ २३ ४८ २०	०४ ०२ ०७ ५२	०४ २२ ४९ ०८	०१ २३ ३२ १९	०२ २४ ३८ ०५	०० १३ ०२ १३	१० १२ १३ ५९	०९ २० २८ ५६	०७ २६ ०१ ११	२२
२३	०३ ०६ ३३ ५३	०५ १० ०१ ३७	०३ २४ २६ ११	०४ ०३ १७ २२	०४ २२ ५९ ४६	०१ २४ १० ५४	०२ २४ ४५ ४६	०० १२ ५९ ०२	१० १२ १२ १२	०९ २० २७ २२	०७ २६ ०० ०५	२३
२४	०३ ०७ ३१ ११	०५ २३ ०८ २१	०३ २५ ०४ ०३	०४ ०४ २४ १९	०४ २३ १० २८	०१ २४ ५० ३४	०२ २४ ५३ २६	०० १२ ५५ ५२	१० १२ १० २३	०९ २० २५ ४७	०७ २५ ५८ ५९	२४
२५	०३ ०८ २८ २९	०६ ०६ ३२ ५१	०३ २५ ४१ ५५	०४ ०५ २८ ३८	०४ २३ २१ १५	०१ २५ ३१ १७	०२ २५ ०१ ०६	०० १२ ५२ ४१	१० १२ ०८ ३२	०९ २० २४ १२	०७ २५ ५७ ५५	२५
२६	०३ ०९ २५ ४८	०६ २० १७ २३	०३ २६ १९ ४७	०४ ०६ ३० १३	०४ २३ ३२ ०६	०१ २६ १३ ०१	०२ २५ ०८ ४४	०० १२ ४९ ३०	१० १२ ०६ ३९	०९ २० २२ ३६	०७ २५ ५६ ५२	२६
२७	०३ १० २३ ०७	०७ ०४ २३ २३	०३ २६ ५७ ३९	०४ ०७ २८ ५९	०४ २३ ४३ ०२	०१ २६ ५५ ४३	०२ २५ १६ २१	०० १२ ४६ १९	१० १२ ०४ ४५	०९ २० २१ ००	०७ २५ ५५ ५०	२७
२८	०३ ११ २० २७	०७ १८ ५० ३२	०३ २७ ३५ ३२	०४ ०८ २४ ४७	०४ २३ ५४ ०१	०१ २७ ३९ २१	०२ २५ २३ ५८	०० १२ ४३ ०८	१० १२ ०२ ४९	०९ २० १९ २४	०७ २५ ५४ ५१	२८
२९	०३ १२ १७ ४७	०८ ०३ ३६ ०२	०३ २८ १३ २४	०४ ०९ १७ ३०	०४ २४ ०५ ०५	०१ २८ २३ ५४	०२ २५ ३१ ३३	०० १२ ३९ ५७	१० १२ ०० ५२	०९ २० १७ ४७	०७ २५ ५३ ५२	२९
३०	०३ १३ १५ ०८	०८ १८ ३४ १४	०३ २८ ५१ १८	०४ १० ०७ ००	०४ २४ १६ १३	०१ २९ ०९ २०	०२ २५ ३९ ०६	०० १२ ३६ ४६	१० ११ ५८ ५२	०९ २० १६ १०	०७ २५ ५२ ५५	३०
३१	०३ १४ १२ २९	०९ ०३ ३६ ५५	०३ २९ २९ ११	०४ १० ५३ ०९	०४ २४ २७ २५	०१ २९ ५५ ३६	०२ २५ ४६ ३८	०० १२ ३३ ३६	१० ११ ५६ ५१	०९ २० १४ ३३	०७ २५ ५२ ००	३१

अगस्त सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५५' ।०६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
१	०३ १५ ०९ ५१	०९ १८ ३४ २८	०४ ०० ०७ ०५	०४ ११ ३५ ४७	०४ २४ ३८ ४१	०२ ०० ४२ ४२	०२ २५ ५४ ०९	०० १२ ३० २५	१० ११ ५४ ४९	०९ २० १२ ५५	०७ २५ ५१ ०६	१
२	०३ १६ ०७ १४	१० ०३ १७ २९	०४ ०० ४५ ००	०४ १२ १४ ४३	०४ २४ ५० ००	०२ ०१ ३० ३५	०२ २६ ०१ ३९	०० १२ २७ १४	१० ११ ५२ ४५	०९ २० ११ १८	०७ २५ ५० १३	२
३	०३ १७ ०४ ३८	१० १७ ३८ १९	०४ ०१ २२ ५५	०४ १२ ४९ ४८	०४ २५ ०१ २४	०२ ०२ १९ १३	०२ २६ ०९ ०७	०० १२ २४ ०३	१० ११ ५० ४०	०९ २० ०९ ४०	०७ २५ ४९ २२	३
४	०३ १८ ०२ ०३	११ ०१ ३२ १६	०४ ०२ ०० ५०	०४ १३ २० ५०	०४ २५ १२ ५१	०२ ०३ ०८ ३७	०२ २६ १६ ३३	०० १२ २० ५३	१० ११ ४८ ३३	०९ २० ०८ ०२	०७ २५ ४८ ३३	४
५	०३ १८ ५९ २९	११ १४ ५७ ४६	०४ ०२ ३८ ४६	०४ १३ ४७ ३७	०४ २५ २४ २२	०२ ०३ ५८ ४२	०२ २६ २३ ५८	०० १२ १७ ४२	१० ११ ४६ २५	०९ २० ०६ २४	०७ २५ ४७ ४५	५
६	०३ १९ ५६ ५७	११ २७ ५६ ०७	०४ ०३ १६ ४३	०४ १४ ०९ ५९	०४ २५ ३५ ५६	०२ ०४ ४९ २९	०२ २६ ३१ २१	०० १२ १४ ३१	१० ११ ४४ १६	०९ २० ०४ ४६	०७ २५ ४६ ५९	६
७	०३ २० ५४ २६	०० १० ३० ४३	०४ ०३ ५४ ४०	०४ १४ २७ ४४	०४ २५ ४७ ३४	०२ ०५ ४० ५६	०२ २६ ३८ ४२	०० १२ ११ २०	१० ११ ४२ ०५	०९ २० ०३ ०७	०७ २५ ४६ १५	७
८	०३ २१ ५१ ५६	०० २२ ४६ १२	०४ ०४ ३२ ३८	०४ १४ ४० ३९	०४ २५ ५९ १५	०२ ०६ ३३ ०१	०२ २६ ४६ ०२	०० १२ ०८ १०	१० ११ ३९ ५३	०९ २० ०१ २९	०७ २५ ४५ ३२	८
९	०३ २२ ४९ २७	०१ ०४ ४७ ४८	०४ ०५ १० ३७	०४ १४ ४८ ३५व	०४ २६ ११ ००	०२ ०७ २५ ४३	०२ २६ ५३ २०	०० १२ ०४ ५९	१० ११ ३७ ४०	०९ १९ ५९ ५१	०७ २५ ४४ ५१	९
१०	०३ २३ ४७ ००	०१ १६ ४० ४९	०४ ०५ ४८ ३६	०४ १४ ५१ २०	०४ २६ २२ ४८	०२ ०८ १९ ०१	०२ २७ ०० ३५	०० १२ ०१ ४८	१० ११ ३५ २६	०९ १९ ५८ १३	०७ २५ ४४ १२	१०
११	०३ २४ ४४ ३४	०१ २८ ३० १७	०४ ०६ २६ ३६	०४ १४ ४८ ४८	०४ २६ ३४ ३९	०२ ०९ १२ ५३	०२ २७ ०७ ४९	०० ११ ५८ ३७	१० ११ ३३ ११	०९ १९ ५६ ३५	०७ २५ ४३ ३४	११
१२	०३ २५ ४२ ०९	०२ १० २० ३७	०४ ०७ ०४ ३७	०४ १४ ४० ४९	०४ २६ ४६ ३३	०२ १० ०७ १८	०२ २७ १५ ०१	०० ११ ५५ २६	१० ११ ३० ५५	०९ १९ ५४ ५८	०७ २५ ४२ ५८	१२
१३	०३ २६ ३९ ४६	०२ २२ १५ ३२	०४ ०७ ४२ ३९	०४ १४ २७ २२	०४ २६ ५८ ३१	०२ ११ ०२ १५	०२ २७ २२ १०	०० ११ ५२ १५	१० ११ २८ ३८	०९ १९ ५३ २०	०७ २५ ४२ २४	१३
१४	०३ २७ ३७ २४	०३ ०४ १७ ४९	०४ ०८ २० ४१	०४ १४ ०८ २५	०४ २७ १० ३१	०२ ११ ५७ ४४	०२ २७ २९ १७	०० ११ ४९ ०५	१० ११ २६ २०	०९ १९ ५१ ४३	०७ २५ ४१ ५२	१४
१५	०३ २८ ३५ ०४	०३ १६ २९ २५	०४ ०८ ५८ ४४	०४ १३ ४४ ०१	०४ २७ २२ ३४	०२ १२ ५३ ४२	०२ २७ ३६ २२	०० ११ ४५ ५४	१० ११ २४ ०२	०९ १९ ५० ०६	०७ २५ ४१ २१	१५
१६	०३ २९ ३२ ४५	०३ २८ ५१ २७	०४ ०९ ३६ ४८	०४ १३ १४ २०	०४ २७ ३४ ४०	०२ १३ ५० ०९	०२ २७ ४३ २५	०० ११ ४२ ४३	१० ११ २१ ४२	०९ १९ ४८ २९	०७ २५ ४० ५२	१६
१७	०४ ०० ३० २७	०४ ११ २४ २६	०४ १० १४ ५२	०४ १२ ३९ ३६	०४ २७ ४६ ४९	०२ १४ ४७ ०४	०२ २७ ५० २५	०० ११ ३९ ३२	१० ११ १९ २२	०९ १९ ४६ ५३	०७ २५ ४० २५	१७
१८	०४ ०१ २८ १०	०४ २४ ०८ २८	०४ १० ५२ ५८	०४ १२ ०० १०	०४ २७ ५९ ०१	०२ १५ ४४ २६	०२ २७ ५७ २३	०० ११ ३६ २२	१० ११ १७ ०१	०९ १९ ४५ १७	०७ २५ ४० ००	१८
१९	०४ ०२ २५ ५५	०५ ०७ ०३ ३८	०४ ११ ३१ ०३	०४ ११ १६ ३२	०४ २८ ११ १५	०२ १६ ४२ १४	०२ २८ ०४ १८	०० ११ ३३ ११	१० ११ १४ ४०	०९ १९ ४३ ४२	०७ २५ ३९ ३७	१९
२०	०४ ०३ २३ ४१	०५ २० १० १०	०४ १२ ०९ १०	०४ १० २९ १८	०४ २८ २३ ३२	०२ १७ ४० २७	०२ २८ ११ १०	०० ११ ३० ००	१० ११ १२ १८	०९ १९ ४२ ०७	०७ २५ ३९ १५	२०
२१	०४ ०४ २१ २७	०६ ०३ २८ ३९	०४ १२ ४७ १७	०४ ०९ ३९ ११	०४ २८ ३५ ५१	०२ १८ ३९ ०६	०२ २८ १७ ५९	०० ११ २६ ५०	१० ११ ०९ ५६	०९ १९ ४० ३३	०७ २५ ३८ ५६	२१
२२	०४ ०५ १९ १६	०६ १७ ०० ०२	०४ १३ २५ २५	०४ ०८ ४७ ०२	०४ २८ ४८ १२	०२ १९ ३८ ०७	०२ २८ २४ ४६	०० ११ २३ ३९	१० ११ ०७ ३३	०९ १९ ३८ ५९	०७ २५ ३८ ३८	२२
२३	०४ ०६ १७ ०५	०७ ०० ४५ २०	०४ १४ ०३ ३४	०४ ०७ ५३ ४८	०४ २९ ०० ३५	०२ २० ३७ ३२	०२ २८ ३१ ३०	०० ११ २० २८	१० ११ ०५ १०	०९ १९ ३७ २५	०७ २५ ३८ २२	२३
२४	०४ ०७ १४ ५५	०७ १४ ४५ १४	०४ १४ ४१ ४३	०४ ०७ ०० ३१	०४ २९ १३ ०१	०२ २१ ३७ २०	०२ २८ ३८ ११	०० ११ १७ १७	१० ११ ०२ ४६	०९ १९ ३५ ५३	०७ २५ ३८ ०८	२४
२५	०४ ०८ १२ ४७	०७ २८ ५९ ३०	०४ १५ १९ ५३	०४ ०६ ०८ १५	०४ २९ २५ २९	०२ २२ ३७ ३०	०२ २८ ४४ ४९	०० ११ १४ ०६	१० ११ ०० २३	०९ १९ ३४ २१	०७ २५ ३७ ५६	२५
२६	०४ ०९ १० ३९	०८ १३ २६ २४	०४ १५ ५८ ०४	०४ ०५ १८ ०८	०४ २९ ३७ ५९	०२ २३ ३८ ०१	०२ २८ ५१ २५	०० ११ १० ५६	१० १० ५७ ५९	०९ १९ ३२ ४९	०७ २५ ३७ ४६	२६
२७	०४ १० ०८ ३३	०८ २८ ०२ १४	०४ १६ ३६ १५	०४ ०४ ३१ १५	०४ २९ ५० ३०	०२ २४ ३८ ५३	०२ २८ ५७ ५७	०० ११ ०७ ४५	१० १० ५५ ३६	०९ १९ ३१ १९	०७ २५ ३७ ३७	२७
२८	०४ ११ ०६ २८	०९ १२ ४१ २९	०४ १७ १४ २७	०४ ०३ ४८ ३८	०५ ०० ०३ ०४	०२ २५ ४० ०६	०२ २९ ०४ २५	०० ११ ०४ ३४	१० १० ५३ १२	०९ १९ २९ ४९	०७ २५ ३७ ३१	२८
२९	०४ १२ ०४ २५	०९ २७ १७ १३	०४ १७ ५२ ४०	०४ ०३ ११ १८	०५ ०० १५ ३९	०२ २६ ४१ ३९	०२ २९ १० ५१	०० ११ ०१ २३	१० १० ५० ४८	०९ १९ २८ २०	०७ २५ ३७ २७	२९
३०	०४ १३ ०२ २३	१० ११ ४२ १०	०४ १८ ३० ५४	०४ ०२ ४० ०६	०५ ०० २८ १७	०२ २७ ४३ ३१	०२ २९ १७ १३	०० १० ५८ १२	१० १० ४८ २४	०९ १९ २६ ५२	०७ २५ ३७ २४	३०
३१	०४ १४ ०० २३	१० २५ ४९ ५५	०४ १९ ०९ ०९	०४ ०२ १५ ४८	०५ ०० ४० ५५	०२ २८ ४५ ४३	०२ २९ २३ ३२	०० १० ५५ ०२	१० १० ४६ ०१	०९ १९ २५ २४	०७ २५ ३७ २३	३१

सितम्बर सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५५' १०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	०४ १४ ५८ २५	११ ०९ ३५ ४९	०४ १९ ४७ २४	०४ ०१ ५९ ०२	०५ ०० ५३ ३६	०२ २९ ४८ १३	०२ २९ २९ ४८	०० १० ५१ ५१	१० १० ४३ ३७	०९ १९ २३ ५८	०७ २५ ३७ २५	१
२	०४ १५ ५६ २८	११ २२ ५७ ३४	०४ २० २५ ४१	०४ ०१ ५० १६मा	०५ ०१ ०६ १८	०३ ०० ५१ ०१	०२ २९ ३६ ००	०० १० ४८ ४०	१० १० ४१ १४	०९ १९ २२ ३२	०७ २५ ३७ २८मा.	२
३	०४ १६ ५४ ३३	०० ०५ ५५ १५	०४ २१ ०३ ५९	०४ ०१ ४९ ५१	०५ ०१ १९ ०२	०३ ०१ ५४ ०८	०२ २९ ४२ ०९	०० १० ४५ ३०	१० १० ३८ ५१	०९ १९ २१ ०८	०७ २५ ३७ ३३	३
४	०४ १७ ५२ ४०	०० १८ ३१ ०१	०४ २१ ४२ १७	०४ ०१ ५८ ०१	०५ ०१ ३१ ४६	०३ ०२ ५७ ३२	०२ २९ ४८ १४	०० १० ४२ १९	१० १० ३६ २९	०९ १९ १९ ४४	०७ २५ ३७ ४०	४
५	०४ १८ ५० ४९	०१ ०० ४८ २७	०४ २२ २० ३७	०४ ०२ १४ ५१	०५ ०१ ४४ ३३	०३ ०४ ०१ १२	०२ २९ ५४ १६	०० १० ३९ ०८	१० १० ३४ ०७	०९ १९ १८ २२	०७ २५ ३७ ४९	५
६	०४ १९ ४९ ००	०१ १२ ५२ ०६	०४ २२ ५८ ५८	०४ ०२ ४० २०	०५ ०१ ५७ २१	०३ ०५ ०५ १०	०३ ०० ०० १३	०० १० ३५ ५८	१० १० ३१ ४५	०९ १९ १७ ००	०७ २५ ३८ ००	६
७	०४ २० ४७ १३	०१ २४ ४६ ५७	०४ २३ ३७ २०	०४ ०३ १४ २०	०५ ०२ १० ०९	०३ ०६ ०९ २३	०३ ०० ०६ ०७	०० १० ३२ ४७	१० १० २९ २४	०९ १९ १५ ४०	०७ २५ ३८ १३	७
८	०४ २१ ४५ २८	०२ ०६ ३८ ०९	०४ २४ १५ ४३	०४ ०३ ५६ ३७	०५ ०२ २३ ००	०३ ०७ १३ ५२	०३ ०० ११ ५७	०० १० २९ ३६	१० १० २७ ०४	०९ १९ १४ २०	०७ २५ ३८ २८	८
९	०४ २२ ४३ ४५	०२ १८ ३० ३६	०४ २४ ५४ ०७	०४ ०४ ४६ ५३	०५ ०२ ३५ ५१	०३ ०८ १८ ३६	०३ ०० १७ ४४	०० १० २६ २५	१० १० २४ ४४	०९ १९ १३ ०२	०७ २५ ३८ ४५	९
१०	०४ २३ ४२ ०४	०३ ०० २८ ४४	०४ २५ ३२ ३२	०४ ०५ ४४ ४६	०५ ०२ ४८ ४३	०३ ०९ २३ ३५	०३ ०० २३ २६	०० १० २३ १४	१० १० २२ २५	०९ १९ ११ ४५	०७ २५ ३९ ०४	१०
११	०४ २४ ४० २५	०३ १२ ३६ १८	०४ २६ १० ५८	०४ ०६ ४९ ४८	०५ ०३ ०१ ३६	०३ १० २८ ४८	०३ ०० २९ ०४	०० १० २० ०३	१० १० २० ०६	०९ १९ १० २९	०७ २५ ३९ २४	११
१२	०४ २५ ३८ ४८	०३ २४ ५६ ०७	०४ २६ ४९ २६	०४ ०८ ०१ २९	०५ ०३ १४ ३०	०३ ११ ३४ १५	०३ ०० ३४ ३८	०० १० १६ ५३	१० १० १७ ४९	०९ १९ ०९ १५	०७ २५ ३९ ४७	१२
१३	०४ २६ ३७ १३	०४ ०७ ३० ००	०४ २७ २७ ५५	०४ ०९ १९ १७	०५ ०३ २७ २५	०३ १२ ३९ ५७	०३ ०० ४० ०८	०० १० १३ ४२	१० १० १५ ३२	०९ १९ ०८ ०१	०७ २५ ४० १२	१३
१४	०४ २७ ३५ ४०	०४ २० १८ ४३	०४ २८ ०६ २५	०४ १० ४२ ३८	०५ ०३ ४० २१	०३ १३ ४५ ५१	०३ ०० ४५ ३३	०० १० १० ३१	१० १० १३ १७	०९ १९ ०६ ४९	०७ २५ ४० ३९	१४
१५	०४ २८ ३४ ०९	०५ ०३ २२ ०६	०४ २८ ४४ ५५	०४ १२ १० ५७	०५ ०३ ५३ १७	०३ १४ ५१ ५९	०३ ०० ५० ५४	०० १० ०७ २१	१० १० ११ ०२	०९ १९ ०५ ३९	०७ २५ ४१ ०७	१५
१६	०४ २९ ३२ ४०	०५ १६ ३९ १२	०४ २९ २३ २७	०४ १३ ४३ ३९	०५ ०४ ०६ १४	०३ १५ ५८ १९	०३ ०० ५६ ११	०० १० ०४ १०	१० १० ०८ ४९	०९ १९ ०४ २९	०७ २५ ४१ ३८	१६
१७	०५ ०० ३१ १२	०६ ०० ०८ ३८	०५ ०० ०२ ००	०४ १५ २० ०९	०५ ०४ १९ ११	०३ १७ ०४ ५१	०३ ०१ ०१ २३	०० १० ०० ५९	१० १० ०६ ३६	०९ १९ ०३ २१	०७ २५ ४२ १०	१७
१८	०५ ०१ २९ ४६	०६ १३ ४८ ५१	०५ ०० ४० ३५	०४ १६ ५९ ५४	०५ ०४ ३२ ०९	०३ १८ ११ ३५	०३ ०१ ०६ ३१	०० ०९ ५७ ४९	१० १० ०४ २५	०९ १९ ०२ १५	०७ २५ ४२ ४५	१८
१९	०५ ०२ २८ २२	०६ २७ ३८ २७	०५ ०१ १९ १०	०४ १८ ४२ २२	०५ ०४ ४५ ०६	०३ १९ १८ ३२	०३ ०१ ११ ३३	०० ०९ ५४ ३८	१० १० ०२ १५	०९ १९ ०१ १०	०७ २५ ४३ २१	१९
२०	०५ ०३ २७ ००	०७ ११ ३६ ०९	०५ ०१ ५७ ४६	०४ २० २७ ०४	०५ ०४ ५८ ०५	०३ २० २५ ३९	०३ ०१ १६ ३२	०० ०९ ५१ २७	१० १० ०० ०६	०९ १९ ०० ०६	०७ २५ ४३ ५९	२०
२१	०५ ०४ २५ ३९	०७ २५ ४० ४५	०५ ०२ ३६ २३	०४ २२ १३ ३२	०५ ०५ ११ ०३	०३ २१ ३२ ५९	०३ ०१ २१ २५	०० ०९ ४८ १६	१० ०९ ५७ ५९	०९ १८ ५९ ०४	०७ २५ ४४ ३९	२१
२२	०५ ०५ २४ २०	०८ ०९ ५० ५७	०५ ०३ १५ ०२	०४ २४ ०१ २२	०५ ०५ २४ ०१	०३ २२ ४० २९	०३ ०१ २६ १४	०० ०९ ४५ ०५	१० ०९ ५५ ५३	०९ १८ ५८ ०४	०७ २५ ४५ २१	२२
२३	०५ ०६ २३ ०३	०८ २४ ०४ ५६	०५ ०३ ५३ ४१	०४ २५ ५० १२	०५ ०५ ३७ ००	०३ २३ ४८ १०	०३ ०१ ३० ५८	०० ०९ ४१ ५५	१० ०९ ५३ ४९	०९ १८ ५७ ०५	०७ २५ ४६ ०५	२३
२४	०५ ०७ २१ ४७	०९ ०८ २० १४	०५ ०४ ३२ २२	०४ २७ ३९ ४३	०५ ०५ ४९ ५८	०३ २४ ५६ ०२	०३ ०१ ३५ ३७	०० ०९ ३८ ४४	१० ०९ ५१ ४६	०९ १८ ५६ ०७	०७ २५ ४६ ५१	२४
२५	०५ ०८ २० ३३	०९ २२ ३३ ३८	०५ ०५ ११ ०३	०४ २९ २९ ३८	०५ ०६ ०२ ५६	०३ २६ ०४ ०४	०३ ०१ ४० १०	०० ०९ ३५ ३३	१० ०९ ४९ ४४	०९ १८ ५५ १२	०७ २५ ४७ ३९	२५
२६	०५ ०९ १९ २१	१० ०६ ४१ १७	०५ ०५ ४९ ४६	०५ ०१ १९ ४३	०५ ०६ १५ ५४	०३ २७ १२ १७	०३ ०१ ४४ ३९	०० ०९ ३२ २२	१० ०९ ४७ ४५	०९ १८ ५४ १७	०७ २५ ४८ २९	२६
२७	०५ १० १८ १०	१० २० ३९ ०७	०५ ०६ २८ ३०	०५ ०३ ०९ ४७	०५ ०६ २८ ५२	०३ २८ २० ४०	०३ ०१ ४९ ०३	०० ०९ २९ १२	१० ०९ ४५ ४७	०९ १८ ५३ २५	०७ २५ ४९ २०	२७
२८	०५ ११ १७ ०२	११ ०४ २३ १९	०५ ०७ ०७ १५	०५ ०४ ५९ ४०	०५ ०६ ४१ ४९	०३ २९ २९ १३	०३ ०१ ५३ २२	०० ०९ २६ ०१	१० ०९ ४३ ५०	०९ १८ ५२ ३४	०७ २५ ५० १४	२८
२९	०५ १२ १५ ५५	११ १७ ५० ५०	०५ ०७ ४६ ०२	०५ ०६ ४९ १२	०५ ०६ ५४ ४६	०४ ०० ३७ ५७	०३ ०१ ५७ ३५	०० ०९ २२ ५०	१० ०९ ४१ ५६	०९ १८ ५१ ४५	०७ २५ ५१ ०९	२९
३०	०५ १३ १४ ५१	०० ०० ५९ ५१	०५ ०८ २४ ५०	०५ ०८ ३८ १८	०५ ०७ ०७ ४२	०४ ०१ ४६ ५०	०३ ०२ ०१ ४३	०० ०९ १९ ४०	१० ०९ ४० ०३	०९ १८ ५० ५७	०७ २५ ५२ ०६	३०

अक्टूबर सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५५' ।१३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	०५ १४ १३ ४८	०० १३ ४९ ५५	०५ ०९ ०३ ३९	०५ १० २६ ५१	०५ ०७ २० ३८	०४ ०२ ५५ ५३	०३ ०२ ०५ ४६	०० ०९ १६ २९	१० ०९ ३८ २२	०९ १८ ५० ११	०७ २५ ५३ ०४	१
२	०५ १५ १२ ४८	०० २६ २२ ०४	०५ ०९ ४२ २९	०५ १२ १४ ४८	०५ ०७ ३३ ३४	०४ ०४ ०५ ०६	०३ ०२ ०९ ४४	०० ०९ १३ १८	१० ०९ ३६ २३	०९ १८ ४९ २७	०७ २५ ५४ ०५	२
३	०५ १६ ११ ५०	०१ ०८ ३८ ३५	०५ १० २१ २१	०५ १४ ०२ ०५	०५ ०७ ४६ २८	०४ ०५ १४ २८	०३ ०२ १३ ३६	०० ०९ १० ०८	१० ०९ ३४ ३६	०९ १८ ४८ ४५	०७ २५ ५५ ०८	३
४	०५ १७ १० ५४	०१ २० ४२ ४५	०५ ११ ०० १४	०५ १५ ४८ ३९	०५ ०७ ५९ २२	०४ ०६ २३ ५९	०३ ०२ १७ २३	०० ०९ ०६ ५७	१० ०९ ३२ ५१	०९ १८ ४८ ०४	०७ २५ ५६ १२	४
५	०५ १८ १० ०१	०२ ०२ ३८ ३८	०५ ११ ३९ ०९	०५ १७ ३४ ३०	०५ ०८ १२ १५	०४ ०७ ३३ ३९	०३ ०२ २१ ०४	०० ०९ ०३ ४६	१० ०९ ३१ ०८	०९ १८ ४७ २५	०७ २५ ५७ १८	५
६	०५ १९ ०९ १०	०२ १४ ३० ४३	०५ १२ १८ ०५	०५ १९ १९ ३४	०५ ०८ २५ ०८	०४ ०८ ४३ २८	०३ ०२ २४ ३९	०० ०९ ०० ३५	१० ०९ २९ २७	०९ १८ ४६ ४८	०७ २५ ५८ २५	६
७	०५ २० ०८ २१	०२ २६ २३ ४८	०५ १२ ५७ ०३	०५ २१ ०३ ५३	०५ ०८ ३७ ५९	०४ ०९ ५३ २५	०३ ०२ २८ ०९	०० ०८ ५७ २४	१० ०९ २७ ४८	०९ १८ ४६ १३	०७ २५ ५९ ३५	७
८	०५ २१ ०७ ३४	०३ ०८ २२ ३९	०५ १३ ३६ ०२	०५ २२ ४७ २६	०५ ०८ ५० ४९	०४ ११ ०३ ३१	०३ ०२ ३१ ३३	०० ०८ ५४ १३	१० ०९ २६ ११	०९ १८ ४५ ४०	०७ २६ ०० ४६	८
९	०५ २२ ०६ ५०	०३ २० ३१ ४४	०५ १४ १५ ०३	०५ २४ ३० १३	०५ ०९ ०३ ३८	०४ १२ १३ ४५	०३ ०२ ३४ ५१	०० ०८ ५१ ०३	१० ०९ २४ ३७	०९ १८ ४५ ०८	०७ २६ ०१ ५९	९
१०	०५ २३ ०६ ०८	०४ ०२ ५५ ०१	०५ १४ ५४ ०५	०५ २६ १२ १४	०५ ०९ १६ २६	०४ १३ २४ ०७	०३ ०२ ३८ ०३	०० ०८ ४७ ५२	१० ०९ २३ ०५	०९ १८ ४४ ३९	०७ २६ ०३ १४	१०
११	०५ २४ ०५ २८	०४ १५ ३५ ३१	०५ १५ ३३ ०८	०५ २७ ५३ २९	०५ ०९ २९ १३	०४ १४ ३४ ३७	०३ ०२ ४१ १०	०० ०८ ४४ ४१	१० ०९ २१ ३५	०९ १८ ४४ ११	०७ २६ ०४ ३०	११
१२	०५ २५ ०४ ५१	०४ २८ ३५ १०	०५ १६ १२ १३	०५ २९ ३४ ००	०५ ०९ ४१ ५९	०४ १५ ४५ १५	०३ ०२ ४४ १०	०० ०८ ४१ ३१	१० ०९ २० ०७	०९ १८ ४३ ४५	०७ २६ ०५ ४८	१२
१३	०५ २६ ०४ १५	०५ ११ ५४ ३२	०५ १६ ५१ १९	०६ ०१ १३ ४७	०५ ०९ ५४ ४२	०४ १६ ५६ ००	०३ ०२ ४७ ०५	०० ०८ ३८ २०	१० ०९ १८ ४२	०९ १८ ४३ २१	०७ २६ ०७ ०८	१३
१४	०५ २७ ०३ ४२	०५ २५ ३२ ४४	०५ १७ ३० २७	०६ ०२ ५२ ५०	०५ १० ०७ २५	०४ १८ ०६ ५२	०३ ०२ ४९ ५३	०० ०८ ३५ ०९	१० ०९ १७ १९	०९ १८ ४२ ५९	०७ २६ ०८ २९	१४
१५	०५ २८ ०३ ११	०६ ०९ २७ २८	०५ १८ ०९ ३६	०६ ०४ ३१ १२	०५ १० २० ०५	०४ १९ १७ ५१	०३ ०२ ५२ ३५	०० ०८ ३१ ५९	१० ०९ १५ ५९	०९ १८ ४२ ३९	०७ २६ ०९ ५२	१५
१६	०५ २९ ०२ ४१	०६ २३ ३५ २०	०५ १८ ४८ ४७	०६ ०६ ०८ ५१	०५ १० ३२ ४४	०४ २० २८ ५७	०३ ०२ ५५ ११	०० ०८ २८ ४८	१० ०९ १४ ४१	०९ १८ ४२ २१	०७ २६ ११ १७	१६
१७	०६ ०० ०२ १४	०७ ०७ ५२ ०८	०५ १९ २७ ५९	०६ ०७ ४५ ५१	०५ १० ४५ २१	०४ २१ ४० १०	०३ ०२ ५७ ४१	०० ०८ २५ ३७	१० ०९ १३ २६	०९ १८ ४२ ०५	०७ २६ १२ ४३	१७
१८	०६ ०१ ०१ ४९	०७ २२ १३ २८	०५ २० ०७ १२	०६ ०९ २२ ११	०५ १० ५७ ५७	०४ २२ ५१ २९	०३ ०३ ०० ०४	०० ०८ २२ २६	१० ०९ १२ १३	०९ १८ ४१ ५१	०७ २६ १४ १०	१८
१९	०६ ०२ ०१ २५	०८ ०६ ३५ ०९	०५ २० ४६ २७	०६ १० ५७ ५३	०५ ११ १० ३०	०४ २४ ०२ ५४	०३ ०३ ०२ २१	०० ०८ १९ १५	१० ०९ ११ ०३	०९ १८ ४१ ३९	०७ २६ १५ ४०	१९
२०	०६ ०३ ०१ ०३	०८ २० ५३ ३६	०५ २१ २५ ४३	०६ १२ ३२ ५८	०५ ११ २३ ०१	०४ २५ १४ २६	०३ ०३ ०४ ३२	०० ०८ १६ ०४	१० ०९ ०९ ५५	०९ १८ ४१ २९	०७ २६ १७ ११	२०
२१	०६ ०४ ०० ४२	०९ ०५ ०५ ५२	०५ २२ ०५ ०१	०६ १४ ०७ २७	०५ ११ ३५ ३०	०४ २६ २६ ०४	०३ ०३ ०६ ३६	०० ०८ १२ ५४	१० ०९ ०८ ५०	०९ १८ ४१ २१	०७ २६ १८ ४३	२१
२२	०६ ०५ ०० २४	०९ १९ ०९ ४४	०५ २२ ४४ १९	०६ १५ ४१ २०	०५ ११ ४७ ५७	०४ २७ ३७ ४८	०३ ०३ ०८ ३४	०० ०८ ०९ ४३	१० ०९ ०७ ४८	०९ १८ ४१ १५	०७ २६ २० १७	२२
२३	०६ ०६ ०० ०७	१० ०३ ०३ ३२	०५ २३ २३ ३९	०६ १७ १४ ३९	०५ १२ ०० २१	०४ २८ ४९ ३८	०३ ०३ १० २६	०० ०८ ०६ ३२	१० ०९ ०६ ४९	०९ १८ ४१ ११	०७ २६ २१ ५२	२३
२४	०६ ०६ ५९ ५२	१० १६ ४६ ००	०५ २४ ०३ ०१	०६ १८ ४७ २४	०५ १२ १२ ४३	०५ ०० ०१ ३४	०३ ०३ १२ ११	०० ०८ ०३ २१	१० ०९ ०५ ५२	०९ १८ ४१ ०९	०७ २६ २३ २९	२४
२५	०६ ०७ ५९ ३८	११ ०० १६ १२	०५ २४ ४२ २४	०६ २० १९ ३५	०५ १२ २५ ०३	०५ ०१ १३ ३५	०३ ०३ १३ ५०	०० ०८ ०० ११	१० ०९ ०४ ५८	०९ १८ ४१ ०९	०७ २६ २५ ०७	२५
२६	०६ ०८ ५९ २६	११ १३ ३३ २१	०५ २५ २१ ४९	०६ २१ ५१ १४	०५ १२ ३७ २०	०५ ०२ २५ ४३	०३ ०३ १५ २२	०० ०७ ५७ ००	१० ०९ ०४ ०७	०९ १८ ४१ ११मा	०७ २६ २६ ४६	२६
२७	०६ ०९ ५९ १६	११ २६ ३६ ५७	०५ २६ ०१ १५	०६ २३ २२ २१	०५ १२ ४९ ३४	०५ ०३ ३७ ५६	०३ ०३ १६ ४८	०० ०७ ५३ ४९	१० ०९ ०३ १९	०९ १८ ४१ १५	०७ २६ २८ २७	२७
२८	०६ १० ५९ ०८	०० ०९ २६ ४४	०५ २६ ४० ४२	०६ २४ ५२ ५५	०५ १३ ०१ ४६	०५ ०४ ५० १४	०३ ०३ १८ ०७	०० ०७ ५० ३९	१० ०९ ०२ ३३	०९ १८ ४१ २१	०७ २६ ३० ०९	२८
२९	०६ ११ ५९ ०२	०० २२ ०२ ५१	०५ २७ २० ११	०६ २६ २२ ५८	०५ १३ १३ ५५	०५ ०६ ०२ ३८	०३ ०३ १९ १९	०० ०७ ४७ २८	१० ०९ ०१ ५०	०९ १८ ४१ २९	०७ २६ ३१ ५३	२९
३०	०६ १२ ५८ ५८	०१ ०४ २५ ५१	०५ २७ ५९ ४२	०६ २७ ५२ २८	०५ १३ २६ ०१	०५ ०७ १५ ०८	०३ ०३ २० २५	०० ०७ ४४ १७	१० ०९ ०१ १०	०९ १८ ४१ ३९	०७ २६ ३३ ३८	३०
३१	०६ १३ ५८ ५६	०१ १६ ३७ ३०	०५ २८ ३९ १४	०६ २९ २१ २७	०५ १३ ३८ ०४	०५ ०८ २७ ४३	०३ ०३ २१ २४	०० ०७ ४१ ०६	१० ०९ ०० ३४	०९ १८ ४१ ५१	०७ २६ ३५ २४	३१

नवम्बर सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५५' १७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
१	०६ १४ ५८ ५६	०१ २८ ३१ २८	०५ २९ १८ ४८	०७ ०० ४९ ५४	०५ १३ ५० ०४	०५ ०९ ४० २३	०३ ०३ २२ १७	०० ०७ ३७ ५५	१० ०८ ५९ ५९	०९ १८ ४२ ०५	०७ २६ ३७ ११	१
२	०६ १५ ५८ ५७	०२ १० ३४ ३७	०५ २९ ५८ २४	०७ ०२ १७ ४८	०५ १४ ०२ ०१	०५ १० ५३ ०८	०३ ०३ २३ ०२	०० ०७ ३४ ४५	१० ०८ ५९ २८	०९ १८ ४२ २१	०७ २६ ३९ ००	२
३	०६ १६ ५९ ०१	०२ २२ २६ ११	०६ ०० ३८ ०१	०७ ०३ ४५ ०७	०५ १४ १३ ५५	०५ १२ ०५ ५८	०३ ०३ २३ ४२	०० ०७ ३१ ३४	१० ०८ ५९ ००	०९ १८ ४२ ४०	०७ २६ ४० ४९	३
४	०६ १७ ५९ ०८	०३ ०४ १८ ३२	०६ ०१ १७ ४०	०७ ०५ ११ ५२	०५ १४ २५ ४५	०५ १३ १८ ५३	०३ ०३ २४ १४	०० ०७ २८ २३	१० ०८ ५८ ३५	०९ १८ ४३ ००	०७ २६ ४२ ४०	४
५	०६ १८ ५९ १६	०३ १६ १५ ४०	०६ ०१ ५७ २१	०७ ०६ ३७ ५९	०५ १४ ३७ ३२	०५ १४ ३१ ५३	०३ ०३ २४ ४०	०० ०७ २५ १२	१० ०८ ५८ १३	०९ १८ ४३ २२	०७ २६ ४४ ३३	५
६	०६ १९ ५९ २६	०३ २८ २२ २२	०६ ०२ ३७ ०३	०७ ०८ ०३ २७	०५ १४ ४९ १६	०५ १५ ४४ ५७	०३ ०३ २४ ५९	०० ०७ २२ ०१	१० ०८ ५७ ५३	०९ १८ ४३ ४७	०७ २६ ४६ २६	६
७	०६ २० ५९ ३८	०४ १० ४३ १६	०६ ०३ १६ ४८	०७ ०९ २८ १४	०५ १५ ०० ५६	०५ १६ ५८ ०६	०३ ०३ २५ ११	०० ०७ १८ ५१	१० ०८ ५७ ३७	०९ १८ ४४ १३	०७ २६ ४८ २१	७
८	०६ २१ ५९ ५३	०४ २३ २२ ३८	०६ ०३ ५६ ३४	०७ १० ५२ १६	०५ १५ १२ ३३	०५ १८ ११ २०	०३ ०३ २५ १६व	०० ०७ १५ ४०	१० ०८ ५७ २४	०९ १८ ४४ ४२	०७ २६ ५० १६	८
९	०६ २३ ०० ०९	०५ ०६ २३ ५७	०६ ०४ ३६ २१	०७ १२ १५ ३०	०५ १५ २४ ०५	०५ १९ २४ ३७	०३ ०३ २५ १५	०० ०७ १२ २९	१० ०८ ५७ १४	०९ १८ ४५ १२	०७ २६ ५२ १३	९
१०	०६ २४ ०० २७	०५ १९ ४९ २६	०६ ०५ १६ १०	०७ १३ ३७ ५१	०५ १५ ३५ ३४	०५ २० ३७ ५९	०३ ०३ २५ ०६	०० ०७ ०९ ११	१० ०८ ५७ ०६	०९ १८ ४५ ४५	०७ २६ ५४ १०	१०
११	०६ २५ ०० ४७	०६ ०३ ३९ ३८	०६ ०५ ५६ ०१	०७ १४ ५९ १५	०५ १५ ४६ ५९	०५ २१ ५१ २४	०३ ०३ २४ ५१	०० ०७ ०६ ०८	१० ०८ ५७ ०२	०९ १८ ४६ १९	०७ २६ ५६ ०९	११
१२	०६ २६ ०१ ०९	०६ १७ ५२ ५१	०६ ०६ ३५ ५४	०७ १६ ११ ३६	०५ १५ ५८ २०	०५ २३ ०४ ५४	०३ ०३ २४ २९	०० ०७ ०२ ५७	१० ०८ ५७ ०१	०९ १८ ४६ ५६	०७ २६ ५८ ०९	१२
१३	०६ २७ ०१ ३३	०७ ०२ २५ ०५	०६ ०७ १५ ४८	०७ १७ ३८ ४७	०५ १६ ०९ ३७	०५ २४ १८ २७	०३ ०३ २४ ०१	०० ०६ ५९ ४६	१० ०८ ५७ ०३मा	०९ १८ ४७ ३४	०७ २७ ०० ०९	१३
१४	०६ २८ ०१ ५८	०७ १७ १० ०८	०६ ०७ ५५ ४४	०७ १८ ५६ ३९	०५ १६ २० ४९	०५ २५ ३२ ०३	०३ ०३ २३ २५	०० ०६ ५६ ३५	१० ०८ ५७ ०८	०९ १८ ४८ १५	०७ २७ ०२ ११	१४
१५	०६ २९ ०२ २५	०८ ०२ ०० २९	०६ ०८ ३५ ४१	०७ २० १३ ०३	०५ १६ ३१ ५७	०५ २६ ४५ ४३	०३ ०३ २२ ४३	०० ०६ ५३ २४	१० ०८ ५७ १६	०९ १८ ४८ ५७	०७ २७ ०४ १३	१५
१६	०७ ०० ०२ ५४	०८ १६ ४८ १५	०६ ०९ १५ ४०	०७ २१ २७ ४९	०५ १६ ४३ ००	०५ २७ ५९ २६	०३ ०३ २१ ५४	०० ०६ ५० १३	१० ०८ ५७ २८	०९ १८ ४९ ४२	०७ २७ ०६ १७	१६
१७	०७ ०१ ०३ २३	०९ ०१ २६ २७	०६ ०९ ५५ ४०	०७ २२ ४० ४४	०५ १६ ५३ ५९	०५ २९ १३ १३	०३ ०३ २० ५८	०० ०६ ४७ ०३	१० ०८ ५७ ४२	०९ १८ ५० २८	०७ २७ ०८ २१	१७
१८	०७ ०२ ०३ ५४	०९ १५ ४९ ४९	०६ १० ३५ ४२	०७ २३ ५१ ३३	०५ १७ ०४ ५३	०६ ०० २७ ०२	०३ ०३ १९ ५६	०० ०६ ४३ ५२	१० ०८ ५८ ००	०९ १८ ५१ १७	०७ २७ १० २६	१८
१९	०७ ०३ ०४ २६	०९ २९ ५५ १०	०६ ११ १५ ४६	०७ २४ ५९ ५९	०५ १७ १५ ४२	०६ ०१ ४० ५४	०३ ०३ १८ ४७	०० ०६ ४० ४१	१० ०८ ५८ २०	०९ १८ ५२ ०७	०७ २७ १२ ३२	१९
२०	०७ ०४ ०५ ००	१० १३ ४१ २१	०६ ११ ५५ ५१	०७ २६ ०५ ४४	०५ १७ २६ २७	०६ ०२ ५४ ५०	०३ ०३ १७ ३१	०० ०६ ३७ ३०	१० ०८ ५८ ४४	०९ १८ ५३ ००	०७ २७ १४ ३८	२०
२१	०७ ०५ ०५ ३४	१० २७ ०८ ४९	०६ १२ ३५ ५८	०७ २७ ०८ २६	०५ १७ ३७ ०६	०६ ०४ ०८ ४८	०३ ०३ १६ ०९	०० ०६ ३४ १९	१० ०८ ५९ १०	०९ १८ ५३ ५४	०७ २७ १६ ४६	२१
२२	०७ ०६ ०६ १०	११ १० १९ ००	०६ १३ १६ ०६	०७ २८ ०७ ३९	०५ १७ ४७ ४१	०६ ०५ २२ ४९	०३ ०३ १४ ४१	०० ०६ ३१ ०९	१० ०८ ५९ ४०	०९ १८ ५४ ५०	०७ २७ १८ ५३	२२
२३	०७ ०७ ०६ ४७	११ २३ १३ ४९	०६ १३ ५६ १६	०७ २९ ०२ ५७	०५ १७ ५८ १०	०६ ०६ ३६ ५२	०३ ०३ १३ ०६	०० ०६ २७ ५८	१० ०९ ०० १३	०९ १८ ५५ ४९	०७ २७ २१ ०२	२३
२४	०७ ०८ ०७ २५	०० ०५ ५५ १५	०६ १४ ३६ २७	०७ २९ ५३ ४७	०५ १८ ०८ ३४	०६ ०७ ५० ५९	०३ ०३ ११ २४	०० ०६ २४ ४७	१० ०९ ०० ४९	०९ १८ ५६ ४९	०७ २७ २३ ११	२४
२५	०७ ०९ ०८ ०५	०० १८ २५ ०९	०६ १५ १६ ४०	०८ ०० ३९ ३४	०५ १८ १८ ५३	०६ ०९ ०५ ०८	०३ ०३ ०९ ३७	०० ०६ २१ ३६	१० ०९ ०१ २८	०९ १८ ५७ ५१	०७ २७ २५ २१	२५
२६	०७ १० ०८ ४५	०१ ०० ४५ ०२	०६ १५ ५६ ५५	०८ ०१ १९ ३९	०५ १८ २९ ०६	०६ १० १९ २०	०३ ०३ ०७ ४२	०० ०६ १८ २६	१० ०९ ०२ १०	०९ १८ ५८ ५४	०७ २७ २७ ३२	२६
२७	०७ ११ ०९ २७	०१ १२ ५६ १६	०६ १६ ३७ १२	०८ ०१ ५३ १९	०५ १८ ३९ १४	०६ ११ ३३ ३४	०३ ०३ ०५ ४२	०० ०६ १५ १५	१० ०९ ०२ ५५	०९ १९ ०० ००	०७ २७ २९ ४३	२७
२८	०७ १२ १० १०	०१ २५ ०० ०७	०६ १७ १७ ३०	०८ ०२ १९ ४८	०५ १८ ४९ १६	०६ १२ ४७ ५१	०३ ०३ ०३ ३५	०० ०६ १२ ०४	१० ०९ ०३ ४३	०९ १९ ०१ ०८	०७ २७ ३१ ५४	२८
२९	०७ १३ १० ५५	०२ ०६ ५७ ५६	०६ १७ ५७ ५०	०८ ०२ ३८ १७	०५ १८ ५९ १२	०६ १४ ०२ १०	०३ ०३ ०१ २३	०० ०६ ०८ ५३	१० ०९ ०४ ३४	०९ १९ ०२ १७	०७ २७ ३४ ०६	२९
३०	०७ १४ ११ ४१	०२ १८ ५१ २४	०६ १८ ३८ १२	०८ ०२ ४७ ५९व	०५ १९ ०९ ०३	०६ १५ १६ ३२	०३ ०२ ५९ ०४	०० ०६ ०५ ४२	१० ०९ ०५ २८	०९ १९ ०३ २८	०७ २७ ३६ १८	३०

दिसम्बर सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५५' २२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	०७ १५ १२ २८	०३ ०० ४२ ३९	०६ १९ १८ ३६	०८ ०२ ४८ ०५	०५ १९ १८ ४७	०६ १६ ३० ५७	०३ ०२ ५६ ३९	०० ०६ ०२ ३१	१० ०९ ०६ २५	०९ १९ ०४ ४१	०७ २७ ३८ ३१	१
२	०७ १६ १३ १७	०३ १२ ३४ २५	०६ १९ ५१ ०२	०८ ०२ ३७ ५३	०५ १९ २८ २६	०६ १७ ४५ २३	०३ ०२ ५४ ०८	०० ०५ ५९ २०	१० ०९ ०७ २५	०९ १९ ०५ ५५	०७ २७ ४० ४५	२
३	०७ १७ १४ ०७	०३ २४ ३० ०६	०६ २० ३९ २९	०८ ०२ १६ ५१	०५ १९ ३७ ५९	०६ १८ ५९ ५२	०३ ०२ ५१ ३१	०० ०५ ५६ १०	१० ०९ ०८ २९	०९ १९ ०७ १२	०७ २७ ४२ ५८	३
४	०७ १८ १४ ५८	०४ ०६ ३३ ४२	०६ २१ ११ ५९	०८ ०१ ४४ ३८	०५ १९ ४७ २५	०६ २० १४ २३	०३ ०२ ४८ ४८	०० ०५ ५२ ५९	१० ०९ ०९ ३५	०९ १९ ०८ ३०	०७ २७ ४५ १२	४
५	०७ १९ १५ ५१	०४ १८ ४९ ४५	०६ २२ ०० ३०	०८ ०१ ०१ १६	०५ १९ ५६ ४५	०६ २१ २८ ५६	०३ ०२ ४६ ००	०० ०५ ४९ ४८	१० ०९ १० ४४	०९ १९ ०९ ५०	०७ २७ ४७ २७	५
६	०७ २० १६ ४५	०५ ०१ २२ ५७	०६ २२ ४१ ०३	०८ ०० ०७ ११	०५ २० ०५ ५८	०६ २२ ४३ ३२	०३ ०२ ४३ ०६	०० ०५ ४६ ३७	१० ०९ ११ ५६	०९ १९ ११ १२	०७ २७ ४९ ४१	६
७	०७ २१ १७ ४१	०५ १४ १७ ४९	०६ २३ २१ ३८	०७ २९ ०३ २२	०५ २० १५ ०५	०६ २३ ५८ ०९	०३ ०२ ४० ०६	०० ०५ ४३ २७	१० ०९ १३ १०	०९ १९ १२ ३५	०७ २७ ५१ ५६	७
८	०७ २२ १८ ३७	०५ २७ ३८ १८	०६ २४ ०२ १४	०७ २७ ५१ १७	०५ २० २४ ०५	०६ २५ १२ ४८	०३ ०२ ३७ ०१	०० ०५ ४० १६	१० ०९ १४ २८	०९ १९ १४ ००	०७ २७ ५४ ११	८
९	०७ २३ १९ ३५	०६ ११ २६ ५३	०६ २४ ४२ ५३	०७ २६ ३३ ००	०५ २० ३२ ५९	०६ २६ २७ २९	०३ ०२ ३३ ५०	०० ०५ ३७ ०५	१० ०९ १५ ४९	०९ १९ १५ २६	०७ २७ ५६ २६	९
१०	०७ २४ २० ३४	०६ २५ ४३ ५२	०६ २५ २३ ३३	०७ २५ १० ५८	०५ २० ४१ ४५	०६ २७ ४२ ११	०३ ०२ ३० ३४	०० ०५ ३३ ५४	१० ०९ १७ १२	०९ १९ १६ ५४	०७ २७ ५८ ४२	१०
११	०७ २५ २१ ३४	०७ १० २६ ३०	०६ २६ ०४ १५	०७ २३ ४७ ५८	०५ २० ५० २४	०६ २८ ५६ ५५	०३ ०२ २७ १३	०० ०५ ३० ४३	१० ०९ १८ ३९	०९ १९ १८ २४	०७ २८ ०० ५७	११
१२	०७ २६ २२ ३५	०७ २५ २८ ४१	०६ २६ ४४ ५९	०७ २२ २६ ४८	०५ २० ५८ ५६	०७ ०० ११ ४१	०३ ०२ २३ ४६	०० ०५ २७ ३२	१० ०९ २० ०८	०९ १९ १९ ५६	०७ २८ ०३ १३	१२
१३	०७ २७ २३ ३७	०८ १० ४१ २२	०६ २७ २५ ४४	०७ २१ १० ०७	०५ २१ ०७ २१	०७ ०१ २६ २७	०३ ०२ २० १५	०० ०५ २४ २१	१० ०९ २१ ४०	०९ १९ २१ २९	०७ २८ ०५ २९	१३
१४	०७ २८ २४ ३९	०८ २५ ५३ ५४	०६ २८ ०६ ३१	०७ २० ०० १७	०५ २१ १५ ३८	०७ ०२ ४१ १६	०३ ०२ १६ ३८	०० ०५ २१ १०	१० ०९ २३ १५	०९ १९ २३ ०३	०७ २८ ०७ ४४	१४
१५	०७ २९ २५ ४२	०९ १० ५५ ४८	०६ २८ ४७ २०	०७ १८ ५९ ०७	०५ २१ २३ ४८	०७ ०३ ५६ ०५	०३ ०२ १२ ५७	०० ०५ १८ ००	१० ०९ २४ ५३	०९ १९ २४ ३९	०७ २८ १० ००	१५
१६	०८ ०० २६ ४६	०९ २५ ३८ ३३	०६ २९ २८ १०	०७ १८ ०७ ५७	०५ २१ ३१ ५१	०७ ०५ १० ५५	०३ ०२ ०९ ११	०० ०५ १४ ४९	१० ०९ २६ ३४	०९ १९ २६ १७	०७ २८ १२ १६	१६
१७	०८ ०१ २७ ५०	१० ०९ ५६ ४५	०७ ०० ०९ ०२	०७ १७ २७ ३३	०५ २१ ३९ ४५	०७ ०६ २५ ४७	०३ ०२ ०५ २१	०० ०५ ११ ३८	१० ०९ २८ १७	०९ १९ २७ ५६	०७ २८ १४ ३१	१७
१८	०८ ०२ २८ ५४	१० २३ ४८ १९	०७ ०० ४९ ५५	०७ १६ ५८ १२	०५ २१ ४७ ३२	०७ ०७ ४० ३९	०३ ०२ ०१ २६	०० ०५ ०८ २७	१० ०९ ३० ०३	०९ १९ २९ ३६	०७ २८ १६ ४७	१८
१९	०८ ०३ २९ ५९	११ ०७ १३ ५९	०७ ०१ ३० ५०	०७ १६ ३९ ५०	०५ २१ ५५ १०	०७ ०८ ५५ ३३	०३ ०१ ५७ २८	०० ०५ ०५ १६	१० ०९ ३१ ५१	०९ १९ ३१ १८	०७ २८ १९ ०२	१९
२०	०८ ०४ ३१ ०४	११ २० १६ २६	०७ ०२ ११ ४७	०७ १६ ३२ ०२मा	०५ २२ ०२ ४१	०७ १० १० २७	०३ ०१ ५३ २५	०० ०५ ०२ ०६	१० ०९ ३३ ४३	०९ १९ ३३ ०२	०७ २८ २१ १७	२०
२१	०८ ०५ ३२ ०९	०० ०२ ५९ २०	०७ ०२ ५२ ४६	०७ १६ ३४ १४	०५ २२ १० ०४	०७ ११ २५ २२	०३ ०१ ४९ १८	०० ०४ ५८ ५५	१० ०९ ३५ ३६	०९ १९ ३४ ४६	०७ २८ २३ ३२	२१
२२	०८ ०६ ३३ १५	०० १५ २६ ३८	०७ ०३ ३३ ४६	०७ १६ ४५ ४०	०५ २२ १७ १८	०७ १२ ४० १८	०३ ०१ ४५ ०७	०० ०४ ५५ ४४	१० ०९ ३७ ३३	०९ १९ ३६ ३२	०७ २८ २५ ४७	२२
२३	०८ ०७ ३४ २०	०० २७ ४२ ०१	०७ ०४ १४ ४८	०७ १७ ०५ ३५	०५ २२ २४ २४	०७ १३ ५५ १५	०३ ०१ ४० ५३	०० ०४ ५२ ३३	१० ०९ ३९ ३२	०९ १९ ३८ २०	०७ २८ २८ ०१	२३
२४	०८ ०८ ३५ २६	०१ ०९ ४८ ४०	०७ ०४ ५५ ५१	०७ १७ ३३ ११	०५ २२ ३१ २१	०७ १५ १० १३	०३ ०१ ३६ ३५	०० ०४ ४९ २२	१० ०९ ४१ ३३	०९ १९ ४० ०८	०७ २८ ३० १६	२४
२५	०८ ०९ ३६ ३२	०१ २१ ४९ १२	०७ ०५ ३६ ५७	०७ १८ ०७ ४२	०५ २२ ३८ ११	०७ १६ २५ ११	०३ ०१ ३२ १३	०० ०४ ४६ १२	१० ०९ ४३ ३८	०९ १९ ४१ ५८	०७ २८ ३२ २९	२५
२६	०८ १० ३७ ३९	०२ ०३ ४५ ३६	०७ ०६ १८ ०४	०७ १८ ४८ २३	०५ २२ ४४ ५१	०७ १७ ४० ११	०३ ०१ २७ ४९	०० ०४ ४३ ०१	१० ०९ ४५ ४४	०९ १९ ४३ ४९	०७ २८ ३४ ४३	२६
२७	०८ ११ ३८ ४६	०२ १५ ३९ २५	०७ ०६ ५९ १३	०७ १९ ३४ ३४	०५ २२ ५१ २३	०७ १८ ५५ ११	०३ ०१ २३ २१	०० ०४ ३९ ५०	१० ०९ ४७ ५३	०९ १९ ४५ ४१	०७ २८ ३६ ५६	२७
२८	०८ १२ ३९ ५३	०२ २७ ३१ ५५	०७ ०७ ४० २४	०७ २० २५ ३८	०५ २२ ५७ ४६	०७ २० १० १२	०३ ०१ १८ ५०	०० ०४ ३६ ३९	१० ०९ ५० ०४	०९ १९ ४७ ३५	०७ २८ ३९ ०९	२८
२९	०८ १३ ४१ ००	०३ ०९ २४ २५	०७ ०८ २१ ३६	०७ २१ २१ ०२	०५ २३ ०४ ००	०७ २१ २५ १४	०३ ०१ १४ १६	०० ०४ ३३ २८	१० ०९ ५२ १८	०९ १९ ४९ ३०	०७ २८ ४१ २२	२९
३०	०८ १४ ४२ ०८	०३ २१ १८ ३३	०७ ०९ ०२ ५१	०७ २२ २० १६	०५ २३ १० ०५	०७ २२ ४० १७	०३ ०१ ०९ ४०	०० ०४ ३० १७	१० ०९ ५४ ३४	०९ १९ ५१ २५	०७ २८ ४३ ३३	३०
३१	०८ १५ ४३ १६	०४ ०३ १६ २९	०७ ०९ ४४ ०७	०७ २३ २२ ५३	०५ २३ १६ ०१	०७ २३ ५५ २१	०३ ०१ ०५ ०१	०० ०४ २७ ०६	१० ०९ ५६ ५३	०९ १९ ५३ २२	०७ २८ ४५ ४४	३१

जनवरी सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५५' २८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	०८ १६ ४४ २४	०४ १५ २१ ०१	०७ १० २५ २६	०७ २४ २८ ३०	०५ २३ २१ ४८	०७ २५ १० २५	०३ ०१ ०० २०	०० ०४ २३ ५६	१० ०९ ५९ १३	०९ १९ ५५ २०	०७ २८ ४७ ५५	१
२	०८ १७ ४५ ३३	०४ २७ ३५ ४४	०७ ११ ०६ ४६	०७ २५ ३६ ४८	०५ २३ २७ २५	०७ २६ २५ ३०	०३ ०० ५५ ३७	०० ०४ २० ४५	१० १० ०१ ३६	०९ १९ ५७ १९	०७ २८ ५० ०५	२
३	०८ १८ ४६ ४२	०५ १० ०४ ४३	०७ ११ ४८ ०८	०७ २६ ४७ २७	०५ २३ ३२ ५३	०७ २७ ४० ३६	०३ ०० ५० ५१	०० ०४ १७ ३४	१० १० ०४ ०२	०९ १९ ५९ १९	०७ २८ ५२ १४	३
४	०८ १९ ४७ ५१	०५ २२ ५२ २८	०७ १२ २९ ३२	०७ २८ ०० १२	०५ २३ ३८ ११	०७ २८ ५५ ४२	०३ ०० ४६ ०४	०० ०४ १४ २३	१० १० ०६ २९	०९ २० ०१ २०	०७ २८ ५४ २३	४
५	०८ २० ४९ ००	०६ ०६ ०३ २६	०७ १३ १० ५७	०७ २९ १४ ५०	०५ २३ ४३ २०	०८ ०० १० ४९	०३ ०० ४१ १४	०० ०४ ११ १३	१० १० ०८ ५९	०९ २० ०३ २२	०७ २८ ५६ ३२	५
६	०८ २१ ५० १०	०६ १९ ४१ २३	०७ १३ ५२ २५	०८ ०० ३१ ०९	०५ २३ ४८ १८	०८ ०१ २५ ५७	०३ ०० ३६ २४	०० ०४ ०८ ०२	१० १० ११ ३०	०९ २० ०५ २५	०७ २८ ५८ ३९	६
७	०८ २२ ५१ २०	०७ ०३ ४८ ३०	०७ १४ ३३ ५४	०८ ०१ ४८ ५९	०५ २३ ५३ ०७	०८ ०२ ४१ ०५	०३ ०० ३१ ३१	०० ०४ ०४ ५१	१० १० १४ ०४	०९ २० ०७ २९	०७ २९ ०० ४६	७
८	०८ २३ ५२ ३०	०७ १८ २४ १४	०७ १५ १५ २६	०८ ०३ ०८ ११	०५ २३ ५७ ४६	०८ ०३ ५६ १३	०३ ०० २६ ३८	०० ०४ ०१ ४०	१० १० १६ ४०	०९ २० ०९ ३४	०७ २९ ०२ ५२	८
९	०८ २४ ५३ ४०	०८ ०३ २४ २५	०७ १५ ५६ ५९	०८ ०४ २८ ३७	०५ २४ ०२ १५	०८ ०५ ११ २२	०३ ०० २१ ४३	०० ०३ ५८ २९	१० १० १९ १८	०९ २० ११ ३९	०७ २९ ०४ ५७	९
१०	०८ २५ ५४ ४९	०८ १८ ४१ ०८	०७ १६ ३८ ३३	०८ ०५ ५० ११	०५ २४ ०६ ३४	०८ ०६ २६ ३१	०३ ०० १६ ४८	०० ०३ ५५ १८	१० १० २१ ५८	०९ २० १३ ४६	०७ २९ ०७ ०२	१०
११	०८ २६ ५५ ५९	०९ ०४ ०३ ३१	०७ १७ २० ०९	०८ ०७ १२ ४६	०५ २४ १० ४२	०८ ०७ ४१ ४१	०३ ०० ११ ५२	०० ०३ ५२ ०७	१० १० २४ ४०	०९ २० १५ ५३	०७ २९ ०९ ०६	११
१२	०८ २७ ५७ ०८	०९ १९ १९ ३४	०७ १८ ०१ ४७	०८ ०८ ३६ १९	०५ २४ १४ ४०	०८ ०८ ५६ ५०	०३ ०० ०६ ५५	०० ०३ ४८ ५६	१० १० २७ २४	०९ २० १८ ०१	०७ २९ ११ ०८	१२
१३	०८ २८ ५८ १७	१० ०४ १८ २३	०७ १८ ४३ २७	०८ १० ०० ४५	०५ २४ १८ २८	०८ १० १२ ००	०३ ०० ०१ ५८	०० ०३ ४५ ४५	१० १० ३० ०९	०९ २० २० १०	०७ २९ १३ १०	१३
१४	०८ २९ ५९ २६	१० १८ ५१ ५५	०७ १९ २५ ०८	०८ ११ २६ ०१	०५ २४ २२ ०५	०८ ११ २७ १०	०२ २९ ५७ ०१	०० ०३ ४२ ३५	१० १० ३२ ५७	०९ २० २२ १९	०७ २९ १५ ११	१४
१५	०९ ०१ ०० ३३	११ ०२ ५५ ५६	०७ २० ०६ ५१	०८ १२ ५२ ०३	०५ २४ २५ ३१	०८ १२ ४२ २०	०२ २९ ५२ ०४	०० ०३ ३९ २४	१० १० ३५ ४६	०९ २० २४ २९	०७ २९ १७ ११	१५
१६	०९ ०२ ०१ ४०	११ १६ २९ ५३	०७ २० ४८ ३५	०८ १४ १८ ५०	०५ २४ २८ ४७	०८ १३ ५७ २९	०२ २९ ४७ ०७	०० ०३ ३६ १३	१० १० ३८ ३७	०९ २० २६ ४०	०७ २९ १९ १०	१६
१७	०९ ०३ ०२ ४६	११ २९ ३६ ०५	०७ २१ ३० २१	०८ १५ ४६ १८	०५ २४ ३१ ५२	०८ १५ १२ ३९	०२ २९ ४२ ११	०० ०३ ३३ ०३	१० १० ४१ ३०	०९ २० २८ ५१	०७ २९ २१ ०८	१७
१८	०९ ०४ ०३ ५२	०० १२ १८ ३३	०७ २२ १२ ०८	०८ १७ १४ २८	०५ २४ ३४ ४६	०८ १६ २७ ४९	०२ २९ ३७ १५	०० ०३ २९ ५२	१० १० ४४ २४	०९ २० ३१ ०३	०७ २९ २३ ०५	१८
१९	०९ ०५ ०४ ५६	०० २४ ४२ ०६	०७ २२ ५३ ५७	०८ १८ ४३ १७	०५ २४ ३७ २९	०८ १७ ४२ ५८	०२ २९ ३२ २०	०० ०३ २६ ४१	१० १० ४७ २०	०९ २० ३३ १६	०७ २९ २५ ०१	१९
२०	०९ ०६ ०६ ००	०१ ०६ ५१ ३५	०७ २३ ३५ ४८	०८ २० १२ ४५	०५ २४ ४० ०२	०८ १८ ५८ ०८	०२ २९ २७ २६	०० ०३ २३ ३०	१० १० ५० १८	०९ २० ३५ २८	०७ २९ २६ ५६	२०
२१	०९ ०७ ०७ ०३	०१ १८ ५१ ३१	०७ २४ १७ ४१	०८ २१ ४२ ५०	०५ २४ ४२ २३	०८ २० १३ १७	०२ २९ २२ ३२	०० ०३ २० १९	१० १० ५३ १७	०९ २० ३७ ४२	०७ २९ २८ ४९	२१
२२	०९ ०८ ०८ ०५	०२ ०० ४५ ४८	०७ २४ ५९ ३५	०८ २३ १३ ३३	०५ २४ ४४ ३४	०८ २१ २८ २७	०२ २९ १७ ४०	०० ०३ १७ ०८	१० १० ५६ १८	०९ २० ३९ ५६	०७ २९ ३० ४२	२२
२३	०९ ०९ ०९ ०६	०२ १२ ३७ ३७	०७ २५ ४१ ३१	०८ २४ ४४ ५३	०५ २४ ४६ ३३	०८ २२ ४३ ३६	०२ २९ १२ ५०	०० ०३ १३ ५८	१० १० ५९ २०	०९ २० ४२ १०	०७ २९ ३२ ३३	२३
२४	०९ १० १० ०६	०२ २४ २९ २१	०७ २६ २३ २८	०८ २६ १६ ५०	०५ २४ ४८ २२	०८ २३ ५८ ४५	०२ २९ ०८ ०१	०० ०३ १० ४७	१० ११ ०२ २४	०९ २० ४४ २४	०७ २९ ३४ २३	२४
२५	०९ ११ ११ ०५	०३ ०६ २२ ४५	०७ २७ ०५ २८	०८ २७ ४९ २५	०५ २४ ४९ ५९	०८ २५ १३ ५५	०२ २९ ०३ १४	०० ०३ ०७ ३६	१० ११ ०५ २९	०९ २० ४६ ३९	०७ २९ ३६ १२	२५
२६	०९ १२ १२ ०४	०३ १८ १९ ०३	०७ २७ ४७ २९	०८ २९ २२ ३६	०५ २४ ५१ २५	०८ २६ २९ ०४	०२ २८ ५८ २८	०० ०३ ०४ २५	१० ११ ०८ ३५	०९ २० ४८ ५५	०७ २९ ३८ ००	२६
२७	०९ १३ १३ ०२	०४ ०० १९ २४	०७ २८ २९ ३२	०९ ०० ५६ २६	०५ २४ ५२ ४०	०८ २७ ४४ १३	०२ २८ ५३ ४५	०० ०३ ०१ १४	१० ११ ११ ४३	०९ २० ५१ १०	०७ २९ ३९ ४६	२७
२८	०९ १४ १३ ५९	०४ १२ २४ ५९	०७ २९ ११ ३६	०९ ०२ ३० ५४	०५ २४ ५३ ४४	०८ २८ ५९ २२	०२ २८ ४९ ०४	०० ०२ ५८ ०४	१० ११ १४ ५२	०९ २० ५३ २६	०७ २९ ४१ ३१	२८
२९	०९ १५ १४ ५५	०४ २४ ३७ २५	०७ २९ ५३ ४३	०९ ०४ ०६ ००	०५ २४ ५४ ३६	०९ ०० १४ ३१	०२ २८ ४४ २५	०० ०२ ५४ ५३	१० ११ १८ ०२	०९ २० ५५ ४२	०७ २९ ४३ १५	२९
३०	०९ १६ १५ ५०	०५ ०६ ५८ ५३	०८ ०० ३५ ५१	०९ ०५ ४१ ४७	०५ २४ ५५ १७	०९ ०१ २९ ४१	०२ २८ ३९ ४९	०० ०२ ५१ ४२	१० ११ २१ १३	०९ २० ५७ ५८	०७ २९ ४४ ५७	३०
३१	०९ १७ १६ ४५	०५ १९ ३२ ०८	०८ ०१ १८ ०१	०९ ०७ १८ १४	०५ २४ ५५ ४७	०९ ०२ ४४ ५०	०२ २८ ३५ १५	०० ०२ ४८ ३१	१० ११ २४ २५	०९ २१ ०० १५	०७ २९ ४६ ३८	३१

मार्च सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५५' ।३७"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
१	१० १६ ३४ १०	०६ १२ २४ ०२	०८ २१ ५२ १९	१० २८ ५५ १२	०५ २३ ४८ ५१	१० ०९ ०१ ५४	०२ २६ ५२ ३१	०० ०१ १६ १९	१० १३ ०२ ३०	०९ २२ ०४ ५६	०८ ०० २३ ५४	१
२	१० १७ ३४ २२	०६ २५ ३९ १८	०८ २२ ३५ १६	११ ०० ४४ ०५	०५ २३ ४३ ५६	१० १० १६ ५०	०२ २६ ५० १७	०० ०१ १३ ०८	१० १३ ०५ ५६	०९ २२ ०७ ०३	०८ ०० २४ ४५	२
३	१० १८ ३४ ३३	०७ ०९ १० ५१	०८ २३ १८ १४	११ ०२ ३१ ०५	०५ २३ ३८ ५२	१० ११ ३१ ४६	०२ २६ ४८ ०९	०० ०१ ०९ ५८	१० १३ ०९ २२	०९ २२ ०९ ०९	०८ ०० २५ ३३	३
४	१० १९ ३४ ४२	०७ २३ ०० ०४	०८ २४ ०१ १३	११ ०४ १५ ४६	०५ २३ ३३ ३९	१० १२ ४६ ४२	०२ २६ ४६ ०७	०० ०१ ०६ ४७	१० १३ १२ ४९	०९ २२ ११ १३	०८ ०० २६ २०	४
५	१० २० ३४ ५०	०८ ०७ ०७ २४	०८ २४ ४४ १४	११ ०५ ५७ ४०	०५ २३ २८ १७	१० १४ ०१ ३६	०२ २६ ४४ ११	०० ०१ ०३ ३६	१० १३ १६ १४	०९ २२ १३ १८	०८ ०० २७ ०५	५
६	१० २१ ३४ ५६	०८ २१ ३१ ३८	०८ २५ २७ १६	११ ०७ ३६ १४	०५ २३ २२ ४६	१० १५ १६ ३१	०२ २६ ४२ २२	०० ०१ ०० २५	१० १३ १९ ४०	०९ २२ १५ २१	०८ ०० २७ ४८	६
७	१० २२ ३५ ००	०९ ०६ ०९ ३२	०८ २६ १० २०	११ ०९ १० ५७	०५ २३ १७ ०७	१० १६ ३१ २४	०२ २६ ४० ३८	०० ०० ५७ १४	१० १३ २३ ०५	०९ २२ १७ २३	०८ ०० २८ २९	७
८	१० २३ ३५ ०३	०९ २० ५५ ४३	०८ २६ ५३ २५	११ १० ४१ १६	०५ २३ ११ २०	१० १७ ४६ १७	०२ २६ ३९ ०२	०० ०० ५४ ०३	१० १३ २६ ३०	०९ २२ १९ २४	०८ ०० २९ ०८	८
९	१० २४ ३५ ०४	१० ०५ ४३ ०१	०८ २७ ३६ ३१	११ १२ ०६ ३७	०५ २३ ०५ २४	१० १९ ०१ १०	०२ २६ ३७ ३१	०० ०० ५० ५३	१० १३ २९ ५४	०९ २२ २१ २५	०८ ०० २९ ४४	९
१०	१० २५ ३५ ०३	१० २० २३ ३२	०८ २८ १९ ३८	११ १३ २६ २१	०५ २२ ५९ २१	१० २० १६ ०१	०२ २६ ३६ ०८	०० ०० ४७ ४२	१० १३ ३३ १८	०९ २२ २३ २४	०८ ०० ३० १९	१०
११	१० २६ ३५ ०१	११ ०४ ४९ ४८	०८ २९ ०२ ४६	११ १४ ४० २०	०५ २२ ५३ ११	१० २१ ३० ५२	०२ २६ ३४ ५०	०० ०० ४४ ३१	१० १३ ३६ ४१	०९ २२ २५ २३	०८ ०० ३० ५२	११
१२	१० २७ ३४ ५६	११ १८ ५५ ५८	०८ २९ ४५ ५५	११ १५ ४७ ४१	०५ २२ ४६ ५३	१० २२ ४५ ४२	०२ २६ ३३ ४०	०० ०० ४१ २१	१० १३ ४० ०४	०९ २२ २७ २०	०८ ०० ३१ २३	१२
१३	१० २८ ३४ ५०	०० ०२ ३८ २६	०९ ०० २९ ०५	११ १६ ४८ ०४	०५ २२ ४० २८	१० २४ ०० ३१	०२ २६ ३२ ३५	०० ०० ३८ १०	१० १३ ४३ २६	०९ २२ २९ १६	०८ ०० ३१ ५२	१३
१४	१० २९ ३४ ४१	०० १५ ५६ ०४	०९ ०१ १२ १६	११ १७ ४१ ०६	०५ २२ ३३ ५७	१० २५ १५ १९	०२ २६ ३१ ३८	०० ०० ३४ ५९	१० १३ ४६ ४७	०९ २२ ३१ ११	०८ ०० ३२ १९	१४
१५	११ ०० ३४ ३०	०० २८ ४९ ५५	०९ ०१ ५५ २९	११ १८ २६ २५	०५ २२ २७ १९	१० २६ ३० ०७	०२ २६ ३० ४७	०० ०० ३१ ४९	१० १३ ५० ०८	०९ २२ ३३ ०५	०८ ०० ३२ ४४	१५
१६	११ ०१ ३४ १७	०१ ११ २२ ४४	०९ ०२ ३८ ४२	११ १९ ०३ ४५	०५ २२ २० ३५	१० २७ ४४ ५३	०२ २६ ३० ०३	०० ०० २८ ३८	१० १३ ५३ २८	०९ २२ ३४ ५८	०८ ०० ३३ ०७	१६
१७	११ ०२ ३४ ०२	०१ २३ ३८ २३	०९ ०३ २१ ५६	११ १९ ३२ ५४	०५ २२ १३ ४६	१० २८ ५९ ३८	०२ २६ २९ २५	०० ०० २५ २७	१० १३ ५६ ४७	०९ २२ ३६ ५०	०८ ०० ३३ २८	१७
१८	११ ०३ ३३ ४४	०२ ०५ ४१ २५	०९ ०४ ०५ ११	११ १९ ५३ ४३	०५ २२ ०६ ५०	११ ०० १४ २२	०२ २६ २८ ५४	०० ०० २२ १६	१० १४ ०० ०५	०९ २२ ३८ ४०	०८ ०० ३३ ४७	१८
१९	११ ०४ ३३ २५	०२ १७ ३६ ३६	०९ ०४ ४८ २७	११ २० ०६ १२व	०५ २१ ५९ ५०	११ ०१ २९ ०५	०२ २६ २८ ३०	०० ०० १९ ०५	१० १४ ०३ २३	०९ २२ ४० २९	०८ ०० ३४ ०५	१९
२०	११ ०५ ३३ ०३	०२ २९ २८ ४२	०९ ०५ ३१ ४४	११ २० १० २३	०५ २१ ५२ ४४	११ ०२ ४३ ४७	०२ २६ २८ १२	०० ०० १५ ५४	१० १४ ०६ ३१	०९ २२ ४२ १७	०८ ०० ३४ २०	२०
२१	११ ०६ ३२ ३८	०३ ११ २२ ०५	०९ ०६ १५ ०२	११ २० ०६ २७	०५ २१ ४५ ३४	११ ०३ ५८ २९	०२ २६ २८ ०१	०० ०० १२ ४४	१० १४ ०९ ५४	०९ २२ ४४ ०४	०८ ०० ३४ ३३	२१
२२	११ ०७ ३२ १२	०३ २३ २० ३६	०९ ०६ ५८ २१	११ १९ ५४ ४२	०५ २१ ३८ २०	११ ०५ १३ ०९	०२ २६ २७ ५७मा	०० ०० ०९ ३३	१० १४ १३ ०९	०९ २२ ४५ ४९	०८ ०० ३४ ४४	२२
२३	११ ०८ ३१ ४३	०४ ०५ २७ २५	०९ ०७ ४१ ४२	११ १९ ३५ ३१	०५ २१ ३१ ०१	११ ०६ २७ ४८	०२ २६ २८ ००	०० ०० ०६ २२	१० १४ १६ २२	०९ २२ ४७ ३३	०८ ०० ३४ ५३	२३
२४	११ ०९ ३१ १२	०४ १७ ४५ ००	०९ ०८ २५ ०३	११ १९ ०९ २६	०५ २१ २३ ३९	११ ०७ ४२ २६	०२ २६ २८ ०९	०० ०० ०३ १२	१० १४ १९ ३५	०९ २२ ४९ १६	०८ ०० ३५ ००	२४
२५	११ १० ३० ३९	०५ ०० १५ ००	०९ ०९ ०८ २५	११ १८ ३७ ०६	०५ २१ १६ १३	११ ०८ ५७ ०३	०२ २६ २८ २५	०० ०० ०० ०१	१० १४ २२ ४६	०९ २२ ५० ५७	०८ ०० ३५ ०५	२५
२६	११ ११ ३० ०४	०५ १२ ५८ २२	०९ ०९ ५१ ४८	११ १७ ५९ १८	०५ २१ ०८ ४४	११ १० ११ ३९	०२ २६ २८ ४७	११ २९ ५६ ५०	१० १४ २५ ५६	०९ २२ ५२ ३७	०८ ०० ३५ ०८	२६
२७	११ १२ २९ २७	०५ २५ ५५ २३	०९ १० ३५ १२	११ १७ १६ ५३	०५ २१ ०१ १२	११ ११ २६ १४	०२ २६ २९ १६	११ २९ ५३ ४०	१० १४ २९ ०५	०९ २२ ५४ १६	०८ ०० ३५ ०९	२७
२८	११ १३ २८ ४८	०६ ०९ ०५ ५२	०९ ११ १८ ३७	११ १६ ३० ४८	०५ २० ५३ ३७	११ १२ ४० ४८	०२ २६ २९ ५१	११ २९ ५० २९	१० १४ ३२ १२	०९ २२ ५५ ५३	०८ ०० ३५ ०९	२८
२९	११ १४ २८ ०७	०६ २२ २९ १८	०९ १२ ०२ ०३	११ १५ ४२ ०६	०५ २० ४६ ०१	११ १३ ५५ २१	०२ २६ ३० ३४	११ २९ ४७ १८	१० १४ ३५ १९	०९ २२ ५७ २८	०८ ०० ३५ ०६व	२९
३०	११ १५ २७ २४	०७ ०६ ०४ ५८	०९ १२ ४५ ३०	११ १४ ५१ ४७	०५ २० ३८ २२	११ १५ ०९ ५३	०२ २६ ३१ २२	११ २९ ४४ ०७	१० १४ ३८ २४	०९ २२ ५९ ०३	०८ ०० ३५ ०१	३०
३१	११ १६ २६ ३९	०७ १९ ५२ ०३	०९ १३ २८ ५८	११ १४ ०० ५६	०५ २० ३० ४१	११ १६ २४ २४	०२ २६ ३२ १८	११ २९ ४० ५७	१० १४ ४१ २८	०९ २३ ०० ३५	०८ ०० ३४ ५४	३१

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र "**ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च**" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें ५१०५ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५५वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—*इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई।* इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०६१ में कलियुग के ५१०५ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९५ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के [illegible] प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

सम्वत् २०६१ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०६१ वर्षे सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०५, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलि: ५१०५, भोग्यकलि: सौर वर्ष संख्या ४२६८९५, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा: ५२४०, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०६१, शकाब्दा: १९२६, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम फाल्गुन:, ईस्वीय सन् २००४-२००५, हिजरी सन् १४२४-२५, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५३०-३१, भारतीय गणराज्य सम्वत् ५५-५६ प्रवर्तते।

समय विश्वा १८, समय वाहन अश्व:, स्तम्भ नाऽस्ति, सोमवती अमावस्या ३, सोमवती पंचमी २, अंगार की चतुर्थी २, भानु सप्तमी ३, बुधाष्टमी ३, रवि दशमी २, समय मुहूर्ता: ३३०, समय दिनानि ३८२, तिथि क्षय: १८, तिथि वृद्धि: १२, उत्पति विश्वा ९९, खपति विश्वा ९३, वर्षा विश्वा ११, धान्यम् १३, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, तयोरैक्यम् ११३, सत्य आधा, धर्म ड्योढा, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे नेष्टं, अस्मिन् वर्षे भारते दृश्य ग्रहण २ चन्द्रस्य। मेघनाम "आवर्त", रोहिणी तटे, समय निवासो रजक गृहे। दैवज्ञं शुभाशुभ चिन्तनीयम्। वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का ११वां "हेमलम्ब" नाम का सम्वत्सर है। जिसका पूर्वाचार्यों ने फल इस प्रकार लिखा है।

हेमलम्ब नाम संवत्सर फलम्

आकुला हेमलम्बे तु मध्यसस्यार्घवृष्टिभि:।
भातिभूर्भूपतिक्षोभ बहु विद्युल्लतादिभि:॥

जिस वर्ष हेमलम्ब नामक संवत्सर हो तो वर्ष में वर्षा मध्यम प्राय: होती है। फसल की पैदावार मध्यम होकर व्यापार में न्यूनता रहती है। बिजुली बार-बार चमकती है तथा पृथ्वी की सुन्दरता में वृद्धि होती है किन्तु शासकों की अन्तर्क्षुब्धता से प्रजा में भय वृद्धि होती है।

अखिलेश्वर काल के कर्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। किन्तु राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा के स्वर्ग व भारत के ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में अधिक होता है। इसी प्रकार मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान (पूर्वोत्तर के मध्य) विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ-साथ काश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा रवि: तत्फलम्

सूर्ये नृपे स्वल्प फलाश्च मेघा: स्वल्पं पयोगोषु जनेषु पीड़ा।
स्वल्पं सुधान्यं फलमल्पवृक्षा: चौराग्नि बाधा निधनं नृपाणाम्॥

वर्ष का राजा रवि का फल—इस वर्ष राजा सूर्य हैं इससे पृथ्वी पर वर्षा न्यून प्राय: होगी जिससे फसल फल व वृक्षों की कमी होगी तथा गायों के दूध भी कम होगा। जनता में चोर, डाकुओं के आतंक व अग्निकाण्ड आदि विपत्तियों से भय की वृद्धि होगी एवं किसी बड़े राजनेता का निधन होगा।

मंत्री भौम: तत्फलम्

अवनिजो ननु मंत्रि पदं गतो भवति दस्युगदादिज वेदना:।
जनपदेशु जयं सुख संचयं न बहुगोषु पयो द्विज कर्म च॥

मंत्री मंगल का फल—मंगल मंत्री पदासीन होने पर चोर, डाकू व तस्करों की वृद्धि होती है तथा प्रजा अनेक प्रकार की बीमारियों से सुखी होती है। किन्तु गौओं में दूध की वृद्धि भी होती है।

सस्येश शुक्र: तत्फलम्

शुक्रो यदा धान्य पतिर्धगयां मेघो जलं वर्षति शोभनं प्रियम्।
गोधूम शालेक्षु धनप्रियंगु वृक्षेषु पुष्पाणि सुख प्रदानि॥

सस्येश शुक्र का फल—सस्येश शुक्र होने पर पृथ्वी पर बादल अच्छी वर्षा करते हैं तथा गेहूं, चावल, ईख व प्रियंगु आदि की अच्छी पैदावार व धन की वृद्धि होती है एवं वृक्षों पर सुन्दर-सुन्दर पुष्प लगते हैं।

धान्येश बुध: तत्फलम्

बुधे धान्याधिपे मेघा: जलं मुञ्चन्ति वै भृशम्।
सैन्धवे लाट देशे च माधवोल्पं च वर्षति॥

धान्येश बुध का फल—बुध धान्येश होने पर बादल अच्छी वर्षा करते हैं। परन्तु सिन्ध देश, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश में वर्षा कम होती है।

मेघेश चन्द्र: तत्फलम्

शशिनि तोयदपे यदि गोमहिष्य जवरादिषु दुग्धरसं तदा।
फलवति धन धान्यवनि धरा विविध भोगवती ननु भामिनी॥

मेघेश चन्द्र का फल—चन्द्र के मेघेश होने पर गाय, भैंस, बकरी आदि चौपायों के दूध अधिक होता है तथा वसुन्धरा फल, पुष्प, धान्य, धन व अनेक प्रकार के सुखों से परिपूर्ण होती है।

रसेश शनि: तत्फलम्

रविसुते रसपे रस संक्षयो न जलदागददाश्च पयोधरा:।
अज गवां गज वाजि खरोष्ट्रहा जनपदेषु नरान्नरसैर्युता:॥

रसेश शनि का फल—सूर्यात्मज शनि रसपति हों तो रसों का नाश होता है। बादल वर्षा नहीं करते तथा बकरी, गाय, हाथी, घोड़ा, गधा व ऊंट आदि का नाश होता है। प्रजा बीमारियों से त्रस्त व खिन्न रहती है।

नीरसेश गुरु: तत्फलम्

हरिद्रा पीत वस्तूना पीत वस्त्रादि कञ्चयत्।
नीरसेशो यदा जीव: सर्वेषां प्रीति रुत्तमा॥

नीरसेश गुरु का फल—नीरसपति बृहस्पति हों तो हल्दी आदि पीली वस्तुएं, पीले वस्त्र सस्ते होते हैं तथा प्रजा में प्रेम की वृद्धि होती है।

फलेश चन्द्र: तत्फलम्

यदि विधु: फलपो द्रुम राशय: फलयुता: व्रतिभि: कुसुमैर्युता।
द्विजमुखावर भोग समन्विता नृपतयो नयनाटन तत्परा:॥

फलेश चन्द्र का फल—वर्ष में फलेश चन्द्र हों तो वृक्ष फलों से परिपूर्ण व लताएं पुष्पों से भरीपूरी रहती हैं। बाह्मणों को सुख प्राप्त होता है तथा राजा लोग न्याय प्रिय व भ्रमणशील होते हैं।

धनेश गुरु: तत्फलम्

सुमनसां च गुरुर्द्रविणाधिपो वणिज वृत्तिपरा: सुखभजना:।
फलित पुष्पित भूमिरुहा: सदा विविध द्रव्य युता भुवि मानवा:॥

धनेश गुरु का फल—धन स्वामि गुरु जिस वर्ष हों उस वर्ष वृक्ष फल पुष्प से लदे रहते हैं तथा प्रजा निष्पाप एवं व्यापारादि कार्य में संलग्न होकर धन द्रव्यादि से परिपूर्ण व सुखी होती है।

दुर्गेश चन्द्र: तत्फलम्

गढ़पतिर्मृगलांछनकोयदा नृप सुराज्य विलासित पौरजा:।
बहुधनेक्षुज गोरस भोगिनो नरवरा नर वर्णित विग्रहा:॥

दुर्गेश चन्द्र का फल—जिस वर्ष दुर्ग अधिपति चन्द्र हों उस वर्ष शासक वर्ग सुशासन करते हैं और प्रजा अनेक सुखों को भोगती है। ईख व गोरस से बहुत धन लाभ होता है तथा बड़े लोगों में विग्रह होता है।

वर्षनाम फाल्गुन तत्फलम्

सुभिक्षं प्रचुरावृष्टि रुत्तरे याम्य पश्चिमे।
पूर्वस्यां रौरवं घोरं फाल्गुने वत्सरे शुभम्॥

वर्षनाम फाल्गुन का फल—पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी देशों में प्रचुर वर्षा होकर सुभिक्ष होता है और पूर्वी देशों में प्राकृतिक बाधाएं अधिक होती हैं।

मेघनाम आवर्त तत्फलम्—"**आवर्ते छिन्नवृष्टिश्च**" के अनुसार इस वर्ष आवर्त नामक मेघ होने से देश में कहीं न्यून व कहीं अच्छी वर्षा होगी जिससे पैदावार में न्यूनता रहेगी।

रोहिणी निवास: तटे तस्य फलम्—इस वर्ष रोहिणी का निवास "तट" पर है। जिसका फल—"**तटे वृष्टि सुशोभना॥**" इस शास्त्र वचनानुसार सर्वत्र समान व अच्छी वर्षा होगी। जिससे धान्य तृण आदि उचित मात्रा में पैदा होंगे।

समय निवासो रजक गृहे तत्फलम्—समय का निवास धोबी के घर होने से वर्ष में सर्वत्र उत्तम वर्षा होकर अच्छी पैदावार होगी। यथा—"**जल पूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजक: गृहे**"॥

समय वाहन अश्व: तत्फलम्—समय वाहन अश्व होने से देश में वायु चाल अधिक रहती है।

अथ (विन्ध्य से दक्षिण वासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम् ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	१४	८	१४	१४	११	२	५	८	८	५
व्यय	१४	५	२	२	५	२	५	१४	५	१४	१४	५

अथ (विन्ध्य से उत्तर वासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम् ॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
व्यय	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

आय-व्यय कोष्ठक देखने की विधि:-अपनी राशि के आय व व्यय के अंकों को जोड़कर उसमें से एक घटा दें। जो शेष रहे उसके अनुसार फल जानें। शेष १-२-६-७ रहने पर लाभ तथा ०-३-४-५ रहने पर वर्ष में हानि होती है।

शनि की साढ़ेसाती और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

वर्ष प्रारंभ में शनि मिथुन राशि पर चल रहा है। जो गत वर्ष ता. ७ अप्रैल २००३ ई. से चल रहा है। जो ता. ५ सितम्बर २००४ ई. तक चलेगा। प्रवेश समय में चन्द्र वृष राशि पर था, तदनुसार निम्न राशि को शनि साढ़े साती व ढैया (लघु कल्याणी) चल रही है। जिसका गत वर्ष के पंचांग में राशि बार पाया विचार सहित फल दिया गया है। यथा-

वृष राशि-शनि साढ़े साती का अंतिम भाग पैरों पर सोने के पाये से होने के कारण शत्रुओं द्वारा बनते हुए कामों में अनेक बाधा, प्रतिष्ठा हानि के प्रयास तथा झूठी अफवाह फैलाने का फलप्रद है। शारीरिक रोगों का प्रकोप, स्वजनों से बार-बार घुटनशीलता जन्य वातावरण व रिश्तेदारों, संबंधि जनों से तनाव तथा आय की अपेक्षा खर्च की अधिकता रहेगी। राजकीय व कानूनी कामों में परेशानियां, उच्चाधिकारियों से द्वेष तथा राजनैतिक कूटनीतियों के दुष्प्रभाव बनकर अपने ही निजी व्यक्तियों द्वारा धोखाधड़ी बनना संभव है।

मिथुन राशि-शनि साढ़े साती का मध्य भाग उदर (पेट) पर लोह के पाये से चल रही है। इसलिए कारोबार में रुकावटें रहते हुए भी मिथ्या अहंकार की वृद्धि स्वास्थ्य में गड़बड़ी तथा दीर्घ रोग का प्रकोप एवं आर्थिक संकट की विशेषता रहकर आंतरिक घुटन रहेगी। आकस्मिक राजकीय परेशानियां बढ़कर मान-सम्मान हानि हेतु चिन्ताएं, भाई-बन्धु व मित्रों से विवाद व झगड़े बढ़कर पारिवारिक कलह बढ़ेगी। व्यवसायिक कामों में हानि से ऋण भार की वृद्धि होगी जिससे मानसिक संतुलन बिगड़ा हुआ रहेगा।

कर्क राशि-शनि साढ़े साती का प्रथम भाग शीष पर (मस्तक पर) सोने के पाये से है। तदनुसार अपने निजी व्यक्तियों से तनाव व मतभेद बनकर राजकीयादि परेशानियां बढ़ेंगी। स्वयं को मानसिक अस्थिरता होकर मनोबल में गिरावट, रिश्ते-नाते के व्यक्तियों से संपर्क सूत्र रूपी मनमुटाव, व्यवसायिक कामों में रुकावटें होकर आर्थिक अवरोध चलेगा। ऋण भार बढ़ेगा तथा देह में वात-व्याधि एवं रक्तचापादि बिमारियां बनकर शरीर में शिथिलता व मस्तिष्क शून्यता लक्षण उभरेंगे।

वृश्चिक राशि-इस राशि वालों को शनि ढैया (लघु कल्याणी) ताम्बे के पाये से है। अत: शारीरिक स्वास्थ्य हीनता एवं देह में शिथिलता रहेगी। व्यवसायिक कामों में प्रगति रहकर आर्थिक लाभ श्रेष्ठ रहेगा। यद्यपि इस छोटी पनोती के दुष्प्रभाव वश भाई-बन्धु तथा मित्रों के साथ मतभेद होकर मानसिक द्वेषता बढ़ेगी। जिससे मानसिक स्थिति में बार-बार अशांति रहेगी। राजकीय एवं कानूनी कामों में स्वयं को प्रभाव वृद्धि रहकर परिवार, समाज में प्रतिष्ठा वृद्धि बनेगी। उच्चाधिकारियों से संपर्क बढ़कर मनोरथ सिद्धि रहेगी।

मीन राशि-शनि की छोटी पनोती (ढैया) ताम्बे के पाये से है। इसलिए नवीन कामों की सफल योजनाएं बनकर आर्थिक प्रगति रहेगी। घर, परिवार व समाज में सम्मान, इज्जत की वृद्धि होगी। यद्यपि चतुर्थ शनि के प्रभाव [illegible]

रहेगी। राज्य पक्षीय कामों में श्रेष्ठ सफलता तथा राज्य कर्मचारियों के साथ उत्तम संपर्क बनकर शत्रुजनों में भय वृद्धि रहेगी। जबकि भ्रमण भागदौड़ के कामों की अधिकता रहेगी। ता. ५ सितम्बर २००४ ई. तक अन्यान्य राशियों का कोई शनि साढ़े साती अथवा शनि लघु कल्याणी (ढैया) नहीं है।

मिथुन राशिस्थ शनि का विश्व पर प्रभाव

मिथुने च यदा सौरि, दुर्भिक्षं तत्र शैरवम्।
पश्चिमे दारुण युद्धं, नृपाणां च महद्भयम्॥

अर्थात् मिथुन राशि के गोचर भ्रमण समय विश्व में कठोर दुर्भिक्ष (अकाल) होता है। पाश्चात्य राष्ट्रों में भीषण महायुद्ध होते हैं। और शासकों में आपसी आंतरिक महा भय बढ़ता है।

॥ शनि कर्क राशि में रहने का विचार ॥

शनि कर्क राशि में ता. ५ सितम्बर २००४ ई. को वृषस्थ चन्द्रमा के समय में प्रवेश करके पुन: मिथुन राशि में ता. १३ जनवरी २००५ ई. को कुंभ राशि के चन्द्र संचार काल में प्रवेश करेगा। अत: मिथुन राशि वालों को शनि साढ़े साती का तृतीय भाग पैरों पर लोह के पाये से चलेगी। कर्क राशि वालों को द्वितीय भाग उदर (पेट) पर सोने के पाये से रहेगी एवं सिंह राशि वालों को प्रथम भाग मस्तक पर ताम्बे के पाये से चलेगी। मेष राशि वालों को ढैया (लघु कल्याणी) चांदी के पाये से रहेगा तथा धन राशि वालों को छोटी पनोती (ढैया) सोने के पाये से चलेगी। इसलिए कर्क राशि के शनि का ता. ५ सितम्बर २००४ ई. से ता. १३ जनवरी २००५ ई. तक पृथक-पृथक राशियों पर गोचरीय प्रभाव फल निम्न प्रकार रहेगा।

मेष-शनि सुख स्थान में लघु कल्याणी (ढैया) चांदी के पाये से शुभ फलप्रद रहेगा। आय के नये स्त्रोत बनकर आर्थिक उन्नति, मनोबल वृद्धि, भूमि-भवन एवं वाहन सुख की वृद्धि होगी। राजकाज के कामों में कानूनी पक्ष मजबूत बनकर शत्रु पराजित होंगे। स्वयं की विजय रहेगी।

वृष-पराक्रम स्थान पर सुवर्ण पाद से शनि का भ्रमण सामाजिक व पारिवारिक व्यक्तियों द्वारा विशेष मान-सम्मान प्राप्तिकारक है तथा शत्रुवर्ग पर प्रभाव बढ़कर उनमें भय वृद्धि होगी। व्यवसायिक कामों में अनेक मित्रों, भाई-बन्धु व स्वजनों का सहयोग रहकर उत्तम प्रगति होगी।

मिथुन-शनि साढ़े साती का अंतिम भाग पैरों पर [illegible] स्थान के शनि से अपने ही लोगों के द्वारा धोखा बनकर आर्थिक हानि योग है। स्वयं को वात-व्याधि तथा निम्नांग भाग में रोगोत्पात से पीड़ा एवं राज्यादिक कानूनी कामों में असफलता कारी समय रहेगा।

कर्क-मध्यकालीन साढ़ेसाती उदर (पेट) भाग पर सुवर्ण के पाये से है। जन्म राशि पर गोचर भ्रमण से शारीरिक गड़बड़ी, सामाजिक व पारिवारिक व्यक्तियों से विरोध, अनावश्यक खर्च एवं आर्थिक कष्ट बढ़कर मानसिक संतुलन अनियंत्रित रहेगा। आकस्मिक राज्य भय संभव है।

सिंह-मस्तक (शीष) पर शनि साढ़ेसाती का प्रथम भाग ताम्बे के पाये से है। राशि से बारहवें स्थान पर होने के कारण मिथ्या व अनावश्यक खर्च की वृद्धि होकर ऋण भार बढ़ेगा। स्वजनों से अनेक बैर विरोध बढ़ेगा। जिससे मानसिक अशांति बढ़ेगी। राजकीय व कानूनी कामों की परेशानियां बढ़ेंगी।

कन्या-चांदी के पाये से लाभ के स्थान पर शनि का गोचर भ्रमण नवीन व्यवसायों व नवीन व्यक्तियों से संपर्क बनाकर आर्थिक प्रगति कारक है। कानूनी कामों में श्रेष्ठ सफलता होगी जिससे स्वयं का आत्मबल बढ़ेगा। स्त्री-संतानादि का उत्तम सुख एवं सहयोग बनेगा।

तुला-दशम स्थान पर लोहे के पाये से शनि का गोचर भ्रमण राजकीय परेशानियां, सामाजिक व पारिवारिक जनों द्वारा अपमान जन्य वातावरण बनकर मन में आंतरिक घुटन बनेगी। आय स्त्रोत के व्यवसायिक कामों में बार-बार अवरोध आकर अर्थोपार्जन में न्यूनता रहेगी।

वृश्चिक-राशि से नवमें ताम्बे के पाये से शनि का चलन अनेक धार्मिक कामों में रुचि बढ़ाकर ग्राम-नगर व समाज परिवार में सम्मान व इज्जत वृद्धिकारक है। भाग्योन्नति के सुअवसर प्राप्त होकर नवीन व्यवसायिक सफल योजना से आर्थिक लाभ रहेगा।

धनु-सोने के पाये से शनि की लघुकल्याणी (ढैया) चलेगी। राशि से अष्टम होने के कारण मानसिक घुटनशीलता, शारीरिक अस्वस्थता तथा अपने निजी व्यक्तियों के द्वारा अपमान जन्य व्यवहार से क्रोध वृद्धि रहेगी। मिथ्या विवाद व फसाद होकर राजकीय परेशानियां संभव हैं।

मकर-राशि से सप्तम स्थान पर चांदी के पाये से शनि का भ्रमण दाम्पत्य सुख में वृद्धिकारक है। स्थाई व्यवसाय कामों में प्रगति, स्वजनों में मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि एवं उच्च राज्याधिकारियों से संपर्क बढ़कर [illegible]

कुंभ-लोह के पाये से छठे स्थान का शनि अनायास ही शत्रु वृद्धिप्रद है। देह में वात-व्याधि आदि पीड़ा, मानसिक अशांति, पारिवारिक जनों में आपसी मतभेद होकर घरेलू कलह से मनोद्वेग बढ़ेगा। जबकि व्यवसायिक कामों का श्रेष्ठ लाभ चलेगा।

मीन-पंचम स्थान पर ताम्बे के पाये से शनि का गोचर भ्रमण श्रेष्ठ बुद्धि चतुरता बनाकर उच्चपद प्राप्तिकारक है। संतानों में उन्नति होगी। स्वयं का मनोबल बढ़ेगा। व्यवसायिक नवीन कार्य होकर धनोपार्जन बढ़ेगा। राज्यादिक कामों में आंशिक सफलता रहेगी।

कर्क राशि पर शनि के गोचर भ्रमण का विश्व पर प्रभाव-

रोगानित्यं प्रसंति प्रचुर परिभवो वित्तनाशस्तथैव,
कार्यहानिर्विरुद्धैः सकल भय जनैर्देश चिन्ता विषादः।
आरावोऽम्बु प्रपातैः प्रचलित धरणी सर्वलोकस्य नाशः,
सर्वस्मिन राज युद्धं पशु धन हरणं कर्कटे सूर्य पुत्रे॥

शनि कर्क में होने से विश्व में अनेक विरोध, शासकों में भी युद्धादि उपद्रव, भूकम्प एवं प्राकृतिक प्रकोप बढ़ेंगे। लोग अनेक चोरी कर्म करने में प्रवृत होंगे जिससे जगत में घोर आर्थिक संकट उभरेगा।

सिंह राशि पर गुरु भ्रमण का फल

गत वर्ष ता.३० जुलाई २००३ ई. को कर्क राशिस्थ चन्द्रकाल में गुरु सिंह राशि पर करने से वृष-कन्या-मकर राशि वालों को लोहे के पाये से होने के कारण शारीरिक स्वास्थ्य हीनता, मानसिक उद्वेग एवं अनेक रिश्ते-नातेदारों से अनावश्यक विवाद होकर संबंधों में कटुता होने के योग प्रद है तथा मेष-मिथुन-वृश्चिक राशि वालों को सोने के पाये से आर्थिक संकट, शत्रुव्याधि और राजकीय व व्यवसायिक विशेष परेशानी बढ़ने का फलप्रद है। जिससे आंतरिक घुटन व मनोअस्थिरता प्रायः बनी रहेगी। कर्क, तुला व कुंभ राशि वालों को ताम्र पाद से चलेगा। अतः समाज व परिवार के लोगों से मान-सम्मान की वृद्धि, कार्यक्षमता बढ़कर उत्तम अर्थोपार्जन एवं कानूनी कामों में सामान्य परिश्रम से सफलता रहेगी। राशि सिंह, धनु एवं मीन वालों को रजत (चांदी) के पाये से होने पर स्वयं के मनोबल की सतेजता बनकर अनेक सामाजिक व पारिवारिक कामों में सहयोग एवं सफलता रहेगी। आर्थिक प्रगति तथा नवीन व्यवसाय बढ़कर स्वजनों में प्रशंसा व प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राशि वार विशेष फल गतवर्ष २०६० वि. के पंचांग में दिये जा चुके हैं।

इस वर्ष ता. २७ अगस्त २००४ ई. को मकर राशि के चन्द्रकाल में गुरु कन्या राशि में प्रवेश करेगा जो विभिन्न राशियों पर पृथक-पृथक पाये से चलेगा। मेष-कर्क व वृश्चिक राशि वालों को ताम्बे के पाये से, वृष-कन्या एवं धन राशि वालों को चांदी के पाये एवं मिथुन-तुला-कुंभ राशि वालों को लोहे के पाये और सिंह-मकर-मीन राशि वालों को सोने के पाये से गोचर राशि प्रभावकारी भ्रमण रहेगा। जिसका राश्यानुसार पृथक-पृथक फल नीचे दिया जा रहा है।

मेष-ताम्बे के पाये से छठे स्थान का गुरु नवीन व्यवसायिक बनाकर अर्थोपार्जन की क्षमता में वृद्धिकारक है। स्वजनों से सुमधुर मेलन एवं परिवार समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होकर उत्तम प्रतिष्ठा रहेगी। कानूनी एवं राज्यादिक कामों में सफलता तथा मनोबल सतेज प्रायः रहेगा।

वृष-चांदी के पाये से पंचम स्थान पर गुरु का गोचर भ्रमण रहेगा। जिससे भाग्य उन्नति कारक व्यवसायिक कार्य बढ़ेंगे। बुद्धि चतुरता तेज बनेगी। शत्रुओं पर विजय, राजकीय स्थानों पर उत्तम प्रतिष्ठा व इज्जत की वृद्धि होगी। आर्थिक उपार्जन क्षमता बढ़ने से आत्मविश्वास बढ़ेगा।

मिथुन-लोहे के पाये से चतुर्थ स्थान का गुरु अनेक स्थानों पर मानहानि प्रद है। राजकीय व कानूनी कामों में रुकावटें, स्वजनों से तनाव, आर्थिक संकट एवं निजी व्यक्तियों द्वारा धोखा होकर हानि रहेगी। भूमि-भवन के बंटवारे अथवा खरीद फरोख्त से हानि एवं राज्यादि परेशानीयां होगी।

कर्क-ताम्बे के पाये से तीसरे स्थान के गुरु भ्रमण से नवीन स्थाई आय साधन बनेगा तथा देश-विदेश की यात्रा होकर आर्थिक लाभ रहेगा। पत्नी स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी। अनेक मित्रों से नवीन रूप से मिलन होकर राजकीय एवं व्यवसाय कार्यों में प्रगति होगी व आत्मबल बढ़ेगा।

सिंह-सोने के पाये से द्वितीय स्थान में गुरु का गोचर भ्रमण रहेगा। अतः अनावश्यक खर्च की वृद्धि, व्यवसायों में हानि तथा रुकावटें रहेंगी। रहन-सहन में परिवर्तन अथवा स्थानान्तरण होकर मानसिक चिन्ताएं बढ़ी हुई रहेंगी। परिवार सदस्यों की स्वास्थ्य चिन्ता एवं व्यय वृद्धि रहेगी।

कन्या-चांदी के पाये से जन्म राशि पर गुरु रहेगा। जिससे बौद्धिक सतेजता, धार्मिक कामों में रुचि और सामाजिक संपर्कों की वृद्धि होकर इज्जत बढ़ेगी। व्यापारिक कामों से श्रेष्ठ द्रव्य लाभ रहेगा। कानूनी व राजकीय कामों में उत्तम सफलता बनने के योग हैं।

तुला-लोहे के पाये से व्यय स्थान के गुरु से लम्बी यात्राओं में खर्च, स्वनियंत्रित कार्यों अथवा व्यापारों से आर्थिक हानि रहेगी। मानसिक अस्थिरता रहकर कामों में भूल तथा स्वयं को स्वास्थ्य हीनता चलेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा अपवाद बनने से मनोबल में गिरावट रहेगी।

वृश्चिक-ताम्बे के पाये से लाभ स्थान पर गुरु चलेगा। अतः व्यवसायिक कामों में प्रगति, जमीन, भूमि अथवा भवन का लाभ एवं सामाजिक-पारिवारिक प्रतिष्ठा की बढ़ोत्तरी रहेगी। शत्रुवर्ग में भय, स्वयं का मनोबल उत्तम एवं कानूनी कामों में सफलता से मनोहर्ष बढ़ेगा।

धनु-चांदी के पाये से कार्य क्षेत्र स्थान का गुरु नवीन आय स्रोतों में वृद्धि होकर प्रशंसनीय अर्थोपार्जन कारक है। गत समय में दिये गये अर्थ का लाभ, आत्म विश्वास की वृद्धि, स्वजनों व मित्रों का सहयोग तथा नई रिश्तेदारी बनकर घर में मंगलोत्सव आयोजन रहेगा।

मकर-सोने के पाये से भाग्य स्थान में गुरु का गोचर भ्रमण चलेगा। तदनुसार बनते कामों में रुकावटें, विशेष दौड़-धूप व यात्रादिकों से परेशानियां तथा अनायास ही खर्च वृद्धि होकर अपव्यय व आर्थिक कठिनाई बढ़ेगी। ऋण भार से मानसिक अस्थिरता व क्रोधवृद्धि रहेगी।

कुम्भ-लोहे के पाये से अष्टम स्थान पर गुरु शारीरिक अस्वस्थता, मानसिक विकलता और अर्थोपार्जन में अवरोध फलप्रद है। भाई-बन्धु व मित्रादि स्वजनों से तनाव होकर राज्यादिक परेशानियां बढ़ेंगी। मान-सम्मान पर ठेस बनने से मनोबल में गिरावट रहेगी।

मीन-सोने के पाये से सप्तम स्थान के गुरु से पत्नी स्वास्थ्य हेतु चिन्ता, व्यवसाय कामों के अवरोध से मन क्षुब्ध तथा दूरदेशीय यात्रादि कामों में परेशानियां बढ़कर हानि रहेगी। श्रम-विशेष से आर्थिक नियंत्रण रह सकेगा। आत्मविश्वास की न्यूनता चलेगी।

कन्या राशि पर गुरु भ्रमण का विश्व पर प्रभाव

कन्या राशि गते जीवे, मेघ वृष्टिस्तथोत्तमा।
सुभिक्षं सर्व धान्यानामारोग्यं लभते जनः॥

कन्या राशि पर गुरु का गोचरीय परिभ्रमण काल में विश्व के जीवों में श्रेष्ठ आरोग्यता रहती है। तथा प्राकृतिक उपद्रवों का शमन होकर उत्तम वर्षा होती है। तथा सर्वत्र धान्यादिकों की उपज बढ़कर सुभिक्ष का संचार रहता है।

राहु केतु का राशि संचार

गत वर्ष विक्रम संवत् २०६० भाद्रपद शुक्ला ११ शनिवार ता. ६ सितम्बर २००३ ई. को धनुराशि के चन्द्र भ्रमण काल में राहु-मेष राशि में एवं केतु-तुला राशि में प्रवेश हुआ है। जो ता. २५ मार्च २००५ ई. तक रहेगा, तत्पश्चात राहु-मीन राशि में व केतु-कन्या राशि में आयेगा। राहु का मेष राशिस्थ होकर राशि पर प्रभाव निम्न प्रकार है। यथा-

मेष-सिंह व वृश्चिक राशि वालों को चांदी के पाये से मनोबल वृद्धि, संपत्ति लाभ व उत्तम द्रव्योंपार्जन योग कारक है।

वृष-कन्या एवं मकर राशि वालों को लोह के पाये से होने के कारण देह में अस्वस्थता, स्वजनों से तनाव, मानसिक अस्थिरता एवं कामों में अवरोध चलेगा।

मिथुन-तुला-तथा **मीन** राशि वाले व्यक्तियों को ताम्बे के पाये से अनेक व्यक्तियों व उच्चाधिकारियों से संपर्क, शत्रुवर्ग पराजित एवं स्वयं को मनोबल वृद्धि रहेगी।

कर्क-कुम्भ और धन राशि वाले को सोने के पाये से अनावश्यक खर्च, घरेलू क्लेश व कलह, रिश्तेदारों से तनाव और मन में उच्चाटन स्थिति बनी रहेगी।

मीन राशि में राहु व कन्या राशि के केतु का फल

राहु मीन राशि में तथा केतु कन्या राशि में ता. २५ मार्च २००५ ई. को कन्या के चन्द्रकाल में प्रवेश करेगा। जिसका राश्यानुसार पाया विचार इस प्रकार रहेगा-

मेष-कन्या व **वृश्चिक** राशि वालों को सोने के पाये से स्वजनों से द्वेष, क्रोध वृद्धि एवं मानसिक अस्थिरता तथा व्यय वृद्धि रहकर ऋण वृद्धि फलप्रद रहेगा।

वृष-सिंह-मकर राशि वालों को चांदी के पाये से यात्रादि भ्रमण कार्यों तथा नये व्यवसाय बनकर आर्थिक प्रगति एवं सम्मान वृद्धि कारक चलेगा।

मिथुन-तुला-कुंभ राशि वालों को लोहे के पाये से चलेगा। अतः स्वयं, स्त्री, संतानादि घरेलू सदस्यों को रोगोत्पात रहकर मनोद्वेग रहेगा तथा आर्थिक संकट बढ़ेगा।

कर्क-धन तथा **मीन** राशि वालों को ताम्बा के पाये से है, तदनुसार समाज व परिवार के व्यक्तियों से मेल-जोल व सहयोग बढ़ेगा। व्यवसाय की नई सफल योजना बनकर अर्थ लाभ रहेगा।

मीन राशि के राहु का विश्व पर प्रभाव

मीन राशि गते राहौ सर्व धान्य महर्घता।
वर्ष मात्रं च दुर्भिक्षं पश्चात्सुभिक्षमेव च॥

मीन राशि के राहु का गोचर भ्रमण काल सभी प्रकार के धान्य भावों में तेजी कारक है और वर्ष में दुर्भिक्ष (अकाल) का प्रकोप रहता है। अंतिम ६ माह में श्रेष्ठ उपज होकर सुभिक्ष होता है।

चैत्र शुक्ल पक्ष-१ श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २१ मार्च से ५ अप्रैल सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १६ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत-ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
चै१	१	र	५५	५	२८	२७	उभा	४०	३३	२२	३२	शु	२२	२५	१५	२३	कि	२४	३६	१६	१६
२	२	चं	५७	१२	२९	१७	रे	४३	४९	२३	५६	ब	२०	४०	१४	४०	बा	२५	५८	१६	४८
३	३	मं	६०	००	-	-	अ	४८	३१	२५	४८	ऐं	२०	५	१४	२५	तै	२८	५१	१७	५५
४	३	बु	०	५१	६	४२	भ	५४	३३	२८	११	वै	२०	३७	१४	३६	ग	०	५१	६	४२
५	४	गु	५	४७	८	४०	कृ	६०	०	-	-	वि	२२	५	१५	११	वि	५	४७	८	४०
६	५	शु	११	४४	११	१	कृ	१	३९	६	५९	प्री	२४	१५	१६	१	बा	११	४४	२१	१
७	६	श	२८	१३	१३	३५	रो	९	१५	१०	१	आ	२६	४४	१७	०	तै	१८	१३	१३	३५
८	७	र	२४	३८	१६	८	मृग	१६	५७	१३	४	सौ	२९	७	१७	५६	व	२४	३८	१६	८
९	८	चं	३०	२२	१८	२५	आ	२४	३	१५	५३	शो	३०	५९	१८	४०	ब	३०	२२	१८	२५
१०	९	मं	३४	५४	२०	२२	पुन	३०	२	१८	१६	अति	३१	५५	१९	१	बा	२	५०	७	२३
११	१०	बु	३७	४७	२१	२१	पु	३४	२८	२०	१	सु	३१	३८	१८	५३	तै	६	३५	८	५२
१२	११	गु	३८	५१	२१	४५	श्ले	३७	९	२१	४	धृ	२९	५७	१८	१२	व	८	३५	९	३९
१३	१२	शु	३८	३	२१	२५	म	३८	१	२१	२४	शू	२६	४९	१६	५५	ब	८	४२	९	४०
१४	१३	श	३५	२९	२०	२२	पूफा	३७	११	२१	३	गं	२२	१६	१५	५	कौ	७	०	८	५८
१५	१४	र	३१	२५	१८	४३	उफा	३४	५०	२०	५	वृ	१६	२८	१२	४४	ग	३	३९	७	३७
१६	१५	चं	२६	६	१६	३५	ह	३१	१८	१८	३९	ध्रु	९	३६	९	५९	व	२६	६	१६	३५

रा.मि.	दिन मान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र	भु	अं (दिनांक)	चन्द्र संचार (भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.)	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि
चै१	३०	१६	६	२५	१८	३२	८	२९	21	मीन	११	६	४७	५१	५९	६	४४	१९	२
२	२०	२०	६	२४	१८	३२	९	३०	22	मे. २३।५६	११	७	४७	२६	३४	७	१४	१९	५९
३	३०	२५	६	२३	१८	३३	१०	३१	23	मेष	११	८	४७	०	३१	७	४३	२०	५४
४	३०	२९	६	२२	१८	३३	११	२	24	मेष	११	९	४६	३१	२९	८	१४	२१	५०
५	३०	३३	६	२१	१८	३४	१२	३	25	वृ. १०।५१	११	१०	४६	०	२७	८	४७	२२	४६
६	३०	३८	६	१९	१८	३५	१३	४	26	वृष	११	११	४५	२७	२४	९	२४	२३	४२
७	३०	४२	६	१८	१८	३५	१४	५	27	मि. २३।३४	११	१२	४४	५१	२२	१०	५०	२४	०
८	३०	४६	६	१७	१८	३६	१५	६	28	मिथुन	११	१३	४४	१३	२०	१०	५१	२४	३०
९	३०	५०	६	१६	१८	३६	१६	७	29	मिथुन	११	१४	४३	३३	१८	११	४२	२५	३०
१०	३०	५५	६	१५	१८	३७	१७	८	30	क. ११।४३	११	१५	४२	५१	१५	१२	३८	२६	२०
११	३०	५९	६	१४	१८	३७	१८	९	31	कर्क	११	१६	४२	६	१३	१३	३६	२७	५
१२	३१	३	६	१३	१८	३८	१९	१०	A1	सिं. २१।४	११	१७	४१	१९	११	१४	३६	२७	४७
१३	३१	७	६	११	१८	३८	२०	११	2	सिंह	११	१८	४०	३०	८	१५	३७	२८	२४
१४	३१	१२	६	१०	१८	३९	२१	१२	3	कं. २६।५१	११	१९	३९	३८	६	१६	३९	२८	५८
१५	३१	१६	६	९	१८	४०	२२	१३	4	कन्या	११	२०	३८	४४	४	१७	४१	२९	३१
१६	३१	२०	६	८	१८	४०	२३	१४	5	तु. २९।४८	११	२१	३७	४८	२	१८	४४	३०	४

रा.मि.	विवरण
चै१	नव संवत्सरारंभ, नवरात्र प्रा., घटस्थापन, गुड़ी पड़वा, वर्ष A
२	चन्द्र दर्शन मु.३० समता कारक, पंचक समा. २३।५६, सिंधारा B
३	सफर मु. मास २ प्रा., गणगौरी पूजा, मत्स्य जयंती, मनोरथ ३, C
४	भ. १९।३७ से, शुक्र कृतिका में ३०।१८, विनायक ४ व्रत
५	भ. ८।४० तक D व्रत, स्कंद षष्ठी, कल्पादि ५, डोलोत्सव
६	बुध अश्विनी मेष में ७।१६, श्री रामजन्मोत्सव प्रा., हय ५ D
७	रोहिणी में मंगल १५।४८, प्लूटो वक्री ९।१६
८	भ. १६।८ से २९।२९ तक, वृष में शुक्र १३।५२, भानु ७, जैन E
९	दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, दुर्गा पूजा, मेला द्रोणगिरी
१०	रेवती में सूर्य २८।३९, श्री राम नवमी, नवरात्र समा., तारा जयंती
११	E आयंबिल ओली प्रा., मेला माई सरखाना
१२	भ. ९।३९ से २१।४५ तक, कामदा एकादशी व्रत सबका, F
१३	हरिदमनोत्सव F लक्ष्मीकांत दोलोत्सव, अप्रैल मा. ४ ता. ३० G
१४	शनि प्रदोष व्रत, अनंग १३, महावीर ज. जैन, मीनाक्षी कल्याणम्
१५	भ. १८।४३ से २९।४२ तक, दमनक १४, पाम सण्डे
१६	सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्यं, श्री हनुमान जयंती, मेला सालासर H

A फल श्रवण, गौतम जयंती, आर्य समाज स्थापना दिवस, मेला चीमा नानकसर (पंजाब) B झूलेलाल जयंती, चेटी चंड उत्सव, सिंधी सम्प्रदाय C आंदोलन ३ (बिहार), सौभाग्य शयन व्रत, अरुंधती व्रत G प्रा., विश्व स्वास्थ्य दिवस, मूर्ख दिवस, वक्री गुरु पू.फा.१ में २२।४७ H (राज.), वैशाख स्नान प्रा., जैन आयंबिल ओली समा., सिद्धांचल यात्रा, चैत्री पूर्णिमा मेला मानकपुर सरीफ रोपड़

चैत्र शु. ८ चंद्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	१	०	४	१	२	०	६	१०	९	७
१४	१४	११	३	१७	०	१२	१९	१९	१०	२०	२८
४३	४८	०	२६	२	३८	४७	७	७	५१	४९	१९
३३	५	२०	३८	१३	४६	३६	५४	५४	२	४१	४०
५९	७२१	३८	५८	६	५१	२	३	३	२	१	०
१८	५९	२३	१२	९	८	२३	११	११	५९	३०	१०
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
उ.भा.	आर्द्रा	रोहि.	अश्वि.	पू.फा.	कृत्ति.	आर्द्रा	भरणी	स्वाति	[illegible]	श्रवण	ज्येष्ठा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कुण्डली (ता. २९ मार्च): बु. रा.१, ११ ह., मं. २ शु., १२ सू., १० ने., ९, ३ चं. श., ६, ४, ८ प्लू., ५ गु., ७ के.

चान्द संवत्सर का प्रारम्भ रविवार से हो रहा है तदनुसार वर्ष का राजा भी सूर्य है जिसको शास्त्रों में वायु की अधिकता के साथ उपज की न्यूनता लिखा है। यथा— **चैत्र शुक्ले प्रतिपदि रवेर्वायु विशेषत:। अल्प वर्षा फलं तुच्छमल्पं धान्यं प्रजायते॥** गुरु का सूर्य से षडाष्टक एवं मंगल से केन्द्र योग राजनीतिज्ञों के लिए कष्टकारक एवं शासकों में आपसी तनाव होकर अनेक परिवर्तनकारी फलप्रद है। पाश्चात्य राष्ट्रों में कहीं ग्रह कलह बढ़कर जनधन की हानिप्रद है। शनि का मंगल से द्विर्द्वादश एवं प्लूटो से षडाष्टक योग प्राकृतिक आपदाएं बनकर फसलों की हानिप्रद है। देश के अनेक भागों में सत्ता परिवर्तनकारी आन्दोलन, हड़ताल और उपद्रवी घटनाओं का प्रचार प्रसार होगा। पूर्णिमा सोमवारी शुभ फलप्रद रहकर जन भय में कमी कारक फलप्रद है। यथा— **चैत्र पूर्णिमा होय जो सोम बुद्ध गुरुवार। घर घर होय बधावणा, घर घर मंगलाचार॥** नववर्ष में मांगलिक व उत्सव आयोजनों की विशेषता रहेगी। **तेजी मन्दी विचार**— सोमवार द्वितीया को मु. ३० चन्द्रदर्शन गेहूं, चावल, मूंग, मोठ आदि धान्यों में मन्दी कारक है। मेषे बुध व रोहिण्यां मंगल से सरसों, तुरई, चना, अलसी व अरण्डादि तेलों में घटाबढ़ी व अस्थिरता रहेगी। सूत, कपास, सोना, चांदी, ताम्बा आदि धातुओं में तेजी रहेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थों में मासान्त में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण**— पक्ष में रोहिणी पंचमी, आर्द्रा सप्तमी व नवमी पुष्य योग से देश के अनेक भागों में वर्षा होगी। सुदूर पूर्वी प्रान्तों आसाम, मेघालय, अरुणाचल एवं समुद्रतटीय क्षेत्रों कर्णाटक, बंगाल की खाड़ी, महाराष्ट्रादि प्रदेशों में वायु वेग तेज के साथ ओला वर्षा होगी। [illegible] वर्षा होगी। **शकुन विचार**— चैत्र सुदी १३ को तेज वायु आगे वर्षा की कमी कारक होता है। यथा— **चैत्र सुदी की त्रयोदशी, धूल उड़े दरम्यान। आगे वर्षा हो नहीं ऐसा रम लो जान॥** [illegible]

कुण्डली (ता. ५ अप्रैल): बु. रा.१, ११ ह., मं. २ शु., १२ सू., १० ने., ९, ३ श., ६ चं., ४, ८ प्लू., ५ गु., ७ के.

ता. ५ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ चंद्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	१	०	४	१	२	०	६	१०	९	७
२१	१५	१५	७	१६	७	१३	१८	१८	११	२०	२८
३७	३०	२८	४८	२१	२२	६	४५	४५	११	५९	१७
४८	५२	५४	५८	५९	३७	२९	३९	३९	२५	४१	५१
५९	८४७	३८	९	५	५५	३	३	३	२	१	०
२	१७	१९	१८	११	३७	५	११	११	४८	१९	२३
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
रेवती	हस्त	रोहि.	अश्वि.	पू.फा.	कृत्ति.	आर्द्रा	भरणी	स्वाति	[illegible]	श्रवण	ज्येष्ठा

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ६ से १९ अप्रैल सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३० चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

ग. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त स्टैं.टा. उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रान्ति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१७	१	मं	१९	५४	१४	४	चि	२६	५५	१६	५३	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	११	५४	१४	४	३१	२४	६	७	१८	४१	२४	१५	6	तुला	११	२२	३६	५०	५९/०	१९	५०	६	३८	बुध वक्री २५।६
१८	२	बु	२३	७	११	२१	स्वा	२१	५९	१४	५३	व	४५	८	२४	९	ग	१३	७	११	२१	३१	२९	६	६	१८	४१	२५	१६	7	तुला	११	२३	३५	५०	५६/५६	२०	५८	७	१५	भ. २१।५६ से, शुक्र रोहिणी में २६।५
१९	३	गु	६	५	८	३१	वि	१६	५२	१२	४९	सि	३६	३३	२०	४२	वि	६	५	८	३१	३१	३३	६	५	१८	४२	२६	१७	8	वृ. ७।२०	११	२४	३४	४८	५६	२२	८	७	५६	भ. ८।३१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, अनसूइया जयंती
०	४	गु	५९	३	२९	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षय: A शनि आर्द्रा ३ में ९।२२, पश्चिम में बुध अस्त ९।२५
२०	५	शु	५२	२१	२७	०	अनु	११	५०	१०	४७	व्य	२८	८	१७	१९	कौ	२५	४०	१६	२०	३१	३७	६	४	१८	४२	२७	१८	9	वृश्चिक	११	२५	३३	४४	५५	२३	१८	८	४३	गुरु तेग बहादुर ज. (प्रा.मत से), गुड फ्राईडे, व्यतिपात पुण्यम्, A
२१	६	श	४६	१०	२४	३०	ज्ये	७	९	८	५८	वरि	२०	४	१४	४	ग	११	१२	१३	४३	३१	४१	६	२	१८	४३	२८	१९	10	ध. ८।५४	११	२६	३२	३९	५३	२४	०	९	३७	भ. २४।३० से
२२	७	र	४०	३९	२२	१७	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	परि	१२	२९	११	१	वि	१३	२०	११	२१	३१	४५	६	१	१८	४३	२९	२०	11	धनु	११	२७	३१	३२	५१	२४	२५	१०	३८	भ. ११।२१ तक, शीतला पूजन ठंडा (बासी) भोजन करना B
२३	८	चं	३५	५९	२०	२६	उ.षा	५७	५	२८	५०	शि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	८	१४	९	१८	३१	४९	६	०	१८	४४	३०	२१	12	म. ११।३५	११	२८	३०	२३	४९	२५	२५	११	४३	कालाष्टमी
२४	९	मं	३२	१३	१८	५३	श्र	५५	३०	२८	११	सा	५३	४६	२७	३०	तै	४	०	७	३५	३१	५३	५	५९	१८	४५	१	२२	13	मकर	११	२९	२९	१२	४८	२६	१८	१२	४९	अश्विनी मेष में सूर्य १८।४, संक्रांति मु. ३० बैठी, वैशाखी (पंजाब)
२५	१०	बु	२९	२९	१७	४६	ध	५४	५७	२७	५७	शुभ	५९	८	२५	३७	व	०	४५	६	१६	३१	५८	५	५८	१८	४५	२	२३	14	कुं. १६।१	०	०	२८	०	४५	२७	३	१३	५४	भ. ६।१६ से १७।४६ तक, **पंचक प्रारम्भ १६।१**, C
२६	११	गु	२७	४८	१७	४	शत	५५	२८	२८	८	शु	४५	२१	२४	६	बा	२७	४८	१७	४	३२	२	५	५७	१८	४६	३	२४	15	कुंभ	०	१	२६	४५	४५	२७	४१	१४	५६	वरूथिनी एकादशी व्रत सबका, श्री वल्लभाचार्य जयंती
२७	१२	शु	२७	१४	१६	५०	पू.भा	५७	६	२८	४६	ब्र	४२	२८	२२	५५	तै	२७	१४	१६	५०	३२	६	५	५६	१८	४६	४	२५	16	मी. २२।३४	०	२	२५	३०	४२	२८	१५	१५	५६	प्रदोष व्रत C मुनी सुव्रतनाथ जन्म जैन, डा. अंबेडकर जयंती
२८	१३	श	२७	४८	१७	२	उ.भा	५९	५१	२९	५२	ऐं	४०	३०	२२	७	व	२७	४८	१७	२	३२	१०	५	५५	१८	४७	५	२६	17	मीन	०	३	२४	१२	४१	२८	४६	१६	५३	भ. १७।२ से २९।१९ तक, मृगशिरा में मंगल १२।५२, मास शिवरात्री व्रत
२९	१४	र	२९	३४	१७	४३	रे	६०	०	-	-	वै	३१	२६	२१	४१	श	२९	३४	१७	४३	३२	१४	५	५४	१८	४७	६	२७	18	मीन	०	४	२२	५३	३९	२९	१५	१७	४९	
३०	३०	चं	३२	२९	१८	५३	रे	३	४८	७	२४	वि.	३१	१७	२१	३६	च	०	५४	६	१५	३२	१८	५	५३	१८	४८	७	२८	19	मे. ७।२४	०	५	२१	३२	३६	२९	४	१८	४५	पंचक समा. ७।२४, देव पितृ कार्य अमावस्या, श्री शुकदेव D

B चाहिए, अर्जुन देव जन्म (प्रा. मत से), इस्टर संडे, चेहल्लम शहीद करबला मु. D जयंती, मेला पिंजोर (हरियाणा), सोमवती अमावस्या, सायन वृष में सूर्य २३।२६, सहादते ईमाम हसन (मु.)

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

वैशाख कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	१	०	४	१	२	०	६	१०	९	७
२८	२६	१९	६	१५	१३	१३	१८	१८	११	२१	२८
३०	२६	५६	३९	४८	३९	३०	२३	२३	३०	८	१४
२३	१३	५९	९	५७	११	१०	२४	२४	२३	१९	३१
५८	७३४	३८	३१	४	५१	३	३	३	२	१	०
४९	४४	१६	५५	५	११	४६	११	११	३६	७	३६
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. १२ अप्रैल): बु. रा. १ ; ११ ह. ; मं. शु. २ ; १२ सू. ; ९ चं. ; १० ने. ; ३ श. ; ६ ; ४ ; ८ प्लू. ; ५ गु. ; ७ के.

मास में पांच मंगलवार व मंगलवारी संक्रान्ति से पक्ष में तस्करों, आतंकवादी शक्तियों तथा चोरों के द्वारा अनेक उपद्रव होंगे। अफ्रीका, द. अमेरिका, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका आदि दक्षिणी राष्ट्रों में राजनैतिक गतिविधियां बढ़कर जनाक्रोश बढ़ेगा। कहीं किसी शासक का निधन अथवा पद त्याग होगा। यथा—**यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्॥** रवि राहु का योग अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र मंत्रीमण्डल में तनाव, पद परिवर्तन तथा दल बदलू नीति का दुष्प्रभाव बढ़ेगा। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब व राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्रों पर सैन्य संघर्ष बढ़ेगा। यथा—मेषे च **जायते भानुर्वृषे भूमि सुतः स्थितः। नृपतेश्च भवेद् व्याधिर्लोकानां च महद् भयम्॥** विपक्षी दलों के आरोप, प्रत्यारोप का जनता पर विशेष प्रभाव बढ़ेगा। जिससे जनता में आक्रोश की वृद्धि रहेगी। **तेजी मन्दी विचार**— मंगल को मासारम्भ तथा मंगलवारी संक्रान्ति मु. ३० ताम्बा, लाल रंग की वस्तुएं, चन्दन तथा रसायनिक पदार्थों, वेजीटेबल, प्लास्टिक आदि वस्तुओं में तेजी फलकारक है। चीनी, शक्कर, गुड़ आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहेगी। सोमवती अमावस्या रूई, घी, धान्य भावों, चावल, चना, गेहूं, मूंग, मोंठ में मन्दी फलप्रद है। मृगे मंगल से भावों में क्षणिक तेजी योग है। **आकाश लक्षण**— दक्षिणी प्रदेशों तमिलनाडू, कर्णाटका, आन्ध्रप्रदेश, पं. बंगाल व महाराष्ट्र, उड़ीसा के कई स्थानों पर सामान्य से अच्छी वर्षा होगी। पश्चिमी प्रान्तों गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली प्रदेश आदि में गर्म हवाओं के बाद खण्ड वर्षा होने के योग हैं। **शकुन विचार**— वैशाख बदी १ व ९ तिथि के दिन शिखरदार बादल आकाश में दिखाई देवें तो वर्षा काल में श्रेष्ठ वर्षा होकर धान्य भावों में मन्दी का संचार रहे। यथा—**वैशाख बदी प्रतिपदा, नवमी निरति जोय। जो घन दीखै उनमना, वर्षे सगला लोय॥** वैशाखी अमावस्या को रेवती नक्षत्र होना सुभिक्षकारक है।

ता. १९ अप्रैल ❖ वैशाख कृ. ३० चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १९ अप्रैल): २ शु. मं. ; १ ; १२ चं. ; श. ३ ; सू. रा. बु. ; १० ने. ; ११ ह. ; ४ ; ७ के. ; गु. ५ ; ९ ; ६ ; ८ प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	११	१	०	४	१	२	०	६	१०	९	७
५	२८	२४	२	१५	१९	१३	१८	१८	११	२१	२८
२१	५९	२४	२	२३	२१	५८	१	१	४७	१५	९
३२	५९	४३	३०	५९	२७	२५	९	९	४७	३१	४२
५८	७४०	३८	४२	२	४५	४	३	३	२	०	०
३६	०२	१३	१४	५२	३३	२३	११	११	२१	५५	४८
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वैशाख शुक्ल पक्ष-3

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २० अप्रैल से ४ मई सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति ३१ चैत्र से १४ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	संदर्भ
३१	१	मं	३६	३३	२०	२९	अ	८	५०	९	२४	प्री	४०	०	२१	५२	कि	४	२४	७	३८	३२	२२	५	५२	१८	४९	८	२९	20	मेष	०	६	२०	८	५८	६	१४	१९	४१	देवदामोदर पुण्यम् C अगस्तास्त १५।२६
वै१	२	बु	४१	३७	२२	३०	भ	२४	५३	११	४८	आ	४१	२९	२२	२७	बा	८	५८	९	२७	३२	२५	५	५१	१८	४९	९	३०	21	वृष १८।२८	०	७	१८	४३	३३	६	४६	२०	३७	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, राष्ट्रीय वैशाखारंभ, ग्रीष्म ऋतु प्रा.
२	३	गु	४७	२९	२४	४९	कृ	२१	४८	१४	३३	सौ	४३	३५	२३	१६	तै	१४	२९	११	३८	३२	२९	५	५०	१८	५०	१०	[illegible]	22	वृष	०	८	१७	१६	३१	७	२१	२१	३३	रवि-उल-अव्वल मु. मा.३ प्रा. वक्री बुध रेवती मीन में ६।२४, A
३	४	शु	५३	४२	२७	२१	रो	२९	१९	१७	३३	शो	४६	३	२४	१५	व	२०	३७	१४	४	३२	३३	५	४९	१८	५०	११	२	23	वृष	०	९	१५	४७	२९	८	१	२२	२१	भ. १४।४ से २७।२१ तक, विनायक ४ व्रत
४	५	श	६०	०	-	-	मृग	३७	२	२०	३७	अति	४८	३७	२५	१५	ब	२७	३	१६	३७	३२	३७	५	४८	१८	५१	१२	३	24	मि. ७।५	०	१०	१४	१६	२७	८	४५	२३	२३	शुक्र मृगशिरा में १७।३२, आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य ज., B
५	६	र	०	१५	५	५३	आ	४४	३२	२३	३६	सु	५०	५७	२६	१०	बा	०	१५	५	५३	३२	४१	५	४७	१८	५१	१३	४	25	मिथुन	०	११	१२	४३	२४	९	३४	२४	०	श्री रामानुजाचार्य ज., (उ.भा.), चन्दन षष्ठी (बिहार), C
६	६	चं	६	१४	८	१६	पुन	५१	१८	२६	१७	धृ	५२	३९	२६	५०	तै	६	१४	८	१६	३२	४५	५	४६	१८	५२	१४	५	26	क. ११।३१	०	१२	११	७	२३	१०	२७	२४	१४	D में ९।४९, गंगा सप्तमी ,गंगोत्पत्ति दिवस, गंगा पूजन
७	७	मं	११	१७	१०	१६	पु	५६	५१	२८	३०	शू	५३	२४	२७	७	व	११	१७	१०	१६	३२	४९	५	४५	१८	५३	१५	६	27	कर्क	०	१३	९	३०	२०	११	२३	२५	०	भ.१०।१६ से २३।४ तक, मंगल मिथुन में २४।१३, सूर्य भरणी D
८	८	बु	२४	५६	११	४३	श्ले	६०	०	-	-	गं	५२	५४	२६	५४	ब	१४	५६	११	४३	३२	५२	५	४४	१८	५३	१६	७	28	कर्क	०	१४	७	५०	१९	१२	२२	२५	४२	दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती E ता.३१ प्रा., विश्व मजदूर दिवस
९	९	गु	१६	५२	१२	२८	श्ले	०	५२	६	५	वृ	५०	५८	२६	७	कौ	१६	५२	१२	२८	३२	५६	५	४३	१८	५४	१७	८	29	सिं. ६।५	०	१५	६	९	१६	१३	२१	२६	२०	सीता नवमी, महावीर स्वामी केवल ज्ञान दिवस
१०	१०	शु	१६	५३	१२	२८	म	३	१	६	५५	ध्रु	४७	२९	२४	४२	ग	१६	५३	१२	२८	३३	०	५	४३	१८	५४	१८	९	30	सिंह	०	१६	४	२५	१४	१४	२०	२६	५४	भ. २४।९से, आखरी चाहर शम्बा, बुध मार्गी १७।५१
११	११	श	१४	५६	११	४०	पू.फा	३	१५	७	०	व्या	४२	२८	२२	४१	वि	१४	५६	११	४०	३३	३	५	४२	१८	५५	१९	१०	M1	कं. १२।५४	०	१७	२	३९	१३	१५	२१	२७	२७	भ. ११।४० तक, मोहिनी एकादशी व्रत सबका, मई मास ५ E
१२	१२	र	११	८	१०	८	उ.फा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह	३६	२	२०	६	बा	११	८	१०	८	३३	७	५	४१	१८	५६	२०	११	2	कन्या	०	१८	०	५२	१०	१६	२३	२७	५१	प्रदोष व्रत, रुकमणी द्वादशी, अशोक त्रिरात्रि व्रत प्रा.
१३	१३	चं	५	४२	७	५७	चि	५३	३६	२७	७	व	२८	२१	१७	१	तै	५	४१	७	५७	३३	१०	५	४०	१८	५६	२१	१२	3	तु. १६।७	०	१८	५९	२	८	१७	२८	२८	३२	भ. २९।१३ से, नृसिंह चतुर्दशी, छिन्नमस्ता ज., ईद-ए-मिलाद F
०	१४	चं	५८	५२	२९	१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	F (बारावफात) चतुर्दशी क्षयः
१४	१५	मं	५१	५	२६	५	स्वा	४७	५२	२४	४८	सि	१९	४१	१३	३२	वि	२५	५	१५	४२	३३	१४	५	३९	१८	५७	२२	१३	4	तुला	०	१९	५७	१०	७	१८	३६	२९	७	भ. १५।४२ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्य, बुध पूर्णिमा, G

A अक्षय तृतीया, परशुराम ज., मातंगी ज., त्रेतायुगादि कल्पादि बद्री केदारनाथ यात्रा जैन वर्षीतप तप समाप्त B श्री रामानुजाचार्य ज. (द.भा.), सूरदास ज., बाबू कुंवर सिंह जन्म दि. (बिहार), बुध पूर्व में उदय १६।२४

G वैशाख स्नान पूर्ति, पीपल पूजन, यमाय जल कुंभदान, वैशाखी पूर्णिमा, कूर्म ज., खग्रास चन्द्रग्रहण, अशोक त्रिरात्रि व्रत पूर्ति

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

वैशाख शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	२	११	४	१	२	०	६	१०	९	७
१४	१३	०	२७	१५	२५	१४	१७	१७	१२	२१	२८
७	१०	८	२३	४	३४	४०	३२	३२	७	२२	१
५०	३	२३	५६	४३	३६	५३	३२	३२	३०	३३	३३
५८	५५०	३८	९	१	३५	५	३	३	२	०	१
११	५०	८	५८	१३	४१	७	११	११	०	३७	२
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
भरणी	[illegible]	[illegible]	रेवती	[illegible]	[illegible]	[illegible]	भरणी	स्वाती	[illegible]	श्रवण	[illegible]

कुण्डली (ता. २८ अप्रैल): १ सू. रा.; २ शु.; ३ मं. श.; ४ चं.; ५ गु.; ६; ७ के.; ८ प्लू.; ९; १० ने.; ११ ह.; १२ बु.

शनि-मंगल का एक राशि पर योग शास्त्रों में महाविनाशकारी माना है। यथा—**शनि भौमो महायोगो, महीनाशाय कल्प्यते।** तथा वक्रगति से बुध मीन राशि में आने से जनता में रोगोपद्रव, नवीन महामारी का उदय तथा भीषण अग्निकाण्ड अथवा बारूद उपद्रव होकर जन धन की हानि होगी। यथा—**धने मीने बुधो याति, मारयति मृगानाजान्। राजा विरोध कृत्तत्र, चान्यथा न भविष्यति॥** ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि मुस्लिम राष्ट्रों में कट्टरवादी ताकतों के द्वारा अनेक उपद्रव व विनाशकारी घटनाओं से जन समूह में भय व्याप्त रहेगा। देश की सीमाओं पर सुरक्षा बलों की वृद्धि करके सावधानी रखना हितकर रहेगा। प्रान्तीय राजनैतिज्ञों की अनेक दोहरी चालों का केन्द्रीय शासकों पर दुष्प्रभाव बढ़ने से शासन प्रणाली में कई अवरोधक प्रश्न चिन्ह उभरेंगे जिनकी जवाबदारी के लिए सत्तादल हतप्रभ रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**— बुधवार द्वितीया को चन्द्रदर्शन मु. ३० सभी किराणा सामान व धान्य भावों में घटाबढ़ी कारक है। चना, गेहूं, जौ, ज्वार, मूंग, मोंठ, बाजरा, गुवार आदि में घटाबढ़ी होकर मन्दे का रुख रहेगा। शु. ७ बाद मसाले की वस्तुओं व चना सरसों एवं सभी तेलों में झटके की तेजी रहेगी। बुध मार्गी शु. १० से चावल, चना, सरसों, जौ व मक्का में तेजी होगी। **आकाश लक्षण**— पक्ष में गर्मी का प्रकोप, तेज गर्मवायु व चक्रवात एवं आंधियां चलेंगी। गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश, दिल्ली में गर्म लू चलेगी। कहीं-कहीं खण्ड वर्षा संभव है। दक्षिणी प्रान्तों में चक्रवात व तूफान रहकर तूफानी वर्षा होगी। जिससे जन धन की हानि होगी। **शकुन विचार**— अक्षय तृतीया के दिन पूर्वी हवा चले तो श्रावण भाद्रपद मास में वर्षा श्रेष्ठ हो किन्तु जनता में रोगोपद्रव बढ़ता है। यथा—आखा तीजां पूर्व बाजे। तो आश्लेषा गहरी गाजे॥ भींजे राजाराणी भूले। रोग दोष में प्रजा झूले॥ वैशाख शु. १, २, ३, ७, ८, ९, १४ को वायुवेग से वर्षा व गर्जना खरीफ फसल हेतु शुभ होती है।

ता. ४ मई ❖ वैशाख शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ४ मई): १ सू. रा.; २ शु.; ३ मं. श.; ४; ५ गु.; ६; ७ चं.; ८ प्लू.; ९; १० ने.; ११ ह.; १२ बु.; के.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	२	११	४	१	२	०	६	१०	९	७
१९	८	३	२७	१५	२८	१५	१७	१७	१२	२१	२०
५७	६	५७	४०	०	४७	१२	१३	१३	१८	२५	५५
१०	३०	२	४३	१	४५	४१	२७	२७	५१	४७	०
५८	८०३	३८	१८	०	२६	५	३	३	१	०	१
७	५	४	३८	७	५६	३३	११	११	४५	२५	१०
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
भरणी	स्वाति	[illegible]	रेवती	[illegible]	[illegible]	आर्द्रा	भरणी	स्वाति	[illegible]	श्रवण	[illegible]

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ५ मई से १९ मई सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २९ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि
१५	१	बु	४२	४०	२२	४२	वि	४१	२९	२२	१४	व्य	१०	१९	९	४६	बा	१६	५६	१२	२५
१६	२	गु	३४	०	१९	१४	अनु	३४	५१	१९	३४	वरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	८	२१	८	५८
१७	३	शु	२५	२९	१५	४८	ज्ये	२८	२२	१६	५८	शि	४१	०	२२	१	वि	२५	२९	१५	४८
१८	४	श	१७	२७	१२	३५	मू	२२	२४	१४	३४	सि	३१	५१	१८	२१	बा	१७	२७	१२	३५
१९	५	र	१०	२५	९	४२	पूषा	१७	१७	१२	३०	सा	२३	२७	१४	५९	तै	१०	२५	९	४२
२०	६	चं	४	९	७	१५	उषा	२३	११	१०	५५	शुभ	१६	२	१२	०	व	४	९	७	१५
०	७	चं	५९	२२	२९	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२१	८	मं	५६	६	२८	१	श्र	१०	४४	९	५२	शु	९	४५	९	२८	बा	२७	३३	१६	३६
२२	९	बु	५४	२४	२७	१९	ध	९	३८	९	२५	ब्र	४	४१	७	२५	तै	२५	४	१५	३५
२३	१०	गु	५४	१६	२७	१५	शत	१०	६	९	३५	ऐं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	२४	९	१५	१३
२४	११	शु	५५	३५	२७	४६	पूभा	१२	४	१०	२२	वि	५६	५०	२८	१६	ब	२४	४५	१५	२७
२५	१२	श	५८	१३	२८	४९	उभा	१५	२५	११	४२	प्री	५६	२६	२८	६	कौ	२६	४५	१६	१४
२६	१३	र	६०	०	-	-	रे	२०	१	१३	३२	आ	५६	५६	२८	१८	ग	२९	५९	१७	३१
२७	१३	चं	२	२	६	१९	अ	२५	३९	१५	४६	सौ	५८	१०	२८	४७	व	२	२	६	१९
२८	१४	मं	६	४६	८	१३	भ	३२	८	१८	२१	शो	६०	०	-	-	श	६	४६	८	१३
२९	३०	बु	१२	१५	१०	२४	कृ	२९	१५	२१	१२	शो	०	१	५	३०	ना	१२	१५	१०	२४

ता. मि.	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा	अं	क	वि	[illegible]	चन्द्र उदय घं	मि	चन्द्र अस्त घं	मि	संदर्भ
१५	३३	१७	५	३९	१८	५७	२३	१४	5	वृ. १६।५४	०	२०	५५	१७	[illegible]	११	४७	५	४७	ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा., व्यतिपात पुण्यम्, गुरु मार्गी १८।२३
१६	३३	२१	५	३८	१८	५८	२४	१५	6	वृश्चिक	०	२१	५३	२२	३	२१	०	६	३२	भ. २९।३० से, शुक्र मिथुन में २५।४९, नारद ज., वीणादि वाद्य A
१७	३३	२४	५	३७	१८	५९	२५	१६	7	ध. १६।५८	०	२२	५१	२५	२	२२	११	७	२५	भ. १५।४८ तक, कृष्णा चतुर्थी व्रत, मां आनंदमयी जयंती, B
१८	३३	२७	५	३६	१८	५९	२६	१७	8	धनु	०	२३	४९	२७	१	२३	१६	८	२६	आर्द्रा में मंगल १२।१७
१९	३३	३१	५	३६	१९	०	२७	१८	9	म. १८।४	०	२४	४७	२८	[illegible]	२४	०	९	३२	अश्विनी मेष में बुध ७।२४
२०	३३	३४	५	३५	१९	१	२८	१९	10	मकर	०	२५	४५	२७	५८	२४	१४	१०	४०	भ. ७।१५ से १८।१३ तक, सूर्य कृतिका में २८।५
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षयः
२१	३३	३७	५	३४	१९	१	२९	२०	11	कुं. २१।३४	०	२६	४३	२५	५७	२५	२	११	४७	पंचक प्रारंभ २१।३४ से, कालाष्टमी, दादूदयाल पुण्य, मेला C
२२	३३	४०	५	३४	१९	२	३०	२१	12	कुम्भ	०	२७	४१	२२	५५	२५	४३	१२	५०	
२३	३३	४३	५	३३	१९	२	३१	२२	13	मी. २८।७	०	२८	३९	१७	५४	२६	१८	१३	५१	भ. १५।१३ से २७।१५ तक
२४	३३	४६	५	३२	१९	३	ज्ये.१	२३	14	मीन	०	२९	३७	११	५३	२६	४९	१४	४८	वृष में सूर्य १४।५७, संक्रांति मु. ४५ बैठी, अपरा एका. व्रत D
२५	३३	४९	५	३२	१९	४	२	२४	15	मीन	१	०	३५	४	५२	२७	१८	१५	४४	मधुसूदन द्वादशी, अनन्त नाथ जन्म-तप
२६	३३	५२	५	३१	१९	४	३	२५	16	मे. १३।३२	१	१	३२	५६	५०	२७	४७	१६	३९	पंचक समाप्ति १३।३२, प्रदोष व्रत
२७	३३	५५	५	३१	१९	५	४	२६	17	मेष	१	२	३०	४६	४९	२८	१६	१७	३४	भ. ६।१९ से १९।१४ तक, मास शिवरात्री व्रत, वट सावित्री E
२८	३३	५८	५	३०	१९	५	५	२७	18	वृ. २५।३	१	३	२८	३५	४८	२८	४७	१८	२९	पितृकार्य अमावस्या, शनि आर्द्रा ४ में १९।३७
२९	३४	१	५	३०	१९	६	६	२८	19	वृष	१	४	२६	२३	४६	२९	२१	१९	२६	देव कार्य अमावस्या, भावुका ३०, शनि जयंती, वट सावित्री व्रत पूर्ति

A यंत्र दान दिवस B रविन्द्र नाथ टैगोर ज. C चानाणि माता D मबका, भरणी १ में राहु, स्वाती ३ में केतु १८।० E व्रतारंभ, शुक्र वक्री २७।४०

ज्येष्ठ कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	१	२	०	४	२	२	०	६	१०	९	७
२६	२०	८	१	१५	१	१५	१६	१६	१२	२१	२७
४३	४८	२३	११	३	१९	५२	५१	५१	३०	२८	४६
३५	३१	१८	४१	९	२७	५५	११	११	१०	४	२३
५७	८१८	३८	६६	१	१४	६	३	३	१	०	१
५७	५९	१	४९	९	०८	१	११	११	२६	१२	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कुण्डली (ता. ११ मई): २ श. शु. ३ मं. | १ सू. बु. रा. | १२ | ११ ह | १० चं. ने. | ४ | गु. ५ | ६ | ७ के. | ८ प्लू. | ९

ता. १९ मई ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १९ मई): श. मं. शु. ३ | २ सू. चं. | बु. रा. १ | १२ | ११ ह. | ४ | ५ गु. | ६ | ७ के. | ८ प्लू. | ९ | १० ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	२	०	४	२	२	०	६	१०	९	७
४	२	१३	९	१५	२	१६	१६	१६	१२	२१	२७
२६	१२	२७	४	१७	१२	४२	२५	२५	४०	२८	३५
२३	२	१२	५१	२२	५	३९	४५	४५	२४	४३	२८
५७	७१३	३७	७१	२	३	६	३	३	१	०	१
४६	२८	५७	३१	३४	४३	२८	११	११	४	०४	२७
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शनि, मंगल, शुक्र का मिथुन राशि में योग विश्व में बारूद व अग्नि से जन-धन हानिप्रद तथा कहीं किसी शासक से बलात् सत्ता हथियाने का योगप्रद है। यथा— **भार्गवो भौम सौरी च, मिथुनस्थं यदा त्रय। दुर्भिक्षं राज्य भंगश्च मेदिन्यामग्नि तो भयम्॥** चीन, जापान, बर्मा, तिब्बत आदि राष्ट्रों में प्राकृतिक विपत्तियां बढ़कर हानि होगी। सप्तमी तिथि का क्षय सत्ताधारी दल में अनेक विघटनकारी है। कुछ पद लोलुप नेताओं द्वारा जनता में रोष पैदा करवाकर शासकीय विकास कामों में अवरोध कराये जाने के षडयंत्र पैदा किये जायेंगे। जिससे पूर्वी प्रान्तों व मध्य देश के कई भागों में कर्मचारियों व उद्योगपतियों के माध्यम से आन्दोलन, हड़ताल एवं उपद्रव होंगे। बुधवारी अमावस्या व कृत्तिका नक्षत्र संयोग शासकों के हित में शांतिप्रद रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**— कृष्णा तिथि क्षय व वृद्धि संयोग से व्यापारिक वस्तुओं में तूफानी उतार-चढ़ाव रहेगा। नशीले पदार्थों, तम्बाकू आदि एवं मशीनरी सामान में विशेष तेजी रहेगा। मिथुने शुक्र से चना, चावल, गेहूं, जौ, मोंठ, मूंग आदि धान्य भावों में तेजी का प्रभाव रहेगा। यथा— **मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यव गोधूम चणका: शालिश्चैव विशेषत:॥** पक्षान्त में गुड़, चीनी, शक्कर व मूंगफली, अरण्ड व सोयाबीन के तेलों में तेजी रहेगी। सोना, लोहा, ताम्बा, पीतल, तेज किन्तु चांदी में मन्दी रहेगी। **आकाश लक्षण**— मंगल शनि का योग पक्ष में गर्म हवाओं व तापमान में विशेष तेजी कारक है। गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व हिमाचल प्रदेश में तूफानी आंधियों का जोर रह कर कहीं-कहीं छुटपुट वर्षाल्पता रहेगी। बंगाल, आसाम व दक्षिणी प्रान्तों में वायुवेग से अनेक हानियां होने के योग हैं। समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों पर वायु लहर के साथ वर्षा होगी। **शकुन विचार**— जेठ बदी में श्रवण धनिष्ठा नक्षत्र में यदि बादल गर्जे व बिजुली चमके तो वर्षा में आगे उत्तम वर्षा होगी। यथा— **ज्येष्ठे च मासे बहुले च पक्षे नक्षत्र युग्मं श्रवणं धनिष्ठा। यावद् घटी गर्जति विद्युदभ्रं तावच्छुभं वर्षति गर्गभाषितम्॥** जेठ बदी ५ को दक्षिणी हवाएं चलें तो घी तेलों में आगे तेजी का दौर चलेगा।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २० मई से ३ जून सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति ३० वैशाख से १३ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
३०	१	गु	१८	१५	१२	४७	रो	४६	४७	२४	१२	अति	२	२७	६	२४	ब	१८	१५	१२	४७	३४	३	५	२९	१९	७	७	२९	20	वृष	१	५	२४	९	५९	५	५१	२०	२२	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश २१।५४ A
३१	२	शु	२४	३२	२५	१८	मृ	५४	२९	२७	१६	सु	४	४९	७	२४	कौ	२४	३२	१५	१८	३४	६	५	२९	१९	७	८	१	21	मि. १३।४४	१	६	२१	५४	४३	६	४१	२१	१७	रवि उल्ल आखिर मु. मा. ४ प्रा., रम्भा व्रत
ज्येष्ठ	३	श	३०	४९	१७	४८	आ	६०	०	-	-	धृ	७	२५	८	२६	ग	३०	४९	१७	४८	३४	८	५	२८	१९	८	९	२	22	मिथुन	१	७	१९	३७	४२	७	२१	२२	९	बुध भरणी में १५।२५, प्रताप ज., मेला हल्दी घाटी (राज.) B
२	४	र	३६	४८	२०	११	आ	२	४	६	१७	शू	९	५२	९	२५	व	३	५३	८	०	३४	११	५	२८	१९	८	१०	३	23	क. २६।२७	१	८	१७	१९	४१	८	२१	२२	५७	भ. ८।० से २०।११ तक, विनायक चतुर्थी व्रत, C
३	५	चं	४२	६	२२	१८	पुन	९	१०	९	८	गं	११	५६	१०	१४	ब	९	३४	९	१७	३४	१३	५	२७	१९	९	११	४	24	कर्क	१	९	१५	०	३९	९	१६	२३	४०	सूर्य रोहिणी में २४।१४, श्रुति पंचमी जैन
४	६	मं	४६	२३	२४	०	पु	१५	२९	११	३९	वृ	१३	२१	१०	४७	कौ	१४	२४	११	१३	३४	१६	५	२७	१९	९	१२	५	25	कर्क	१	१०	१२	३९	३७	१०	१२	२४	०	अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल), जामित्री ६, विंध्यवासिनी पूजन
५	७	बु	४९	२६	२५	९	श्ले	२०	३६	१३	४१	ध्रु	१३	५०	१०	५९	ग	१८	१	१२	३९	३४	१८	५	२६	१९	१०	१३	६	26	सिं. १३।४१	१	११	१०	१६	३६	११	१०	२४	१८	भ. २५।९ से
६	८	गु	५०	२८	२५	३८	म	२४	१२	१५	७	व्या	१३	८	१०	४१	वि	२०	५	१३	२९	३४	२०	५	२६	१९	१०	१४	७	27	सिंह	१	१२	७	५२	३५	१२	७	२४	५३	भ. १३।२९ तक, दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, जवाहर लाल D
७	९	शु	४९	४८	२५	२१	पूफा	२६	४	१५	५२	ह	११	३	९	५१	बा	२०	२२	१३	३५	३४	२२	५	२६	१९	११	१५	८	28	कं. २१।५६	१	१३	५	२७	३३	१३	६	२५	२५	महेश नवमी, (माहेश्वरी जाति पर्व), वक्री शुक्र वृष में १८।२२
८	१०	श	४७	१३	२४	२९	उफा	२६	३	१५	५१	व	७	२८	८	२५	तै	१८	४५	१२	५६	३४	२४	५	२६	१९	१२	१६	९	29	कन्या	१	१४	३	०	३२	१४	५	२५	५६	पुन. में मंगल १४।८, गंगा दशहरा, रामेश्वर यात्रा, मेला हरिद्वार, E
९	११	र	४२	४६	२२	३२	ह	२४	८	१५	५	सि	२ ५५	११ ४७	५ २०	२० ४३	व	१५	१३	११	३१	३४	२६	५	२६	१९	१२	१७	१०	30	तु. २६।२६	१	१५	०	३२	३०	१५	७	२६	२७	भ. ११।३१ से २२।३२ तक, निर्जला एकादशी व्रत सबका, F
१०	१२	चं	३६	३८	२०	५	चि	२०	२९	१३	३७	वरि	४७	४७	२४	३२	ब	९	५४	९	२३	३४	२८	५	२५	१९	१३	१८	११	31	तुला	१	१५	५८	२	३०	१६	१२	२७	०	बुध कृतिका में १२।३, चंपक द्वादशी, फातिहा यजदहूम (मु.)
११	१३	मं	२९	४	१७	३	स्वा	१५	१९	११	३३	परि	३८	४२	२०	५४	कौ	३	१	६	३७	३४	३०	५	२५	१९	१३	१९	१२	J1	वृ. २७।४०	१	१६	५५	३२	२७	१७	२१	२७	३७	भौम प्रदोष व्रत, जून मास ६ ता. ३० प्रा., वट सावित्री व्रत प्रा. G
१२	१४	बु	२०	२६	१३	३५	वि	८	५७	९	०	शि	२८	४७	१६	५६	व	२०	२६	१३	३५	३४	३२	५	२५	१९	१४	२०	१३	2	वृश्चिक	१	१७	५२	५९	२७	१८	३३	२८	१९	भ. १३।३५ से २३।४५ तक, बुध वृष में १०।२८, चंपक १४ (बं.)
१३	१५	गु	११	६	९	५१	अनु	१ ५४	४० १८	५ २०	८	सि	१८	२०	१२	४५	ब	११	६	९	५१	३४	३३	५	२५	१९	१४	२१	१४	3	ध. २७।८	१	१८	५०	२६	२६	११	४७	२९	९	सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्यम्, कबीर जयंती, ज्येष्ठी पूर्णिमा, H

पश्चिमास्तम् शुक्रः ३ जून

A करिदिनं, करवीर व्रत, गंगा दशाश्वमेध स्नान प्रा., नेपच्यून वक्री ७।१५ B रा. ज्येष्ठारंभ C गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस (प्रा. मत से) D नेहरू पुण्यम् E गंगा दशाश्वमेध स्नान पूर्ति, रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस F गायत्री ज., मेला बहिरे भटिण्डा, व्यतिपात पुण्यम् ६।२२ से G (गुजरात) H कोजागरी व्रत, मन्वादि १५, वट सावित्री व्रत पूर्ति (गुजरात), ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ति जैन, शुक्र पश्चिम में अस्त ११।५२

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ज्येष्ठ शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	२	०	४	२	२	०	६	१०	९	७
१२	८	१८	१९	१५	०	१७	१६	१६	१२	२१	२७
७	१४	३०	५०	४२	३४	३५	०	०	४७	२७	२३
५२	०	४१	२	४३	५६	५०	१९	१९	३७	१६	३८
५७	७८७	३७	२१	३	२२	६	३	३	०	०	१
३५	६	५४	५८	५५	४४	५१	११	११	४१	११	३१
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	पू.फा.	मृग	आर्द्रा	भरणी	स्वाति	[illegible]	श्रवण	हि.

कुण्डली (ता. २७ मई): सं.शु.श. ३ | १बु.रा. | ४ | २ सू. | १२ | १ ह. | ५ चं. गु. | ८ प्लू. | ने. | ६ | १० | ७ के. | ९

मास में पांच बुध व पांच गुरुवार होना मध्यम फलकारी है। सूर्य गुरु का केन्द्र योग तथा शुक्ला दशमी के दिन शनिवार होना जनता में रोग-महामारी का भय, पशुओं का विनाश एवं प्राकृतिक विपत्तियां बढ़ती हैं। वर्षा में अवरोध रहता है। यथा—**ज्येष्ठे शुक्ले दशम्यां च शनिवारः प्रजायते। वृष्टिरोधो गवां नाशो महाशोकाकुलाः प्रजा॥** पश्चिमी राष्ट्रों में गृह क्लेश एवं रोगोत्पात से जनता में भय रहेगा। अमेरिका, ब्रिटेन तथा उत्तरी यूरोप, तुर्कीस्तान, इराक व रूस आदि राष्ट्रों में जन विग्रह एवं सैन्य संघर्षकारी योग है। देश के उत्तरी पश्चिमी सीमा क्षेत्रों पर युद्धोन्माद बढ़ेगा। सत्तादल में अशान्ति रहकर विपक्षी दलों में सबलता का रुख बनेगा। पूर्वी प्रान्तों में आतंकवादी ताकतों की कुचेष्टा से प्रजा में भय वृद्धि रहेगी। तेजी मन्दी विचार—गुरुवार प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन मु. ४५ से रुई, सूती वस्त्र, चान्दी, चीनी, चावल, शक्कर आदि वस्तुओं में उतार-चढ़ाव होकर मन्दी का रुख बनेगा। शु. ५ रोहिणी रवि से चना, गेहूं, मूंग, मोंठ आदि दालवाना तथा मूंगफली, तिल, अरण्ड, सोयाबिन आदि तेलों में तेजी रहेगी। पक्ष में बारदाना, रबड़ सामान व जवाहरात सामान में मन्दी एवं लोहा, पीतल, सोना आदि धातुएं तथा मशीनी सामान, नशीले पदार्थों, औषधियों, रसायनिक वस्तुओं में तूफानी तेजी के योग हैं। आकाश लक्षण—मंगल शनि का शुक्र के आगे होना वर्षा में अवरोधक है। यथा—**शनि सौम्य कुजाश्चैव शुक्रस्याग्रे सदा यदि। तदाति वायु दुर्भिक्षं जलनाश करास्तथा॥** अतः गर्मी का प्रकोप तेज, गर्म लू, आंधियां व तूफानी हवायें तेज रहेंगी। देश के उत्तरी भागीय प्रदेश दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान हरियाणा में गर्म वायु चलेगी। पूर्वी व दक्षिणी प्रान्तों में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। पक्ष के पूर्वार्द्ध में छुटपुट छींटे पड़ने संभव हैं। शकुन विचार—ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में यदि तापमान बढ़ा हुआ रहे तो आगे श्रेष्ठ वर्षा होती है। धान्य भाव मंदे होंगे। यथा—**ज्येष्ठ मास जो तपै निराशा। तो जानों बिरखा की आशा॥** शु. ५ को दक्षिणी हवा व बादल दर्शन आगे तेजी कारक।

ता. ३ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ३ जून): मं. श. ३ | १ रा. | ४ | २सू. शु.बु. | ११ ह. | १२ | गु. ५ | ८ प्लू. | ६ | चं. | १० ने. | ७ के. | ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	२	१	४	१	२	०	६	१०	९	७
१८	१६	२२	१	१६	२७	१८	१५	१५	१२	२१	२७
५०	१४	५५	२४	१३	१४	२४	३८	३८	५१	२४	१२
२६	४८	४८	३८	३०	४९	४३	३	३	२४	२१	४८
५७	८१४	३७	१०८	५	३३	७	३	३	०	०	१
२६	२६	५१	५१	०१	५८	०९	११	११	२०	३२	३४
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
रोहि.	[illegible]	मृग.	कृति.	पू.फा.	मृग	आर्द्रा	भरणी	स्वाति	[illegible]	श्रवण	हि.

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ४ से १७ जून सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २७ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

ग.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.
१४	१	शु	१	३०	७	०	मृ	४६	५४	२४	१०	मा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	को	१	३०	७	०	३४	३५	५	२५	१९	१५	२२	१५	4
०	२	शु	५२	३	२६	१४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0
१५	३	श	४३	१२	२२	४१	पूषा	४०	३	२१	२६	शु	४७	२२	२४	२१	व	१७	३१	१२	२५	३४	३६	५	२४	१९	१५	२३	१६	5
१६	४	र	३५	२०	१९	३३	उषा	३४	११	१९	५	ब	३८	१९	२०	४४	ब	९	७	९	३	३४	३८	५	२४	१९	१५	२४	१७	6
१७	५	चं	२८	५१	१६	५७	श्र	२९	४२	१७	१७	ऐं	३०	२६	१७	३५	को	१	५५	६	१०	३४	३९	५	२४	१९	१६	२५	१८	7
१८	६	मं	२४	३	१५	१	धनि	२६	५४	१६	१०	वै	२३	५६	१४	५१	व	२४	३	१५	१	३४	४०	५	२४	१९	१६	२६	१९	8
१९	७	बु	२१	८	१३	५१	शत	२५	५८	१५	४८	वि	१८	५९	१३	०	ब	२१	८	१३	५१	३४	४१	५	२४	१९	१७	२७	२०	9
२०	८	गु	२०	१०	१३	२८	पूभा	२६	५१	१६	१२	प्री	१५	३६	११	३९	को	२०	१०	१३	२८	३४	४२	५	२४	१९	१७	२८	२१	10
२१	९	शु	२१	८	१३	५१	उभा	२९	३०	१७	२१	आ	१३	४५	१०	५४	ग	२१	८	१३	५१	३४	४३	५	२४	१९	१८	२९	२२	11
२२	१०	श	२३	४९	१४	५६	रे	३४	२३	१९	१०	सौ	१३	२६	१०	४३	वि	२३	४९	१४	५६	३४	४४	५	२४	१९	१८	३०	२३	12
२३	११	र	२७	५५	१६	३४	अ	४०	१४	२१	३०	शो	१३	५६	१०	५९	बा	२७	५५	१६	३४	३४	४५	५	२४	१९	१८	३१	२४	13
२४	१२	चं	३३	४	१८	३८	भ	४७	२	२४	१३	अति	१५	२९	११	३६	को	०	२३	५	३३	३४	४६	५	२४	१९	१९	आ	२५	14
२५	१३	मं	३८	५६	२०	५९	कृ	५४	२६	२७	११	सु	१७	३८	१२	२८	ग	५	५६	७	४७	३४	४६	५	२४	१९	१९	२	२६	15
२६	१४	बु	४५	८	२३	२८	रो	६०	०	-	-	धृ	२०	८	१३	२८	वि	१२	०	१०	१३	३४	४७	५	२५	१९	१९	३	२७	16
२७	३०	गु	५१	२५	२५	५९	रो	२	५	६	१५	शू	२२	४६	१४	३१	च	१८	१७	१२	४४	३४	४७	५	२५	१९	१९	४	२८	17

अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
4	धनु	१	१९	४७	५२	[illegible]	२०	५८	६	७	वट सावित्री व्रत पारणा, गुरु हरगोविन्द सिंह ज. (प्रा.मत से)
0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षय:
5	म. २६।४८	१	२०	४५	१७	२४	२२	२	७	१३	भ. १२।२५ से २२।४१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, विश्व A
6	मकर	१	२१	४२	४१	२४	२२	५६	८	२४	
7	कुं. २८।३८	१	२२	४०	५	२३	२३	४१	९	३४	पंचक प्रारंभ २८।३८ से, सूर्य मृगशिरा में २२।१२, रोहिणी में बुध B
8	कुंभ	१	२३	३७	२८	२२	२४	०	१०	४१	भ. १५।१ से २६।२० तक
9	कुंभ	१	२४	३४	५०	२२	२४	११	११	४४	वक्री शुक्र रोहिणी में १४।४३
10	मी. १०।२	१	२५	३२	१२	२१	२४	५२	१२	४३	कालाष्टमी, मेला भून्तर (हि.प्र.)
11	मीन	१	२६	२९	३३	२१	२५	२२	१३	४०	भ. २६।१८ से
12	मे. ११।१०	१	२७	२६	५४	२०	२५	५१	१४	३५	भ. १४।५६ तक, पंचक समा. ११।१० तक, हर्षल वक्री १३।३३
13	मेष	१	२८	२४	१४	२०	२६	२०	१५	२९	योगिनी एकादशी व्रत सबका, गोपद्म व्रतोद्यापन, पूर्व में D
14	मेष	१	२९	२१	३४	२०	२६	५०	१६	२४	मिथुन में सूर्य २१।३५, मंगल कर्क में १०।३९, मृगशिरा में E
15	वृ. ६।५७	२	०	१८	५४	१९	२७	२२	१७	२०	भ. २०।५९ से, पुनर्वसु १ में शनि २९।१०, भौम प्रदोष व्रत
16	वृष	२	१	१६	१३	१८	२७	५९	१८	१६	भ. १०।१३ तक, मास शिवरात्री व्रत
17	मि. ११।४७	२	२	१३	३१	१८	२८	३९	१९	१२	मिथुन में बुध ६।५२, देवपितृ कार्य अमावस्या

पूर्वोदयी शुक्र: १३ जून

A पर्यावरण दि., उर्स निजामुद्दीन ओलिया प्रा. B १८।५९, नाग पंचमी (बंगाल), बुध पूर्व में अस्त २३।५३, गुरु पू.फा. २ में २९।८ D शुक्र उदय १६।५२, E बुध ५।२६, संक्रांति मु. १५ वैठी

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आषाढ़ कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
१	१०	२	१	४	१	२	०	६	१०	९	७
२५	२७	२७	१४	१६	२२	१९	२५	२५	१२	२१	२०
३२	३१	२०	५४	५१	५६	१५	१५	१५	५३	१९	१
१२	३०	३७	१८	४५	५५	२६	४७	४७	४४	५८	४२
५७	[illegible]	३७	[illegible]	६	३७	७	३	३	०	०	१
२१	२७	४९	५	३	६	२३	११	११	०	४५	३६
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—

सं.श. ३ | रा. १ | ४ | २ | सू.बु. शु. | १२ | ११ ह. | चं. | गु. ५ | ८ | प्लू. | ६ | १० ने. | के. ७ | ९

मास में पांच शुक्रवार होना शुभ सूचक है किन्तु कृष्ण पक्ष में शुक्रास्तोदय मनुष्य गण में होना मुस्लिम राष्ट्रों तथा उत्तरी प्रान्तों में विग्रहकारक है। यथा—**मनुष्यगणे शुक्रास्ते वन्हिभीरोमपत्तने। देशत्रास: कौंकणे च लाटे सिंधोश्च शून्यता॥ तथा मनुष्य गणभे शुक्रोदये सौराष्ट्र विग्रहे:॥** अत: काश्मीर से गुजरात तक की पश्चिमी सीमाओं पर विग्रहकारक वातावरण रहेगा। पाकिस्तान, ईरान, ईराक आदि अरब राष्ट्रों में आतंकवादी घटनाओं से जनता में भय व क्षोभ रहेगा। पक्षान्त में नीच राशि पर मंगल का भ्रमण होना देश की शासकीय नीतियों में परिवर्तन होकर कठोर नियमादि का विधान बनेगा। जिससे उग्रवादी शक्तियों, तस्करों तथा विग्रहकारी ताकतों पर विशेष प्रभाव बढ़ेगा। **तेजी मन्दी विचार**—पक्ष में शुक्रास्त से धान्य भावों गेहूं, चना, चावल, गुवार, मोंठ, मूंग, जौ व रस पदार्थों, चीनी, शक्कर, गुड़ में मन्दी रहेगी। सूती वस्त्र, रुई, बारदाना, प्लास्टिक सामानादि में घटाबढ़ी रह कर तेजी होगी। कृ. ११ बाद सोना, चान्दी, गेहूं, बाजरा, मूंग, मोंठ, चना आदि धान्यों में झटके की तेजी के योग हैं। गुरुवारी अमावस्या पीली वस्तुएं घी, व वनस्पति तेलों में मन्दी फलकारक है। **आकाश लक्षण**—मंगल शनि व बुध शुक्र के आगे रहने से पक्ष में वर्षा की कमी रहेगी। यथा—**कुजश्चरविजश्चैव शुक्रस्याग्रे सदा यदि। शुन्द्रोऽति वायु दुर्भिक्षं जलनाश करस्तथा॥** अत: गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश में वर्षा की न्यूनता तथा गर्मी की उमस विशेष रहेगी। कर्णाटका, तमिलनाडु, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड आदि प्रान्तों में वर्षा होगी। महाराष्ट्र, आन्ध्रा व मध्य प्रदेश में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा संभव। **शकुन विचार**— आषाढ़ बदी ८ व ९ को बादल दर्शन व आकाश में बिजुली चमके तो सुभिक्षकारक फल होता है। यथा—**आषाढ़ बदि नव अष्टमी मेघावृत हो चन्द। वर्षा अच्छी होयगी मिटे सभी दु:ख द्वन्द॥** आषाढ़ बदी एकम् को मेघ गर्जे या बिजुली चमके तो आगे वर्षा ना होवे।

ता. १७ जून ❖ आषाढ़ कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

मं. ४ | चं.बु.शु. २ | गु. ५ | ३ | सू. श. | १२ | १ रा. | ६ | ९ | के. ७ | ११ ह. | ८ प्लू. | १० ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
२	१	३	१	४	१	२	०	६	१०	९	७
२	२२	१	२९	१७	१८	२०	१४	१४	१२	२१	२६
१३	५७	४५	५२	३७	५८	७	५३	५३	५१	१४	५०
३१	७	११	२८	०	२७	३८	३२	३२	५०	१०	३४
[illegible]	[illegible]	३७	[illegible]	७	२८	७	३	३	०	०	१
१८	१५	४८	४६	०	१५	३४	११	११	२०	५६	३५
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. १८ जून से २ जुलाई सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २८ ज्येष्ठ से ११ आषाढ़ तक। रवि उत्तरायने-दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण	घ	प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	सूर्योदय घं	सूर्योदय मि	सूर्यास्त घं	सूर्यास्त मि	दिनांक प्र.	दिनांक मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं	चन्द्रोदय मि	चन्द्रास्त घं	चन्द्रास्त मि
२८	१	शु	५७	३०	२८	२५	मृ	९	५५	९	१९	ग	२५	२०	१५	४३	कि	२४	२९	१५	१३	३४	४७	५	२५	१९	२०	५	२९	18	मिथुन	२	३	१०	४९	[illegible]	५	२५	२०	५
२९	२	श	६०	०	-	-	आ	१७	१०	१२	१७	वृ	२७	४१	१६	२९	बा	३०	२४	१७	३५	३४	४७	५	२५	१९	२०	६	३०	19	मिथुन	२	४	८	७	१६	६	१६	२०	५४
३०	२	र	३	११	६	४२	पुन	२४	१०	१५	५	ध्रु	२९	४०	१७	१७	कौ	३	११	६	४२	३४	४८	५	२५	१९	२०	७	अ.	20	क. ८।२५	२	५	५	२३	१७	७	१०	२१	३९
३१	३	चं	८	२८	८	४५	पु	३०	३३	१७	३८	व्या	३१	८	१७	५३	ग	८	२८	८	४५	३४	४८	५	२५	१९	२०	८	२	21	कर्क	२	६	२	४०	१६	८	७	२२	१९
आ१	४	मं	१२	३७	१०	२८	श्ले	३६	४	१९	५७	ह	३१	५६	१८	१२	वि	१२	३७	१०	२८	३४	४८	५	२६	१९	२१	९	३	22	सि. ११।५१	२	६	५९	५६	१५	९	४	२२	५४
२	५	बु	१५	५४	११	४७	म	४४	३०	२१	३८	व	३१	५३	१८	११	बा	१५	५४	११	४७	३४	४७	५	२६	१९	२१	१०	४	23	सिंह	२	७	५७	११	१४	१०	१	२३	२६
३	६	गु	१७	५४	१२	२६	पू.फा	४३	३७	२२	५३	सि	३०	४७	१७	४५	तै	१७	५४	१२	२६	३४	४७	५	२६	१९	२१	११	५	24	कं. २१।६	२	८	५४	२५	१४	१०	५८	२३	५७
४	७	शु	१८	२४	१२	४८	उ.फा	४५	११	२३	३१	व्य	२८	२८	१६	५०	व	१८	२४	१२	४८	३४	४६	५	२६	१९	२१	१२	६	25	कन्या	२	९	५१	३९	१३	११	५५	२४	०
५	८	श	१७	१५	१२	२१	ह	४५	३	२३	२८	वरि	२४	४९	१५	२२	ब	१७	१५	१२	२१	३४	४६	५	२७	१९	२१	१३	७	26	कन्या	२	१०	४८	५२	१३	१२	५३	२४	२७
६	९	र	१४	२१	११	११	चि	४३	१२	२२	४४	परि	१९	४५	१३	२१	कौ	१४	२१	११	११	३४	४५	५	२७	१९	२१	१४	८	27	तु. ११।११	२	११	४६	५	१२	१३	५४	२४	५८
७	१०	चं	९	४३	९	२०	स्वा	३९	३९	२१	१९	शि	१३	२७	१०	४६	ग	९	४३	९	२०	३४	४४	५	२७	१९	२१	१५	९	28	तुला	२	१२	४३	१७	१२	१४	५९	२५	३१
८	११	मं	३	२८	६	५१	वि	३४	३६	१९	१८	सि	५ / ५६	३० / ३०	७ / २८	४० / ५	वि	३	२८	६	५१	३४	४४	५	२८	१९	२१	१६	१०	29	वृ. १३।५१	२	१३	४०	२९	११	१६	८	२६	९
०	१२	मं	५५	५०	२७	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	१३	बु	४७	७	२४	१९	अनु	२८	११	१६	४८	शुभ	३६	४६	२४	१०	कौ	२१	३४	१४	६	३४	४४	५	२८	१९	२१	१७	११	30	वृश्चिक	२	१४	३७	४०	११	१७	२१	२६	५४
१०	१४	गु	३७	४१	२०	३३	ज्ये	२१	११	१३	५७	शु	३६	१८	२०	०	ग	१२	२७	१०	२७	३४	४३	५	२८	१९	२१	१८	१२	J1	ध. १३।५७	२	१५	३४	५१	११	१८	३३	२७	४८
११	१५	शु	२७	५९	१६	४०	मू	१३	३८	१०	५६	ब्र	२५	३७	१५	४४	वि	२	५०	६	३७	३४	४२	५	२९	१९	२१	१९	१३	2	धनु	२	१६	३२	२	१०	१९	४१	२८	५०

- (18) —
- (19) चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, मंगल पुष्य में १७।३७, श्री जगदीश A
- (20) जमादि उल अव्वल मु. मास ५ प्रा., आर्द्रा में बुध ७।४५
- (21) भ. २१।३९ से, सूर्य आर्द्रा में २१।९, सायन कर्क में सूर्य ६।२६, B
- (22) भ. १०।२८ तक, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रा.
- (23) स्कन्द ५, हेरा पंचमी (उड़ीसा), कुमार षष्ठी व्रत, वक्री प्लूटो C
- (24) विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा — C ज्येष्ठा ३ में २३।५
- (25) भ. १२।४८ से २४।३९ तक, श्री महावीर कल्याणांक, जैन D
- (26) पुनर्वसु में बुध १३।१९, दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा)
- (27) भड्डली नवमी, शूद्र ९, कन्दर्प ९, मेला शरीफभवानी (काश्मीर)
- (28) भ. २०।१० से, आशा १०, गिरिजा पूजा, उल्टी रथ यात्रा (उड़ीसा)
- (29) भ. ६।५१ तक, देवशयनी एकादशी व्रत सबका, चातुर्मास E
- (0) द्वादशी क्षयः — D अट्ठाई प्रा., व्यतिपात पुण्यं
- (30) प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारंभ
- (J1) भ. २०।३३ से, बुध कर्क में १३।४६, चौमासी १४ जैन, मेला F
- (2) भ. ६।३७ तक, सत्य व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, मेला G

A रथयात्रा जगन्नाथपुरी (उड़ीसा), शनि अस्त पूर्व में १२।३५ B विनायक४, अंगारकी ४ व्रत, रवि दक्षिणायने, वर्षा ऋतु प्रा. E व्रत, नियमादि प्रा., हरिवासर १९।१८ से २७।४८ तक, अजमेर दादा मेला प्रा., जिनदत्त सूरी ज. जैन, शुक्र मार्गी २८।२७ F ज्वालामुखी (काश्मीर), वायु परीक्षा, जुलाई मास ७ ता. ३१ प्रा., बुध उदय पश्चिम में ११।३१ G नैमिषारण्य, मनसा पूजारंभ (बंगाल), सन्यासियों का चातुर्मास व्रत नियमादि प्रा., आषाढ़ी पूर्णिमा पुण्यं

आषाढ़ शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २६ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	३	२	४	१	२	०	६	१०	९	७
१०	१३	७	१९	१८	१६	२१	१४	१४	१२	२१	२६
४८	१६	२५	१९	४४	१	१६	२४	२४	४७	४	३६
५२	५८	३०	२९	३६	५	२१	५४	५४	९	५२	३०
५७	[illegible]	३७	१२३	८	०८	६	३	३	०	१	१
१३	१९	७७	५०	०७	१२	४२	११	११	४६	९	३२
मा उ	मा अ	मा उ	मा अ	मा उ	व उ	मा अ	व अ	व अ	व —	व —	व —
आर्द्रा ३	हस्त ४	पुष्य ३	आर्द्रा ४	पू.फा. ३	रोहिणी ३	पुन. ४	भरणी १	स्वाति ३	शत ३	श्रवण ४	ज्ये ३

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कुण्डली (ता. २६ जून): ३ सू.बु.श.; ४ मं.; २ शु.; ५ गु.; १ रा.; १२; ६ चं.; ९; ७ के.; ११ ह.; ८ प्लू.; १० ने.

शनि सूर्य का एक साथ होना तथा मिथुन राशि पर शनि का अस्त होना विश्व के अनेक राष्ट्रों में उत्पात, रूस, चीन, अमेरिका, जापान, जर्मन आदि शक्तिशाली राष्ट्रों में तनाव और शक्ति परीक्षण जन्य उन्मादकारी फलकारक है। यथा—**शन्यस्तं मिथुने वृषे, मीने धनु कन्यास्तथा। करोति खलु दुर्भिक्षं, राजयुद्धं परस्परम्॥** गुरु मंगल व मंगल शनि का अलग-अलग द्विर्द्वादश योग शासकों के लिए अनिष्टकारी है तथा अनेक प्रान्तों में जन विग्रह होकर उग्रवादी ताकतों के दल को बल मिलेगा। देश में धार्मिक आन्दोलनों को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे पदाधिकारियों में चिन्ताएं बढ़ेंगी। व्यापारियों व धनाढ्यों को कष्ट बढ़ेंगे। देश की वित्तीय स्थिति पर दुष्प्रभाव बढ़ेगा। **तेजी मन्दी विचार**—शनिवार को चन्द्रदर्शन ४५ मु. होने से धान्य भावों में घटाबढ़ी तथा प्लास्टिक, रबड़ सामान, मशीनें और लोहे की वस्तुओं में विशेष तेजी फलकारक है। नशीली वस्तुएं, चाय, तम्बाकू आदि के भावों में गिरावट, शु. ३ बाद सोना, गुड़, चीनी, शक्कर तेज। तेलों में घटाबढ़ी होकर मन्दी का रुख रहेगा। शु. १४ से गेहूं, चावल, जौ, चना में इकतरफा तेजी चलेगी। शुक्रवारी पूर्णिमा मूल नक्षत्र से मासान्त में मौसम परिवर्तन व वर्षा कारक स्थिति से किराणा वस्तुओं में मन्दी का रुख बनेगा। **आकाश लक्षण**—सूर्य मंगल के पीछे रहना वर्षा की न्यूनता कारक है। पक्षान्त में बिहार, आसाम, बंगाल व पूर्वी प्रान्तों में तेज हवाओं के साथ वर्षा होकर बाढ़ जन्य स्थिति बनेगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर एवं पंजाब में वर्षा उत्तम होगी। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, उ.प्र., म.प्र. व गुजरात में खण्ड वर्षा होगी। **शकुन विचार**—आषाढ़ सुदी ९ के दिन बादल दर्शन अथवा बिजुली नहीं दिखाई दे तो दुर्भिक्ष की कल्पना मानी जाती है। यथा—**आषाढ़ां नवमी दिनां ना बादल ना बीज। हल फाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥** अर्थात् अन्नादि की उपज में संशय ही जानें।

ता.२ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २ जुलाई): ३ सू.श.; ४ मं.बु.; २ शु.; ५ गु.; १ रा.; १२; ६; ९ चं.; ७ के.; ११ ह.; ८ प्लू.; १० ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	८	३	३	४	१	२	०	६	१०	९	७
१६	९	११	१	१९	२५	२२	१४	१४	१२	२०	२६
३२	५१	१२	१४	३५	४७	२	५	५	४१	५७	२७
२	४३	११	४५	०	१५	४६	४९	४९	५७	३८	२९
५७	११५	३७	११२	८	५	७	३	३	१	१	१
१०	०	४९	२३	४७	४४	४६	११	११	१	१७	२७
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व अ	व अ	व -	व -	व -
आर्द्रा ३	पूषा ३	पुष्य ३	पुन. ४	पू.फा. २	रोहिणी २	पुन. १	भरणी १	स्वाति ३	शत २	श्रवण ४	ज्ये ३

प्र.श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०६१ शाके १९२६ | दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं. | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ३ से १७ जुलाई सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि	ति	वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	दिनमान घ	दिनमान प	उदय घं	उदय मि	अस्त घं	अस्त मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्र उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	विवरण
१२	१	श	२८	२८	२२	५२	पुष	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ऐ	२५	४	११	३१	को	१८	२८	१२	५२	३४	४१	५	२९	१९	२१	२०	१४	3	म. १३।१२	२	१७	२९	१२	५७/११	२०	४१	६	०	पुष्य में बुध ८।१६
१३	२	र	९	३४	९	१९	श्र	५३	८	२६	५४	वै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	९	३४	९	१९	३४	४०	५	३०	१९	२१	२१	१५	4	मकर	२	१८	२६	२३	११	२१	३२	७	१३	भ. १९।४१ से, अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल), मंगला गौरी A
१४	३	चं	१	४४	६	१२	ध	४८	३५	२४	५६	प्री	४७	५४	२४	४०	वि	१	४४	६	१२	३४	३८	५	३०	१९	२१	२२	१६	5	कुं. १३।४६	२	१९	२३	३४	११	२२	१४	८	२३	भ. ६।१२ तक, पंचक प्रा. १३।४६ से, सूर्य पुनर्वसु में २०।४८, B
०	४	चं	५५	२५	२३	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी क्षयः
१५	५	मं	५०	५६	२५	५३	शत	४५	५०	२३	५०	आ	४१	२५	२२	४	कौ	२२	५५	१४	४०	३४	३७	५	३०	१९	२१	२३	१७	6	कुंभ	२	२०	२०	४५	११	२२	५१	९	३०	नाग पंचमी (मरूस्थले)
१६	६	बु	४८	३०	२४	५५	पू.भा	४५	७	२२	३४	सौ	३६	३५	२०	९	ग	१९	२६	१३	१७	३४	३६	५	३१	१९	२१	२४	१८	7	मी. १३।३३	२	२१	१७	५६	११	२३	२३	१०	३३	भ. २४।५५ से
१७	७	गु	४८	१५	२४	५९	उ.भा	४६	३३	२४	८	शो	३३	३०	१८	५५	वि	१८	५	१२	४६	३४	३४	५	३१	१९	२१	२५	१९	8	मीन	२	२२	२५	७	१२	२३	५३	११	३२	भ. १२।४६ तक, शीतला ७ (उड़ीसा)
१८	८	शु	५०	३	२५	३३	रे	५०	०	२५	३२	अति	३२	४	१८	२२	बा	१८	५३	१३	५	३४	३२	५	३२	१९	२१	२६	२०	9	मे. २५।३२	२	२३	१२	१९	१२	२४	०	१२	२९	पंचक समा. २५।३२ तक, कालाष्टमी, मन्वादि अष्टमी
१९	९	श	५३	४०	२७	०	अ	५५	१२	२७	३७	सु	३२	८	१८	२३	तै	२१	३८	१४	१२	३४	३१	५	३२	१९	२१	२७	२१	10	मेष	२	२४	९	३२	१२	२४	२२	१३	२४	मंगल आश्लेषा में २१।४४, आश्लेषा में बुध २६।२०, मंगला C
२०	१०	र	५८	४०	२९	१	भ	६०	०	-	-	धृ	३३	२२	१८	५८	व	२६	०	१५	५७	३४	२९	५	३३	१९	२०	२८	२२	11	मेष	२	२५	६	४४	१४	२४	५२	१४	१९	भ. १५।५७ से २९।१ तक, शनि पुनर्वसु २ में २७।४४
२१	११	चं	६०	०	-	-	भ	१	४३	६	१४	शू	३५	२८	१९	४५	ब	३१	३१	१८	१०	३४	२७	५	३३	१९	२०	२९	२३	12	वृ. १२।५७	२	२६	३	५८	१३	२५	२३	१५	१५	कामदा एकादशी व्रत स्मा., श्रावण सोमवार व्रत
२२	११	मं	४	३३	७	२३	कृ	९	५	९	१२	गं	३८	१	२०	४६	बा	८	३३	७	२३	३४	२५	५	३४	१९	२०	३०	२४	13	वृष	२	२७	१	११	१४	२५	५८	१६	१०	कामदा एकादशी व्रत वै.
२३	१२	बु	१०	५०	९	५४	रो	१६	४९	१२	१८	वृ	४०	४२	२१	५०	तै	१०	५०	९	५४	३४	२३	५	३४	१९	२०	३१	२५	14	मि. २५।५१	२	२७	५८	२५	१५	२६	३८	१७	६	प्रदोष व्रत
२४	१३	गु	१७	६	१२	२५	मृ	२४	२८	१५	२२	ध्रु	४३	१४	२२	५२	व	१७	६	१२	२५	३४	२१	५	३५	१९	१९	३२	२६	15	मिथुन	२	२८	५५	४०	१५	२७	२२	१८	०	भ. १२।२५ से २५।३७ तक, मास शिवरात्री व्रत
२५	१४	शु	२३	०	१४	४७	आ	३१	४५	१८	१७	व्या	४५	२४	२३	४५	श	२३	०	१४	४७	३४	१९	५	३५	१९	१९	जा. १	२७	16	मिथुन	२	२९	५२	५५	१६	२८	११	१८	५१	कर्क में सूर्य ८।२८, संक्रांति मु. ४५ उभी, वफात सर सैयद D
२६	३०	श	२८	१९	१६	५५	पुन	३८	२७	२०	५९	ह	४७	५	२४	२६	ना	२८	१९	१६	५५	३४	१७	५	३६	१९	१८	२	२८	17	क. १४।२०	३	०	५०	११	१६	२९	५	१९	३७	देवपितृ कार्य अमावस्या, हरियाली ३०, सरस माधुरी ज., E

A पूजन, गुरु पू.फा. ३ में २५।५ B कृष्ण चतुर्थी व्रत, श्रावण सोमवार व्रत C गौरी पूजा, कर पूजा (त्रिपुरा), गुरु हरि किशन ज. (प्रा. मत से)
D हैमद खां, अश्विनी ४ में राहु स्वाती २ में केतु १५।१९ E चितलगी ३० (उड़ीसा), लक्ष्मी पोल यात्रा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

प्र. श्रावण कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	हृ	ने	प्लू
२	११	३	३	४	१	२	०	६	१०	९	७
२३	१९	१५	१३	२०	१७	२२	१३	१३	१२	२०	२६
१२	३०	३६	३८	३८	११	५७	४३	४३	३३	४८	१७
१९	६	३१	३२	३१	३३	१३	३३	३३	५७	३७	३२
५७	७२२	३७	२८	९	११	०७	३	३	१	१	१
१३	६	४८	३	२९	५५	४७	११	११	१९	२६	२२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ९ जुलाई): ४ मं.बु. | शु.२ | १ रा. | ५ गु. | ३ सू.श. | १२ चं. | ६ | ९ | ७ के. | ११ हृ. | ८ प्लू. | ने.१०

पांच शनिवार मास में होने से अनेक भागों में अग्नि, बारूद के प्रकोप होंगे तथा विश्व के किसी राष्ट्र में सत्ता परिवर्तन संभव है। यथा—**शनैश्च पंचकं दृष्टवा, पाताले कम्पते फणिः। ईशान देश भंगश्च वह्नि दाहो महर्घता॥** पूर्वोत्तरीय राष्ट्रों में भूकम्प, भूस्खलन व तूफानादि प्राकृतिक दुष्प्रभाव जन्य घटनाएं बनेंगी। जापान, चीन, रूस व इण्डोनेशिया, तिब्बत, बर्मा आदि राष्ट्रों में जनता में भय की वृद्धि रहेगी। कृष्णा नवमी को शनिवार होना देश के प्रधान शासकों हेतु कष्टप्रद माना गया है एवं जनता में सन्ताप बढ़ने के योग कारक है। यथा—**श्रावणे नवमी युक्तः शनि सन्ताप कारकः। छत्रभंगं विजानी यादाश्विनान्ते न संशय है।** अतः आश्विन मासान्त में किसी उच्च पदासीन शासक का विश्व में निधन या पदत्याग संभव है। **तेजी मन्दी विचार**— कृ. ३ पुनर्वसो सूर्य से चना, मूंग, मोंठ, गुवार, बाजरा, गेहूं में तेजी रहेगी। पक्ष में गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थ मन्दे। तिल, मूंगफली आदि तेलों व वनस्पति घी, प्लास्टिक, रबड़ के सामान में तेजी। चांदी, सोना, ताम्बा आदि धातुएं मन्दी। किन्तु लोहा में लम्बी तेजी के योग हैं। **आकाश लक्षण**—पक्षान्त में गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में सामान्य वर्षा तथा आंध्रा, तमिलनाडु, उड़ीसा, बिहार, आसाम, बंगाल, नागालैण्ड, मेघालय आदि प्रान्तों में प्रलयंकारी वर्षा से जन धन हानि होने के योग हैं। **शकुन विचार**— श्रावण बदी ४ को यदि वर्षा हो तो उस वर्ष फसलों की उत्तम उपज होकर मन्दी का संचार होता है। यथा—**श्रावण पहली चौथ जो मेघा बरसाय। तो भाषै यों भड्डली साल सवाई जाय॥** कृष्णा ५ को व ११ को हवायें चलें तो दुर्भिक्ष होता है तथा बादल चलन अथवा वर्षा हो तो सुभिक्षकारक होता है। अमावस्या के दिन घटाटोप बादल होकर वर्षा होना वर्ष में उत्तम उपज होकर मन्दी का सूचक है।

ता. १७ जुलाई ❖ प्र. श्रावण कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १७ जुलाई): गु. ५ | ३ श.चं. | ४ | २ शु. | ६ | बु.सू. मं. | १ रा. | के. ७ | १० | ८ | १२ | प्लू. | ९ | ने. | हृ. ११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	हृ	ने	प्लू
३	२	३	३	४	१	२	०	६	१०	९	७
०	२५	२०	२५	२१	२०	२३	१३	१३	१२	२०	२६
५०	३४	३९	४४	५७	३७	५९	१८	१८	२२	३६	७
११	१८	८	४३	१२	२६	२६	७	७	२३	३८	५
५७	७२२	३७	८१	१०	३२	७	३	३	१	१	१
२६	१०	५०	११	१३	२८	४५	११	११	३६	३१	१३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्र. श्रावण शुक्ल पक्ष-९

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. १८ से ३१ जुलाई सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २७ आषाढ़ से ९ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टै.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	टिप्पणी
२७	१	र	३२	५५	१८	३६	पु	४७	२६	२३	२३	व	४८	११	२४	५३	कि	०	४२	५	५३	३४	१५	५	३६	१९	१८	३	२९	18	कर्क	३	१	४७	२७	५७ २५	६	२	२०	१९	चन्द्रदर्शन मु.३० समता कारक, पुरुषोत्तम मासारम्भः (अधिक मास)
२८	२	चं	३६	४१	२०	१७	श्ले	४९	३७	२५	२८	सि	४८	३९	२५	४	बा	४	५८	७	३४	३४	१२	५	३७	१९	१८	४	१	19	सिं. २०।२८	३	२	४४	४३	१७	६	५९	२०	५६	जयादि उम्यानी मु.मा. ६ प्रा., सूर्य पुष्य में २०।१७
२९	३	मं	३९	३५	२१	२७	म	५३	५५	२७	११	व्य	४८	२४	२४	५९	तै	८	१४	८	५५	३४	१०	५	३७	१९	१७	५	२	20	सिंह	३	३	४२	०	१७	७	५७	२१	२१	व्यतिपात पुण्य, बुध सिंह मघा में ११।२३
३०	४	बु	४१	२९	२२	१३	पू.फा	५७	१४	२८	३२	वरि	४७	२३	२४	३५	व	१०	३८	९	५३	३४	७	५	३८	१९	१७	६	३	21	सिंह	३	४	३९	१७	१८	८	५४	२२	०	भ. ९।५३ से २२।१३ तक, मृगशिरा में शुक्र २१।४१. A
३१	५	गु	४२	१८	२२	३३	उ.फा	५९	२८	२९	२५	परि	४५	२९	२३	५०	ब	१२	१	१०	२७	३४	५	५	३८	१९	१६	७	४	22	कं. १०।४८	३	५	३६	३५	१८	९	५०	२२	३०	सायन सिंह में सूर्य १६।५०
आष	६	शु	४२	५३	२२	२४	ह	६०	०	-	-	शि	४२	३७	२२	४२	कौ	१२	१४	१०	३३	३४	२	५	३९	१९	१६	८	५	23	कन्या	३	६	३३	५३	१८	१०	४७	२२	५१	राष्ट्रीय श्रावण प्रा.
२	७	श	४०	७	२१	४२	ह	०	२५	५	५०	सि	३८	४१	२१	८	ग	११	९	१०	७	३४	०	५	३९	१९	१५	९	६	24	तु. १०।५०	३	७	३१	११	१८	११	४६	२३	३१	भ. २१।४२ से, गुरु पू.फा. ४ में २६।४३
३	८	र	३६	५७	२०	२७	चि	० / ५८	३ / १६	५ / २२	४१ / ५८	सा	३३	३५	१९	६	वि	८	४२	९	९	३३	५७	५	४०	१९	१५	१०	७	25	तुला	३	८	२८	२९	१९	१२	४८	२४	०	भ. ९।९ तक, दुर्गाष्टमी ,मंगल अस्त पूर्व में २२।५
४	९	चं	३२	२०	१८	३६	वि	५५	३	२७	४२	शुभ	२७	२०	१६	३६	बा	४	४८	७	३६	३३	५४	५	४१	१९	१४	११	८	26	वृ. २२।४	३	९	२५	४८	१९	१३	५३	२४	६	
५	१०	मं	२६	२१	१६	१३	अनु	५०	३२	२५	५४	शु	१९	५६	१३	४०	ग	२६	२१	१६	१३	३३	५१	५	४१	१९	१४	१२	९	27	वृश्चिक	३	१०	२३	७	२०	१५	१	२४	४६	भ. २६।५० से
६	११	बु	१९	२०	१३	२२	ज्ये	४४	५४	२३	३९	ब्र	२१	३२	१०	१८	वि	१९	२०	१३	२२	३३	४८	५	४२	१९	१३	१३	१०	28	ध. २३।३९	३	११	२०	२७	२०	१६	१२	२५	३४	भ. १३।२२ तक, कमला एकादशी व्रत सबका, शनि पश्चिम B
७	१२	गु	११	३	१०	८	मू	३८	३०	२१	६	ऐं	९ / ५२	११ / ३०	६ / २५	१८ / ४४	बा	११	३	१०	८	३३	४५	५	४२	१९	१२	१४	११	29	धनु	३	१२	१७	४७	२१	१७	२१	२६	३०	प्रदोष व्रत
८	१३	शु	२	२०	६	३९	पू.षा	३१	४१	१८	२३	वि	४२	३२	२२	४४	तै	२	२०	६	३९	३३	४२	५	४३	१९	१२	१५	१२	30	म. २३।४२	३	१३	१५	८	२१	१८	२४	२७	३५	भ. २७।५ से
०	१४	शु	५३	२६	२७	५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी क्षयः
९	१५	श	४४	४५	२३	३७	उ.षा	२४	५४	१५	४१	प्री	३२	३६	१८	४६	वि	१९	१	१३	२०	३३	३९	५	४३	१९	११	१६	१३	31	मकर	३	१४	१२	२९	२२	१९	१९	२८	४६	भ. १३।२० तक, मंगल मघा सिंह में २५।९, शुक्र मिथुन में C

A विनायक ४ व्रत B में उदय ७।१२ C ७।४५, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्यं

प्र. श्रावण शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ जुलाई

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	३	४	४	१	२	०	६	१०	९	७
८	६	२५	५	२३	२५	२५	१२	१२	१२	२०	२५
२८	३२	४१	२८	२१	३१	१	५२	५२	८	२४	५७
२९	५१	५५	३८	१५	१७	६	४१	४१	३२	१२	५५
५७	८२४	३७	६१	१०	४१	७	३	३	१	१	१
११	३२	५२	३५	५१	४८	३८	११	११	५३	३६	३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	—	—	—
पुष्य २	[illegible]	श्लेषा ४	मघा २	पू.फा. ४	मृग २	मृग २	कृत्तिका ४	स्वाति २	शत २	श्रवण ४	[illegible]

बु.गु. ५ | शु.३ | २शु. | ६ | ४ सू.मं. | १रा. | ७ के.चं. | ने. १० | ८ | प्लू. | १२ | ९ | ह. ११

इस वर्ष श्रावण अधिक मास है अतः विद्वानों ने इसका फल विग्रह कारक एवं प्रजाहानि बताया है। यथा—**दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजाक्षयः।** श्रावण मास में प्रतिपदा तिथि को चन्द्रदर्शन होने से प्राकृतिक विपत्तियां बनकर जीव जन्तु, प्रजा व फसलों को हानि संभव है। यथा—**श्रावणे शुक्ल पक्षे च प्रतिपच्चन्द्र योगतः। जल शोषं प्रजानाशं छत्र भंगं तदा दिशेत्॥** कहीं किसी शासक का निधन व सत्ता परिवर्तन योगप्रद है। पश्चिमी राष्ट्रों यूरोप, ब्रिटेन, अमेरिका तथा अरब राष्ट्रों में कट्टरवादी संगठनों द्वारा अविस्मरणीय उत्पातों के उपद्रवों से जन जीवन भयभीत रहेगा। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में नवीन संगठन बनाने हेतु राजनैतिक हलचलों की गरमाहट बढ़ेगी। नव निर्वाचन जागरुकता बढ़ेगी। **तेजी मन्दी विचार**—रवि पुष्य में शु. २ से व चन्द्रदर्शन मु. ३० से गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ के भावों में सामान्य ठहराव रहकर पक्षान्त में तेजी चलेगी। शु. ८ भौमास्त से रुई, कपास, सूती, ऊनी, रेशमी, वस्त्रों तथा गुड़, चीनी, शक्कर में मन्दी तथा सरसों, मूंगफली, अरण्ड, अलसी, सोयाबिन तेलों में तेजी रहेगी। सोना, प्लास्टिक सामान व मशीनी सामान में तेजी रहकर मन्दी का झटका आयेगा। **आकाश लक्षण**—देश के पश्चिमोत्तरीय प्रान्तों गुजरात, राजस्थान, पंजाब व हरियाणा, दिल्ली के क्षेत्रों में सामान्य वर्षा किन्तु आन्तरिक उम्मस का वातावरण रहेगा। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, बंगाल, आसाम, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, आन्ध्रा, तमिलनाडू, कर्णाटका व महाराष्ट्र प्रान्तों में वर्षा के साथ तूफानी हवाओं का प्रकोप रहेगा। **शकुन विचार**—माघ माह में गर्म हवाएं, जेठ मास में सर्द तथा श्रावण माह में ठण्डी हवाएं चलने पर वर्षाकाल में शुष्कता रहकर तेजी का संचार होता है और अनावृष्टि का दुष्प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ता है। यथा—**माघ मसक्का ज्येष्ठ सी, श्रावण ठण्डी बाव। भीम कहे सुन भड्डुली, नहीं बरसन को भाव॥**

ता. ३१ जुलाई ❖ प्र. श्रावण शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

बु.गु. ५ | श.३ | २शु. | ६ | ४ मं.सू. | १ रा. | ७ के. | ने.चं. १० | ८ | प्लू. | १२ | ९ | ह.११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	३	४	४	१	२	०	६	१०	९	७
१४	३	२९	१०	२४	२९	२५	१२	१२	११	२०	२५
१२	३६	२१	५३	२७	५५	४६	३३	३३	५६	१४	५२
२९	५५	११	९	२५	३६	३८	३६	३६	५१	३३	०
५७	८१९	३७	४२	११	४७	७	३	३	२	१	०
२२	३३	५४	३८	१६	६	३१	११	११	२	३८	५४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
पुष्य ४	उ.षा. ३	श्लेषा ४	मघा ४	पू.फा. ४	मृग २	मृग २	कृत्तिका ४	स्वाति २	शत २	श्रवण ४	[illegible] ३

द्वि. श्रावण कृष्ण पक्ष-१०

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. १ से १६ अगस्त सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २५ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१०	१	र	३६	४१	२०	२४	श्र	१८	३७	१३	११	आ	२३	९	१५	०	बा	१०	३८	९	५८
११	२	चं	२९	४४	१७	३८	ध	१३	२८	११	४	सौ	१४	३१	११	३३	तै	३	२	६	५७
१२	३	मं	२४	१७	१५	२८	शत	९	२२	९	३०	शो	७	३	८	३८	वि	२४	१७	१५	२८
१३	४	बु	२०	४२	१४	२	पूभा	७	११	८	३८	अति	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	२०	४२	१४	२
१४	५	गु	१९	११	१३	२६	उभा	७	२	८	३५	धृ	५३	५४	२७	२०	तै	१९	११	१३	२६
१५	६	शु	१९	४७	१३	४२	रे	८	५८	९	२२	शू	५२	५०	२६	५५	व	१९	४७	१३	४२
१६	७	श	२२	२५	१४	४५	अ	१२	५४	११	०	गं	५३	१३	२७	४	ब	२२	२५	१४	४५
१७	८	र	२६	४४	१६	२९	भ	१८	३१	१३	१२	वृ	५४	४३	२७	४१	कौ	२६	४४	१६	२९
१८	९	चं	३२	१५	१८	४२	कृ	२५	२२	१५	५७	ध्रु	५६	५७	२८	३५	ग	३२	१५	१८	४२
१९	१०	मं	३८	२४	२१	११	रो	३२	५३	१८	५८	व्या	५९	३०	२९	३७	व	५	१६	७	५५
२०	११	बु	४४	३७	२३	४०	मृ	४०	३१	२२	२	ह	६०	०	-	-	ब	११	३१	१०	२६
२१	१२	गु	५०	२६	२६	०	आ	४७	४६	२४	५६	ह	१	५८	६	३७	कौ	१७	३५	१२	५२
२२	१३	शु	५५	२९	२८	२	पुन	५४	१८	२७	३४	व	४	२	७	२८	ग	२३	३	१५	४
२३	१४	श	५९	३६	२९	४१	पु	५९	५५	२९	४९	सि	५	३०	८	३	वि	२७	३९	१६	५५
२४	३०	र	६०	०	-	-	श्ले	६०	०	-	-	व्य	६	१२	८	२१	च	३१	१४	१८	२२
२५	३०	चं	२	३८	६	५६	श्ले	४	३०	७	४०	वरि	६	६	८	१९	ना	२	३८	६	५६

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

दिनांक अं.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
1	३३	३६	५	४४	१९	१०	१७	१४	कुं. २१।४	३	१५	९	५१	[illegible]	२०	५	५	५९	पंचक प्रारंभ २४।४ से, अगस्त मास ८ ता. ३१ प्रा.
2	३३	३३	५	४४	१९	१०	१८	१५	कुंभ	३	१६	७	१४	२४	२०	४५	७	९	भ. २८।२८ से, सूर्य आश्लेषा में १९।१२
3	३३	३०	५	४५	१९	९	१९	१६	मी. २६।४७	३	१७	४	३८	२५	२१	२०	८	१५	भ. १५।२८ तक, पू.फा. में बुध २८।४९, कृष्ण चतुर्थी व्रत
4	३३	२७	०	४६	१९	८	२०	१७	मीन	३	१८	२	३	२६	२१	५१	९	१७	
5	३३	२३	५	४६	१९	७	२१	१८	मीन	३	१८	५९	२९	२८	२२	२२	१०	१७	
6	३३	२०	५	४७	१९	७	२२	१९	मे. ९।२२	३	१९	५६	५७	२९	२२	५२	११	१४	भ. १३।४२ से २६।७ तक, पंचक समा. ९।२२
7	३३	१६	५	४७	१९	६	२३	२०	मेष	३	२०	५४	२६	३०	२३	२३	१२	११	शनि पुनर्वसु ३ में ९।४४
8	३३	१३	५	४८	१९	५	२४	२१	वृ. ११।५१	३	२१	५१	५६	३१	२३	५७	१३	७	शुक्र आर्द्रा में ८।४२, कालाष्टमी, वक्री नेपच्यून श्रवण ३ में २७।१८
9	३३	१०	५	४८	१९	४	२५	२२	वृष	३	२२	४९	२७	३३	२४	०	१४	४	भारतीय क्रांति दिवस, बुध वक्री २९।१७
10	३३	६	५	४९	१९	३	२६	२३	वृष	३	२३	४७	०	३४	२४	३५	१५	०	भ. ७।५५ से २१।११ तक
11	३३	२	५	४९	१९	३	२७	२४	मि. ८।३१	३	२४	४४	३४	३५	२५	१८	१५	५४	गुरु उ.फा. १ में १६।१८, कमला एकादशी व्रत सबका
12	३२	५९	५	५०	१९	२	२८	२५	मिथुन	३	२५	४२	९	३७	२६	५	१६	४६	
13	३२	५५	५	५१	१९	१	२९	२६	क. २०।५६	३	२६	३९	४६	३८	२६	५८	१७	३४	भ. २८।२ से, प्रदोष व्रत
14	३२	५२	५	५१	१९	०	३०	२७	कर्क	३	२७	३७	२४	४०	२७	५४	१८	१७	भ. १६।५५ तक, मास शिवरात्री व्रत, व्यतिपात पुण्यं ८।३ से
15	३२	४८	५	५२	१८	५९	३१	२८	कर्क	३	२८	३५	४	४१	२८	५२	१८	५६	वक्री बुध मघा में २५।१४, देवपितृ कार्यमावस्या, भारतीय A
16	३२	४४	५	५२	१८	५८	श्रा१	२९	सिं. ७।४०	३	२९	३२	४५	४२	२९	५०	१९	३१	मघा सिंह में सूर्य १६।५०, संक्रांति मु. ३० उभी, सोमवती, B

A स्वतंत्रता दिवस वर्ष ५८ वां B देवकार्य अमावस्या

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

द्वि. श्रावण कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	४	४	४	२	२	०	६	१०	९	७
२१	२२	४	१४	२५	६	२६	१२	१२	११	२०	२५
५१	४६	३२	४०	५९	३३	४६	८	८	३१	१	४५
५६	१२	३८	३५	१५	१	२	१०	१०	५३	२१	३२
५७	[illegible]	३७	७	११	५२	७	३	३	२	१	०
३१	२४	५९	५६	४५	४२	१८	११	११	१३	३८	४१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मं.बु.गु. ५ | शु. श. ३ | ६ | ४ सू. | २ | १ रा. चं. | ७ के. | ने. १० | ८ | प्लू. | १२ | ९ | ह. ११

मास में ५ रविवार व ५ सोमवार मिलाजुला फलकारक है। मंगल गुरु का एक राशि पर भ्रमण करना वर्षा की खेंच तथा प्राकृतिक आपत्तियों का कारक है। शनि से दृष्ट होने से देश के मध्य भाग व मुस्लिम राष्ट्रों में उत्पातिक घटनाप्रद रहेगा। यथा— एक राशिगतावेतौ, धरा पुत्रांगिरः सुतौ। तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षा काले न संशयः॥ तथा भूसुतौ मन्देन दृष्ट्वा, मन्द दृष्ट्वा धरात्मजेन। कुंजराणांविनाशस्यात् लोकानांदुःख पीडनम्॥ धार्मिक व साम्प्रदायिक दंगों से यातायात साधनों की हानि व अवरोध से जनजीवन त्रस्त रहेगा। लोगों में भय वृद्धि से शासक वर्ग विचलित रहेगा। वन्य पशुओं में रोगोत्पात से हानि होगी। व्यापारी व बुद्धिजीवी पुरुषों को कष्ट रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**— कृ. २ आश्लेषा सूर्य से कपास, रुई व वस्त्रों तथा श्वेत वस्तुओं में तेजी रहे। गुड़, चीनी, शक्कर में घटाबढ़ी चलेगी। चना, मूंग, मोठ, गुवार, चावल, जौ, ज्वार आदि धान्य भावों में उतार-चढ़ाव रहकर पश्चात् में तेजी रहेगी। कृ. ९ बुध वक्री धनिया, जीरा, नारियल, मेवा सामान में तेजी कारक है। रसायनिक पदार्थों व रंग रोगन के सामान में मन्दी चलेगी। शेयर बाजारों में गिरावट रहेगी। **आकाश लक्षण**— मास में ५ रविवार व गुरु मंगल योग वर्षा में न्यूनता कारक है। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात व उत्तर प्रदेश में खण्ड वर्षा किन्तु उमस की घुटन रहेगी। अंतरंग गर्मी का वातावरण रहेगा। पर्वतीय क्षेत्रों व समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों पर वायुवेग की तीव्रता के साथ मूसलाधार वर्षाकारी योग है। बिहार, आसाम, बंगाल, नागालैण्ड तथा कर्णाटक, तमिलनाडु में बाढ़ से यातायात में अवरोध रहेंगे। **शकुन विचार**— पूरब दिशा की तरफ बीजुलियां चमके वायु भी पूर्वी चले तथा पपीहा बोले तो आकस्मिक रूप से वर्षा होती है। यथा— **धुर पूरब दिशि बीजुली, चातक लवतोरंत। सूरयो पुरवाई पवन, वर्षा करे अचिन्त॥**

ता. १६ अगस्त ❖ द्वि. श्रावण कृ. ३० चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

मं.बु.गु. ५ | शु. श. ३ | ६ | ४ सू. चं. | २ | १ रा. | ७ के. | ने. १० | ८ | प्लू. | १२ | ९ | ह.११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	४	४	४	२	२	०	६	१०	९	७
२९	२८	९	१३	२७	१३	२७	११	११	११	११	२५
३२	५१	६	१४	३४	५०	४३	४२	४२	२१	४८	४०
४५	२७	४८	२०	४०	९	२५	४३	४३	४२	२१	५२
५७	[illegible]	३८	३४	१२	५६	७	३	३	२	१	०
४२	५९	४	४४	९	५५	०	११	११	२०	३६	२७
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

द्वि. श्रावण शुक्ल पक्ष-११ — श्री सं. २०६१, शाके १९२६

ता. १७ से ३० अगस्त सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २६ श्रावण से ८ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा - शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	विशेष
२६	१	मं	४	४०	७	४५	म	८	७	९	८	वरी	५	१२	७	५८	ब	४	४०	७	४५	३२	४०	५	५३	१८	५७	२	३०	17	सिंह	४	०	३०	२७	५७	६	४८	२०	३	चन्द्र दर्शन मु. ३०, समता कारक, नक्त व्रत प्रा., सोमेश्वर A
२७	२	बु	५	४३	८	१०	पूफा	१०	४६	१०	१२	शि	३	३१	७	१८	कौ	५	४३	८	१०	३२	३७	५	५३	१८	५६	३	१	18	कं. १६।२४	४	१	२८	१०	६५	७	४६	२०	३३	रजब मु. मास ७ प्रा., सिंधारा
२८	३	गु	५	४८	८	१३	उफा	१२	२८	१०	५३	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	५	४८	८	१३	३२	३३	५	५४	१८	५५	४	२	19	कन्या	४	२	२५	५५	६६	८	४३	२१	३	भ. २०।६ से, मधुश्रवा (छोटी), तीज, हरियाली तीज, B
२९	४	शु	४	५७	७	५३	ह	१३	२६	११	१३	शुभ	५४	०	२७	३१	वि	४	५७	७	५३	३२	२९	०	५४	१८	५४	५	३	20	तु. २३।१४	४	३	२३	४१	६६	९	४१	२१	३८	भ. ७।५३ तक A पूजा, बुध पश्चिम में अस्त ७।४९,
३०	५	श	३	१०	७	११	चि	१३	८	११	१०	शु	४९	१९	२५	३८	बा	३	१०	७	११	३२	२५	५	५५	१८	५३	६	४	21	तुला	४	४	२१	२७	६९	१०	४२	२२	७	पूर्वाफाल्गुनी में मंगल २६।१, नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक C
३१	६	र	०	२६	६	६	स्वा	१२	३	१०	४५	ब	४३	४९	२३	२७	तै	०	२६	६	६	३२	२१	५	५५	१८	५२	७	५	22	वृ. २८।१०	४	५	१९	१६	६९	११	४५	२२	४४	भ. २८।३७ से, पुनर्वसु में शुक्र १४।२१, अश्वत्थ मारुति ६, D
०	७	र	५६	४३	२८	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी क्षयः B विनायक ४ व्रत, दूर्वा गणपति व्रत, वरद ४ व्रत
भा१	८	चं	५२	१	२६	४४	वि	२	५९	९	५५	ऐं	३७	३२	२०	५७	वि	२४	२८	१५	४३	३२	१७	५	५६	१८	५१	८	६	23	वृश्चिक	४	६	१७	५	५०	१२	५१	२३	२८	भ. १५।४३ तक, दुर्गाष्टमी, मंगला गौरी पूजा, मेला नयनादेवी, F
२	९	मं	४६	२४	२४	३०	अनु	६	५७	८	४३	वै	३०	२१	१८	८	बा	१९	१८	१३	४०	३२	१४	५	५६	१८	५०	९	७	24	वृश्चिक	४	७	१४	५५	५२	१३	५१	२४	०	C भित्ती चित्रित, नाग पूजा, अमरनाथ यात्रा, जीवंतिका पूजन
३	१०	बु	३९	५८	२१	५६	ज्ये	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	२२	४४	१५	२	तै	१३	१५	११	१५	३२	१०	५	५७	१८	४९	१०	८	25	ध. ७।१०	४	८	१२	४७	५२	१५	७	२४	११	D वर्ण श्रृगाल ६, कल्कि जयंती, गोस्वामी तुलसीदास ज., E
४	११	गु	३२	५६	१९	८	पूषा	५३	१०	२७	१४	प्री	१४	२५	११	४३	व	६	३०	८	३४	३२	६	५	५७	१८	४८	११	९	26	धनु	४	९	१०	३९	५४	१६	१०	२५	११	भ. ८।३४ से १९।८ तक, पवित्रा एकादशी व्रत सबका
५	१२	शु	२५	३४	१६	१२	उषा	४७	४५	२५	४	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	२५	३४	१६	१२	३२	२	५	५८	१८	४७	१२	१०	27	म. ८।४१	४	१०	८	३३	५५	१७	७	२६	२६	उ.फा. २, कन्या में गुरु २३।३९, प्रदोष व्रत
६	१३	श	१८	१०	१३	१५	श्र	४२	२७	२२	५७	शो	४८	१८	२५	१८	तै	१८	१०	१३	१५	३१	५८	५	५८	१८	४६	१३	११	28	मकर	४	११	६	२८	५७	१७	५६	२७	३६	E पार्श्वनाथ मोक्ष, सायन सूर्य कन्या में प्रवे. २३।४४, शरद ऋतु प्रा.
७	१४	र	११	७	१०	२६	ध	३७	३९	२१	३	अति	४०	६	२२	१	व	११	७	१०	२६	३१	५४	५	५९	१८	४४	१४	१२	29	कुं. १।५८	४	१२	४	२५	५८	१८	३८	२८	४७	भ. १०।२६ से २१।७ तक, पंचक प्रारंभ ९।५८ से, हयग्रीव ज., G
८	१५	चं	४	४६	७	५४	शत	३३	४६	१९	३०	सु	३२	३९	१९	३	ब	४	४६	७	५४	३१	४९	५	५९	१८	४३	१५	१३	30	कुंभ	४	१३	२	२३	[illegible]	१९	१४	२९	५६	सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में १२।४७, पूर्णिमा पुण्यं, श्रावणी H

F चिंतपूर्णी (हि.प्र.), दुर्वाष्टमी व्रत, राष्ट्रीय भाद्रपदारंभ, श्रावण सोमवार व्रत, उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ति अजमेर G सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, अगस्त उदय १२।३०

H उपाकर्म, रक्षा बन्धन, अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), झुलन यात्रा समापन, मंगला गौरी पूजन, श्रावणी पूर्णिमा, श्रावण सोमवार व्रत, हजरत अली जन्म

द्वि. श्रावण शु. ८ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	४	४	४	२	२	०	६	१०	९	७
६	०	१४	७	२१	२०	२८	११	११	११	१९	२५
१७	४५	३	५३	०	३७	३१	२०	२०	५	३७	३८
५	२०	३४	४८	३५	३२	३०	२८	२८	१०	२५	२२
५८	७३५	३८	५३	१२	५१	६	३	३	२	१	०
५०	५४	९	१३	२६	४८	४१	११	११	२४	३२	१४
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
२ मघा	४ विशा.	२ पू.फा.	३ मघा	३ पू.फा.	१ पुन.	३ पुन.	४ अश्वि	२ स्वाति	२ शत	३ श्रवण	३ ज्ये

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

(ता. २३ अगस्त कुण्डली)
६   ५   ४   ३ शु. श.
७ के.   सू. मं. गु. बु.   २
८ चं.प्लू.   ह.   १ रा.
९   ११   ने. १०   १२

सिंह राशि में चार ग्रहों का योग एवं शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय होना विश्व के अनेक भागों में उपद्रव- उत्पात होंगे तथा कार्तिक मास में सत्ता परिवर्तनकारी योगप्रद है। यथा— **श्रावणे शुक्ल पक्षे च, तिथिः काऽपिक्षया भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्र भंगः प्रजायते॥** पूर्वी उत्तरी राष्ट्रों व प्रान्तों में वायु वेगादि प्राकृतिक उपद्रव बनकर भूकम्प व भूस्खलन आदि से जन धन की हानि होगी। कुछ स्थानों पर रोगोपद्रव व प्रलयंकारी वर्षा संभव है। चीन, जापान, रूस, आस्ट्रेलिया, वर्मा आदि राष्ट्रों में भूस्खलन व अग्निकाण्ड अथवा बारूदादि से हानि होगी। विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों में साम्प्रदायिक तनाव व कट्टरवादी ताकतों से भय व्याप्त रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**— मंगलवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० व संक्रांति मु. ३० चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, जौ, चावल में मन्दी के बाद तेजी कारक है। शु. ७ का क्षय गुड़, चीनी, शक्कर, तिल व मूंगफली, वनस्पति तेलों में तेजी कारक है। रुई, कपास, सूती, रेशमी वस्त्रों में मन्दी के बाद तेजी चलेगी। पशुओं, चौपायों में मंहगाई बढ़ेगी जिससे घास चारा और सोना, चान्दी, ताम्बा, पीतल आदि धातुओं में तेजी का प्रभाव बढ़ेगा। मेवा, सामान, बादाम, काजू, अखरोट, किसमिस के भावों में गिरावट बनेगी। **आकाश लक्षण**— पक्षारंभ में चार ग्रहों का योग देश के पूर्वी दक्षिणी भागों में तूफानी हवाओं व वर्षा से उपद्रवकारी है। शु. ६ बाद तापमान में वृद्धि तथा पश्चिमी प्रान्तों महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली क्षेत्रीय स्थानों पर सामान्य वर्षा योग है। **शकुन विचार**— सावण सुदी ५ को बादल वर्षा व वायु चले तो वर्षा काल में वर्षा नहीं होती। जिससे धान्य उपज कम होकर तेजी रहेगी। यथा— **सावण उजली पंचमी जो बिरखा दरसाय। ताल जु सुखे मेह नहीं तृण अन्न तेज बिकाय॥** श्रावणी पूर्णिमा को वर्षा होना उत्तम उपज होकर धान्यों में मन्दी का संचार होता है।

ता. ३० अगस्त ❖ द्वि. श्रावण शु. १५ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

(ता. ३० अगस्त कुण्डली)
६ गु.   ५   ४   ३ शु. श.
७ के.   सू. बु. मं.   २
८ प्लू.   ११ चं.   १ रा.
९   ह.   ने. १०   १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	४	४	५	२	२	०	६	१०	९	७
१३	११	१८	२	०	२७	२९	१०	१०	१०	१९	२५
२	४२	३०	४०	२८	४३	१७	५८	५८	४८	२६	३७
२३	१०	५४	६	१७	३१	१३	१२	१२	२४	५२	२४
५८	८०९	३८	२४	१२	६२	६	३	३	२	१	०
०	४५	१५	१८	३८	१२	१९	११	११	२३	२८	१
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
४ मघा	२ शत.	२ पू.फा.	१ मघा	३ उ.फा.	३ पुन.	३ पुन.	४ अश्वि	२ स्वाति	२ शत	३ श्रवण	३ ज्ये

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ३१ अग. से १४ सितं. सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
०	१	चं	५९	३३	२१	४९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
९	२	मं	५५	४५	२८	१८	पूभा	३१	२०	१८	२८	धृ	२६	१६	१६	३०	तै	२७	२६	१६	५१
१०	३	बु	५३	४२	२७	२९	उभा	३०	११	१८	५	शू	२१	१०	१४	२८	व	२४	२९	१५	४८
११	४	गु	५३	३३	२७	२६	रे	३१	१	१८	२५	गं	१७	३१	१३	२	ब	२३	२२	१५	२२
१२	५	शु	५५	१९	२८	१	अ	३३	४४	१९	३१	वृ	१५	२४	१२	११	कौ	२४	११	१५	४२
१३	६	श	५८	५१	२९	३४	भ	३८	१४	२१	२०	धु	१४	४५	११	५६	ग	२६	५२	१६	४७
१४	७	र	६०	०	-	-	कृ	४४	१४	२३	४४	व्या	१५	२३	१२	१२	वि	३१	१०	१८	३१
१५	७	चं	३	४७	७	३४	रो	५१	१४	२६	३३	ह	१७	०	१२	५१	ब	३	४७	७	३४
१६	८	मं	९	३७	९	५४	मृ	५८	४२	२९	३२	व	१९	१३	१३	४५	कौ	९	३७	९	५४
१७	९	बु	१५	४६	१२	२३	आ	६०	०	-	-	सि	२१	३५	१४	४२	ग	१५	४६	१२	२३
१८	१०	गु	२१	३८	१४	४४	आ	६	०	८	२८	व्य	२३	४२	१५	३३	वि	२१	३८	१४	४४
१९	११	शु	२६	४४	१६	४७	पुन	२२	४१	११	९	व	२५	१२	१६	१०	बा	२६	४४	१६	४७
२०	१२	श	३०	४२	१८	२२	पु	१८	२०	१३	२६	प	२५	५१	१६	२६	तै	३०	४२	१८	२२
२१	१३	र	३३	२२	१९	२७	श्ले	२२	४६	१५	१२	शि	२५	३०	१६	१८	ग	२	१२	६	५१
२२	१४	चं	३४	४२	१९	५१	म	२२	५३	१६	२८	सि	२४	६	१५	४५	वि	४	११	७	४७
२३	३०	मं	३४	४५	२०	१	पूफा	२७	४४	१७	११	सा	२१	४१	१४	४७	च	४	५२	८	४

रा. मि.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	नक्षत्र	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा क्षयः A में उदय १०।१५
९	३१	४५	६	०	१८	४२	१६	१४	31	मी. १२।४०	४	१४	०	२३	५६	११	४७	६	५९	अशून्य शयन २ व्रत, मनसा पूजा समाप्त (बंगाल), बुध पूर्व A
१०	३१	४१	६	०	१८	४१	१७	१५	S1	मीन	४	१४	५८	२५	३	२०	१९	८	०	भ. १५।४८ से २७।२९ तक, कर्क में शुक्र प्रवेश १०।१, B
११	३१	३७	६	१	१८	४०	१८	१६	2	मे. १८।२५	४	१५	५६	२८	५	२०	४९	९	०	पंचक समाप्त १८।२५. कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला ४, प्लूटो C
१२	३१	३३	६	१	१८	३९	१९	१७	3	मेष	४	१६	५४	३३	७	२१	२१	९	५८	रक्षा पंचमी, अश्वत्थ मारुति पूजा C मार्गी १४।१, बुध मार्गी १७।४३
१३	३१	२९	६	२	१८	३८	२०	१८	4	वृ. २१।५३	४	१७	५२	४०	९	२१	५४	१०	५६	भ. २९।३४ से, शुक्र पुष्य में १३।५१ उभी ६, चन्द्र ६, हल ६,D
१४	३१	२५	६	२	१८	३६	२१	१९	5	वृष	४	१८	५०	४९	११	२२	३१	११	५४	भ. १८।३१ तक, शनि पुन. ४ कर्क में प्रवेश २८।३६, E
१५	३१	२१	६	३	१८	३५	२२	२०	6	वृष	४	१९	४९	०	१३	२३	१२	१२	५१	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा., मेला द्रोण दनकौर (उ. प्र.), F
१६	३१	१७	६	३	१८	३४	२३	२१	7	मि. १६।२	४	२०	४७	१३	१५	२३	५९	१३	४६	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै., कालाष्टमी, गुरु अस्त पश्चिम में १७।३८
१७	३१	१२	६	४	१८	३३	२४	२२	8	मिथुन	४	२१	४५	२८	१७	२४	०	१४	४०	भ. २५।३४ से, गोगा नवमी, नन्दोत्सव (गोकुल) पश्चिमास्त गुरु
१८	३१	८	६	४	१८	३२	२५	२३	9	क. २८।३१	४	२२	४३	४५	१९	२४	४९	१५	२९	भ. १४।४४ तक, व्यतिपात पुण्यं F संत ज्ञानेश्वर ज. ७ सितम्बर
१९	३१	४	६	५	१८	३१	२६	२४	10	कर्क	४	२३	४२	४	२१	२५	४९	१६	१४	अजा एकादशी व्रत सबका G अश्वत्थ मारुति पूजा
२०	३१	०	६	५	१८	२९	२७	२५	11	कर्क	४	२४	४०	२५	२३	२६	४१	१६	५४	उत्तरा फाल्गुनी में मंगल २३।३७, वत्स द्वादशी, महाद्वादशी, G
२१	३०	५६	६	६	१८	२८	२८	२६	12	सिं. १५।१२	४	२५	३८	४८	२५	२७	३९	१७	३०	भ. १९।२९ से, प्रदोष व्रत, मास शिवरात्री व्रत, जैन पर्यूषण H
२२	३०	५१	६	६	१८	२७	२९	२७	13	सिंह	४	२६	३७	१३	२७	२८	३८	१८	३	भ. ७।४७ तक, सूर्य उत्तरा फाल्गुनी में ६।३८, अघोरा चतुर्दशी
२३	३०	४७	६	७	१८	२६	३०	२८	14	कं. २३।११	४	२७	३५	४०	२९	२९	३६	१८	३४	देवपितृकार्य अमावस्या, कुशोत्पाटिनी ३० (ॐ हुं फट् स्वाहा) J

B कज्जली तीज, सातूड़ा तीज, जीवंतिका पूजन, सितम्बर मा. ९ ता. ३० प्रा. D ललही ६, पुत्रार्थि व्रत, श्री माधव देव तिथि (असम) E शिक्षकदिवस, डॉ. राधाकृष्णन जन्म दिवस
H पर्व प्रा., शब्बे-मिराज मु., गुरु उ.फा.३ में १५।४३ J मंत्र से, सती पूजन, मन्वादि, मेला सुथरे शाह दिल्ली, वृषभोत्सव, भारतीय हिन्दी दिवस, पिठौरी ३०, नक्त व्रत पूर्ति

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

भाद्रपद कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	४	४	५	३	३	०	६	१०	९	७
२०	२४	२३	३	३	६	०	१०	१०	१०	११	२५
४७	४६	२७	१४	१०	९	६	३२	३२	२१	१५	३८
१३	५७	२०	२०	९	२३	७	४७	४७	२४	४०	१३
५८	७११	३८	४४	१२	६४	५	३	३	२	१	०
१५	१२	२३	१७	५१	२९	५०	११	११	२०	२०	१६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ७ सितंबर): ६ गु. | ४ शु.श. | ३ | ७ के. | ५ सू. मं.बु. | २ चं. | ८ प्लू. | ११ ह. | १ रा. | ९ | १० ने. | १२

कर्क राशि पर शनि का प्रवेश देश के मध्य भाग में विनाशकारी फलप्रद है। दक्षिणी देशों व राष्ट्रों में अराजकता कलह एवं राजनैतिक तनाव बढ़कर अग्निकाण्ड, बम विस्फोटादि से दुर्घटनाकारी फल रहेंगे। शनि मंगल का द्विर्द्वादश योग भी यवन राष्ट्रों में उत्पात वृद्धि फलकारक है। यथा—**यदा कर्क स्थितः सौरिर्मध्यदेशे भवेच्छुभम्। नागपुर विनश्येत अन्यैर्दुर्भिक्षमुच्यते॥** श्रीलंका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका व अमेरिका के क्षेत्रों में जन आन्दोलन, आतंकवादी घटनाएं तथा वाहन यान दुर्घटनाओं से जनहानि होकर शासकों में भय व्याप्त होगा। देश के केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में बार-बार पद परिवर्तन के नाटकीय प्रदर्शन होने से जनता में क्षोभ पैदा होगा। **तेजी मन्दी विचार**—मास में ग्रहों का राशि परिवर्तन आकस्मिक रूप से हर प्रकार के व्यापारों में तेजी का संचार करेगा। प्रतिपदा का क्षय जौ, चना, चावल, गेहूं, मूंग, मोंठ, बाजरा में तेजी कारक है। कृ. ७ को शनि कर्क में सोना, चांदी, लोहा, ताम्बा, पीतल व स्टीलादि धातुओं में तेजीप्रद है। भौमवती अमावस्या गुड़, चीनी, शक्कर, हर प्रकार के तेलों में झटके की तेजी का फलप्रदाता है। पशुओं में मन्दी। मशीनी सामान व रसायन पदार्थ तेज एवं शेयर बाजारों में तेजी का जबरदस्त रुख बनेगा। **आकाश लक्षण**—सूर्य से आगे गुरु पीछे शनि शुक्र वर्षा की कमी कारक है। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, अरुणाचल, मेघालय आदि पर्वतीय स्थानों में वर्षा होगी। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व मध्यम प्रदेश में कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। वायु वेग से फसलों में हानि तथा कीटाणुओं द्वारा रोगोत्पात बढ़ेगा। **शकुन विचार**—भाद्रपद कृष्ण पक्ष की रात्रि में चन्द्र के चारों तरफ यदि दो कुण्डल दिखाई दें तो वर्षा श्रेष्ठ होकर उपज होती है। यथा—**दो कुण्डल शशि कूं रहे, इक पास इक दूर। बिरखा झड़ी लगायसी नदी नाले भरपूर॥**

ता. १४ सितम्बर ❖ भाद्रपद कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १४ सितम्बर): ६ गु. | ४ शु.श. | ३ | ७ के. | ५ सू. बु. मं. चं. | २ | ८ प्लू. | ११ ह. | १ रा. | ९ | १० ने. | १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	४	४	५	३	३	०	६	१०	९	७
२७	२०	२८	१०	३	१३	०	१०	१०	१०	११	२५
३५	१८	६	४२	४०	४५	४५	१०	१०	१३	६	४०
४०	४३	२५	३८	२१	५१	३३	३१	३१	१७	४९	३९
५८	७८६	३८	८८	१२	६६	५	३	३	२	१	०
२९	२३	३०	१९	५६	८	२१	११	११	१५	१०	२८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-13 श्री सं. २०६१ शाके १९२६

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२४	१	बु	३३	३८	१९	३५	उफा	२८	२७	१७	३०	शुभ	१८	२०	१३	२८	किं	४	१९	७	५१
२५	२	गु	३१	३३	१८	४५	ह	२८	१०	१७	२४	शु	१४	१०	११	४८	बा	२	४२	७	१३
२६	३	शु	२८	३६	१७	३५	चि	२७	३	१६	५८	ब	९	१७	९	५१	तै	०	१०	६	१२
२७	४	श	२४	५१	१६	८	स्वा	२५	१४	१६	१५	ऐं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	२४	५१	१६	८
२८	५	र	२०	४४	१४	२७	वि	२२	४९	१५	१७	वि	५१	२३	२६	४३	बा	२०	४४	१४	२७
२९	६	चं	१५	५९	१२	३४	अनु	१९	५५	१४	८	प्री	४४	३४	२३	५९	तै	१५	५९	१२	३४
३०	७	मं	१०	४९	१०	३०	ज्ये	१६	३५	१२	४८	आ	३७	२६	२१	९	ब	१०	४९	१०	३०
३१	८	बु	५	२०	८	१९	मू	१२	५६	११	२१	सौ	३०	५	१८	१३	ब	५	२०	८	१९
०	९	बु	५९	३८	३०	२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
आ१	१०	गु	५३	५१	२७	४४	पूषा	९	५	९	५०	शो	२२	३६	१५	१४	तै	२६	४३	१६	५३
२	११	शु	४८	९	२५	२८	उषा	५	१२	८	१६	अति	१५	६	१२	१४	ब	२०	५७	१४	३५
३	१२	श	४२	४७	२३	१९	श्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सु	७	४५	९	१९	ब	१५	२४	१२	२२
४	१३	र	३७	५९	२१	२४	शत	५५	२०	२८	२१	धृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१०	१७	१०	२०
५	१४	चं	३४	०	१९	५०	पूभा	५३	२८	२७	३७	गं	४८	२९	२५	३७	ग	५	५२	८	३४
६	१५	मं	३१	७	१८	४१	उभा	५२	४७	२७	२१	वृ	४३	३८	२३	४१	वि	२	२४	७	१२

ति	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घ	मि	अस्त घं	मि
१	३०	४३	६	७	१८	२५	३१	२९	15	कन्या	४	२८	३४	९	५४	६	३५	१९	५
२	३०	३९	६	८	१८	२३	१	३०	16	तु.२९।१३	४	२९	३२	४०	३२	७	३४	१९	३५
३	३०	३५	६	८	१८	२२	२	आ१	17	तुला	५	०	३१	१२	३४	८	३५	२०	८
४	३०	३०	६	९	१८	२१	३	२	18	तुला	५	१	२९	४६	३६	९	३८	२०	४५
५	३०	२६	६	९	१८	२०	४	३	19	वृ.९।३३	५	२	२८	२२	३८	१०	४४	२१	२६
६	३०	२२	६	१०	१८	१९	५	४	20	वृश्चिक	५	३	२७	०	३९	११	५१	२२	१५
७	३०	१८	६	१०	१८	१७	६	५	21	धनु ११।४८	५	४	२५	३९	४१	१२	५१	२३	११
८	३०	१३	६	११	१८	१६	७	६	22	धनु	५	५	२४	२०	४३	१४	३	२४	०
९	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१०	३०	९	६	११	१८	१५	८	७	23	म.१५।२६	५	६	२३	३	४४	१५	१	२४	१५
११	३०	५	६	१२	१८	१४	९	८	24	मकर	५	७	२१	४७	४६	१५	५१	२५	२२
१२	३०	१	६	१२	१८	१३	१०	९	25	कुं.१८।५	५	८	२०	३३	४८	१६	३४	२६	३१
१३	२९	५६	६	१३	१८	११	११	१०	26	कुंभ	५	९	१९	२१	४९	१७	११	२७	३८
१४	२९	५२	६	१३	१८	१०	१२	११	27	मी.२१।५	५	१०	१८	१०	५२	१७	४४	२८	४२
१५	२९	४८	६	१४	१८	९	१३	१२	28	मीन	५	११	१७	२	५३	१८	१६	२९	४४

ता. १५ से २८ सित. सन् २००४ ई., रा. मिति २४ भाद्रपद से ६ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिणगोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

पूर्वा फाल्गुनी में बुध २३।२८, कल्प सूत्र पाठ जैन, भा. इन्जीनियर्स डे
चन्द्रदर्शन मु.३० समता कारक, कन्या में सूर्य १६।४२, मंगल A
भ. २८।५३ से, शाबान मु. मास ८ प्रा., हरितालिका ३, मन्वादि B
भ. १६।८ तक, श्री गणेश जन्म चतुर्थी, विनायक ४, पत्थर C
ऋषि पंचमी व्रत, जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), क्षमावणी पर्व जैन
ललिता षष्ठी, बलदेव ६, सूर्य ६, मेला ब्रजमंडल, अनु.नक्षत्र D
भ. १०।३० से २१।२५ तक, मुक्ता भरण ७, संतान ७, E
दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, दधीचि ज., श्री चन्द्र नवमी F
नवमी क्षय: D में ज्येष्ठा, गौरी आवाहन, वक्री हर्षल शत. १ में ६।४२
उत्तरा फाल्गुनी में बुध १६।२६, दशावतार १०, बाबा रामदेव G
भ. १४।३५ से २५।२८ तक, पद्मा एकादशी व्रत सबका (जलझूलनी) H
पंचक प्रारंभ १८।५ से, बुध कन्या में १२।७, हरिवासर ६।४७।
सूर्य हस्त में २२।५, प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्रि व्रतारंभ
भ. १९।५० से, अनन्त चतुर्दशी, मेला सोडल (जालंधर), गुरु J
भ. ७।१२ तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश १६।१५, सत्य व्रत, K

A कन्या में २८।१५, शुक्र श्लेषा में २०।३० संक्रांति मु. ३० उभी, नक्त व्रतोद्यापन, तेलाधर तप जैन, बाबा रामदेव मेला प्रा.(राज.) B वाराह ज., गौरी ३, अश्विनी ३ में राहु, स्वाती १ में केतु १३।१ C ४, चन्द्रदर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सव (महाराष्ट्र), जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष), कलंकी ४, पर्युषण पर्व समाप्त जैन, बुध पूर्व में अस्त २१।५९ E अपराजिता ७, महालक्ष्मी व्रतारंभ F (उदासीन संप्रदाय), अदुःख ९, सायन सूर्य तुला में २१।४१, रवि दक्षिण गोले, भागवत सप्ताह प्रा., मूल नक्षत्र में ज्येष्ठा, गौरी विसर्जन G मेला पूर्ण (राज.),राष्ट्रीय आश्विनारंभ, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति H मेला चार भुजा नाथ गढ़भोर (उद.), हरिवासर २५।२८ से। तक, श्री वामन ज., भुवनेश्वरी ज. K पूर्णिमा व्रत व पुण्य, गोत्रिरात्रि व्रत पूर्ति, भागवत सप्ताह समा., प्रोष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, सन्यासियों का चातुर्मास पूर्ण, महालयारंभ J उ.फा.४ में २६।८

भाद्रपद शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ सितंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	५	४	५	३	३	०	६	१०	९	७
५	९	३	२४	५	२२	१	९	९	९	१८	२५
२४	५०	१५	१	२४	४०	२६	४५	४५	५५	५८	४५
२०	५३	२	२२	१	२२	१६	५	५	५३	४	२१
५८	८५३	३८	१०८	१२	६७	४	३	३	२	०	०
४३	४९	३१	५०	५९	४१	४८	११	११	०४	५९	४८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

७ के. | ५ बु. | प्लू. ८ | ६ सू. गु. मं. | ४ शु. श. | ३ | ९ चं. | १२ | ने. १० | २ | ११ ह. | १ रा.

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कन्या राशि पर चार ग्रहों का योग जगत के अनेक स्थानों पर विस्फोटक पदार्थों द्वारा जन धन की हानिकारक है। यथा—एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥ देश के सीमावर्ती क्षेत्रों पर सैन्य संघर्ष अथवा युद्धोन्माद बढ़ेगा। शक्तिशाली राष्ट्रों रूस, अमेरिका, चीन, जर्मन आदि राष्ट्रों में भी आपसी कटुता व तनाव उभरकर सम्पूर्ण विश्व की जनता में भयवृद्धि होगी। शासकीय दल में विचलित बढ़ेगी। विपक्षी दल विशेष प्रगतिशील व कर्मठ होकर सुरक्षात्मक कार्यवाहियों में सहयोगी बनेंगे। कट्टरवादी दलों के द्वारा अनेक स्थानों पर उपद्रव होंगे। **तेजी मन्दी विचार**—गुरुवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० व कन्या का सूर्य संक्रमण मु. ३० पीली वस्तुओं, सरसों, चना व दालवाना में तेजीकारक है। चावल, गेहूं, मूंग, मोंठ में घटाबढ़ी रहेगी। शु. ९ का क्षय चीनी, गुड़, शक्कर, मेवा सामग्री, बादाम, किसमिस, अखरोट, काजू में तेजी फलकारक है। कृ. १३ हस्ते सूर्य से रुई, कपास, सूत, ऊनी, रेशमी वस्त्रों में उठाव होकर बाजार लाईन व्यापारियों में व्यवसायिक जिज्ञासा की वृद्धि कारक है। **आकाश लक्षण**—पर्वतीय क्षेत्रों पर कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। देश के अधिकांश भाग में आकाश साफ रहकर निर्मल रहेगा। पश्चिमी प्रान्तों में आन्तरिक उम्मस बढ़कर कुछेक स्थानों पर बूंदाबांदी होने के योग हैं। **शकुन विचार**—भाद्रपद शुक्ल पक्ष में चित्रा, स्वाती व विशाखा नक्षत्र के दिन वर्षा नहीं हो तो आगे वर्षा की कमी रहकर धान्यादिक भावों में तेजी का रंग रहता है। यथा—यदि भाद्रपदे मासि चित्रा स्वाती वैशाख के। नाऽति वर्षति पर्जन्यो शान्त मेघान विनिर्दिशेत्॥ भाद्री पूर्णिमा को बादल दर्शन आगे मन्दी सूचक है।

ता. २८ सितंबर ❖ भाद्रपद शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

७ के. | ५ | ४ शु. श. | प्लू. ८ | ६ सू. गु. बु. मं. | ३ | ९ | १२ चं. | ने. १० | २ | ११ह. | १ रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	५	५	५	३	३	०	६	१०	९	७
११	४	७	४	६	२९	१	९	९	९	१८	२५
१७	२३	७	५१	४१	२९	४३	२६	२६	४३	५२	५०
२	११	१५	४०	४९	१३	२२	१	१	५०	३४	१४
५८	८०७	३८	१०९	१२	६८	४	३	३	१	०	०
५३	३१	४७	३२	५७	४४	१३	११	११	५४	४९	५५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आश्विन कृष्ण पक्ष-१४

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २९ सितं. से १४ अक्टू. सन् २००४ ई., रा. मिति ७ से २२ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं. (दिनांक)	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (५ घं. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	विवरण
७	१	बु	२९	३४	१८	४	रे	५३	२९	२७	३८	ध्रु	३९	५३	२२	१२	बा	०	९	६	१८	२९	४४	६	१४	१८	८	१४	१३	29	मे. २७।३८	५	१२	१५	५५	५६/५८	१८	४६	६	४४	पंचक समाप्ति २७।३८, प्रतिपदा श्राद्ध A शब-ए-बारात मु.
८	२	गु	२९	३३	१८	४	अ	५५	४२	२८	३२	व्या	३७	२०	२१	११	ग	२९	३३	१८	४	२९	३९	६	१५	१८	७	१५	१४	30	मेष	५	१३	१४	५१	५७	१९	१८	७	४३	बुध हस्त में २३।३३, अशून्य शयन २ व्रत, द्वितीया श्राद्ध, A
९	३	शु	३१	८	१८	४३	भ	५९	२९	३०	३	ह	३६	३	२०	४१	व	०	७	६	१८	२९	३५	६	१५	१८	६	१६	१५	01	मेष	५	१४	१३	४८	५९/०	१९	५१	८	४२	भ. ६।१८ से १८।४३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध, B
१०	४	श	३४	१७	१९	२९	कृ	६०	०	-	-	व	३५	५७	२०	३९	ब	२	३	७	१६	२९	३१	६	१६	१८	४	१७	१६	2	वृ. १२।३२	५	१५	१२	४८	२	२०	२६	९	४१	हस्त में मंगल १६।१९, दशरथ ललिता व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, C
११	५	र	३८	४९	२२	४८	कृ	४	४१	८	९	सि	३६	५४	२१	२	कौ	६	२३	८	५०	२९	२७	६	१७	१८	३	१८	१७	3	वृष	५	१६	११	५०	४	२१	६	१०	३९	पंचमी श्राद्ध B अक्टुबर मा. १० ता. ३१ प्रा.
१२	६	चं	४४	२३	२४	२	रो	११	६	१०	४४	व्य	३८	३८	२१	४४	ग	११	२९	१०	५३	२९	२२	६	१७	१८	२	१९	१८	4	मि. २४।८	५	१७	१०	५४	७	२१	५१	११	३६	भ. २४।२ से, चन्दन छठ, षष्ठी श्राद्ध, व्यतिपात पुण्यं
१३	७	मं	५०	३०	२६	५९	मृग	१८	१६	१३	३६	वरी	४०	४८	२२	३७	वि	१७	२३	१३	१५	२९	१८	६	१८	१८	१	२०	१९	5	मिथुन	५	१८	१०	१	९	२२	४०	१२	३१	भ. १३।१५ तक, सप्तमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
१४	८	बु	५६	३३	२८	५६	आ	२५	४०	१६	३४	परि	४२	५९	२३	३०	बा	२३	३३	१५	४३	२९	१४	६	१८	१८	०	२१	२०	6	मिथुन	५	१९	९	१०	११	२३	३३	१३	२२	कालाष्टमी, जिवित्पुत्रिका ८ व्रत, अष्टमी श्राद्ध, गुरु उदय D
१५	९	गु	६०	०	-	-	पुन	३२	४३	१९	२४	शि	४४	४७	२४	१४	तै	२९	२२	१८	४	२९	१०	६	१९	१७	५९	२२	२१	7	क. १२।४३	५	२०	८	२१	१३	२४	०	१४	१	मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, भूदान ज.
१६	९	शु	१	५९	७	७	पु	३८	५५	२१	५३	सि	४५	५१	२४	४०	ग	१	५९	७	७	२९	६	६	१९	१७	५८	२३	२२	8	कर्क	५	२१	७	३४	१६	२४	२९	१४	५०	भ. २०।३ से, चित्रा में बुध १३।५, दशमी श्राद्ध, भा. वायु सेना दिवस
१७	१०	श	६	१९	८	५२	श्ले	४३	५१	२४	५२	सा	४५	५२	२४	४१	वि	६	१९	८	५२	२९	१	६	२०	१७	५६	२४	२३	9	सिं. २३।५२	५	२२	६	५०	१८	२५	२६	१५	२८	भ. ८।५२ तक, शुक्र पू.फाल्गुनी में २८।६, एकादशी श्राद्ध, E
१८	११	र	९	१३	१०	२	म	४७	५५	२५	२४	शुभ	४४	४०	२४	१२	बा	९	१३	१०	२	२८	५७	६	२०	१७	५५	२५	२४	10	सिंह	५	२३	६	८	२०	२६	२४	१६	१	सूर्य चित्रा में ११।७, इंदिरा एकादशी व्रत सबका, द्वादशी F
१९	१२	चं	१०	२८	१०	३२	पूफा	४९	२	२५	५८	शु	४२	१०	२३	१३	तै	१०	२८	१०	३२	२८	५३	६	२१	१७	५४	२६	२५	11	सिंह	५	२४	५	२८	२३	२७	२२	१६	३३	सोम प्रदोष व्रत, महा द्वादशी व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध
२०	१३	मं	१०	५	१०	२४	उफा	४९	१६	२६	४	ब्र	३८	२५	२१	४४	व	१०	५	१०	२४	२८	४९	६	२२	१७	५३	२७	२६	12	कं. ८।१३	५	२५	४	५१	२४	२८	२०	१७	३	भ. १०।२४ से २२।५ तक, बुध तुला में ११।४४, मास G
२१	१४	बु	८	९	९	३८	ह	४८	७	२५	३७	ऐं	३३	३०	१९	४४	श	८	९	९	३८	२८	४५	६	२२	१७	५२	२८	२७	13	कन्या	५	२६	४	१५	२७	२९	२०	१७	३४	गुरु हस्त १ में १५।३०, देवपितृ कार्य अमावस्या, सर्व पितृ H
२२	३०	गु	४	५२	८	२०	चि	४५	४७	२४	४२	वै	२७	३५	१७	२५	ना	४	५२	८	२०	२८	४१	६	२३	१७	५१	२९	२८	14	तु. १३।१२	५	२७	३	४२	२९	३०	२१	१८	६	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., कलश स्थापन ८।२० बाद

C महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दिवस D पूर्व में १३।४७ E गुरु नानक देव शहीद दिवस (प्रा. मत से) F श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध
G शिवरात्री व्रत, चतुर्दशी श्राद्ध १०।२४ बाद, विषाग्नि शस्त्रादि, मृतकों का श्राद्ध H श्राद्ध, पितृ विसर्जन

पूर्णोदयं मुहूर्त ६ अक्टूबर

आश्विन कृ. ८ बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ६ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	५	५	५	४	३	०	६	१०	९	७
१९	१४	१२	१९	८	८	२	९	९	९	१८	२५
९	३०	१८	१९	२५	४३	२८	०	०	२९	४६	५८
१०	४३	५	३४	८	२८	३९	३५	३५	२७	४८	२५
५९	७३३	३८	१०४	१२	६९	४	३	३	१	०	१
११	५	५८	२९	५१	५७	३०	११	११	३९	३५	१०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

[दोनों कुण्डलियां प्रात:काल की हैं]

कुण्डली (ता. ६ अक्टूबर): ३ चं.; ४ श.; ५ शु.; ६ सू. मं. बु. गु.; ७ के.; ८ प्लू.; ९; १० ने.; ११ ह.; १२; १ रा.; २

मासारम्भ में चार ग्रहों का योग पितृपक्ष में तिथिवृद्धि तथा मास में ५ गुरुवार होना पश्चिमी राष्ट्रों में यद्धोन्माद, गृह कलह व अराजकता होकर शासकों में भयकारक है। यथा—चत्रमासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पती। विग्रह: **पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥** जगत के प्रमुख शासकों के सामने कई राजनैतिक समस्याएं उत्पन्न होने से महत्वपूर्ण कामों के निर्णय में विलम्ब होंगे। देश के राजनीतिज्ञों की स्वकीय पद स्थिति बनाये रखने में विशेष परेशानियों का सामाना करना पड़ेगा। सूर्य का हर्षल से षडाष्टक व मंगल गुरु से युति योग शासन सत्ता की डोर संभालने के लिए वह्नि परीक्षावत् रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**— पक्षारम्भ में सिंहे शुक्र से सोना, चांदी, ताम्बा, जौ, चना, गेहूं, गुड़, चीनी, शक्कर में तेजी कारक है। कृ. ४ शनिवार को हस्ते मंगल सरसों, अलसी, अरंड, मुंगफली, बिनौला आदि के भावों में मन्दी रहेगी। कृ. ११ चित्रायां रवि से लोहा इलास्टिक व प्लास्टिक सामान में मन्दी। शेयर बाजार में मन्दी का झटका रहेगा। मिश्री, मेवा सामान, बादाम, काजू, अखरोट तथा किशमिस आदि में तेजी चलेगी। किराणा सामान व लकड़ी व्यापार में घटाबढ़ी रहेगी। **आकाश लक्षण**— उत्तरी भारत के अधिकांश प्रदेशों में मानसून अपने अंतिम चरण में रहेगा। अत: दिन का तापमान अधिक एवं रात्रि सर्द होकर मौसम परिवर्तन आरम्भ होगा। दक्षिणी प्रान्तों के कुछ स्थानों व पूर्वी पर्वतीय इलाकों पर कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। **शकुन विचार**— आश्विन कृष्णा दशमी से द्वादशी तक मेघ गर्जन करें बिजुली चमके तो आगे गेहूं के भावों में विशेष तेजी रह सकेगी। यथा—**दशमी अरु एकादशी, तथा द्वादशी जान। घन गरजे बिजुरी खींवे गेहूं तेज पिछान॥** कृष्णा १, ८, १० को बादल आने पर वर्षा निश्चित होती है।

कुण्डली (ता. १४ अक्टूबर): ३; ४ श.; ५ शु.; ६ सू. मं. गु. चं.; ७ बु. के.; ८ प्लू.; ९; १० ने.; ११ ह.; १२; १ रा.; २

ता. १४ अक्टू. ❖ आश्विन कृ. ३० गुरुवार प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	५	६	५	४	३	०	६	१०	९	७
२७	२५	१७	२	१०	१८	२	८	८	९	१८	२६
३	३२	३०	५२	७	६	४९	३५	३५	१७	४२	८
४२	४४	२७	५०	२५	५२	५३	९	९	१९	५९	२९
५९	८३४	३९	९८	१२	७०	२	३	३	१	०	१
२९	४४	०९	२२	४०	५९	४२	११	११	२०	२०	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

आश्विन शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. १५ से २८ अक्टूबर सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २३ आश्विन से ६ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद्- हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि
२३	१	शु	०	२९	६	३५	स्वा	४२	३२	२३	२४	वि	२०	५२	१४	४४	व	०	२९	६	३५	२८	३६
०	२	शु	५५	१७	२८	३०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	३	श	४९	२९	२६	११	वि	३८	४०	२१	५२	प्री	१३	३२	११	४९	तै	२२	२५	१५	२२	२८	३२
२५	४	र	४३	२२	२३	४५	अनु	३४	२७	२०	११	आ	५ / ५०	४१ / ५८	८ / २१	४४ / ४५	व	१६	२५	१२	५९	२८	२८
२६	५	चं	३७	११	२१	२८	ज्ये	३०	६	१८	२८	शो	४९	६०	२६	२५	ब	१०	१५	१०	३१	२८	२४
२७	६	मं	३१	७	१८	५३	मू	२५	५१	१६	४७	अति	४२	१२	२३	१९	कौ	४	६	८	४	२८	२०
२८	७	बु	२५	२२	१६	३५	पूषा	२१	५४	१५	१२	सु	३४	४१	२०	१९	व	२५	२२	१६	३५	२८	१६
२९	८	गु	२०	४	१४	२९	उषा	१८	२३	१३	४९	धृ	२७	३३	१७	२८	ब	२०	४	१४	२९	२८	१२
३०	९	शु	१५	२१	१२	३६	श्र	१५	२७	१२	३९	शू	२०	५४	१४	४९	कौ	१५	२१	१२	३६	२८	८
का१	१०	श	११	२१	११	१	ध	१३	१२	११	४५	गं	१४	४९	१२	२४	ग	११	२१	११	१	२८	४
२	११	र	८	८	९	४४	शत	११	४५	११	११	वृ	९	२२	१०	१४	वि	८	८	९	४४	२८	०
३	१२	चं	५	५०	८	५०	पूभा	११	११	१०	५८	ध्रु	४	३९	८	२१	बा	५	५०	८	५०	२७	५६
४	१३	मं	४	३२	८	१९	उभा	११	३६	११	९	व्या	० / ५७	४२ / ३९	५ / २१	४८ / ३१	तै	४	३२	८	१९	२७	५२
५	१४	बु	४	११	८	१५	रे	१३	६	११	४६	व	५५	२७	२८	४२	व	४	११	८	१५	२७	४८
६	१५	गु	५	१७	८	३९	अ	२५	४५	१२	५०	सि	५४	१३	२८	१३	ब	५	१७	८	३९	२७	४५

स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि	अस्त घं	मि	
६	२३	१७	५०	३०	२९	15	तुला	५	२८	३	११	५९ / १०	७	२४	१८	४२	चन्द्र दर्शन मु. १५ महर्घता, अग्रसेन जयंती
०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया क्षयः A १३।११, संक्रांति मु. ३० उभी, रोजा प्रा. मु.
६	२४	१७	४९	का१	म१	16	वृ. १५।१६	५	२९	२	४१	३३	८	३१	१९	२३	रमजान मु. मा.९ प्रा., तुला में सूर्य २८।३६, स्वाती में बुध A
६	२५	१७	४८	२	२	17	वृश्चिक	६	०	२	१४	३५	९	४१	२०	१०	भ. १२।५९ से २३।४५, विनायक ४ व्रत
६	२५	१७	४७	३	३	18	ध. १८।२८	६	१	१	४९	३६	१०	५०	२१	५	उपांग ललिता ५ व्रत
६	२६	१७	४६	४	४	19	धनु	६	२	१	२५	३८	११	५७	२२	७	सरस्वती आवाहन B प्रा. १६।३५ से, जैन आयंबिल ओली प्रा.
६	२७	१७	४५	५	५	20	म. २०।५०	६	३	१	३	३९	१२	५७	२३	१४	भ. १६।३५ से २७।३० तक, सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा B
६	२७	१७	४४	६	६	21	मकर	६	४	०	४२	४२	१३	४९	२४	०	शुक्र उ.फाल्गुनी में १०।१०, दुर्गाष्टमी, भद्रकाल्यावतार, सरस्वती C
६	२८	१७	४३	७	७	22	कुं. २४।१०	६	५	०	२४	४३	१४	३३	२४	२२	पंचक प्रारंभ २४।१० से, मंगल चित्रा में २७।१६, महानवमी, D
६	२९	१७	४२	८	८	23	कुंभ	६	६	०	७	४५	१५	११	२५	२१	भ. २२।२० से, शुक्र कन्या में प्रवेश २८।५९, सूर्य स्वाती में E
६	२९	१७	४१	९	९	24	मी. २८।५९	६	६	५९	५२	४६	१५	४५	२६	३२	भ. ९।४४ तक, विशाखा में बुध २४।२३, पापांकुशा एकादशी F
६	३०	१७	४०	१०	१०	25	मीन	६	७	५९	३८	४८	१६	१६	२७	३४	सोम प्रदोष व्रत
६	३१	१७	३९	११	११	26	मीन	६	८	५९	२६	५०	१६	४६	२८	३३	नेपच्यून मार्गी २७।२२ F व्रत सबका, भरत मिलाप
६	३१	१७	३९	१२	१२	27	मे. ११।४६	६	९	५९	१६	५२	१७	१६	२९	३१	भ. ८।१५ से २०।२३ तक, पंचक समा. ११।४६, सत्य व्रत, G
६	३२	१७	३८	१३	१३	28	मेष	६	१०	५९	८	५४	१७	४८	३०	२९	पूर्णिमा पुण्यं, महर्षि वाल्मीकि ज., कार्तिक स्नान प्रा., उर्स H

C बलिदान, अन्नपूर्णा परिक्रमा समाप्त १४।२९ तक, मेला ज्वालामुखी, तारादेवी (हि.प्र.), महाष्टमी D दुर्गानवमी, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र पूर्ण, विजया दशमी (रावण दाह), अस्त्र शस्त्र पूजन E २१।३१, अपराजिता व शमी पूजन, बौद्धावतार १०, श्री माधवाचार्य ज., सायन वृश्चिक में सूर्य ७।२१, हेमंत ऋतु प्रा., राष्ट्रीय कार्तिकारंभ G पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, जैन आयंबिल ओली समाप्त, चन्द्रग्रहण H अली शाह कलन्दर पानीपत मु., बुध पश्चिम में उदय १०।२५

आश्विन शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	५	६	५	४	३	०	६	१०	९	७
४	५	२२	१४	११	२६	३	८	८	९	१८	२६
०	५	५	७	३५	२६	६	१२	१२	८	४१	१८
४२	५२	१	२७	३०	४	३६	५४	५४	५०	२१	४६
५९	८१३	३९	१३	१२	७१	१	३	३	१	०	१
४२	५२	१८	५३	२७	४४	५८	११	११	२	०६	३४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

८प्लू. | ६गु.मं. | ७ | ५ शु. | ९ | सू. के. बु. | ४ श. | १०चं. ने. | १रा. | ११ ह. | ३ | १२ | २

नवरात्र की तिथि का क्षय और शनिवारी तुला संक्रांति रोग वृद्धि, महामारी अथवा आणविक शस्त्र प्रहार की विषैली वायु से जन जीवन की हानि कारक है। यथा—सौरेश्च वारे रवि संक्रमश्चेद् दुर्भिक्षमायाति च सर्वधान्यम्। पृथ्वी स रोगा नृपतेरतीव दुश्येत् भूमौ युधि दारुणं भयम्॥ तथा कृष्णे वृद्धिर्भयं शुक्ले मन्दार्के कुज संक्रमः। प्रजाभिर्विजला मेघा परचक्रं विनिर्दिशेत्॥ बड़े राष्ट्र अमेरिका, रूस, चीन, जापान, फ्रांस आदि स्वार्थ परायण देश होते हुए भी पारस्परिक राजनैतिक और उग्रवादी ताकतों को निपटाने का भरसक प्रयत्न करेंगे। शांति वार्ता में भारतीय शक्ति अग्रगण्य होगी फिर भी विश्व के मानचित्र में कई परिवर्तन होने की संभावना परिलक्षित रहेगी। सूर्य का शनि से केन्द्र योग नेष्ट फलदायक है। **तेजी मन्दी विचार**—क्षयतिथि के दिन चन्द्रदर्शन मु. १५ व शनिवारी संक्रांति मु. ३० धान्य भावों के साथ रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, वस्त्रों में तेजी फलकारक है। शु. १० स्वात्यां रवि से तेल, तिलहन, जौ, गेहूं, चना, चीनी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी होकर तेजी कारक है। पक्ष में मंगल-गुरु-शुक्र का युति योग चान्दी सोना व रेशमी वस्त्रों ऊन में उछाले की तेजी कारक रहेगा। शेयर बाजार में आकस्मिक तेजी मन्दी का जोर रहने से सतर्कता पूर्ण व्यापार करना श्रेयस्कर रह सकेगा। **आकाश लक्षण**— पक्ष में ऋतु परिवर्तन का प्रभाव बढ़ेगा। कुछ स्थानों पर ओला वर्षा भी होगी। उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों में बादल चाल व बूंदाबांदी होगी। केरल, मद्रास, कर्णाटका में वायु जोर विशेष रहेगा। **शकुन विचार**— आश्विन शु. ७-८ तिथि को वर्षा होने पर मन्दी का संचार होता है। यथा—**सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी सब संशय मिट जाय॥** आसोज की पूर्णिमा को आकाश निर्मल रहे तो सुभिक्ष होता है।

ता. २८ अक्टूबर ❖ आश्विन शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

८प्लू. | सं.गु.शु. ६ | ५ | ९ | सू. ७ के. बु. | ४ श. | १० ने. | १ | ११ ह | ३ | चं. रा. | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	५	६	५	५	३	०	६	१०	९	७
१०	९	२६	२४	१३	४	३	७	७	९	१८	२६
५९	२६	४०	५२	१	५०	१८	५०	५०	२	४१	३०
८	४४	४२	५५	४६	१४	७	३९	३९	३३	२१	९
५९	८१६	३९	९०	१२	७२	१	३	३	०	०	१
५६	७	२९	३	९	२४	१२	११	११	४३	८	४४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
उ	अ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१६

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २९ अक्टूबर से १२ नवम्बर सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिती ७ से २१ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
७	१	शु	७	३०	९	३२	ध	१९	३५	१४	२३	व्य	५३	५४	२८	६	कौ	७	३०	९	३२
८	२	श	१०	५५	१०	५६	कृ	२४	३५	१६	२३	वरि	५४	२१	२८	२१	ग	१०	५५	१०	५६
९	३	र	१५	२९	१२	४६	रो	३०	३८	१८	४९	परि	५५	४८	२८	५३	वि	१५	२९	१२	४६
१०	४	चं	२०	५९	१४	५८	मृ	३७	३०	२१	३५	शि	५७	४२	२९	३९	बा	२०	५९	१४	५८
११	५	मं	२७	६	१७	२६	आ	४४	५२	२४	३२	सि	५९	५२	३०	३२	तै	२७	६	१७	२६
१२	६	बु	३३	२३	१९	५७	पुन	५२	१५	२७	३०	सा	६०	०	-	-	ग	०	१४	६	४२
१३	७	गु	३९	२९	२२	२१	पु	५९	१०	३०	१५	सा	१	५६	७	२३	वि	६	२५	९	११
१४	८	शु	४४	२३	२४	२३	श्ले	६०	०	-	-	शुभ	३	३६	८	४	बा	११	५८	११	२५
१५	९	श	४८	५	२५	५२	श्ले	५	४	८	४०	शु	४	२८	८	२६	तै	१६	२४	१३	१२
१६	१०	र	५०	५	२६	४१	म	९	३४	१०	२९	ब्र	४	१२	८	२०	व	१९	२७	१४	२२
१७	११	चं	५०	११	२६	४४	पू.फा	१२	२१	११	३६	ऐं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ब	२०	२१	१४	४९
१८	१२	मं	४८	२२	२६	२	उ.फा	१३	१६	११	५९	वि	५४	५४	२८	३९	कौ	१९	२९	१४	२९
१९	१३	बु	४४	४६	२४	३६	ह	१२	२०	११	३८	प्री	४८	५४	२६	२५	ग	१६	४६	१३	२४
२०	१४	गु	३९	३५	२२	३२	चि	९	४४	१०	३६	आ	४१	३९	२३	२२	वि	१२	२०	११	३८
२१	३०	शु	३३	९	१९	५९	स्वा	५	४२	९	०	सौ	३३	२४	२०	५	च	६	३०	९	११

दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	विवरण
२७	४१	६	३३	१७	३७	१४	१४	29	वृ. २०।५०	६	११	५९	२	५९/५८	१८	२३	७	२८	पुष्य १ में शनि २०।३, अशून्य शयन २ व्रत, व्यतिपात पुण्यं, A
२७	३७	६	३३	१७	३६	१५	१५	30	वृष	६	१२	५८	५८	५८	१९	१	८	२७	भ. २३।४७ से, गुरु रामदास जयंती (प्रा. मत से)
२७	३३	६	३४	१७	३५	१६	१६	31	वृष	६	१३	५८	५६	५९/०	१९	४४	९	२५	भ. १२।४६ तक, बुध वृश्चिक में १५।५६, कृष्ण ४ व्रत, B
२७	२९	६	३५	१७	३५	१७	१७	N1	मि. ८।१०	६	१४	५८	५६	१	२०	३१	१०	२१	मंगल तुला में ३०।२८, हस्त में शुक्र ११।५९, नवम्बर मा.११C
२७	२६	६	३६	१७	३४	१८	१८	2	मिथुन	६	१५	५८	५७	४	२१	२३	११	१४	अनुराधा में बुध २२।३५, प्लूटो ज्येष्ठा ४ में १८।४०C ता. ३० प्रा
२७	२२	६	३६	१७	३३	१९	१९	3	क. २०।१८	६	१६	५९	१	७	२२	१८	१२	३	भ. १९।५७ से, स्कंद षष्ठी व्रत A गुरु हस्त २ में १७।३४
२७	१८	६	३७	१७	३३	२०	२०	4	कर्क	६	१७	५९	८	८	२३	१४	१२	४६	भ. ९।११ तक, मंगल पश्चिम में उदय २७।१६
२७	१५	६	३८	१७	३२	२१	२१	5	कर्क	६	१८	५९	१६	१०	२४	०	१३	२४	सूर्य विशाखा में २९।४३, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, राधा D
२७	११	६	३८	१७	३१	२२	२२	6	सिं. ८।४०	६	१९	५९	२६	१२	२४	११	१३	५९	D कुण्ड स्नान मथुरा, शहादते हजरत अली मु.
२७	८	६	३९	१७	३०	२३	२३	7	सिंह	६	२०	५९	३८	१५	२५	८	१४	३०	भ. १४।२२ से २६।४१ तक F चौदस, दीपदान
२७	४	६	४०	१७	३०	२४	२४	8	कं. १९।१८	६	२१	५९	५३	१६	२६	५	१५	०	रमा एकादशी व्रत सबका, शनि वक्री २८।५४
२७	१	६	४१	१७	२९	२५	२५	9	कन्या	६	२३	०	९	१८	२७	३	१५	३०	गोवत्स द्वादशी E दान, श्री पद्म प्रभु ज. जैन, शब-ए-कद्र मु.
२६	५८	६	४१	१७	२९	२६	२६	10	तु. २३।११	६	२४	०	२७	२०	२८	२	१६	२	भ. २४।३६ से, प्रदोष व्रत, धन तेरस, धन्वंतरी ज., यम दीप E
२६	५४	६	४२	१७	२८	२७	२७	11	तुला	६	२५	०	४७	२२	२९	५	१६	३६	भ. ११।३८ तक, मास शिवरात्री व्रत, रूप चतुर्दशी, नरक F
२६	५१	६	४३	१७	२८	२८	२८	12	वृ. २५।३१	६	२६	१	९	२४	३०	११	१७	१५	स्वाती में मंगल ७।५८, ज्येष्ठा में बुध ११।३९, शुक्र चित्रा में G

B करक ४, करवा चौथ व्रत, दशरथ चौथ, सरदार पटेल ज., श्रीमती इंदिरा गांधी पुण्य दिवस

G १०।२६, देवपितृकार्य अमावस्या, महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कमला ज., महावीर निर्वाण दिवस जैन, जुमा तुल विदा मु.

कार्तिक कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	६	७	५	५	३	०	६	१०	९	७
१८	१६	१	६	१४	१४	३	७	७	८	१८	२६
५९	१५	५७	३७	३७	३१	२४	२५	२५	५८	४३	४४
१६	४०	२१	५९	३२	५३	४०	१२	१२	१३	२२	३३
६०	७२१	३९	८५	११	७३	०	३	३	०	०	१
१०	४२	४२	२८	४४	४	१९	११	११	२०	२५	५३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कुण्डली (ता. ५ नवंबर):
प्लू.बु. ८ | गु. ६ शु. | ९ | ७ सू. के. मं. | ४ श. चं. | ५ | १० ने. | ह. ११ | रा. १ | ३ | १२ | २
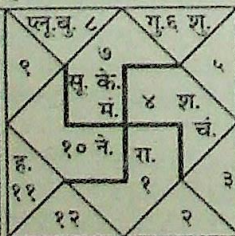
सूर्य मंगल का शनि व राहु के साथ केन्द्र योग तथा गुरु शुक्र का एक राशि पर योग होना विश्व धरातल पर कहीं युद्ध विभिषीका से जनता में भय वृद्धिप्रद है। यथा—**गुरु शुक्रौ यदैकस्थो नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः॥** यवन राष्ट्रों ईरान, ईराक, तुर्कीस्तान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में सीमा विवाद अथवा अराजकता होकर शासन सत्ता परिवर्तनकारी योगप्रद है। मंगल का उदय होना रक्तपात व उत्पातिक घटनाप्रद है। देश में कुछेक राजनैतिक दलों में आपसी तनाव बढ़कर झगड़े फिसाद व आतंकित घटनाओं का बाहुल्य रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**—कृ. ४ से तुला का मंगल धान्यों में मंहगाई कारक है। यथा—**भूमिपुत्रस्तुला जातः सर्व धान्य महर्घता। माषा मुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः॥** रुई, कपास, सूती, ऊनी वस्त्रों में तथा गेहूं, जौ, चना, चावल, मूंग, गुवार, मोंठ, बाजरा में तेजी रहेगी। कृ. ८ विशाखा सूर्य से रस पदार्थ चीनी, शक्कर, गुड़ व मूंगफली, अलसी, बिनौला में तेजी रहेगी। वक्री शनि कृ. ११ से चाय, तम्बाकू व नशीले पदार्थों में झटके की तेजी का योगप्रद है। **आकाश लक्षण**—पर्वतीय क्षेत्रों पर कुछ स्थानों पर बर्फ गिरने से सर्द हवायें रहेंगी तथा हिमाचल प्रदेश, बंगाल, मेघालय प्रान्तों में वर्षा का सामान्य योग है। पश्चिमी व दक्षिणी प्रान्तों में तेज वायु का प्रकोप रहकर बालकों व वृद्ध जनों में रोग वृद्धि रहेगी। **शकुन विचार**—कार्तिक कृष्णा एकादशी को बादल वर्षा होना आगामी आषाढ़ मास के लिए शुभ सूचक होता है। यथा—**कार्तिक बदी एकादशी बादल वर्षा होय। आषाढ़ मास में वर्षा अधिक संशय करो न कोय॥** कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में मेघ गर्जन होने से अन्न भावों में उत्तरोत्तर तेजी का संचार होता है।

ता. १२ नवम्बर ❖ कार्तिक कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १२ नवम्बर):
प्लू.बु. ८ | ६ गु.शु | ९ | ७ सू. मं. के. चं. | ४ श. | ५ | १० ने. | ह. ११ | १ रा. | ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	६	७	५	५	३	०	६	१०	९	७
२६	१७	६	१६	१५	२३	३	७	७	८	१८	२६
१	५२	३५	११	५८	४	२४	२	२	५७	४६	५८
९	५१	५४	३६	२०	५४	२९	५७	५७	१	५६	९
६०	८०२	३९	७९	११	७३	०	३	३	०	०	२
२४	१४	५४	११	१७	३३	२८	११	११	२	३८	०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. १३ से २६ नवम्बर सन २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २२ कार्तिक से ५ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं. (दिनांक)	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	विवरण
२२	१	श	२५	४१	१७	४	वि	५१	४१	२६	४०	शो	२४	२७	१६	२१	ब	२५	४१	१७	४	२६	४८	६	४४	१७	२७	२९	२९	13	वृश्चिक	६	२७	१	३३	[illegible]	७	२१	१८	०	चन्द्रदर्शन मु. ३०, समता कारक, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, A
२३	२	र	१७	५८	२३	५६	ज्ये	४८	४२	२६	१४	अति	१४	५८	१२	४४	कौ	१७	५८	१३	५६	२६	४५	६	४५	१७	२६	३०	१	14	ध. २६।१४	६	२८	१	५८	२७	८	३३	१८	५८	शव्वाल मु. मास १० प्रा., भैया दूज, यम द्वितीया, यमुना स्नान, B
२४	३	चं	९	५९	१०	४५	मू	४२	४०	२३	५०	सु	५५	५	११	११	ग	९	५९	१०	४५	२६	४१	६	४५	१७	२६	मा१	२	15	धनु	६	२९	२	२५	२९	९	४३	१९	५६	भ. २१। ११ से. वृश्चिक में सूर्य २८।२१, संक्रांति मु. ३० बैठी, C
२५	४	मं	२	१४	७	४०	पूषा	३७	५	२१	३६	शू	४७	५	२५	३६	वि	२	१४	७	४०	२६	३८	६	४६	१७	२६	२	३	16	म. २७।६	७	०	२	५४	२९	१०	५८	२१	३	भ. ७। ४० तक, सौभाग्य ५, पांडव ५, ज्ञान ५ जैन, गुरु गोविन्द D
०	५	मं	५५	५	२८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी क्षयः E षष्ठी व्रत, डाला छठ (बिहार), सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण
२६	६	बु	४८	४६	२६	१८	उषा	३२	१६	१९	४२	गंड	३८	४८	२२	१८	कौ	२१	४७	१५	३०	२६	३५	६	४७	१७	२५	३	४	17	मकर	७	१	३	२३	३१	११	४५	२२	१३	शुक्र तुला में प्रवेश २०।४३, वक्री शनि पुनर्वसु ४ में २८।५, सूर्य E
२७	७	गु	४३	३३	२४	१३	श्र	२८	२९	१८	११	वृ	३१	२२	१९	२१	ग	१५	५९	१३	१२	२६	३२	६	४८	१७	२५	४	५	18	कुं. २१।३७	७	२	३	५४	३२	१२	३३	२३	२१	भ. २४। १३ से. पंचक प्रारंभ २९। ३७ से, कल्पादि ७, जलराम ज. F
२८	८	शु	३९	३५	२२	३९	ध	२५	५३	१७	१०	ध्रुव	२४	५४	१६	४६	वि	११	२३	११	२२	२६	३०	६	४९	१७	२४	५	६	19	कुम्भ	७	३	४	२६	३४	१३	१३	२४	०	भ. ११। २२ तक, सूर्य अनुराधा में ११।४०, गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी, G
२९	९	श	३६	५८	२१	३७	शत	२४	३५	१६	४०	व्या	१९	३०	१४	३८	बा	८	५	१०	३	२६	२७	६	४९	१७	२४	६	७	20	कुम्भ	७	४	५	०	३४	१३	४८	२४	२७	अक्षय नवमी, आंवला ९, कूष्माण्ड ९, कृत युगादि ९, जगद्धात्री H
३०	१०	र	३५	४१	२१	७	पूभा	२४	३७	१६	४१	ह	१५	१०	१२	५४	तै	६	८	९	१८	२६	२४	६	५०	१७	२४	७	८	21	मी. १०।३८	७	५	५	३४	३६	१४	२०	२५	२८	सायन धनु में सूर्य २३।३८, रवि दशमी D सिंह बलिदान दिवस
मा१	११	चं	३५	४३	२१	८	उभा	२५	५५	१७	१३	व	११	५२	११	३५	व	५	३१	९	४	२६	२१	६	५१	१७	२४	८	९	22	मीन	७	६	६	१०	३७	१४	४१	२६	२७	भ. ९।४ से २१।८ तक, स्वाती में शुक्र ३०।३१, देव प्रबोधिनी J
२	१२	मं	३६	३७	२१	३८	रे	२८	२४	१८	१४	सि	९	३०	१०	४०	ब	६	१०	९	२०	२६	१९	६	५२	१७	२३	९	१०	23	मे. १८।१४	७	७	६	४७	३८	१५	१९	२७	२५	पंचक समाप्ति १८। १४ तक, हरिवासर १८।१४ तक, मन्वादि १२, K
३	१३	बु	३९	१७	२१	३५	अ	३१	५८	१९	४०	व्य	८	२	१०	५	कौ	७	५८	१०	४	२६	१६	६	५३	१७	२३	१०	११	24	मेष	७	८	७	२५	४०	१५	४१	२८	२२	बुध मूल धनु में ८।३६, व्यतिपात पुण्यं १०।५ तक, प्रदोष व्रत
४	१४	गु	४२	३७	२३	५६	भ	३६	३०	२१	२९	वरि	७	२२	९	५०	ग	१०	४९	११	१३	२६	१४	६	५३	१७	२३	११	१२	25	वृ. २८।०	७	९	८	५	४०	१६	२२	२९	११	भ. २३। ५६ से, वैकुण्ठ चतुर्दशी, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, L
५	१५	शु	४६	५२	२५	३९	कृ	४१	५४	२३	४०	परि	७	२५	९	५०	वि	१४	३७	१२	४५	२६	११	६	५४	१७	२३	१२	१३	26	वृष	७	१०	८	४५	४२	१६	५८	३०	१७	भ. १२। ४५ तक, सत्य व्रत पूर्णिमा व्रत-पुण्यं, कार्तिक स्नान M

A चित्रगुप्त पूजा, द्यूत क्रीड़ा दिवस, गोसंवर्धन सप्ताह प्रा., हर्षल मार्गी १३।४३ **B** पं. नेहरू जन्म दिवस, बाल दिवस, बाल मेला (दिल्ली), ईद-उल-फितर ईद मु. **C** विनायक ४ व्रत, दूर्वा गणपति पूजन, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ ३ दिन का (बिहार), गुरु हस्त ३ में २२।५८ **F** सहस्त्रार्जुन ज. **G** गौ पूजा, यव धान्यादि दान, गौशाला निर्माण, गोसंवर्धन सप्ताह समाप्त, अष्टान्हिक व्रतारंभ जैन, श्रीमती इंदिरा गांधी जन्म दिवस, अश्विनी २ में राहु, चित्रा ४ में केतु १०।४१ **H** पूजा, मथुरा परिक्रमा **J** एकादशी व्रत सबका, तुलसी विवाह, **भीष्म पंचकारंभ**, चातुर्मास व्रत नियमादि समाप्ति, मेला पुष्कर (राज.), पुण्डर पुर यात्रा (महाराष्ट्र), राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मासारंभ, हरिवासर २१।८ से **K** कालिदास जयंती

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कार्तिक शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ नवंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	९	६	७	५	६	३	०	६	१०	९	७
३	२९	११	२४	१७	१	३	६	६	८	१८	२७
४	५५	२५	५९	१५	४०	१८	४०	४०	५८	५२	१२
२६	१०	४६	५९	४२	५४	४३	४१	४१	२०	७	३२
६०	७२६	३९	६५	१०	७३	१	३	३	०	०	२
३४	११	०५	४५	४५	५६	१६	११	११	२४	५३	६
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ	मा -	मा -	मा -
विशा ४	मूल १	स्वाति ३	ज्येष्ठा ३	हस्त ३	विशा ३	पुन. ४	अश्वि ३	स्वाति १	[illegible]	श्रवण ३	ज्येष्ठा ४

कुण्डली (ता. १९ नवंबर): ९ | मं.शु.के. ७ | ६ गु. | ५ | ४ श. | ३ | २ | १ रा. | १२ | ११ ह. | ने. १० चं. | ८ | सू.प्लू. बु.

पक्ष में सोमवारी संक्रांति व तुला का शुक्र विश्व के प्रायः सभी भागों में शान्ति प्रसार कारक है। युद्धाग्नि के बादलों पर वर्षा रूपी शान्ति वार्ता का प्रचार बढ़कर शासकों व प्रजा में भयनिवृत्तिकारक योगप्रद है। यथा—**प्रवाल मुक्ता धन धान्य संकुला प्रजा सुखं नन्दति सर्वदा जनः। सर्व समर्घ भवतीह धान्यं करोतु चन्द्रे रवि संक्रमश्चेत्॥** शासक गति में उत्तम परिवर्तन बन कर आयात निर्यात के व्यवसायों में प्रगति व विकास होंगे। देश के सीमावर्ती क्षेत्रों पर जन जीवन सामान्य बनकर मंगलोत्सव के आयोजन बनेंगे। जबकि पूर्वी राष्ट्रों जापान, चीन, बंगलादेश आदि में आन्तरिक कलह से शासकों में क्षोभ रहेगा। तेजी

कुण्डली (ता. २६ नवम्बर): ९ बु. | मं.शु.के. ७ | ६ गु. | ५ | ४ श. | ३ | २ चं. | १ के. | १२ | ११ ह. | ने. १० | ८ | सू. प्लू.

ता. २६ नवम्बर ❖ कार्तिक शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	६	८	५	६	३	०	६	१०	९	७
१०	०	१५	१	१८	१०	३	६	६	९	१८	२७
८	४५	५६	११	२९	१९	७	१८	१८	२	५८	२७
४५	२	५५	३९	६	२०	४२	२६	२६	१०	५४	३२
६०	७३१	४०	३३	१०	७४	२	३	३	०	१	२
४२	१४	१७	४०	८	१४	०	११	११	४५	६	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ	मा -	मा -	मा -
अनु. ३	कृति. १	स्वाति १	मूल १	हस्त ३	स्वाति १	पुन. ४	अश्वि १	चित्रा ४	पूभा. १	श्रवण ३	ज्येष्ठा ४

मन्दी विचार—शनिवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० व वृश्चिक संक्रांति मु. ३० शु. ३ से लोहा, सोना, चान्दी, पीतल, ताम्बा आदि धातुओं में तेजी कारक है। धान्य भावों में पक्ष में घटाबढ़ी रहेगी। चना, मूंग, मोंठ, चावल, जौ, रुई, कपास, सूत के भावों में उतार-चढ़ाव रहेगा। शु. ६ तुला शुक्र से चान्दी श्वेत वस्त्र व वस्तुओं में मन्दी बनेगी। शु. ८ शुक्रवार को अनुराधा रवि से ऊनी वस्त्र कपास, रुई तेज। शेयर बाजार में गिरावट रहेगी। धनु राशि में बुध शु. १३ से मूंगफली, तिल, सरसों व बिनौला को मन्दी का प्रोत्साहन रहेगा। **आकाश लक्षण**—सोमवारी संक्रांति से पहाड़ी स्थानों पर वर्षा व बर्फ गिरने से शीतवात बढ़ेगी। देश के विभिन्न प्रान्तों में बादलचाल व वायु वेग रहकर सर्दी का प्रारम्भ होगा। हिमाचल प्रदेश, बंगाल व काश्मीर के कुछ स्थानों पर सामान्य वर्षा होगी। **शकुन विचार**—कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को आकाश साफ रहकर चन्द्रमा निर्मल दिखाई दे तो आगे अन्न भावों में तेजी का संचार होता है। अर्थात् फसलों की हानि होती है। यथा—**कार्तिक पूनम निर्मल चन्द। अन्न को बेचे सो मति मन्द॥** शुक्ला ५, ७, ९, ११, १२ को वर्षा हो तो आगे ज्येष्ठ मास में उत्तम वर्षा होती है।

L चौमासी चौदस जैन **M** पूर्ति, मेला पुष्कर (राज.) व रेणुका तीर्थ गढ़ गंगा, **भीष्म पंचक समा.**, नानक ज., अष्टान्हिक व्रत पूर्ण जैन, **निंबार्काचार्य ज.**, रथ यात्रा जैन, देव दीवाली

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २७ नवम्बर से ता. ११ दिसम्बर सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से २० मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं	क	वि	गति कं.	चन्द्रोदय दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	संदर्भ
६	१	श	५१	५४	२७	४०	रो	४८	३	२६	८	शि	८	७	१०	१०	बा	१९	१६	१४	३७	२६	९	६	५५	१७	२३	१३	१४	27	वृष	७	११	९	२७	६०/६१	१७	३९	७	१५	A विश्व एड्स डे, उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो मु. (दिल्ली)
७	२	र	५७	३६	२९	५८	मृ	५४	५१	२८	५२	सि	९	२२	१०	४१	तै	२४	३९	१६	४८	२६	७	६	५६	१७	२३	१४	१५	28	मि. १५।२१	७	१२	१०	१०	६५	१८	२५	८	१२	अशून्य शयन २ व्रत
८	३	चं	६०	०	-	-	आ	६०	०	-	-	सा	११	४	११	२२	व	३०	३७	१९	११	२६	५	६	५७	१७	२२	१५	१६	29	मिथुन	७	१३	१०	५५	६६	१९	१६	९	७	भ. १९। ११ से. सौभाग्य सुन्दरी व्रत
९	३	मं	३	४४	८	२७	आ	२	४	७	४७	शुभ	१३	६	१२	१२	वि	३	४४	८	२७	२६	३	६	५७	१७	२२	१६	१७	30	क. २८।२	७	१४	११	४१	६७	२०	९	९	५७	भ. ८। २७ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, बुध वक्री १६।५०
१०	४	बु	१०	८	११	१	पुन	९	३२	१०	४७	शु	१५	१५	१३	४	बा	१०	८	११	१	२६	१	६	५८	१७	२२	१७	१८	D1	कर्क	७	१५	१२	२८	६९	२१	५	१०	४२	मंगल विशाखा में ३०।४, दिसम्बर मा. १२ ता. ३१ प्रा., A
११	५	गु	१६	२३	१३	३२	पु	१६	५२	१३	४४	ब्र	१७	१७	१३	५४	तै	१६	२३	१३	३२	२५	५९	६	५९	१७	२२	१८	१९	2	कर्क	७	१६	१३	१७	५०	२२	१	११	२२	सूर्य ज्येष्ठा में १६।२. सुविधानाथ जन्म व दीक्षा जैन
१२	६	शु	२२	४	१५	४९	श्ले	२३	३९	१६	२७	ऐं	१८	५२	१४	३३	व	२२	४	१५	४९	२५	५७	७	०	१७	२३	१९	२०	3	सिं. १६।२०	७	१७	१४	७	५१	२२	५७	११	५७	भ. १५। ४९ से २८। ४९ तक, शुक्र विशाखा में २४।५२, B
१३	७	श	२६	४२	१७	४१	म	२९	२६	१८	४७	वै	१९	४२	१४	५३	ब	२६	४२	१७	४१	२५	५५	७	०	१७	२३	२०	२१	4	सिंह	७	१८	१४	५८	५३	२३	५३	१२	२९	भारतीय नौ सेना दिवस, बुध पश्चिम में अस्त २६। १८
१४	८	र	२९	५१	१८	५८	पूफा	३३	४७	२०	३२	वि	१९	२६	१४	४८	कौ	२९	५१	१८	५८	२५	५४	७	१	१७	२३	२१	२२	5	कं. २६।५२	७	१९	१५	५१	५४	२४	०	१२	५८	श्री काल भैरवाष्टमी, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), भैरव जी दर्शन C
१५	९	चं	३१	१०	१९	३०	उफा	३६	२१	२१	३४	प्री	१७	४९	१४	१०	तै	०	४४	७	२०	२५	५२	७	२	१७	२३	२२	२३	6	कन्या	७	२०	१६	४५	५६	२४	४८	१३	२७	वक्री बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में ८।२३
१६	१०	मं	३०	२७	१९	१३	ह	३६	५६	२१	४९	आ	१४	४०	१२	५५	व	१	३	७	२८	२५	५१	७	३	१७	२३	२३	२४	7	कन्या	७	२१	१७	४१	५६	२५	४५	१३	५७	भ. ७। २८ से १९। १३ तक, श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस D
१७	११	बु	२७	३९	१८	७	चि	३५	३०	२१	१५	सौ	९	५३	११	१	बा	२७	३९	१८	७	२५	४९	७	३	१७	२३	२४	२५	8	तु. १।३८	७	२२	१८	३७	५८	२६	४५	१४	२९	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत
१८	१२	गु	२२	५४	१६	१४	स्वा	३२	१०	१९	५६	शो	५/५५	१०/४२	८/२२	२८/२२	तै	२२	५४	१६	१४	२५	४८	७	४	१७	२३	२५	२६	9	तुला	७	२३	१९	३५	५९	२७	४८	१५	५	प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस
१९	१३	शु	१६	२५	१३	३९	वि	२७	११	१७	५७	सु	४६	३८	२५	४४	व	१६	२५	१३	३९	२५	४७	७	५	१७	२४	२६	२७	10	वृ. १२।३०	७	२४	२०	३४	६१/०	२८	५५	१५	४७	भ. १३।३९ से २४।८ तक, मास शिवरात्री व्रत
२०	१४	श	८	३५	१०	३१	अनु	२०	५६	१५	२८	धृ	३६	३८	२१	४५	श	८	३५	१०	३१	२५	४६	७	५	१७	२४	२७	२८	11	वृश्चिक	७	२५	२१	३४	१	३०	७	१६	३७	शुक्र वृश्चिक में प्रवेश २५।४५, देवपितृकार्य अमावस्या, E
०	३०	श	५९	४८	३१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस्या क्षयः

B डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस, विकलांग दिवस C पूजन, गुरु हस्त ४ में १३।५६ D जैन, भा. झंडा दिवस E श्री बालाजी ज., मेला पुरमण्डल, देवी का स्नान (जम्मू)

मार्गशीर्ष कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ दिसंबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	६	८	५	६	३	०	६	१०	९	७
१९	१८	२२	१	१९	२१	२	५	५	९	११	२७
१५	४९	०	१	५६	२८	४६	४९	४९	१०	९	४७
५१	४५	३०	१६	४५	५६	०	४८	४८	४४	५०	२७
६०	५३	४०	५४	९	७४	२	३	३	१	१	२
५४	१२	३३	५	१३	३६	५४	११	११	१२	२२	१४
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९ बु. | मं.शु.के. ७ | ८ | १० ने. | सू. प्लू. | चं. ५ | ६ गु. | ११ ह. | १२ | २ | श. ४ | १ रा. | ३

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

मास में ५ शनिवार व ५ रविवार दोनों ही कहीं किसी शासक का निधन अथवा सत्ता परिवर्तनकारी है। यथा—**यत्रमासे रविवीरा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात् तदास्ते च महद्भयम्॥** पश्चिम देशों स्पेन, फ्रांस, इजरायल, ईरान आदि अरब राष्ट्रों में अराजकता हो कर उपद्रवकारी फल रहेंगे। मार्ग. कृष्ण तिथि वृद्धि विश्व के कई स्थानों पर युद्ध उन्मादकारी फलप्रद है। यथा—**मार्गशीर्षे कृष्णा पक्षे तिथि वृद्धिश्च जायते। तदा युद्धा कुला पृथ्वी प्रजा क्रन्दन्ति नित्यशः॥** देश के पूर्वी प्रान्तों व पर्वतीय सीमावर्ती क्षेत्रों पर उग्रवादियों का आतंक रहने से प्रधान शासकों में चिन्ताएं बढ़ेंगी। नेतागण अनेक परिश्रम से विवादकता सुलझाने में सफल होंगे। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारम्भ से शुक्र मंगल का योग अनाज, गेहूं, जौ, ज्वार, चना, गुड़, चीनी, शक्कर में तेजी तथा रुई, कपास, चांदी, चावल आदि श्वेत वस्तुओं में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। कृ. ५ ज्येष्ठा सूर्य से सोना, चान्दी, तिल, तेल सरसों व बिनौला में गिरावट होगी। ऊनी वस्त्रों, इलेक्ट्रोनिक सामान तथा मेवा काजू, बादाम, पिस्ता, किशमिस व किराणा वस्तुओं में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष में पर्वतीय स्थानों पर हिमपात व भूस्खलन होने से पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व बिहार में शीत प्रकोप बढ़ेगा। दक्षिणी व पूर्वी राज्यों में कहीं-कहीं वायु वेग के साथ सामान्य वर्षा होगी। पक्षान्त में उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों में बादल चाल व धुन्ध का प्रभाव रहेगा। **शकुन विचार**—कृष्णा ७ को आकाश साफ रहने पर आगे वैशाख मास में अन्नादिकों के भावों में मन्दी रहेगी। यथा—**मार्गशीर्षस्थ सप्तम्यां निर्मल चेद् दिवा निशम्। धान्यं समर्घं वैशाखे साभ्रतायां महर्घता॥** कृष्णा १४ व अमावस्या को बादल चाल रहने पर आगे धान्य व तृण (घास-चारा) के भावों में तेजी का प्रभाव रहेगा।

ता. ११ दिस. ❖ मार्गशीर्ष कृ. १४ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

९ | मं.शु.के. ७ | ८ | १० ने. | सू. प्लू. चं. बु. | ५ | ६ गु. | ११ ह. | १२ | २ | ४ श. | १ रा. | ३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	६	७	५	६	२	०	६	१०	९	७
२५	१०	२६	२३	२०	२८	५	५	५	९	१९	२८
२१	२६	४	४७	५०	५६	२७	३०	३०	१८	१८	०
३४	३०	१५	५८	२४	५५	१३	४३	४३	३१	२४	५७
६१	१०२	४०	८१	८	७४	३	३	३	१	१	२
१	११	४४	१०	३२	४६	२७	११	११	२९	३२	१६
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१९ श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता.१२ से २६ दिसं. सन् २००४ ई.,राष्ट्रीय मिति २१मार्गशीर्ष से ५ पौष तक। रवि दक्षिणायने-उत्तरायने, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२१	१	र	५०	३०	२७	१८	ज्ये	१३	४९	१२	३८	शू	२६	३	१७	३१	किं	२५	१०	१७	१०
२२	२	चं	४१	९	२३	३४	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गं	१५	१५	१३	१३	बा	१५	५७	१३	२६
२३	३	मं	३२	१३	२०	१	उषा	५२	८	२७	५९	वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	६	३६	९	४६
२४	४	बु	२४	९	१६	४८	श्र	४६	२०	२५	४०	व्या	४५	१२	२५	१३	वि	२४	९	१६	४८
२५	५	गु	१७	२८	१४	५	ध	४१	५४	२३	५४	ह	३७	२	२१	५७	बा	१७	१८	१४	५
२६	६	शु	१२	४	११	५९	शत	३९	८	२२	४८	व	३०	१२	१९	१४	तै	१२	४	११	५९
२७	७	श	८	३५	१०	३६	पूभा	३८	१०	२२	२६	सि	२४	४८	१७	५	व	८	३५	१०	३६
२८	८	र	६	५८	९	५८	उभा	३९	०	२२	४६	व्य	२०	५२	१५	३१	ब	६	५८	९	५८
२९	९	चं	७	८	१०	३	रे	४१	३०	२३	४७	वरि	१८	१८	१४	३०	कौ	७	८	१०	३
३०	१०	मं	९	०	१०	४८	अ	४५	२८	२५	२३	परि	१६	५८	१३	५९	ग	९	०	१०	४८
पौ१	११	बु	१२	१५	१२	६	भ	५०	३६	२७	२६	शि	१६	४०	१३	५२	वि	१२	१५	१२	६
२	१२	गु	१६	३५	१३	५०	कृ	५६	३७	२९	५१	सि	१७	१०	१४	४	बा	१६	३५	१३	५०
३	१३	शु	२१	४४	१५	५४	रो	६०	०	-	-	सा	१८	१७	१४	३२	तै	२१	४४	१५	५४
४	१४	श	२७	२७	१८	१२	रो	३	१३	८	३८	शुभ	१९	४९	१५	९	व	२७	२७	१८	१२
५	१५	र	३३	३१	२०	३८	मृ	१०	२६	११	२०	शु	२१	३८	१५	५३	वि	०	२६	७	२४

दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि	अस्त घं	मि
२५	४५	७	६	१७	२४	२८	२९	12	ध. १२।३८	७	२६	२२	३५	१	७	२०	१७	३६
२५	४४	७	७	१७	२४	२९	३०	13	धनु	७	२७	२३	३७	२	८	३०	१८	४३
२५	४३	७	७	१७	२५	३०	जि१	14	म. ११।५९	७	२८	२४	३९	३	९	३३	१९	५६
२५	४२	७	८	१७	२५	पौ१	२	15	मकर	७	२९	२५	४२	४	१०	२६	२१	८
२५	४२	७	९	१७	२५	२	३	16	कुं. १२।४३	८	०	२६	४६	४	११	११	२२	१६
२५	४१	७	९	१७	२६	३	४	17	कुंभ	८	१	२७	५०	४	११	४९	२३	२१
२५	४१	७	१०	१७	२६	४	५	18	मी. १६।२७	८	२	२८	५४	५	१२	२२	२४	०
२५	४१	७	१०	१७	२७	५	६	19	मीन	८	३	२९	५९	५	१२	५३	२४	२२
२५	४०	७	११	१७	२७	६	७	20	मे. २३।४७	८	४	३१	४	५	१३	२२	२५	२०
२५	४०	७	११	१७	२७	७	८	21	मेष	८	५	३२	९	६	१३	५२	२६	१७
२५	४०	७	१२	१७	२८	८	९	22	मेष	८	६	३३	१५	५	१४	२४	२७	१४
२५	४०	७	१२	१७	२९	९	१०	23	वृ. १०।१	८	७	३४	२०	६	१४	५९	२८	११
२५	४०	७	१३	१७	२९	१०	११	24	वृष	८	८	३५	२६	६	१५	३८	२९	९
२५	४१	७	१३	१७	३०	११	१२	25	मि. २१।५४	८	९	३६	३२	७	१६	२२	३०	६
२५	४१	७	१४	१७	३०	१२	१३	26	मिथुन	८	१०	३७	३९	७	१७	१०	३१	१

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

अं.	विवरण
12	रुद्र व्रत (पीड़िया व्रत) D श्री राम कलेवा
13	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक A १७।५६
14	भ. ३०।२१ से, जिल्काद मु. मास ११ प्रा., अनुराधा में शुक्र A
15	भ. १६।४८ तक, विनायक ४ व्रत, मूल धनु में सूर्य १८।५९, B
16	पंचक प्रारंभ १२।४३, मंगल वृश्चिक में २४।१२, नाग पंचमी C
17	चम्पा षष्ठी व्रत, स्कंद ६, गुहा ६, मूलक रूपणी ६ (बंगाल), D
18	भ. १०।३६ से २२।११ तक, वक्री बुध अनुराधा में २१।१२, E
19	व्यतिपात पुण्यम्, श्री दुर्गाष्टमी E मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज.
20	पंचक समाप्ति २३।४७, महानंदा नवमी, कल्पादि ९, वफात F
21	भ. २३।२३ से, अनुराधा में मंगल २१।२७, ज्येष्ठा में बुध १६।५८, G
22	भ. १२।६ तक, मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, श्री गीता ज. H
23	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, स्वामी श्रद्धानंद J
24	अनंग त्रयोदशी, गुरु ग्रंथ साहिब वार्षिक उत्सव, मेला जोड़ समा.
25	भ. १८।१२ से, ज्येष्ठा में शुक्र १०।१४, पिशाच मोचन श्राद्ध, K
26	भ. ७।२४ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्यं, श्रीदत्तात्रेय L

B संक्रांति मु. ३० बैठी, संत घासी राम ज., मलमास प्रा., बुध पूर्व में उदय २५।१९ C (द.भा.) गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस, श्री राम विवाहोत्सव F कायदे आजम अली जिन्हा मु., बुध मार्गी ११।२ G सायन मकर में सूर्य १८।२८, रवि उत्तरायणे, शिशिर ऋतु प्रा., श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष जैन H मातंगी ज.,मौनी एकादशी जैन, वैकुण्ठ एकादशी, मेला जोड़ ३ दिन का प्रा. (पंजाब), राष्ट्रीय पौष मासारंभ J बलिदान दिवस K त्रिपुर भैरव ज., पं. मदन मोहन मालवीय जनम दिवस. क्रिसमस डे (ईसा जयंती), बड़ा दिन L ज., अन्नपूर्णा ज., त्रिपुर सुन्दरी जयंती

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

मार्गशीर्ष शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
८	११	७	७	५	७	३	०	६	१०	९	७
३	७	१	१६	२१	८	१	५	५	९	१९	२८
२१	१२	३०	३१	४४	५५	५७	५	५	३१	३१	१९
५१	५१	५०	५०	१०	३३	२८	१६	१६	५१	१८	२
६१	[illegible]	४०	७	७	३४	४	३	३	१	१	२
५	२७	५७	४८	३१	५४	३	११	११	५२	४४	१५
मा उ	मा अ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ	मा —	मा —	मा —
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१० ने. | बु.प्लू.शु. मं.८ | ७ के. | ११ ह. | ९ सू. | ६ गु. | १२ चं. | ३ | ५ | १ रा. | २ | ४ श.

वृश्चिक राशि पर मंगल भ्रमण तथा राहु से षडाष्टक योग एवं शनि से नव पंचम (त्रिकोणीय))योग व्यापारिक वस्तुओं में अस्थिरता व मंहगाई बढ़ेगी तथा अनेक राष्ट्रों में साम्प्रदायिक उत्पात से शासकों में तनाव रहेगा। यथा—यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घ सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥ रवि गुरु का केन्द्र योग देश के विकास कार्यों हेतु शासकों को प्रोत्साहनकारी फलप्रद है। नव नियम कानून आदि व्यवस्था बनकर राज्य कर्मचारियों में कर्मशीलता बढ़ाने के प्रयास बनेंगे। प्रशासनिक नीतियों में श्रेयस्कर बदलाव से देश की जनता में हर्ष वृद्धि रहेगी। प्रान्तीय सरकारों में व केन्द्रीय सत्ता के सिद्धान्तिक मेलन का जन समूह पर उत्तम प्रभाव बढ़ेगा। तेजी मन्दी विचार—पक्षारम्भ में धान्यों गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, दालवाना में तेजी चलेगी। शु. ४ धनु संक्रांति से धान्य भावों में घटाबढ़ी होकर मन्दी का रुख रहेगा। तिल, मूंगफली, अरण्ड, अलसी व सोयाबिन आदि तेलों में तेजी रहेगी। रुई, कपास, ऊन व वस्त्रों में तेजी रहेगी। शु. ८ मार्गी बुध से किराणा सामान व रसायनिक पदार्थों में उतार-चढ़ाव का संकलन रहेगा। शेयर बाजार भावों में मन्दी का झटका संभव है। आकाश लक्षण—बुध, शुक्र का युति योग पक्ष में बादल चाल-सामान्य वर्षा व हिमपात होने के फलकारक है। उत्तरी भारत में शीतलहर का प्रकोप व सर्द हवाएं चलेंगी। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश व मध्य भाग में भी ओस वृद्धि होकर धुन्ध प्रायः बढ़ी रहेगी। शकुन विचार—मार्गशीर्ष मास की शुक्ला अष्टमी को बादल चाल व बिजुलियां चमके तो आगे श्रावण मास में उत्तम वर्षा होकर अच्छी फसल की पैदावार होती है। यथा—अगहन उजली अष्टमी बादल बिजुली जोय। श्रावण बिरखा सांतरी बीज उठाओ बोय॥ इस माह जिन नक्षत्रों पर वर्षा हो उन्हीं नक्षत्रों पर आषाढ़ मास में वर्षा होती है।

ता. २६ दिसम्बर ❖ मार्गशीर्ष शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१० ने. | बु.प्लू.शु. मं.८ | ७ के. | ११ ह. | ९ सू. | ६ गु. | १२ | ३ चं. | ५ | १ रा. | २ | ४ श.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
८	२	७	७	५	७	३	०	६	१०	९	७
१०	३	६	१८	२२	१७	१	४	४	९	१९	२८
३७	४५	१८	४८	४४	४०	२७	४३	४३	४५	४३	३४
३९	३६	४	२३	५१	११	४९	१	१	४४	४९	३९
६१	[illegible]	४१	४६	६	७५	४	३	३	२	१	२
७	४९	९	११	३२	०	२८	११	११	९	५२	१३
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ	मा —	मा —	मा —
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौष कृष्ण पक्ष-20

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २७ दिस. २००४ ई. से १० जन. सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से २० पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	संदर्भ
६	१	चं	३१	४८	२३	९	आ	१७	३२	२४	१५	ब्र	२३	३७	१६	४१	बा	६	३८	९	५३	२५	४२	७	१४	१७	३१	१३	१४	27	मिथुन	८	११	३८	४६	५९ ७	१८	३	७	५३	
७	२	मं	४६	६	२५	४१	पुन	२४	५४	१७	१२	ऐं	२५	४०	१७	३०	तै	१२	५६	१२	२५	२५	४३	७	१४	१७	३१	१४	१५	28	क. १०।२८	८	१२	३९	५३	७	१८	५९	८	३९	सूर्य पूर्वाषाढ़ा में २१।१५ A न्यू ईयर इवनिंग
८	३	बु	५२	१६	२८	९	पु	३२	१२	२०	७	वै	२७	३९	१८	१८	व	१९	१३	१४	५६	२५	४३	७	१५	१७	३२	१५	१६	29	कर्क	८	१३	४१	०	८	१९	५५	९	२१	भ. १४।५६ से २८।९ तक B २ में १३।२०
९	४	गु	५८	२	३०	२८	श्ले	३९	११	२२	५५	वि	२९	२४	१९	१	ब	२५	१३	१७	२०	२५	४४	७	१५	१७	३३	१६	१७	30	सिं. २२।५५	८	१४	४२	८	८	२०	५१	९	५७	कृष्ण चतुर्थी व्रत C नेपच्यून श्रवण ४ में १३।३४
१०	५	शु	६०	०	-	-	म	४५	३४	२५	२९	प्री	३०	४४	१९	३३	कौ	३०	३९	१९	३१	२५	४५	७	१५	१७	३३	१७	१८	31	सिंह	८	१५	४३	१६	८	२१	४६	१०	३०	गुरु चित्रा १ में २१।५९, ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का पर्व, A
११	५	श	३	४	८	२९	पूफा	५१	१	२७	४०	आ	३१	२३	१९	४९	तै	३	४	८	२९	२५	४६	७	१६	१७	३४	१८	१९	J1	सिंह	८	१६	४४	२४	९	२२	४०	११	०	जनवरी मास. १ ता. ३१ सन् २००५ ई. प्रा., हर्षल शतभिषा B
१२	६	र	७	०	१०	४	उफा	५५	९	२९	१९	सौ	३१	६	१९	४२	व	७	०	१०	४	२५	४७	७	१६	१७	३४	१९	२०	2	कं. १०।१८	८	१७	४५	३३	९	२३	३५	११	२८	भ. १०।४ से २२।३८ तक
१३	७	चं	९	२८	११	३	ह	५७	३८	३०	१९	शो	२९	३५	१९	६	ब	९	२८	११	३	२५	४९	७	१६	१७	३५	२०	२१	3	कन्या	८	१८	४६	४२	९	२४	०	११	५६	गुरु गोविन्द सिंह ज. (सिरोमणी कमेटी अमृतसर अनुसार), C
१४	८	मं	१०	९	११	२०	चि	५८	१४	३०	३४	अति	२६	४०	१७	५६	कौ	१०	९	११	२०	२५	५०	७	१६	१७	३६	२१	२२	4	तु. १८।३३	८	१९	४७	५१	९	२४	३१	१२	२६	शुक्र मूल धनु में २६।३, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिन D
१५	९	बु	८	५२	१०	४९	स्वा	५६	५१	३०	१	सु	२२	१०	१६	८	ग	८	५२	१०	४९	२५	५१	७	१६	१७	३७	२२	२३	5	तुला	८	२०	४९	०	१०	२५	३१	१२	५८	भ. २२।१५ से, मूल धनु में बुध १९।४६ D सागर पुण्य दि.
१६	१०	गु	५	३१	९	२९	वि	५३	३१	२८	४१	धृ	१६	४	१३	४२	वि	५	३१	९	२९	२५	५३	७	१७	१७	३८	२३	२४	6	वृ. २३।५	८	२१	५०	१०	१०	२६	३४	१३	३६	भ. ९।२९ तक, पार्श्वनाथ जन्म जैन, सफला एका. व्रत स्मा. E
१७	११	शु	०	१४	७	२२	अनु	४८	२७	२६	३९	शू	८ ५९	३५ २७	१० ३१	३१ ४	बा	०	१४	७	२२	२५	५५	७	१७	१७	३८	२४	२५	7	वृश्चिक	८	२२	५१	२०	१०	२७	४२	१४	२०	सफला एकादशी व्रत वै., स्वरूप द्वादशी, श्री चन्द प्रभु जन्म जैन
०	१२	शु	५३	१३	२८	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी क्षयः E अपीफेनी डे
१८	१३	श	४४	५१	२५	१३	ज्ये	४१	५९	२४	४	वृ	४९	२४	२७	२	ग	१९	१०	१४	५७	२५	५६	७	१७	१७	३९	२५	२६	8	ध. २४।४	८	२३	५२	३०	१०	२८	५३	१५	१४	भ. २५।१३ से, शनि प्रदोष व्रत
१९	१४	र	३५	३२	२१	२९	मू	३४	३३	२१	६	ध्रु	३८	३६	२२	४३	वि	१०	१६	११	२३	२५	५८	७	१७	१७	४०	२६	२७	9	धनु	८	२४	५३	४०	९	३०	४	१६	१८	भ. ११।२३ तक, ज्येष्ठा में मंगल ३०।२०, मास शिवरात्री व्रत
२०	३०	चं	२५	४४	१७	३४	पूषा	२६	३८	१७	५६	व्या	२७	२५	१८	१५	च	०	३९	७	३३	२६	०	७	१७	१७	४१	२७	२८	10	म. २३।८	८	२५	५४	४९	१०	३१	१२	१७	२१	सूर्य उत्तराषाढ़ा में २३।१४, देवपितृकार्य अमावस्या, वकुला F

F अमा. (उड़ीसा), सोमवती अमावस्या, उर्स बाबा शाह लाल दयाल कैथल मु.

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

पौष कृ. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता.-४ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	७	७	५	७	३	०	६	१०	९	७
१९	२२	१२	२८	२३	२८	०	४	४	१०	२०	२८
४७	५२	२९	०	३८	५५	४६	१४	१४	६	१	५४
५१	२८	३२	१२	११	४२	४	२३	२३	२१	२०	२३
६१	[illegible]	४१	७८	५	७५	४	३	३	२	२	२
९	५८	२५	३८	९	७	५०	११	११	३०	२	९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१०ने. | बु.प्लू.शु. मं.८ | ७ के. | ११ ह. | सू. ९ | ६ गु. चं. | १२ | १ रा. | ३ | ५ | २ | ४ श.

मास में पांच सोमवार व सोमवती अमावस्या अनेक उलझे देश-विदेशी नीतियों के कामों में सुधार होकर शासकों में मनोबल वृद्धि रहेगी। बड़े राष्ट्रों के आपसी तनावों में नरमी का वातावरण बढ़ेगा। यवन राष्ट्रों में अराजकता का निपटारा बनने के शुभ संकेत प्राप्त होंगे। यथा—**सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धि स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥** कई राज्यों में यातायात आदि साधनों में वृद्धि, मार्ग सर्वेक्षण होकर नव निर्माणादि के प्रति जागरुकता बढ़ेगी। पक्षान्त में धनु राशि के बुध आने पर कई अवरोध व राजनैतिक तनाव बढ़ेंगे। कुछ स्थानों पर आन्दोलन व उग्रताकारी प्रदर्शन होंगे। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में जौ, चना, गेहूं, मूंग, मोंठ, सरसों आदि में मन्दी की चाल रहेगी। कृ. ८ धनु में शुक्र से गुड़, चीनी, शक्कर, चना, चावल व धान्य भावों में घटाबढ़ी होकर तेजी रहेगी। कृ. ९ धनु में बुध से ऊनी रेशमी व सूती वस्त्रों, रुई, कपास, बिनौला व खल के भावों में विशेष तेजी का प्रभाव रहेगा। मेवा आदि किराणा सामान में अस्थिरता तथा शेयर बाजारों में मन्दी का रुख रहेगा। **आकाश लक्षण**—नेपाल, बंगाल, आसाम, हिमाचल प्रदेश, काश्मीर में सामान्य वर्षा के साथ हिमपात होगी। दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। शीतल वायु के प्रकोप से पशुओं व बालकों में रोगोपद्रव चलेगा। **शकुन विचार**—पौष बदी ७ व ८ तिथि की रात्री में बादल चाल होकर वर्षा होने पर आगे वर्षाकाल में श्रेष्ठ वर्षा का शकुन प्राप्त होता है। यथा—**पौष अन्धेरी सातें आठें। रात अंधेरी बादल काठें॥ तो चौमासा बरसे पानी। उपजे धान करो मनमानी॥**

१०ने. | मं. प्लू. ८ | ९ | ७ के. | ११ ह. | सू. बु. चं. शु. | ६ गु. | १२ | १ रा. | ३ | ५ | २ | ४ श.

ता. १० जनवरी ❖ पौष कृ. ३० चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	७	८	५	८	३	०	६	१०	९	७
२५	१८	१६	५	२४	६	०	३	३	१०	२०	२९
५४	४१	३८	५०	६	२६	१६	५५	५५	२१	१३	७
४१	८	३३	११	३४	३१	४८	१८	१८	५८	४६	२
६१	८२२	४१	८२	४	७५	४	३	३	२	२	२
१०	२३	३६	३५	८	१०	५६	११	११	४२	७	४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौष शुक्ल पक्ष-२१

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ११ से २५ जनवरी सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति २१ पौष से ५ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.मि.	ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदय घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि
२१	१	मं	१५	५७	१३	४	उ.षा	१८	३५	१४	३७	ह	२६	१७	१३	४८	ब	१५	५७	१३	४०	२६	२	७	१७	१७	४२	२८	२९	11	मकर	८	२६	५५	५९	[illegible]	८	११	१८	४३
२२	२	बु	६	४२	९	५७	श्र	११	२४	११	५०	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	६	४२	९	५७	२६	४	७	१७	१७	४२	२९	जि१	12	कुं. २२।३१	८	२७	५७	८	९	९	१	१९	५६
०	३	बु	५८	२५	३०	३९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२३	४	गु	५१	३५	२७	५५	ध	५	५	९	१९	व्य	४६	५५	२६	३	व	२४	३७	१७	१२	२६	६	७	१७	१७	४३	३०	२	13	कुंभ	८	२८	५८	१७	९	९	४३	२१	५
२४	५	शु	४६	३२	२५	५४	शत	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वरि	३९	३५	२३	७	ब	१८	४९	१४	४८	२६	८	७	१७	१७	४४	मा१	३	14	मी. २६।२४	८	२९	५९	२६	७	१०	२०	२२	१०
२५	६	श	४३	३२	२४	४१	पू.भा	५६	१५	२९	४७	परि	३३	५२	२०	५०	कौ	१४	४६	१३	११	२६	११	७	१७	१७	४५	२	४	15	मीन	९	१	०	३३	७	१०	५२	२३	११
२६	७	र	४२	४०	२४	२१	रे	५७	२१	३०	१३	शि	२९	५०	१९	१२	ग	२२	५०	१२	२५	२६	१३	७	१६	१७	४६	३	५	16	मे. ३०।१३	९	२	१	४०	६	११	२३	२४	०
२७	८	चं	४३	५३	२४	५०	अ	६०	०	-	-	सि	२७	२५	१८	१४	वि	१३	२	१२	२९	२६	१५	७	१६	१७	४६	४	६	17	मेष	९	३	२	४६	६	११	५४	२४	१०
२८	९	मं	४६	५६	२६	२	अ	०	२५	७	२६	सा	२६	२८	१७	५१	बा	१५	१२	१३	२१	२६	१८	७	१६	१७	४७	५	७	18	मेष	९	४	३	५२	४	१२	२५	२५	८
२९	१०	बु	५१	२६	२७	५०	भ	५	९	९	२०	शुभ	२६	४३	१७	५७	तै	१९	१	१४	५३	२६	२१	७	१६	१७	४८	६	८	19	वृ. १५।५३	९	५	४	५६	४	१२	५९	२६	२
३०	११	गु	५७	०	३०	४	कृ	११	१०	११	४४	शु	२७	५३	१८	२५	व	२४	७	१६	५५	२६	२३	७	१६	१७	४९	७	९	20	वृष	९	६	६	०	३	१३	३७	२७	३
मा१	१२	शु	६०	०	-	-	रो	२८	३	१४	२९	ब्र	२९	३८	१९	७	ब	३०	२	१९	१६	२६	२६	७	१५	१७	५०	८	१०	21	मि. २७।५६	९	७	७	३	२	१४	१९	२८	१
२	१२	श	३	१०	८	३१	मृ	२५	२४	१७	२५	ऐं	३१	४२	१९	५६	बा	३	१०	८	३१	२६	२९	७	१५	१७	५१	९	११	22	मिथुन	९	८	८	५	१	१५	६	२८	५६
३	१३	र	९	३५	११	५	आ	३२	५२	२०	२४	वै	३३	५१	२०	४७	तै	९	३५	११	५	२६	३२	७	१५	१७	५१	१०	१२	23	मिथुन	९	९	९	६	०	१५	५८	२९	४९
४	१४	चं	१५	५७	१३	३७	पुन	४०	१४	२३	२०	वि	३५	५४	२१	३६	व	१५	५७	१३	३७	२६	३५	७	१४	१७	५२	११	१३	24	क. १६।३६	९	१०	१०	६	६०/५९	१६	५३	३०	३७
५	१५	मं	२२	५	१६	४	पु	३७	२९	२६	१०	प्री	३७	४५	२२	२०	ब	२२	५	१६	४	२६	३८	७	१४	१७	५३	१२	१४	25	कर्क	९	११	११	५	५९	१७	४९	७	२०

चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक — D थल सेना दिवस
जिल्हेज मु. मास १२ प्रा., पंचक प्रा. २२। ३१ से, यतीन्द्र A
तृतीया क्षय: — A सुरीश्वर पुण्य, त्रिस्तुति जैन
भ.१७। १२ से २७। ५५ तक, मकर में सूर्य २९। ४३, वक्री B
मकर संक्रांति पुण्यं, तिल संक्रांति, मलमास पूर्ति, पोंगल C
बुध पूर्वाषाढ़ा में १३।१५, शुक्र पूर्वाषाढ़ा में १७।३२, भारतीय D
भ.२४।२१ से, पंचक समाप्त ३०। १३, गुरु गोविन्द सिंह ज. E
भ.१२। २९ तक, श्री दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी यात्रा
F सबका, मन्वादि ११, वैकुण्ठ एकादशी (द.भा.), हज्ज मु.
शाम्ब दशमी (उड़ीसा), सायन कुंभ में सूर्य २९।१८
भ. १६।५५ से ३०।४ तक, पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी व्रत F
ईद-उल-जुहा (बकरीद)मु., अश्विनी १ में राहु चित्रा ३ में G
शनि प्रदोष व्रत — G केतु ७।५८, राष्ट्रीय माघारंभ
सूर्य श्रवण में २५।३२, नेताजी सुभाष चन्द बोस ज., बुध पूर्व H
भ.१३। ३७ से २६।५१ तक, बुध उत्तराषाढ़ा में ११।३१, पूर्णिमा व्रत
सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान प्रा., काशी घाट J

B शनि पुन.३ मिथुन में १५।५, विनायक ४ व्रत, संक्रांति मु. १५ बैठी, व्यतिपात पुण्यं, लोहड़ी उत्सव (पंजाब) C पर्व (द.भा.), गंगा सागर यात्रा, माघ बिहु (असम)
E (प्रा. मत से), राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म-पुण्य जैन H में अस्त २४।१९ J दशाश्वमेध स्नान प्रा., शाकम्भरी जयंती

पौष शु. ८ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	११	७	८	५	८	२	०	६	१०	९	७
३	२९	२१	१५	२४	१५	२९	३	३	१०	२०	२९
२	३६	३०	४६	३१	१२	४२	३३	३३	४१	२८	२१
४६	५	२१	१८	५२	३९	११	३	३	३०	५१	८
६१	[illegible]	४३	८८	२	७५	४	३	३	२	२	१
६	२८	६३	१०	५४	१०	५६	११	११	५४	१२	५७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
उ.षा.	[illegible]	धनिष्ठा	पू.षा.	चित्रा	पू.षा.	पुन.	अश्विनी	चित्रा	शत.	श्रवण	ज्येष्ठा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कुण्डली (ता. १७ जनवरी): ११ ह. | बु. शु. ९ | ८ मं. प्लू. | १२ चं. | सू. १० ने. | ७ के. | १ रा. | ४ | २ | ६ गु. | ३ श. | ५

वक्री शनि मिथुन राशि में आया है जिसका मंगल के साथ षडाष्टक योग व गुरु से केन्द्र योग है तदनुसार पाश्चात्य राष्ट्रों इजराईल, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि राष्ट्रों में आन्तरिक विद्रोह एवं शासकों में आपसी कटुता रहेगी। यथा—**मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥** चीन, जापान, बर्मा, बंगलादेश, तिब्बत व भारत के पूर्वी प्रान्तों में भूकम्पादि प्राकृतिक-प्रकोप से जन धन क्षति होने के योग हैं। शुक्रवारी संक्रांति से व्यवसायिक प्रगति बढ़ेगी। देश में अनेक विकास कामों को प्रोत्साहन मिलेगा। शैक्षणिक स्थिति में नीति नियमों का बदलाव आकर जनता में जागृति बढ़ेगी। **तेजी मन्दी विचार**—मंगलवार को चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, रुई, सरसों, सूत व वस्त्रों में तेजी करेगा। मकर संक्रांति मु. १५ से धान्य भावों मूंग, मोंठ, जौ, ज्वार व मूंगफली, सोयाबिन, अरण्ड, अलसी तेलों में तेजी रहेगी। पक्षान्त में क्षय वृद्धि तिथि योग मन्दी कारक रहेगा जिसमें रस पदार्थ चीनी, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहेगी। यथा—**जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाहि में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके मंहगाई हट जाय॥** शु. १३ श्रावणे पूर्व से शेयर आदि बाजार भावों में सुधार होगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष में पर्वतीय स्थानों पर हिमपात व तेज वायु के साथ वर्षा रहेगी। दिल्ली, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में कुछ स्थानों पर सामान्य वर्षा रहेगी। वायु प्रकोप के दुष्प्रभाव से उत्तरी पश्चिमी प्रान्तों में शीत वृद्धि व कोहरे की विशेषता रहेगी। **शकुन विचार**—पौष शुक्ला चतुर्दशी को आकाश में बादल चाल बनकर वर्षा होने पर आगे आषाढ़ मास में उत्तम वर्षा होती है। यथा—**पौष सुदी चौदश दिनां बिजुली** [illegible] गर्जन व वर्षा आगे चातुर्मास में शुभ वर्षा पद होता है।

ता. २५ जनवरी ❖ पौष शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २५ जनवरी): ११ ह. | ९ बु.शु. | ८ मं. प्लू. | १२ | सू. १० ने. | ७ के | १ रा. | ४ चं. | २ | ६ गु. | ३ श. | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	७	८	५	८	२	०	६	१०	९	७
११	६	२७	२७	२४	२५	२९	३	३	११	२०	२९
११	२२	५	४९	४९	१३	३	७	७	५	४६	३६
५	४५	२८	२५	५९	५५	१४	३६	३६	२९	३९	१२
६०	७१६	४२	९३	१	७५	४	३	३	३	२	१
५९	१८	१	११	२६	०९	४६	११	११	६	१६	४८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
श्रवण	पुष्य	धनिष्ठा	उ.षा.	चित्रा	पू.षा.	पुन.	अश्विनी	चित्रा	शत.	श्रवण	ज्येष्ठा

माघ कृष्ण पक्ष-२२

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २६ जनवरी से ८ फरवरी सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से १९ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा	दैं. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
६	१	बु	२३	५०	१८	२२	श्ले	५४	०	२८	५०	आ	३९	१८	२२	५७	कौ	२७	५०	१८	२२	२६	४१	७	१४	१७	५४	१३	१५	26	सिं. २८।५०	९	१२	१२	४	५८	१८	४६	७	५८	बुध मकर में १५।५, शुक्र उत्तराषाढ़ा में ९।०, भारतीय A
७	२	गु	३३	५	२०	२७	म	६०	०	-	-	सौ	६०	२८	२३	२४	तै	०	३२	७	२६	२६	४४	७	१३	१७	५५	१४	१६	27	सिंह	९	१३	१३	२	५७	१९	४१	८	३२	B सौभाग्य सुन्दरी व्रत, लाला लाजपत राय जन्म
८	३	शु	३७	४०	२२	१७	म	०	११	७	१७	शो	४१	८	२३	४०	व	५	२९	९	२४	२६	४७	७	१३	१७	५६	१५	१७	28	सिंह	९	१४	१३	५९	५६	२०	३६	९	३	भ. ९।२४ से २२।१७ तक, शुक्र मकर में प्रवेश २४।५२, B
९	४	श	४१	२५	२३	४६	पूफा	५	३१	९	२८	अति	४१	८	२३	४०	ब	९	४०	११	५	२६	५०	७	१२	१७	५६	१६	१८	29	कं. १५।४७	९	१५	१४	५५	५५	२१	३१	९	३१	मंगल मूल धनु में ९।५, कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ, वरद ४, C
१०	५	र	४४	५	२४	५०	उफा	१०	१३	११	१७	सु	६०	२२	२३	२१	कौ	१२	५४	१२	२२	२६	५३	७	१२	१७	५७	१७	१९	30	कन्या	९	१६	१५	५०	५५	२२	२६	९	५९	महात्मा गांधी पुण्यं A गणतंत्र दिवस ५६ वां वर्ष
११	६	चं	६५	२६	२५	२२	ह	१३	३९	१२	३९	धृ	३८	३५	२२	३७	ग	१४	५७	१३	१०	२६	५७	७	११	१७	५८	१८	२०	31	तु. २५।८	९	१७	१६	४५	५४	२३	२२	१०	२७	भ. २५।२२ से, C मेला मस्तु आणा (पंजाब)
१२	७	मं	६५	१४	२५	१६	चि	१५	४१	१३	२७	शू	३५	३७	२१	२६	वि	१५	३३	१३	२४	२७	०	७	११	१७	५९	१९	२१	F1	तुला	९	१८	१७	३९	५३	२४	०	१०	५८	भ. १३।२४ तक, बुध श्रवण में २१।२३, स्वामी विवेकानन्द ज., D
१३	८	बु	४३	२०	२४	३०	स्वा	१६	९	१३	३८	गं	३१	२२	१९	४३	बा	१४	३०	१२	५९	२७	४	७	१०	१८	०	२०	२२	2	तुला	९	१९	१८	३२	५२	२४	२२	११	३२	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, गुरु वक्री १७।२२
१४	९	गु	३९	४०	२३	२	वि	१४	५५	१३	८	वृ	२५	४३	१७	२७	तै	११	४३	११	५१	२७	७	७	१०	१८	१	२१	२३	3	वृ. ७।१९	९	२०	१९	२४	५२	२५	२६	११	१२	
१५	१०	शु	३४	१९	२०	५३	अनु	११	५८	११	५६	ध्रु	१८	४२	१४	३८	व	७	१२	१०	२	२७	११	७	९	१८	१	२२	२४	4	वृश्चिक	९	२१	२०	१६	५०	२६	३३	१२	५९	भ. १०।२ से २०।५३ तक E व्रत सबका
१६	११	श	२७	२८	१८	८	ज्ये	७	२७	१०	७	व्या	१०	२७	११	१९	ब	१	४	७	३४	२७	१४	७	८	१८	२	२३	२५	5	ध. १०।७	९	२२	२१	६	५०	२७	४३	१३	५६	सूर्य धनिष्ठा में २८।४४, शुक्र श्रवण में २४।२९, षट्तिला एका. E
१७	१२	र	१९	२६	१४	५४	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	१९	२६	१४	५१	२७	१८	७	८	१८	३	२४	२६	6	धनु	९	२३	२१	५६	४९	२८	५०	१५	२	प्रदोष व्रत, वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतलनाथ जन्म जैन
१८	१३	चं	१०	३५	११	२१	उषा	४७	३४	२६	९	सि	४०	२७	२३	१८	व	१०	३५	११	२१	२७	२१	७	७	१८	४	२५	२७	7	म. १०।२१	९	२४	२२	४५	४८	२९	५२	१६	१५	भ. ११।२१ से २१।३१ तक, मास शिवरात्री व्रत
१९	१४	मं	१	२२	७	३९	श्र	४०	१५	२३	१३	व्य	२९	४९	१९	२	श	१	२२	७	३९	२७	२५	७	६	१८	५	२६	२८	8	मकर	९	२५	२३	३३	४६	३०	४६	१७	२९	प्लूटो धनु मूल में प्रवेश १७।५३, व्यतिपात पुण्यं, देवपितृकार्य F
०	३०	मं	५२	१३	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अमावस्या क्षयः

D श्री रामानन्दाचार्य ज., फरवरी मास २ ता. २८ प्रा. F अमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि ३०, विशाल मेला हरिद्वार व प्रयाग

माघ कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	८	९	५	९	२	०	६	१०	९	७
१९	१५	२	१०	२४	५	२८	२	२	११	२१	२१
१८	२७	४२	३३	५६	१५	२६	४२	४२	३०	४	४१
३२	३४	२०	११	१२	८	१६	१०	२०	५४	४८	५६
६०	८०९	४२	९८	०	७५	४	३	३	३	२	१
५२	१८	१५	३३	५	९	२५	११	११	६५	१६	३७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

११ह. ९ मं.
सू.
१२ ८
बु.१० प्लू.
ने.शु. के.७ चं.
१ रा. ४
२ ६
गु.
३ श. ५

मास में पांच बुध व पांच गुरुवार होना और कृष्णा चतुर्थी तिथि को शनिवार होना विश्व के कई भू-भाग पर अग्निकाण्ड, विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। तस्करों व चोरों के गिरोह हलचल पैदा करेंगे। धर्म की आड़ से लोगों में आतंक पैदा कर स्वार्थसिद्धि में प्रयत्नशीलता हेतु प्रदर्शन करेंगे। यथा—चतुर्थी माघ मासस्य शनिवारेण संयुता। दुर्भिक्षंमृत्युचौराग्नि भयं धान्यं विनाशनम्॥ देश के शासकों में मतान्तर बढ़ कर अनेक प्रान्तों में मंत्री मण्डल का हेरफेर रहेगा। कर्मचारियों व शासकों का विवाद रहकर आन्दोलन प्रदर्शन व हड़तालें प्रायः अधिक रहेंगी। भौमवती अमावस्या से व्यापारियों को कष्ट व राजकीय परेशानियां बढ़ेंगी। तेजी मन्दी विचार— बुध मकर में धान्यादि के भावों में स्थिरता एवं समानता कारक है। कृ. ४ धनु में मंगल से तिल, मूंगफली, सरसों, बिनौला, गुड़, चीनी, शक्कर में तेजी का फलप्रद है। वक्री गुरु चना, ज्वार, जौ में तेजी व रुई, कपास, सूती वस्त्रों में मन्दी रहे। रसायनिक वस्तुएं रंग, रोगन, दवाइयां, नशीले पदार्थों व शेयर बाजार भावों में उतार चढ़ाव के बाद तेजी का प्रभाव रहेगा। आकाश लक्षण— पहाड़ी इलाकों हिमाचल प्रदेश, बंगाल, मेघालय व काश्मीर में भारी बर्फ गिरने से शीत वृद्धि रहेगी। सामान्य वर्षा होगी। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में बादल चाल व शीत लहर चलेगी। शकुन विचार— माघ कृष्णा ६ तिथि को यदि आकाश साफ रहे तो रुई व कपास की फसल होने में सन्देह है। यथा—माघ बदि छठ के दिन निर्मल हो आकाश। तो तुम निश्चय जानियो निपजे नहीं कपास॥ माघ बदी तीज को बादल गर्जना मात्र ही करे तथा वर्षा न होवे तो गेहूं का संग्रह करने वालों को आगे चलकर उत्तम लाभ होता है। अर्थात् तेजी होती है।

ता. ८ फरवरी ❖ माघ कृ. १४ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

११ ह. ९ मं.
सू.शु.
१२ ८
१०बु. प्लू.
ने.चं. ७ के.
१ रा. ४
२ ६
गु.
३ श. ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	८	९	५	९	२	०	६	१०	९	७
२५	१२	६	२०	२४	१२	२८	२	२	११	२१	२९
२३	६	५६	३५	५२	४६	०	२३	२३	५०	१८	५९
३३	३६	२४	३९	५१	०	३८	५	५	४१	२८	१४
६०	११९	४२	१०३	१	७५	४	३	३	३	२	१
४६	२८	२६	०७	१३	८	३	११	११	२१	१६	२८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघ शुक्ल पक्ष-२३ श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ९ से २४ फरवरी सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति २० माघ से ५ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-वसन्त ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.
२०	१	बु	४३	३८	२४	३३	ध	३३	२३	२०	२७	वरि	१९	२८	१४	५३	किं	१७	५०	१४	१४	२७	२९	७	६	१८	५	२७	२९	9
२१	२	गु	३६	५	२१	३१	शत	२७	२७	१८	४	परि	९	४८	११	०	बा	९	४३	१०	५८	२७	३३	७	५	१८	६	२८	३०	10
२२	३	शु	२९	५९	१९	४	पूभा	२२	५४	१६	१४	शि	१/५३	०/४५	७/२८	१२/५०	तै	२	५१	८	१३	२७	३६	७	४	१८	७	२९	मु१	11
२३	४	श	२५	४१	१७	२०	उ.भा	२०	५	१५	६	सा	४७	५८	२६	२५	वि	२५	४१	१७	२०	२७	४०	७	३	१८	८	फा१	२	12
२४	५	र	२३	२६	१६	२५	रे	१९	१६	१४	४५	शुभ	४३	४९	२४	३५	बा	२३	२६	१६	२५	२७	४४	७	३	१८	८	२	३	13
२५	६	चं	२३	२०	१६	२२	अ	२०	३२	१५	१५	शु	४१	२१	२३	३४	तै	२३	२०	१६	२२	२७	४८	७	२	१८	९	३	४	14
२६	७	मं	२५	१७	१७	८	भ	२३	४९	१६	३२	ब	४०	२५	२३	११	व	२५	१७	१७	८	२७	५२	७	१	१८	१०	४	५	15
२७	८	बु	२९	३	१८	३७	कृ	२८	४९	१८	३२	ऐ	४०	४८	२३	१९	ब	२९	३	१८	३७	२७	५६	७	०	१८	११	५	६	16
२८	९	गु	३४	१२	२०	४०	रो	३५	१०	२१	३	वै	४२	९	२३	५१	बा	१	३०	७	३५	२८	०	६	५९	१८	११	६	७	17
२९	१०	शु	४०	१६	२३	५	मृ	४२	२२	२३	५५	वि	४४	९	२४	३८	तै	७	१०	९	५१	२८	४	६	५८	१८	१२	७	८	18
३०	११	श	४६	४२	२५	३८	आ	४९	५५	२६	५६	प्री	४६	२४	२५	३१	व	१३	२९	१२	२१	२८	८	६	५८	१८	१३	८	९	19
फा१	१२	र	५३	४	२८	१०	पुन	५७	२३	२९	५४	आ	४८	३६	२६	२३	ब	१९	५७	१४	५५	२८	१२	६	५७	१८	१३	९	१०	20
२	१३	चं	५९	१	३०	३२	पु	६०	०	-	-	सौ	५०	३१	२७	८	कौ	२६	७	१७	२३	२८	१६	६	५६	१८	१४	१०	११	21
३	१४	मं	६०	०	-	-	पु	४	२८	८	४२	शो	५१	५८	२७	४२	ग	३१	४६	१९	३७	२८	२०	६	५५	१८	१५	११	१२	22
४	१४	बु	४	२१	८	३८	श्ले	१०	५३	११	१५	अति	५२	५१	२८	२	व	४	२१	८	३८	२८	२४	६	५४	१८	१६	१२	१३	23
५	१५	गु	८	५१	१०	२५	म	१६	३३	१३	३०	सु	५३	६	२८	७	ब	८	५१	१०	२५	२८	२८	६	५३	१८	१६	१३	१४	24

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

दिनांक	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	सूर्य क्रान्ति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घ.	मि.	अस्त घं	मि	
9	कुं. ९।४८	९	२६	२४	१९	[illegible]	७	३२	१८	४१	पंचक प्रारम्भ ९।४८ से, धनिष्ठा में बुध १९।४०, श्री वल्लभ A
10	कुंभ	९	२७	२५	५	४३	८	१२	१९	४९	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक A आचार्य ज.(द.भा.)
11	मी. १०।३८	९	२८	२५	४८	४३	८	४७	२०	५४	भ. ३०।६ से, मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२६ प्रा., गौरी B
12	मीन	९	२९	२६	३१	४१	९	२०	२१	५६	भ. १७।२० तक, कुंभ में सूर्य १८।४४, संक्रांति मु. ३० बैठी, विनायक ४ व्रत
13	मे. १४।४५	१०	०	२७	१२	३९	९	५१	२२	५६	पंचक समाप्ति १४।४५, बुध कुंभ में १४।३८, वसंत पंचमी, C
14	मेष	१०	१	२७	५१	३७	१०	२३	२३	५६	वेलेन्टाईन डे C सरस्वती पूजा, तक्षक पूजा
15	वृ. २२।५१	१०	२	२८	२८	३६	१०	५७	२४	०	भ. १७।८ से २९।४७ तक, आरोग्य ७, रथ ७, अचल ७, D
16	वृष	१०	३	२९	४	३४	११	३४	२४	५५	पूर्वाषाढ़ा में मंगल ३०।२, धनिष्ठा में शुक्र १६।६, दुर्गाष्टमी, E
17	वृष	१०	४	२९	२८	३२	१२	१५	२५	५३	शतभिषा में बुध ७।५, श्री महानंदा नवमी E भीष्माष्टमी
18	मि. १०।३८	१०	५	३०	१०	३१	१३	१	२६	५०	सायन मीन में सूर्य १९।१२ , वसन्त ऋतु प्रा., पूर्व में शुक्र F
19	मिथुन	१०	६	३०	४१	२८	१३	५२	२७	४४	भ. १२।२१ से २५।३८ तक, सूर्य शतभिषा में ९।१२, जया G
20	क. २३।१०	१०	७	३१	९	२७	१४	४६	२८	३३	भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण, मोहर्रम ताजिया मु., रा. फाल्गुन प्रा.
21	कर्क	१०	८	३१	३६	२५	१५	४२	२९	१८	शुक्र कुंभ में प्रवेश २४।२, सोम प्रदोष व्रत, मेला पंचखण्ड H
22	कर्क	१०	९	३२	१	२४	१६	३९	२९	५८	श्री राम चरण स्नेही ज., श्री जीतेन्द्र नाथ रथ यात्रा जैन
23	सि. ११।१५	१०	१०	३२	२५	२१	१७	३५	३०	३३	भ. ८।३८ से २१।३४ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्य व्रत F अस्त २७।१९
24	सिंह	१०	११	३२	४६	२०	१८	३१	७	५	बुध पू.भाद्रपद में १०।४१, पूर्णिमा पुण्यं, माघी J

B तृतीया, तिल ४, वरद ४, कुन्द ४ D चन्द्रभागा ७, मन्वादि ७, श्री माधवाचार्य ज. G एकादशी व्रत सबका H पीठ विराटनगर (राज.), मेला जैसलमेर (राज.) ३ दिन का, गुरु हर राय ज.(प्रा. मत से), कल्पादि १३ J पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति, श्री रविदास ज., भैरव जयंती, ललिता ज., बाणेश्वर मेला (बांसवाड़ा)

शुक्रास्त पूर्वे १८ फरवरी

माघ शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	८	१०	५	१	२	०	६	१०	९	८
३	३	१२	४	२४	२२	२७	१	१	१२	२१	०
२९	२०	३६	४३	३७	४६	३०	५७	५७	१७	३६	१०
४	२९	२६	१४	४६	५१	१६	३९	३९	४६	३३	९
६०	७३३	४२	१०९	२	७५	३	३	३	३	२	१
३४	०९	३७	२१	४३	४	२७	११	११	२५	१४	१४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
पूर्भा.	कृति.	मृग.	पूर्भा.	चित्रा	श्रवण	पुन.	अश्विनी	चित्रा	पुष्य	श्रवण	मूल

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

१२ | १०शु.ने. मं. | ११ प्लू. | ९ | सू. ह. बु.११ | ८ | १ रा. | २ चं. | ३ श. | ५ | ७ के. | ४ | ६ गु.

शनिवारी संक्रांति व अतिचारी बुध एवं शनि के वक्र होने से प्रजा में रोग-महामारी का भय तथा शासकों में आपसी तनाव एवं राजनैतिक परेशानियां बढ़ने के योगप्रद हैं। यथा—

क्रूरा वक्रा यदाकाले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः। अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृप राष्ट्र भयंकराः॥

शुक्ला ४ को शनिवार व मंगल शनि का समसप्तक योग न्यूजीलैण्ड, श्रीलंका, आष्ट्रेलिया, जापान व वर्मा, बंगलादेश आदि राष्ट्रों में अराजकता, अशान्ति, बम विस्फोट अथवा अग्निदाह या वाहन यान दुर्घटना प्रद है। कहीं युद्धादि का भय बढ़ेगा। भारत को विज्ञान क्षेत्र व क्रीड़ा अभिनय में प्रंशसा पूर्वक सफलता बनने का भी योग है। **तेजी मन्दी विचार**—गुरुवार को चन्द्रदर्शन पक्ष पूर्वार्द्ध में चना, चावल, सरसों, मूंगफली व वनस्पति तेलों में तेजी कारक है। शु. ४ संक्रांति मु. ३० से गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थों में तेजी फलप्रद रहेगी। शु. १० शुक्रास्त से गेहूं, जौ, ज्वार, मूंग, मोंठ, बाजरा में मन्दी का झटका लगेगा। किराणा सामान व चीनी बाजार में घटाबढ़ी होकर मन्दी का रुख रहेगा। चांदी, सोना, ऊनी वस्त्र व कपास में मन्दा रहेगा। **आकाश लक्षण**—दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में बादल चाल के साथ कुछ स्थानों पर हल्की वर्षा होगी। दक्षिणी व पूर्वी प्रान्तों में तापमान बढ़कर मौसम परिवर्तन का प्रभाव बनेगा। सागर तट के स्थानों पर वायु प्रकोप एवं खण्ड वर्षा कारी योग है।

ता. २४ फरवरी ❖ माघ शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१२ | सू. | १० ने. | ९मं. प्लू | १ रा. | ह.११ शु.बु. | ८ | २ | ५ चं. | ३ श. | ७ के. | ४ | ६ गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	८	१०	५	१०	२	०	६	१०	९	८
११	९	१८	१९	२४	२	२७	१	१	१२	२१	०
३२	१४	१८	३५	११	४७	५	३२	३२	४५	५४	१९
४६	१८	१	३८	३	४	१०	१३	१३	१५	१३	१३
६०	७३३	४२	११२	४	७४	२	३	३	३	२	१
२०	२९	४८	५५	०७	५९	४३	११	११	२७	१०	०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
शत.	मघा	पू.भा.	पूर्भा.	चित्रा	धनि.	पुन.	अश्विनी	चित्रा	शत.	श्रवण	मूल

शकुन विचार—माघ शु. द्वितीया व तृतीया को यदि बादल जल ब...

भयंकार॥ शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यदि बादल ... ज या बीज रहे जलचार। चमके दामिनी जानिए चौमासा

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता.२५ फरवरी से १० मार्च सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से १९ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

रा.मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	हि	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
६	१	शु	१२	३०	११	५२	पूफा	२१	२३	१५	५५	धृ	५२	३९	२७	५६	कौ	१२	३०	११	५२	२८	३३	६	५२	१८	२७	१४	१५	25	कं. २१।५१	१०	१२	३३	६	[illegible]	१९	२६	७	३५	C विजया एकादशी व्रत स्मार्त, हर्षल शतभिषा ३ में ७।४९.
७	२	श	१५	१३	१२	५६	उफा	१५	२०	१६	५९	शू	५१	३०	२७	२७	ग	१५	१३	१२	५६	२८	३७	६	५१	१८	१८	१५	१६	26	कन्या	१०	१३	३३	२५	१७	२०	२२	८	३	भ. २५।१९ से
८	३	र	१६	५८	१३	३७	ह	२८	२१	१८	१०	ग	४९	३५	२६	४०	वि	१६	५८	१३	३७	२८	४१	६	५०	१८	१८	१६	१७	27	तु. ३०।३७	१०	१४	३३	४२	१५	२१	१८	८	३१	भ. १३।३७ तक, शतभिषा में शुक्र ८।४, कृष्णा चतुर्थी व्रत
९	४	चं	१७	४१	१३	५३	चि	३०	२२	१८	५७	वृ	४६	५०	२५	३३	बा	१७	४१	१३	५३	२८	४५	६	४९	१८	१९	१७	१८	28	तुला	१०	१५	३३	५७	१३	२२	१७	९	१	श्री पद्म प्रभु मोक्ष
१०	५	मं	१७	१७	१३	४३	स्वा	३१	१४	१९	१८	ध्रु	४३	२०	२४	४	तै	१७	१७	१३	४३	२८	४९	६	४८	१८	२०	१८	१९	M1	तुला	१०	१६	३४	१०	१२	२३	१८	९	३३	बुध मीन में १९।४४, मार्च मास ३ ता. ३१ प्रा.
११	६	बु	१५	४२	१३	३	वि	३०	५८	१९	१०	व्या	३८	३४	२२	१२	व	१५	४२	१३	३	२८	५३	६	४७	१८	२०	१९	२०	2	वृ. १३।१४	१०	१७	३४	२२	११	२४	०	१०	१०	भ. १३।३ से २४।३२ तक A जानकी जयंती, अष्टका श्राद्ध
१२	७	गु	१२	५१	११	५४	अनु	२९	२७	१८	३२	ह	३२	५८	२१	५७	व	१२	५१	११	५४	२८	५८	६	४६	१८	२१	२०	२१	3	वृश्चिक	१०	१८	३४	३३	९	२४	२३	१०	५४	बुध उ. भाद्रपदा में १६।३८, बुध पश्चिम में उदय ७।२०
१३	८	शु	८	४५	१०	१५	ज्ये	२६	४३	१७	२६	व	२६	२३	१७	१८	कौ	८	४५	१०	१५	२९	२	६	४५	१८	२१	२१	२२	4	ध. १३।२६	१०	१९	३४	४२	८	२५	३०	११	४६	सूर्य पूर्वा भाद्रपदा में १५।३६, कालाष्टमी, सीताष्टमी, A
१४	९	श	३	२९	८	७	मू	२२	५२	१५	५३	सि	१८	५३	१४	१७	ग	३	२९	८	७	२९	६	६	४४	१८	२२	२२	२३	5	धन	१०	२०	३४	५०	६	२६	३७	१२	४६	भ. १८।५४ से २९।३५ तक, समर्थ गुरु रामदास ज.,स्वामी B
१५	१०	श	५७	९	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	दशमी क्षय: B दयानन्द सरस्वती ज., आर्य समाज सप्ताहारंभ
०	११	र	५०	३	२६	४४	पूषा	१८	५	१३	५६	व्य	१०	३६	१०	५७	ब	२३	४२	१६	११	२९	१०	६	४३	१८	२३	२३	२४	6	म. १९।२५	१०	२१	३४	५६	४	२७	३९	१३	५३	वक्री गुरु हस्त ४ में १७।२१, व्यतिपात पुण्यं १०।५७ तक, C
१६	१२	चं	४२	२७	२३	४०	उषा	१२	३६	११	४४	परि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१६	१९	१३	१३	२९	१५	६	४२	१८	२३	२४	२५	7	मकर	१०	२२	३५	०	३	२८	३४	१५	५	उत्तराषाढ़ा में मंगल २२।२, विजया एकादशी व्रत वै., शनि D
१७	१३	मं	३४	४१	२०	३३	श्र	६	४५	९	२२	शि	४३	९	२३	५६	ग	८	२५	१०	६	२९	१९	६	४०	१८	२४	२५	२६	8	कुं. २०।११	१०	२३	३५	३	१	२९	२२	१६	१६	भ. २०।३३ से पंचक प्रारंभ २०।११ से, भौम प्रदोष व्रत, E
१८	१४	बु	२७	७	१७	३०	ध	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि	३४	४	२०	२७	वि	०	५२	७	०	२९	२३	६	३९	१८	२५	२६	२७	9	कुंभ	१०	२४	३५	४	[illegible]	३०	३	१७	२५	भ. ७।० तक, शुक्र पू.भाद्रपदा में २४।२२, शिव खप्पर पूजा, F
१९	३०	गु	२०	१०	१४	४२	पूभा	५०	४९	२६	५८	सा	२५	३१	१६	५१	बा	२०	१०	१४	४२	२९	२७	६	३८	१८	२५	२७	२८	10	मी. २१।२३	१०	२५	३५	३	५८	६	४०	१८	३२	देवपितृकार्य अमावस्या, आर्य समाज सप्ताह समाप्त

D पुनर्वसु २ में १४।५६ E महाशिवरात्री व्रत, द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजनार्चन व रुद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ ज., विश्व महिला दिवस F श्री वासुदेव पूज्य जयंती जैन

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

फाल्गुन कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	८	११	५	१०	२	०	६	१०	९	८
१९	२३	२४	४	२३	१२	२६	१	१	१३	२२	०
३४	०	१	१५	३३	४६	४६	६	६	१२	११	२६
४३	४	१३	४६	३९	४२	७	४७	४७	४९	१३	२०
६०	८४	४३	१०१	५	[illegible]	१	३	३	३	२	१
८	२०	१	५६	२२	५४	५६	११	११	२५	५	४५
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. ४ मार्च): बु.१२ | १० ने. | ९ मं. प्लू. | १ रा. | सू.११ शु. ह. | ८ चं. | २ | ५ | ३ श. | ७ के. | ४ | ६ गु.

फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र होना विज्ञजनों ने उत्तम फलकारक लिखा है। यथा—फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनी योगतः। सर्वान्दोषान्निहंत्येव सुभिक्षं भुवि जायते॥ मास में ५ शुक्रवार होना भी शुभ फलप्रद है। अतः विश्व की जनता में सुख व शांति का संचार होगा। व्यवसायों, नवीन उद्योगों का विस्तार होकर अनेक उत्पादनों में सफलता मिलेगी। जन- समूह का जीवन स्तर ऊंचा उठेगा। धार्मिक व सार्वजनिक कामों के प्रति रुझान बढ़ेगा। दशमी तिथि का क्षय होना पक्षान्त में विश्व के कुछ स्थानों पर आर्थिक संकट, भ्रष्टाचारी, अनैतिकता से प्रजा को परेशानी कारक है। गुरुवारी अमावस्या विद्वानों, बुद्धिजीवी व्यक्तियों के लिए प्रोत्साहन वृद्धिकारक है। **तेजी मन्दी विचार**—पक्षारम्भ से गुरु शनि वक्री होना नशीली वस्तुओं, चना, मक्का, सरसों व फलों में तेजी फलप्रद है। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल व लोहा एवं स्टील सामान में घटाबढ़ी चलेगी। गुड़, चीनी, शक्कर, रुई, कपास एवं शेयर बाजार में प्रायशः मन्दी का रुख रहेगा। मूंग, मोंठ, बाजरा, गेहूं व बिनौला में उतार-चढ़ाव के बाद तेजी रहेगी। पक्ष मध्य से बिजली का सामान, मशीनें व प्लास्टिक आदि में तेजी चलेगी। **आकाश लक्षण**—पक्षारम्भ में आकाश साफ रहकर तूफानी हवाओं का जोर रहेगा। कृ. ११ बाद राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात व पंजाब के कुछ स्थानों पर बूंदाबांदी व बादल चाल रहेगी। पूर्वी प्रान्तों में खण्ड वर्षा रहे। देश के मध्य भाग व दक्षिणी प्रान्तों में गर्म आभास का आरम्भ होगा। **शकुन विचार**—फाल्गुन कृष्ण द्वितीया तिथि को यदि आकाश साफ व स्वच्छ रहे तो आगामी वर्ष के श्रावण भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा का संकेत होता है। यथा—**फागुन बदी सु दौज दिन, बादल होय न बीज। सावण बरसे बाधवौ साजन खेलो तीज॥** फाल्गुन कृष्ण पक्ष में वर्षा न होना अग्रिम वर्ष में श्रेष्ठ वर्षा कारक है।

ता. १० मार्च ❖ फाल्गुन कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १० मार्च): १२बु. | सू. | १० ने. | ९मं. प्लू. | १ रा. | शु.११ ह.चं. | ८ | २ | ५ | ३ श. | ७ के. | ४ | ६ गु.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	८	११	५	१०	२	०	६	१०	९	८
२५	२०	२८	१३	२२	२०	२६	०	०	१३	२२	०
३५	२३	१९	२६	५१	१६	३६	४७	४७	३३	२३	३०
३	३२	३८	२१	२१	१	८	४२	४२	१८	२४	११
५९	८६	४३	७३	६	७४	१	३	३	३	१	०
५८	१६	०८	५१	१०	५१	१८	११	११	२३	५९	३३
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२५

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. ११ से २५ मार्च सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति २० फाल्गुन से ४ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र	म	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (५ घं. ३० मि.) रा	अं	क	वि	क्रांति	चन्द्रोदय घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	विवरण
२०	१	शु	१४	१२	१२	१८	उ.भा.	४३	२४	२५	३४	शुभ	२७	४९	१३	३५	ब	१४	१२	१२	१८	२९	३२	६	३७	१८	२६	२८	२९	11	मीन	१०	२६	३५	१	[illegible]	७	१६	१९	३६	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक
२१	२	श	९	३५	१०	२६	रे	४५	२९	२४	४८	शु	११	१४	११	५	कौ	९	३५	१०	२६	२९	३५	६	३६	१८	२६	२९	१	12	मे. २८।४८	१०	२७	३४	५६	५४	७	४६	२०	३८	सफर मु. मास २ प्रा., पंचक समा. २८।४८, मंगल मकर A
२२	३	र	६	३७	९	१३	अ	४५	२१	२४	४३	ब्र	५	५९	८	५८	ग	६	३७	९	१३	२९	४०	६	३५	१८	२७	३०	२	13	मेष	१०	२८	३४	५०	५१	८	१८	२१	४०	भ. २०।५४ से, पं. लेखराम वीर तृतीया, विनायक चतुर्थी व्रत
२३	४	चं	५	३०	८	४६	भ	४७	५	२५	२४	ऐं	७/५९	११/५२	७/३०	२१/३०	वि	५	३०	८	४६	२९	४५	६	३४	१८	२८	चै१	३	14	मेष	१०	२९	३४	४१	४९	८	५२	२२	४१	भ. ८।४६ तक, मीन में सूर्य १५।३९, संक्रांति मु. १५ बैठी, B
२४	५	मं	६	१९	९	४	कृ	५०	४०	२६	४८	वि	५९	०	३०	९	बा	६	१९	९	४	२९	४९	६	३२	१८	२८	२	४	15	वृ. ७।४१	११	०	३४	३०	४७	९	२९	२३	४१	याज्ञवल्क्य जयंती B मीन मलमास प्रा., संत चतुर्थी (उड़ीसा)
२५	६	बु	८	५९	१०	७	रो	५५	५२	२८	५२	प्री	५९	२७	३०	१८	तै	८	५९	१०	७	२९	५३	६	३१	१८	२९	३	५	16	वृष	११	१	३४	१७	४५	१०	९	२४	०	गौरूपिणी षष्ठी (बंगाल) C सूर्य उत्तरा भाद्रपदा में २३।५८
२६	७	गु	१३	१६	११	४९	मृ	६०	०	-	-	आ	६०	०	-	-	व	१३	१६	११	४९	२९	५८	६	३०	१८	२९	४	६	17	मि. १८।६	११	२	३४	२	४२	१०	५४	२४	४०	भ. ११।४९ से २४।५० तक, शुक्र मीन में प्रवेश २४।५३, C
२७	८	शु	१८	४३	१३	५८	मृ	२	२२	७	२६	आ	०	५४	६	५१	ब	१८	४३	१३	५८	३०	२	६	२९	१८	३०	५	७	18	मिथुन	११	३	३३	४४	४१	११	४३	२५	३६	श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, होलाष्टक प्रा., श्री दादू दयाल D
२८	९	श	२४	५१	१६	२४	आ	९	३६	१०	१८	सौ	२	५५	७	३८	कौ	२४	५१	१६	२४	३०	६	६	२८	१८	३०	६	८	19	मिथुन	११	४	३३	२५	३८	१२	३७	२६	२८	वक्री बुध २८।५० D जयंती, अष्टान्हिक व्रतारंभ जैन
२९	१०	र	३१	५	१८	५३	पुन	१७	३	१३	१६	शो	५	११	८	३१	ग	३१	५	१८	५३	३०	११	६	२७	१८	३१	७	९	20	क. ६।३२	११	५	३३	३	३५	१३	३२	२७	१४	उ.भाद्रपदा में शुक्र १७।८, सायन मेष में सूर्य १८।९, रवि E
३०	११	चं	३६	५६	२१	१२	पु	२४	१४	१६	७	अति	७	१७	९	२०	व	४	७	८	४	३०	१५	६	२६	१८	३२	८	१०	21	कर्क	११	६	३२	३८	३४	१४	२९	२७	५६	भ. ८।४ से २१।१२ तक, आमलकी एकादशी व्रत सबका
चै१	१२	मं	४२	०	२३	१२	श्ले	३०	४४	१८	४२	सु	८	५५	९	५९	ब	९	३७	१०	१५	३०	१९	६	२४	१८	३२	९	११	22	सिं. १८।४	११	७	३२	१२	३१	१५	२६	२८	३२	गोविन्द द्वादशी, श्यामजी मेला ३ दिन का पूर्ति (राज.), बुध F
२	१३	बु	४६	०	२४	४७	म	३६	१६	२०	५४	धृ	९	५२	१०	२०	कौ	१४	१०	१२	३	३०	२४	६	२३	१८	३३	१०	१२	23	सिंह	११	८	३१	४३	२९	१६	२२	२९	५	प्रदोष व्रत
३	१४	गु	४८	४९	२५	५४	पू.फा.	४०	४०	२२	३८	शू	९	५७	१०	२१	गर	१७	३५	१३	२४	३०	२८	६	२२	१८	३३	११	१३	24	कं. २९।०	११	९	३१	१२	२७	१७	१८	२९	३६	भ. २५।५४ से, रेवती ४ मीन में राहु, चित्रा २ कन्या में केतु २९।४०
४	१५	शु	५०	२३	२६	३०	उ.फा.	४३	५३	२३	५४	गं	९	७	१०	०	वि	१९	४६	१४	१६	३०	३२	६	२१	१८	३४	१२	१४	25	कन्या	११	१०	३०	३९	२५	१८	१४	३०	५	भ. १४।१६ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत पुण्यं, होलिका G

A में १३।२०, बुध रेवती में २६।७, फुलरिया दूज, श्री रामकृष्ण परमहंस ज. F पश्चिम में अस्त १२।३६, राष्ट्रीय चैत्रारंभ, मार्गी शनिः २०।२२ E उत्तर गोले, मेला श्यामजी खाटू (राज.) ३दिन का प्रा., रवि दशमी G दहन, चैतन्य महाप्रभु ज., अष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन, होलाष्टक पूर्ति, मन्वादि १५, गुड फ्राइडे

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

फाल्गुन शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२	९	११	५	११	२	०	६	१०	९	८
३	५	४	१९	२२	०	२६	०	०	१४	२२	०
३३	४१	५	५३	६	१४	२८	२२	२२	०	३८	३३
४४	२५	११	४३	५०	२२	५४	१६	१६	५	१४	४७
५९	७१५	४३	१२	७	७४	०	३	३	३	१	०
४१	१९	१६	२९	०	४३	२४	११	११	१८	४१	१८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
उ.भा.	मृग.	पू.षा.	रेवती	हस्त	पू.भा.	पुन.	अश्विनी	चित्रा	शत.	श्रवण	मूल

कुण्डली (ता. १८ मार्च): १ रा. | ११ ह. | १० ने. मं. | ९ प्लू. | ८ | ७ के. | ६ गु. | ५ | ४ | ३ श. चं. | २ | १२ शु. सू. बु.

पक्ष में शनि मंगल का षडाष्टक योग व मकर राशि जो उच्च राशि है उस पर मंगल का गोचर भ्रमण यवन राष्ट्रों तुर्की, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईरान आदि राष्ट्रों में वाहन यान दुर्घटनाएं, प्राकृतिक आपदाओं एवं अराजकता, युद्धोन्माद से जनता में आन्तरिक भयवृद्धि प्रद है। यथा—**मकरे च स्थिते भौमे घृत तैल महर्घता। सुभिक्षं सर्व धान्यानां लोकानां दुःख पीडनम्॥** प्रान्तीय सरकारों में कहीं आन्तरिक विद्रोह से शासन सत्ता का परिवर्तन होगा। विश्व के समृद्ध राष्ट्र अनेक सामान्य राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व बनाने में तत्पर बनेंगे। देश के पूर्वी क्षेत्रों व राज्यों में राजनैतिक गतिविधियों से केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में चिन्ताओं का उदय होगा। **तेजी मन्दी विचार**—प्रतिपदा शुक्रवार को चन्द्रदर्शन सरसों, तिल, तेल, चावल, चना, गेहूं, मूंग, मोंठ में मन्दी कारक है। सोना, चांदी में अस्थिरता बनकर तेजी रहेगी। शु. ९ बुध वक्री से धान्य भावों में तेजी का प्रभाव होगा। शनि मार्गी लोहा, सोना, ताम्बा, पीतल, नशीली वस्तुएं और मशीनरी के सामान में विशेष तेजी फलप्रद रहेगा। पक्ष में रसायन पदार्थ, रबड़ सामान, बिल्डिंग मैटीरियल, व बिजली के सामान में अच्छी तेजी कारक है। **आकाश लक्षण**—सोमवारी मीन संक्रान्ति प्रभाव से पक्ष में अनेक स्थानों पर बादल चाल होकर वर्षा होगी। उत्तरी भारत में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश में तेज वायु के साथ कुछ स्थानों पर ओला वर्षा होगी। केरल, मद्रास, कर्णाटक व महाराष्ट्र एवं आन्ध्र प्रदेश में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। **शकुन विचार**—फाल्गुन पूर्णिमा को बादल गर्जना व वर्षा होने पर आगे भाद्रपद मास में धान्य भावों में मंहगाई होती है। यथा—**फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गरजे वर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥** होली दहन के बाद दूसरे दिन सुर्योदय होने पर भी चन्द्र दिखाई दे तो श्रेष्ठ यदि सुर्योदय से पहले चन्द्र अस्त हो तो नेष्ट होता है।

ता. २५ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २५ मार्च): १ रा. | ११ ह. | १० मं. ने. | ९ प्लू. | ८ | ७ के. | ६ चं. गु. | ५ | ४ | ३ श. | २ | १२ शु. बु. सू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	५	९	११	५	११	२	०	६	१०	९	८
१०	०	९	१८	२१	८	२६	०	०	१४	२२	०
३०	१५	८	३७	१६	५७	२८	०	०	२२	५०	३५
३९	०	२५	६	१३	३	२५	१	१	४६	५७	५
५९	७६३	४३	३७	७	७४	०	३	३	३	१	०
२५	२२	२३	४८	२९	३६	२२	११	११	१०	४०	३
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
उ.भा.	उ.फा.	पू.षा.	रेवती	हस्त	उ.भा.	पुन.	अश्विनी	चित्रा	शत.	श्रवण	मूल

चैत्र कृष्ण पक्ष-२६

श्री सं. २०६१ शाके १९२६

ता. २६ मार्च से ८ अप्रैल सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
५	१	श	५०	४६	२६	३८	ह	४५	५७	२४	४३	वृ	७	२०	९	१६	बा	२०	४५	१४	३८
६	२	र	५०	३	२६	२०	चि	४६	५५	२५	५	ध्रु	४	३९	८	१०	तै	२०	३४	१४	३२
७	३	चं	४८	१८	२५	३६	स्वा	४६	५३	२५	३	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	१९	१८	१४	१
८	४	मं	४५	३७	२४	३१	वि	४५	५७	२४	३१	व	५१	४१	२६	५७	ब	१७	५	१३	६
९	५	बु	४२	७	२३	६	अनु	४४	१२	२३	५६	सि	४५	५९	२४	३९	कौ	१३	५९	११	५१
१०	६	गु	३७	५४	२१	२४	ज्ये	४१	४४	२२	५५	व्य	३९	४३	२२	७	ग	१०	७	१०	१७
११	७	शु	३३	२	१९	२६	मू	३८	३९	२१	४०	वरि	३२	५६	१९	२३	वि	५	३४	८	२६
१२	८	श	२७	३९	१७	१५	पू.षा	३५	४	२०	१३	परि	२५	४४	१६	२९	बा	०	२६	६	२२
१३	९	र	२१	५३	१४	५६	उ.षा	३१	७	१८	३७	शि	१८	१४	१३	२८	ग	२१	५३	१४	५६
१४	१०	चं	१५	५३	१२	३१	श्र	२६	५८	१६	५७	सि	१०	३१	१०	२२	वि	१५	५३	१२	३१
१५	११	मं	९	५१	१०	५	ध	२२	४१	१५	१६	सा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	९	५१	१०	५
१६	१२	बु	४	०	७	४३	शत	१८	५५	१३	४१	शु	४७	४६	२५	१४	तै	४	०	७	४३
०	१३	बु	५८	३०	२९	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	१४	गु	५३	४५	२७	३६	पू.भा	१५	३०	१२	१८	ब्र	४०	५८	२२	२९	वि	२६	३	१६	३१
१८	३०	शु	४९	५७	२६	४	उ.भा	१२	५१	११	१३	ऐं	३४	५३	२०	२	च	२१	४४	१४	४७

दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि
३०	३६	६	२०	१८	३४	१३	१५	26	कन्या	११	११	३०	४	[illegible]	११	११	६	३३
३०	४१	६	१९	१८	३५	१४	१६	27	तु. १२।५७	११	१२	२९	२७	२१	२०	१०	७	३
३०	४५	६	१७	१८	३५	१५	१७	28	तुला	११	१३	२८	४८	१९	२१	१२	७	३५
३०	४९	६	१६	१८	३६	१६	१८	29	वृ. १८।४७	११	१४	२८	७	१७	२२	१६	८	१०
३०	५४	६	१५	१८	३७	१७	१९	30	वृश्चिक	११	१५	२७	२४	१५	२३	२३	८	५२
३०	५८	६	१४	१८	३७	१८	२०	31	ध. २२।५५	११	१६	२६	३९	१४	२४	०	९	४१
३१	२	६	१३	१८	३८	१९	२१	A1	धनु	११	१७	२५	५३	१२	२४	५९	१०	३८
३१	६	६	१२	१८	३८	२०	२२	2	म. २५।५०	११	१८	२५	५	१०	२५	३२	११	४२
३१	११	६	११	१८	३९	२१	२३	3	मकर	११	१९	२४	१५	८	२६	२८	१२	५१
३१	१५	६	९	१८	३९	२२	२४	4	कुं. २८।६	११	२०	२३	२३	७	२७	१७	१४	०
३१	१९	६	८	१८	४०	२३	२५	5	कुम्भ	११	२१	२२	३०	५	२७	५९	१५	८
३१	२३	६	७	१८	४०	२४	२६	6	कुम्भ	११	२२	२१	३५	३	२८	३७	१६	१४
०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३१	२८	६	६	१८	४१	२५	२७	7	मी. ६।३७	११	२३	२०	३८	१	२९	१०	१७	१८
३१	३२	६	५	१८	४२	२६	२८	8	मीन	११	२४	१९	३९	[illegible]	२९	४२	१८	२०

मंगल श्रवण में १०।२, वसंत प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, छारेड़ी, A
वक्री बुध उ. भाद्रपदा में २४।५०, कलम दान पूजा देशाचारे, B
भ. १४।१ से २५।३६ तक B संत तुकाराम ज., ईस्टर संडे
कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ A धूलि वन्दन
रंग पंचमी, श्री जयंती C एकनाथ षष्ठी, व्यतिपात पुण्यं
भ. २१।२४ से, सूर्य रेवती में १०।५४, शुक्र रेवती में १०।३१, C
भ. ८।२६ तक, शीतला सप्तमी, मेला शीतला माता कुराली D
कालाष्टमी, शीतलाष्टमी (बासी भोजन करना चाहिए)
भ. २५।४३ से, ऋषभदेव जयंती, वक्री गुरु हस्त ३ में २९।००
भ. १२।३१ तक, पंचक प्रारंभ २८।६, दशामाता व्रत
पापमोचनी एका. व्रत सबका, बुध पूर्व में उ. १७।४७, शनि पुन. ३ में २७।४२
भ. २९।३१ से, प्रदोष व्रत, वारूणी पर्व ७।४३ से १३।४१ E
त्रयोदशी क्षयः E तक, आखरी चाह शम्बा मु. F (हरियाणा)
भ. १६।३१ तक, मास शिवरात्री व्रत, मेला पृथूदक पिहोवा F
देवपितृ कार्य अमा., मन्वादि ३०, चांद्र संवत्सर २०६१ पूर्ण

॥ शुभम् ॥

D (पंजाब), अप्रैल मास ४ ता. ३० प्रा., मूर्ख दिवस, चेहल्लम शहीद करबला

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

चैत्र कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २ अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	९	११	५	११	२	११	५	१०	९	८
१८	१७	१४	१२	२०	१८	२६	२९	२९	१४	२३	०
२५	५६	५५	२१	१५	५३	३४	३४	३४	४७	३	३४
५	८	५६	३४	१७	२४	२८	३५	३५	३१	३६	३५
५९	८५३	४३	४६	७	७४	१	३	३	२	१	०
१०	५६	३०	३९	४३	२९	१५	११	११	५९	२८	१२
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१ — ११ ह. — १२ — २ — १०ने. मं. — सू. शु. रा. बु. — ९ चं.प्लू. — ३ श. — ६ गु.के. — ४ — ८ — ५ — ७

गुरु केतु का योग एवं चार ग्रह एक राशि पर आ जाना पक्ष में विश्व के कई भागों में धार्मिक, साम्प्रदायिक विवाद वृद्धिप्रद है। जिससे कहीं संघर्षादि में रक्तपात से जनमानस पीड़ित होंगे। कहीं अतिवृष्टि व कहीं अनावृष्टि से कृषि में हानि होगी। यथा—एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पंच खेचराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी पीड़िता जन मानसाः॥ रूस, चीन, जापान, मिश्र, इजरायल, फ्रांसादि देशों में प्राकृतिक आपदाएं भूकम्प, भूस्खलन अथवा राजनैतिक विघटन होकर हत्याकाण्ड, अग्नि प्रज्वलन, बम विस्फोट आदि से जनधन की क्षति संभव है। देश के उत्तरी प्रान्तों में आतंकवादी दुर्घटनाओं से प्रजा एवं शासकों में चिन्ता व भय का वातावरण रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**—शनिवारी प्रतिपदा से तिल, तेल सरसों, घृत, मूंग, मोंठ, जौ, गेहूं में तेजी का प्रभाव रहेगा। कृ. ६ सूर्य रेवती से रुई, कपास, गुड़, चीनी, शक्कर, सरसों, तुरई व चना में मन्दी होगी। कृ. ९ वक्री हस्ते गुरु से सोना, चांदी, बने हुए स्वर्णाभूषण व ताम्बा, पीतल, लोहा, स्टील की वस्तुओं में तेजी चलेगी। किराणा व मेवा का सामान मन्दा रहेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष में मैदानी क्षेत्रों पर गर्मी का प्रभाव बढ़ेगा। हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के कुछ स्थानों पर वायु वेग के साथ बादलचाल होकर कहीं-कहीं बूंदाबांदी अथवा खण्ड वर्षा संभव है। **शकुन विचार**—चैत्र कृष्णाष्टमी व चतुर्दशी को बादल की घटाएं हों व उत्तर दिशा की हवाएं चलें तो अग्रिम संवत्सर में उत्तम वर्षा होती है। यथा—**चैत्र मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्याष्टमी तिथौ। तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभाय वत्सरे भवेत्॥** इति चान्द्र संवत्सरं। गणना कारि सब शुभाऽशुभ, सम्वत् इकसठ साल। सार लिखा निज ज्ञान से रखे टेक गोपाल॥

ता. ८ अप्रैल ❖ चैत्र कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१ — ११ह. — १२ रा. — २ — १०मं. ने. — सू. बु. श.चं. — ९ प्लू. — ३ श. — ६ गु.के. — ४ — ८ — ५ — ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	९	११	५	११	२	११	५	१०	९	८
२४	१३	१९	८	१९	२६	२६	२९	२९	१५	२३	०
१९	२०	१७	३९	२८	२०	४३	१५	१५	५	१२	३२
३९	३८	६	१७	५८	४	३५	३१	३१	५	१	५१
५८	८२६	४३	२०	७	७४	१	३	३	२	१	०
५९	३५	३३	३४	४०	२३	५४	११	११	५०	१८	२३
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (२१ मार्च से ५ अप्रैल तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
21	१	र	२८	२७	उभा	२२	३९	शु	१५	२३	मीन	नव संवत्सरारंभ, नवरात्र प्रा., गुड़ी पड़वा, गौतम जयंती
22	२	चं	२९	१७	रे	२३	५६	ब	१४	४०	मे. २३।५६	पंचक समा. २३।५६, सिंधारा झूलेलाल जयंती
23	३	मं	-	-	अ	२५	४८	ऐं	१४	२५	मेष	सफर मु. मास २ प्रा., गणगौरी पूजा, मत्स्य जयंती
24	३	बु	६	४२	भ	२८	११	वै	१४	३६	मेष	भ. १९।३७ से, शुक्र कृतिका में ३०।१८, विनायक ४ व्रत
25	४	गु	८	४०	कृ	-	-	वि	१५	११	वृ. १०।५१	भ. ८।४० तक
26	५	शु	११	१	कृ	६	५९	प्री	१६	१	वृष	बुध अश्विनी मेष में ७।१६, श्री रामजन्मोत्सव प्रा., A
27	६	श	१३	३५	रो	१०	१	आ	१७	०	मि. २३।३४	रोहिणी में मंगल १५।४८, प्लूटो वक्री ९।१६
28	७	र	१६	८	मृग	१३	४	सौ	१७	५६	मिथुन	भ. १६।८ से २९।२९ तक, वृष में शुक्र १३।५२, भानु ७
29	८	चं	१८	२५	आ	१५	५३	शो	१८	४०	मिथुन	दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, दुर्गा पूजा, मेला द्रोणगिरी
30	९	मं	२०	१२	पुन	१८	१६	अति	१९	१	क. ११।४३	रेवती में सूर्य २८।३९, राम नवमी, नवरात्र समा., तारा ज.
31	१०	बु	२१	२१	पु	२०	१	सु	१८	५३	कर्क	A हय ५ व्रत, स्कंद षष्ठी, कल्पादि ५, डोलोत्सव
A1	११	गु	२१	४५	श्ले	२१	४	धृ	१८	१२	सिं. २१।४	भ. ९।३९ से २१।४५ तक, कामदा एकादशी व्रत B
2	१२	शु	२१	२५	म	२१	२४	शू	१६	५५	सिंह	हरिदमनोत्सव B सबका, वक्री गुरु पू.फा.१ में २२।४७
3	१३	श	२०	२२	पू.फा	२१	३	गं	१५	५	कं. २६।५१	शनि प्रदोष व्रत, अनंग १३, महावीर ज. जैन
4	१४	र	१८	४३	उ.फा	२०	५	वृ	१२	४४	कन्या	भ. १८।४३ से २९।४२ तक, दमनक १४, पाम सण्डे
5	१५	चं	१६	३५	ह	१८	३९	ध्रु	९	५९	तु. २१।४८	सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्यं, श्री हनुमान ज., चैत्री पूर्णिमा

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (२० अप्रैल से ४ मई)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
20	१	मं	२०	२९	अ	९	२४	प्री	२१	५२	मेष	देवदामोदर पुण्यम् B सूर्य भरणी में ९।४९, गंगा सप्तमी
21	२	बु	२२	३०	भ	११	४८	आ	२२	२७	वृष १८।२८	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, राष्ट्रीय वैशाखारंभ
22	३	गु	२४	४९	कृ	१४	३३	सौ	२३	१६	वृष	रवि-उल-अव्वल मु.मा. ३ प्रा. वक्री बुध रेवती मीन A
23	४	शु	२७	२१	रो	१७	३३	शो	२४	१४	वृष	भ. १४।४ से २७।२१ तक, विनायक ४ व्रत
24	५	श	-	-	मृग	२०	३७	अति	२५	१५	मि. ७।५	शुक्र मृग. में १७।३२, शंकराचार्य ज., बुध पूर्व में उ. १६।२४
25	५	र	५	५३	आ	२३	३६	सु	२६	१०	मिथुन	चन्दन षष्ठी (बिहार), अगस्त अस्त १५।२६
26	६	चं	८	१६	पुन	२६	१७	धृ	२६	५०	क. ११।३९	C विश्व मजदूर दिवस
27	७	मं	१०	१६	पु	२८	३०	शू	२७	७	कर्क	भ. १०।१६ से २३।४ तक, मंगल मिथुन में २४।१३, B
28	८	बु	११	४३	श्ले	-	-	गं	२६	५४	कर्क	दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती
29	९	गु	१२	२८	श्ले	६	५	वृ	२६	७	सिं. ६।५	सीता नवमी, महावीर स्वामी केवल ज्ञान दिवस
30	१०	शु	१२	२८	म	६	५५	ध्रु	२४	४२	सिंह	भ. २४।९ से, आखगे चाहर शम्बा, बुध मार्गी १७।५१
M1	११	श	११	४०	पू.फा	७	०	व्या	२२	४१	कं. १२।५४	भ. ११।४० तक, मोहिनी एकादशी व्रत सबका, C
2	१२	र	१०	८	उ.फा	६/२९	२०/०	ह	२०	६	कन्या	प्रदोष व्रत, रुकमणी द्वादशी, अशोक त्रिरात्रि व्रत प्रा.
3	१३	चं	७	५७	चि	२७	७	व	१७	१	तु. १६।७	भ. २९।१३ से, ईद-ए-मिलाद (बारावफात)
0	१४	चं	२९	१३	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी क्षयः A में ६।२४, अक्षय तृतीया, परशुराम ज.
4	१५	मं	२६	५	स्वा	२४	४८	सि	१३	३२	तुला	भ. १५।४२ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा पुण्य, बुध पूर्णिमा

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (६ से १९ अप्रैल तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
6	१	मं	१४	४	चि	१६	५३	व्या	६/२७	५३/३५	तुला	बुध वक्री २५।६ B शहीद करबला मु.
7	२	बु	११	२१	स्वा	१४	५३	व	२४	९	तुला	भ. २१।५६ से, शुक्र रोहिणी में २६।५
8	३	गु	८	३१	वि	१२	४९	सि	२०	४२	वृ. ७।२०	भ. ८।३१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, अनसूइया ज.
0	४	गु	२९	४२	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी क्षयः
9	५	शु	२७	०	अनु	१०	४७	व्य	१७	१९	वृश्चिक	गुरु तेग बहादुर ज. (प्रा.मत से), गुड फ्राईडे, शनिA
10	६	श	२४	३०	ज्ये	८	५४	वरि	१४	४	ध. ८।५४	भ. २४।३० से
11	७	र	२२	१७	मू	७/३२	१४/५३	परि	११	१	धनु	भ. ११।२१ तक, शीतला पू., इस्टर संडे, चेहल्लम, B
12	८	चं	२०	२४	उ.षा	२८	५०	शि	८/२९	१३/४२	म. ११।३६	कालाष्टमी E २३।२६, सहादते ईमाम हसन (मु.)
13	९	मं	१८	५३	श्र	२८	११	सा	२७	३०	मकर	अश्वि. मेष में सूर्य १८।४, संक्रांति मु. ३० बैठी, वैशाखी (पं.)
14	१०	बु	१७	४६	ध	२७	५७	शुभ	२५	३७	कुं. १६।१	भ. ६।१६ से १७।४६ तक, पंचक प्रा. १६।१, C
15	११	गु	१७	४	शत	२८	८	शु	२४	६	कुंभ	वरूथिनी एका. व्रत सबका, श्री बल्लभा चार्य ज.
16	१२	शु	१६	५०	पू.भा	२८	४६	ब	२२	५५	मी. २२।३४	प्रदोष व्रत D मास शिवरात्री व्रत
17	१३	श	१७	२	उ.भा	२९	५२	ऐं	२२	७	मीन	भ. १७।२ से २९।१९ तक, मृग. में मंगल १२।५२, D
18	१४	र	१७	४३	रे	-	-	वै	२१	४१	मीन	A आर्द्रा ३ में ९।२२, पश्चिम में बुध अस्त ९।२५
19	३०	चं	१८	५३	रे	७	२४	वि.	२१	३६	मे. ७।२४	पंचक समा. ७।२४ [illegible]

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (५ से १९ मई)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
5	१	बु	२२	४२	वि	२२	१४	व्य	९	४६	वृ. १६।५४	ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा., गुरु मार्गी १८।२३
6	२	गु	१९	१४	अनु	१९	३४	वरि	५/२६	५१/५३	वृश्चिक	भ. २९।३० से, शुक्र मिथुन में २५।४९, नारद ज.
7	३	शु	१५	४८	ज्ये.	१६	५८	शि	२२	१	ध. १६।५८	भ. १५।४८ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
8	४	श	१२	३५	मू	१४	३४	सि	१८	२१	धनु	आर्द्रा में मंगल १२।१७
9	५	र	९	४२	पूषा	१२	३०	सा	१४	५९	म. १८।४	अश्विनी मेष में बुध ७।२४
10	६	चं	७	१५	उषा	१०	५५	शुभ	१२	०	मकर	भ. ७।१५ से १८।१३ तक, सूर्य कृतिका में २८।५
0	७	चं	२९	२०	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी क्षयः B सावित्री व्रतारंभ, शुक्र वक्री २७।४०
11	८	मं	२८	१	श्र	९	५२	शु	९	२८	कुं. २१।३४	पंचक प्रा. २१।३४ से, कालाष्टमी, मेला चानाणी माता
12	९	बु	२७	११	ध	९	२५	ब	७	२५	कुम्भ	A व्रत सबका, भरणी १ में राहु, स्वाती ३ में केतु १८।०
13	१०	गु	२७	१५	शत	९	३५	ऐं	५/२४	५४/५१	मी. २८।७	भ. १५।१३ से २७।१५ तक
14	११	शु	२७	४६	पूभा	१०	२२	वि	२८	१६	मीन	वृष में सूर्य १४।५७, संक्रांति मु. ४५ बैठी, अपरा एका. A
15	१२	श	२८	४९	उभा	११	४२	प्री	२८	६	मीन	मधुसुदन द्वादशी, अनन्त नाथ जन्म-तप
16	१३	र	-	-	रे	१३	३२	आ	२८	१८	मे. १३।३२	पंचक समा. १३।३२, प्रदोष व्रत
17	१३	चं	६	१९	अ	१५	४६	सौ	२८	४७	मेष	भ. ६।१९ से १९।१४ तक, मास शिवरात्री व्रत, वट B
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वृ. २५।१३	पितृकार्य अमावस्या, शनि आर्द्रा ४ में ११।३७

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (20 मई से 3 जून तक)

मई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
20	१	गु	१२	४७	रो	२४	१२	अति	६	२४	वृष	सायन मिथुन में सूर्य प्र. २१।५४, करिदिनं, करवीर A
21	२	शु	१५	१८	मृ	२७	१६	सु	७	२४	मि. १३।४४	रवि उल्ल आखिर मु. मा. ४ प्रा., रम्भा व्रत
22	३	श	१७	४८	आ	-	-	धृ	८	२६	मिथुन	बुध भरणी में १५।२६, प्रताप जयंती, रा. ज्येष्ठारंभ
23	४	र	२०	११	आ	६	१७	शू	९	२५	क. २६।२०	भ. ८।० से २०।११ तक, विनायक चतुर्थी व्रत
24	५	चं	२२	१८	पुन	९	८	गं	१०	१४	कर्क	सूर्य रोहिणी में २४।१४, श्रुति पंचमी जैन
25	६	मं	२४	०	पु	११	३९	वृ	१०	४७	कर्क	जामित्री ६, विंध्यवासिनी पू. B व्रत सबका, गायत्री ज.
26	७	बु	२५	९	श्ले	१३	४१	ध्रु	१०	५९	सिं. १३।४१	भ. २५।९ से A व्रत, नेपच्यून वक्री ७।१५
27	८	गु	२५	३८	म	१५	७	व्या	१०	४१	सिंह	भ. १३।२९ तक, दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती
28	९	शु	२५	२१	पूफा	१५	५२	ह	९	५१	कं. २१।५६	महेश नवमी, वक्री शुक्र वृष में १८।२२
29	१०	श	२४	१९	उफा	१५	५१	व	८	२५	कन्या	पुन. में मंगल १४।४, गंगा दशहरा, रामेश्वर यात्रा
30	११	र	२२	३२	ह	१५	५	सि	६ २७	२२ ४३	तु. २६।२६	भ. ११।३१ से २२।३२ तक, निर्जला एकादशी B
31	१२	चं	२०	५	चि	१३	३७	वरि	२४	३२	तुला	बुध कृति. में १२।३, चंपक १२, फलतिहा यजदहृम (मु.)
J1	१३	मं	१७	३	स्वा	११	३३	परि	२०	५४	वृ. २०।४०	भौम प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रा. (गुजरात)
2	१४	बु	१३	३५	वि	९	०	शि	१६	५६	वृश्चिक	भ. १३।३५ से २३।४५ तक, बुध वृष में १०।२८
3	१५	गु	९	५१	अनु	६ २०	८ ८	सि	१२	४५	ध. २७।८	सत्य व्रत पूर्णिमा पुण्यम्, कबीर ज., ज्येष्ठी पूर्णिमा, C
												C कोजागरी व्रत, शुक्र पश्चिम में अस्त ११।५२

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१८ जून से २ जुलाई तक)

जून	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
18	१	शु	२८	२५	मृ	९	१९	गं	१५	४३	मिथुन	A रथयात्रा (उड़ीसा), शनि अस्त पूर्व में १२।३५
19	२	श	-	-	आ	१२	१७	वृ	१६	२९	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, मंगल पुष्य में १७।३७,A
20	२	र	६	४२	पुन	१५	५	धृ	१७	१७	क. ८।२५	जमादि उल अव्वल मु. मास ५ प्रा., आर्द्रा में बुध ७।४५
21	३	चं	८	४५	पु	१७	३८	व्या	१७	५३	कर्क	भ. २१।३९ से, सूर्य आर्द्रा में २१।९, सायन कर्क B
22	४	मं	१०	२८	श्ले	१९	५७	ह	१८	१२	सि. १९।५१	भ. १०।२८ तक, राष्ट्रीय आषाढ़ प्रा.
23	५	बु	११	४७	म	२१	३८	व	१८	११	सिंह	स्कन्द ५, वक्री प्लूटो ज्येष्ठा ३ में २३।५
24	६	गु	१२	३६	पू.फा	२२	५३	सि	१७	४५	कं. २९।६	विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा C में ११।३१
25	७	शु	१२	४८	उ.फा	२३	३१	व्य	१६	५०	कन्या	भ. १२।४८ से २४।३९ तक, जैन अट्ठाई प्रा.
26	८	श	१२	२१	ह	२३	२८	वरि	१५	२२	कन्या	पुनर्वसु में बुध १३।१९, दुर्गाष्टमी
27	९	र	११	११	चि	२२	४४	परि	१३	२१	तु. ११।११	भड्डली नवमी, शूद्र ९, कन्दर्प ९
28	१०	चं	९	२०	स्वा	२१	१९	शि	१०	४६	तुला	भ. २०।१० से, आशा १०, गिरिजा पूजा
29	११	मं	६	५१	वि	१९	१८	सि	७ २८	४० ५	वृ. १३।५१	भ. ६।५१ तक, देवशयनी एका. सबका, शुक्र मार्गी २८।२७
0	१२	मं	२७	४८	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी क्षयः B में सूर्य ६।२६, अंगारकी ४ व्रत
30	१३	बु	२४	१९	अनु	१६	४८	शुभ	२४	१०	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारंभ
J1	१४	गु	२०	३३	ज्ये	१३	५७	शु	२०	०	ध. १३।५७	भ. २०।३३ से, बुध कर्क में १३।४६, बुध उदय पश्चिम C
2	१५	शु	१६	४०	मू	१०	५६	ब्र	१५	४४	धनु	भ. ६।३७ तक, सत्य व्रत, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (४ से १७ जून तक)

जून	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
4	१	शु	७	०	मू	२४	१०	सा	८ २८	३० २२	धनु	वट सावित्री व्रत पारणा C गुरु पू.फा. २ में २९।८
0	२	शु	२६	१४	०	०	०	०	०	०	०००	द्वितीया क्षयः A उर्स निजामुद्दीन औलिया प्रा.
5	३	श	२२	४१	पूषा	२१	२६	शु	२४	२१	म. २६।४८	भ. १२।२५ से २२।४१ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत,A
6	४	र	१९	३३	उषा	१९	५	ब्र	२०	४४	मकर	B में बुध १८।५९, बुध पूर्व में अस्त २३।५३, C
7	५	चं	१६	५७	श्र	१७	१७	ऐं	१७	३५	कुं. २८।३८	पंचक प्रा. २८।३८ से, सूर्य मृग. में २२।१२, रोहि. B
8	६	मं	१५	१	धनि	१६	१०	वै	१४	५९	कुंभ	भ. १५।१ से २६।२० तक D हर्षल वक्री १३।३३
9	७	बु	१३	५१	शत	१५	४८	वि	१३	०	कुंभ	वक्री शुक्र रोहिणी में १४।४३
10	८	गु	१३	२८	पूभा	१६	१२	प्री	११	३९	मी. १०।२	कालाष्टमी, मेला भून्तर (हि.प्र.)
11	९	शु	१३	५१	उभा	१७	२१	आ	१०	५४	मीन	भ. २६।१८ से E मृग. में बुध ५।२६, संक्रांति मु. १५ बैठो
12	१०	श	१४	५६	रे	१९	१०	सौ	१०	४३	मे. १९।१०	भ. १४।५६ तक, पंचक समा. १९।१० तक, D
13	११	र	१६	३४	अ	२१	३०	शो	१०	५९	मेष	योगिनी एका. व्रत सबका, पूर्व में शुक्र उदय १६।५२
14	१२	चं	१८	३८	भ	२४	१३	अति	११	३६	मेष	मिथुन में सूर्य २१।३५, मंगल कर्क में १०।३९,E
15	१३	मं	२०	५९	कृ	२७	११	सु	१२	२८	वृ. ६।५७	भ. २०।५९ से, पुन. १ में शनि २९।१०, प्रदोष व्रत
16	१४	बु	२३	२८	रो	-	-	धृ	१३	२८	वृष	भ. १०।१३ तक, मास शिवरात्री व्रत
17	३०	गु	२५	५९	रो	६	१५	शू	१४	३१	मि. १९।४७	मिथुन में बुध ६।५२, देवपितृ कार्य अमावस्या

प्र.श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (३ से १७ जुलाई तक)

जुलाई	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
3	१	श	१२	५२	पूषा	७ २९	५६ ८	ऐं	११	३१	म. १३।१२	पुष्य में बुध ८।१६ A गुरु पू.फा. ३ में २५।५
4	२	र	९	११	श्र	२६	४५	वै	७ २९	३० ५०	मकर	भ. १९।४१ से, अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल),A
5	३	चं	६	१२	ध	२४	५६	प्री	२४	४०	कुं. १३।४६	भ. ६।१२ तक, पंचक प्रा. १३।४६ से, सूर्य पुन. B
0	४	चं	२७	४०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी क्षयः B में २०।४८, कृष्ण चतुर्थी व्रत
6	५	मं	२५	५३	शत	२३	५०	आ	२२	४	कुंभ	नाग पंचमी (मरूस्थले) C मंगल गौरी पूजा
7	६	बु	२४	५५	पू.भा	२३	३४	सौ	२०	९	मी. १७।३३	भ. २४।४५ से E १५।१९, सं. मु. ४५
8	७	गु	२४	४९	उ.भा	२४	८	शो	१८	५५	मीन	भ. १२।४६ तक, शीतला ७ (उड़ीसा)
9	८	शु	२५	३३	रे	२५	३२	अति	१८	२२	मे. २५।३२	पंचक समा. २५।३२ तक, कालाष्टमी, मन्वादि ८
10	९	श	२७	०	अ	२७	३७	सु	१८	२३	मेष	मंगल आश्ले. में २१।४४, आश्ले. में बुध २६।२०,C
11	१०	र	२९	१	भ	-	-	धृ	१८	५४	मेष	भ. १५।५७ से २९।१ तक, शनि पुन. २ में २७।४४
12	११	चं	-	-	भ	६	१४	शू	१९	४५	वृ. १२।५७	कामदा एकादशी व्रत स्मा.
13	११	मं	७	५४	कृ	९	१२	गं	२०	४६	वृष	कामदा एकादशी व्रत वै.
14	१२	बु	९	२५	रो	१२	१८	वृ	२१	५१	मि. २५।५१	प्रदोष व्रत D अश्वि. ४ में राहु स्वा. २ में केतु E
15	१३	गु	१२	४७	मृ	१५	२२	धृ	२२	५२	मिथुन	भ. १२।२५ से २५।३७ तक, मास शिवरात्री व्रत
16	१४	शु	१४	५५	आ	१८	१७	व्या	२३	४५	मिथुन	कर्क में सूर्य ८।२८, वफात सर सैयद हैमद खां,D
17	३०	श	१६		पुन	२०	५९	ह	२४	२६	क. १४।२०	देवपितृ कार्य अमावस्या, हरियाली ३०

प्र.श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१८ से ३१ जुलाई तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
18	१	र	१८	४६	पु	२३	२३	व	२४	५३	कर्क	चन्द्रदर्शन मु.३० समता कारक, पुरुषोत्तम मास प्रा.
19	२	चं	२०	१७	श्ले	२५	२८	सि	२५	४	सिं. २५।२८	जमादि उस्सानी मु.मा. ६ प्रा., सूर्य पुष्य में २०।१७
20	३	मं	२१	२७	म	२७	११	व्य	२४	५९	सिंह	व्यतिपात पुण्यं, बुध सिंह मघा में ११।२३
21	४	बु	२२	१३	पूफा	२८	३२	वरि	२४	३५	सिंह	भ. ९।५३ से २२।१३ तक, मृग. में शुक्र २१।४१, A
22	५	गु	२२	३३	उफा	२९	२५	परि	२३	५०	कं. १०।४८	सायन सिंह में सूर्य १६।५०
23	६	शु	२२	२४	ह	-	-	शि	२२	४२	कन्या	राष्ट्रीय श्रावण प्रा. A विनायक ४ व्रत
24	७	श	२१	४२	ह	५	५०	सि	२१	८	तु. १७।५०	भ. २१।४२ से, गुरु पू.फा. ४ में २६।४३
25	८	र	२०	२७	चि	५ २८	४१ ५८	सा	१९	६	तुला	भ. ९।९ तक, दुर्गाष्टमी ,मंगल अस्त पूर्व में २२।५
26	९	चं	१८	३६	वि	२७	४२	शुभ	१६	३६	वृ. २२।४	C में ७।४५, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्यं
27	१०	मं	१६	१३	अनु	२५	५४	शु	१३	४०	वृश्चिक	भ. २६।५० से B शनि पश्चिम में उदय ७।१२
28	११	बु	१३	२२	ज्ये	२३	३९	ब्र	१०	१८	ध. २३।३९	भ. १३।२२ तक, कमला एकादशी व्रत सबका, B
29	१२	गु	१०	८	मू	२१	६	ऐं	६ २६	३८ ४४	धनु	प्रदोष व्रत
30	१३	शु	६	३९	पूषा	१८	२३	वि	२२	४४	म. २३।४२	भ. २७।५ से
0	१४	शु	२७	५	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी क्षयः
31	१५	श	२३	३७	उषा	१५	४१	प्री	१८	४६	मकर	भ. १३।२० तक, मंगल मघा सिंह में २५।१, शुक्र मिथुन C

द्वि.श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१७ से ३० अगस्त)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
17	१	मं	७	४५	म	९	८	परि	७	५८	सिंह	नक्त व्रत प्रा., सोमेश्वर पूजा, बुध पश्चिम में अस्त ७।४९
18	२	बु	८	१०	पूफा	१०	१२	शि	७	१८	कं. १६।२४	रजब मु. मास ७ प्रा., सिंधारा
19	३	गु	८	१३	उफा	१०	५३	सि	६ २९	२० ४	कन्या	भ. २०।६ से, हरियाली तीज, वरद ४ व्रत
20	४	शु	७	५३	ह	११	१३	शुभ	२७	३१	तु. २३।१४	भ. ७।५३ तक B उर्स ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ति अजमेर
21	५	श	७	११	चि	११	१०	शु	२५	३८	तुला	पू.फा. में मंगल २६।५, नागपंचमी देशाचारे
22	६	र	६	६	स्वा	१०	४५	ब्र	२३	२७	वृ. २८।१०	भ. २८।३७ से, पुन. में शुक्र १४।२१, कल्कि ज., A
0	७	र	२८	३७	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी क्षयः
23	८	चं	२६	४४	वि	९	५५	ऐं	२०	५७	वृश्चिक	भ. १५।४३ तक, दुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी व्रत, रा. भाद्रपदारंभ, B
24	९	मं	२४	३०	अनु	८	४३	वै	१८	८	वृश्चिक	A गो. तुलसीदास ज., सूर्य कन्या में प्रवे. २३।४४
25	१०	बु	२१	५६	ज्ये	७ २९	१० १८	वि	१५	२	ध. ७।१०	C सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, अगस्त उदय १२।३०
26	११	गु	१९	८	पूषा	२७	१४	प्री	११	४३	धनु	भ. ८।३४ से १९।८ तक, पवित्रा एका. व्रत सबका
27	१२	शु	१६	१२	उषा	२५	४	आ	८ २८	१६ ४५	म. ८।४१	उ.फा. २, कन्या में गुरु २३।३९, प्रदोष व्रत
28	१३	श	१३	१५	श्र	२२	५७	शो	२५	१८	मकर	E श्रावणी पूर्णिमा, हजरत अली जन्म
29	१४	र	१०	२६	ध	२१	३	अति	२२	१	कुं. ९।५८	भ. १०।२६ से २१।७ तक, पंचक प्रा. ९।५८ से, C
30	१५	चं	७	५४	शत	१९	३०	सु	१९	३	कुंभ	सूर्य पू.फा. में १२।४७, पूर्णिमा पुण्यं, रक्षा D
												D बन्धन, अमरनाथ दर्शन (का.), मंगला गौरी पू., E

द्वि.श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (१ से १६ अगस्त तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
1	१	र	२०	२४	श्र	१३	११	आ	१५	०	कुं. २४।४	पंचक प्रारंभ २४।४ से, अग. मास ८ ता. ३१ प्रा.
2	२	चं	१७	३८	ध	११	४	सौ	११	३३	कुंभ	भ. २८।२८ से, सूर्य आश्लेषा में १९।१२
3	३	मं	१५	२८	शत	९	३०	शो	८	३४	मी. २६।४७	भ. १५।२८ तक, पू.फा. में बुध २८।४९, कृष्ण चतुर्थी व्रत
4	४	बु	१४	२	पूभा	८	३८	अति	६ २८	१० २४	मीन	A श्रवण ३ में २७।१८ B व्यतिपात पुण्यं ८।३ से
5	५	गु	१३	२६	उभा	८	३५	धृ	२७	२०	मीन	C भारतीय स्वतंत्रता दिवस वर्ष ५८ वां
6	६	शु	१३	४२	रे	९	२२	शू	२६	५५	मे. ९।२२	भ. १३।४२ से २६।७ तक, पंचक समा. ९।२२
7	७	श	१४	४५	अ	११	०	गं	२७	४	मेष	शनि पुनर्वसु ३ में ९।४४
8	८	र	१६	२१	भ	१३	१२	वृ	२७	४१	वृ. १९।५१	शुक्र आर्द्रा में ८।४२, कालाष्टमी, वक्री नेपच्यून A
9	९	चं	१८	४२	कृ	१५	५७	धु	२८	३५	वृष	भारतीय क्रांति दिवस, बुध वक्री २९।१७
10	१०	मं	२१	११	रो	१८	५८	व्या	२९	३७	वृष	भ. ७।५५ से २१।११ तक
11	११	बु	२३	४०	मृ	२२	२	ह	-	-	मि. ८।३१	गुरु उ.फा. १ में १६।१८, कमला एका. व्रत सबका
12	१२	गु	२६	०	आ	२४	५६	ह	६	३७	मिथुन	D सोमवती, देवकार्य अमावस्या
13	१३	शु	२८	२	पुन	२७	३४	व	७	२८	क. २०।५६	भ. २८।२ से, प्रदोष व्रत
14	१४	श	२९	४१	पु	२९	४९	सि	८	३	कर्क	भ. १६।५५ तक, मास शिवरात्री व्रत, B
15	३०	र	-	-	श्ले	-	-	व्य	८	२१	कर्क	वक्री बुध मघा में २५।१४, देवपितृ कार्यमावस्या, C
16	३०	चं	६	५६	श्ले	७	४०	परि	८	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (३१ अग. से १४ सितं.)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
0	१	चं	२९	४९	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षयः A कज्जली तीज, सातूड़ी तीज
31	२	मं	२८	१८	पूफा	१८	२८	धृ	१६	३०	मी. १२।४०	अशून्य शयन २ व्रत, बुध पूर्व में उदय १०।१५
S1	३	बु	२७	२९	उभा	१८	५	शू	१४	२८	मीन	भ. १५।४८ से २७।२९ तक, कर्क में शुक्र प्र. १०।१, A
2	४	गु	२७	२६	रे	१८	२५	गं	१३	२	मे. १८।२५	पंचक समा. १८।२५, बहुला ४, प्लूटो मार्गी १४।१, बुध B
3	५	शु	२८	९	अ	१९	३१	वृ	१२	११	मेष	रक्षा पंचमी B मार्गी १७।४३ C ६, ललही ६, पुत्रार्थि व्रत
4	६	श	२९	३४	भ	२१	२०	ध्रु	११	५६	वृ. २७।५३	भ. २९।३४ से, शुक्र पुष्य में १३।५९, उभी ६, चन्द्र ६, हल C
5	७	र	-	-	कृ	२३	४४	व्या	१२	१२	वृष	भ. १८।३१ तक, शनि पुन. ४ कर्क में प्रवेश २८।३६
6	७	चं	७	३४	रो	२६	३३	ह	१२	५१	वृष	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा., संत ज्ञानेश्वर ज.
7	८	मं	९	५४	मृ	२९	३२	व	१३	४५	मि. १६।२	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै., गुरु अस्त पश्चिम में १७।३८
8	९	बु	१२	२३	आ	-	-	सि	१४	४२	मिथुन	भ. २५।३४ से, गोगा नवमी, नन्दोत्सव (गोकुल)
9	१०	गु	१४	४४	आ	८	२८	व्य	१५	३३	क. २८।३१	भ. १४।४४ तक, व्यतिपात पुण्यं
10	११	शु	१६	४७	पुन	११	९	वरि	१६	१०	कर्क	अजा एकादशी व्रत सबका D ३ में १५।४३
11	१२	श	१८	२२	पु	१३	२६	परि	१६	२६	कर्क	उ.फा. में मंगल २३।३७, वत्स द्वादशी, महा द्वादशी
12	१३	र	१९	२७	श्ले	१५	१२	शि	१६	१८	सिं. १५।१२	भ. १९।२९ से, प्रदोष व्रत, शब्बे-मिराज मु., गुरु उ.फा. D
13	१४	चं	१९	५९	म	१६	२८	सि	१५	४५	सिंह	भ. ७।४७ तक, सूर्य उ.फा. में ६।३८, अघोरा १४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कं. [illegible]	देवपितृकार्य भमा., कुशोत्पाटिनी ३०, पिठोरी ३०

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१५ से २८ सितं. तक)

सितं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
15	१	बु	१९	३५	उफा	१७	३०	शुभ	१३	२८	कन्या	पू.फा. में बुध २३ ।२८ B राहु, स्वाती १ में केतु १३ ।२
16	२	गु	१८	३५	ह	१७	२४	शु	११	४८	तु. २१ ।२३	कन्या में सूर्य १६ ।४२, मंगल कन्या में २८ ।१५, शुक्र A
17	३	शु	१७	३५	चि	१६	५८	ब्र	९	५१	तुला	भ. २८ ।५३ से, हरितालिका ३, गौरी ३, अश्विनी ३ में B
18	४	श	१६	८	स्वा	१६	१५	ऐं	७/२०	४०/१७	तुला	भ. १६ ।८ तक, पत्थर ४, गणेश जन्मोत्सव (महा.), C
19	५	र	१४	२७	वि	१५	१७	वि	२६	४३	वृ. १।३३	ऋषि ५ व्रत C बुध अस्त पूर्व २१ ।५९
20	६	चं	१२	३४	अनु	१४	८	प्री	२३	५९	वृश्चिक	सूर्य ६, अनु. में ज्येष्ठा, वक्री हर्षल शत. १ में ६ ।४२
21	७	मं	१०	३०	ज्ये	१२	४८	आ	२१	९	धनु १२।४८	भ. १० ।३० से २१ ।२५ तक, संतान ७, महालक्ष्मी व्रतारंभ
22	८	बु	८	१९	मू	११	२१	सौ	१८	१३	धनु	दुर्गाष्टमी, सायन सूर्य तुला में २१ ।४१
0	९	बु	३०	२	०	०	०	०	०	०	०००	नवमी क्षय: D पूर्णिमा व्रत व पुण्य
23	१०	गु	२७	४४	पूषा	९	५०	शो	१५	१४	म. १५।२६	उ.फा. में बुध १६ ।२६, महालक्ष्मी व्रत पूर्ति, रा. आश्विन प्रा.
24	११	शु	२५	२८	उषा	८	१६	अति	१२	१४	मकर	भ. १४ ।३५ से २५ ।२८ तक, पद्मा एकादशी व्रत सबका
25	१२	श	२३	१९	श्र	६/२६	५७/२६	सु	९	१९	कुं. १८।५	पंचक प्रा. १८ ।५ से, बुध कन्या में १२ ।७, भुवनेश्वरी ज.
26	१३	र	२१	२४	शत	२८	२१	धृ	६/२३	३१/५५	कुंभ	सूर्य हस्त में २२ ।५, प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्रि व्रतारंभ
27	१४	चं	१९	५०	पूभा	२७	३७	गं	२५	३७	मी. २१।४५	भ. १९ ।५० से, अनन्त चतुर्दशी, गुरु उ.फा.४ में २६ ।८
28	१५	मं	१८	४१	उभा	२७	२१	वृ	२३	४१	मीन	भ. ७ ।१२ तक, मघा सिंह में शुक्र प्रवेश १६ ।१५, D
												A श्लेषा में २० ।३०, संक्रांति मु. ३० उभी

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१५ से २८ अक्टू. तक)

अक्टू.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
15	१	शु	६	३५	स्वा	२३	२४	वि	१४	४४	तुला	चन्द्र दर्शन मु. १५ महर्घता, अग्रसेन जयंती
0	२	शु	२८	३०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	द्वितीया क्षय: A सरस्वती बलिदान, महाष्टमी
16	३	श	२६	११	वि	२१	५२	प्री	११	४९	वृ. १६।१६	तुला में सूर्य २८ ।३६, स्वा. में बुध १३ ।११, रोजा प्रा. मु.
17	४	र	२३	४५	अनु	२०	११	आ	८/२९	४४/३५	वृश्चिक	भ. १२ ।५९ से २३ ।४५, विनायक ४ व्रत
18	५	चं	२१	१८	ज्ये	१८	२८	शो	२६	२५	ध. १८।२८	उपांग ललिता ५ व्रत
19	६	मं	१८	५३	मू	१६	४७	अति	२३	१९	धनु	सरस्वती आवाहन B सरस्वती वि., नवरात्र पू., विजया १०
20	७	बु	१६	३५	पूषा	१५	१२	सु	२०	१९	म. २०।५०	भ. १६ ।३५ से २७ ।३० तक, सरस्वती पूजन
21	८	गु	१४	२९	उषा	१३	४९	धृ	१७	२८	मकर	शुक्र उ.फा. में १० ।१०, दुर्गाष्टमी, भद्रकाल्यावतार, A
22	९	शु	१२	३६	श्र	१२	३९	शू	१४	४९	कुं. २४।१०	पंचक प्रा. २४ ।१० से, मंगल चित्रा में २७ ।१६, दुर्गा ९, B
23	१०	श	११	१	ध	११	४५	गं	१२	२४	कुंभ	भ. २२ ।२० से, शुक्र कन्या में प्र. २८ ।५९, सूर्य स्वा. में २१ ।३१, C
24	११	र	९	४४	शत	११	११	वृ	१०	१४	मी. २८।५९	भ. ९ ।४४ तक, विशा. में बुध २४ ।२३, पापांकुशा एका. D
25	१२	चं	८	५०	पूभा	१०	५८	ध्रु	८	२१	मीन	सोम प्रदोष व्रत C बौद्धावतार १०, वृश्चिक में सूर्य ७ ।२१
26	१३	मं	८	१९	उभा	११	९	व्या	६/२९	४८/३४	मीन	नेपच्यून मार्गी २७ ।२२ D व्रत स., भरत मिलाप
27	१४	बु	८	१५	रे	११	४६	व	२८	४२	मे. ११।४६	भ. ८ ।१५ से २० ।२३ तक, पंचक समा. ११ ।४६, शरद E
28	१५	गु	८	३९	अ	१२	५०	सि	२८	१३	मेष	पूर्णिमा पु., म. वाल्मीकि ज., बुध पश्चिम में उ. १० ।२५
												E पूर्णिमा, चन्द्रग्रहण

आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२९ सितं. से १४ अक्टू. तक)

सितं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
29	१	बु	१८	४	रे	२७	३८	धृ	२२	१२	मे. २७।३८	पंचक समाप्ति २७ ।३८
30	२	गु	१८	४	अ	२८	३२	व्या	२१	११	मेष	बुध हस्त २३ ।३३, अशून्य शयन २ व्रत, शब-ए-बारात मु.
01	३	शु	१८	४३	भ	३०	३	ह	२०	४१	मेष	भ. ६ ।१८ से १८ ।४३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
2	४	श	१९	५९	कृ	-	-	व	२०	३९	वृ. १२।३२	हस्त में मंगल १६ । १९, दशरथ ललिता व्रत A
3	५	र	२१	४८	कृ	८	९	सि	२१	२	वृष	A महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती
4	६	चं	२४	२	रो	१०	४४	व्य	२१	४४	मि. २४।८	भ. २४ ।२ से, चन्दन छठ, व्यतिपात पुण्यं
5	७	मं	२६	२९	मृग	१३	३६	वरि	२२	३७	मिथुन	भ. १३ ।१५ तक, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
6	८	बु	२८	५६	आ	१६	३४	परि	२३	३०	मिथुन	कालाष्टमी, जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, गुरु उदय पूर्व में १३ ।४७
7	९	गु	-	-	पुन	१९	२४	शि	२४	१४	क. १२।४३	मातृ नवमी, भूदान ज.
8	९	शु	७	७	पु	२१	५३	सि	२४	४०	कर्क	भ. २० ।३ से, चित्रा में बुध १३ ।५, भा. वायु सेना दिवस
9	१०	श	८	५२	श्ले	२४	५२	सा	२४	४१	सिं. २३।५२	भ. ८ ।५२ तक, शुक्र पू.फाल्गुनी में २८ । ६
10	११	र	१०	२	म	२५	१४	शुभ	२४	१२	सिंह	सूर्य चित्रा में ११ ।७, इंदिरा एकादशी व्रत सबका
11	१२	चं	१०	३२	पूफा	२५	५८	शु	२३	१३	सिंह	सोम प्रदोष व्रत, महा द्वादशी व्रत
12	१३	मं	१०	२४	उफा	२६	४	ब्र	२१	४४	कं. ८।३	भ. १० । २४ से २२ । ५ तक, बुध तुला में ११ ।४ ४
13	१४	बु	९	३८	ह	२५	३७	ऐं	१९	४६	कन्या	गुरु हस्त १ में १५ ।३०, देवपितृ कार्य अमावस्या
14	३०	गु	८	२०	चि	२४	४२	वै	१७	२५	तु. १३।१२	शारदीय नवरात्र प्रा., कलश स्थापन ८ । २० बाद

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२९ अक्टू. से १२ नवं. तक)

अक्टू.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
29	१	शु	९	३२	भ	१४	२३	व्य	२८	६	वृ. २०।५०	पुष्य १ में शनि २० ।३, गुरु हस्त २ में १७ ।३४
30	२	श	१०	५६	कृ	१६	२३	वरि	२८	२१	वृष	भ. २३ ।४७ से A करक ४, करवा चौथ व्रत
31	३	र	१२	४६	रो	१८	४९	परि	२८	५३	वृष	भ. १२ ।४६ तक, बुध वृश्चि. में १५ ।५६, कृष्ण ४ व्रत, A
N1	४	चं	१४	५८	मृ	२१	३५	शि	२९	३९	मि. ८।१०	मंगल तुला में ३० ।२८, हस्त में शुक्र ११ ।५९
2	५	मं	१७	२६	आ	२४	३२	सि	३०	३२	मिथुन	अनुराधा में बुध २२ ।३५, प्लूटो ज्येष्ठा ४ में १८ ।४०
3	६	बु	१९	५७	पुन	२७	३०	सा	-	-	क. २०।४६	भ. १९ ।५७ से, स्कंद षष्ठी व्रत B अहोई अष्टमी
4	७	गु	२२	२१	पु	३०	१७	सा	७	२३	कर्क	भ. ९ । ११ तक, मंगल पश्चिम में उदय २७ ।१६
5	८	शु	२४	२३	श्ले	-	-	शुभ	८	४	कर्क	सूर्य विशाखा में २९ । ४३, शहादते हजरत अली मु. B
6	९	श	२५	५२	श्ले	८	४०	शु	८	२६	सिं. ८।४०	D १० ।२६, महालक्ष्मी पू., दीपावली, जुमा तुल विदा मु.
7	१०	र	२६	४१	म	१०	२९	ब्र	८	२०	सिंह	भ. १४ । २२ से २६ । ४१ तक
8	११	चं	२६	४४	पू.फा	११	३६	ऐं	७/३०	४२/२८	कं. १७।४६	रमा एकादशी व्रत सबका, शनि वक्री २८ ।५४
9	१२	मं	२६	२	उ.फा	११	५९	वि	२८	३९	कन्या	गोवत्स द्वादशी
10	१३	बु	२४	३६	ह	११	३८	प्री	२६	१५	तु. २३।११	भ. २४ । ३६ से, प्रदोष व्रत, धन तेरस, शब-ए-कद्र मु.
11	१४	गु	२२	३२	चि	१०	३६	आ	२३	२२	तुला	भ. ११ । ३८ तक, रूप चतुर्दशी, नरक चतुर्दशी
12	३०	शु	१९	५९	स्वा	९	०	सौ	२०	५	वृ. २५।३१	स्वा. में मंगल ७ ।५८, ज्ये. में बुध ११ । ३९, शुक्र चित्रा में D

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१३ से २५ नवं. तक)

तारी.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
13	१	श	१७	४	वि	५/२८	५८/४०	शो	१६	२१	वृश्चिक	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, हर्षल मार्गी १३।४३
14	२	र	१३	५६	ज्ये	२६	१४	अति	१२	४४	ध. २६।१४	भैया दूज, यम २, बाल दि., ईद-उल-फितर ईद मु.
15	३	चं	१०	४५	मू	२३	५०	सु	८/३१	५५/११	धनु	भ. २१।११ से. वृश्चिकमें सूर्य २८।२१, विनायक ४ A
16	४	मं	७	४०	पूषा	२१	३६	धृ	२५	३६	म. २७।६	भ. ७।४० तक. सौभाग्य ५, पांडव ५, ज्ञान ५ जैन, B
0	५	मं	२८	४८	०	०	०	०	०	०	०००	पंचमी क्षय: B गुरु गोविन्द सिंह बलिदान दिवस
17	६	बु	२६	१८	उषा	१९	४२	गंड	२२	१८	मकर	शुक्र तुला में प्र. २०।४३, वक्री शनि पुन. ४ में २८।५, C
18	७	गु	२४	१३	श्र	१८	११	वृ	१९	२१	कुं. २९।३७	भ. २४।१३ से. पंचक प्रा. २९।३७ से, कल्पादि ७
19	८	शु	२२	३९	ध	१७	१०	ध्रुव	१६	४६	कुम्भ	भ. ११।२२ तक, सूर्य अनु. में ११।४०, दुर्गाष्टमी, अश्वि. D
20	९	श	२१	३७	शत	१६	४०	व्या	१४	३८	कुम्भ	आंवला नवमी D २ में राहु, चित्रा ४ में केतु १०।४१
21	१०	र	२१	७	पूभा	१६	४१	ह	१२	५४	मी. १०।३८	सायन धनु में सूर्य २३।३८, रवि दशमी
22	११	चं	२१	८	उभा	१७	१३	व	११	३५	मीन	भ. ९।४ से २१।८ तक, स्वाती में शुक्र ३०।३१, एका. व्रतE
23	१२	मं	२१	३८	रे	१८	१४	सि	१०	४०	मे. १८।१४	पंचक समा. १८।१४ तक
24	१३	बु	२१	३५	अ	१९	४०	व्य	१०	५	मेष	बुध मूल धनु में ८।३६, प्रदोष व्रत
25	१४	गु	२३	५६	भ	२१	२९	वरि	९	५०	वृ. ३८।०	भ. २३।५६ से, वैकुण्ठ चतुर्दशी C सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण
26	१५	शु	२५	३९	कृ	२३	४०	परि	९	५०	वृष	भ. १२।४५ तक, पूर्णिमा व्रत-पुण्यं, भीष्म पंचक समा., F

A व्रत, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ ३ दिन का, गुरु हस्त ३ में २२।५८ E सबका, रा. मार्ग. प्रा., भीष्म पंचकारंभ F नानक ज.

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (१२ से २६ दिसं. तक)

दिसं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
12	१	र	२७	१८	ज्ये	१२	३८	शू	१७	३१	ध. १२।३८	रुद्र व्रत (पोंड्या व्रत) A सं.मु. ३०, बुध उदय पूर्व २५।२१
13	२	चं	२३	३४	मू	९/३०	३८/४२	गं	१३	२३	धनु	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक
14	३	मं	२०	१	उषा	२७	५९	वृ	८/२८	५८/५५	म. ११।५९	भ. ३०।२१ से, अनुराधा में शुक्र १७।५६
15	४	बु	१६	४८	श्र	२५	४०	व्या	२५	१३	मकर	भ. १६।४८ तक, विनायक ४, मूल धनु में सूर्य १८।५९, A
16	५	गु	१४	५	ध	२३	५४	ह	२१	५७	कुं. १२।४३	पंचक प्रा. १२।४३, मंगल वृश्चिक में २४।१२, गु.ते.ब.ब दि.
17	६	शु	११	५९	शत	२२	४८	व	१९	१४	कुंभ	चम्पा षष्ठी व्रत, स्कंद ६, श्री राम कलेवा
18	७	श	१०	३६	पूभा	२२	२६	सि	१७	५	मी. १६।२७	भ. १०।३६ से २२।११ तक, वक्री बुध अनु. में २१।१२, मित्र ७
19	८	र	९	५८	उभा	२२	४६	व्य	१५	३१	मीन	श्री दुर्गाष्टमी B सायन मकरमें सूर्य १८।२८, रवि उत्तरायणे
20	९	चं	१०	३	रे	२३	४७	वरि	१४	३०	मे. २३।४७	पंचक समा. २३।४७, महानंदा नवमी, बुध मार्गी ११।२
21	१०	मं	१०	४८	अ	२५	२३	परि	१३	५९	मेष	भ. २३।२३ से, अनु. में मंगल २१।२७, ज्येष्ठा में बुध १६।५८, B
22	११	बु	१२	६	भ	२७	२६	शि	१३	५२	मेष	भ. १२।६ तक, मोक्षदा एका. व्रत सबका, रा. पौष मास प्रा.
23	१२	गु	१३	५०	कृ	२९	५१	सि	१४	४	वृ. १०।१	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी
24	१३	शु	१५	५४	रो	-	-	सा	१४	३२	वृष	अनंग त्रयोदशी, गुरु ग्रंथ साहिब वार्षिक उत्सव
25	१४	श	१८	१२	रो	८	३८	शुभ	१५	९	मि. २१।५४	भ. १८।१२ से, ज्येष्ठा में शुक्र १०।१४, पिशाचमोचन श्राद्ध, C
26	१५	र	२०	३८	मृ	११	२०	शु	१५	५३	मिथुन	भ. ७।२४ तक, पूर्णिमा व्रत व पुण्यं, अन्नपूर्णा जयंती
												C त्रिपुर भैरव ज., क्रिसमस डे (ईसा जयंती), बड़ा दिन

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२७ नवं. से ११ दिसं. तक)

तारी.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
27	१	श	२७	४०	रो	२६	८	शि	१०	१०	वृष	B अमा., मेला पुरमण्डल, देवी का स्नान (जम्मू)
28	२	र	२९	५८	मृ	२८	५२	सि	१०	४१	मि. १५।२१	अशून्य शयन २ व्रतA २४।५२, विकलांग दिवस
29	३	चं	-	-	आ	-	-	सा	११	२२	मिथुन	भ. १९।११ से, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
30	३	मं	८	२७	आ	७	४७	शुभ	१२	१२	क. २८।२	भ. ८।२७ तक, कृष्ण ४ व्रत, बुध वक्री १६।५०
D1	४	बु	११	१	पुन	१०	४७	शु	१३	४	कर्क	मंगल विशाखा में ३०।४, विश्व एड्स डे
2	५	गु	१३	३२	पु	१३	४४	ब	१३	५४	कर्क	सूर्य ज्येष्ठा में १६।२, सुविधानाथ जन्म व दीक्षा जैन
3	६	शु	१५	४९	श्ले	१६	२७	ऐं	१४	३३	सिं. १६।२७	भ. १५।४९ से २८।४९ तक, शुक्र विशा. में A
4	७	श	१७	४१	म	१८	४७	वै	१४	५३	सिंह	भा. नौ सेना दिवस, बुध पश्चिम में अस्त २६।१८
5	८	र	१८	५८	पूफा	२०	३२	वि	१४	४८	कं. २६।५२	श्री काल भैरवाष्टमी, गुरु हस्त ४ में १३।५६
6	९	चं	१९	३०	उफा	२१	३४	प्री	१४	१०	कन्या	वक्री बुध ज्येष्ठा वृश्चिक में ८।२३
7	१०	मं	१९	१३	ह	२१	४९	आ	१२	५५	कन्या	भ. ७।२८ से १९।१३ तक, भा. झंडा दिवस
8	११	बु	१८	७	चि	२१	१५	सौ	११	१	तु. ९।३८	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत
9	१२	गु	१६	१४	स्वा	१९	५६	शो	८/२९	२८/२२	तुला	प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस
10	१३	शु	१३	३९	वि	१७	५७	मृ	२५	४४	वृ. १२।३०	भ. १३।३९ से २४।८ तक, मास शिवरात्री व्रत
11	१४	श	१०	३१	अनु	१५	२८	धृ	२१	४५	वृश्चिक	शुक्र वृश्चिक में प्रवे. २५।४५, देवपितृकार्य B
0	३०	श	३७	१	०	०	०	०	०	०	०००	अमावस्या क्षय:

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२७ दिसं. से १० जन. २००५ तक)

दिसं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
27	१	चं	२३	९	आ	१४	१५	ब्र	१६	४२	मिथुन	E अमा. (उड़ीसा), सोमवती अमा.
28	२	मं	२५	४१	पुन	१७	१२	ऐं	१७	३०	क. १०।२८	सूर्य पू.षा. में २१।१५ B एका. व्रत स्मा. जैन, अपीफैनी डे
29	३	बु	२८	९	पु	२०	७	वै	१८	१८	कर्क	भ. १४।५६ से २८।९ तक C श्री चन्द प्रभु जन्म जैन
30	४	गु	३०	२८	श्ले	२२	५५	वि	१९	१	सिं. २२।५५	कृष्ण चतुर्थी व्रत A संध्या का पर्व, न्यू ईयर इवनिंग
31	५	शु	-	-	म	२५	२९	प्री	१९	३३	सिंह	गुरु चित्रा १ में २१।५९, ईसाई नव वर्ष की पूर्व A
J1	५	श	८	२९	पूफा	२७	४०	आ	१९	४९	सिंह	सन् २००५ ई. प्रा., हर्षल शतभिषा २ में १३।२०
2	६	र	१०	४	उफा	२९	१९	सौ	१९	४२	कं. १०।८	भ. १०।४ से २२।३८ तक
3	७	चं	११	३	ह	३०	१९	शो	१९	६	कन्या	नेप. श्रवण ४ में १३।३४, गु. गोविन्द सिंह ज. सि.क. अमृतसर
4	८	मं	११	२०	चि	३०	३४	अति	१७	५६	तु. १८।३३	शुक्र मूल धनु में २६।३, कालाष्टमी
5	९	बु	१०	४९	स्वा	३०	१	सु	१६	८	तुला	भ. २२।१५ से, मूल धनु में बुध १९।४६
6	१०	गु	९	२९	वि	२८	४१	धृ	१३	४२	वृ. २३।५	भ. ९।२९ तक, पार्श्वनाथ जन्म जैन, सफला B
7	११	शु	७	२२	अनु	२६	३९	शू	१०/३१	३९/४	वृश्चिक	सफला एकादशी व्रत वै., स्वरूप द्वादशी, C
0	१२	शु	२८	३४	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी क्षय: D शिवरात्री व्रत
8	१३	श	२५	१३	ज्ये	२४	४	वृ	२७	२	ध. २४।४	भ. २५।१३ से, शनि प्रदोष व्रत
9	१४	र	२१	२९	मू	२१	६	ध्रु	२२	४३	धनु	भ. ११।२३ तक, ज्येष्ठा में मंगल ३०।२०, मास D
10	३०	चं	[illegible]	[illegible]	पूषा	[illegible]	[illegible]	व्या	[illegible]	[illegible]	म. [illegible]	सूर्य उ.षा में २३।२४, देवपितृकार्य अमा. [illegible]

पौष शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (११ से २५ जन. तक)

ता.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
11	१	मं	१३	४	उ.षा	१४	४७	ह	१३	४८	मकर	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक
12	२	बु	९	५७	श्र	११	५०	व	९/२१	३२/३३	कुं. २२।३२	पंचक प्रा. २२।३१ से, त्रिस्तुति जैन, लोहड़ी (पं.)
0	३	बु	३०	३९	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया क्षय: D पूर्णिमा पुण्यं, माघ स्नान प्रा.
13	४	गु	२७	५५	ध	९	११	व्य	२६	३	कुंभ	भ.२७।१२ से २७।५५ तक, मकर में सूर्य २९।४३, वक्रीA
14	५	शु	२५	५४	शत	०/३०	२१/१८	वरि	२३	७	मी. २४।२४	मकर संक्रांति पुण्यं, पोंगल पर्व (द.भा.)
15	६	श	२४	४१	उ.भा	२९	४७	परि	२०	५०	मीन	बुध पूर्वाषाढ़ा में १३।१५, शुक्र पू.षा. में १७।३२
16	७	र	२४	२१	रे	३०	१३	शि	१९	१२	मे. ३०।१३	भ.२४।२१ से, पंचक समा. ३०।१३, गु.गो.सिं. प्रा.मत से
17	८	चं	२४	५०	अ	-	-	सि	१८	१८	मेष	भ.१२।२९ तक, श्री दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी यात्रा
18	९	मं	२६	२	अ	७	२६	सा	१७	५१	मेष	A शनि पुन.३ मिथुन में १५।१, लोहड़ी उत्सव (पं.)
19	१०	बु	२७	५०	भ	९	२०	शुभ	१७	५७	वृ. १५।४३	सायन कुंभ में सूर्य २९।१८ B सबका, हज्ज मु.
20	११	गु	३०	४	कृ	११	४४	शु	१८	२५	वृष	भ. १६।५५ से ३०।४ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत B
21	१२	शु	-	-	रो	१४	२९	ब्र	१९	७	मि. २७।५६	इदुलजुहा मु., अश्वि. १ में राहु चित्रा ३ में केतु C
22	१२	श	८	३१	मृ	१७	२५	ऐं	१९	५६	मिथुन	शनि प्रदोष व्रत C ७।५८, रा. माघ मास प्रा.
23	१३	र	११	५	आ	२०	२४	वै	२०	४७	मिथुन	सूर्य श्रवण में २५।३२, बुध पूर्व में अस्त २४।१९
24	१४	चं	१३	३७	पुन	२३	२०	वि	२१	३६	क. १८।३३	भ.१३।३७ से २६।५१ तक, बुध उ.षा. में ११।३१D
25	१५	मं	१६	४	पु	२६	१०	प्री	२२	२०	कर्क	सत्य व्रत पू. पुण्य, माघ स्नान प्रा.

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (९ से २४ फर. तक)

ता.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
9	१	बु	२४	३३	ध	२०	२७	वरि	१४	५३	कुं. ९।४८	पंचक प्रा. ९।४८ से, धनिष्ठा में बुध १९।४०
10	२	गु	२१	३१	शत	१८	४	परि	११	०	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक
11	३	शु	१९	४	पू.भा	१६	१४	शि	७/२८	३२/३५	मी. १०।३८	भ. ३०।६ से, गौरी तृतीया, हि. सन् १४२६ प्रा.
12	४	श	१७	२०	उ.भा	१५	६	सा	२६	१५	मीन	भ. १७।२० तक, कुंभ में सूर्य १८।४४, सं. मु. ३०
13	५	र	१६	२५	रे	१४	४५	शुभ	२४	३५	मे. १४।४५	पंचक समा. १४।४५, बुध कुंभ में १४।३८, वसंतA
14	६	चं	१६	२२	अ	१५	१५	शु	२३	३४	मेष	वेलेन्टाईन डेA पंचमी, सरस्वती पूजा, तक्षक पूजा
15	७	मं	१७	८	भ	१६	३२	ब्र	२३	११	वृ. २२।५१	भ. १७।८ से २९।४७ तक, मन्वादि ७
16	८	बु	१८	३७	कृ	१८	३२	ऐं	२३	१९	वृष	पू.षा. में मंगल ३०।२, धनि. में शुक्र १६।६, दुर्गाष्टमी
17	९	गु	२०	४०	रो	२१	३	वै	२३	५१	वृष	शतभिषा में बुध ७।५, श्री महानंदा नवमी
18	१०	शु	२३	५	मृ	२३	५५	वि	२४	३८	मि. १०।२८	सायन मीन में सूर्य १९।१२, शुक्र अस्त २७।१९
19	११	श	२५	३८	आ	२६	५६	प्री	२५	३१	मिथुन	भ. १२।२१ से २५।३८ तक, सूर्य शत. में ९।१२, B
20	१२	र	२८	१०	पुन	२९	५४	आ	२६	२३	क. २३।१०	भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण, मोहर्रम ताजिया मु.
21	१३	चं	३०	३२	पु	-	-	सौ	२७	८	कर्क	शुक्र कुंभ में प्रवेश २४।२, सोम प्रदोष व्रत
22	१४	मं	-	-	पु	८	४२	शो	२७	४२	कर्क	श्री राम चरण स्नेही ज. B जया एका. व्रत सबका
23	१४	बु	८	३८	श्ले	११	१५	अति	२८	२	सि. ११।१५	भ. ८।३८ से २१।३४ तक, पूर्णिमा व्रत, सत्य व्रत
24	१५	गु	१०	२५	म	१३	३०	सु	२८	७	सिंह	बुध पू.भा. में १०।४१, माघी पू., रविदास जयंती

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२६ जन. से ८ फर. तक)

ता.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
26	१	बु	१८	२२	श्ले	२८	५०	आ	२२	५७	सिं. २८।५०	बुध मकर में १५।५, शुक्र उ.षा. में ९।०, भा. गणतन्त्र दि.
27	२	गु	२०	२७	म	-	-	सौ	२३	२४	सिंह	A स्वामी विवेकानन्द ज., श्री रामानन्दाचार्य ज.,
28	३	शु	२२	१७	म	७	१७	शो	२३	४०	सिंह	भ. ९।२४ से २२।१७ तक, शुक्र मकर में प्र. २४।५२
29	४	श	२३	४६	पू.फा	९	२८	अति	२३	४०	कं. १५।५७	मंगल मूल धनु में ९।५, संकट चौथ, वरद चौथ
30	५	र	२४	५०	उ.फा	११	१७	सु	२३	२१	कन्या	महात्मा गांधी पुण्यं
31	६	चं	२५	२२	ह	१२	३९	धृ	२२	३७	तु. २५।८	भ. २५।२२ से,
F1	७	मं	२५	१६	चि	१३	२७	शू	२१	२६	तुला	भ. १३।२४ तक, बुध श्रवण में २१।२३, A
2	८	बु	२४	३०	स्वा	१३	३८	गं	१९	४३	तुला	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, गुरु वक्री १७।२२
3	९	गु	२३	२	वि	१३	८	वृ	१७	२७	वृ. ७।११	B षट्तिला एका. व्रत सबका
4	१०	शु	२०	५३	अनु	११	५६	ध्रु	१४	३८	वृश्चिक	भ. १०।२ से २०।५३ तक
5	११	श	१८	८	ज्ये	१०	७	व्या	११	१९	ध. १०।७	सूर्य धनिष्ठा में २८।४४, शुक्र श्रवण में २४।२९, B
6	१२	र	१४	५८	मू	७/२९	२७/४	ह	७/२७	३५/३२	धनु	प्रदोष व्रत, वंजुली महा द्वादशी व्रत
7	१३	चं	११	२१	उ.षा	२६	९	सि	२३	१८	म. ३०।२१	भ. ११।२१ से २१।३१ तक
8	१४	मं	७	३९	श्र	२३	१३	व्य	१९	२	मकर	प्लूटो धनु मूल में प्रवेश १७।५३, देवपितृकार्य C
0	३०	मं	२८	०	०	०	०	०	०	०	०००	अमावस्या क्षय: C अमावस्या, मौनी अमावस्या

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२५ फर. से १० मार्च तक)

ता.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
25	१	शु	११	५२	पू.फा	१५	२५	धृ	२७	५६	कं. २१।५१	B दयानन्द सरस्वती ज., आर्य समाज सप्ताहारंभ
26	२	श	१२	५६	उ.फा	१६	५९	शू	२७	२७	कन्या	भ. २५।१९ से A जानकी ज., अष्टका श्राद्ध
27	३	र	१३	३७	ह	१८	१०	गं	२६	४०	तु. ३०।३७	भ. १३।३७ तक, शत. में शुक्र ८।४, कृष्ण चतुर्थी व्रत
28	४	चं	१३	५३	चि	१८	५७	वृ	२५	३३	तुला	श्री पद्म प्रभु मोक्ष D शनि पुन. २ में १४।५६
M1	५	मं	१३	४३	स्वा	१९	१८	ध्रु	२४	४	तुला	बुध मीन में १९।४४ E व्रत, भौम प्रदोष व्रत
2	६	बु	१३	३	वि	१९	१०	व्या	२२	१२	वृ. १३।१४	भ. १३।३ से २४।३२ तक
3	७	गु	११	५४	अनु	१८	३२	ह	१९	५७	वृश्चिक	बुध उ. भाद्रपदा में १६।३८, बुध पश्चिम में उ. ७।२०
4	८	शु	१०	१५	ज्ये	१७	२६	व	१७	१८	ध. १७।२६	सूर्य पू.भा. में १५।३६, कालाष्टमी, सीताष्टमी, A
5	९	श	८	७	मू	१५	५३	सि	१४	१७	धनु	भ. १८।५४ से २९।३५ तक, गु. रामदास ज., स्वा.B
0	१०	श	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०००	दशमी क्षय: C एका. व्रत स्मार्त, हर्षल, शत. ३ में ७।४९
6	११	र	२६	४४	पू.षा	१३	५६	व्य	१०	५७	म. १९।२५	वक्री गुरु हस्त ४ में १७।२१, व्यतिपात पु. १०।५७ तक, विजयाC
7	१२	चं	२३	४०	उ.षा	११	४४	वरि	७/२७	२७/४०	मकर	उ.षा. में मंगल २२।२, विजया एका. व्रत वै., D
8	१३	मं	२०	३३	श्र	९	२२	शि	२३	५६	कुं. २०।११	भ. २०।३३ से, पंचक प्रा. २०।११ से, महाशिवरात्री E
9	१४	बु	१७	३०	ध	७/२८	१/५०	सि	२०	१७	कुंभ	भ. ७।० तक, शुक्र पू.भा. में २४।२२, शिव खप्पर पू.
10	३०	गु	१४	४२	पू.भा	२६	५८	सा	१६	५१	मी. २१।२३	देवपितृकार्य अमावस्या, आर्य समाज सप्ताह समाप्त

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०६१ (११ से २५ मार्च तक)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
11	१	शु	१२	१८	उ.भा	२५	३४	शुभ	१३	४५	मीन	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक E में केतु २९।४०
12	२	श	१०	२६	रे	२४	४८	शु	११	५	मे. २४।४८	पंचक समा. २४।४८, मंगल मकर में १३।२०, A
13	३	र	९	१३	अ	२४	४३	ब्र	८	५८	मेष	भ. २०।५४ से, विनायक चतुर्थी व्रत
14	४	च	८	४६	भ	२५	२४	ऐं	७ ३०	४६ ३०	मेष	भ. ८।४६ तक, मीन में सूर्य १५।३९, सं.मु. १५
15	५	म	९	४	कृ	२६	४८	वि	३०	९	वृ. ७।४१	A बुध रेवती में २६।७, फुलरिया दूज
16	६	बु	१०	७	रो	२८	५२	प्री	३०	१८	वृष	F होलिका दहन, चैतन्य महाप्रभु ज., होलाष्टक पूर्ति, गुड फ्राइडे
17	७	गु	११	४९	मृ	-	-	आ	-	-	मि. १८।६	भ. ११।४९ से २४।५० तक, शुक्र मीन में प्र. B
18	८	शु	१३	५८	मृ	७	२६	आ	६	५१	मिथुन	श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, होलाष्टक प्रा.
19	९	श	१६	२४	आ	१०	१८	सौ	७	३८	मिथुन	वक्री बुध २८।५० B २४।५३, सूर्य उ.भा. में २३।५८
20	१०	र	१८	५३	पुन	१३	१६	शो	८	३१	क. ६।३२	उ.भा. में शुक्र १७।८, सायन मेष में सूर्य १८।१, C
21	११	चं	२१	१२	पु	१६	७	अति	९	२०	कर्क	भ. ८।४ से २१।१२ तक, आमलकी एका. व्रत
22	१२	मं	२३	१२	श्ले	१८	४२	सु	९	५९	सिं. १८।४	गोविन्द द्वादशी, श्यामजी मेला पूर्ति, बुध पश्चिम D
23	१३	बु	२४	४७	म	२०	५४	धृ	१०	२०	सिंह	प्रदोष व्रत C मेला खाटू जी (राज.) ३ दिन का प्रा.
24	१४	गु	२५	५४	पू.फा	२२	३८	शू	१०	२१	कं. २९।०	भ. २५।५४ से, रेवती ४ मीन में राहु, चित्रा २ कन्या E
25	१५	शु	२६	३०	उ.फा	२३	५४	गं	१०	०	कन्या	भ. १४।१६ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, F
												D में अस्त १२।३६, रा. चैत्र मास प्रा., मार्गी शनिः २०।२२

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०६१ (२६ मार्च से ८ अप्रैल तक)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
26	१	श	२६	३८	ह	२४	४३	वृ	९	१६	कन्या	मंगल श्रवण में १०।२, वसन्तोत्सव, धुलेण्डी
27	२	र	२६	२०	चि	२५	५	ध्रु	८	१०	तु. १२।५७	वक्री बुध उ.भा. में २४।५०, ईस्टर संडे
28	३	चं	२५	३६	स्वा	२५	३	व्या	६ २८	४४ ५९	तुला	भ. १४।१ से २५।३६ तक B शनि पुन. ३ में २७।४२
29	४	मं	२४	३१	वि	२४	३९	व	२६	५७	वृ. १८।४७	कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ
30	५	बु	२३	६	अनु	२३	५६	सि	२४	३९	वृश्चिक	रंग पंचमी, श्री ज. A में १०।३१, एकनाथ षष्ठी
31	६	गु	२१	२४	ज्ये	२२	५५	व्य	२२	७	ध. २२।५५	भ. २१।२४ से, सूर्य रेवती में १०।५४, शुक्र रेवती A
A1	७	शु	१९	२६	मू	२१	४०	वरि	१९	२३	धनु	भ. ८।२६ तक, शीतला ७, चेहल्लम शहीद करबला
2	८	श	१७	१५	पू.षा	२०	१३	परि	१६	२९	म. २५।५०	कालाष्टमी, शीतलाष्टमी (बासी भोजन करें)
3	९	र	१४	५६	उ.षा	१८	३७	शि	१३	२८	मकर	भ. २५।४३ से, ऋषभदेव ज., वक्री गुरु हस्त ३ में २९।००
4	१०	चं	१२	३१	श्र	१६	५७	सि	१०	२२	कुं. २८।६	भ. १२।३१ तक, पंचक प्रा. २८।६, दशामाता व्रत
5	११	मं	१०	५	ध	१५	१६	सा	७ २८	१५ १०	कुम्भ	पापमोचनी एका. व्रत सबका, बुध पूर्व में उ. १७।४७, B
6	१२	बु	७	४३	शत	१३	४१	शु	२५	१४	कुम्भ	भ. २१।३१ से, प्रदोष व्रत, वारूणी पर्व ७।४३ से C
0	१३	बु	२९	३१	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी क्षयः C १३।४१ तक, आखरी चाहर शम्बा मु.
7	१४	गु	२७	३६	पू.भा	१२	१८	ब्र	२२	२९	मी. ६।३०	भ. १६।३१ तक, मास शिवरात्री व्रत
8	३०	शु	२६	४	उ.भा	११	१३	ऐं	२०	२	मीन	देवपितृ कार्ये अमा., चांद्र संवत्सर २०६१ पूर्ण

पृष्ठ २३ का शेष.....

उपनयन यज्ञोपवीत मुहूर्त सं. २०६१

25 जून	शुक्र	आषा. शु. ७	उ.फा.	मुहूर्त लग्न ५, अभिजित्
27 जून	रवि	आ.शु. ९	चित्रा	ल. सिंह

(सन् 2005 ई.)

14 जन.	शुक्र	पौष शु. ५	पू.भा.	लग्न १२ (चन्द्र दान), अभि.
16 जन.	रवि	पौष शु. ७	रेवती	ल.१२ (चं.गु. दृष्ट्या शुभः)
20 जन.	गुरु	पौष शु. ११	रोहिणी	मु. ११।४४ उप., अभि.
21 जन.	शुक्र	पौष शु. १२	रोहिणी	ल. १२ (गु. दा.), अभि.
23 जन.	रवि	पौष शु. १३	आर्द्रा	ल. मीन
26 जन.	बुध	माघ कृ. १	आश्ले.	ल. मीन
28 जन.	शुक्र	मार्ग. कृ. ३	पू.फा.	ल. ११ (चं. पूज्य दा. वा.), अभि.
30 जन.	रवि	मार्ग. कृ. ५	उ.फा./ह.	ल. मी. (चं.गु.दा.) अभि.
17 फर.	गुरु	माघ शु. २	शत.	ल. वृष

सिंहस्थ गुरु कुंभ महापर्व विवरण सं.२०६१ विक्रमी

सिंह राशि पर गुरु के भ्रमण काल में कुंभ महापर्व (अमृत बिन्दु सिंचन) स्नान का महत्वपूर्ण पुण्य माना जाता है। यथा:-पंचवट्या विशेषेण गोदा दक्षिण वाहिनी। श्री रामचन्द्र प्रसादेन भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी॥ नासिकं च प्रयागं च पुष्करं नैमिषं तथा। पंचमेव गया क्षेत्रं न विद्यते॥

अन्यत्र:-हरिद्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे। सिंह स्थिते ज्ये सिंहर्के नासिके गौत्तमी तटे॥ अतः सिंहस्थ गुरु काल में उपरोक्त स्थानों पर स्नान-दान-तपस्या व पिण्ड-तर्पणादि कामों का पुण्य सहस्त्र गुणा होकर मनुष्य को सुख-शांति व मोक्ष प्रदाता माना जाता है। कुंभ विषयक नियमावली शास्त्र कथन से इस प्रकार है कि - १. सिंह राशि में गुरु व सूर्य भी सिंह राशि में हो तो कुंभ महापर्व नासिक स्थान पर। २. सिंह राशि पर गुरु व सूर्य मेष राशि पर आने पर कुंभ महापर्व उज्जैन स्थान पर होता है। इसी के साथ अर्थात् उज्जैन कुंभ महापर्व स्नान काल की तिथियों के ही दिन हरिद्वार में अर्द्धकुंभ महापर्व माना जाता है।

अतः उज्जैन में कुंभ महापर्व के स्नान काल का विवरण निम्न प्रकार है:-

चैत्र पूर्णिमा (श्री हनुमान जयंती)	ता. ५	अप्रैल २००४ ई. सोमवार
मेष संक्रांति (वैशाखी)	ता. १३	अप्रैल २००४ ई. मंगलवार
सोमवती अमावस्या	ता. १९	अप्रैल २००४ ई. सोमवार
अक्षय तृतीया (स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त)	ता. २२	अप्रैल २००४ ई. गुरुवार
वैशाख पूर्णिमा-खग्रास चन्द्रग्रहण	ता. ४	मई २००४ ई. मंगलवार

नासिक के अन्य पर्वकालः- ❖ द्वितीय श्रावण कृ. सोमवती अमा. ता. १६ अगस्त २००४ ई. (सूर्य-गुरु-चन्द्र तीनों सिंह राशि में रहेंगे) सायं ४।५० के बाद

❖ गुरु सिंह राशि से निवृत्ति (स्वजावतरण) ता. २७ अगस्त

भौगोलिक परिचय

अक्षांशा-रेखांशा-रविक्रान्ति

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् दिल्ली भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसे करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदले झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३.५° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानि दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था. इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहाँ से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहाँ के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए हैं और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर सारिणी पृ. ९८ तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ९७ पर दी हुई है।

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखाँशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है. मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ता के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घंटे आगे था और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया

गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मिनट आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५-३० घंटा आगे है और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिस्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घण्टे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४ घंटे ३० मिनट तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा बर्मा ६ घंटे ३० मिनट आगे है। थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घंटे के क्षेत्र में हैं। चीन, हांगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, बोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५ घंटा ३० मिनट का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५ घंटे ३० मिनट का अन्तर ८२.३० रेखांश पर आता है (८२.३०×४=३३० मि.=५ घंटा ३० मिनट)। भारत में ८२.३० अक्षांश इलाहाबाद, अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा, मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२.३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७×४=२१.०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२.३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५.१३ है, जो ८२.३० से २.४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२.४३×४=१०.५२)= १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ ९१ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। मानचित्र में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान मानचित्र में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्राय: १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अतः तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक के अक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जुलाई को वृश्चिक समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया	+ ०।१४
(१३ मिनट ४८ सेकंड आधे से अधिक होने से १४ लिये)	= १७।२८
मध्यम लग्न समाप्त	= १७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने —१७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान	—०।१७
	१७।११

अतः नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७ बजकर ११ मिनट पर होगा।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

लग्न अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८	८ ५४	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१६ ५८	१९ १५	२१ ३२	२३ ५२	२ ०९	४ १३	५ ५५
२	७ २४	८ ५०	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५४	१९ ११	२१ २८	२३ ४८	२ ०५	४ ०९	५ ५१
३	७ २०	८ ४६	१० २२	१२ १६	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०७	२१ २४	२३ ४४	२ ०१	४ ०५	५ ४७
४	७ १६	८ ४२	१० १८	१२ १२	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ २०	२३ ४०	१ ५७	४ ०१	५ ४३
५	७ १२	८ ३८	१० १४	१२ ०८	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ १६	२३ ३६	१ ५३	३ ५७	५ ३९
६	७ ०८	८ ३४	१० १०	१२ ०४	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२१ १२	२३ ३२	१ ४९	३ ५३	५ ३५
७	७ ०४	८ ३०	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२१ ०८	२३ २८	१ ४५	३ ४९	५ ३१
८	७ ००	८ २६	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२१ ०४	२३ २४	१ ४१	३ ४५	५ २७
९	६ ५६	८ २२	९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२१ ००	२३ २०	१ ३७	३ ४१	५ २३
१०	६ ५२	८ १८	९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २२	१८ ३९	२० ५६	२३ १६	१ ३३	३ ३७	५ १९
११	६ ४८	८ १४	९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १८	१८ ३५	२० ५२	२३ १२	१ २९	३ ३३	५ १५
१२	६ ४४	८ १०	९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १४	१८ ३१	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ २९	५ ११
१३	६ ४०	८ ०६	९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ १०	१८ २७	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ २५	५ ०७
१४	६ ३६	८ ०२	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०६	१८ २३	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ २१	५ ०३
१५	६ ३२	७ ५८	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०२	१८ १९	२० ३६	२२ ५६	१ १३	३ १७	४ ५९
१६	६ २८	७ ५४	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५८	१८ १५	२० ३२	२२ ५२	१ ०९	३ १३	४ ५५
१७	६ २४	७ ५०	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५४	१८ ११	२० २८	२२ ४८	१ ०५	३ ०९	४ ५१
१८	६ २०	७ ४६	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५०	१८ ०७	२० २४	२२ ४४	१ ०१	३ ०५	४ ४७
१९	६ १६	७ ४२	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४६	१८ ०३	२० २०	२२ ४०	० ५७	३ ०१	४ ४३
२०	६ १२	७ ३८	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० १६	२२ ३६	० ५३	२ ५७	४ ३९
२१	६ ०८	७ ३४	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १२	२२ ३२	० ४९	२ ५३	४ ३५
२२	६ ०४	७ ३०	९ ०६	११ ००	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० ०८	२२ २८	० ४५	२ ४९	४ ३१
२३	६ ००	७ २६	९ ०२	१० ५६	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ४५	४ २७
२४	५ ५६	७ २२	८ ५८	१० ५२	१३ ०६	१५ २६	१७ ४३	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ४१	४ २३
२५	५ ५२	७ १८	८ ५४	१० ४८	१३ ०२	१५ २२	१७ ३९	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ३७	४ १९
२६	५ ४८	७ १४	८ ५०	१० ४४	१२ ५८	१५ १८	१७ ३५	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ३३	४ १५
२७	५ ४४	७ १०	८ ४६	१० ४०	१२ ५४	१५ १४	१७ ३१	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ २९	४ ११
२८	५ ४०	७ ०६	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १०	१७ २७	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ २५	४ ०७
२९	५ ३६	७ ०२	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ०६	१७ २३	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ २१	४ ०३
३०	५ ३२	६ ५८	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ०२	१७ १९	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ १७	३ ५९
३१	५ २८	६ ५४	८ ३०	१० २४	१२ ३८	१४ ५८	१७ १५	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ १३	३ ५५

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५०	८ २६	१० २२	१२ ३५	१४ ५६	१७ १३	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ १०	३ ५३	५ २१
२	६ ४६	८ २२	१० १८	१२ ३१	१४ ५२	१७ ०९	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ ०६	३ ४९	५ १७
३	६ ४२	८ १८	१० १४	१२ २७	१४ ४८	१७ ०५	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ ०२	३ ४५	५ १३
४	६ ३८	८ १४	१० १०	१२ २३	१४ ४४	१७ ०१	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	१ ५८	३ ४१	५ ०९
५	६ ३४	८ १०	१० ०६	१२ १९	१४ ४०	१६ ५७	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	१ ५४	३ ३७	५ ०५
६	६ ३०	८ ०६	१० ०२	१२ १५	१४ ३६	१६ ५३	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	१ ५०	३ ३३	५ ०१
७	६ २६	८ ०२	९ ५८	१२ ११	१४ ३२	१६ ४९	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	१ ४६	३ २९	४ ५७
८	६ २२	७ ५८	९ ५४	१२ ०७	१४ २८	१६ ४५	१९ ०१	२१ २१	२३ ३९	१ ४२	३ २५	४ ५३
९	६ १८	७ ५४	९ ५०	१२ ०३	१४ २४	१६ ४१	१९ ५७	२१ १७	२३ ३५	१ ३८	३ २१	४ ४९
१०	६ १४	७ ५०	९ ४६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५३	२१ १३	२३ ३१	१ ३४	३ १७	४ ४५
११	६ १०	७ ४६	९ ४२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ४९	२१ ०९	२३ २७	१ ३०	३ १३	४ ४१
१२	६ ०६	७ ४२	९ ३८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ४५	२१ ०५	२३ २३	१ २६	३ ०९	४ ३७
१३	६ ०२	७ ३८	९ ३४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४१	२१ ०१	२३ १९	१ २२	३ ०५	४ ३३
१४	५ ५८	७ ३४	९ ३०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ३७	२० ५७	२३ १५	१ १८	३ ०१	४ २९
१५	५ ५४	७ ३०	९ २६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३३	२० ५३	२३ ११	१ १४	२ ५७	४ २५
१६	५ ५१	७ २७	९ २३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ ११	२ ५४	४ २२
१७	५ ४७	७ २३	९ १९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ ०७	२ ५०	४ १८
१८	५ ४३	७ १९	९ १५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ ०३	२ ४६	४ १४
१९	५ ३९	७ १५	९ ११	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	० ५९	२ ४२	४ १०
२०	५ ३५	७ ११	९ ०७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	० ५५	२ ३८	४ ०६
२१	५ ३१	७ ०७	९ ०३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	० ५१	२ ३४	४ ०२
२२	५ २७	७ ०३	८ ५९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	० ४७	२ ३०	३ ५८
२३	५ २३	६ ५९	८ ५५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०२	२० २२	२२ ४०	० ४३	२ २६	३ ५४
२४	५ १९	६ ५५	८ ५१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१७ ५८	२० १८	२२ ३६	० ३९	२ २२	३ ५०
२५	५ १५	६ ५१	८ ४७	११ ०	१३ २०	१५ ३८	१७ ५४	२० १४	२२ ३२	० ३५	२ १८	३ ४६
२६	५ ११	६ ४७	८ ४३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५०	२० १०	२२ २८	० ३१	२ १४	३ ४२
२७	५ ०७	६ ४३	८ ३९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ४६	२० ०६	२२ २४	० २७	२ १०	३ ३८
२८	५ ०३	६ ३९	८ ३५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४२	२० ०२	२२ २०	० २३	२ ०६	३ ३४
२९	४ ५९	६ ३५	८ ३१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ३८	१९ ५८	२२ १६	० १९	२ ०२	३ ३०
३०	४ ५५	६ ३१	८ २७	१० ४०	१३ ००	१५ १८	१७ ३४	१९ ५४	२२ १२	० १५	१ ५८	३ २६

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २६	८ २२	१० ३६	१२ ५५	१५ १३	१७ ३०	१९ ४९	२२ ०७	० ११	१ ५३	३ २१	४ ४६
२	६ २२	८ १८	१० ३२	१२ ५१	१५ ०९	१७ २६	१९ ४५	२२ ०३	० ०७	१ ४९	३ १७	४ ४२
३	६ १८	८ १४	१० २८	१२ ४७	१५ ०५	१७ २२	१९ ४१	२१ ५९	० ०३	१ ४५	३ १३	४ ३८
४	६ १४	८ १०	१० २४	१२ ४३	१५ ०१	१७ १८	१९ ३७	२१ ५५	२३ ५९	१ ४१	३ ०९	४ ३४
५	६ ११	८ ०७	१० २१	१२ ४०	१४ ५८	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	२३ ५६	१ ३८	३ ०६	४ ३१
६	६ ०७	८ ०३	१० १७	१२ ३६	१४ ५४	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	२३ ५२	१ ३४	३ ०२	४ २७
७	६ ०३	७ ५९	१० १३	१२ ३२	१४ ५०	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	२३ ४८	१ ३०	२ ५८	४ २३
८	५ ५९	७ ५५	१० ०९	१२ २८	१४ ४६	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	२३ ४४	१ २६	२ ५४	४ १९
९	५ ५५	७ ५१	१० ०५	१२ २४	१४ ४२	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ४०	१ २२	२ ५०	४ १५
१०	५ ५१	७ ४७	१० ०१	१२ २०	१४ ३८	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ३६	१ १८	२ ४६	४ ११
११	५ ४७	७ ४३	९ ५७	१२ १६	१४ ३४	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ३२	१ १४	२ ४२	४ ०७
१२	५ ४३	७ ३९	९ ५३	१२ १२	१४ ३०	१६ ४७	१९ ०६	२१ २४	२३ २८	१ १०	२ ३८	४ ०३
१३	५ ३९	७ ३५	९ ४९	१२ ०८	१४ २६	१६ ४३	१९ ०२	२१ २०	२३ २४	१ ०६	२ ३४	३ ५९
१४	५ ३५	७ ३१	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ २०	१ ०२	२ ३०	३ ५५
१५	५ ३१	७ २७	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ १६	० ५८	२ २६	३ ५१
१६	५ २८	७ २४	९ ३८	११ ५७	१४ १५	१६ ३२	१८ ५१	२१ ०९	२३ १३	० ५५	२ २३	३ ४८
१७	५ २४	७ २०	९ ३४	११ ५३	१४ ११	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ ०९	० ५१	२ १९	३ ४४
१८	५ २०	७ १६	९ ३०	११ ४९	१४ ०७	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ ०५	० ४७	२ १५	३ ४०
१९	५ १६	७ १२	९ २६	११ ४५	१४ ०३	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ ०१	० ४३	२ ११	३ ३६
२०	५ १२	७ ०८	९ २२	११ ४१	१३ ५९	१६ १६	१८ ३५	२० ५३	२२ ५७	० ३९	२ ०७	३ ३२
२१	५ ०८	७ ०४	९ १८	११ ३७	१३ ५५	१६ १२	१८ ३१	२० ४९	२२ ५३	० ३५	२ ०३	३ २८
२२	५ ०४	७ ००	९ १४	११ ३३	१३ ५१	१६ ०८	१८ २७	२० ४५	२२ ४९	० ३१	१ ५९	३ २४
२३	५ ००	६ ५६	९ १०	११ २९	१३ ४७	१६ ०४	१८ २३	२० ४१	२२ ४५	० २७	१ ५५	३ २०
२४	४ ५६	६ ५२	९ ०६	११ २५	१३ ४३	१६ ००	१८ १९	२० ३७	२२ ४१	० २३	१ ५१	३ १६
२५	४ ५२	६ ४८	९ ०२	११ २१	१३ ३९	१५ ५६	१८ १५	२० ३३	२२ ३७	० १९	१ ४७	३ १२
२६	४ ४८	६ ४४	८ ५८	११ १७	१३ ३५	१५ ५२	१८ ११	२० २९	२२ ३३	० १५	१ ४३	३ ०८
२७	४ ४४	६ ४०	८ ५४	११ १३	१३ ३१	१५ ४८	१८ ०७	२० २५	२२ २९	० ११	१ ३९	३ ०४
२८	४ ४१	६ ३७	८ ५१	११ १०	१३ २८	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ २६	० ०८	१ ३६	३ ०१
२९	४ ३७	६ ३३	८ ४७	११ ०६	१३ २४	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ २२	० ०४	१ ३२	२ ५७
३०	४ ३३	६ २९	८ ४३	११ ०२	१३ २०	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ १८	२४ ०	१ २८	२ ५३
३१	४ २९	६ २५	८ ३९	१० ५८	१३ १६	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ १४	२३ ५६	१ २४	२ ४९

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ १९	८ ३३	१० ५३	१३ १०	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ ०८	२३ ५१	१ १८	२ ४४	४ २०
२	६ १५	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २३	१७ ४३	२० ००	२२ ०४	२३ ४७	१ १४	२ ४०	४ १६
३	६ ११	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ १९	१७ ३९	१९ ५६	२२ ००	२३ ४३	१ १०	२ ३६	४ १२
४	६ ०७	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ १५	१७ ३५	१९ ५२	२१ ५६	२३ ३९	१ ०६	२ ३२	४ ०८
५	६ ०४	८ १८	१० ३८	१२ ५५	१५ १२	१७ ३२	१९ ४९	२१ ५३	२३ ३६	१ ०३	२ २९	४ ०५
६	६ ००	८ १४	१० ३४	१२ ५१	१५ ०८	१७ २८	१९ ४५	२१ ४९	२३ ३२	० ५९	२ २५	४ ०१
७	५ ५६	८ १०	१० ३०	१२ ४७	१५ ०४	१७ २४	१९ ४१	२१ ४५	२३ २८	० ५५	२ २१	३ ५७
८	५ ५२	८ ०६	१० २६	१२ ४३	१५ ०	१७ २०	१९ ३७	२१ ४१	२३ २४	० ५१	२ १७	३ ५३
९	५ ४८	८ ०२	१० २२	१२ ३९	१४ ५६	१७ १६	१९ ३३	२१ ३७	२३ २०	० ४७	२ १३	३ ४९
१०	५ ४४	७ ५८	१० १८	१२ ३५	१४ ५२	१७ १२	१९ २९	२१ ३३	२३ १६	० ४३	२ ०९	३ ४५
११	५ ४१	७ ५५	१० १५	१२ ३२	१४ ४९	१७ ०९	१९ २६	२१ ३०	२३ १३	० ४०	२ ०६	३ ४२
१२	५ ३७	७ ५१	१० ११	१२ २८	१४ ४५	१७ ०५	१९ २२	२१ २६	२३ ०९	० ३६	२ ०२	३ ३८
१३	५ ३३	७ ४७	१० ०७	१२ २४	१४ ४१	१७ ०१	१९ १८	२१ २२	२३ ०५	० ३२	१ ५८	३ ३४
१४	५ २९	७ ४३	१० ०३	१२ २०	१४ ३७	१६ ५७	१९ १४	२१ १८	२३ ०१	० २८	१ ५४	३ ३०
१५	५ २५	७ ३९	९ ५९	१२ १६	१४ ३३	१६ ५३	१९ १०	२१ १४	२२ ५७	० २४	१ ५०	३ २६
१६	५ २१	७ ३५	९ ५५	१२ १२	१४ २९	१६ ४९	१९ ०६	२१ १०	२२ ५३	० २०	१ ४६	३ २२
१७	५ १८	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ ०७	२२ ५०	० १७	१ ४३	३ १९
१८	५ १४	७ २८	९ ४८	१२ ०५	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४६	० १३	१ ३९	३ १५
१९	५ १०	७ २४	९ ४४	१२ ०१	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२० ५९	२२ ४२	० ०९	१ ३५	३ ११
२०	५ ०६	७ २०	९ ४०	११ ५७	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२० ५५	२२ ३८	० ०५	१ ३१	३ ०७
२१	५ ०२	७ १६	९ ३६	११ ५३	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२० ५१	२२ ३४	० ०१	१ २७	३ ०३
२२	४ ५८	७ १२	९ ३२	११ ४९	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२० ४७	२२ ३०	२३ ५७	१ २३	२ ५९
२३	४ ५४	७ ०९	९ २९	११ ४६	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२० ४४	२२ २७	२३ ५४	१ २०	२ ५६
२४	४ ५२	७ ०५	९ २५	११ ४२	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ४०	२२ २३	२३ ५०	१ १६	२ ५२
२५	४ ४७	७ ०१	९ २१	११ ३८	१३ ५५	१६ १५	१८ ३२	२० ३६	२२ १९	२३ ४६	१ १२	२ ४८
२६	४ ४३	६ ५७	९ १७	११ ३४	१३ ५१	१६ ११	१८ २८	२० ३२	२२ १५	२३ ४२	१ ०८	२ ४४
२७	४ ३९	६ ५३	९ १३	११ ३०	१३ ४७	१६ ०७	१८ २४	२० २८	२२ ११	२३ ३८	१ ०४	२ ४०
२८	४ ३५	६ ४९	९ ०९	११ २६	१३ ४३	१६ ०३	१८ २०	२० २४	२२ ०७	२३ ३४	१ ००	२ ३६
२९	४ ३१	६ ४५	९ ०५	११ २२	१३ ३९	१५ ५९	१८ १६	२० २०	२२ ०३	२३ ३०	०० ५६	२ ३२
३०	४ २७	६ ४१	९ ०१	११ १८	१३ ३५	१५ ५५	१८ १२	२० १६	२१ ५९	२३ २६	०० ५२	२ २८

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाइम घण्टा-मिनट

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० १२	२१ ५५	२३ २३	० ४८	२ २४	४ २०
२	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० ०८	२१ ५१	२३ १९	० ४४	२ २०	४ १६
३	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० ०४	२१ ४७	२३ १५	० ४०	२ १६	४ १२
४	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० ००	२१ ४३	२३ ११	० ३६	२ १२	४ ०८
५	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ १५	१५ ३५	१७ ५३	१९ ५६	२१ ३९	२३ ०७	० ३२	२ ०८	४ ०४
६	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ ११	१५ ३१	१७ ४९	१९ ५२	२१ ३५	२३ ०३	० २८	२ ०४	४ ००
७	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ ०७	१५ २७	१७ ४५	१९ ४८	२१ ३१	२२ ५९	० २४	२ ००	३ ५६
८	६ ०९	८ २९	१० ४७	१३ ०३	१५ २३	१७ ४१	१९ ४४	२१ २७	२२ ५५	० २०	१ ५६	३ ५२
९	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ५९	१५ १९	१७ ३७	१९ ४०	२१ २३	२२ ५१	० १६	१ ५२	३ ४८
१०	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ५५	१५ १५	१७ ३३	१९ ३६	२१ १९	२२ ४७	० १२	१ ४८	३ ४४
११	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ५१	१५ ११	१७ २९	१९ ३२	२१ १५	२२ ४३	० ०८	१ ४४	३ ४०
१२	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ४७	१५ ०७	१७ २५	१९ २८	२१ ११	२२ ३९	० ०४	१ ४०	३ ३६
१३	५ ४९	८ ०९	१० २७	१२ ४३	१५ ०३	१७ २१	१९ २४	२१ ०७	२२ ३५	२४ ००	१ ३६	३ ३२
१४	५ ४५	८ ०५	१० २३	१२ ३९	१४ ५९	१७ १७	१९ २०	२१ ०३	२२ ३१	२३ ५६	१ ३२	३ २८
१५	४ ४२	८ ०२	१० २०	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ १७	२१ ००	२२ २८	२३ ५३	१ २९	३ २५
१६	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ १३	२० ५६	२२ २४	२३ ४९	१ २५	३ २१
१७	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ ०९	२० ५२	२२ २०	२३ ४५	१ २१	३ १७
१८	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ ०५	२० ४८	२२ १६	२३ ४१	१ १७	३ १३
१९	५ २६	७ ४६	१० ०४	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ ०१	२० ४४	२२ १२	२३ ३७	१ १३	३ ०९
२०	५ २२	७ ४२	१० ००	१२ १६	१४ ३६	१६ ५४	१८ ५७	२० ४०	२२ ०८	२३ ३३	१ ०९	३ ०५
२१	५ १८	७ ३८	९ ५६	१२ १२	१४ ३२	१६ ५०	१८ ५३	२० ३६	२२ ०४	२३ २९	१ ०५	३ ०१
२२	५ १४	७ ३४	९ ५२	१२ ०८	१४ २८	१६ ४६	१८ ४९	२० ३२	२२ ००	२३ २५	१ ०१	२ ५७
२३	५ ११	७ ३१	९ ४९	१२ ०५	१४ २५	१६ ४३	१८ ४६	२० २९	२१ ५७	२३ २२	० ५८	२ ५३
२४	५ ०७	७ २७	९ ४५	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१८ ४२	२० २५	२१ ५३	२३ १८	० ५४	२ ४९
२५	५ ०३	७ २३	९ ४१	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ३८	२० २१	२१ ४९	२३ १४	० ५०	२ ४५
२६	४ ५९	७ १९	९ ३७	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ३४	२० १७	२१ ४५	२३ १०	० ४६	२ ४१
२७	४ ५५	७ १५	९ ३३	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ३०	२० १३	२१ ४१	२३ ०६	० ४२	२ ३७
२८	४ ५१	७ ११	९ २९	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ २६	२० ०९	२१ ३७	२३ ०२	० ३८	२ ३३
२९	४ ४७	७ ०७	९ २५	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ २२	२० ०५	२१ ३३	२२ ५८	० ३४	२ २९
३०	४ ४३	७ ३	९ २१	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ १८	२० ०१	२१ २९	२२ ५४	० ३०	२ २५
३१	४ ३९	६ ५९	९ १७	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ १४	१९ ५७	२१ २५	२२ ५०	० २६	२ २१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाइम घण्टा-मिनट

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५५	९ १३	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ ११	१९ ५३	२१ २१	२२ ४७	० २२	२ १८	४ ३१
२	६ ५१	९ ०९	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ ०७	१९ ४९	२१ १७	२२ ४३	० १८	२ १४	४ २७
३	६ ४७	९ ०५	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ ०३	१९ ४५	२१ १३	२२ ३९	० १४	२ १०	४ २३
४	६ ४३	९ ०१	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१७ ५९	१९ ४१	२१ ०९	२२ ३५	० १०	२ ०६	४ १९
५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१३ ३४	१५ ५२	१७ ५६	१९ ३८	२१ ०६	२२ ३२	० ०७	२ ०३	४ १६
६	६ ३६	८ ५४	११ ११	१३ ३०	१५ ४८	१७ ५२	१९ ३४	२१ ०२	२२ २८	० ०३	१ ५९	४ १२
७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१३ २६	१५ ४४	१७ ४८	१९ ३०	२० ५८	२२ २४	२३ ५९	१ ५५	४ ०८
८	६ २८	८ ४६	११ ०३	१३ २२	१५ ४०	१७ ४४	१९ २६	२० ५४	२२ २०	२३ ५५	१ ५१	४ ०४
९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१३ १८	१५ ३६	१७ ४०	१९ २२	२० ५०	२२ १६	२३ ५१	१ ४७	४ ००
१०	६ २०	८ ३८	१० ५५	१३ १४	१५ ३२	१७ ३६	१९ १८	२० ४६	२२ १२	२३ ४७	१ ४३	३ ५६
११	६ १६	८ ३४	१० ५१	१३ १०	१५ २८	१७ ३२	१९ १४	२० ४२	२२ ०८	२३ ४३	१ ३९	३ ५२
१२	६ १२	८ ३०	१० ४७	१३ ०६	१५ २४	१७ २८	१९ १०	२० ३८	२२ ०४	२३ ३९	१ ३५	३ ४८
१३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१३ ०२	१५ २०	१७ २४	१९ ०६	२० ३४	२२ ००	२३ ३५	१ ३१	३ ४४
१४	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ५८	१५ १६	१७ २०	१९ ०२	२० ३०	२१ ५६	२३ ३१	१ २७	३ ४०
१५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ १६	१८ ५८	२० २६	२१ ५२	२३ २७	१ २३	३ ३६
१६	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ १२	१८ ५४	२० २२	२१ ४८	२३ २३	१ १९	३ ३२
१७	५ ५२	८ १०	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ ०८	१८ ५०	२० १८	२१ ४४	२३ १९	१ १५	३ २८
१८	५ ४८	८ ०६	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ ०४	१८ ४६	२० १४	२१ ४०	२३ १५	१ ११	३ २४
१९	५ ४४	८ ०२	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ ००	१८ ४२	२० १०	२१ ३६	२३ ११	१ ०७	३ २०
२०	५ ४०	७ ५८	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१६ ५६	१८ ३८	२० ०६	२१ ३२	२३ ०७	१ ०३	३ १६
२१	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ ३१	१४ ४९	१६ ५३	१८ ३५	२० ०३	२१ २९	२३ ०४	१ ००	३ १३
२२	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ २७	१४ ४५	१६ ४९	१८ ३१	१९ ५९	२१ २५	२३ ००	० ५६	३ ०९
२३	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ २३	१४ ४१	१६ ४५	१८ २७	१९ ५५	२१ २१	२२ ५६	० ५२	३ ०५
२४	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ १९	१४ ३७	१६ ४१	१८ २३	१९ ५१	२१ १७	२२ ५२	० ४८	३ ०१
२५	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ १५	१४ ३३	१६ ३७	१८ १९	१९ ४७	२१ १३	२२ ४८	० ४४	२ ५७
२६	५ १७	७ ३५	९ ५२	१२ ११	१४ २९	१६ ३३	१८ १५	१९ ४३	२१ ०९	२२ ४४	० ४०	२ ५३
२७	५ १३	७ ३१	९ ४८	१२ ०७	१४ २५	१६ २९	१८ ११	१९ ३९	२१ ०५	२२ ४०	० ३६	२ ४९
२८	५ १०	७ २८	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ २६	१८ ०८	१९ ३६	२१ ०२	२२ ३७	० ३३	२ ४६
२९	५ ०६	७ २४	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ २२	१८ ०४	१९ ३२	२० ५८	२२ ३३	० २९	२ ४२
३०	५ ०२	७ २०	९ ३७	११ ५६	१४ १४	१६ १८	१८ ००	१९ २८	२० ५४	२२ २९	० २५	२ ३८
३१	४ ५८	७ १६	९ ३३	११ ५२	१४ १०	१६ १४	१७ ५६	१९ २४	२० ५०	२२ २५	० २१	२ ३४

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२	९ २९	११ ४९	१४ ०६	१६ १०	१७ ५३	१९ २०	२० ४६	२२ २२	० १७	२ ३१	४ ५०
२	७ ०८	९ २५	११ ४५	१४ ०२	१६ ०६	१७ ४९	१९ १६	२० ४२	२२ १८	० १३	२ २७	४ ४६
३	७ ०४	९ २१	११ ४१	१३ ५८	१६ ०२	१७ ४५	१९ १२	२० ३८	२२ १४	० ०९	२ २३	४ ४२
४	७ ००	९ १७	११ ३७	१३ ५४	१५ ५८	१७ ४१	१९ ०८	२० ३४	२२ १०	० ०५	२ १९	४ ३८
५	६ ५६	९ १३	११ ३३	१३ ५०	१५ ५४	१७ ३७	१९ ०४	२० ३०	२२ ०६	० ०१	२ १५	४ ३४
६	६ ५२	९ ०९	११ २९	१३ ४६	१५ ५०	१७ ३३	१९ ००	२० २६	२२ ०२	२३ ५७	२ ११	४ ३०
७	६ ४८	९ ०५	११ २५	१३ ४२	१५ ४६	१७ २९	१८ ५६	२० २२	२१ ५८	२३ ५३	२ ०७	४ २६
८	६ ४४	९ ०१	११ २१	१३ ३८	१५ ४२	१७ २५	१८ ५२	२० १८	२१ ५४	२३ ४९	२ ०३	४ २२
९	६ ४०	८ ५७	११ १७	१३ ३४	१५ ३८	१७ २१	१८ ४८	२० १४	२१ ५०	२३ ४५	१ ५९	४ १८
१०	६ ३६	८ ५३	११ १३	१३ ३०	१५ ३४	१७ १७	१८ ४४	२० १०	२१ ४६	२३ ४१	१ ५५	४ १४
११	६ ३२	८ ४९	११ ०९	१३ २६	१५ ३०	१७ १३	१८ ४०	२० ०६	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १०
१२	६ २७	८ ४४	११ ०४	१३ २१	१५ २५	१७ ०८	१८ ३५	२० ०१	२१ ३७	२३ ३२	१ ४६	४ ०५
१३	६ २३	८ ४०	११ ००	१३ १७	१५ २१	१७ ०४	१८ ३१	१९ ५७	२१ ३३	२३ २८	१ ४२	४ ०१
१४	६ १९	८ ३६	१० ५६	१३ १३	१५ १७	१७ ००	१८ २७	१९ ५३	२१ २९	२३ २४	१ ३८	३ ५७
१५	६ १५	८ ३२	१० ५२	१३ ०९	१५ १३	१६ ५६	१८ २३	१९ ४९	२१ २५	२३ २०	१ ३४	३ ५३
१६	६ ११	८ २८	१० ४८	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५२	१८ १९	१९ ४५	२१ २१	२३ १६	१ ३०	३ ४९
१७	६ ०७	८ २४	१० ४४	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४८	१८ १५	१९ ४१	२१ १७	२३ १२	१ २६	३ ४५
१८	६ ०३	८ २०	१० ४०	१२ ५७	१५ ०१	१६ ४४	१८ ११	१९ ३७	२१ १३	२३ ०८	१ २२	३ ४१
१९	५ ५९	८ १६	१० ३६	१२ ५३	१४ ५७	१६ ४०	१८ ०७	१९ ३३	२१ ०९	२३ ०४	१ १८	३ ३७
२०	५ ५५	८ १२	१० ३२	१२ ४९	१४ ५३	१६ ३६	१८ ०३	१९ २९	२१ ०५	२३ ००	१ १४	३ ३३
२१	५ ५१	८ ०८	१० २८	१२ ४५	१४ ४९	१६ ३२	१७ ५९	१९ २५	२१ ०१	२२ ५६	१ १०	३ २९
२२	५ ४७	८ ०४	१० २४	१२ ४१	१४ ४५	१६ २८	१७ ५५	१९ २१	२० ५७	२२ ५२	१ ०६	३ २५
२३	५ ४३	८ ००	१० २०	१२ ३७	१४ ४१	१६ २४	१७ ५१	१९ १७	२० ५३	२२ ४८	१ ०२	३ २१
२४	५ ३९	७ ५६	१० १६	१२ ३३	१४ ३७	१६ २०	१७ ४७	१९ १३	२० ४९	२२ ४४	० ५८	३ १७
२५	५ ३५	७ ५२	१० १२	१२ २९	१४ ३३	१६ १६	१७ ४३	१९ ०९	२० ४५	२२ ४०	० ५४	३ १३
२६	५ ३१	७ ४८	१० ०८	१२ २५	१४ २९	१६ १२	१७ ३९	१९ ०५	२० ४१	२२ ३६	० ५०	३ ०९
२७	५ २७	७ ४४	१० ०४	१२ २१	१४ २५	१६ ०८	१७ ३५	१९ ०१	२० ३७	२२ ३२	० ४६	३ ०५
२८	५ २३	७ ४०	१० ००	१२ १७	१४ २१	१६ ०७	१७ ३१	१८ ५७	२० ३३	२२ २८	० ४२	३ ०१
२९	५ १९	७ ३६	९ ५६	१२ १३	१४ १७	१६ ०४	१७ २७	१८ ५३	२० २९	२२ २४	० ३८	२ ५७
३०	५ १५	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ १३	१५ ५६	१७ २३	१८ ४९	२० २५	२२ २०	० ३४	२ ५३

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४५	१० ०३	१२ ०७	१३ ४९	१५ १७	१६ ४३	१८ १८	२० १४	२२ २८	० ४७	३ ०५	५ २१
२	७ ४१	९ ५९	१२ ०३	१३ ४५	१५ १३	१६ ३९	१८ १४	२० १०	२२ २४	० ४३	३ ०१	५ १७
३	७ ३७	९ ५५	११ ५९	१३ ४१	१५ ०९	१६ ३५	१८ १०	२० ०६	२२ २०	० ३९	२ ५७	५ १३
४	७ ३३	९ ५१	११ ५५	१३ ३७	१५ ०५	१६ ३१	१८ ०६	२० ०२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ ०९
५	७ २९	९ ४७	११ ५१	१३ ३३	१५ ०१	१६ २७	१८ ०२	१९ ५८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ ०५
६	७ २५	९ ४३	११ ४७	१३ २९	१४ ५७	१६ २३	१७ ५८	१९ ५४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०१
७	७ २१	९ ३९	११ ४३	१३ २५	१४ ५३	१६ १९	१७ ५४	१९ ५०	२२ ०४	० २३	२ ४१	४ ५७
८	७ १८	९ ३६	११ ४०	१३ २२	१४ ५०	१६ १६	१७ ५१	१९ ४७	२२ ०१	० २०	२ ३८	४ ५४
९	७ १४	९ ३२	११ ३६	१३ १८	१४ ४६	१६ १२	१७ ४७	१९ ४३	२१ ५७	० १६	२ ३४	४ ५०
१०	७ १०	९ २८	११ ३२	१३ १४	१४ ४२	१६ ०८	१७ ४३	१९ ३९	२१ ५३	० १२	२ ३०	४ ४६
११	७ ०६	९ २४	११ २८	१३ १०	१४ ३८	१६ ०४	१७ ३९	१९ ३५	२१ ४९	० ०८	२ २६	४ ४२
१२	७ ०२	९ २०	११ २४	१३ ०६	१४ ३४	१६ ००	१७ ३५	१९ ३१	२१ ४५	० ०४	२ २२	४ ३८
१३	६ ५८	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ ३०	१५ ५६	१७ ३१	१९ २७	२१ ४१	२४ ००	२ १८	४ ३४
१४	६ ५४	९ १२	११ १६	१२ ५८	१४ २६	१५ ५२	१७ २७	१९ २३	२१ ३७	२३ ५६	२ १४	४ ३०
१५	६ ५१	९ ०९	११ १३	१२ ५५	१४ २३	१५ ४९	१७ २४	१९ २०	२१ ३४	२३ ५३	२ ११	४ २७
१६	६ ४७	९ ०५	११ ०९	१२ ५१	१४ १९	१५ ४५	१७ २०	१९ १६	२१ ३०	२३ ४९	२ ०७	४ २३
१७	६ ४३	९ ०१	११ ०५	१२ ४७	१४ १५	१५ ४१	१७ १६	१९ १२	२१ २६	२३ ४५	२ ०३	४ १९
१८	६ ३९	८ ५७	११ ०१	१२ ४३	१४ ११	१५ ३७	१७ १२	१९ ०८	२१ २२	२३ ४१	१ ५९	४ १५
१९	६ ३५	८ ५३	१० ५७	१२ ३९	१४ ०७	१५ ३३	१७ ०८	१९ ०४	२१ १८	२३ ३७	१ ५५	४ ११
२०	६ ३१	८ ४९	१० ५३	१२ ३५	१४ ०३	१५ २९	१७ ०४	१९ ००	२१ १४	२३ ३३	१ ५१	४ ०७
२१	६ २७	८ ४५	१० ४९	१२ ३१	१३ ५९	१५ २५	१७ ००	१८ ५६	२१ १०	२३ २९	१ ४७	४ ०३
२२	६ २३	८ ४१	१० ४५	१२ २७	१३ ५५	१५ २१	१६ ५६	१८ ५२	२१ ०६	२३ २५	१ ४३	३ ५९
२३	६ १९	८ ३७	१० ४१	१२ २३	१३ ५१	१५ १७	१६ ५२	१८ ४८	२१ ०२	२३ २१	१ ३९	३ ५५
२४	६ १५	८ ३३	१० ३७	१२ १९	१३ ४७	१५ १३	१६ ४८	१८ ४४	२० ५८	२३ १७	१ ३५	३ ५१
२५	६ ११	८ २९	१० ३३	१२ १५	१३ ४३	१५ ०९	१६ ४४	१८ ४०	२० ५४	२३ १३	१ ३१	३ ४७
२६	६ ०८	८ २६	१० ३०	१२ १२	१३ ४०	१५ ०६	१६ ४१	१८ ३७	२० ५१	२३ १०	१ २८	३ ४४
२७	६ ०४	८ २२	१० २६	१२ ०८	१३ ३६	१५ ०२	१६ ३७	१८ ३३	२० ४७	२३ ०६	१ २४	३ ४०
२८	६ ००	८ १८	१० २२	१२ ०४	१३ ३२	१४ ५८	१६ ३३	१८ २९	२० ४३	२३ ०२	१ २०	३ ३६
२९	५ ५६	८ १४	१० १८	१२ ००	१३ २८	१४ ५४	१६ २९	१८ २५	२० ३९	२२ ५८	१ १६	३ ३२
३०	५ ५२	८ १०	१० १४	११ ५६	१३ २४	१४ ५०	१६ २५	१८ २२	२० ३५	२२ ५४	१ १२	३ २८

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०६	१० १०	११ ५३	१३ २०	१४ ४६	१६ २२	१८ १७	२० ३१	२२ ५१	१ ०८	३ २५	५ ४४
२	८ ०२	१० ०६	११ ४९	१३ १६	१४ ४२	१६ १८	१८ १३	२० २७	२२ ४७	१ ०४	३ २१	५ ४०
३	७ ५८	१० ०२	११ ४५	१३ १२	१४ ३८	१६ १४	१८ ०९	२० २३	२२ ४३	१ ००	३ १७	५ ३६
४	७ ५४	९ ५८	११ ४१	१३ ०८	१४ ३४	१६ १०	१८ ०५	२० १९	२२ ३९	० ५६	३ १३	५ ३२
५	७ ५०	९ ५४	११ ३७	१३ ०४	१४ ३०	१६ ०६	१८ १	२० १५	२२ ३५	० ५२	३ ०९	५ २८
६	७ ४६	९ ५०	११ ३३	१३ ००	१४ २६	१६ ०२	१७ ५७	२० ११	२२ ३१	० ४८	३ ०५	५ २४
७	७ ४२	९ ४६	११ २९	१२ ५६	१४ २२	१५ ५८	१७ ५३	२० ०७	२२ २७	० ४४	३ ०१	५ २०
८	७ ३९	९ ४३	११ २६	१२ ५३	१४ १९	१५ ५५	१७ ५०	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ५८	५ १७
९	७ ३५	९ ३९	११ २२	१२ ४९	१४ १५	१५ ५१	१७ ४६	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ५४	५ १३
१०	७ ३१	९ ३५	११ १८	१२ ४५	१४ ११	१५ ४७	१७ ४२	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ५०	५ ०९
११	७ २७	९ ३१	११ १४	१२ ४१	१४ ०७	१५ ४३	१७ ३८	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ४६	५ ०५
१२	७ २३	९ २७	११ १०	१२ ३७	१४ ०३	१५ ३९	१७ ३४	१९ ४८	२२ ०८	० २६	२ ४२	५ ०१
१३	७ १९	९ २३	११ ०६	१२ ३३	१३ ५९	१५ ३५	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ ३८	४ ५७
१४	७ १५	९ १९	११ ०२	१२ २९	१३ ५५	१५ ३१	१७ २६	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ ३४	४ ५३
१५	७ ११	९ १५	१० ५८	१२ २५	१३ ५१	१५ २७	१७ २२	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ ३०	४ ४९
१६	७ ०७	९ ११	१० ५४	१२ २१	१३ ४७	१५ २३	१७ १८	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ २६	४ ४५
१७	७ ०३	९ ०७	१० ५०	१२ १७	१३ ४३	१५ १९	१७ १४	१९ २८	२१ ४८	० ०५	२ २२	४ ४१
१८	६ ५९	९ ०३	१० ४६	१२ १३	१३ ३९	१५ १५	१७ १०	१९ २४	२१ ४४	० ०१	२ १८	४ ३७
१९	६ ५५	८ ५९	१० ४२	१२ ०९	१३ ३५	१५ ११	१७ ०६	१९ २०	२१ ४०	२३ ५७	२ १४	४ ३३
२०	६ ५१	८ ५५	१० ३८	१२ ०५	१३ ३१	१५ ०७	१७ ०२	१९ १६	२१ ३६	२३ ५३	२ १०	४ २९
२१	६ ४७	८ ५१	१० ३४	१२ ०१	१३ २७	१५ ०३	१६ ५८	१९ १२	२१ ३२	२३ ४९	२ ०६	४ २५
२२	६ ४३	८ ४७	१० ३०	११ ५७	१३ २३	१४ ५९	१६ ५४	१९ ०८	२१ २८	२३ ४५	२ ०२	४ २१
२३	६ ४०	८ ४४	१० २७	११ ५४	१३ २०	१४ ५६	१६ ५१	१९ ०५	२१ २५	२३ ४२	१ ५९	४ १८
२४	६ ३६	८ ४०	१० २३	११ ५०	१३ १६	१४ ५२	१६ ४७	१९ ०१	२१ २१	२३ ३८	१ ५५	४ १४
२५	६ ३२	८ ३६	१० १९	११ ४६	१३ १२	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ १७	२३ ३४	१ ५१	४ १०
२६	६ २८	८ ३२	१० १५	११ ४२	१३ ०८	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १३	२३ ३०	१ ४७	४ ०६
२७	६ २४	८ २८	१० ११	११ ३८	१३ ०४	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ ०९	२३ २६	१ ४३	४ ०२
२८	६ २०	८ २४	१० ०७	११ ३४	१३ ००	१४ ३६	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०५	२३ २२	१ ३९	३ ५८
२९	६ १७	८ २१	१० ०४	११ ३१	१२ ५७	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०२	२३ १९	१ ३६	३ ५५
३०	६ १३	८ १७	१० ००	११ २७	१२ ५३	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२० ५८	२३ १५	१ ३२	३ ५१
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ ०९	९ ५२	११ २०	१२ ४५	१४ २१	१६ १७	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २४	३ ४४	६ ०१
२	८ ०५	९ ४८	११ १६	१२ ४१	१४ १७	१६ १३	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २०	३ ४०	५ ५७
३	८ ०१	९ ४४	११ १२	१२ ३७	१४ १३	१६ ०९	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ १६	३ ३६	५ ५३
४	७ ५७	९ ४०	११ ०८	१२ ३३	१४ ०९	१६ ०५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १२	३ ३२	५ ४९
५	७ ५३	९ ३६	११ ०४	१२ २९	१४ ०५	१६ ०१	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ ०८	३ २८	५ ४५
६	७ ४९	९ ३२	११ ००	१२ २५	१४ ०१	१५ ५७	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ ०४	३ २४	५ ४१
७	७ ४५	९ २८	१० ५६	१२ २१	१३ ५७	१५ ५३	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ००	३ २०	५ ३७
८	७ ४२	९ २५	१० ५३	१२ १८	१३ ५४	१५ ५०	१८ ०३	२० २३	२२ ४१	० ५७	३ १७	५ ३४
९	७ ३८	९ २१	१० ४९	१२ १४	१३ ५०	१५ ४६	१७ ५९	२० १९	२२ ३७	० ५३	३ १३	५ ३०
१०	७ ३४	९ १७	१० ४५	१२ १०	१३ ४६	१५ ४२	१७ ५५	२० १५	२२ ३३	० ४९	३ ०९	५ २६
११	७ ३०	९ १३	१० ४१	१२ ०६	१३ ४२	१५ ३८	१७ ५१	२० ११	२२ २९	० ४५	३ ०५	५ २२
१२	७ २६	९ ०९	१० ३७	१२ ०२	१३ ३८	१५ ३४	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४१	३ ०१	५ १८
१३	७ २२	९ ०५	१० ३३	११ ५८	१३ ३४	१५ ३०	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ३७	२ ५७	५ १४
१४	७ १८	९ ०१	१० २९	११ ५४	१३ ३०	१५ २६	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३३	२ ५३	५ १०
१५	७ १४	८ ५७	१० २५	११ ५०	१३ २६	१५ २२	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० २९	२ ४९	५ ०६
१६	७ १०	८ ५३	१० २१	११ ४६	१३ २२	१५ १८	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० २५	२ ४५	५ ०२
१७	७ ०६	८ ४९	१० १७	११ ४२	१३ १८	१५ १४	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २१	२ ४१	४ ५८
१८	७ ०२	८ ४५	१० १३	११ ३८	१३ १४	१५ १०	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० १७	२ ३७	४ ५४
१९	६ ५८	८ ४१	१० ०९	११ ३४	१३ १०	१५ ०६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १३	२ ३३	४ ५०
२०	६ ५४	८ ३७	१० ०५	११ ३०	१३ ०६	१५ ०२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० ०९	२ २९	४ ४६
२१	६ ५०	८ ३३	१० ०१	११ २६	१३ ०२	१४ ५८	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ०५	२ २५	४ ४२
२२	६ ४६	८ २९	९ ५७	११ २२	१२ ५८	१४ ५४	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०१	२ २१	४ ३८
२३	६ ४२	८ २५	९ ५३	११ १८	१२ ५४	१४ ५०	१७ ०३	१९ २३	२१ ४१	२३ ५७	२ १७	४ ३४
२४	६ ३८	८ २१	९ ४९	११ १४	१२ ५०	१४ ४६	१६ ५९	१९ १९	२१ ३७	२३ ५३	२ १३	४ ३०
२५	६ ३४	८ १७	९ ४५	११ १०	१२ ४६	१४ ४२	१६ ५५	१९ १५	२१ ३३	२३ ४९	२ ०९	४ २६
२६	६ ३०	८ १३	९ ४१	११ ०६	१२ ४२	१४ ३८	१६ ५१	१९ ११	२१ २९	२३ ४५	२ ०५	४ २२
२७	६ २६	८ ०९	९ ३७	११ ०२	१२ ३८	१४ ३४	१६ ४७	१९ ०७	२१ २५	२३ ४१	२ ०१	४ १८
२८	६ २२	८ ०५	९ ३३	१० ५८	१२ ३४	१४ ३०	१६ ४३	१९ ०३	२१ २१	२३ ३७	१ ५७	४ १४
२९	६ १९	८ ०२	९ ३०	१० ५५	१२ ३१	१४ २७	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३४	१ ५४	४ ११
३०	६ १५	७ ५८	९ २६	१० ५१	१२ २७	१४ २३	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३०	१ ५०	४ ०७
३१	६ ११	७ ५४	९ २२	१० ४७	१२ २३	१४ १९	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ २६	१ ४६	४ ०३

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५०	९ १८	१० ४४	१२ १८	१४ १४	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ २२	१ ४१	३ ५९	६ ०२
२	७ ४६	९ १४	१० ४०	१२ १४	१४ १०	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ १८	१ ३७	३ ५५	५ ५८
३	७ ४२	९ १०	१० ३६	१२ १०	१४ ०६	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १४	१ ३३	३ ५१	५ ५४
४	७ ३८	९ ०६	१० ३२	१२ ०६	१४ ०२	१६ १६	१८ ३५	३० ५३	२३ १०	१ २९	३ ४७	५ ५०
५	७ ३५	९ ०३	१० २९	१२ ०३	१३ ५९	१६ १३	१८ ३२	२० ५०	२३ ०७	१ २६	३ ४४	५ ४७
६	७ ३१	८ ५९	१० २५	११ ५९	१३ ५५	१६ ०९	१८ २८	२० ४६	२३ ०३	१ २२	३ ४०	५ ४३
७	७ २७	८ ५५	१० २१	११ ५५	१३ ५१	१६ ०५	१८ २४	२० ४२	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ३९
८	७ २३	८ ५१	१० १७	११ ५१	१३ ४७	१६ ०१	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ३५
९	७ १९	८ ४७	१० १३	११ ४७	१३ ४३	१५ ५७	१८ १६	२० ३४	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ३१
१०	७ १५	८ ४३	१० ०९	११ ४३	१३ ३९	१५ ५३	१८ १२	२० ३०	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ २७
११	७ ११	८ ३९	१० ०५	११ ३९	१३ ३५	१५ ४९	१८ ०८	२० २६	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ २३
१२	७ ०७	८ ३५	१० ०१	११ ३५	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ १९
१३	७ ०३	८ ३१	९ ५७	११ ३१	१३ २७	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ १५
१४	६ ५९	८ २७	९ ५३	११ २७	१३ २३	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ ११
१५	६ ५५	८ २३	९ ४९	११ २३	१३ १९	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ ०७
१६	६ ५१	८ १९	९ ४५	११ १९	१३ १५	१५ २९	१७ ४८	२० ०६	२२ २३	० ४२	३ ००	५ ०३
१७	६ ४७	८ १५	९ ४१	११ १५	१३ ११	१५ २५	१७ ४४	२० ०२	२२ १९	० ३८	२ ५६	४ ५९
१८	६ ४३	८ ११	९ ३७	११ ११	१३ ०७	१५ २१	१७ ४०	१९ ५८	२२ १५	० ३४	२ ५२	४ ५५
१९	६ ३९	८ ०७	९ ३३	११ ०७	१३ ०३	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ ११	० ३०	२ ४८	४ ५१
२०	६ ३४	८ ०२	९ २८	११ ०२	१२ ५८	१५ १२	१७ ३१	१९ ४९	२२ ०६	० २५	२ ४३	४ ४६
२१	६ ३०	७ ५८	९ २४	१० ५८	१२ ५४	१५ ०८	१७ २७	१९ ४५	२२ ०२	० २१	२ ३९	४ ४२
२२	६ २६	७ ५४	९ २०	१० ५४	१२ ५०	१५ ०४	१७ २३	१९ ४१	२१ ५८	० १७	२ ३५	४ ३८
२३	६ २२	७ ५०	९ १६	१० ५०	१२ ४६	१५ ००	१७ १९	१९ ३७	२१ ५४	० १३	२ ३१	४ ३४
२४	६ १८	७ ४६	९ १२	१० ४६	१२ ४२	१४ ५६	१७ १५	१९ ३३	२१ ५०	० ०९	२ २७	४ ३०
२५	६ १५	७ ४३	९ ०९	१० ४३	१२ ३९	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ४७	० ०६	२ २४	४ २७
२६	६ ११	७ ३९	९ ०५	१० ३९	१२ ३५	१४ ४९	१७ ०८	१९ २६	२१ ४३	० ०२	२ २०	४ २३
२७	६ ०७	७ ३५	९ ०१	१० ३५	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०४	१९ २२	२१ ३९	२३ ५८	२ १६	४ १९
२८	६ ०३	७ ३१	८ ५७	१० ३१	१२ २७	१४ ४१	१७ ००	१९ १८	२१ ३५	२३ ५४	२ १२	४ १५

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्तूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

मि. से.

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर — १०।४८

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से — १२।२२ — १२।२२

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया — -१०।४८

अंतर = १।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

91 आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् उदाहरण २—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६ ।२४ ।४८
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६ ।११ ।२७

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।११ ।१२
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।०२ ।२४
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५ ।४९ ।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११ ।१२ × ५=५५ ।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अत: यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३० ।००
चर पल	— ० ।५६
दिनमान नागपुर	२९ ।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६० ।००
दिनमान	— २९ ।०४
रात्रिमान	३० ।५६

उदाहरण २—मद्रास में २० जून को सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३ ।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८ ।५२, रवि क्रांति २३ ।२६ उत्तर, वेलांतर + १ ।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२ ।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+०० ।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+०० ।३४
अक्षांश १३ ।०५ एवं रवि क्रांति २३ ।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३ ।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।२३ ।१२
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५ ।४५ ।४०
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५ ।४६ ।५४

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।३२ ।०४
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६ ।३३ ।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३ ।१२×५=११५ ।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३० ।००	रात्रिमान—	अहोरात्र	६० ।००
चर पल	+०१ ।५६		दिनमान	— ३१ ।५६
दिनमान मद्रास	३१ ।५६		रात्रिमान	२८ ।०४

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	,,
	६	०९	,,
६-९ का ढाई से गुना किया	६	०९	
	३	०४	३०
इष्टकाल घटी पल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं.	मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।	२०	४५	भा.स्टै.टा.
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	,,
शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
	१४	४०	
	७	२०	३०
(३) इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	,,
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२२	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	४३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०४
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२२	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३४	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११४	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६४
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	९	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११४	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१६	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	२५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द.० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ४२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० १	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	— ०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					क्रांति दक्षिण हो तो धन — उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६
आसनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।८
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+३।४८	+२३।५२
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२
इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०
इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०
इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२
इंगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६
इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८
इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२
उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४
उतरौला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६
ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८
उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०
उदय मण्डलम	तमिलनाडु	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०
उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८
उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६
एचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६
एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८
कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६
कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६
कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२
कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०
कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८
करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८
कन्याकुमारी	तमिलनाडु	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८
कल्पाद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४
करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८
कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८
काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२
कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४
काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४
कांचिपुरम	तमिलनाडु	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
कारगिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।८	—४।४
किशनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।११	—२०।४४	+०।२०
खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
पुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
चाटमशर	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डीग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागरकोविल	तमिलनाडु	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चित्तौड़गढ़	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।४	ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।४	+३०।१२	तलागंग	तलागंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।४	—१९।४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छतरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।४	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।२४	+५४।५६	+७६।०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छबराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजावूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।४
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरुवनन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।४	+१०।५६	तुर-मेघालय	शिलांग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।४
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२८।५६	+४६।०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।४
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।२७	+२३।४	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	दिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।२३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।४	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।४	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजस्थान	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०	पेशावर	प. पाकि.	३४।२	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।४	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२।४	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।२२	—२९।१२	—८।४	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।२६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।४	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	ध्रांगध्रा	सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६	फीरोजाबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।४	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।४	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।१९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।४	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८	वरंगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।४
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।४	—१४।४	[illegible]	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२०	बलिया	उ. प्र.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
डिकाई	यू. पी.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	राजस्थान	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर | दिल्ली से देशान्तर अंतर | नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर | दिल्ली से देशान्तर अंतर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२	रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०	भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।२४	+१५।०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८	भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४	ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०	भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२	लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२	मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८	शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।४	मद्रास	तमिलनाडु	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२	शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०	मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६	शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४	मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।४	—१।४	राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८	मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०	शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४	मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६	श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
बालू घाट	प. दिनाज	२५।१४	८८।४७	+२५।४	+४६।१२	मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४	शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४	संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।४	—२७।४
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	मुजफ्फरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२	सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६	फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।४	सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४	मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४	सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४	मैसूर	कर्नाटक	१२।१९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६	सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बैतुल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८	मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४	सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२	मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२	सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।१२	+२।३२	मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४	सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६	यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।४	+१९।५६	सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।९	—२१।२४	—०।२०
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४	यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४	सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८	यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।४	—१७।२८	+३।३६	सिकन्दराबाद	आ. प्र	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+२२।४	+३३।१२	यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।४	—१७।२८	+ ३।३६	सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बीकानेर	राजस्थान	२८।१२	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०	रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४	सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।४	रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०	सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२	राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६	हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।४	+३।५६
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।१२	—४१।५२	—२०।४८	राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८	हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०	राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०	हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४	रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४	रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०	हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
भरूच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६	रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।४	+१५।५६	हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
भटिन्डा	पंजाब	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—९।४	राजमंड्री	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०	रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६	हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।४	+१।५६
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६	राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०	हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०	हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।४	—२५।२८	—४।२४	राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५	हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
भावनगर	गुजरात	२१।४४	७२।१०	—४२।२०	—२०।१६	रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
वेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।४	—१।३
कानबेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।१७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+११।०	" ९।०	" ३।३०	+४।२०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२९।४	" ०।३३
प्योंगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२३।४	" ०।२२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिजीद्वीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेईचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।२१।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बैंगकाक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।२५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।४पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।२५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।२५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।४ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+२।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।४
काडी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१२पू.	— २१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।४	+०।५
कराची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४०उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।४।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।४।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।२८पू.	+५।२२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+ २५।२२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	" ०।२७
अम्मान	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४।८	" ०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।२उ.	३१।२३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५१पू.	+ ११।५६	" २।०	" ३।३०	— २।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवाल्य	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+ ४।०	" २।०	" ३।३०	—३।२२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।०पू.	+ १४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	" ०।३३
[illegible]	ग्रीस	[illegible]	[illegible]	— २६।४०	" २।०	" ३।३०	[illegible]	" ०।३५
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३०पू.	+ २२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+ ०।२८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+ १६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।१६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वी जर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।२५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।५४द.	१३।१५पू.	— ७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।२५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।५३उ.	१२।२९पू.	— १०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।२९।०	" ०।४८
बान	पश्चिम जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	— ३२।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	— ३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रूसेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	— ४२।३६	+ १।०	— ४।३०	" ४।५१।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	— ५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	— ०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।४।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	— ०।२०	— ०।०	" ५।३०	" ५।९।२६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	— ७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	— ८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२८	" ०।५७
लिस्बन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।०प.	— ३६।४०	— ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।२२द.	६४।४५प.	+ ४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+ ४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।२१।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	— ८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।२६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	— ३७।४	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G M T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस समय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड, घोरा और जुम्ता आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। अब धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घडी से बने पंचांग व इनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी [illegible]

विपल	० घ.	१ घ.	२ घ.	३ घ.	४ घ.	५ घ.	६ घ.	७ घ.	८ घ.	९ घ.	१० घ.	११ घ.	१२ घ.	१३ घ.	१४ घ.	१५ घ.	१६ घ.	१७ घ.	१८ घ.	१९ घ.	२० घ.	२१ घ.	२२ घ.	२३ घ.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३४	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला. ३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	३०

अक्षांश मा. ता.	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	उदय क	उदय मि	अस्त क	अस्त मि	अक्षांश मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सित. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५५		३३	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		५४		३८		५५		३५		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिस. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४				अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७				अक्षांश २८				अक्षांश २९				अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	मा. ता.
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८		४७		२६		४९		२४		५१		२२		५३		२०		५५		१८		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३		४७		३१		४९		२९		५१		२७		५३		२५		५५		२३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७		४७		३५		४८		३३		५०		३२		५२		३०		५४		२८		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१		४५		४०		४७		३८		४९		३६		५०		३५		५२		३३		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६		४३		४४		४५		४३		४६		४१		४८		३९		५०		३८		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग. ४
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४८		४२		४७		४३		४६		४४		४४		४६		४३		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३		३७		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४२		४८		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७		३२		५६		३३		५५		३४		५४		३५		५३		३६		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०		२८	६	०		२८		५९		२९		५८		३०		५७		३१		५६		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३		२२		३		२३	६	२		२३	६	२		२४	६	१		२५	६	०		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६		१७		६		१७		५		१७		५		१८		५		१८		४		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		११		८		११		८		११		८		११		८		११		८		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६		५१		१७		५१		१७		५०		१८		५०		१८		४९		१९		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू. ६
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९		४५		१९		४४		२०		४४		२१		४३		२१		४२		२२		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	१२
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१		३९		२२		३८		२३		३७		२४		३७		२५		३६		२५		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४		३४		२५		३३		२६		३१		२७		३०		२८		२९		२९		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०		२५		३१		२३		३३		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९		२५		३०		२३		३१		२२		३३		२०		३४		१९		३६		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२		२०		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		३९		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४		१७		३६		१५		३८		१३		४०		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७		१४		३९		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०		१२		४२		१०		४४		८		४६		६		४८		४		५०		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३		१०		४५		८		४७		६		४९		४		५१		२		५४		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६		१०		४८		७		५०		५		५२		३		५४		१		५७	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८		१०		५०		७		५२		५		५४		३		५७		१		५९		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०		१०		५२		८		५४		६		५६		३		५९		१	७	१		५९		३		५६		६		५४		८		५१		११		४८		१४	१९
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९		१४		५१		१२		५३		९		५५		७		५८		५	७	०		२		२	५	०		५		५७		७		५५		१०		५३		१२		५०		१५	२४

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३४	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू. ३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै. ५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस. २	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५२	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५३	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२२	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४३	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१२	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के नीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ है और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) सूर्योदय—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो ; चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३० ।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६ ।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) इष्टकाल—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) सूर्य स्पष्ट—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) लग्न सारिणी—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८ ।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुँच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३ ।२५ अथवा १३ ।२५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	से.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३ ।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३ ।२७ + १६ ।०८= २९ ।३५

उपरोक्त २९ ।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९ ।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९ ।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११ ।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चौथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी है, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११ ।३७ से १३ ।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९ ।३७ में से २९ ।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९ ।३५ तक (२९ ।३५ — २९ ।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९ ।०५ लग्न आई ५ ।३ ।४९ ।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४२ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१४	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१४	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अबनबर्ने, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२२	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१४	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३६	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३४	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, [illegible], भोपाल, होशंगाबाद, [illegible], कलकत्ता, जबलपुर, रांची, [illegible], जामनगर, बड़ोदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	१२	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, उतरपुर, [illegible])

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२६	२	३१	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५२	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	४३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	२	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५३	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४५	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (...)
(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

... अक्षांश २८।३८ वर्षादी केतकी अयनांश २४

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	११	११	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद
(२) वृषभ	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद
(३) मिथुन	शूद्र	वायु	मानव
(४) कर्क	ब्राह्मण	वारि	जलचर
(५) सिंह	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर
(६) कन्या	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३				रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५				आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	ऊ	अे	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की	कु	घ	ङ	छ	के	को	हा	ही
वर्ग	सिंह	"	"	मृग	"	"	"	"	गरुड़	"	"	"	"	मृग	"	"	"	"	मार्जार	"	"	"	"	सिंह	मार्जार	"	मेष	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मार्जार	देव	मध्य	आद्य
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	पुष्य-८				आश्लेषा-९				मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२				हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	हु	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	"	"	"	श्वान	"	"	"	"	उंदर	"	"	"	उंदर	श्वान	"	"	"	"	उंदर	"	"	मेष	श्वान	"	उंदर	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
सूर्य	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(७) तुला	शूद्र	वायु	मानव
(८) वृश्चिक	ब्राह्मण	वारि	कीट
(९) धनु	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत
(१०) मकर	वैश्य	भूमि	चत/जल
(११) कुंभ	शूद्र	वायु	मानव
(१२) मीन	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६				अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८				मूल-१९				पू.षा.-२०			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रु	रे	रो	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा
वर्ग	मृग	"	"	"	"	सर्प	"	"	"	"	"	"	"	"	"	मृग	"	"	"	"	उंदर	"	"	सर्प	उंदर	श्वान
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मध्य	मध्य	महिष	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

नक्षत्र	उ.षा.-२१				श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३				शत.-२४				पू.भा.-२५				उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	उंदर	"	सिंह	"	मार्जार	"	"	"	"	"	"	"	"	मेष	"	"	"	"	सर्प	"	"	मेष	सिंह	सर्प	"	"	सिंह	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	नकुल	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
सूर्य	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	वसंत

योग	हर्षण	वज्र	सिद्धि	व्यतिपात	वरीयान	परिघ	शिव	सिद्ध	साध्य	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

षट् वर्ग सारिणी चक्र

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
		७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
		८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
		९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
		१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
		११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
		१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ व में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भोंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

उपसूतिका ज्ञान— प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान— बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान— सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार— सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (बृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग— मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से मुख, तीसरे से भूजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष— सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट— कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष— माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क— प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह— माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।... उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या— माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला— माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक— माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु— माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र ला... या बसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८६ वर्ष।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ— माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होंठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन— माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले बसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का ... मोटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के— विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट— जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति— इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग— बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग— सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे—चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घटय:
मूल नाश:	वंश नाश:	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभ:	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वो:	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घटय:
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	वाह्वो:	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घटय:
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयाव:	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए।

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रमः	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली — अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल — अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल बियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दज्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषना।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानादरुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ट दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐहों फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टाना हां हूं फट् स्वाहा

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३, ४, ९, १०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर, अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यते पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरुशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिंजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षी साज्यनक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माकं ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐ अदितिर्द्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐ अदितायः नमः॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छवत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये नमः॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरभ्ये नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैनः स्याम॥ ॐ भगाय नमः॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐ देवावध्वर्यूक्षागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	मुक्ता, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐ सवित्रे नमः॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशष्ठसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ष्ठ हवे हवे सुहवष्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रष्ठस्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्त्रृतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यष्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमष्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गुराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृंङ्गुराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ष्ठ सी निननवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥	५ सहस्त्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, तैलपात्र कृष्ण, छायापात्र

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी बिहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोबान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है— समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोश्रृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं— वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे— तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में— श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवेद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य— गाय, भैंस का घी

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नैवेद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नैवेद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नैवेद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नैवेद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नैवेद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों से युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ष्ठ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मंगल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में ही तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार को हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर चर	चर स्थिर	चर द्विस्वभाव
स्थिर द्विस्वभाव	द्विस्वभाव द्विस्वभाव	स्थिर स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण**—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश यद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	९	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

विकला	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न— मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्राय: शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न— जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न— जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न— जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न— जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न— जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न— जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न— जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दृष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न— बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न— जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, नास्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न— जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न— जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र

मुद्दा दशा

सू.	[illegible]	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	[illegible]	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन
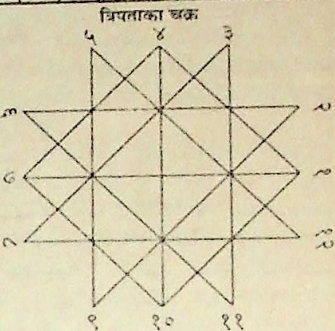
त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हो और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कलत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव,अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	......	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	......	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	......	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊपर	ऊपर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो	अधो	अधो

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, [illegible] वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जूलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१,.३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, [illegible] ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, [illegible], ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, [illegible], ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, [illegible]** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, [illegible], ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष [illegible] के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे [illegible] से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, [illegible], ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, [illegible], ५४, [illegible], ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्म लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अगस्त ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

प्रति विशेष लगाव होता है। नवम्बर ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर **१, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति को एक ही समय स्थान को एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहयता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२\times९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
	०	६	९	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३८	४१	४५	४८	५	५६	५९	३	७	१०
गति	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४८	५१	५५	५९	३	६	११	१४	१७	२१	२५
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	२९	३३	३६	४०	४४	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८
	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	२	६
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	११	१५	१९	२३	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	५८	०	७	११	१६	२०	२४	२९	३३
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१
	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	४
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
	८	१३	१७	२२	२७	३२	३७	४१	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वर्क्ष	६२	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६४	६४
	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१	१५	२०
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वर्क्ष	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६६
	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	४०	४५	५२	५६	१	७
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वर्क्ष	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६८	+
	१२	१८	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५९	५	११	१८	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	+
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	+
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	+

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६० ।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६ ।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५ ।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२ ।०९ को और भयात् १९ ।०३ को गुणा किया (१२ ।०९)×(१९ ।०३) = २३१° ।२७' ।२७" या ३° ।५१' ।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३ ।५१ ।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७ ।०३ ।२० ।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७ ।०७ ।११ ।२७

चन्द्र गति १२ ।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	[illegible]		—	४	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन				चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२	१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६	१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१	१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५	१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—	१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४	१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९	१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३	१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८	१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२	१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
११	०		१	२	२२		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७	१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१	१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६	१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०	१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५	१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९	१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४	१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८	१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३	१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७	१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२	१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६	१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१	१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५	१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—	१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४	१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९	१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३	१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८	१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२	२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७	२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१	२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६	२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०	२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५	२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	[illegible]	[illegible]
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। इस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू	च	मं.	रा	बृ	श	बु	के.	शु
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ	१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ	३४	३	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
घ	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर से शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषडायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेश तथा द्वितीयेश दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वाभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषडायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **"ॐ नमः शिवाय"** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** को ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु—केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)—१ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसारं गोचर फलम्

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैत्य	विजयः	मार्गःगमन	पीड़ाः	सुकृ नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्रा[illegible]	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शत्रु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनिः	बालार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हानि	विजयः	सुलाभं	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मंत्री	दुःशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्मगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्म हानि	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रगल्भा	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया।
शनिः	वन्ध्या।	निर्धना	दंभा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	६-८	६-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	चं.मं.गु.	र.बु.	र.चं.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु. १५°	धनु १५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	वृष ४ से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु १३°	तुला १०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये., रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, म., मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२¼ दिन	१½ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३¼	¼	५	२¼	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति, कला, विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम स्प. (विक्षेप) मध्य मान	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी — चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली [illegible] ललाट-योग होता है। [illegible]

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

शुक्र

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वंशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

चंद्र

आग्नेयां चतुरस्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

गुरु

उ. दाघचतुरस्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरससगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

रवि
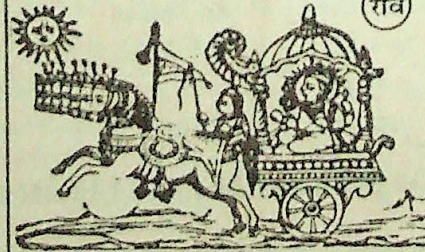
मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कण्हेर
९. वृषभ

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लोहपात्र
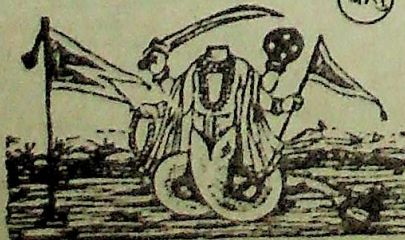
वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवंतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोह
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

शनि

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अभ्रक

राहु
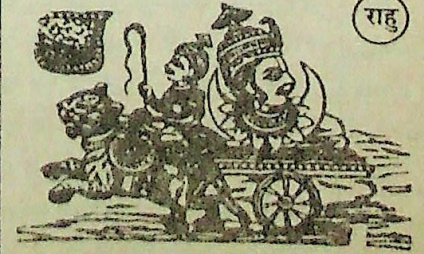
नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

ग्रहाः	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थ प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिध:
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रूग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह
प्रहर	१	४	३	१	१	१
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक

राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी,
गाय, बैल आदि पशु क्रय विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण
और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार
सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ,
स्त्री प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं
बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी,
पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू),
शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार
में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा,
पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म,
वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-
आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि
कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी,
मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को
सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल	श्र.रो.मृ.	अश्विनी	रोहिणी	रेव., अनु.,	रेव. अनु.,	श्रवण
	३ उ.,	पुष्य,	उ.भा.,	अनु., हस्त	अश्वि., पुन.	अश्वि.,	रोहिणी
	पु., अश्विन	अनुराधा	कृति., अश्ले.	कृति., मृग.	पुष्य	पुन., श्रव.	स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

विविध मुहूर्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—"**प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा**" तथा "**पुंसवनवत्**" कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। ***मन्त्र*—ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलत: दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गये हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मू., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मू., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	मुहूर्तोचित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

४. वेध— पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अभि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल— विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाहाक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य— जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि— जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार— लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भटिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त)— रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना— आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष— दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु— जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु— जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु— जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार— जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

नेष्ट रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र— जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र— जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न— हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ट और अष्टम् में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त— विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त— विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती से मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ— कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त— व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण,. देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**— वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**— राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**— वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**— राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**— राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**— राशि चक्र (अवकहडा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**— वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**— अवकहडा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मो के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय: सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तु: कन्या विनाशक: ॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत: प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्ष श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या बृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेंड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्कौ चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थै: क्रूरै: रण्डा च मिश्रितै: ॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति— कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

भाग-१

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्समृतितोऽधिकं यत्॥

↓कन्या	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२२ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.६	२६॥ +६	२६॥ +६
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ २.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +६
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १३४०	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२०	१९ १	१७॥ १.६	१९॥ १.६	१९॥ ३.६
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१६ ३
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२६॥ -१	२६॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	२१॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२२॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२२ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	११ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले.४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा.४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा.१	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १२	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा.३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह.४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखे हैं।

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोगुणैक्यं सर्व शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓ वर →	नक्षत्र चरण	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४
	स्वा.४	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५
	श्र.४	२७	२६	२३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६
	श.४	२५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	२२॥ ३४	१४ ३	१३ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥

कन्या ↓ वर →	नक्षत्र चरण	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
		चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला	चि.२	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२२ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२२ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ६०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १६	७ १३४	१४ ४२
	श.४	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १६	१६ ४
	पू.भा.३	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२१॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	१२॥ ६	१९॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२५॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें हैं। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावे बांये राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा लावे लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

उत्तर
बुध मंगल
पश्चिम — रवि शुक्रवार
पूर्व — सोम शनिवार
दक्षिण
गुरुवार
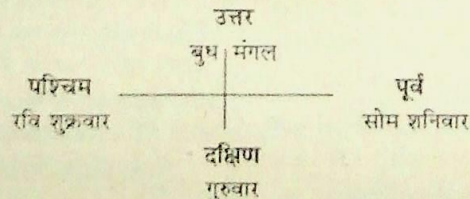
दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास

उत्तर २।१०
ईशान ८।३०
पूर्व १।९
अग्नि ३।११
दक्षिण ५।१३
नैऋत्य ४।१२
पश्चिम ६।१४
वायव्य ७।१५
तिथियां

कालराहु चक्रम्

उत्तर रविवार
ईशान
पूर्व शनिवार
अग्नि शुक्रवार
दक्षिण गुरुवार
नैऋत्य बुधवार
पश्चिम मंगलवार
वायव्य सोमवार
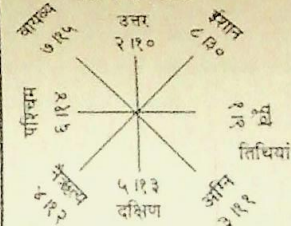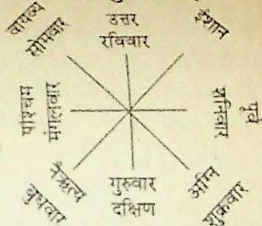
दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा के समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य-चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पू.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग कलम-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये. मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। इसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतारा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	मार्ग.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें घट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमे बाण ५ घट् यश्चसप्तमे रुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषय७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विंशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकार्घटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.गु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपादे			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा. श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	४	४	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहलीक्षय	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठा

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	आग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म रन वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतल है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।६।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्व रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

अथ बीज बोजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्दा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे हणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्यादद्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्मे के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि. । गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च वृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त— अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त— चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त— तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना— उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त— विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त— अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन. हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. मं. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. च. गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र. गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु. प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआँ पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. मं. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू. म. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषोपि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु. गु. शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआँ व ट्यूबेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. चं. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु. गु. श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. म. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र, स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. च. बु गु शु	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकदमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में भूमण्डल मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अत: मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम: — किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

कराग्रे वसते लक्ष्मी: कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्द: प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अत: प्रात: काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा — राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा — कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा — वाद-विवाद, मुकदमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा — साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा — धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा — नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा — गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार— जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल— नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय— गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार— लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार— चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास— पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय— ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वार शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय— मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध— ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल— कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें पोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १२, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार— इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२— जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो

३— जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि का पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४— जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
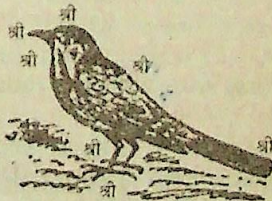
चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रतनारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखों में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिलः-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो वह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मृदु उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पृष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकदमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा—प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।
२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।
३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गड़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।
२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा	वस्तु	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३	धान्य	७७
भरणी	५	प्रीति	१२	कनक	१००
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७	ज्वार	१३३
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९	मूंग	४१
मृगशिर	४	शोभन	३६	चणा	३५
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७	झोना	७५
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८	तोरी	७७
पुष्य	३६	धृति	४४	तेल	३९
अश्लेषा	३६	शूल	१३	घृत	९९
मघा	१५	गंड	२५	खाण्ड	९९
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७	गुड़	४७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२	शक्कर	१०१
हस्त	१८	व्याघात	२५	कपास	१२९
चित्रा	२५	हर्षण	२५	रुई	४४
स्वाति	१४	वज्र	१४	कांस्य	३७
विशाखा	२४	सिद्धि	२२	वस्त्र	१०९
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३	स्वर्ण	९६
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९	हल्दी	७३
मूल	१८	परिधि	१५	चंदन	१८७
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३	चांदी	८१
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९	मिर्च	६८
श्रवण	२५	साध्य	१२	पित्तल	९९
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५	जौ	५०७
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२	कस्तू.	१३४
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्म	१३		
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७		
रेवती	२८	वैधृति	२६		

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा ही २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., भ.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पुरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।

प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुंआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकदमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।

१४. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुआं बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।

४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकदमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।

११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झुठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकदमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।

३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विश्वावसु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुंआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. पद्म

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कुआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगड़े, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सांपों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सुअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
केंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

| बर्फ गिरती देखना | शत्रु वृद्धि हो | कोई फल दे | पुत्र हो, लाभ हो |

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बाह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनीं कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण अरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का इलाज भी होता है जैसे:—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए । पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हां गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमच्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्यं न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योंगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

संवत् विक्रम २०६१ (सन् २००४-२००५ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखकर्ता:- विश्वबन्धु शर्मा S/o श्री ओंकार प्रसाद दैवज्ञ, श्री ओंकाराश्रम ज्योतिष भवन,
21/22, ब्रह्मनान, पो.--हापुड़ (उ.प्र.) 245101 फोन-0122-2312238, 9837279823

सम्वत् २०६१ विक्रमी में राजा रवि, मंत्री भौम है। दोनों आपस में मित्र हैं। सस्येश-शुक्र, धान्येश-बुध, रसेश-शनि, मेघेश-चन्द्र, नीरसेश-गुरु, फलेश-चन्द्र, धनेश-गुरु, दुर्गेश-चन्द्र दशाधिकारी हैं। जिनका फल शुक्र के सस्येश होने से बादल अच्छी वर्षा करेंगे। धान्येश बुध होने से धान्यों में विशेष उत्पादन होगा। शनिदेव के रसेश होने से जल की खेंच होगी। प्रजा को पीड़ा होगी। मेघेश चन्द्र कभी अच्छी वर्षा तो कभी वर्षा की कमी करेंगे। जिससे अच्छी फसल होगी। नीरसेश गुरु देव हैं जो प्रजा में प्रीति बढ़ाने में सहयोग करेंगे। फलेष चन्द्र शुभ फलकारक है। धनेश गुरु वैश्य वृत्तिकारक होने से व्यापारी-बन्धुओं के लिए हितकारक वर्ष रहेगा। दुर्गेश चन्द्र होने से जनता विलाषिता प्रिय हो जाएगी। निष्कर्ष रूप में महत्वपूर्ण पद क्रूर व पाप ग्रहों के अधिपत्य में होने से जनता पर कड़ाई से शासन चलाया जाएगा। हेमलम्ब नामक सम्वत्सर होने से देश-विदेश में क्षो[illegible] घटनाएं घटित होंगी। रोहिणी निवास तट पर होने से वर्षा की प्रचुरता होगी।

अथ भैरव भवानी सम्वाद सम्वत् २०६१ की झलक

भैरव जी का प्रश्न- जय जय माता अम्बिका बन्दौ बारम्बार।
हाथ जोड़ कर पूछता, इकसठ का सब सार॥

भवानी माता का उत्तर- सुनजे भैरव ध्यान से, माता कहे विचार।
राजा मंत्री देखता, हो उत्पात अपार॥
पर भृगु जी सस्येश है, वर्षा पति द्विजराज।
सुख संपति संचार हो, जग में मंगल काज॥
अधिक मास श्रावण बना, रवि आगे कुजराय।
पवन चक्र जग में चले, वर्षा स्वल्प दिखाय॥
व्यापारां घटबढ़ घणी, रस कस तेजी जान।
कहिक पूर्व देश में करसी कुछेक हान॥
दशाधिकारी योग से, फल सब उत्तम होय।
बंसीधर का कथन है, भजन करो सब कोय॥

चैत्र शुक्ला-माह में प्रथम पक्ष जो सम्वत् २०६० में रहा था तथा इस माह में पांच रविवार व पांच ही सोमवार है। साथ ही वर्ष के प्रथम दिन रविवार होने से अकाशीय कार्उसिल में भगवान् सूर्य (भास्कर) देव को राजा माना जाता है। जिसका प्रभाव लाल रंग की वस्तुओं पर व तेलवाना की वस्तुओं पर विशेष दिखेगा। सरसों, तेल, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी, तिल, अरण्डी आदि तिलहनों के भावों में प्रारंभिक रुख विशेष महत्वपूर्ण होगा। चन्द्रदर्शन सोमवारी होने से सफेद रंग की वस्तुओं में खास तौर से चीनी, रुई, सूत, कपास, चावल, साबूदाना, उरद दाल, कागज, हीरा, मोती, अमचूर, ईख आदि में मंदी का रुख बनेगा। वायदा मार्केटों में इस पक्ष में ता. २४ मार्च की चालू चाल ता. २६ तक चलेगी। इस पक्ष में मेष राशि में बुध के प्रभाव से ता. २६ मार्च से हरे रंग की वस्तुओं में विशेष रूप से मंदी का वातावरण बनेगा। सोने में भाव स्थिर प्रायः रहेंगे। मोती, जवाहरात, गेहूं, चना, जौ के भावों में तेजी किन्तु दूध, गुड़, खाण्ड, रस, घी के भावों में ९ दिन में मंदी का वातावरण बनेगा। आगे वायदा व शेयर मार्केटों में ता. २६ मार्च चैत्र शुदी पंचमी को बने ऊंचे या नीचे भाव आगामी दिन में जिस ओर क्रास होंगे, उसी ओर चाल चल पड़ेगी। चैत्र शुक्ल पक्ष में ता. २५ मार्च को चतुर्थी तिथि की वृद्धि होने से हल्दी, सोना, तेल, वायदा मार्केटों में ता. २४ तक चली चाल के पलटने पर यह पलट ता. ३० मार्च तक जारी रहेगी। यह चाल शेयर मार्केटों में विशेष महत्वपूर्ण होगी। आगे चैत्र शुदी नवमी ता. ३० मार्च की रात्री में ५४ घटी ६ पल पर रेवती में भगवान् भास्कर के पदार्पण के बाद से चौदह दिन में ही मूंग, तुवर, उड़द, चावल, रुई, लहसुन, नमक, सब्जी, रवा, सुगन्धित पदार्थ, फल-फूल, चांदी, मोती व जल से उत्पन्न वस्तुएं तेज होंगी। वायदा मार्केटों में ता.३१ मार्च से विशेष चाल चलेगी। खासतौर से सरसों, सोया तेल, अरण्डी, मूंगफली, पीपरमेंट, तेल के भाव टूटेंगे। काली मिर्च, बड़ी इलायची, लौंग, जीरा, हल्दी, दालचीनी, जायफल, कलौंजी, सुपारी, पोस्तदाना, अनारदाना, कत्था, बबूल, पीपल के भावों में ३१ मार्च की चालू चाल १४ दिन तक जारी रहेगी।

वैशाख-माह में पांच मंगलवारों का होना व्यापारिक वस्तुओं के भावों में विशेष उथल-पुथल के साथ तेजी का योग बनेगा। माह के प्रारंभ में सुपीरियर लाईन चलेगी जो बाद में इन्फीरियर लाईन में बदल जाएगी। माह के प्रारंभ में वक्री बुध वैशाख बदी प्रतिपदा ता. ६ अप्रैल को होकर बदी पंचमी की प्रातः बुधास्त हो जाएंगे जो बाद में वैशाख सुदी छठ को पूर्व दिशा में उदय होंगे। और ता. २ मई को बुध देव मार्गी होंगे। इस बुधास्त की अवधि में सोना, चांदी, रुई, गुड़, चीनी, कौपर, गेहूं, चना, जौ, सरसों तेल के हाजिर व वायदा मार्केटों में विशेष तूफानी चाल देंगे। अलग-अलग वस्तुओं में अलग-अलग प्रभावकारी होंगे। रुई, कपास में मंदी की चाल बनने की संभावना बलवती है। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड के भावों में विशेष तेजी होगी। तथा गेहूं, जौ, चना के भावों में मंदी की चाल चलेगी। सरसों तेल के भावों में तूफानी मंदी का ट्रेन्ड रहने की संभावना है। ऊपर लिखे चांसों में एक विशेष नोट है कि अगर ता.९ व १० अप्रैल को ता. ८ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब मंदी और ऊंचे बने भाव से बढ़े तब तेजी की चाल ता. १३ अप्रैल तक चलेगी। वैशाख बदी नवमी को २८ घटी ५ पल पर मेष संक्रांति लगेगी जो विशेष महत्वपूर्ण चाल देगी। खासतौर से सोना, चांदी, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन तेल, शेयर, मशीनरी, लोहा, कॉफी, चाय के भावों में विशेष तेजी होगी। तथापि अगर वैशाख बदी दशमी को नवमी के बने नीचे भाव जिस वस्तु में टूटें और बदी दशमी से दो दिन मार्केट मंदे रहें, उन वस्तुओं में विशेष मंदी की लाईन पन्द्रह दिन की बनेगी। माह में विशेष रूप से वैशाख सुदी सप्तमी तक हल्दी, केसर व पीले रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख बनेगा। तथापि अगर किसी वस्तु में चैत्र सुदी से मंदी चली आ रही हो तो तब उसी पीली वस्तु में मंदी की लाईन चलेगी। वैशाख शुक्ल पक्ष में इन्फीरियर लाईन का जोर रहने से प्रारंभ की चाल ही बदस्तूर ज्यों की त्यों अन्त तक चलती रहेगी। बाद ता. २७ अप्रैल की शाम को मिथुन राशि में मंगल देव का पदार्पण होगा। तब से जीरा, धनियां, सौंफ, जायफल, अजवायन, तूंतिया व किराना की वस्तुओं में विशेष मंदी की चाल चलने की धारणा है। **जेहि पखवारे तिथि बढ़े और बढ़कर फिर घट जाए। तेहि पखवारे सब वस्तु, घटि-घटि घट-घट जाए॥**

इस योग से भी वैशाख सुदी पक्ष के अन्त में मंदी का विशेष बोलवाला होने की धारणा है। एक अन्य योग के अनुसार वैशाख सुदी पंचमी ता. २४ अप्रैल को पुरवा हवा चले तो अनाज खरीद करना लाभप्रद रहेगा। यह पुरवा हवा सूर्यास्त के समय हो तब विशेष तेजी समझनी चाहिए। माह में सूर्यदेव ता.१२ से १६ अप्रैल तक वर्गोत्तम में रहेंगे, जिसके प्रभाव से सूर्य के अधिकार की वस्तुएं विशेष तेजी पकड़ सकती हैं। वैशाख बदी द्वादशी रविवार को २८ घटी पर गुरु देव मार्गी होंगे जो रुई, चांदी, चावल, घी, हल्दी, सोना में अगर पहले ही तेजी आ जाय तब आगे दो माह में ही मंदी करेंगे। किन्तु अगर पहले से मंदी जिस वस्तु में चली आ रही हो तब मंदी की चाल तेजी में पलट जाएगी। साथ ही लाल रंग तथा पीले रंग की वस्तुओं में भी यह विचार ध्यान में रखना चाहिए। वायदा मार्केटों में वैशाख सुदी पंचमी को प्रातः समय १०० तेजी तो २० मंदी लगानी लाभ देगी। यहां पर विशेष टिप्स है कि अगर ता. २४ अप्रैल सन् २००४ को ता. २३ अप्रैल के बने ऊंचे भाव से जिस वायदा मार्केट में नीचा खुलकर भाव बढ़ेगा तब तेजी अवश्य फलने की धारणा है। तथापि तेजी भाव कटने के बाद भी घटे भावों में लगानी अधिक लाभप्रद होगी।

ज्येष्ठ-माह में पांच बुधवार व पांच ही गुरुवार हैं, जिसके प्रभाव से मंदी का रुख रहेगा। शेयर-मार्केटों में तेजी के उछाले आयेंगे। माह में इन्फीरियर लाईन चलती रहेगी। माह के प्रारंभ से पहले वैशाख सुदी पूर्णिमा को खग्रास चन्द्रग्रहण ता. ४ मई को लगेगा। यह चन्द्रग्रहण लाल रंग की वस्तुओं में विशेष चाल देगा। ग्रहण का प्रभाव सफेद रंग वस्तुएं, चांदी, सूत, रुई, कपास, चावल, चीनी, तिल, कपूर के भावों में मंदी होगी। तथापि जिन सफेद रंग की वस्तुओं में पहले से तेजी चली आ रही हो उनमें अगर ता. ५ मई को ता. ४ मई के बने ऊंचे भाव कटें तब तेजी उन्हीं वस्तुओं के भावों में एक पक्षीय जानकर व्यापार रखना चाहिए। आगे ता. ६ मई को १७ घटी १४ पल पर मिथुन राशि पर शुक्र देव का पदार्पण होगा जो सफेद रंग की वस्तुओं में घमासान चाल देंगे। जिस सफेद वस्तु के भाव ता. ७ मई को ता. ६ के बने ऊंचे भाव से बढ़

जाए और ऊंचा ही भाव बन्द हो तब तेजी की श्योर चाल समझते हुए व्यापार करें। विपरीत में विपरीत चाल ही चलेगी। गुड़, चीनी, खाण्ड, शीरा, रुई, कपास, सूत, जूट, ग्वार, करडी, रिलायंस, आर.सी.एफ.टी शेयर में उपरोक्त बातें विशेष विचारणीय हैं। यहां की चालू चाल १८ मई ज्येष्ठ बदी चतुर्दशी तक चलेगी। ज्येष्ठ बदी एकादशी को २१ घटी ३१ पल पर वृष संक्रांति के प्रभाव से धान्यादि के भावों में तेजी, जो ता. १५ मई से चलकर आखिर तक रहेगी। यहां पर जौ, जई, चावल, धान, चना, गेहूं के भाव तेजी पर विशेष रूप से जाएंगे। नोट-जिन सफेद रंग की वस्तु या धातुओं के भावों में ता. १५ मई से मंदी चालू होगी उनमें मंदी का ट्रेन्ड ज्येष्ठ माह के अन्त तक जारी रहेगा। और आगे आषाढ़ बदी अष्टमी तक या पहले ही अच्छी मंदी चलेगी। विपरीत में विपरीत चाल चलती रहेगी। ज्येष्ठ शुक्ला तीज को रात्रि में भरणी में बुध के प्रभाव से वायदा मार्केटों में विशेष तेजी का ट्रेन्ड ता. २४ मई से बनेगा, जो ता. २८ तक ही अच्छी चाल देगा। ता.२८ मई को वक्री होकर वृष राशि में शुक्रदेव पदार्पण करेंगे। शुक्र के अधिकार की वस्तुओं में विशेष चाल तेजी या मंदी की चलेगी। रिलायंस शेयर में आज की चाल विशेष महत्वपूर्ण होगी। ता. २ जून को वृष राशि में बुधदेव का पदार्पण होगा। तब से मंदी की प्रक्रिया चलेगी। विशेष रूप से लाल, सफेद व हरे रंग की वस्तुएं विशेष चाल पकड़ेंगी। गुड़, लाल मिर्च, उड़द, बादाम, छुआरा, नारियल, सरसों, ग्वार, रुई, सूत, कपास, चांदी, चावल, वस्त्र, रिफायनरी शेयर, वस्त्रोद्योग शेयर तथा तेल उद्योग के शेयरों में विशेष चाल चलेगी। जिन वस्तुओं में ता.३ जून को २ जून के बने नीचे भाव कटें तब उन्हीं वस्तुओं में मंदी का विचार बनाकर व्यापार रखना चाहिए। यहां की चालू चाल आषाढ़ बदी षष्ठी ता. ८ जून तक चलने की धारणा है।

ज्येष्ठ माह के लक्ष्मी चांस-ता. ६ मई को १२ बजकर ३२ मिनट पर चांदी, रुई, खल, बिनौला, पीपरमेंट, सोना, गुड़, तेल, चना, ग्वार में दोतरफा गली लगाना। ता. १९ मई को प्रातः समय पर चांदी, गुड़, रुई, पाट, कपास, वायदा में तेजी लगाना। तथापि आज जिन वस्तुओं में ता. १८ के बने नीचे भाव कटेंगे तब मंदी अवश्य लगानी चाहिए।

आषाढ़-माह के प्रारंभ में प्रतिपदा तिथि का क्षय होना विशेष मंदी का द्योतक है। साथ ही पांच शुक्रवारों का होना मार्केटों में मंदी का ट्रेन्ड बनाएगा। शेयर मार्केट में तेजी का रुख। शुक्ल पक्ष में ता. २१ जून को तृतीया तिथि की वृद्धि तथा बाद में ता. २९ जून को द्वादशी तिथि क्षय के प्रभाव से यह अवधि हाजिर व वायदा मार्केटों पर विशेष मंदी का प्रभाव। चालू दिन व अगले दिन का रुख अवश्य ध्यान में रखते हुए व्यापार करना चाहिए। माह में बदी तीज को शुक्रास्त का होना चांदी, सोना में तेजी करेगा तथा बदी पंचमी ता. ७ जून को मार्केट मंदी में रहे तब मंदी ही जानना। बदी पंचमी ता. ७ जून की रात्रि में बुधास्त का होना सोना, चांदी, तांबा, गेहूं, जौ, चना, मटर, रुई, सूत, कपास, जूट, पाट, बारदाना, सन में विशेष मंदी। उड़द, मूंग, मोंठ, अरहर, मसूर में मंदी का साधारण रुख बनेगा। बदी द्वादशी सोमवार को प्रातः कर्क राशि में मंगल के प्रवेश के प्रभाव से ता. १४ जून को आयरन, स्टील, काली मिर्च, लौंग, बड़ी इलायची, दाख, सुपारी में विशेष उथल-पुथल मचेगी। बाद रुख मंदी का ता. १५ जून से बनेगा। मिथुन संक्रांति का प्रभाव सरसों, तेल, सोयाबीन, अलसी, अरण्डी, मूंगफली में मंदी समाप्त होकर तेजी। ता. १६ जून से ३ दिन में मार्केट जिस वस्तु में मंदी में रहेगा। उस वस्तु में निश्चित मंदी ता. ८ जुलाई तक होगी। ता. १६ जुलाई की प्रातः १०० तेजी तो ४० मंदी भी लगानी चाहिए। ता. २० जून की शाम को शनि देव के अस्त से तूफानी घट-बढ़ के साथ मंदी भी आयरन व स्टील शेयर्स मार्केट में होगी। शेष काली मिर्च, लौंग, पीपल, जीरा के भावों में तेजी चलने लगेगी। काश. ता. २१ जून से ५ दिन तेजी न चले तब मंदी का ही रुख। ता. ९ जून की प्रातः बुधोदय के प्रभाव से गुड़, चीनी, जूट, पाट, बारदाना, सोना-चांदी, सोया तेल, सरसों में दोतरफा गली लगानी चाहिए।

प्रथम श्रावण-प्रथम श्रावण में सुपीरियर लाईन के प्रभाव से बुध के अधिकार की हरे रंग की वस्तुएं एकदम से या तो उछाला लेंगी या जोरदार रूप में टूटेंगी। धारणा घट-बढ़ के साथ तेजी की है। माह में पांच शनिवारों का होना साधारण तेजी का रुख। तथापि भयंकर तेजी होगी। बदी दोज रविवार को तृतीया तिथि का क्षय होना तेजी का द्योतक है। बदी नवमी शनिवार की शाम व रात्रि में अश्लेषा नक्षत्र में मंगल व बुध देव पदार्पण से सरसों, तिल, तेल, अलसी, मूंगफली आदि तिलहनों तथा लालमिर्च, केसर, बादाम, छुआरा, उड़द, मूंग, मोंठ के भावों में तेजी की चाल बनेगी। पीपरमेंट, हाजिर व वायदा में कल से जो भी चाल चलेगी वही एक सप्ताह अवश्य चलेगी। तथापि सावधानी हेतु ता. १२ जुलाई से ३ दिन का रुख भी महत्वपूर्ण होगा। ता. १६ जुलाई की प्रातः कर्क राशि में सूर्य संक्रांति के संचरण से तेल, गुड़ के भावों में आगामी दो माह में ही अच्छी तेजी की चाल चलेगी। चांदी, दूध, दही, रिफायनरी शेयर्स व पेट्रोलियम शेयर्स में द्रव्य पदार्थ, पीपरमेंट तेल, घी के भावों में मंदी होगी। सुदी तीज मंगलवारी ता. २० जुलाई को होने से सिंह राशि के अधिकार की वस्तु सौंठ, अदरक, केसर में अच्छी तेजी की चाल। साथ ही सिंहे बुध के प्रभाव से रुई, सूत, सूती वस्त्र, खट्टे पदार्थ के भावों में वृद्धि होगी। आज ही रात्रि में पुष्य में सूर्य के प्रभाव से तिल, तेल, शराब, गुड़, खाण्ड, चीनी, हल्दी, हींग, सुपारी, सौंठ, गुग्गल, ग्वार, लाख, सन, ऊनी वस्त्र, चांदी के भावों में तेजी। यह चाल पन्द्रह दिन चलेगी। आगे २१ जुलाई की रात्रि में मृगशिर में शुक्र के संचरण से मीठे पदार्थ, धान्य व रसादि पदार्थों के भावों में तेजी १२ दिन में ही अच्छी चलेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में तेजी विशेष होगी। चना में मंदी रहेगी। आगे ता. २६ जुलाई की रात्रि में शनिदेव के उदय होने से गेहूं, जौ, चावल के भावों में तेजी होगी। ता. ३१ को ३ बजकर १९ मिनट पर मिथुन राशि में शुक्रदेव के प्रभाव से आगामी २५ या २६ दिन में रुई, सूत, कपास, चावल के भावों में मंदी होगी। आज ही रात्रि में सिंह राशि में मंगल के संचरण से सोना, चांदी, तांबा, लाल रंग के द्रव्यों के भावों में आगामी ४० दिनों में अच्छी तेजी चलेगी। माह में ता. १६ जुलाई की प्रातः चांदी, सोना में मंदी १०० तो २० तेजी लगाना। इसी प्रकार गुड़, तेल, सरसों, ग्वार में १०० तेजी तो २० मंदी लगाना।

द्वितीय श्रावण-माह में सुपीरियर लाईन सुदी षष्ठी तक चलती रहेगी। बाद सुदी अष्टमी ता. २३ अगस्त से इन्फीरियर लाईन चलने लगेगी। अतः जिन वस्तुओं में अब तक ता. २१ अगस्त शनिवार तक तेजी चली आ रही हो उन वस्तुओं का स्टॉक अवश्य बेच लेना। चावल, देशी घी, गुड़, चीनी, खाण्ड का स्टॉक अवश्य बाहर करना चाहिए। इस माह के पांच रविवार लाल रंग की वस्तुओं तथा तिलहनों के भावों में तेजी कारक हैं। अधिकांश मार्केटों का रुख तेजी की ओर रहा करता है। अतः प्रथम पक्ष में विशेष तेजी की चाल चलेगी। शेयर मार्केटों में विपरीत प्रभाव करेगा। ता.२ अगस्त की शाम आश्लेषायां रवि के प्रभाव से आगामी एक पखवारे में अलसी, तिल, तेल, चना, अफीम, नील व मद्य पदार्थ, गुड़, खाण्ड, चीनी के भावों में तेजी के उछाले आएंगे। ता. ८ अगस्त रविवार की प्रातः वक्री बुध से सोना, चांदी के भावों में आगामी २० दिन में तेजी जोरदार करेगा। यहां पर वायदा मार्केटों में तेजी मंदी लगानी लाभप्रद होगी। आगे ता. १६ अगस्त को शाम ४ बजे लगभग सिंह संक्रांति का लगना हल्दी, सोना, मूंग व पीले रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी करेगा। और साथ ही गुड़, चना, चमड़ा, सौंठ, अदरक, केसर के भावों में भी तेजी की चाल चलेगी। धान्यों के भावों में मंदी का रुख रहने की धारणा है। मंगलवारी चन्द्रदर्शन ता. १७ अगस्त को होने से आज बने ऊंचे व नीचे भाव सरसों, गुड़, सोया तेल, मूंगफली, अलसी, ग्वार, सोना, चांदी, पीपरमेंट तेल के वायदा मार्केटों में जिस ओर ता.१८ अगस्त को काटकर मार्केट चलेगा, तब वही लाईन २० अगस्त तक चल पड़ेगी। यहां पर उक्त वस्तुओं के साथ-साथ वायदा वस्तु के हर मार्केट में तेजी-मंदी नजराने लगाने लाभप्र[illegible] होंगे। बाद नागपंचमी शनिवारी होने के प्रभाव से ता. २७ अगस्त द्वितीया श्रावण सुदी द्वादशी तक इकतरफा पलट होकर मार्केट चलेगा। अतः जो वस्तुएं ता. २० अगस्त तक तेज रहें तब उनमें मंदी ता. २१ से २७ तक चलेगी। अन्त में, ता. ३० अगस्त को १५ घटी ४० पल पर पू.फा. नक्षत्र में सूर्य के संचरण से चांदी, कपास, कपड़ा, चावल, गेहूं, सरसों, तिल, ज्वार, जीरा, देशी घी के भावों में तेजी का बिगुल आगामी १४ दिन में बनेगा। ता. २७ अगस्त को कन्या में गुरु के असर से गेहूं, घी, ज्वार, मूंग, मोंठ, तेल तेज होंगे।

भाद्रपद-माह में इन्फीरियर लाईन का प्रभाव तेजी का रहेगा। साथ ही पांच मंगलवारों से युक्त यह माह तेजी का ट्रेन्ड बनाएगा। फिर भी कुछ वस्तुएं मंदी की ओर चलेंगी। माह में ३१अगस्त को रात्रि में बुधोदय होगा जिसका प्रभाव जोरदार चाल देने वाला होगा। यहां पर गुड़, खाण्ड, सोना, पाट, हल्दी, सरसों, चना के वायदा बाजारों में दोतरफा गली या नजराने फलेंगे। ता. १ सितम्बर की प्रातः कर्क राशि में शुक्र के संचरण से आगे २५ दिन के अन्तर्गत रुई, कपास, सूत के भावों में बढ़ोत्तरी होगी। ता. ५ सितम्बर को कर्क राशि में शनि देव के संचरण से अनाजों के भावों में भारी तेजी होगी। सोना, हल्दी आदि पीले रंग की

वस्तुएं जिस ओर तीन दिन चले तब उसी ओर लाईन पकड़कर लाभ उठाएं। ता. ८ सितम्बर को गुरु देव शाम के समय अस्त होने के बाद धान्यों में मंदी का विशेष प्रभाव। ता. ११ सितम्बर को शाम उ.फा. में मंगल से गुड़, खाण्ड में तेजी होगी। जो आगे १० दिन में ही अच्छा प्रभाव बनाएगी। इसी तेजी में स्टॉक बेचना विशेष लाभप्रद होगा। बाद ता. १३ सितम्बर को प्रातः उ.फा. नक्षत्र में सूर्य देव के पदार्पण के बाद सोना, चांदी, घी, तेल, सरसों, सोयाबीन, सूरजमुखी, अरण्डी, लोहा, सीमेंट, पीपरमेंट, सुपारी, मूंग, बांस, सूत, अफीम, शराब के भावों में तेजी की चाल। शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा को रात्रि में ४७ घटी २१ पल पर पू.फा. में बुध देव प्रवेश करेंगे। गेहूं, जौ, चना, मटर, ग्वार, ज्वार के भावों में मंदी, इस पक्ष में रहने की धारणा है। अगले दिन शाम ४ बजे के बाद कन्या संक्रांति के प्रभाव से मटर, ग्वार, गेहूं, मूंग, चावल, ज्वार, राई, कत्था, गोंद, कतीरा, धनियां, मेहंदी, पिस्ता आदि वस्तुएं तेज होंगी। सरसों आदि तिलहनों में मंदी होगी। यहां पर यह अवश्य ध्यान रखें कि सितम्बर माह में ता. ८ से १६ के बीच बने उच्चतम तथा न्यूनतम भाव अत्यधिक महत्वपूर्ण होंगे। जिस वस्तु में उक्त अवधि के बीच बने उच्चतम भाव से ता. १७ सितम्बर को या बाद में मार्केट बढ़े तब उसमें अवश्य तेजी बनेगी। ता. २० सितम्बर की प्रातः बुधास्त का होना लम्बी मंदी की लाईन बनाएगा। गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, कपास, गेहूं, जौ, चना, मटर, सोना-चांदी, जूट, पाट, बारदाना में मंदी तथा सरसों, तिल तेल, पीपरमेंट में दोतरफा चाल देगा। यहां इन्हीं वस्तुओं के वायदा मार्केटों में ता. २० सितम्बर को १२ बजे ५० मंदी तो १० तेजी भी लगाना लाभप्रद होगा। आगे ता. २२ सितम्बर की रात्रि में कन्या राशि में मंगलदेव का प्रवेश तिलहनों, सोना-चांदी, हल्दी, मूंग, मोंठ, गुड़, खाण्ड, चीनी व लाल रंग की वस्तुओं के भावों में विशेष मंदी की चाल देंगे। गेहूं, चना में तेजी का रुख रहने की धारणा है। धान्यों में गिरावट होगी। ता. २५ सितम्बर को व्यापार पति बुध भी कन्या राशि में प्रविष्ट होंगे। जो अपना प्रभाव ता. २७ सितम्बर से दिखाएंगे। सोना, खाण्ड में विशेष चाल देंगे। ता.२७ को ता. २६ के ऊंचे या नीचे भाव जिस ओर कटेंगे तब उसी ओर चाल एक सप्ताह की रहेगी। सुदी पूर्णिमा को २४ घटी पर सिंहे शुक्र के प्रभाव से सोना में तेजी की चाल चलेगी।

आश्विन-माह में ता. ५ अक्टूबर तक इन्फीरियर लाईन चलकर ता. ६ अक्टूबर से सुपीरियर लाईन चालू हो जाएगी। जिसके प्रभाव से शेयर बाजारों तथा वायदा मार्केटों की चाल एकदम से पलटेगी। माह में पांच बुधवार व पांच ही गुरुवार होंगे। जो सार रूप में मंदी का प्रभुत्व अधिकांश वस्तुओं में करेंगे। बुध अस्त अवस्था में चलते रहेंगे। जो मंदी को ही बढ़ावा देने वाले सिद्ध होंगे। बदी पक्ष में नवमी तिथि की वृद्धि ता. ८ अक्टूबर को होगी। यह वृद्धि मंदी को ही प्रोत्साहन देगी। बदनी मार्केटों में हर बढ़े भाव बेचान बोलते हुए लाभ उठाना चाहिए। बदी छठ की रात्री में गुरुदेव का उदय होना पीले रंग की वस्तुओं में चाल पलटेगा। पीले रंग की वस्तुओं के वायदा व्यापारों में नजराने लगाने लाभप्रद होंगे। ता. ३० सितम्बर से २ अक्टूबर तक सूर्य वर्गोत्तम में रहने से तिलहनों के वायदा मार्केटों में तूफानी चाल बनेगी। ता. १० अक्टूबर रविवार आश्विन बदी एकादशी को चित्रा नक्षत्र में सूर्य देव का संचरण करना गेहूं, चना, कपास, रुई, अरहर, सूत, केसर, लाख व चपड़ा में तेजीकारक है। यह तेजी आगामी १४ दिनों तक चलेगी। बदी त्रयोदशी मंगलवार को तुला राशि में बुध के प्रभाव से किराने की वस्तुओं के भावों में मंदी होगी। धान्यों में साधारण तेजी होगी। सुदी दोज को शुक्रवारी चन्द्रदर्शन प्रथम तेजी करके बाद मंदी कारक ता. १६ अक्टूबर से होगा। बाद ता. १६ अक्टूबर की रात्रि में तुला संक्रांति के प्रभाव से रुई, सिल्क, अरहर, गेहूं, धान, चावल, सूती वस्त्र, खोपरा, पोस्तादाना, साबूदाना में तेजी का रुख बनेगा। शेयर मार्केट में जोरदार तेजी होगी। नोट-अगर ता. १८ अक्टूबर को ता. १५ अक्टूबर के बने नीचे भाव टूटें तब मंदी ही आगे चलेगी।

ता. १४ अक्टूबर से १९ अक्टूबर तक सूर्य देव के वर्गोत्तम अवधि में विशेष तेजी या विशेष मंदी बनेगी। धारणा वायदा मार्केटों में तेजी की है। आगे ता. २२ अक्टूबर को चित्रा में मंगल से चावल, गेहूं, सोना-चांदी, तांबा आदि धातुएं तेजी पर जाएंगी। किराना में जीरा, धनियां, इमली, अमचूर, दाख, सुपारी, गोला में नरमी बनेगी जो १२ दिन में चलेगी। ता २४ अक्टूबर को स्वाती में सूर्य गुड़, खाण्ड, तेल, सरसों, अलसी, मूंगफली, जीरा, धनियां, सुपारी, लालमिर्च में मंदी की चाल देंगे। ता. २६ अक्टूबर की प्रातः पश्चिम दिशा में बुधोदय होगा जो रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में तेजीकारक होगा। जूट, पाट, सन, हैसियन, शेयर मार्केट में जोरदार चाल चलेगी। यहां पर ता. २६ की प्रातः दोतरफा गली वायदा मार्केटों में लगानी लाभप्रद होगी। शनिदेव की दृष्टि कन्या राशि में बैठे सूर्य, मंगल, गुरु और बुध पर ता. ११ अक्टूबर तक रहेगी। बाद सूर्य, मंगल व गुरु पर ता. १२ अक्टूबर से १६ तक रहेगी। अतः ता. २९ सितम्बर से तीन दिन में जो भी पीली या लाल रंग की वस्तुएं तेज रहें उनमें मोटी तेजी ता. १६ अक्टूबर तक होगी। हरे रंग की वस्तुएं ता.११ अक्टूबर तक ही तेज होंगी। काले रंग की वस्तुओं में जोरदार मंदी होने की धारणा है। माह के अंत में पुष्य के प्रथम चरण में शनिदेव का प्रवेश होना रुई, कपास, शक्कर, रस, नमक व तेलों के भावों में तेजी करेगा। पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण जोरदार घट-बढ़ मात्र कारक होगा। लाल रंग की वस्तु ही विशेष चाल पकड़ेंगी।

कार्तिक-माह में पांच शुक्रवार का होना सफेद रंग की वस्तुओं में विशेष चाल देंगे। माह के आरंभ में तीज को वृश्चिक में बुध व चतुर्थी को तुला राशि में मंगल प्रविष्ट होकर ता. ४ नवंबर कार्तिक बदी सप्तमी गुरुवार को मंगल उदय से लाल रंग की वस्तुओं के भावों में आगे विशेष मंदी चलेगी। बदी एकादशी सोमवार को १२ बजे लगभग शनिदेव वक्री होंगे। तब से सफेद व काले रंग की वस्तुएं विशेष चाल से चलेंगी। धारणा चांदी, कपूर, पीपरमेंट तेल, रुई, कपास, लोहा, लौंग, ग्वार, कालीमिर्च में विशेष चाल चलने की है। शेयर मार्केटों में भी विशेष उठा-पटक होगी। यहां पर धारणा विशेष रूप से तेजी की है तथापि ता. ८ नवंबर से ५ दिन में जिस वस्तु में भाव मंदे रहें उसमें तेजी न मानना। गुड़, खाण्ड में मंदी। ता. १२ नवंबर को प्रातः काल ज्येष्ठा में बुध तथा दोपहर में चित्रा में शुक्रदेव प्रविष्ट होंगे। आज ही दीपावली शुक्रवारी भी है। चावल, गुड़, घी के भावों में तेजी होगी। वर्षा की खेंच होगी और आगे २० से २४ दिन में गेहूं, तिल, तेल व रुई के भाव तेज होंगे। ता. १५ नवंबर को वृश्चिक संक्रांति के प्रभाव से गुड़, खाण्ड, शक्कर, लोहा, लाख, अलसी, सोयाबीन, पीली सरसों, कंगुनी, पारा, सुपारी के भावों में तेजी होगी। चावलों में मंदी। साथ में १६ नवंबर से ३ दिन में जो भी वस्तु तेज रहे वह ही वस्तु तेजी में रहेगी। ता. १७ नवंबर की शाम तुला राशि में शुक्र के प्रभाव से रुई, कपास, खल, बिनौला, कपूर, चांदी, ग्वार, गुड़ में तेजी होगी। ता. २३ नवंबर की रात्रि में धनु राशि में बुध के प्रभाव से ता. २४ नवंबर से वायदा मार्केटों में जो चाल चलेगी वह ता. २६ तक चलकर पलट जाएगी। चावल, धान के भावों में जोरदार मंदी। ता. ५ नवंबर को ता. ४ को चली चाल के खिलाफ गली लगाना। ता. ८ नवंबर को १२ बजे लगभग दोतरफा गली लगाना। ता. १६ नवंबर की शाम को भी दोतरफा गली लगाना।

मार्गशीर्ष-माह में पांच शनिवार व पांच ही रविवार हैं। जिनके प्रभाव से तेजी की जोरदार लाईन भी बनेगी। माह में प्रथम पक्ष में तृतीया तिथि का बढ़ना तथा शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा तिथि का क्षय तेजी की लाईन देंगे। माह में बदी चतुर्थी को प्रातः वक्री बुध से खुश्क मेवा, बादाम, काजू, पिस्ता, खुमानी, मुनक्का, अखरोट, चिरौंजी आदि तथा फलों के भावों में तेजी। ता.२ दिसम्बर को दोपहर में ज्येष्ठा नक्षत्र पर सूर्यदेव का होना सोना, चांदी, धान्य, चावल, सरसों, रुई के भावो में तेजी १५ दिन में होगी। ता. ५ दिसम्बर की रात्रि में बुधास्त के प्रभाव से रुई, कपास, बिनौला, खल, गुड़, चीनी, खाण्ड, गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, मोंठ, सोना-चांदी, तांबा आदि धातुओं के भावों में तेजी होगी। सफेद रंग की वस्तुएं विशेष तेजी पर ता. १६ दिसम्बर तक चलने की धारणा है। बाद ता. १७ दिसम्बर से वही चाल चलेगी जिस ओर ता. १७ को पिछले मंगल के ऊंचे या नीचे भाव जिस ओर कटेंगे तब उसी ओर मार्केट का रुख समझ लेना। और ता. १८ को भी १७ के भाव ऊंचे कटें तब तेजी जानना। विपरीत में विपरीत चाल चलेगी। रुई खरीदना, गेहूं-चना-मेंथा बढ़े भावों में बेचना। ता. २० दिसम्बर को अगर आज १ बजकर ३१ मिनट तक पिछले गुरुवार के नीचे बने भाव कटें तब मंदी का चांस अवश्य ही आगे उसी वस्तु में चल पड़ेगा। यह बात शेयरों पर भी पूर्ण लाभकारी सिद्ध होगी। इससे पहले ता.१५ दिसम्बर मार्गशीर्ष सुदी चतुर्थी बुधवार को शाम के बाद धनु संक्रांति के प्रभाव से शेयर, आलू, रबड़ व रबड़ से बने पदार्थ, पीले वस्त्र, अस्त्र, बादाम आदि मेवा, गंधक, हाथी दांत से बने सामान के भावों में वृद्धि होगी। सरसों, तिल, तेल अलसी, मूंगफली व तिलहनों के भावों में मंदी होगी। आलू तेज रहने पर भी स्टॉक न करें। देशी घी, सोना-चांदी के भावों में गिरावट चलेगी। गुड़ में मंदी का रुख। ता. १६ को प्रातः बुधोदय होगा जो बुधास्त की तेजी की वस्तुओं में तेजी देकर मंदी करेगा। ता. १६ दिसम्बर की रात्रि में वृश्चिक राशि में मंगल के संचरण से रुई, बिनौला, कपास, पीपरमेंट, उड़द व द्रव्य पदार्थों के भावों में तेजी चलेगी जो लगभग १५ दिन चलेगी। माह में ता. ३० नवम्बर, ६ दिसम्बर एवं १५ दिसम्बर को दोतरफा गली लगाना।

पौष-माह में इन्फीरियर लाईन चलेगी। पौष बदी पक्ष में मंदी तो पौष सुदी पक्ष में तेजी का प्रभाव। हर मंगलवार को मार्केटों में चाल पलटेगी।

संक्रांति पौष सुदी पंचमी जो कि तेजीकारक होगी। माह में लाईन चलने पर नये भाव २८ दिसम्बर, ४ जनवरी, ६ जनवरी, १२ जनवरी, १८ जनवरी को बनेंगे। सूर्यदेव के अधिकार की वस्तुएं तेज होंगी। पौष बदी अष्टमी को सूर्यास्त के बाद धनु राशि में शुक्र तथा नवमी ता. ५ जनवरी २००५ के शाम को धनु में बुध देव के संचरण के बाद भयंकर मंदी की चाल रुई, कपास, सूत, सूती वस्त्रों, कपूर, पीपरमेंट, गुड़, खाण्ड, चीनी में चलेगी। विशेष वायदा रिमार्क है कि ता. ७ जनवरी शुक्रवार को बन्द समय पर जिन वायदा वस्तुओं में तेजी रहेगी वही वस्तुएं आगे तेजी पर जाएंगी। किन्तु जिन वस्तुओं के भावों में मंदी रहे और ता. ८ जनवरी को ता. ७ के बने नीचे भाव भी टूटें उन्हें बेधड़क बेचकर आगामी तीन दिन में ही विशेष लाभ मिलेगा। ता. १० जनवरी पौष बदी अमावस्या को उ.षा. नक्षत्र में सूर्य के प्रभाव से तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, सींगदाना के भावों में विशेष तेजी का प्रभाव पड़ेगा। ता. १३ जनवरी मकर संक्रांति से गुड़, खाण्ड, शक्कर, रस पदार्थों के भावों में मंदी। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, मसूर, उड़द में तेजी। नोट-अगर किसी वस्तु में ता. १३ के बने नीचे भाव ता. १४ को टूट जाए तब मंदी। ता. १४ जनवरी को प्रातः वक्री अवस्था में मिथुन राशि में शनिदेव का वक्री होना लोहा, सीमेंट, काले रंग की धातु, शेयर मार्केटों में उड़द, तिल काले व काले रंग के पदार्थों में विशेष उलट-पुलट करेंगे। ता. १४ व १५ जनवरी में जिस ओर वस्तुमात्र में जो भी रुख रहेगा वही रुख जनवरी माह में चलता रहेगा। पौष सुदी पूर्णिमा की रात्री में बुध देव का अस्त होना गेहूं, जौ, चना, देशी घी, उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, सोना-चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु, गुड़, खाण्ड, चीनी, शक्कर, रुई, सूत, कपास में लम्बी लाईन मंदी को देगा। एक माह तक तेजी का कोई योग नहीं है। ता.२५ जनवरी को पिछली ता.२१ जनवरी के बने नीचे भाव से ऊंचा खुलकर जिस वायदा वस्तु में भाव टूटेंगे, तब उनमें भयंकर मंदी का श्री गणेश होगा। साथ ही आज के बने नीचे भाव जिस मार्केट के (चाहे वह हाजिर हो या वायदा) हों उससे ता. २६ को टूट जाएं तब मंदी की धारणा बनाकर लाभ उठाना।

माघ-माह में पांच बुध व पांच ही गुरुवारों का होना विशेष चाल देने वाला होगा। मार्केटों में मंदी। प्रथम पक्ष में तिथि क्षय तथा शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि घोर मंदी को सूचक है। शनि देव तमाम माह में मिथुन राशि पर वक्री अवस्था में घूमेंगे। साथ ही बुधास्त तमाम माह रहेगा। बदी प्रतिपदा को १५ घटी पर मकर राशि में बुध के प्रभाव से विशेष मंदी की चाल अन्नादि के भावों के साथ गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी आदि धातु तथा हरे रंग की वस्तुओं के भावों में होगी। बदी तीज की रात्रि में मकर राशि में शुक्र के प्रभाव से चांदी, चावल, तिल, किराना वस्तुओं के भावों में मंदी का प्रभाव तमाम पक्ष में रहेगा। साथ ही रिलायंस व टैक्सटाइल शेयर व पीपरमेंट व पीपरमेंट तेल के भाव जोरदार मंदी में रहेंगे। नोट-जो वस्तु ता. २१ जन. को तेज रहे और ता. २८ के बने ऊंचे भाव भी कट जाएं तब तेजी ही जानते हुए व्यापार करना चाहिए। माघ बदी दसमी को १३ घटी पर गुरुदेव वक्री होंगे,जो हल्दी, सोना, मूंग, चना दाल व पीले रंग की वस्तुओं के भावों में मंदीकारक होंगे। विशेष-अगर ता. ४ फरवरी को बने ऊंचे भाव से ता. ५ फरवरी को मार्केट बढ़े, तब तेजी १०० तो विपरीत में २० मंदी भी लगाना लाभप्रद होगा।

ता. ५ फरवरी को धनिष्ठा में सूर्य देव के संचरण से विशेष चाल चलेगी जो मूंग, मसूर, नील व तिलहनों के भावों में प्रभावकारी रहेगी। धारणा तेजी की है। ता. ९ फरवरी सुदी प्रतिपदा को धनिष्ठा में बुध के प्रभाव से वायदा वस्तुओं में ध्यान रखें कि ता. ९ फरवरी को पिछले शनिवार के बने ऊंचे भाव कटें तब तेजी और नीचे भाव कटने पर मंदी का व्यापार एक सप्ताह तक करना लाभप्रद होगा। साथ ही जिस वस्तु में ता. ९ को पिछले शनिवार के नीचे भाव टूटें, साथ ही ता. १० फरवरी को ९ के बने नीचे भाव भी टूट जाएं तब मंदी की चाल ही जानना। सुदी पंचमी रविवार को शाम २१ घटी पर कुंभे बुध तथा शनिवार को शाम २७ घटी लगभग कुंभ संक्रांति के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, मटर, गुड़, खाण्ड, सरसों में मंदी होगी। जूट, पाट, बारदाना, सन में विशेष मंदी आने पर स्टॉक में हाथ डालना लाभप्रद होगा। घी देशी का स्टॉक १४ दिन की मंदी में करना। माह में ता. २६ जनवरी की प्रातः १०० मंदी तो २५ तेजी लगाना। ता. २४ जनवरी को दोतरफा गली अवश्य लगाना।

फाल्गुन-माह में पांच शुक्रवारों का होना क्षय पदार्थों में विशेष मंदी का चांस देगा। अतः गुड़, खाण्ड में विशेष मंदी होगी। कम्प्यूटर व साफ्टवेयर शेयरों में विशेष तेजी के योग समय-समय पर बनेंगे। अतः घटे भावों में लिवाली लाभ देगी। बदी दसमी का क्षय प्रथम पक्ष में मंदी को इंगित करता है। द्वितीय पक्ष में द्वादशी तिथि की वृद्धि भी मंदी का ही बोलबाला रखेगी। अतः उछाले में बेचान करना व्यापारिक वस्तुओं में लाभकारी होगा। माह में जीरा, धनियां का स्टॉक किया जा सकता है। ता. २५ फरवरी से १ मार्च तक पिछली चाल ही चलती रहने की धारणा के बाद ता. १ मार्च की शाम को मीने बुध व रात्रि में बुधोदय क्रमशः होंगे। यहां पर उड़द, मूंग, मोठ, अरहर, मसूर आदि दालों व हरे रंग के पदार्थ व वस्तुएं तेज होने की संभावना है। तथापि आगे दो दिन का रुख विशेष महत्वपूर्ण है। ता. ४ मार्च को दोपहर को पू.भा. नक्षत्र में सूर्य देव के प्रभाव से सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, गुग्गल, पीपला मूल, जीरा, धनियां के भावों में १४ दिन में तेजी की चाल चलेगी। जिन वस्तुओं में दोतरफा ग्रह स्थिति बनी हो उनमें तीन दिन का रुख महत्वपूर्ण होगा। बदी नवमी को दसमी तिथि का क्षय वायदा वस्तुओं में मंदी का प्रभाव बनाएगा। ता. ७ मार्च को उ.षा. में मंगल तीन सप्ताह के लिए धान्य, गुड़, घी देशी, नमक व क्षारीय पदार्थों के भावों में तेजी करेगा। ता. ११ मार्च की प्रातः मकर में मंगल के प्रभाव से सभी प्रकार के धान्यों में मंदी होगी। घी, तेलों में तेजी होगी। रुई में ३ दिन में मंदी आकर बाद में तेजी होगी। सुदी चतुर्थी को मीनेऽर्क शाम को संचरित से सुगन्धित पदार्थ, हीरा, औषधीय पदार्थ, मोम, मोती, सीप, सरसों, तिल, तेल, अलसी, अरण्डी के भावों में तेजी का प्रभाव बनेगा। विशेष-अगर ता. ८ से १४ मार्च के बीच बने उच्चतम भाव से मार्केट ता. १५ मार्च को या बाद में बढ़ें तब तेजी की चाल ता. २५ मार्च तक चलती रहेगी। बदी एकादशी ता. २१ मार्च को रात्रि में बुधास्त तथा मीन राशि में शुक्र के संचरण से गुड़, खाण्ड, चीनी, सोना-चांदी, उड़द, मूंग, मोठ, मटर, जीरा, धनियां, पिस्ता, रुई, कपास, खल, बिनौला के भावों में तेजी की चाल चलेगी। यहां पर जोरदार तेजी होने की धारणा है। विशेष-माह में ता. १ मार्च को १२ बजकर ३० मिनट पर सोना, चांदी, गुड़, सरसों, पाट, अरण्डी, निकिल, हल्दी, सोया तेल, वायदा में दोतरफा गली लगाना लाभप्रद होगा। ता. २१ मार्च १ बजे लगभग की दोतरफा गली लगाना।

चैत्र-यह पक्ष शनिवार व रविवार के प्रभुत्व में रहेगा। बुध अस्त रहते हुए चैत्र बदी एकादशी ता. ६ अप्रैल को प्रातः समय उदय हो जाएंगे। जो तेजी का प्रभाव गुड़, खाण्ड, चीनी, रुई, सूत, कपास, बिनौला व खल, सोना-चांदी, तांबा, पीतल व धातुओं के रुख में रहेगा। विशेष-माह में ता. २८ मार्च को पिछली ता. २४ मार्च के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़े, तब खरीदकर व्यापार करना और तेजी लगाना लाभप्रद होगा। सरसों, सोया के वायदा बाजारों पर ता. २८ मार्च को ता.२६ के बने ऊंचे या नीचे भाव जिस ओर कटेंगे तब उसी ओर व्यापार करना लाभप्रद होगा। धारणा मंदी की है। ता. ३१ मार्च चैत्र बदी षष्ठी की प्रातः रेवती में सूर्य के संचरण से तुवर, मूंग, उड़द, चावल, लहसुन, रुई, लाख, सब्जी, मोती, जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थ, रत्न, फूल, फल, सुगन्धित पदार्थों के भावों में आगामी १४ दिन तेजी के रहेंगे। ता. २ अप्रैल चैत्र बदी अष्टमी की रात्रि में पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण में सूर्य के संचरण से विशेष चना, गेहूं, रुई, अलसी, जौ, कपास, सूत, सन के भावों में तेजी होगी। चैत्र बदी द्वादशी को त्रयोदशी तिथि का क्षय होने से अगर ता. २ अप्रैल के बने ऊंचे भाव किसी वायदा में कटें तब तेजी आगामी पांच दिन चलेगी। ता. ६ अप्रैल को बुधोदय के प्रभाव से भारी उथल-पुथल मार्केटों में होंगी। कुछ नरमी व कुछ वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। यहां पर ता. ६ अप्रैल ११ बजे दोतरफा गली लगाना। इसके पूर्व ता. ३१ मार्च की प्रातः भी दोतरफा गली वायदा मार्केटों में लगानी चाहिए।

पाठकों की समस्याएं और ज्योतिषीय समाधान

ज्योतिषाचार्य आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, (ज्योतिष विशारद, ज्योतिष वाचस्पति, डोलीट मानद) हस्तरेखा यंत्र विशेषज्ञ, रत्न सलाहकार (अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त एवं नेपाल राष्ट्र द्वारा सम्मानित), करौन्दी, पो.-सरॉव (नटवार), रोहतास, बिहार-802218. दूरभाष-06185-246480, 260073

संसार में समय को सर्वोपरि शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये शक्तियां प्रायः बनती और बदलती रहती हैं। पर एक मात्र काल ही ऐसी शक्ति है जिसका कभी बिनाश नहीं होता है। पर उसका प्रभाव प्रत्येक नर-नारी पर अलग-अलग पड़ता है। इस परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। उसी समय परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन में आए भूचाल से मनुष्य टूटा सा, हरा सा, हताश, परेशान, अनेक विडम्बनाओं से दुखी रहता है। तथा लाचार होकर शांति के खोज में इधर-उधर भटकने लगता है। ऐसे ही अनेक समस्याओं से ग्रस्त पाठकों की समस्याओं का समाधान लिखने का प्रयास कर रहा हूं। मेरे इस प्रयास से किसी भी पाठक को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना प्रयास सार्थक समझूंगा।

1. क्या अपने जीवन में तनाव, धार, कष्ट अनुभव कर रहें हैं?

तनाव, परेशानी, दुख-सुख यह तो मानव जीवन में आए क्षण-प्रतिक्षण, परिवर्तन का स्वरूप है। यदि स्त्री-पुरुष इन अवस्थाओं को लेकर हर पल इसी में डूबा रहे कि मैं सबसे बड़ा दुखी हूं, मेरे जैसा कोई व्यक्ति कष्ट में नहीं है, तो वह शनैः-शनैः स्वतः ही बोझिल, निराश और उदास जीवन की ओर उन्मुख हो जाता है। और स्वयं की योग्यताओं का हनन करता चला जाता है। आप स्वयं को प्रसन्नचित बनाएं। आप प्रयास करने पर भी खुशगवार नहीं बना पा रहे हों तो कुछ प्रयोग इस प्रकार करें-प्रातः काल उठकर दो किलोमीटर जोर-जोर से पैदल चलें खाली पैर। साथ ही घर आते ही नित्य क्रिया से निवृत्त होकर अश्वगन्धा चूर्ण तथा ब्राह्मी चूर्ण 2-2 ग्राम खाली पेट शुद्ध जल से सेवन कर तत्काल स्नान कर, सफेद आसन पर बैठकर रुद्राक्ष माला से 'ॐ जूं सः' (अपना नाम लेकर) पालय-पालय सः जूं ॐ मंत्र का जाप 11 माला नियमित करना चाहिए। साथ ही पारद शिवलिंग दर्शन-पूजन अपने घर में करते रहें। संभव हो तो श्रीयंत्र युक्त नवरत्न लॉकेट और चिकना स्फटीक माला, नवग्रह बीज मंत्र से सवालाख प्राण-प्रतिष्ठा युक्त किसी भी दिन को धारण करें।

2. आप किसी शिक्षा प्रतियोगिता में प्रयास करते-करते थक चुके हैं? निराश मत होइए।

आप छोटा या बड़ा अपनी योग्यता के अनुसार बार-बार प्रयास करते-करते थक चुके हैं। आप सफलता से सदैव ही वंचित रहे, आप निराश होने से बचें, सतत् प्रयास जारी रखें और कुछ उपाय इस प्रकार करें-प्रातः काल उठकर, नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, अश्वगंधा, शंखपुष्पी चूर्ण दोनों मिलाकर तीन ग्राम गौ दूध के साथ खाली पेट सेवन कर स्नान वगैरह करके, विद्या की देवी सरस्वती की अराधना कर, पारद शिवलिंग चांदी की कटोरी में रखकर नियमित 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जाप पांच माला नियमित करें। साथ ही गला में किसी रविवार को नवरत्न लॉकेट रुद्राक्ष माला के साथ विद्या वृद्धि सरस्वती कवच लॉकेट धारण करें तो शिक्षा-परीक्षा में सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

3. क्या आपका हृदय अनियंत्रित अथवा खतरे में है?

आज के भाग-दौड़ में हृदय से संबंधित समस्याएं दिनों-दिन बढ़ती जा रही हैं। हृदय में खराबी आने से पहले अनिद्रा, रक्तचाप, मानव शरीर पर प्रस्फुटित होने लगती है। ये लक्षण हृदय रोग के प्रारंभ का पहला संकेत है। ये बिमारी स्त्री-पुरुषों को असमय ही जर्जर, बूढ़ा, कमजोर और मृत्यु के समीप खड़ा कर देती है। इस बिमारी से ग्रस्त व्यक्ति के लिए अपना पूरा जीवन जीना तो दूर की बात है, वह अपने शरीर को इधर-उधर नहीं कर पाता। बिस्तर इनका साथी और औषधियां इनका भोजन बन जाती हैं। कहीं आप भी ऐसे जीवन की ओर अग्रसर तो नहीं हो रहे हैं। प्रायः यह बिमारी सूर्य, चन्द्रमा और मंगल के कारण होती है। जन्म पत्रिका में ये ग्रह छठा, आठवां, बारहवां अथवा धनभाव में शत्रुग्रही या नीच राशि में अथवा हथेलियों में विराजमान हृदय रेखा छिन्न-भिन्न जंजीराकार होने के साथ ही चन्द्रमा पर्वत पुषित हो तो यह रोग मानव को अवश्य पकड़ लेता है। इससे मुक्ति के लिए आप प्रातःकाल तीन किलोमीटर पैदल चलें, खाली पैर। और प्रातःकाल शंखपुष्पी, अश्वगंधा 100-100 ग्राम चूर्ण तथा अर्जुन चूर्ण 200 ग्राम मिलाकर प्रातःकाल 4 ग्राम सुबह-शाम खाली पेट सेवन करें। साथ ही योग्य चिकित्सक से जांच पड़ताल कराते रहें। स्नान वगैरह से निवृत्त होकर पारद शिवलिंग पवित्र जगह पर रखकर गौदूध अथवा गंगाजल में कुश डालकर योग्य विद्वान के द्वारा इक्कीस दिन तक लगातार रुद्राभिषेक करावें एवं चैत्र नवरात्रों में दुर्गासंपुट पाठ रोगान शेषानपहंसि मंत्र से पाठ करवा दें। स्वयं लाल आसन पर बैठकर रक्त चंदन के माला से-नामपाहरू दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट। लोचन निज पद जन्त्रित जाहिं प्राण केहि बाट॥ मंत्र का जप तीन माला नियमित करें। साथ ही महामृत्युंजय मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा युक्त श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट, चिकना रुद्राक्षमाला तथा स्पेशल स्वर्ण धातु में नवरत्न लॉकेट अवश्य धारण करें, आरोग्य प्राप्त होगा।

4. क्या विवाह के पश्चात दाम्पत्य जीवन में नीरसता आ गयी है?

विवाह के पश्चात जो उमंग, उत्साह पति-पत्नी के मध्य देखने को मिलता है वह कुछ ही समय में कम होने लगे। तनाव, झगड़ा, वैचारिक मतभेद, पारिवारिक कलह, दाम्पत्य जीवन में बिडम्बना बनकर दृष्टिगोचर होने लगे या पारिवारिक जीवन दिखावे के रूप में तो चलता है लेकिन आंतरिक रूप से उनमें आपस में कोई प्रेम या लगाव की अनुभूति नहीं रह जाती है। या अलगाव की स्थिति पैदा हो जाती है। दाम्पत्य जीवन अचानक ही बिखर जाता है। यदि आपके मध्य भी इस प्रकार से रसहीनता आती जा रही है तो आप यह समझें कि आपकी जन्म पत्रिका में सूर्य सातवां भाव में अथवा इस भाव में राहु अथवा सातवां-आठवां भाव में मंगल शनि दोष कृत निश्चित है। अथवा हथेलियों में सूर्य-शुक्र, चन्द्रमा दोषकृत होते है साथ ही विवाह रेखा पर बिन्दु क्रास या विवाह रेखा टेढ़ा-मेढ़ा हो ऐसी स्थिति में आप नवारण मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठायुक्त स्पेशल नवरत्न लॉकेट, मोतीमाला, त्रिपुर सुंदरी, गायत्री कवच यंत्र लॉकेट तथा श्री हनुमत कवच लॉकेट एक साथ धारण कर किसी योग्य विद्वान से गौदूध से नमक-चमक रुद्राभिषेक सात दिन तक लगातार करावें। यदि ऐसा संभव नहीं हो सके तो श्री राम रक्षास्त्रोत तथा आदित्य हृदय स्त्रोत नियमित करें तो दाम्पत्य जीवन की नीरसता दूर होकर मधुरता प्राप्त होती है।

5. संतान उत्पत्ति में बाधा एवं गर्भ धारण में भी परेशानी है। क्या करें?

जन्म पत्रिका में शुक्र निर्बल होने से तथा चन्द्रमा भी दोषकृत होने से जहां पुरुषों में प्रबल वीर्य दोष होता है अर्थात् वीर्य में शुक्र नहीं बनता। वहीं स्त्रियों में मासिक श्राव अनियमित होता है तथा बच्चादानी के अंदर एवं डीम्ब ग्रन्थियों में नालिकाएं पूर्ण रूप से विकसित नहीं होती जिसके कारण स्त्री-पुरुष माता-पिता कहलाने के हक से वंचित रह जाते हैं। आज के विकसित मेडिकल साइंस भी इस रोग के सामने नतमस्तक हैं। ऐसे हजारों दम्पति इस परेशानी से मुक्ति के लिए हमारे जैसे कई ज्योतिषियों एवं चिकित्सकों के पास दौड़ते हैं परन्तु वस्तु स्थिति में कोई सुधार दृष्टिगोचर नहीं होता है। मैंने अपने शोधकाल में जो निष्कर्ष पाया है, इस रोग पर सफलता पाने के लिए वह इस प्रकार है-पुरुष अपनी तर्जनी अंगुली में शुद्ध हीरा सवारत्ती गुरुवार को धारण करें, साथ ही पुत्र संजीवनी कवच यंत्र भी धारण करें तथा स्पेशल नवरत्न लॉकेट स्फटिक माला के साथ शुक्रवार को धारण करें। साथ ही नब्बे दिन तक कुस्माकर रस 15 ग्राम, स्वर्णवागेश्वर रस 15 ग्राम, 60 ग्राम अश्वगंधा चूर्ण में खूब बुककर मिला लें तथा 60 पुड़िया दवा बनाकर सुबह-शाम 50-50 ग्राम मलाई के साथ सेवन करें। दिनभर में गौदूध 2 किलो सेवन करें। मांस-मछली, मादक पदार्थ सेवन न करें। किसी योग्य विद्वान से पारद शिवलिंग रखकर सवा माह तक रुद्राभिषेक गौदूध से करावें। सवा माह के बाद त्रियंम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग नासिक में हरिवंश पुराण श्रवण करें। अवश्य पिता कहलाने का अधिकार भगवान कृष्ण की कृपा से आप प्राप्त कर सकते है। जिन माताओं को उपरोक्त दोष हो वो माता स्वर्ण धातु में नवरत्न लॉकेट मोती माला के साथ किसी सोमवार को धारण, श्री संतान गोपाल कवच यंत्र की पूजा-अर्चना अवश्य करें। साथ ही अशोक चूर्ण

180 ग्राम, मकरध्वज 30 ग्राम, कुस्माकर रस 10 ग्राम कूट पीसकर तीनों दवा मिलाकर अच्छी तरह अलग-अलग बुक लें और 180 पुड़ियां बनाकर सुबह शाम गौदुध से सेवन करें। साथ ही अशोकारिष्ट दवा 3-3 ढक्कन सुबह-शाम सेवन करें।

6. पुत्र अथवा पुत्री के विवाह में अनर्गल बाधा आ रही हो तो?

विवाह एक पवित्र बंधन है। विवाह हो जाने के बाद ही स्त्री-पुरुषों का जीवन परिपक्व एवं सफल होता है। आज के भागदौड़ में अधिकतर माता-पिता पुत्र अथवा पुत्री के विवाह को लेकर काफी परेशान और चिन्तित हैं। दौड़ते-दौड़ते लाचार होकर थक जाते हैं। शीघ्र विवाह में बाधा के कारण तो कई हैं जिसमें मुख्य कारण- काल सर्प योग, मांगलिक दोष, बुध-शनि दोषकृत होना अथवा चन्द्रमा, वृहस्पति लग्न सातवां भाव में अथवा द्वादश भाव में अस्त होने से विवाह संपादन में अनेक बाधाएं उत्पन्न होती हैं। ऐसी स्थिति में वर-कन्या को श्रीमहामृत्युंजय मंत्र से प्राण-प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट, मोती माला, श्रीमहामृत्युंजय कवच लॉकेट तथा श्रीहनुमत कवच लॉकेट शुक्लपक्ष में रविवार को पुष्य-पुनर्वसु नक्षत्र में धारण कराकर श्री काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग में ग्यारह ब्राह्मण द्वारा 30 किलो दूध से रुद्राभिषेक करवा दें। स्वयं वर-कन्या 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करें तो शीघ्र विवाह संपादन होता है।

7. घर में भूत, व्याधि से आप परेशान हैं।

परिवार में अकाल मृत्यु, पास-पड़ोस में अकाल मृत्यु से मृतक प्रेत रूप धारण कर लेता है। मृतक का जैसा स्वभाव पहले था वैसा मरकर भी उसका स्वभाव बन जाता है। वह प्रेत आत्मा रूप धारण कर परिवार में किसी प्रकार प्रवेश कर जाता है। परिवार में प्रवेश करते ही घर में तरह-तरह के उत्पात होने लगते हैं। जैसे-पागलपन, उन्माद, संकालु स्वभाव, मौन रहना, अपने आप बात करते रहना, बुद-बुदाना व अचानक सफेद दाग हो जाना, कोई ऐसा रोग जो चिकित्सक के समझ में न आवे आदि उपद्रव प्रस्फुटित होते हैं। ऐसी समस्याओं से ग्रस्त हजारों पाठकों की समस्या समाधान हेतु अनेक पत्र मेरे यहां आते रहते हैं। यदि आप इस प्रकार की समस्या से ग्रस्त हैं तो या सभी प्रकार के प्रयासों से आप असफल हो चुके हों तो एक बार पुनः प्रयास करें। घर में श्रीमहामृत्युंजय कवच यंत्र एवं दस महाविद्या का कवच यंत्र फोटो मढ़बाकर घर में किसी पवित्र जगह पर रखकर किसी योग्य विद्वान द्वारा दुर्गा संपुट पाठ, 'सर्व मंगल मांगल्ये' मंत्र का पाठ करवा दें, साथ ही घर में प्रत्येक दिन घी शाकिल का हवन करें। साथ ही सभी स्त्री-पुरुष महामृत्युंजय कवच लॉकेट और स्त्रियां दुर्गाकवच लॉकेट किसी रविवार को धारण करें, शांति प्राप्त होगी।

भारतीय मानसून एवं आकाशीय लक्षण 2004

जनवरी:- नववर्षारंभ में ता. 4 जनवरी को गुरु वक्री होने से तथा ता. 6 को बुध मार्गी होने से तथा शुक्र कुंभ में प्रवेश होने से मासारंभ में दिन का तापमान में काफी गिरावट आएगी। रात के तापमान में भी अचानक गिरावट से जनजीवन प्रभावित होगा। ता. 9, 10, 12, 13, 14 जनवरी को बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा में मेघ संचार और व्यापक वर्षा के साथ-साथ ओले-पाला पड़ेंगे। ता.14 को सूर्य संक्रांति वायुमंडल में पड़ जाने से मौसम में अप्रत्याशित परिवर्तन होने से जनजीवन अस्त-व्यस्त होगा। पशु-पक्षी की भी हानि होगी। ठंडक अपने चरम सीमा पर दृष्टिगोचर होगी। ता. 17, 18, 20, 27, 28 को मौसम का मिजाज परिवर्तित होगा।

फरवरी:- मासारंभ में शीतलहर का प्रकोप जारी रहेगा। ता.3 को बुध मकर में इसी तारीख को शुक्र जलीय राशि मीन में प्रवेश करने से शीतलहर के प्रभाव में वृद्धि होगी। ता.15 को बुध पूरब में अस्त होने से शीतलहर के प्रकोप को शांत करेगी। किन्तु कहीं-कहीं भारी से साधारण वर्षा पड़ने की संभावना है। ता.3, 6, 8, 12, 13 को तीव्र वायु वेग के कारण मौसम में ठंडक का प्रकोप बढ़ जाएगा। उपल वृष्टि से फसलों को नुकसान पहुंच सकता है। कुंभ की संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ गयी है। मैदानी इलाकों में ता. 22 के बाद आकाश साफ रहेगा। ऋतु विपर्यय का अनुभव होगा।

मार्च:- मासारंभ में शनि मार्गी होने से मौसम का क्रम अव्यवस्थित रहेगा। ता. 9 को बुध मीन में प्रवेश होने तथा मंगल को वृष में प्रवेश करने से मौसम में अचानक परिवर्तन लाएगा और दिन के तापमान में वृद्धि करेगा। ता. 14 को सूर्य मीन में तथा ता. 18 को बुध पश्चिम में उदय होने से पूर्वा हवा जोर-जोर से चलने से जहाँ-तहाँ साधारण वर्षा से खड़ी फसलों को नुकसान होगा। पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार के कुछ क्षेत्रों में व्यापक वर्षा भी हो सकती है। जो ऋतु विपर्यय करेगा। ता. 28 को शुक्र वृष में प्रवेश करने से दिन के तापमान में अचानक वृद्धि होगी और मौसम सुहाना हो जाएगा।

अप्रैल:- ता. 7 को बुध वक्री होने से तथा ता. 9 को बुध पश्चिम में अस्त होने से मासारंभ में मौसम खुष्क और सुहावना रहेगा। गुलाबी जाड़ा और बसंती हवा में खुष्की बनी रहेगी। ता. 2, 3, 5, 8, 11, 14 को कहीं-कहीं मामूली वृष्टि या बूंदा-बांदी की संभावना है। पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात हो सकता है। ता. 13 को सूर्य मेष राशि में प्रवेश करके उष्णता बढ़ाएगा। इससे दिन के तापमान में अप्रत्याशित तापमान से पारा तेजी से ऊपर उठेगा। ता. 22 को बुध मीन में तथा ता. 26 को बुध पूरब में उदय होने से पूरब, उत्तर क्षेत्रों में वर्षा, तूफान से व्यापक जन-धन की हानि होगी। ता. 20, 22, 24, 26, 29, 30 को मौसम परिवर्तित होगा।

मई:- ता. 2 को बुध मार्गी एवं ता. 5 को गुरु मार्गी होने से मौसम में उष्णता बढ़ेगी। दिन के तापमान में वृद्धि होगी। ताप लहर का प्रकोप अपनी चरम सीमा पर बढ़ जाएगा। ता. 9 को बुध मेष राशि में प्रवेश करेगा। ता.13 को सूर्य भी मेष राशि में प्रवेश करने से सूर्य संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ जाने से तापमान के पारा का ग्राफ आश्चर्यजनक तरीकों से ऊपर उठेगा जिससे लू, बवंडर आदि प्रकोप से जन-जीवन प्रभावित होगा। प्राकृतिक उत्पात का भी दौरा पड़ने की संभावना है। बिहार, राजस्थान, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में ता. 15, 17, 19, 21, 23, 25, 26 को आंधी-पानी का योग है।

जून:- ता. 2 को बुध वृष राशि में प्रवेश करेगा। ता. 4 को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। ता. 7 को बुध भी पूरब में अस्त होगा अतएव मासारंभ में गर्मी का प्रकोप भी बना रहेगा। किन्तु ता. 14 को सूर्य, मंगल, मिथुन एवं कर्क राशि में प्रवेश करने से मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न करेगा। जिससे गर्मी, उष्णता विशेष बढ़ जाएगी। जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा। ता. 15 को शुक्र पूरब में उदय होने से ता. 18 से पूरे भारत में मानसून सक्रिय हो जाएगा। हालांकि बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड में मानसून कुछ विलम्ब से पहुंचेगा। ता. 20 को शनि अस्त होने से पूरा भारत वर्षा का जोर पकड़ लेगा। दक्षिण भारत के केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्रा और पूर्वी भारत के हिस्सों में व्यापक वर्षा होगी। मानसून की वर्षा समय पर होगी किन्तु प्राकृतिक प्रकोप का तांडव हो सकता है।

जुलाई :- ता. 1 को बुध कर्क राशि में प्रवेश करने से मास के शुरूआत से ही भारत के सभी भू-भागों में लगभग वर्षा के आसार नजर आने लगेंगे। कहीं-कहीं अतिवृष्टि भी होगी। ता. 1, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 13, 14 को गरज-तरज के साथ अधिकांश भू-भागों में दूर-दूर तक वर्षा होगी। कर्क संक्रांति वरुण मंडल में पड़ गयी है। अतः सभी प्रदेशों में व्यापक वर्षा होगी। ता. 16, 18, 19, 21, 22, 23, 25, 26, 27, 28, 29 को भारी वर्षा का योग है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, बिहार में नदियों में बाढ़ का ताण्डव से जन-जीवन प्रभावित होगा। मौसम की बीमारी से जन-हानि की भी संभावना है।

अगस्त:- ता. 10 को बुध वक्री होने से वर्षा में अवरोध उत्पन्न होगा। पूर्वी भारत के अधिकांश प्रदेशों में वर्षा का व्यतिक्रम बना रहेगा। जबकि पश्चिमी प्रदेशों में वर्षा वायु का वेग बना रहेगा। ता. 2, 4, 5, 6, 9, 10, 11, 14, 15 को विस्तृत भूभाग में व्यापक वर्षा होगी। ता. 16 को सूर्य सिंह में एवं बुध पश्चिम में अस्त होने से संक्रांति वायु मंडल में पड़ गई है। अतः वर्षा के साथ प्रबल वायु-वेग, आंधी-तूफान तथा अन्य प्राकृतिक उत्पात का प्रबल योग है। ता.18, 19, 20, 21, 23, 24, 25, 27, 28, 29, 30, 31 को वायु-वेगाधिक्य एवं आंधी-तूफान के साथ व्यापक वर्षा होने से सर्वत्र जन-जीवन प्रभावित होगा। सर्पों का विचरण अधिक होने से जन-हानि की आशंका होगी। हैजा एवं संक्रामक रोगों से जन-जीवन पीड़ित होगा। पशुओं में नई-नई बीमारियां उत्पन्न होंगी।

सितम्बर:- ता. 1 को शुक्र जलीय राशि कर्क में, ता. 2 को बुध मार्गी होगा। जबकि ता. 5 को शनि भी कर्क राशि में एवं गुरु अस्त होने से ता. 1 से 15 तक व्यापक वर्षा की संभावना है जिससे फसलों को कुछ हानि होगी। ता. 16 को सूर्य-मंगल कन्या में प्रवेश करने से वर्षा में अवरोध उत्पन्न करेगा। पूर्वी भारत में मासारंभ से ही वर्षा, वायु वेग का उपद्रव कम होना शुरू हो जाएगा। केवल उत्तरी भारत, हिमांचल प्रदेश

को धारण कर, शांति प्राप्त होगी।

आदि में छिट-पुट वर्षा होगी। ता.20 को बुध पूरब में अस्त होने से जल्दी ही वर्षा अवरोध होकर गुलाबी ठंड धीरे-धीरे महसूस होने लगेगी।

अक्टूबर:-ता. 3 को गुरु उदय होने से मासारंभ रह-रहकर ता. 1, 2, 3, 4, 7, 8, 10, 11 को कहीं-कहीं छिट-पुट वर्षा होगी। जिससे तापमान में अचानक ग्राफ धीरे-धीरे नीचे आने लगेगा। इससे ठंड बढ़ने लगेगी। इस मास में रोगाणुओं का प्रकोप बढ़ेगा जिससे जन-जीवन प्रभावित अवश्य होगा। ता. 12 को बुध तुला राशि में तथा ता. 16 को सूर्य नीच राशि तुला में प्रवेश होने से मौसम में व्यतिक्रम उत्पन्न करेगा। इस माह में मौसम का क्रम अनिश्चित रहेगा। कहीं वायु, वर्षा का उपद्रव तो कहीं ऋतु विपर्यय दिखाई पड़ेगा। मास के अंत तक मानसून निकल चुका रहेगा।

नवम्बर:- ता. 1 को मंगल उग्र ग्रह तुला में प्रवेश करने से ता. 4 को मंगल उदय होने से तथा ता. 8 शनि वक्री होने से अचानक शीत का प्रकोप बढ़ेगा। हिमाचल प्रदेश, गढ़वाल, कश्मीर, लद्दाख एवं हिमालय के तराई वाले क्षेत्रों में विशेष ठंडक बढ़ जायेगी। ता. 2, 3, 5, 7, 9, 10, 11 को हिमाचल प्रदेश, कश्मीर, गढ़वाल एवं लद्दाख में वर्षा एवं हिमपात होगा। बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली में कहीं-कहीं बादल वर्षा, हिमपात के योग बनेंगे। ता. 15 को सूर्य वृश्चिक संक्रांति अग्नि मंडल में पड़ गई है। जिससे दक्षिण भारत में प्रबल वायु वेग से तूफान के साथ वर्षा होगी। ता. 30 को बुध वक्री होकर मैदानी क्षेत्रों में शीत प्रकोप बढ़ाएगा।

दिसम्बर:-ता. 5 को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. 7 को बुध वृश्चिक में प्रवेश करेगा। अत: महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल के समुद्री तटीय क्षेत्रों में आंधी-तूफान, वर्षा का योग है। उत्तर भारत में भी ठंड का जोर अपनी चरम सीमा पर रहेगा। पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात, भूस्खलन, हिमस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप हो सकते हैं। ता. 15 को सूर्य धनु संक्रांति वायुमंडल में पड़ रही है, जो अशुभ है। ता. 3, 6, 7, 8, 9, 14, 15 को मौसम परिवर्तन रहेगा।

मानव जीवन पर रत्नों का प्रभाव (रत्नों के जगमगाहट भरे रंग महल में)

रत्नों के संबंध में प्राचीन काल से ही मानव में उत्सुकता रही है। शुरूआत में रत्नों की चमक उनके नयनाभिराम और उनके रूप-रंग, आभा-छटा से आकर्षित होकर ही मानव ने शरीर को रत्नों से सजाना शुरू किया। धीरे-धीरे उनकी उपयोगिता के संबंध में भी प्रत्यक्ष फल देखकर इनको शक्ति के रूप को भी जाना। अपने अनुसंधानों द्वारा मानव ने यह भी जाना कि एक विशेष बोधो द्वारा इन रत्नों का प्रयोग करने से बहुत सारी बाधाएं दूर होकर सुख-शांति, समृद्धि संबर्द्धन में यह रत्न परम लाभकारी हो सकते हैं। विश्व के समग्रत: राष्ट्रों के विद्वानों ने इस बात को स्वीकारा है कि वेद संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रन्थ हैं। ऋगवेद की अनेक रचनाओं में रत्न शब्द का प्रयोग किया है। हमारे भारतीय सभ्यता संस्कृति में तथा लोक गाथाओं के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि रत्नों में दैवी शक्ति अवश्य निहित होती है। विश्वास कोरा अंधविश्वास भी नहीं कहा जा सकता।

रत्न शब्द की परिभाषा बहुत संक्षिप्त है। परन्तु उसकी प्रासंगिकता का क्षेत्र बृहद है। वस्तुत: रत्न एक बहुआयामी, बहुअर्थी और व्यापक भाव बोध का शब्द है। सुंदर, शोभन, मोहक, महीमापंडित और प्रिया विभिन्न क्षेत्रों, प्रसंगों और विषयों में इस शब्द का प्रयोग होता है। रत्न नौ प्रकार के होते हैं। सुलभ और दुर्लभ भी। रंग, आभा, चिकनाहट, कठोरता, प्रभाव और उपलब्ध की दृष्टि से इनमें काफी भिन्नता होती है। इनकी रचना, प्रक्रिया और जन्म स्थली भी एक दूसरे से काफी भिन्न होती है। फिर भी एक गुण सभी रत्नों में पाया जाता है-तेजस्विता। रत्न सामान्य पत्थर या धातु की तुलना में अधिक ज्वलंत, प्रतिक्रियात्मक, भिन्नरंग, दीप्तिवाला, स्थाई और कठिनाई से प्राप्त होता है। रत्नों का विकिरणीय प्रभाव, अंतरिक्ष में स्थित विभिन्न तारा समूहों की ज्योति और उष्मा से संबेदित होता है। प्रत्येक रत्न अपने वर्ग प्रभाव के साम्य वाले ग्रह के प्रभाव को आकृष्ट करके अपने में केन्द्रित करता है। प्रभा और प्रभाव की दृष्टि से रत्नों में एक अद्भूत शक्ति निहित रहती है। यह शक्ति मानव के लिए पोषक और रक्षा कवच का रूप ले सकती है। रत्नों द्वारा कोई भी रोग नहीं है जिसे ठीक नहीं किया जा सके। कठिन से कठिन रोग, कैंसर, उदर रोग, सुराइसीस, दमा, पागलपन, उन्माद, टीबी, एड्स आदि जैसे घातक रोगों का प्रतिकार हेतु इन रत्नों का प्रयोग किया जाता है। मैंने विभिन्न रोगों के प्रतिकार हेतु इन रत्नों के द्वारा कुछ प्रयास किया तो सफलता अवश्य मिली। कैंसर, गैस्टीक, ह्दय रोग, रक्त चाप, दमा, उदर रोग, कठिन चर्म रोग, नपुंसकता जैसी असाध्य बिमारियों और रोगियों से प्रसिद्ध चिकित्सकों ने हाथ झटक दिये थे। उन्हें भी इन दुर्लभ रत्नों की सहायता से आरोग्य प्रदान होने का सौभाग्य प्रदान हुआ है। पहले तो मैं भी ज्योतिषी होकर इन रत्नों पर पूरा भरोसा नहीं करता था लेकिन सच्चाई जानने के लिए जब दो-तीन रोगीयों को मैंने रत्न धारण कराया तो औषधियों से भी ज्यादा आराम मिला और रोगों का प्रतिकार भी हुआ। ऐसे कई रोगीयों को मैंने देखा है जो जीवन से निराश हो चुके थे। परन्तु रत्न धारण करने के बाद से ही धीरे-धीरे कायाकल्प हो गया।

माणिक्य-यह गुलाबी रंग का कुछ लाली लिये हुए चिकना, चमकदार, पारदर्शी, प्रकाश पुंज का उत्सर्जक होता है। कोई-कोई माणिक्य गहरा लाल रंग का भी होता है। यह रत्न दीर्घायु कारक है। इसे धारण करने से शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि होती है। ह्दय संबंधी बिमारी तथा छाती संबंधित किसी भी तरह की बिमारी में यह रत्न धारण करने से विशेष लाभ मिलता है। वात-पित्त, कफ, ज्वर, विष, कठिन चर्मरोग, कैंसर जैसे घातक बिमारियों में यह रत्न शीघ्र ही लाभकारी माना जाता है। बदहजमी होने पर इस रत्न को पानी में भिगोकर कुछ समय बाद यह पानी पीने से बदहजमी, अतिसार दूर होती है। यह रत्न छोटे-छोटे रोगों को भगाने की रामबाण औषधि है। किसी भी प्रकार का ह्दयरोग, रक्तचाप हो तो माणिक्य अवश्य धारण करें। ऐसे भी यह रत्न धारण करने से मन में बुराईयों और अनैतिक कार्यों की ओर आकर्षित नहीं होता। इसे धारण करने से आत्मबल में वृद्धि तथा दाम्पत्य जीवन की बाधाएं दूर होकर मधुरता प्राप्त होती है। राज पक्ष से जुड़े कार्यों की सिद्धि करने के लिए यह रत्न धारण करना चाहिए। उच्च पद प्राप्ति एवं प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, यश लाभ दिलाने में यह रत्न परम कल्याणकारी माना जाता है। यह सिंह राशि वालों के लिए आजीवन धारणीय है। जन्म पत्रिका में सूर्य की स्थिति अनुकूल हो तो कोई भी व्यक्ति इसे धारण कर सकता है। इसे सोना में जड़वाकर अनामिका अंगुली में रविवार को धारणीय है।

मोती-यह सफेद, सुची कंकड गोल, अपारदर्शी ठोस रत्न है। यह समुद्र में सीप नामक जलीय जन्तु के गर्भ से प्राप्त होता है। यह चमकदार, उज्जवल और मनोरम सफेद रंग का होता है। इस रत्न के अंदर कैल्शियम, कार्बन और आक्सीजन ये तीनों तत्व निहित होते हैं। माणिक्य के बाद यह रत्न भी रोगों को दूर भगाने में रामबाण औषधि है। यदि किसी को हिस्ट्रीया, मिर्गी, फरका, रोग हो तो उसे सोमवार के दिन पुष्य या पुनर्वसु नक्षत्र में कनिष्ठा अंगुली में शुद्ध मोती धारण करना विशेष शांतिदायक माना जाता है। खेदजनक बात है कि आजकल बाजार में मिलने वाले मोती 95 प्रतिशत नकली और बेअसरदार हैं। मस्तिष्क संबंधी किसी भी बिमारी में यह रत्न परम लाभकारी माना जाता है। जिन्हें रात्री में नींद नहीं आती हो, पागलपन, उन्माद का दौरा पड़ता हो तो यह रत्न पहनने से इस रोग का प्रतिकार होता है। साथ ही गण्डमाला, ज्वर, कफ, वमन, क्षय, जलोधर, अतिसार, ह्दयरोग, स्मरण शक्ति को भी, हकलाना, तुतलाना आदि में भी यह विशेष उपयोगी है। इसे धारण करने से ज्ञान, स्मरण-शक्ति की वृद्धि होती है। व्यक्ति बुरे मार्ग को छोड़कर सदमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित हो जाता है। यह शारीरिक, मानसिक, आर्थिक निर्बलता मिटाने में भी सहायक होता है। दाम्पत्य जीवन के समन्वय एवं तेज रूपवल की वृद्धि होती है। यह कर्क राशि के लिए आजीवन धारणीय है। चन्द्रमा द्वितीय, छठा, आँठवा, द्वादशभावों में तथा वृश्चिक राशि में कहीं भी हो तो इसे धारण करें। शेष भाव में चन्द्रमा हो तो इसे चांदी में जड़वाकर सोमवार को कनिष्ठा में धारण करें।

मूंगा:- यह समुद्र के गर्भ में कौरल नामक जलीय जंतु के हड्डी से बनता है। यह लाल, गहरा लाल, सिंदूरी लाल, चिकना, वजनदार, ठोस रत्न है। इस रत्न का प्रयोग अनेक प्रकार के रोगों को दूर करने के लिए किया जाता है। रक्त विकार, वायु विकार, मंदाग्नि, ह्दयरोग एवं शारीरिक दुर्बलता, आत्मबल की कमी तथा मिरगी के निवारण हेतु इस रत्न का प्रयोग किया जाता है। बवासीर, भकन्दर आदि रोगों में भी इस रत्न का प्रयोग कई प्रकार से लाभदायक माना जाता है। यदि किसी को बहुत दिनों से रक्तचाप पीड़ित करता हो तो यह रत्न पहनने से इस रोग का प्रतिकार होता है। इसका भस्म मानस रोग और जाड़ियों की दुर्बलता को दूर करता है। यह रत्न धारण करने से भूत-प्रेत का प्रभाव समाप्त होता है। जिन पुरुषों के वीर्य में शुक्र नहीं बनता या जिन माताओं को बार-बार गर्भपात हो जाता है या संतान जन्म लेते ही मर जाती है। उन्हें

यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। प्रशासनिक सेवा से संबंधित व्यक्तियों के लिए यह रत्न विशेष उपयोगी है। दाम्पत्य जीवन की समस्त बाधाओं को दूर भगाने में यह सहायक है। जन्म पत्रिका में मंगल 1, 2, 4, 7, 8 और 12 भावों में विराजमान हो अथवा जन्म राशि मेष, वृश्चिक हो तो इसे सोना या चांदी में जड़वाकर मंगल मंत्र प्राण प्रतिष्ठा करके अनामिका अंगुली में मंगलवार को धारण करें।

पन्ना:- यह नीमपत्ति से मिलते जुलते विशुद्ध हरे रंग का चिकना, चमकदार पारदर्शी और हरे रंग का प्रकाश पुंज का उत्सर्जक होता है। यह हल्का हरा रंग में भी प्राप्त होता है। इस रत्न को भस्म का प्रयोग आयुर्वेद में प्राचीन काल से होता आ रहा है। सामान्यतः इस रत्न की भस्म पथरी, मूत्र विकार, पीलिया, लीवर, सर्वजी रोग, बवासीर आदि रोगों के प्रतिकार हेतु किया जाता है। उच्च रक्तचाप में भी यह रत्न लाभकारी है। उल्टी, विष, सन्निपात, कैंसर आदि रोगों में परम कल्याणकारी माना गया है। शिक्षा, परीक्षा में सफलता हेतु यह रत्न विशेष लाभकारी है। बैंक कर्मचारी, प्रेस रिपोर्टर, संपादकीय सभी क्षेत्र के कलाकारों के लिए तथा अर्थ जगत में कार्यक्रम करने वाले व्यक्तियों के लिए यह रत्न उपयोगी है। जन्म पत्रिका में बुध की स्थिति 2, 6, 8, 12 छोड़कर कहीं भी हो तथा जन्मराशि मिथुन-कन्या हो तो यह रत्न आजीवन धारणीय है। सोना या चांदी में जड़वाकर कनिष्ठा अंगुली में बुधवार को धारणीय है।

पुखराज:- यह सामान्यतया पीले रंग का होता है। यह गहरे पीले, हल्के पीले और जर्द रंग में भी प्राप्त होता है। यह चिकना, चमकदार, पारदर्शक और पीला रंग के प्रकाशपुंज का उत्सर्जक होता है। यह ग्रह शांति के लिए ही नहीं अपितु स्वास्थ्य लाभ के लिए भी लाभकारी होता है। पीलिया, तहली, आंतों के कैंसर, गुर्दे से संबंधित रोगों में तथा हड्डियों के दर्द में शांतिदायक माना जाता है। यदि किसी अज्ञात कारणों से स्वास्थ्य दिनों-दिन गिरता जा रहा हो, वजन कम हो रहा हो, अनिद्रा हो तो यह रत्न विशेष लाभकारी माना जाता है। शीघ्र विवाह संपादन, पुत्र उत्पत्ति में बाधा, दाम्पत्य जीवन में वैचारिक मतभेद, व्यापार में हानि, शिक्षा-परीक्षा में बाधा आ रही हो तो आप अवश्य ही यह रत्न धारण करें। नौकरी में पदोन्नति तथा धर्म-अध्यात्म में अनुराग वृद्धि हेतु यह रत्न धारण करने से सफलता प्राप्त होती है। जन्म पत्रिका में गुरु 3, 5, 6, 8, 12 एवं मकर राशि में कहीं भी हो तो यह रत्न आजीवन धारणीय है।

हीरा:- यह पत्थर रत्नराज है। सर्वाधिक मूल्यवान, कठोर, दीर्घजीवनी, प्रभासम्पन्न, अद्भुत गुणों से युक्त, चिकना, चमकदार, वजनदार, सप्तरंग, प्रकाशपुंज का उत्सर्जक होता है। जिन माता-पिता को संतान नहीं होती, पति नपुंसक हो गये हों या नामर्दी के शिकार हो गये हों या वीर्य में शुक्रहीन बनता हो अथवा माताओं में गुप्त रोग मासिक श्राव में कमी, बच्चादानी में नसनाड़ी अवरोध होता हो ऐसी स्थिति में दाम्पतियों को मैंने शुद्ध हीरा रत्न धारण कराया और आज ऐसे कई दम्पति संतान के पिता बन बैठें हैं। वैवाहिक जीवन की बाधाएं, अन्य विरोध व्याधातों का समन करके पुरुषों को सुखी दाम्पत्य जीवन देने में यह रत्न सर्वाधिक प्रभावशाली माना जाता है। जन्म पत्रिका में शुक्र की स्थिति निर्बल हो और जन्म राशि वृष तुला हो तो यह रत्न आजीवन धारणीय है।

नीलम:- यह रत्न गहरा नीला, हल्का नीला, आसमानी, चिकना, चमकदार, पारदर्शी रत्न है। इस रत्न को वहम, पागलपन, कैंसर, एड्स, दमा, सारीइसीस आदि कठिन रोगों में किया जाता है। परिवार में शोक, नौकरी-व्यापार में हानि, कठिन रोग, अकारण कानूनी विवाद, धन की हानि, शत्रुओं से भय की स्थिति हो तो यह रत्न अवश्य धारण करें। शनि के कुप्रभाव में माता-पिता, पत्नी-पुत्र की मृत्यु एवं धन की विशेष हानि होती है। जिस व्यक्ति को अपने जन्म राशि का ज्ञान न हो तो नौकरी, व्यापार, शांति, समृद्धि एवं आरोग्य प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र युक्त नवरत्न आजीवन धारण करें। रत्न सही एवं जानकार ज्योतिषी की देख-रेख में खरीदकर प्राण-प्रतिष्ठायुक्त विशुद्ध धारण करें।

कुछ अकाट्य सत्य योग

1. जन्म पत्रिका में सूर्य शत्रुग्राही अथवा नीच राशि में सातवाँ भाव में वर के कुण्डली हो तो स्त्री को अवश्य अनादर करता है। जबकि कन्या के कुण्डली में हो तो कन्या पति से वैचारिक मतभेद एवं पति को अनादर करने वाली होती है।
2. हथेलियों में मानस रेखा शुरू में डबल फिर अकेला होकर मंगल पर्वत को स्पर्श करे तो ऐसे रेखाधारक व्यक्ति को मिर्गी का दौरा अवश्य पड़ता है और शीघ्र ही जल में डूबने से मृत्यु हो जाती है।
3. मानस रेखा जंजीराकार हो, मध्यमा अंगुली में पांच लकीर से अधिक हो तो स्त्री-पुरुष अत्यधिक कामुक होने से उन्मादी पागलपन से ऐसे जातक ग्रस्त होते हैं।
4. लग्न में शनि धनु राशिगत होने से स्त्री-पुरुष ग्राम प्रधान, मुखीया अथवा प्रमुख होते हैं।
5. जब द्वितिय का स्वामी शनि या मंगल की राशि में स्थित होता है और पाप ग्रह अधिकतर केन्द्र और त्रिकोण में हो तो ऐसे स्त्री-पुरुष असत्यवादी और पाखंडी होते हैं। इनके जीवन में भोजन, वस्त्र, आवास की सदैव कमी खलती है। ऐसे लोग झूठा, आवारा और मिथ्या अपवाद करते हैं।
6. जब लग्न का स्वामी बलवान हो और नवम का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण में अपनी स्वयं राशि या उच्च राशि में विराजमान हो तो अतुल लक्ष्मी योग बनता है। ऐसे योग धारक स्त्री-पुरुष विद्वान, धनवान और सभी अनुकूल गुणों से निहित होते हैं।
7. जब बृहस्पति द्वितिय या पंचम भावों में बुध या शुक्र राशि में स्थित हो या उस पर बुध या शुक्र की दृष्टि पड़ती हो तो कलानिधि योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्या, बुद्धि, धन, सम्मान से सुशोभित तथा सरकार से मान-सम्मान प्राप्त करते हैं। ऐसे जातक अपने सत्य प्रयास से सभी सुखों को भोग करते हैं। परन्तु इनका स्वभाव कुछ कामुक होता है।
8. हथेलियों में शनि पर्वत से चन्द्राकार चिन्ह सूर्य पर्वत को स्पर्श करे तो ऐसे दम्पती कभी भी पुत्र-पुत्री का माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं करते हैं। यह अकाट्य सत्य है।
9. वृष और तुला लग्न की कुण्डली में काल सर्प योग बनता हो तो जातक हर समय ऐसा महसूस करता है कि उनके हाथ जो नौकरी व्यापार है वह न जाने कब हाथ से निकल जाएगा। यह विचार भी मन को भयग्रस्त बनाए रखता है कि खराब-खराब चलती हुई उनकी नाव न जाने कब डूब जाएगी? ऐसे जातक यह भरोसा नहीं कर पाते कि वह सफलता के कगार तक आ पहुँचे हैं केवल दो-चार कदम और आगे बढ़ना है। भगेसेमंद इन भावनाओं के विपरीत परिणाम प्राप्त होने का भय मन में बैठ जाता है। जो सत्य भी है।
10. हृदय रेखा जंजीराकार हो, दोनों हथेलियों में कहीं भी हृदय रेखा अचानक टूटी हो तो जातक को किसी भी उम्र में दिल के दौरा से अचानक मृत्यु हो जाती है।
11. मिथुन और कन्या लग्न की कुण्डली में काल सर्प योग बनता हो तो ऐसे जातक नौकरी जीवी होने पर या शिक्षा परीक्षा में उच्च सफलता का ख्वाब जरूर देखते हैं। पर सफल नहीं हो पाते।
12. जब जन्म पत्रिका में चतुर्थ और नवम के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र में होते हैं और लग्न का स्वामी बलवान होता है तो काहल योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक मुखीया, विधायक अथवा सांसद होते हैं। उन्हें ग्राम, समाज, देश-काल में प्रचुर मान-सम्मान एवं यश लाभ प्राप्त होता है।
13. जन्म-पत्रिका में बृहस्पति चन्द्र से केन्द्र में विराजमान हो तो यह गज केशरी योग बनता है। इस योग से जातक उच्च स्तरीय नौकरी प्राप्त कर बीच में छोड़कर कभी भी विधायक, सांसद, मंत्री एवं महत्वपूर्ण पद प्राप्त करते हैं। परन्तु ऐसे योग वाले जातक का बचपन कुछ दुःखमय स्थिति में व्यतीत होता है। माता-पिता के सुख में भी अभाव देखा गया है।
14. जब जन्म-पत्रिका में लग्न या चन्द्र से दशम भाव में शुभ ग्रह स्थित हो तो अमला योग बनता है। इस योग से जातक प्रशासनिक सेवा अथवा बहुमूल्य पदार्थों का व्यवसायी होता है। कभी-कभी ऐसे योग वाले जातक लक्ष्मी के बल पर अचानक राजनीति में प्रवेश कर उच्चतम पदों तक पहुंचकर सुख-समृद्धि और यश लाभ प्राप्त करते हैं।
15. पंचम भाव में अस्त शनि, अस्त मंगल, अस्त चन्द्रमा अथवा बृहस्पति अस्त हो तो जातक मंद बुद्धि का और संतानहीन होता है। ऐसे जातक अपनी गलत बुद्धि के कारण किसी भी उम्र में अपनी सारी पैतृक सम्पति गंवा बैठते हैं।
16. विवाह रेखा टेढ़ी-मेढ़ी हो, मंगल पर्वत तक मानस रेखा पहुंच गयी हो तो दम्पति को दाम्पत्य जीवन में वैचारिक मतभेद, संकालु स्वभाव, विद्रोह एवं अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है। सुख-शांति दिवा-स्वप्न होते हैं।
17. काल सर्प योग वाली जन्म-पत्रिका में एक कारक ग्रह उच्च का हो और दूसरा अकारक ग्रह उच्च का हो तो ऐसे जातक हर जगह अपनी बुद्धि विवेक द्वारा सफलता प्राप्त कर लेते हैं। और असंभव कार्य भी आसानी से कर लेते हैं। धुन के पक्के और रसीले मिजाज के होते हैं। काल सर्प योग के साथ किसी भाव में केवल सूर्य-चन्द्र युक्ति हो तो ऐसे जातक मुसीबतों से लड़ते हुए अन्ततः सफल जीवन व्यतीत करते हैं।

राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र एवं आर्थिक हालात

विक्रमी संवत 2061 का नूतन वर्ष प्रवेश चैत्र कृष्ण अमावस, शनिवार- 20 मार्च 2004 को रात्री 28 बजकर 10 मिनट पर मकर लग्न में नववर्ष प्रारंभ होगा। मकर लगन कुंडली में सूर्य-बुध-चन्द्रमा मीन राशि में राहू-शुक्र मेष राशि में, मंगल वृष राशि में, शनि मिथुन राशि में, वृहस्पति सिंह राशि में, केतु तुला राशि में भ्रमणशील हैं। इस वर्ष सौर मंडलीय ग्रह स्थितियों में विक्रम संवत 2061 में ग्रहों को अकाशी गृह परिषद में पांच अधिकार शुभ ग्रहों को एवं शेष अधिकार क्रूर ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। इस वर्ष राजा-सूर्य, मंत्री-तामस, ग्रह-मंगल एवं धनपति अधिकार बुध को प्राप्त हुआ है। विक्रम संवत 2061 का प्रवेश मकर लग्न में हुआ है। वर्ष लग्नेश शनि छठाभाव युद्ध एवं शत्रु अपराध भाव में विराजमान है। उस पर कोई भी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। विदेशी संबंधों का स्वामी भी होने से तथा कार्येश मंगल पंचम भाव में योग बना रहा है। पराक्रम भाव में सूर्य, चन्द्रमा, बुध एक साथ योग बनाने से नववर्ष कुंडली मकर लग्न का उदय होने का फल शास्त्र में अशुभ लिखा है। फलत: कुछ राष्ट्रों के पारस्परिक राजनैतिक समीकरणों में विशेष परिवर्तन देखने को मिलेंगे। विदेशी ऋणों में बेतहाशा वृद्धि होगी। पूर्व देशों में कहीं-कहीं पृभौक्ष के योग बनेंगे। दक्षिण प्रदेशों में भी जनोपयोगी वर्षा के कारण अनाज के उत्पादन प्रभावित होंगे। दक्षिणोत्तर प्रदेशों में कहीं सत्ता परिवर्तन तो कहीं पदपरिवर्तन का संकेत है।

वर्ष लग्न कुण्डली में ग्रह स्थिति कुछ विचित्र होने से गत वर्ष की अपेक्षा अगामी वर्ष भारत सहित विश्व के अन्य राष्ट्रों में परस्पर विद्रोह, उपद्रव, नरसंहार, चरित्रहनन, राजनीतिक उठा-पटक, पद परिवर्तन, सत्ता परिवर्तन, विघटन आदि कुकृत्य घटनाओं का ग्राफ आश्चर्यजनक तरीकों से ऊपर उठेंगे। राहु, शुक्र योग के प्रभाव स्वरूप भारत, पाकिस्तान, इन्डोनेशिया, चेचेन्या, कजाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि राष्ट्रों एवं कुछ प्रमुख राष्ट्रों में आतंकवादी एवं जातीय हिंसा की वारदातों में बेतहाशा वृद्धि होगी। कहीं बाढ़, भूकम्प, प्राकृतिक उपद्रव, चुनावी उन्माद के कारण व्यापक जन-धन की हानि होगी। जगत लग्न कुण्डली में ग्रहों की स्थिति के अनुसार मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ राशि वाले जातक को राष्ट्रनायकों एवं राजनेताओं के लिए यह वर्ष अत्यंत संकटमयी एवं चुनौती पूर्ण परिस्थितियां लेकर आ रहा है। फलस्वरूप अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, पाकिस्तान, भारत, अफगानिस्तान, इन्डोनेशिया, श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश आदि राष्ट्रों में आर्थिक संकट, विद्रोह, सत्ता परिवर्तन, गंभीर दोषारोपण एवं देश के अंदर अचानक गृह युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। और राजनैतिक, सामाजिक संकट और अधिक गंभीर होंगे। एक ही ग्रह का प्रमुख दो पदों पर आसीन होना भी शुभ नहीं माना गया है। संवत के प्रारंभ में ही सूर्य, चन्द्रमा, बुध एक साथ मीन राशि में चल रहे हैं। जबकि बृहस्पति सिंह राशिगत अष्टम भाव में चल रहे हैं। जिसके परिणामस्वरूप विश्व के कुछ राष्ट्र भयंकर युद्ध की ओर उन्मुख हो सकते हैं। जनता-जनार्दन अशांत क्षेत्र से अन्यत्र पलायन के लिए बाध्य होंगे। विश्व में विकिरण प्रक्रिया के प्रदूषण जन्य कुप्रभाव से विविध रोग कष्टों से देशवासियों को परेशानी बढ़ेगी। विश्व के कुछ राष्ट्रों में भयंकर अकाल की स्थिति से जनता-जनार्दन एवं पशु-पक्षी भूखे-प्यासे मरेंगे। मुस्लिम राष्ट्रों में शासकों के कठोर निर्दयतापूर्ण व्यवहार एवं गलत नीति आदेश से जन-समूहों को भारी कष्टों का सामना करना पड़ेगा। नई-नई बिमारियों के उत्पात से विश्व चिकित्सा जगत में परेशानी बढ़ेगी तथा प्रयास के बाद भी इन रोगों के नियंत्रण करने में सफलता के आसार कम नजर आएंगे। मेडिकल साइंस से लोगों का विश्वास हटेगा। मंगल अकेले पूरे विश्व की शांति भंग करने का पुरजोर प्रयास करेगा। जिससे घातक शस्त्रास्त्रों के एवं जैविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग की ओर उन्मुख करेगा। मुस्लिम राष्ट्र अपनी हठ धर्मिता से एवं यूरोप के देश एक विशेष लक्ष्य को लेकर युद्ध के मैदान में कभी भी उन्मुख हो सकते हैं। जिससे मुस्लिम राष्ट्रों के अंदर व्यापक जन-धन की हानि है। इस वर्ष ब्रिटेन, जापान, अमेरिका प्रक्षेपास्त्र प्रोद्योगिकी निर्यात के मुद्दे पर एवं युद्ध सामग्री किसी छोटे मुस्लिम राष्ट्र को देने पर ईरान, इराक,कुवैत, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इन्डोनेशिया एवं लिबिया जैसे राष्ट्रों की पीठ थप-थपाने पर आपसी संबंध कटु होने का संकेत बनेंगे। विश्व के समग्र राष्ट्रों में ध्रुवीकरण की प्रवृत्ति से विश्व शांति को खतरा बढ़ेगा। शनि-मंगल दोनों ही अपने प्रभाव का विस्तार करेंगे। समस्त विश्व को ये दोनों ग्रह बारूद के ढ़ेर पर ले जाकर खड़ा कर देंगे। समस्त राष्ट्र मात्र लोग देखावा के लिए शांति का ढोल पीटते रहेंगे। साथ-साथ अपनी विस्तारवादी नीति का खुलकर प्रचार-प्रसार करेंगे। किसी भी समय किसी विशेष प्रकार की घटना घट सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अमेरिका, ब्रिटेन की आलोचना जगह-जगह होगी। अमेरिका की गलत नीतियों के कारण विश्व के अधिकांश राष्ट्र आंतरिक तौर पर उसके विरोधी हो जाएंगे। ऊपरी तौर पर ब्रिटेन, अमेरिका, चीन, जर्मनी आदि प्रमुख शक्तियां परमाणु निरस्त्रीकरण निषेध संधियां पर बल देंगे। परन्तु आंतरिक तौर पर विश्व के प्राय: सभी देश अत्याधुनिक अस्त्र-शस्त्र आयुध के दायरे में शामिल रहेंगे। भारत, पाकिस्तान इससे विशेष प्रभावित होकर किसी भी समय युद्ध के लिए उन्मुख हो सकते हैं। यदि ऐसा नहीं होता है तो भारत-पाक सीमा पर बार-बार युद्ध जैसा उन्माद का साया छाया रहेगा। जिससे भारत-पाक की अर्थ व्यवस्था निश्चित प्रभावित होकर बिदेशी ऋण की ओर न चाहकर भी मजबूरी में लेना पड़ेगा। जिससे इन राष्ट्रों की अर्थ व्यवस्था प्रभावित होकर महंगाई में बढ़ोत्तरी होगी। विश्व के समग्र राष्ट्र अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए कुटिल राजनीति का प्रयोग जारी रखेगी। बंगलादेश, भारत, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, अमेरिका, ब्रिटेन आदि राष्ट्रों में बाढ़, अग्निकांड, रेल-यान दुर्घटना, भूस्खलन, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जान एवं माल की व्यापक हानि होने की आशंका है।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुसर्रफ के गलत नीतियों के कारण भारत-पाक संबंधों में कभी भी तनाव विस्फोटक रूप धारण कर सकता है। पाकिस्तान के उदारवादी नागरिक सदैव भयभीत रहेंगे। कई स्थानों पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएं मजहबी विवाद, राजनीति टकराव एवं हिंसक घटनाओं में बेतहाश वृद्धि होगी। राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ दुष्टनीतियों के कारण अपने ही देश में राजनीतिक चुनौतियों का कठिन सामना करना पड़ेगा। कश्मीर समस्या को लेकर भारत के साथ वहीं पुरानी नीति जारी रहेगी। एवं टकराव की स्थिति बनी रहेगी। जेहाद के नाम पर कश्मीर से भारत के विरुद्ध प्रशिक्षित आतंकवादी प्रछन्न रूप में भेजता रहेगा। औपचारिक तौर पर भारतीय प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी एवं विदेशमंत्री यशवंत सिन्हा के साथ संधि वार्ताओं का क्रम तो चलता रहेगा। परन्तु कोई रचनात्मक परिणाम सामने नहीं आऐगा।

भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, छत्तिसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-काश्मीर, आन्ध्र प्रदेश आदि राज्यों में नरसंहार, बलात्कार, राजनैतिक उठा-पटक, पदपरिवर्तन आदि की संभावना बनी रहेगी। भारत के कई राज्यों में भूकम्प, तूफान आदि अन्य प्राकृतिक प्रकोपों से व्यापक जन-धन की हानि होगी। शासक वर्ग की गलत नीतियों के कारण अर्थ-तंत्र में कमजोरी आएगी। औद्योगिक क्षेत्रों में धीमी प्रगति होने से उत्पादन प्रभावित होगा। रेल-सेवा तथा दूरसंचार व्यवस्था में अनर्गल व्यवधान आएगा। सोना-चांदी, कांसा-पीतल, गुड़, शक्कर, हल्दी, चावल, कपास, किराणा सामग्री, गेहूं, दाल, कोयला, सीमेंट तथा वनस्पति घी, सभी तेल आदि में प्राय: महंगी की अवधारण समय-समय पर कायम रहेगी। चिकित्सा एवं ज्ञान-विज्ञान में नये शोध कार्य होंगे। जिससे भारतीय वैज्ञानिकों को विशेष उपलब्धियाँ प्राप्त होंगी। विकास की आर्थिक गति तेज होते हुए भी भारतीय अर्थ व्यवस्था में कोई खाश उपलब्धियाँ प्राप्त नहीं होंगी। वित्तमंत्री श्री जसवंत सिंह द्वारा किये गए अथक प्रयास के बावजूद भी भारतीय यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया आदि वित्तिय जगत में कोई खास सार्थक नतीजा सामने नहीं आएगे। जिससे बार-बार भारतीय शेयर बाजार .....और आर्थिक संकट से घिरा रहेगा। बार-बार शेयर बाजार प्रभावित होकर आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। विदेशी निवेशकों का शेयर बाजार से विश्वास टूटेगा। स्टॉक मार्केट ऊपर कम उठेगा। नीचे ज्यादा गिरेगा जिसके चलते छोटे और मध्यम निवेशकों का जान निकलेगा। इस वर्ष लोक सभा चुनाव भी होगा। किसी भी राष्ट्रीय पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिलेगा। मिला-जुलाकर सत्तारूढ़ पार्टी की ही सरकार बन सकेगी। राष्ट्रीय कॉंग्रेस, समता पार्टी को अपने ही दलों के भितर घात से कुछ नुकसान उठाना पड़ सकता है। चुनाव में युद्ध उन्माद सी स्थिति दिखाई पड़ेगी। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होगी। जातीय उन्माद स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। बिहार में राष्ट्रीय जनता दल और उत्तर प्रदेश में समाजवादी को भी कुछ नुकसान होने का अनुमान है। भारत का अगला प्रधानमंत्री कोई मौनधारक, बिदूर स्त्री पुरुष होंगे। चुनाव के कारण अनावश्यक खर्च का बोझ बढ़ेगा। जिससे आर्थिक संकट फिर आ सकता है। अनेक बैंक फिर घाटे में रहेंगे। बजट में कर का बोझ बढ़ेगा। रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद संबंधी विवादों में सार्थक प्रयास जारी रहेंगे और अनुकूल नतीजा के आसार हैं। खेल जगत में भारतीय खिलाड़ियों को इस वर्ष अच्छे प्रदर्शन का अनुकूल अवसर और सफलता के आसार हैं। जिससे भारतीय खिलाड़ियों को अन्तर्राष्ट्रीय गौरव प्राप्त होकर भारत का नाम विश्व के समग्रत: राष्ट्रों में बढ़ेगा।

व्यापारीक वस्तुओं की तेजी-मंदी समीक्षा 2004 ई.

व्यापारिक वस्तुओं के उतार-चढ़ाव के अनुमान के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। ग्रहों की गोचर युति-प्रतियुति, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि के गणितीय आधार पर यह स्तंभ आपके बीच प्रस्तुत है। बाजार देश-काल की परिस्थितियों के आधार पर भी निर्भर करता है साथ ही प्राकृतिक घटना चक्र एवं राजनीतिक उतार-चढ़ाव का भी गहरा ताल-मेल बाजार को प्रभावित करता है। समुचित बातों को समझते हुए सम्पूर्ण गणितीय आधार पर यह लेख तेजी-मंदी गतिविधियों पर आधारित यह समीक्षा है। होना तो ईश्वर के अधीन है। इसमें लाभ-हानि की हमारी किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं है।

जनवरी:- यह मास गुरुवार, अश्विनी नक्षत्र, शिव नाम योग, मेषराशि में प्रारंभ हो रहा है। फलत: इस मास में ता. 3 को मंगल रेवती में प्रवेश करने से सोना-चांदी, पीतल-तांबा के भावों में मंदी का संचार होगा जबकि सभी अनाजों के भावों में भी मंदी का वातावरण रहेगा। सरसों व सभी डिब्बा बंद तेलों में अत्यधिक तेजी का बोल-बाला रहेगा। ता.4 को गुरु वक्री होने से तेल, घी तथा प्रत्येक व्यापारिक जिन्सों में तेजी से लाभ मिलेगा। ता. 6 को बुध मार्गी होने से पुन: बाजार मंदी की ओर बढ़ेगा। घी, गुड़, खाण्ड में तेजी, गेहूं, जौ, चना आदि अनाजों में मंदी का वातावरण रहेगा। ता. 9 को शुक्र कुंभ में प्रवेश करने से बाजार में असमंजस की स्थिति रहेगी। चावल, चीनी, चांदी-सोना, घी में विशेष मंदी का संचार होगा। साथ ही रुई, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, बाजरा तथा सफेद चीजों में मंदी कायम रहेगी। अत: बाजार के रुख देखकर काम करें। ता. 14 को सूर्य मकर राशि में आकर नेपच्यून के साथ योग बना रहा है। फलत: घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, रुई, चांदी में तेजी बनेगी। गेहूं, चावल, बारदाना में मंदी की ओर रुख रह सकता है। ता. 24 को मंगल स्वयं राशि मेष में प्रवेश करने से गेहूं, चना, सरसों, किशमिश, राजमा, हल्दी, सोना-चांदी, रुई एवं वनस्पति घी, सभी तेलों में अचानक तेजी का संचार होगा। कुल मिलाकर इस मास में चावल, चांदी, गेहूं, चना सभी अनाजों, किराना सामग्रियों के भाव के साथ-साथ सोना में मंदी का ही वातावरण रहेगा। जबकि तेल वनस्पति में प्राय: तेजी बरकरार रहेगी।

फरवरी:- यह मास रविवार, रोहिणी नक्षत्र, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 3 को बुध, मकर राशि में प्रवेश करने से साथ ही सूर्य से योग होने से रुई, सोना-चांदी, सभी तेल, सरसों, दलहन में अच्छी तेजी या मंदी के झटके आएंगे। मंदी में खरीदें और तेजी में सौदा काट लें। इसी तारीख को शुक्र मीन राशि में विचरण करने से रुई, काला कपास, सूत कपड़ा में भी विशेष तेजी का संचार हो सकता है। ता. 15 को बुध पूरब में अस्त होने से एक मास में घी आदि रस पदार्थ मंदी में रहेगा। रुई में घटा-बढ़ी चले। पहले तेज फिर मंदी और अन्त में फिर तेज रहें। सोने में घटा-बढ़ी के बाद तेजी रहेगी। ता. 22 को बुध कुंभ में प्रवेश करने से नेपच्यून के साथ संबंध बनाएगा। फलत: अलसी, रुई और चांदी में जोरदार मंदी एवं तेजी के झटके आएंगे। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, चना एवं सभी तेलों में अत्यधिक तेजी रहेगी। ता. 29 को शुक्र मेष में आने से चांदी, चावल, जौ, गेहूं, बाजरा, मेवा, किराना बाजार में प्राय: मंदी का संचार होगा। कुल मिलाकर इस मास में गुड़, तिल, तेल, घी, सरसों, चांदी में उतार-चढ़ाव परन्तु गेहूं, केशर, लाल चंदन, लाल मिर्च, ताम्बा, सोना, धान आदि में तेजी का वातावरण रहेगा।

मार्च:- यह मास सोमवार, आर्द्रा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। बाजार का रुख पहले जैसा ही रहेगा। फिर भी व्यापार जगत में ऐसा वातावरण रहेगा कि लोगों को रुख समझ नहीं आएगा। कुछ बाजारों में रह-रहकर अचानक तेजी बनेगी तो कुछ नीचे की ओर जाएंगे। जिन बाजारों में बाहरी मांग के ऊपर कारोबार होता है उनमें भाव ऊंचा होने के कारण अभी बाहर के व्यापारी आवश्यक जरूरत मंद का ही माल सौदा करेंगे। बाहर के व्यापारी लाम्बी खरीदारी करने से बचेंगे। ता. 8 को शनि मार्गी होने से सभी दलहन, तिलहन, किराना सामग्रियों में तेजी की अवधारणा रहेगी। सोना-चांदी में मंदी का दौर जारी रहेगा। यहां से सोना का बाजार धीरे-धीरे गिरता जाएगा। जो 15 अप्रैल तक लगातार गिरते जाना चाहिए। ता. 14 को सूर्य मीन संक्रांति से अचानक मंदी में चले जाएंगे। इससे गेहूं, चना, चावल, सरसों, मूंगफली, राजमा में अच्छी मंदी आ जाएगी। सूर्य के मीन में प्रवेश करने के पूर्व ही बुध भी मीन राशि में प्रवेश कर गया है। अत: जिस बाजार में मंदी पहले से बनी रही उसमें अभी तेजी बनने का योग नहीं है। ता. 18 को बुध पश्चिम में उदय होने से मास के मध्य में कपास, रुई, चांदी, गुड़, चीनी, सरसों, सोना में तथा किराने के अनेक आयटम में कुछ तेजी आकर पुन: बाजार गिरने लगेगा। ता. 26 को बुध मेष में, ता. 28 को शुक्र वृष में आने से तिलहन, अलसी, बनस्पति घी, चावल, गुड़, राजमा, मेवा का भाव में अचानक तेजी का संचार होगा जबकि चना, गेहूं का भाव मंदी में रहेगा।

अप्रैल:- यह मास वृहस्पतिवार, आश्लेषा नक्षत्र, सिंह राशि में प्रारंभ हो रहा है। मास के शुरूआत में अधिकतर बाजारों में मंदी का ही रुख रहेगा। ता.7 को बुध वक्री होने से रुई, कपास, वस्त्र, सूती वस्त्र, चांदी में मंदी एवं तेजी के अच्छे झटके आएंगे। मंदी में खरीदें एवं तेजी में सौदा काट लें। सभी अनाजों में मंदी का संचार होगा। ता. 9 को बुध पश्चिम में अस्त होने से वस्त्र, रुई एवं शेयरों में 15 दिनों में मंदा आने का संकेत है। ता.13 को सूर्य मेष में आने से अन्नादि सभी पदार्थ, गेहूं, चना, सरसों, रुई, कपास व सभी वस्तुओं में मंदी आएगी। ता. 22 को बुध मीन में आने से रुई, गुड़, खाण्ड एवं शक्कर में मंदी बनेगी। जबकि सोना-चांदी में उतार-चढ़ाव के साथ पहले तेज होकर बाद में मंदी में बदल जाएगा। बिनौला में तेजी ही रहे। ता. 26 को बुध पूरब में उदय होने से बाजारों का रुख बदल जाएगा। सावधानी से काम करें। रुई में पहले मंदी 25 दिन के अंदर रुई में झटके की तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाज, तिल, घी, लालमिर्च, चावल में तेजी बनेगी। इनका संग्रह लाभप्रद होगा। किराना सभी सामग्रियों एवं सोना-चांदी, बनस्पति, तेल, मेवा में अचानक तेजी का संचार होगा। ता. 27 को मंगल मिथुन में आने से चावल, चांदी, वनस्पति, राजमा, सरसों, गुड़ में अचानक अत्यधिक तेजी का संचार होगा। फिर चौथे दिन से बाजार किसी अफवाह से प्रभावित हो सकता है।

मई:- यह मास शनिवार पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, कन्याराशि में प्रारंभ हो रहा है। 2 मई से बुध मार्गी होकर बाजार को संभालने की कोशिश करेगा। अनेक वस्तुओं के भावों में स्थिरता आते हुए लगेगी तथा कुछ में अगले ही दिन से तेजी का रुख भी बनना शुरू हो जाएगा। गुड़, खाण्ड, रशकश पदार्थ के भाव में सुधार होगा। तथा यह मजबूती की ओर चल पड़ेगी। अनाजों में चावल, चना, मटर, गेहूं के भावों में तेजी का रुख बनेगा। रुई कपास के भावों में मंदी का संचार होगा। किराने में मिर्च, जीरा, दालचीनी, काजू, किशमिश, अखरोट, पोस्तादाना, सौंफ में तेजी का रुख बनेगा। सरसों, मूंगफली के भाव भी तेजी में रहेंगे। ता. 5 को गुरु मार्गी होने से उपरोक्त सामग्रियों के भावों में तथा सोना-चांदी में भी तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। ता. 13 को सूर्य मेष में आने से सोना-चांदी एवं लाल पदार्थ सामग्रियों के भाव तेज रहेंगे। ता.18 को शुक्र वक्री होने से गुड़, खाण्ड में तेजी एवं चावल, गेहूं, दलहन,तिलहन में मंदी का संचार होगा। जबकि दूध-दही, घी, डिब्बा बंद तेलों में विशेष तेजी का संचार रहेगा। ता. 28 को शुक्र वृष में प्रवेश करने से धातुओं में चांदी में सुधार का रुख बनेगा। अलसी का भाव धीरे-धीरे सुधरने की ओर चलेगा। तेजी-मंदी के विचार से यह महीना कुछ जीन्सों को छोड़कर तेजी का तढख पकड़ेगा। गेहूं, चावल, चना, गुड़, खाण्ड, अलसी तथा अनेक जिन्सों में तेजी का वातावरण उतार-चढ़ाव के मध्य प्राय: जारी रहेगा। बुध मार्गी होने से इस महीने में विशेष तेजी गुड़, खाण्ड, अलसी, चावल में बनना चाहिए। महीना का अंत आशा के साथ समाप्त होगा।

जून:- यह मास मंगलवार स्वाती नक्षत्र बाजारों में अफरा-तफरी का माहौल बन जाएगा। बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. 4 को शुक्र पश्चिम में अस्त होने से बाजार उलटने का कोशिश करेगा। यह सोना-चांदी, चावल, गेहूं, बाजरा, सरसों, गुड़, खाण्ड, रशकश पदार्थ के बाजार को अस्थिर कर देगा। सोना, कपास, सरसों, मूंगफली, चना, चावल आदि के भाव में मंदी लाने में पुरजोर समर्थन करेगा और यदि ऐसा हुआ तो बाजारों में विशेष मंदी का संचार होगा। ता. 7 को बुध पूरब में अस्त होने से एक मास में घी, रशकश पदार्थ मंदे होते हैं। रुई में उतार-चढ़ाव फिर मंदी और अंत में विशेष तेजी होती है। सोने में घटा-बढ़ी के बाद कुछ तेजी की अवधारणा बनती है। ता.14 को सूर्य मिथुन में, इसी तारीख को मंगल कर्क में प्रवेश करने से प्राय: रुई, सरसों, अरण्डी, तेल, अलसी में मंदी बनेगी। परन्तु गुड़, शक्कर, अनाज आदि में जोरदार तेजी बनेगी। ता.15 को शुक्र पूरब में उदय होने से चावल, घी, तेल, बिनौला, सरसों, चांदी में तेजी बनेगी। रुई तथा दलहन के भाव गिर जाएंगे। ता.17 को बुध मिथुन में प्रवेश करने से चांदी, रुई, गेहूं, जौ, चना, बाजरा तथ श्वेत वस्तुओं में मंदी बनेगी। ता. 20 को शनि अस्त होने से सभी अनाजों के भाव, तेलों में तेजी का संचार होगा। अनाजों के भाव भी तेज होंगे। ता.30 को शुक्र मार्गी होने से अचानक बाजार का रुख बदलेगा। बाजार के रुख को देखकर काम करें। मेरे समझ से रुई में मंदी का रियेक्शन आये। चांदी, सोना, तेज रहे। सभी दाल, गुड़, घी के संग्रह से आगे अच्छा लाभ मिल सकता है।

जुलाई:-यह मास गुरुवार ज्येष्ठा नक्षत्र, धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता.1 को बुध कर्क राशि में आने से रुई, कपास में मंदी बने परन्तु बुध-सूर्य के साथ मेल हो रहा है तो तेल, जौ, गेहूं के भावों में जोरदार तेजी बनेगी। ये तेजी कम से कम एक सप्ताह तक जारी रहना चाहिए। ता.16 को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश कर वायदा या हाजिर बाजार में विशेष उथल-पुथल व तेजी करेगा। रुई, गुड़, शक्कर, तिल, सरसों, सोना-चांदी में तेजी तथा गेहूं, चना, जौ, अरहर में मंदी का अवधारणा रहेगा। जो कम से कम चार दिनों तक बरकरार रह सकती है। ता.20 को बुध सिंह राशि में सूर्य के साथ मेल करेगा। सोना-चांदी, रुई में तेजी तथा गुड़, शक्कर, चीनी में मंदी आएगी। ता. 25 को मंगल अस्त होने से रुई में झटके के साथ मंदी एवं तेजी के रियेक्शन आएंगे। लेकिन तेजी प्रधान रहेगी। सरसों, अरण्ड, अलसी, तेल आदि में मंदा आने की उम्मीद होने पर भी तेजी बनेगी। चांदी में घटा-बढ़ी, चावल, गेहूं, चना, बाजरा, गुड़, शक्कर तेज होंगे। ता. 26 को शनि उदय होने से एक सप्ताह के अंदर में रुई, शेयर, अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला एवं मूंगफली में मंदी का वातावरण रहेगा। सब्जी, लोहा, शीशा, रंग, हार्डवेयर, मकान मेटेरियल आदि पदार्थ, लकड़ी, जलावन, कोयला, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी का संचार होगा। ता.31 को शुक्र मिथुन में तथा इसी तारीख को मंगल सिंह में प्रवेश होने से यह खेती अच्छी पैदावार होने के बावजूद प्राकृतिक उत्पात से व्यापक जन-धन की हानि होती है। यह ग्रह मंगल के साथ शुक्र योग करेगा। हो सकता है बाजार अचानक ही वायदा हाजिर बाजार में भारी तेजी का संचार भी हो सकता है। सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, गेहूं, अलसी, रुई, लालमिर्च में जोरदार तेजी बनने की उम्मीद है। भारत के ख्याति प्राप्त राजनेता अथवा उद्योगपति का निधन एवं भारी जन समूह की घटना चक्र में मृत्यु संभव है। ईश्वर सबकी रक्षा करें।

अगस्त:- यह मास रविवार, श्रवण नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। यह मासारंभ मंदी की धारणा से अधिकांश बाजारों में प्रारंभ होगा। यह मंदी तारीख 9 तक बनी रहेगी। ता. 10 को बुध वक्री होगा। फलत: खाण्ड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर तथा शेयर बाजार में तेजी का संचार होगा। रुई, चांदी, सोना में घटा-बढ़ी के बाद मंदी बनेगी जबकि वनस्पति घी, सरसों तेल में भी बाजार गिरता नजर आएगा। जिसका कुप्रभाव कम से कम ता.15 तक जारी रह सकता है। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में आकर सोना-चांदी, तिल, तेल, अरण्डी, सरसों में जोरदार तेजी बनेगी। जबकि शेयरों एवं चावल, गेहूं, सभी दालों में कुछ मंदा रुख रहेगा। इसी तारीख को बुध अस्त होने से दस दिनों तक बाजार में असमंजस की स्थिति कायम रहेगी। हो सकता है प्राकृतिक उत्पात अथवा राजनीतिक उत्पात, सत्ता परिवर्तन अथवा देश की सीमा पर अचानक ही काले बादल छाए रहेंगे। इन समयों में रेल-यातायात से व्यापक जन-धन हानि होगी। इससे बाजार विशेष प्रभावित हो सकता है। ता. 27 को गुरु कन्या में आने से रुई, चांदी, सूत के भाव मंदे जबकि गेहूं, चना, जौ, चीनी, सोना के भाव में तेजी बनेगी। ता. 31 को बुध पूरब में उदय होने से गेहूं, जौ, चना, लालमिर्च, घी, बिनौला, अलसी, चांदी में तेजी तथा रुई, सोना में मंदी बनेगी।

सितम्बर:-यह मास बुधवार, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में सट्टे की एकाध जिन्सों को छोड़कर सभी में मंदी की धारणा से शुरूआत होगी। ता. 1 को शुक्र कर्क में प्रवेश होने से घी, गुड़, तिल, तेल, वनस्पति, डिब्बा बंद तेल, अलसी, अरण्डी, सरसों एवं शेयर बाजार में तेजी का रुख बनेगा। सभी प्रकार के अनाज, राजमा, किशमिश, सहीजरा, दालचीनी, अखरोट, साबुदाना भी तेज होंगे। सोना-चांदी में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। ता. 2 को बुध मार्गी होने से रुई, अलसी, बिनौला, गुड़ तथा शेयर में मंदी का संकेत है। ता. 5 को शनि कर्क में तथा इसी तारीख को गुरु अस्त होने से सरसों, अलसी, तेल, वनस्पति, चना, गेहूं, चावल, हल्दी, खली, सोना आदि के भावों में परिवर्तन करेगा। अस्त होने के पूर्व तेजी हो तो मंदी और मंदी हो तो तेजी हो जाती है। यह शिलशिला कम से कम दस दिनों तक चलना चाहिए। ता. 16 को मंगल कन्या में, सूर्य भी कन्या में प्रवेश होने से रुई गेहूं, सोना, चांदी, कपास, अलसी में तेजी बनेगी। ता.20 को बुध पूरब में अस्त होने से रुई, कपास, मूंगफली, राजमा, छोहारा, बारदाना, गेहूं, चने में तथा शेयर बाजार में मंदी का रुख बनेगा। ता.25 को बुध कन्या राशि में प्रवेश करने से सोना-चांदी, पीतल, तांबा आदि धातुओं में सप्ताह अंत तक तेजी करेगा। ता. 28 को शुक्र सिंह राशि में आने से रुई, चना, मटर, गेहूं, चावल, रेशम एवं चांदी आदि में तेजी होगी।

अक्टूबर:-यह मास शुक्रवार, भरणी नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 3 को गुरु उदय होने से चांदी, चावल तेज होगा और सोना में मंदी की अवधारणा बनेगी। यह शिलशिला कम से कम 7 दिन तक चलना चाहिए। ता.12 को बुध तुला में प्रवेश होने से रुई, कपास, चीनी में तेजी तथा अलसी, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली, मेवा, राजमा, सोयाबीन, चांदी में मंदी का वातावरण रहेगा। जो तीन दिन तक कायम रह सकता है। ता. 16 को सूर्य तुला राशि में बुध के साथ मेल करेगा, फलत: अलसी, गेहूं, सरसों, सोना, तांबा में तेजी तथा चांदी, रुई, कपास में मंदी का रुख रहेगा जिसका प्रभाव एक सप्ताह तक रहेगा। ता. 23 को शुक्र कन्या में प्रवेश करके चावल, चीनी, अरहर, रुई, सिल्क, टेक्सटाइल में मंदी देगा। तिलहन, तेल एकाध बाजार में मंदी आएगी। इसका प्रभाव तीन दिनों तक बरकरार रहेगा। ता. 26 को बुध पश्चिम में उदय होने से गेहूं, जौ, चना, लालमिर्च, घी, बिनौला, अलसी, चांदी में तेजी तथा रुई, चावल, सोना में मंदी बनेगी। ता. 31 को बुध वृश्चिक में आने से गेहूं, जौ, वनस्पति घी, गुड़, चने, किशमिश, राजमा, सोयाबीन, सभी दालों, गुड़, बाजरा में तेजी बनेगी।

नवम्बर:-यह मास सोमवार, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को मंगल तुला में आने से चांदी, दालों,उड़द, गुड़, घी, कपास, रुई, सन, बारदाना, सरसों, तिलहन के भाव गिरेंगे। ता. 4 को मंगल उदय होने से पांच दिन में रुई, उड़द, तिल, डिब्बा बंद तेल, अलसी में तेजी की अवधारणा बनती है। जबकि अनाजों में मंदी का वातावरण दृष्टिगोचर होता है। ता. 8 को शनि वक्री होने से रुई, सोना-चांदी में घटा-बढ़ी चले एवं अनाजों में मंदी की अवधारणा होती है। आगे मास में चावल, घी, लौह उपकरण, कालीमिर्च, उड़द में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। ता. 15 को, सूर्य वृश्चिक में प्रवेश होने से अलसी, मूंग में तेजी बनेगी। जबकि रुई, चांदी तथा शेयर बाजार में उथल-पुथल के बाद तेजी बनेगी। ता. 17 को शुक्र तुला में प्रवेश होने से सोना-चांदी, रुई, कपास, सूत, सन, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं, उड़द, मूंग आदि अनाजों व दलहन में तेजी बनेगी। शुक्र के विशेष प्रभाव रुई, गुड़ एवं चांदी के बाजारों पर देखा गया है। ता. 23 को बुध धनु में प्रवेश होने से घी, गेहूं, जौ, चना, गुड़, बाजरा में तेजी बनेगी। ता. 30 को बुध वक्री होने से खाण्ड, बिनौला, तिल, तेल, घी, गुड़, शक्कर तथा शेयर बाजार में भी जोरदार तेजी बनेगी जबकि रुई, सोना, चांदी, चावल में घटा-बढ़ी के बाद मंदी बनेगी।

दिसम्बर:-यह मास बुधवार, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को मंगल विशाखा में, ता. 2 को सूर्य ज्येष्ठा में तथा ता. 3 को शुक्र विशाखा में प्रवेश करने से सोना-चांदी, गुड़, शक्कर के भावों में मंदी परन्तु रुई, तिल, तेल के भावों में तेजी बनेगी। ता. 5 को बुध पश्चिम में अस्त होने से अनाज, घी आदि में 33 दिनों में मंदी बनती है। रुई में घटा-बढ़ी पहले तेज, बीच में मंदी अंत में फिर तेज हो। सोना-चांदी में घटा-बढ़ी के बाद तेज हो। मासान्त तक तेजी-मंदी के रियेक्शन रहेंगे। ता. 7 को सूर्य वृश्चिक में प्रवेश होने से रुई, गुड़, चांदी, चावल, पशुचारा, बिनौला, तिलहनों में तेजी बनेगी। ता. 11 को शुक्र वृश्चिक में प्रवेश होने से सोना-चांदी, रुई, कपास, चावल, मूंग, उड़द के भावों में तेजी लायेगा। ता. 15 को सूर्य धनु राशि में प्रवेश होने से रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सोना, चांदी आदि में तेजी बनेगी। अनाज, गुड़, रशकश पदार्थ एवं लाल वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी। तेजी से तुरंत लाभ लेलें। आगे शीघ्र ही मंदी का संचार होगा। ता. 16 को बुध पूरब में उदय होगा। इसी तारीख को मंगल वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। बाजारों का रुख बदल सकता है। सावधानी से कार्य करें। रुई में पहले मंदी, 20 दिन के अंदर रुई में झटके की तेजी बनेगी। गेहूं, चना आदि अनाज, तिल, घी एवं लालमिर्च में तेजी बनेगी। ता. 20 को बुध मार्गी होने से मासान्त तक गेहूं, चना में तेजी तथा अलसी, बिनौला, मूंगफली, राजमा, किशमिश, छोहारा, किराना सामग्री और गुड़, रुई में जोरदार मंदी का संचार होगा। अत: सोच-विचार कर काम करें। घरेलू इंधन, गैस महंगी होगी। उपभोक्ता सामानों के मूल्यों में पहले की अपेक्षा काफी कमी होगी।

इस तरह वर्षभर के प्रमुख बाजारों की तेजी-मंदी अति संक्षिप्त में यह आलेख तेजी-मंदी समीक्षा के रूप में आप विज्ञ पाठकों के बीच प्रस्तुत है। आशा है कि यह आलेख आपको मार्गदर्शन में पर्याप्त मार्गदर्शन करने में सहायक होगा। शुभकामनाओं के साथ सभी जिन्सों का तेजी-मंदी समीक्षा एक साथ दैनिक रूप में मुख्य-मुख्य चांसों का उल्लेख कर विस्तार से स्पेशल रिपोर्ट तैयार किया जाता है। जो भी महाशय चाहें तो यह स्पेशल रिपोर्ट सेवा शुल्क भेजकर हमारे यहां से विस्तार से रिपोर्ट प्राप्त कर सकते हैं। एक माह का 1000 रुपया, छ: माह का 2500 रुपया तथा एक वर्ष का 4200 रुपया निर्धारित है। शुल्क आचार्य पंडित टुन-टुन शास्त्री, पटना, बिहार के किसी भी बैंक के ड्राफ्ट भेजकर रिपोर्ट प्राप्त किया जा सकता है।

शेयर बाजार समीक्षा शेयर बाजार की चाल क्या है? संभावनाएं भविष्य में।

सामान्यतः यह माना जाता है कि शेयर बाजार में काम करने वाले स्त्री-पुरुष चाहे किसी के नाम से भी कारोबार करें, उसे शेयर बाजार से लाभ या हानि का फल अपनी जन्म पत्रिका अथवा हस्तरेखा में फलित होने वाले रेखाओं के अनुसार प्राप्त होता है। शेयर में घाटे की संभावना को जानने समझने के बाद भी व्यक्ति स्वयं को कारोबार करने से रोक नहीं सकता क्योंकि विधि के विधान को टालना सभी उसके वश में नहीं है। कुछ व्यक्ति इस कारोबार से अथाह धन अर्जित कर लेतें हैं तो कुछ की किस्मत में केवल धन की बर्बादी हेतु ही इस कारोबार में आना होता है। कुछ को सट्टा कारोबार में लाभ होता है तो कोई डिलिवरी आधारित कारोबार में, कोई ऑटो मोबाईल में धन कमा सकता है तो कोई साफ्टवेयर में। फर्क सिर्फ उसकी कुण्डली अथवा हस्तरेखा में विराजमान ग्रह-स्थिति एवं महादशा का ही रहता है। शेयर कारोबार प्रारंभ करने के पहले अपनी जन्म पत्रिका या हस्त परीक्षण कराना संभावित खतरों के प्रति चेतावनी तो दे ही सकता है साथ ही व्यक्ति का मार्गदर्शन कर उसे भारी अनिष्ट से सावधान भी कर सकता है। व्यक्ति को कब, कहां, कैसे, किस शेयर में कारोबार करना चाहिए ताकि उससे लाभ प्राप्त हो सके इसका निर्धारण भी कुण्डलीय अथवा हस्त विश्लेषण से ही संभव है। वास्तविकता में जब तक लाभ होता है तब तक तो शेयर कारोबार को कोई ज्योतिषीय समीक्षा अच्छी नहीं लगती तथा वह समस्त लाभ का श्रेय स्वयं की बुद्धि विवेक को ही देता है। परन्तु घाटा होते ही उसका सारा सपना चूर-चूर हो जाता है और सारा दोष भाग्य पर थोप देता है। यह स्तंभ विगत कई वर्षो से नियमित प्रकाशित हो रहा है। इस स्तंभ के सहारे बहुत सारे पाठकगण सफलता पाकर मेरे पास शुभकामना पत्र प्रेषित किए हैं, मैं उन पाठकों का विशेष आभारी हूं जिन पाठकों ने मेरी मनोकामना को बढ़ाया है।

जनवरी:- यह नूतन मास गुरुवार, अश्विनी नक्षत्र, शिवयोग, मेषराशि में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में शुक्र मकर में, सूर्य बुध में, मंगल मीन में, राहु मेष में, गुरु सिंह में, शनि मिथुन में, केतु तुला में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. 4 को गुरु वक्री होगा। ता. 6 को बुध मार्गी होगा। ता. 9 को शुक्र कुंभ में, ता. 14 को सूर्य मकर में, ता. 24 को मंगल मेष में स्वयं राशि में स्थान परिवर्तन करेगा। फलतः सूर्य वर्षारंभ में धन में, मंगल वर्षारंभ से ही मीन में, शुक्र वर्षारंभ से ही मकर में तथा बुध धनु में, गुरु सिंह में, शनि मिथुन में, राहु मेष राशि में वर्षारंभ से ही विचरण करेंगे। ता. 1 को शेयर बाजार खुलेगा। फलतः ता. 1 से 2 तक बाजार में स्थिरता कायम रहेगी। आप चाहें तो नई-पुरानी अर्थ-व्यवस्थाओं के शेयरों में मंदी देखें तो सौदा अवश्य कर लें। अल्प समय में आपका किया गया सौदा लाभकारी हो सकता है। ता. 5 को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इससे पहले ही गुरु वक्री हो रहा है फलतः ता. 5 से 9 तक सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, रिलायंस, इनफोसिस टेक्नॉलाजी, हीरो होण्डा, टीवियस सुजुकी, बजाज ऑटो तथा सीमेंट सेक्टर, बैंक शेयरों में निवेशकों के रुझान से बाजार में प्रायः तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। यह शिलशिला कम से कम 23 तक थोड़ा उतार-चढ़ाव पूर्ण बाजार तेजी में रहना चाहिए। बारी-बारी से विभिन्न सेक्टरों के शेयरों में तेजी दिख पड़ेगी। ऐसे इस मास में सूर्य बुध की युति देश के अनेक भागों में धार्मिक व साम्प्रदायिक उपद्रवों को बढ़ाने में समर्थन करेगा। जिससे बाजार प्रभावित भी हो सकता है। अच्छी संभावनाओं को देखते हुए वर्तमान बाजारों में निवेशकों के लिए प्रत्येक निचले स्तर पर निवेश करते रहना उचित है। ता. 24 को मंगल मेष में आने से बाजार एक बार फिर तेजी की ओर आ जाएगा। स्टील तथा साफ्टवेयर पुरानी अर्थ-व्यवस्था के शेयरों में तेजी कायम रहना चाहिए। विदेशी वित्तिय संस्थाओं के सहयोग मिलने से टेलीकम कम्पनी, सत्यम, इनफोसिस एवं पेट्रोरसायन शेयरों में विशेष तेजी दिख पड़ेगा। जिस दिन आप बाजार मंदा देखें तो सम्पूर्ण निवेश को 2-3 किस्तों में करना ही उचित प्रतीत होता है।

फरवरी:- यह मास रविवार, रोहिणी नक्षत्र, वृष राशि में प्रारंभ हो रहा है। इस मास में ता. 3 को बुध मकर में, इसी तारीख को शुक्र मीन में, ता. 15 को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. 13 को सूर्य कुंभ में, ता. 22 को बुध कुंभ में, ता. 29 को शुक्र मेष में स्थान परिवर्तन करते हुये विचरण करेगा। ता. 2 को मृगशिरा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. 2 से 6 तक बुध मकर में प्रवेश करके सूर्य से युति कर रहा है। वश यहीं से बाजार की मुसीबत शुरू हो जायेगी। पिछले समय में बाजार में थोड़ा-बहुत सुधार आया था, वह बिकवाली दबाब से टूटना शुरू हो जायेगा। ता. 2 से 6 तक दूरसंचार मीडिया, सूचना, प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियों, रिलायंस, आई.टी.सी. तथा पेट्रोरसायन शेयरों में बिकवाली विशेष होगी। यह शिलशिला ता. 13 तक जारी रह सकता है। बाजार में तेजी कम मंदी की अवधारणा कायम रहेगी। ता. 15 को बुध अस्त होने से अचानक ही विश्व के समग्रतः राष्ट्रों में किसी घटना या अफवाह के कारण बाजार में सभी बिकवाल नजर आयेंगे। जो ता.23 तक लगातार बेचते रहेंगे। विशेष तौर पर दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी, कम्पयूटर, हार्डवेयर, साफ्टवेयर, बैंकों के शेयर तथा फार्म सेक्टर के चुनिन्दा शेयर आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता. 24 से बाजार सुधरते ही खरीद कर चलिए। हालांकि ता.27 को मंदी का जोरदार झटका लग सकता है। ता. 28 फरवरी को वजट पेश होगा। यदि गत वर्ष की भांति दिन में ही पेश हुआ तो पूरी संभावना रहेगी कि बाजार पर प्रतिकूल प्रभाव पूरा मास बना रहेगा। मेरे समझ से यह मास मंदी का लग रहा है। आप क्षणिक तेजी देखकर कदापि लोभ में न पड़ें। अन्यथा इससे निकलना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। आप चाहें तो मास के अंत में मंदी का सौदा नई-पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं तथा रिलायंस समूह शेयरों में कर सकते हैं।

मार्च:- यह मास सोमवार, आर्द्रा नक्षत्र, प्रीतियोग, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 8 को शनि मार्गी होगा। ता. 9 को बुध मीन में, ता. 11 को मंगल वृष में, ता. 14 को सूर्य मीन में, ता. 18 को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. 26 को बुध मेष में, ता. 28 को शुक्र वृष में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। ता. 1 को बाजार खुलते ही बिकवाली के दबाव से बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। परन्तु ता. 2 से वजट की तेजी इस महीने के शुरुआती दिनों से कायम रहेगी। सत्यम कम्प्यूटर, ए.सी.सी.एल टेक्नो., मास्टेक, इन्फोसिस टेक्नो., विप्रो., हीरो होण्डा, बजाज आटो, एसीसी गुजरात, अम्बुजा सीमेंट, हिन्दुस्तान लीवर, रैनवैक्सी, डाक्टर रेडी लैब, सन फार्मा, एचडीएफसी, यूटीआई, एसबीआई, विजया बैंक आदि के शेयरों में विशेष तेजी की अवधारणा रहेगी। वर्तमान परिस्थिति में दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां कमजोर प्रतीत होते हैं। यह शिलशिला कम से कम 12 तक जारी रहेगा। ता. 15 से 17 तक बाजार अनिश्चितता की स्थिति में रहेगा। इस समय कोई राजनीतिक उलट-फेर अथवा कोई गलत अफवाह से बाजार अचानक प्रभावित हो सकता है। इसमें बाजार का रुख दोनों ओर चलेगा। यदि आप इन समयों में मंदी का सौदा कर लें तो कम समय में पैसा आते देर नहीं लगेगा। ता. 18 से बाजार तेजी की ओर बढ़ना शुरू करेगा। विशेष तौर पर दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां, डाक्टर रेडी लैब, सन फार्मा, सिफला, रैनवैक्सी, हुगुल साफ्टवेयर, विजुवल साफ्टवेयर, ज्योफिक मास्टेक, कैसलटेट, मैस्कॉन, ग्लोबल, सत्यम, विप्रो, इन्फोसिस, टेक्नो. शेयरों में तेजी की संभावना ता. 31 तक बनी रहनी चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में टेल्को, टिस्को, रिलायंस कम्पनियों के शेयरों में तथा आटोमोबाइल, स्टील सेक्टर कम्पनियों के शेयर कमजोर प्रतीत हो रहे हैं। अमेरिका द्वारा भारतीय स्टील के आयात पर डम्पिंग ड्यूटी लगने की आशंका बनी हुई है।

अप्रैल:- यह मास गुरुवार, आश्लेषा नक्षत्र में प्रारंभ हो रहा है। मासारंभ में ही ता. 22 को बुध मीन में, ता. 26 को बुध पूरब में उदय होगा। ता. 27 को मंगल मिथुन में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। ता. 1 को बाजार खुलते ही विदेशी समर्थकों के समर्थन से नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में तेजी की अवधारणा कम से कम ता. 9 तक जारी रहेगी। इन समयों में दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां, बैंकों तथा फार्मा सेक्टर के चुनिन्दा शेयरों में विशेष तेजी दिख पड़ेगी। आप जिस दिन भी बाजार तेज देखें ता. 9 तक बाजार से सौदा काट कर बाहर हो जाएं। यह ध्यान रखें ता. 7 एवं 8 को बाजार अचानक अफवाह से विशेष तेजी में जा सकता है। यह एक बहुत ही सुंदर चांस है। अवसर का लाभ अवश्य उठा लें। ता. 9 को बुध 7 घंटा 33 मिनट पर अस्त होगा। फलतः ता.12 से फार्मा में रैनवैक्सी, सन फार्मा, सिपला, डाक्टर रेडी लैब, एचडीएफसी, यूटीआई, एसबीआई, सत्यम, रोल्टा, विप्रो, इन्फोसिस टेक्नो., आईपीसीएल, एचपीसीएल, आईपीसी आदि शेयर तथा दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनी का शेयर आंधी की तरह गिरता नजर आएगा। यह शिलशिला कम से कम ता. 21 तक जारी रह सकता है। यह मंदी की स्थिति विश्व

के अनेक मुद्रा बाजार संकट के गिरफ्त में होगी। इस समय में विश्व के कई राष्ट्रों में मुद्रा संकट उत्पन्न होने का योग बन सकता है। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. 22 से पुनः बुध मीन में प्रवेश होने से बाजार धीरे-धीरे सुधार की ओर आएगा। ता. 26 को बुध पूरब में उदय होने से हार्डवेयर, साफ्टवेयर, फार्मा सेक्टर तथा वित्तिय संस्थाओं के शेयरों में विदेशी निवेशकों के अचानक समर्थन से बाजार धीरे-धीरे तेजी की ओर जाएगा। यह शिलशिला ता. 30 तक जारी रह सकता है।

मई:-यह मास शनिवार, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, कन्या राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 2 को बुध मार्गी होगा। ता. 5 को गुरु मार्गी होगा। ता. 6 को शुक्र मिथुन में, ता. 9 को बुध मेष में, ता. 13 को सूर्य मेष में, ता. 18 को शुक्र वक्री होगा। ता. 28 को शुक्र वृष में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। ता. 3 को चित्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही तेजी का चांस रहेगा। पिछले मास की अपेक्षा इस माह बाजार काफी अच्छा होने का चांस है। इस माह बहुत अधिक संभावना है कि एसीसी, गुजरात अंबुजा सीमेंट, लार्सन एण्ड टर्बो, दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियों, टेल्को, टिस्को, हीरो होण्डा, टिवियस सुजुकी, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, इन्फोटिक सेक्टर शेयरों में कारोबार अधिक होंगे। उतार-चढ़ाव के मध्य यह शिलशिला ता.10 तक जारी रहेगा। ता. 11 को सूर्य कृतिका में आने से वित्तीय संस्थाओं की खरीददारी हो सकती है। जिससे बाजार में हल्की तेजी का रुख बनना प्रारंभ हो जाय। यदि इस जगह आप बाजार में तेजी देखें तो बिना हिचक सौदा कर लेना चाहिए। एक बार फिर नई अर्थ व्यवस्था के शेयर, साफ्टवेयर, हार्डवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां तथा सीमेंट, पेट्रोरसायन के शेयर चलना प्रारंभ कर देंगे। और कम समय में अच्छा मूल्य बना लेंगे। ता. 13 को सूर्य मेष राशि में आ जाने से बाजार में तेजी का रुख और तेज हो जाएगा। अतः जिस दिन बाजार तेज देखें सौदा काटकर मंदी का सौदा विभिन्न सेक्टरों में आप अवश्य करें। ता. 18 को शुक्र वक्री होने से नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में अचानक विदेशी निवेशकों के समर्थन से तेजी पूरे मास बरकरार रहना चाहिए। विश्व के अन्य राष्ट्रों के बाजारों में भी तेजी का रुख नहीं रहेगा। जब भी बाजार अधिक तेजी की रफ्तार पकड़े, सौदा काटने को हमेशा तैयार रहना चाहिए। ऐसे माह में सत्यम, विप्रो, इन्फोसिस टेक्नो. तथा बैंकों के शेयर अच्छे तेज हो सकते हैं।

जून:-यह मास मंगलवार, स्वाती नक्षत्र, वृश्चिक राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 2 को बुध वृष में, ता. 4 को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। ता. 7 को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. 14 को सूर्य मिथुन में, इसी तारीख को मंगल कर्क में, ता. 15 को शुक्र पूरब में उदय होगा। ता. 17 को बुध मिथुन में, ता. 20 को शनि अस्त होगा। ता. 30 को शुक्र मार्गी होगा तथा इसी तारीख को बुध पश्चिम में उदय होगा। इस मास का प्रारंभ मंदी से होने पर बाजार लगातार 14 तक उतार-चढ़ाव के मध्य मंदी में ही रहने का चांस बन रहा है। इसके बाद ता. 15 को शुक्र पूरब में उदय होने से धीमे-धीमे मंदी का झटका कम होने लगेगा तथा बाजार में अचानक विदेशी निवेशकों के समर्थन से हीरो होण्डा, टिवियस सुजुकी, बजाज ऑटो, लार्सन एण्ड टर्बो, एसीसी, टिस्को, टेल्को, विजुवल साफ्टवेयर, हुगेस साफ्टवेयर, सत्यम, विप्रो, इन्फोसिस, एचसीएल टेक्नो., टाटा इन्फोटेक, हार्डवेयर कम्पनियों तथा दूर संचार मीडिया क्षेत्र की कम्पनियों में तेजी की अवधारणा धीरे-धीरे बनना शुरू हो जाएगी। जो ता. 18 तक लगातार जारी रहना चाहिए। ता. 20 को शनि अस्त होने से भारी इंजिनियरिंग, रिलायंस इन्ड., एसीसी, लार्सन एण्ड टर्बो, ऑटो मोबाइल, पेट्रोरसायन कम्पनियों के शेयर कोई अज्ञात अफवाह से लगातार गिरता नजर आएगा। यह शिलशिला कम से कम 28 तक जारी रह सकता है। अतः सावधानी अपेक्षित है। परन्तु ध्यान रखें आप इस सप्ताह जिस दिन भी बाजार विशेष मंदे देखें तो दूरसंचार मीडिया, फार्मा, कम्प्यूटर अथवा अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में सौदा अवश्य कर लें। कम समय में अच्छा लाभकारी हो सकता है। मास का अंत विशेष तेजी में बंद होगा।

जुलाई:-यह मास गुरुवार, ज्येष्ठा नक्षत्र, धनु राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को बुध कर्क में, ता. 16 को सूर्य कर्क में, ता. 20 को बुध सिंह में, ता. 25 को मंगल अस्त होगा। ता. 26 को शनि उदय होगा। ता. 31 को शुक्र मिथुन में, इसी तारीख को मंगल सिंह में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। फलतः इस मास का प्रारंभ भी धीमें-धीमें तेजी का वातावरण बनना शुरू हो जाएगा। इस मास की एक विशेषता यह रहेगी कि बारी-बारी से सभी सेक्टरों के शेयरों में तेजी की अवधारणा बनेगी। कभी किसी सेक्टर के शेयरों में तेजी तो कभी दूसरे शेयरों के काउंटर में तेजी होगी। यह शिलशिला ता. 16 तक जारी रहेगा। पुनः ता. 20 को बुध सिंह में आने से अचानक विदेशी निवेशकों के रुझान एक बार फिर शेयर बाजार की ओर आ जाने से अचानक ही एब्रेसिब्स का उपयोग ऑटो मोबाइल, ऑटो एसीलरी, फार्जिंग, कंस्ट्रक्शन तथा इंजिनियरिंग उद्योग तथा उर्वरक, पेट्रोकेमिकल्स, सीमेंट उद्योगों के शेयरों में समर्थन से बाजार धीरे-धीरे तेजी में ही बंद होना चाहिए। यह शिलशिला ता. 23 तक चलना चाहिए। ता. 25 को मंगल अस्त होने से तथा 26 को शनि उदय होने से बाजार में उहा-फुह की स्थिति रहेगी। क्योंकि दोनों ग्रह उग्र और प्रतिघातक एवं एक शत्रुग्राही ग्रह है। फलतः इन दोनों ग्रहों का कुप्रभाव शेयर बाजारों पर अवश्य परिलक्षित होगा। यहीं मानसून से संबंधित होने अथवा राजनैतिक उठा-पटक प्राकृतिक उपद्रव का ताण्डव चाहे जो भी हो, अनुकूल-प्रतिकूल प्रभाव अवश्य परिलक्षित होगा। ता. 26 से 30 तक भारी इंजिनियरिंग, सीमेंट, ऑटोमोबाइल, रिलायंस तथा वाहन निर्माता कम्पनियों एवं सत्यम कम्प्यूटर, विप्रो, रोल्टा, हुगेस साफ्टवेयर एवं अन्य साफ्टवेयर कम्पनियों के शेयरों के साथ-साथ पेट्रोरसायन कम्पनियों के शेयरों में कुछ तेजी रुक-रुक कर दृष्टिगोचर होगी। इस मास में सही समय में लिया गया सौदा आपको अच्छा मुनाफा दे सकता है। इस माह में विदेशी संस्थाओं का समर्थन समय-समय पर मिलता रहेगा।

अगस्त:-यह मास रविवार, श्रवण नक्षत्र, कुंभ राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 10 को बुध वक्री होगा। ता. 16 को शुक्र सिंह में, इसी तारीख को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. 27 को गुरु कन्या में, ता. 31 को बुध पूरब में उदय होकर स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। फलतः इस माह का शुरूआत तेजी से ही होगा। ज्यादातौर पर इंडियन होटल, डी लिंक, आरसीएफ, उषा मार्टिन, विजया बैंक, वाइंडिया, विशाका इण्ड., ग्लेनमार्क फार्मा, रानेब्रेक, शामटेलीक्लोर, हीरो होण्डा, टिवियस सुजुकी, पोलारिस साफ्टवेयर, एसबीआई, इलाहाबाद बैंक, आन्ध्रा बैंक, सेल, हिन्द जिंक, नोमट, सत्यम तथा दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां एवं रिलायंस समूह, एसीसी, लार्सन एण्ड टर्बो आदि कम्पनियों के शेयरों में उतार-चढ़ाव के मध्य ता. 13 तक बाजार विदेशी निवेशकों के समर्थन से तेजी में रहना चाहिए। ता. 9 से 11 तक वित्तीय संस्थाओं की खरीदारी हो सकती है। जिससे बाजार अचानक तेजी की रफ्तार में आ जाएगा। जो शेयर बाजार के लिए एक चांस है। इस समय अधिकांश शेयरों के भाव अब तक ऊंचे का स्तर देख चुके होंगे। इसलिए जो भी शेयर का भाव टूटे उसे दुबारा नीचे में सौदा करना मेरे समझ में अच्छा नहीं रहेगा। ता. 16 को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा। साथ ही इसी दिन बुध पश्चिम में अस्त भी होगा जिसके चलते तेजी में कमी आना शुरूआत हो जाएगा। विशेष तौर पर दूरसंचार मीडिया, सूचना प्राद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां, फार्मा सेक्टर, हार्डवेयर, साफ्टवेयर तथा वित्तीय संस्थाओं के शेयरों के भाव लगातार गिरते जाएंगे। जिससे तेजी में आना प्रारंभ हो जाएगा और विदेशी संस्था से बिकवाल बन जाएगी और पहले की अपेक्षा इनका कारोबार कम होना शुरू हो जाएगा। यह शिलशिला ता. 25 तक चल सकता है। ता. 27 को गुरु कन्या में प्रवेश होने से बाजार धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ने या संभलने की ओर रहेगा। वित्तीय संस्थाओं की खरीदारी हो सकती है। जिससे बाजार में हल्की तेजी का रुख बनना प्रारंभ हो जाएगा। यदि इस जगह आप बाजार में तेजी देखें तो बिना भय सौदा करना चाहिए। एक बार फिर नई अर्थ व्यवस्था तथा दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी, साफ्टवेयर, टेलीकम तथा फार्मा सेक्टर के शेयरों में चमक लौटना प्रारंभ होगा। कुल मिलाकर इन कम्पनियों के शेयर कम समय में ही अच्छा भाव बना लेंगे। ता. 27 से 31 तक बाजार तेजी में रहना चाहिए। जब भी बाजार अचानक तेजी की रफ्तार पकड़े सौदा काटने के लिए आप तैयार रहें। भारी इंजिनियरिंग, आयरन, सीमेंट तथा रिलायंस समूह शेयरों के भाव प्रायः खामोश रहेंगे। अतः सावधानी अपेक्षित है।

सितम्बर:-यह मास बुधवार, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र, मीन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को शुक्र कर्क में, ता. 2 को बुध मार्गी होगा। ता. 5 को शनि कर्क में, इसी तारीख को गुरु अस्त होगा। ता. 16 को सूर्य कन्या में, इसी तारीख को मंगल भी कन्या में, ता. 20 को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. 25 को बुध कन्या में, ता. 28 को शुक्र सिंह में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। इस माह की शुरूआत कुछ तेजी के

वातावरण से होगी। लेकिन अब सावधान होकर काम करना चाहिए। ता. 2 को बुध मार्गी होने से आपने जो भी सौदा किया है इसे काटकर बाहर निकालने को सोचिए। अगले सप्ताह गुरु अस्त होने से कारोबार की मात्रा घटने का योग बन रहा है। यदि ता. 5 के बाद भी तेजी चले तो आम निवेशक तेजी समझकर एकबार फिर फसेंगे। किसी कारण से अथवा प्राकृतिक उत्पात, राजनैतिक घटना चक्र के कारण दैनिक कारोबार की मात्रा में काफी कमी दृष्टिगोचर होगी। शेयर बाजार में मायूसी का प्रायः संचार होगा। शेयर बाजार का सूचकांक दिनों-दिन आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। यह शिलशिला मेरे समझ से पूरा मास चलना चाहिए। ता. 20 से शुरू होने वाले सप्ताह में बाजार और अधिक टूटना शुरू हो जाएगा। जो शेयर बाजार के लिए विशेष अशुभ का संकेत है। इस समय बाजार की गतिविधियां समझ में न आवें टूटता हुआ बाजार में काम करना मेरे समझ में अच्छा नहीं है। यह शिलशिला कम से कम ता. 24 तक जारी रह सकता है। ता.27 से बुध सुधार की स्थिति धीरे-धीरे बनना चाहिए। आप ता. 27 से जब भी बाजार मंदी में देखें तो बेहिचक सौदा विभिन्न सेक्टरों में अवश्य कर लें। अगले माह के लिए यह सौदा अल्प समय में ज्यादा मुनाफा दे देगा। मेरे समझ से कुल मिलाकर मास के शुरू से 25 तक बाजार की स्थिति दिशाहीन रहेगा। आप इन समयों में बाजार से दूर रहें तो और अच्छा है।

अक्टुबर:-यह मास शुक्रवार, भरणी नक्षत्र, मेष राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 3 को गुरु उदय होगा। ता. 12 को बुध तुला में, ता.16 को सूर्य तुला में, ता. 23 को शुक्र कन्या में, ता. 26 को बुध उदय पश्चिम में, ता. 13 को बुध वृश्चिक में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। फलतः इस माह कई प्रमुख अनुकूल योग शेयर बाजार के भविष्य के लिए योग कर रहा है। मास का शुरूआत गुरु उदय के साथ हो रहा है। बाजार की शुरूआत तेजी से होगी। लेकिन ऐसे जल्दी ही बाजार में आशा का संचार होगा और दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियों, नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में विदेशी संस्थाओं के समर्थन से बाजार में तेजी की अवधारणा रहेगी। हॉलाकि बहुत अधिक तेजी की आशा नहीं करिए फिर भी तेजी का ही आसार है। यह तेजी का संचार ता. 15 तक चलना चाहिए फिर ता.16 को सूर्य नीचे तुला में प्रवेश कर जाएगा जो स्तंभकारी बन जाएगा। जो शेयर बाजार में कुछ रियेक्शन उत्पन्न करेगा, जिससे बाजार कुछ ज्ञात-अज्ञात कारणों से अथवा अफवाहों से अचानक प्रभावित होकर कुछ दिन के लिए कारोबार पिछले दिनों की अपेक्षा कम होगा। और बाजार धीरे-धीरे नीचे आएगा। परन्तु मंदी का झटका खाने के बाद बाजार फिर संभलकर चलने का प्रयास करने लगेगा। यह असमंजस की स्थिति ता. 16 से 25 तक हो सकता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो ता. 18 से 25 तक बाजार एसबीआई, एचडीएफसी, यूटीआई, विजया बैंक, एसीसी, लार्सन एण्ड टर्बो, टिस्को, टेल्को, टाटापावर, सेल, हिंदमोटर, एशियन पेंट, सत्यम कम्प्यूटर, हीरो होण्डा, अरविन्द मिल, डिजिटल ग्लोबल, डॉक्टर रेड्डी लैब, रैनवैक्सी, आईपीसीएल, वनजोसी, रिलायंस इण्ड., एचसीएल टेक्नो. आदि शेयरों में विशेष तेजी का भी चांस बन सकता है। इन समयों में विदेशी संस्थाओं का विशेष समर्थन प्राप्त होने का आसार है। ऐसे जो भी हो बाजार के रुख के अनुसार ही कार्य करें तो बुद्धिमानी है। ता. 26 को बुध उदय होने से तथा अन्य योगों के कारण बाजार एक तरफ तेजी का रुख बनाएगा जो ता.31 तक एक तरफा तेजी जारी रहना चाहिए। इन समयों में दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां, रैनवैक्सी, सिपला, सनफार्मा, सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, मास्टेक, नीट, एचसीएल टेक्नो., विजुवल साफ्टवेयर, हुगेस साफ्टवेयर, कुछ नये साफ्टवेयर, इन्फोसिस टेक्नो., हिन्दुस्तान लीवर, रिलायंस इण्ड, पेट्रोरसायन तथा सीमेंट सेक्टर कम्पनियों में विशेष खरीदारी होने से शेयर सूचकांक ग्राफ तेजी से ऊपर जाएगा। कुल मिलाकर शेयर बाजार की स्थिति गत मास की अपेक्षा काफी सुधार के साथ सुदृढ़ रहेगा। इस माह निवेशकगण काम करें तो लाभ में रहेंगे।

नवम्बर:-यह मास सोमवार, मृगशिरा नक्षत्र, मिथुन राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 1 को मंगल तुला में, ता. 4 को मंगल उदय होगा। ता. 8 को शनि वक्री होगा, ता. 15 को सूर्य वृश्चिक में, ता. 17 को शुक्र तुला में, ता. 23 को बुध धनु में, ता. 30 को बुध वक्री होगा। फलतः स्थान परिवर्तन के साथ ग्रह स्थिति भ्रमणशील रहेगी। इस माह के शुरू से ही मंगल तुला राशिगत प्रवेश होने से तथा मंगल उदय होने से बाजार धीरे-धीरे सुधरना शुरू हो जाएगा। अतः निवेशकगण अल्प समय में अधिक लाभ प्राप्त करना चाहतें हैं तो वे नई पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं तथा दूरसंचार, मीडिया, सूचना-प्रोद्योगिकी एवं फार्मा सेक्टर में सौदा कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। सीमेंट सेक्टर, आटोमोबाइल, हार्डवेयर, साफ्टवेयर तथा हिन्दुस्तान कम्पनियों के शेयरों में विशेष तेजी का चांस रहेगा। ता. 1-2 को बाजार अच्छी घट-बढ़ में चलेगा। यह शिलशिला ता. 1 से 5 तक जारी रहेगा। पुनः ता. 8 को शनि वक्री होने से सीमेंट सेक्टर, भारी इंजिनियरिंग, पावर, रिलायंस इण्ड, हीरो होण्डा, टिवियस सुजुकी, मारुति कार, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, पंजाब ट्रेक्टर, अशोक लिलैण्ड, लार्सन एण्ड टर्बो कम्पनियों के शेयरों में तथा वित्तीय-संस्थाओं एवं दूरसंचार-मीडिया-सूचना-प्रोद्योगिकी, पेट्रोरसायन शेयरों में विदेशी निवेशकों के बिकवाली से बाजार तेज खुलकर प्रायः तेजी में रहना चाहिए। यह एक अच्छा चांस है। यह तेजी का शिलशिला ता. 19 तक कुछ उतार-चढ़ाव पूर्ण चलते रहना चाहिए। ता. 23 को बुध धनु में प्रवेश करने से अचानक बाजार में कुछ अज्ञात अफवाह उत्पन्न होगी अथवा राजनैतिक उलट-फेर, देश की सीमा पर तनाव अथवा अन्य प्राकृतिक उत्पात से बाजार कुछ प्रभावित हो सकता है। तो तेजी-मंदी में परिवर्तन हो सकता है। अतः सावधानी अपेक्षित है। यह असमंजस की स्थिति ता. 26 तक जारी रह सकती है। ता. 29 को बाजार खुलते ही विदेशी निवेशकों के बिकवाली से इन्फोसिस टेक्नो., सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, मास्टेक, नीट, एचसीएल टेक्नो., नये साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियां, रैनवैक्सी, सिपला, पार्कडियस, ग्लोक्स इंडिया, डाक्टर रेड्डी लैब, एसबीआई, एचडीएफसी, यूटीआई, आईसीआईसीआई बैंक तथा आटोमोबाइल शेयरों में तेजी का तढख रहेगा। ता. 30 तक जारी रहेगा। यह मास शेयर बाजार के लिए अनुकूल है।

दिसम्बर:-यह मास बुधवार पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क राशि में प्रारंभ हो रहा है। ता. 5 को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. 7 को बुध वृश्चिक में, ता. 11 को शुक्र भी वृश्चिक में, ता. 15 को सूर्य धनु में, ता. 16 को बुध पूरब में उदय होगा। इसी तारीख को मंगल वृश्चिक में, ता. 20 को बुध मार्गी होगा। स्थान परिवर्तन के साथ ग्रह स्थिति भ्रमणशील रहेगी। फलतः इस मास का शुरूआत तेजी से होगा। इस मास के शुरूआत में इन्फोसिस टेक्नो., सत्यम कम्प्यूटर, विप्रो, रोल्टा, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कम्पनियों, सीमेंट, साफ्टवेयर, टेलीकाम शेयरों में लिवाली के जोर रहने से ता. 13 तक बाजार तेजी में रहना चाहिए। फिर ता. 5 को पश्चिम में बुध अस्त होने से बाजार अचानक बिकवाल बन जाएगा। जिससे बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। यह शिलशिला ता. 15 तक जारी रह सकता है। ता. 16 को मंगल वृश्चिक में तथा बुध पूरब में उदय होने से तेजी फिर एक बार वापस लौट आएगी। स्थानीय निवेशकों तथा विदेशी संस्थाओं के समर्थन से नई पुरानी अर्थ व्यवस्था तथा साफ्टवेयर, सीमेंट, हिन्दुस्तान लिवर, फार्मा सेक्टरों में विशेष कारोबार होंगे। कम ही समय में उपरोक्त शेयरों के मूल्यों में तेजी से ग्राफ ऊपर उठेगा। यह शिलशिला पूरा मास तक जारी रह सकता है। परन्तु ध्यान रखें ता. 27 के बाद आप जिस दिन बाजार तेज देखें सौदा काटकर बाहर हो जाएं। शेष ईश्वर के अधीन है।

उपरोक्त आलेख ग्रहों के गोचर, अस्त, वक्री, मार्गी, युति, प्रतियुति, संचार के आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वर के अधीन है। निवेशकगण स्टॉक एक्सचेंज, शेयर इसे भली प्रकार पढ़कर अपनी सूझ-बूझ पर काम करें। इसमें लाभ-हानि की हमारी तथा प्रकाशक की कोई जिम्मेवारी नहीं है। एक छोटी से आलेख में सभी बातें एक साथ लिख पाना संभव नहीं हो पाता। शेयर बाजार तो अपने आप में समुद्र है, उसमें गोता लगाना आसान नहीं। फिर भी हम अपने विज्ञ पाठकों को विशेष जानकारी के लिए स्पेशल शेयर बाजार की दैनिक रिपोर्ट तैयार करते हैं। जो शेयर बाजार की गतिविधियों पर आधारित होता है। जिसका सेवा शुल्क इस प्रकार निर्धारित है-एक साथ तीन माह की दक्षिणा 1650 रु., छः माह की 2750 रु. तथा बारह माह की 5000 रु. निर्धारित है। वार्षिक शुल्क भेजने वाले को हम राष्ट्रीय मासिक ज्योतिष पत्रिका प्रत्येक माह में डाक से भेजते हैं। सेवा शुल्क आप आचार्य पंडित टुन-टुन शास्त्री, पटना (बिहार) के किसी बैंक के ड्राफ्ट भेजकर आप रिपोर्ट प्राप्त कर सकते हैं। जन्म पत्रिका निर्माण शुल्क साधारण 351रु., मध्यम 551रु., स्पेशल 751रु. तथा सर्वोत्कृष्ट 1551रु. निर्धारित है। हस्तरेखा परीक्षण शुल्क 251रु. निर्धारित है।

व्यापार भविष्य सन् २००४ ई.

लेखक— श्री रामावतार गुप्त ''व्यापार भूषण'', राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी, जिला-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

जनवरी मास- इस मास में तेजी की प्रमुख ता. 3, 6, 7, 13, 21, 27 एवं मंदी की प्रमुख ता. 1, 2, 5, 8, 12, 19, 24, 26, 29 हैं। ता. 2 जन. बुधोदय घटा-बढ़ी कारक है। प्रथम रुख देखकर काम करें। ता. 3 जन. पौष सुदी 11 कृतिका नक्षत्र युक्त होने से सोना-चांदी होली तक तेज रहे तथा आगे आषाढ़ मास में लाल रंग की वस्तुऐं तेज रहेंगी। ता. 6 जनवरी को गुरु वक्री होगा। धातु मूल पदार्थ अन्य प्रमुख वस्तुओं में प्रथम एकदम भड़कती तेजी लाकर बाजार मंदी करेगा।

माघ मास-मास में 5 गुरु शुक्रवार घटाबढ़ी कारक हैं एवं व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः मंदी की प्रधानता अधिक रहे। पश्चिमी देशों में अशांति तो मास में सर्दी का जोर, बर्फ-ओलापात, शीत-लहर तथा जनता में कोई विशेष बिमारी का जोर रहेगा। ता. 9 जनवरी बदी 2-3 क्रमशः शुक्र शनिवारी है। कहीं युद्ध का वातावरण तैयार होगा।

''दुतिया तृतीया माघ बदी शुक्र शनैश्चर वार।
तो पृथ्वी पर युद्ध से वहे रक्त की धार॥''

ता. 14 जनवरी मकर संक्रांति खर्पर योग युक्त होने से दुर्भिक्ष एवं कष्टकारी है। इस संक्रांति काल में घी, हल्दी मंदी हो तो स्टॉक करके आगे बेचने से लाभ होगा। शुभवार में खर्पर योग तेजीकारक तो है। परन्तु विशेष तेजी कारक नहीं होगा। ता. 21 जनवरी पू.षा. बुध एक सप्ताह के अन्दर वर्षा पानी, जनता में कोई खास बिमारी, सोना-चांदी में अच्छी मंदीकारक तो बिनौला तेज होगा। ता. 23 जनवरी चन्द्रदर्शन दलहन तेज तो रस पदार्थ, तिलहन, अनाज मंदे करेगा। सुदी पक्ष में रुई, सोना, चांदी धातुएं मंदी रहेंगी। ता. 24 जनवरी श्रवणे सूर्य तेजी कारक है। मेषे मंगल राहु योग से यहां सभी प्रमुख व्यापारीक वस्तुओं में अच्छी तेजी या मंदी की कोई लाईन निकल सकती है। ता. 28 जनवरी से 5 फरवरी तक उत्तरी भारत में जहां भी बादल हो, वर्षा हो (30 से.मी. से कम) वहां आगे वर्षा काल निश्चित रूप से श्रेष्ठ रहेगा। नोट कर लें।

शकुन विचारः-**माघ अंधेरी चौथ को मेह बादरो जान।**
पान एवं नारियल में महंगी अवसी जान॥
माघ जू.परिवा उजली बादल बिजली होय।
तिल, तेल, तिलहन, घी दिन-२ महंगो होय॥

फागुन मास-(7 फरवरी से 6 मार्च) इस मास में पांच शनिवार एवं कृष्णा छट को स्वाती योग दुर्भिक्षकारी है। मास में बाजारों का रुख प्रायः तेज अधिक रहेगा। तथा ईशान कोण के देशों, प्रांतो में उपद्रव दंगे, भूकम्प, अग्नि आदि के प्रकोपों से क्षति होगी। मास में रुई का बाजार मंदा तो तिलहन, दलहन धातुओं के बाजार तेज रहें। एक अन्य योग के अनुसार सुदी चार अथवा सुदी आठ से प्रमुख वस्तुओं में मंदी का दौर भी शुरू हो सकता है। अधिक जानकारी के लिए पुस्तक भविष्य फल प्रकाश 150 रु. भेजकर मंगा लें। ता. 12 फरवरी बदी 6, स्वाती नक्षत्र युक्त होने से तीन मास तक दुर्भिक्षकारी भी है। ता. 13 फरवरी कुंभ संक्रांति काल में अग्निकांड की घटनाओं में वृद्धि। यदि आज वर्षा हो तो लाल वर्ण की वस्तु मात्र जो भी मंदी हो स्टॉक करके चार मास बाद बेचने से अच्छा लाभ हो। मंगल+राहु के योग से फसलों को नुकसान, दुर्भिक्षकारी तथा बाजारों में अच्छी तेजी का वातावरण बनायेगा। यथा-

मंगल राहु साथ में एक नक्षत्र इक रास।
अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, दुख हो खेती का नाश॥

सुदी पक्ष में तीन शनिवार हैं। पक्ष में कालीमिर्च, पाट, बारदाना, खाद्य पदार्थों में मंदी तो रुई, सोना-चांदी, अनाजों में तेजी रहेगी। चन्द्रदर्शन एक मास के अंदर किसी राज्य के मंत्रीमण्डल में परिवर्तन अथवा भंग करेगा। ता. 27 फरवरी सुदी 7 कृतिका नक्षत्र युक्त है।

फागुन शुक्ला सप्तमी को कृतिका नक्षत्र।
भादव मावस के दिवस, वर्षा हो सर्वत्र॥

ता. 29 फरवरी को मेष राशि पर तीन ग्रहों का योग युद्ध, अशांति तेजी कारक है।

मंगल-राहु-शुक्र जब मेष राशि पर आये।
युद्ध, अशांति, क्रांति से प्रा भ्रांत हो जावे॥

शकुन विचारः-**तृतीया फागुन बदी में देखो बादल बात।**
आश्विन शुक्ला तीज को वर्षा हो दिन-रात॥
होली जलत समीर तो गगन जाय बिन रोक।
युद्ध होय संसार में दुख पावें सब लोक॥

फागुन मास में जोर से पतझड़ हो तो श्रेष्ठ। यदि तेज वायु चले तो आगे श्रावण में वर्षा श्रेष्ठ। अति तेज वायु चले तो पैदावार कम होगी, जिससे फसल पर बाजारों में तेजी की धारणा बनें।

चैत्र मास-(ता. 7 मार्च से 5 अप्रैल तक) इस मास में पांच सोमवार एवं पांच ही रविवार होने से मिले-जुले फल होंगे। चैत्र बदी में तिथि घटी है तथा सुदी में वृद्धि हुई है।

चैत्र बदी में तिथि घटे किन्तु सुदी बढ़ जाये।
होय सुभिक्ष सुकाल सुख भूमि न अन्न समाये॥

उत्तम सुभिक्षकारी योग है। फसलें संवत् में अच्छी होंगी। इस सुभिक्षकारी योग का प्रभाव समय-समय पर पूरे संवत् में दिखाई देगा। बदी पक्ष में घी का बाजार तेज रहेगा एवं सुदी पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं में मिला-जुला रुख रहेगा। बदी एकम् को शनिदेव मार्गी होंगे। पिछली लाईन पलट जायेगी। रुई, चांदी, घी में प्रथम तेजी तो बाद में मंदी आयेगी। रुख देखकर काम करें। ता. 11 मार्च वृषे मंगल एक मास के अंदर प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में वृद्धि करेगा। शेयरों में मोटी तेजी भी आ सकती है। मेष राशि में शुक्र राहु का योग अनाज तेज करेगा।

मेष राशि पर होय जब शुक्र राहु संयोग।
धान्य भाव महंगा रहे विग्रह पीड़ित लोग॥

ता. 14 मार्च मीने संक्रांति को वर्षा हो तो तेलों, तिलहन, रुई, हींग का स्टॉक आगे लाभ देगा। ता. 21 मार्च से नवीन संवत्सर 2061 विक्रमी का शुभारंभ होगा। राजा सूर्य तो मंत्री मंगल देव हैं। संवत् की मेन पावर क्रूर ग्रहों के हाथ में होने से दुर्भिक्षकारी है। गुड़, चना का व्यापार उत्तम रहेगा। 28 मार्च से मंगल शुक्र की वृष राशि में 28 दिन बैठक चलेगी। इस दौरान जब भी आकाश में बादल छा जाये, निःसंदेह वर्षा होगी। यथा-

शुक्र साथ में चन्द्रमा अथवा मंगल संग।
जो नभ में बादल छवें वर्षा होय उमंग॥

शकुन-ता. 14 या 19 मार्च को यदि दिन-भर आकाश बादलों से ढका रहे परन्तु वर्षा न हो एवं उत्तर की पवन चले तो आगे अनाजों में काफी मंदी आएगी।

चैत्र सुदी में चौथ तक जो वर्षे दिन चार।
वर्षा ऋतु में जानिये वर्षा भली प्रकार॥
चैत्र उजेरी पंचमी दिन-भर बादल छाव।
गेहूं को संग्रह करों सावन अच्छा भाव॥

बैशाख मास-ता. 6 अप्रैल से 4 मई तक। इस मास में 5 मंगलवार तेजी दुर्भिक्षकारी हैं। मास में उपद्रव, हत्याएं, दंगें अधिक हों। किसी राज्य का मंत्रीमण्डल भंग होगा। ता. 6 अप्रैल बुध वक्री रस पदार्थ, सुपारी, धातुएं, किराना तेज करेगा। यदि 5 से 7 अप्रैल तक किसी वस्तु में मंदा रहता है तो आगे सप्ताह दस दिन, उस वस्तु में मंदी का वातावरण रहकर लाईन बदलेगी। इसी प्रकार तेजी रहती है तो तेजी समझनी चाहिए। ता. 13 अप्रैल आर्द्रा शनि तिलहन, रुई में मंदी कारक तो दलहन, गुड़, खाण्ड में भारी तेजी भी ला सकता है। महाराष्ट्र, कोंकण के क्षेत्रों में दुर्भिक्षकारी मेष की संक्रांति मंदी कारक है। परन्तु यहां वृष पर मंगल चल रहा है। विशेष झुकाव तेजी का ही रहेगा। यथा-

मेष राशि पर सूर्य हो, वृष पर मंगल संग।
भय व्याकुलता लोक में राजाओं में जंग॥

प्रजा में आतंक, युद्ध, रोग आदि से जनता भयभीत रहेगी। ता. 19 अप्रैल सोमवती मावस मंदी कारक है। इसका प्रभाव चार दिन पूर्व से

मंदी का पड़ेगा। प्राय: सभी वस्तुओं में गिरावट संभव। शुक्ला एकम् को भरणी का संयोग से पक्ष में गुड़, खाण्ड, भूषा, चारा आदि में बाजार मंदे रहेंगे। चन्द्र दर्शन भी मंदी को सपोर्ट करेगा तथा अक्षय तृतीया गुरुवारी रोहिणी युक्त होने से उत्तम शुभ योग है। वर्षा एवं पैदावार अच्छी तथा बाजारों पर आगे मंदी का प्रभाव पड़ेगा। ता. 27 अप्रैल मिथुने मंगल लालवर्ण की वस्तुओं में खासी तेजी। शनि साथ होने से तिलहन, काली वस्तुएं भी तेज होंगी। (तथा 45 दिन के अंदर) शास्त्रीय नियमों के विपरीत शासकीय एवं व्यापारी वर्ग की चाल खतरनाक। कोई व्यापारी निहाल तो कोई पामाल, नेताओं का पतन, कहीं रेल-यान दुघर्टना आदि संभव। मंगलवारी पूनम को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। लाल वर्ण तेज। रूपा, राई, मेथी, जस्त का स्टॉक आगे अच्छा लाभ देगा। चांदी, रुई में 15 दिन पूर्व से मंदी का प्रभाव शुरू हो सकता है। अधिक जानकारी के लिए पुस्तक अथवा सुपर स्पेशल चांस आदि (समय से पूर्व) मंगा कर लाभ उठाएं। संपर्क करें-01274-223947 एवं 09416118247

शकुन विचार:- **बैशाख सुदी पंचमी चालै पूरब वाय।**
संग्रह करो अनाज का आगे महंगा जाय॥
आठैं बैशाख बदी बिजली गर्जन होय।
संवत् अच्छा जानिए संशय करो न कोय॥
बैशाखी पूनम तथा जेठ बदी दिन आठ।
जो चालै पुरबा पवन तो है वर्षा का ठाठ॥

ज्येष्ठ मास-ता. 5 मई से 3 जून तक, बदी पक्ष में सभी खाद्य पदार्थों में आलू, प्याज, तिलहन, दलहन, ड्राई फ्रूट्स, किराना आदि में अच्छी तेजी आकर बाजार मंदे होंगे। वृष संक्रांति से व्यापारिक वस्तुओं के भावों में गिरावट आयेगी। मास में भारत से पश्चिमी देशों में काफी उपद्रव, खून-खराबा, दंगे आदि से जनता भयभीत हो। मास में संक्रामक रोगों हैजा आदि का बाजार गर्म रहेगा। कोई महामारी भी किसी इलाके में फैल सकती है। यथा-

जेठ बदी एकम् पड़े रवि मंगल बुधवार।
संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥

ता. 6 मई मिथुने-शुक्र अनाज, चावलों में अच्छी तेजी कारक है। यहां मिथुन राशि में तीन ग्रह काफी दुर्भिक्ष, तेजी कारक, अग्निकाडों का भय तथा सभी प्रमुख बाजारों में अच्छी तेजी का संचार करेगा। यथा-

मिथुन राशि पर शुक्र भौम शनि सहित ग्रह तीन।
राष्ट्र भंग दुर्भिक्ष भय प्रजा प्रपीड़ित दीन॥
शुक्र भौम शनि जिस समय रहे इकठौर।
अग्निकांड दुर्भिक्ष भय महंगाई का जोर॥

ता. 8 मई आर्द्रा मंगल 20 दिन में तिलहन पदार्थों में अच्छी तेजी कारक। सोना-चांदी में अच्छी तेजी मंदी की कोई लाईन चलेगी, रुख देखें। ता. 14 मई वृष की संक्रांति से 10 दिन के अंदर सभी प्रमुख बाजारों में गिरावट आयेगी। यदि आज वर्षा हो तो अन्न किराने की जो वस्तुएं मंदी चल रही हों स्टॉक लाभकारी रहेगा। सुदी 3 आर्द्रा युक्त। आज जहां भी वर्षा हो वहां पर आगे वर्षा की काफी कमी रहेगी। नोट कर लें। ता. 29 मई सुदी 10 शनिवार।

जेठ दशहरा शनैश्चर भयकारी भय भास।
प्रजा शोक जल रोक से हो गोकुल का नाश॥

यह योग वर्षा में रुकावट तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार करेगा। विशेष जानकारी के लिए रिपोर्ट मंगा कर पढ़ें। सम्पर्क करें-

शकुन विचार- **जेठ बदी एकादशी, द्वादशी बादल गाज।**
शुभ संवत् वर्षा घनी मंदा बिकै अनाज॥
जेठी मावस को रहे नभ निर्मल दिन रात।
तो आगे वर्षात में हो उत्तम वर्षात॥
श्रवण धनिष्ठा जेठ बदी मेघ रहे आकाश।
न वर्षे वर्षा अधिक वर्षे वर्षा नाश॥

आषाढ़ मास-(ता. 4 जून से 2 जुलाई तक) इस मास में पांच शुक्रवार तथा शुक्रवारी पूनम तो गुरुवारी मावस है। अत: मास में अच्छी वर्षा का संकेत मिलता है। परन्तु बदी पक्ष की बजाय सुदी पक्ष में अच्छी वर्षा हो। यथा-

गुरुवारी मावस्या या गुरु दिन मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत है वर्षा हो सर्वत्र॥

बदी पक्ष में शुक्र का उदयास्त दुर्भिक्ष तेजी कारक तो बुधास्त घट-बढ़ कारक है। कर्के मंगल मंदी कारक तो मिथुन संक्रांति तेजी का प्रतीक है। कुल मिलाकर मास में घटाबढ़ी अधिक रहेगी। तथा मास में अग्निकांडों में वृद्धि, कोई बड़ा हादशा संभव तथा किसी इलाके विशेष में आगजनी, करफ्यू आदि से जनता परेशान भी रहेगी। बदी पक्ष में वर्षा की कमी रहेगी। ता. 10 जून को यदि चन्द्रमा बादलों में छुपा रहे तो वहां पर आगे रिकार्ड वर्षा होगी। कभी दिखाई दे, कभी छुपा रहे तो वहां पर वर्षा सम। एवं जहां पर चन्द्रमा स्पष्ट रूप से निर्मल दिखाई दे वहां पर वर्षा की नि:संदेह कमी रहेगी। शकुन देखकर आगे की वर्षा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ता. 14 जून शुक्रोदय पूर्व में होगा। यहां बुध अस्त चल रहा है। फसलों का हानि, अनाज तेज, वर्षा अथवा युद्ध कारक है। यथा-

जबकि उदय हो शुक्र जी अस्त दशा में बुध।
वर्षे मेघ अकाल या राजाओं में युद्ध॥

ता. 17 जून गुरुवारी मावस रुई के भावों में गिरावट। दो सप्ताह के अंदर हवाएं तूफानी गति से चलेंगी। समुद्री तूफान संभव। मिथुन राशि तीन ग्रहों की सभा भी चलेगी। अनाजों आदि अन्य प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के बिल पास होंगे। यथा-

शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज।
जौं गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥

ता. 20 जून शनि देव अस्त होंगे। पीछे (14 जून) शुक्रोदय हुआ है। मंदीकारक योग है। यथा-

शुक्रोदय पर जब कभी कोई ग्रह हो अस्त।
क्षेम कुशल वर्षा घनी मंदा धान्य समस्त॥

ता. 29 जून देवशयनी एकादशी तेजीकारक है। शुक्रदेव मार्गी होंगे। प्रथम पांच दिन बाजार मंदे चल कर तेज हों। यदि गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, चावल में बाजार अच्छा मंदा हो तो स्टॉक करके एक मास पश्चात् बेचने से ही अच्छा लाभ हो।

शकुन विचार- **साढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज।**
अनावृष्टि दो मास तक महंगा बिकै अनाज॥
बदी पंचमी साढ़ में निर्मल रहे आकाश।
ना बादल, ना बिजली कृषि का निश्चय नाश॥

प्रथम श्रावण मास-(ता. 3 जुलाई से 31 जुलाई तक) इस मास में पांच शनिवार अशुभ, दुर्भिक्षकारी हैं। व्यापारिक दृष्टि से तेजीकारक तथा ईशानकोण के देशों में कहीं भारी उपद्रव, दंगे, प्राकृतिक आपदाएं, भूकम्प, बाढ़ आदि का प्रकोप होना संभव है। मास में अनेक प्रकार की बिमारियों का प्रकोप होगा जिससे दवाईयों में तेजी। ता. 3 जुलाई पुष्ये बुध दिन 8 के अंदर सोना-चांदी में मंदी कारक तथा संसद में ऐसा कोई कानून पास हो जिससे जनता में भय, चिन्ता का वातावरण बनेगा। ता. 10 जुलाई बदी 9 शनिवारी-

नौमी सावन बदी में शनिवारी सन्ताप।
मंत्रीमण्डल भंग हो कार्तिक आपै-आप॥

आश्लेषा बुध दिन 10 में गुजरात, सौराष्ट्र के इलाकों में भारी वर्षा कारक। तिलहन, गुड़, खाण्ड अच्छा तेज करेगा। बदी 14 आर्द्रा युक्त- "चौदस आर्द्रा अन्न को संग्रह करो जरूर" अन्न स्टॉक की राय देता है। पूर्व में मंदी में स्टॉक करें। ता. 16 जुलाई कर्के सूर्य अनाजों में तेजी लायेगा। यदि आज आंधी-तूफान आवें तो शुभ नहीं है। आगे वर्षा प्रभावित होगी। ता. 18 जुलाई को चन्द्रदर्शन वर्षा में रुकावटें पैदा करेगा। एवं 20 जुलाई को सिंह राशि में बुध, गुरु योग भी समर्थन करता है। यथा-

जब-जब ही बुध वृहस्पति मिल बैठे इक गेह।
तब-तब ही संसार में वर्षे नाहीं मेह॥

वर्षा न होने से बाजारों में तेजी का वातावरण बनेगा। 24 जुलाई सुदी 7 शनिवारी होने से यदि आज वर्षा हो जाती है तो पैदावार उत्तम होगी।

एवं इसका प्रभाव मंगशिर मास में मंदी का पड़ेगा। 25 जुलाई को मंगल अस्त तो 26 जुलाई को शनि का उदय होगा। चांदी में खास मंदी तो गुड़, चना, अनाज, अलसी में खास तेजी भी आ सकती है। फिर भी यहां एक सप्ताह बाजार रुख देखकर ही काम करना उचित रहेगा। ता. 31 जुलाई को शनि-शुक्र योग प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी का प्रभाव रखता है। परन्तु साथ में मंगल-गुरु योग भी अच्छी मंदीकारक भी है। अत: जिधर का बाजार चले, बाजार का रुख देखते हुए काम करना चाहिए। लाभ हानि में हमारी किसी भी प्रकार की कोई जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। खुलासा जानने के लिए 150/-भेजकर पुस्तक मंगा लें।

शकुन विचार- सावन रोहिणी नखत में यदि जल ना वर्षाय।
यह लक्षण दुर्भिक्ष का हाहाकार मचाय॥
सावन कृतिका नखत में यदि वर्षा हो जाय।
चार मास वर्षा घणी मंदा धान्य बिकाय॥

द्वितीय श्रावण मास-(ता.1 से 30 अगस्त) मास में वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी। मास में पांच रवि, सोम होने से व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी रहेगी। मास में प्राय: वस्तुओं में थोड़े उतार-चढ़ाव से बाजार चलेंगे। किसी वस्तु में कोई विशेष तेजी की उम्मीद नहीं है। ता. 2 अगस्त आश्लेषा सूर्य दिन 14 के अंदर पूर्वी उत्तरी प्रांतों में उपद्रव। प्राय: सभी प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी से तेजी, तो शेयर्स में भी चमक आयेगी। ता. 8 अगस्त आर्द्रा शुक्र दिन 10 के अंदर वर्षा, पानी, हर वस्त मात्र चांदी, रुई में अच्छी गिरावट तो अनाजों, दलहन आदि में अचानक अच्छी मंदी का वातावरण बनेगा। ता. 16 अगस्त सिंहे सूर्य काल में अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि, अनाज तेज तो अन्य वस्तुएं घट-बढ़ से मंदी रहेंगी। यहां सिंह राशि में चार ग्रहों का योग वर्षा अथवा युद्ध उपद्रव, दंगे कारक है। यथा-

चार-पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुख पावैं सब लोग॥

ता. 18 अगस्त सुदी एकम् का चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। परन्तु यहां प्रथम बाजार तेज चलकर मंदे होंगे एवं एक मास के अंदर पुन: वहीं भाव आ जायेंगे। सुदी छट का क्षय से रुई, बारदाना आदि में एक मास जनरल लाईन तेज रहेगी। दिन 10 के अंदर बिनौला तेज हो जायेगा। परन्तु धातुएं, तिलहन मंदा होगा। ता. 27 अगस्त को गुरु कन्या राशि में प्रवेश होगा। सुख-सुभिक्षकारी, अनाज सस्ते, गुवार, राई में मंदी की लम्बी लाईन। चैत्र, बैशाख में राजस्थान में छत्र-भंग, गेहूं, घी तेज रहेंगे।

भाद्रपद मास-मास में पांच मंगलवार एवं अमावस्या एवं पूनम दोनों मंगलवारी होने से किसी राज्य के मंत्रीमण्डल में हेर-फेर, दंगें, फिसाद, आपसी द्वेष आदि में बढ़ोत्तरी होगी। गुरु अस्त से पूर्व बाजारों में तेजी रहकर बाजारों में गिरावट शुरू हो जायेगी। अत: मास मंदी प्रधान रहेगा। बदी 2 को पूर्व में बुध का उदय अति वर्षाकारक तथा अनाजों में मंदीकारक। ''भादव में बुध का उदय वर्षा खूब करेई' ता. 2 सितम्बर कर्के शुक्र, मार्गी बुध से बाजारों में घटा-बढ़ी। चलती लाईन में परिवर्तन होगा। ता. 4 सितम्बर पुष्ये शुक्र दिन 10 के अंदर प्रमुख धातुओं, रुई, गुड़, हींग, पारा आदि के भावों में अच्छी मंदी संभव है। ता. 8 सितम्बर गुरुदेव अस्त होंगे। हर वस्तु अनाजादि में मंदी करेगा। यहां कर्क राशि में शनि-शुक्र योग भी समर्थक है। यथा-

शुक्र शनैश्चर साथ हो, आगे पीछे चन्द।
सुख, सुभिक्ष, धन, धान्यमय धरती पर आनंद॥

मावस तक भारी मंदी व्यापारिक वस्तुओं में आ सकती है। सावधान! ता. 16 सितम्बर कन्या राशि में तीन ग्रहों का योग समस्त लालवर्ण, तिलहन, दलहन, धातुएं आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजीकारक है। परन्तु गुरु अस्त होने से अच्छी तेजी में संदेह है। अत: प्रथम रुख देखकर ही काम करना उचित रहेगा। ता. 20 सितम्बर सुदी 6 अनुराधा युक्त सुख सुभिक्षकारी है। दुर्भिक्ष जन्य दोषों का शमन करेगी। यथा-

षष्ठी भादव सुदी में अनुराधा नक्षत्र।
अन्य दोष मिट जाये सब हो सुभिक्ष सर्वत्र॥

बुधास्त पूर्व में होगा। रुई, सोना, चांदी में व्यापक घटा-बढ़ी करेगा। सभी प्रमुख शेयरों में भयंकर मंदी तो घी भी मंदा। परन्तु किराना बाजार तेज एवं राजस्थान में व्यापक वर्षा हो सकती है।

मंगलवारी पूनम को सिंहे शुक्र चांदी, रुई में घट-बढ़। तो सोना, लालवर्ण, तिलहन के भावों में वृद्धि करेगा। वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। ''सिंह शुक्र जब होय भवानी, चालै पवन न वर्षे पानी।'' परन्तु यहां दो-तीन दिन वर्षा होती है तो 12 दिन खूब वर्षा भी करेगा। भादव मास में पूर्व या ईशान कोण की वायु जहां चले वहां अच्छी वर्षा की संभावना। अन्य दिशाओं की वायु मास में वर्षा कारक नहीं होगी।

शकुन विचार- भादव नोमी चांदनी वर्षे पड़े अकाल।
एकादशी वर्षे अगर सस्ता हो सब माल॥
भादव शुक्ला अष्टमी निर्मल चन्द्रा सूर।
सस्ता सैध व सूत, रुई पांच मास भरपूर॥

ता.1 सितम्बर को यदि 15 बजे बाद उत्तर दिशा में बादल दिखाई दे तो मास में (मंदी में) गल्ला माल का स्टॉक करके फागुन में बेचने से उत्तम लाभ होगा।

आसोज मास-(ता. 29 सित. से 28 अक्टूबर तक) मास में गुरुवारी मावस तथा गुरुवार को मास नक्षत्र भी है। जो कि अच्छी वर्षा कारक है।

''मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥''

मास में बदी पक्ष में बाजार गर्म रहेंगे। परन्तु सुदी पक्ष में घटबढ़ से बाजार मंदे रहें। ता. 29 सित. बदी एकम् बुधवारी ''प्रति पत्सर्व मोशेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी'' पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ घी, तेलों, तिलहन, दलहन, आलू, प्याज, सब्जियां आदि का बाजार तेज रहेगा। बदी पंचमी रविवारी है। माघ कृष्ण पक्ष में घी में तेजी आयेगी। यथा-

''आश्विन कृष्णा पंचमी, जो होवे रविवार।
माघी मावस को अवश्य घी का तेज बाजार॥''

ता. 4 अक्टूबर गुरु का उदय सप्ताह दस दिन बाजारों में तेजी बनाये रखेगा। परन्तु अनाज, दलहन मंदे होंगे। बदी 11 चित्रा सूर्य दो सप्ताह के अंदर मौसमी बुखार, दस्त आदि की बिमारियों में एकाएक वृद्धि करेगा। एवं बाजार भावों में मजबूती का समर्थन करेगा। ता. 16 अक्टूबर तुला सूर्य एवं केतु योग एक मास के अंदर सभी प्रमुख बाजारों में मंदी आयेगी।

''नीच राशिगत् क्रूर ग्रह पाप ग्रह समवेत।
निश्चय तदगत् वस्तुएं सब मंदी कर देत॥''

सभी प्रमुख शेयर्स, कालीमिर्च में जोरदार मंदी संभव है। सुदी 4 रविवारी-

'' आश्विन शुक्ला चतुर्थी यदि आवे रविवार।
घी बेचो अन्न संग्रहो आगे लाभ विचार॥''

ता. 23 अक्टूबर को कन्या राशि में तीन ग्रहों की मीटिंग चलेगी। प्राय: सभी व्यापारिक वस्तुओं के भाव गिरने शुरू हो जाएंगे। कई कई वस्तुओं में जोरदार मंदी भी संभव है। स्टॉक करके तीन मास पश्चात् बेचकर लाभ उठाएं। सुदी 13 को पश्चिम में बुध का उदय कपास तेज करेगा।'' आश्विन में बुध का उदय महंगी बिकै कपास।'' आज दोपहर से 24 घंटे के अंदर चांदी में जोरदार मंदी आ सकती है। ता. 27 अक्टूबर रात्रि में ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण होगा। चांदी, रुई 15 दिन पूर्व से मंदी। चावल की फसल को हानि। काली, पीली वर्ण की वस्तुओं के भावों में तेजीकारक है। विशेष जानकारी के लिए 150/- का मनीआर्डर भेजकर पुस्तक भविष्यफल प्रकाश सन् 2004 ई. का मंगाकर लाभ उठायें।

शकुन विचार- आश्विन पूनम को अगर बादल बिजली गाज।
नफा मिलेगा चैत्र में संग्रह करो अनाज॥
दशमी, ग्यारस, द्वादशी लागत आश्विन मास।
बिजली, बादल, गाज हो जो गेहूं का नाश॥

आसोज मास में किसी भी दिन जहां संध्या समय पर्वत के आकार वाले बादल दिखाई दें वहां 24 घंटे के अंदर वर्षा होती है।

कार्तिक मास-(ता. 29 अक्टूबर से 26 नवम्बर तक) मास में पांच शुक्रवार एवं दीपावली एवं पूनम भी शुक्रवारी है। ''प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुख तत्र प्रवर्त्तते।'' अर्थात् प्रजावृद्धि सुभिक्ष हो एवं सभी सुखी रहें। मास में पशुओं के चारे, फूल झाडू आदि में अच्छी तेजी चलेगी। बदी पक्ष

मंदी का पड़ेगा। प्राय: सभी वस्तुओं में गिरावट संभव। शुक्ला एकम् को भरणी का संयोग से पक्ष में गुड़, खाण्ड, भूषा, चारा आदि में बाजार मंदे रहेंगे। चन्द्र दर्शन भी मंदी को सपोर्ट करेगा तथा अक्षय तृतीया गुरुवारी रोहिणी युक्त होने से उत्तम शुभ योग है। वर्षा एवं पैदावार अच्छी तथा बाजारों पर आगे मंदी का प्रभाव पड़ेगा। ता. 27 अप्रैल मिथुने मंगल लालवर्ण की वस्तुओं में खासी तेजी। शनि साथ होने से तिलहन, काली वस्तुएं भी तेज होंगी। (तथा 45 दिन के अंदर) शास्त्रीय नियमों के विपरीत शासकीय एवं व्यापारी वर्ग की चाल खतरनाक। कोई व्यापारी निहाल तो कोई पामाल, नेताओं का पतन, कहीं रेल-यान दुर्घटना आदि संभव। मंगलवारी पूनम को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। लाल वर्ण तेज। रूपा, राई, मेंथी, जस्त का स्टॉक आगे अच्छा लाभ देगा। चांदी, रुई में 15 दिन पूर्व से मंदी का प्रभाव शुरू हो सकता है। अधिक जानकारी के लिए पुस्तक अथवा सुपर स्पेशल चांस आदि (समय से पूर्व) मंगा कर लाभ उठाएं। संपर्क करें-01274-223947 एवं 09416118247

शकुन विचार:- बैशाख सुदी पंचमी चालै पूरब वाय।
संग्रह करो अनाज का आगे महंगा जाय॥
आठैं बैशाख बदी बिजली गर्जन होय।
संवत् अच्छा जानिए संशय करो न कोय॥
बैशाखी पूनम तथा जेठ बदी दिन आठ।
जो चालै पुरबा पवन तो है वर्षा का ठाठ॥

ज्येष्ठ मास-ता. 5 मई से 3 जून तक, बदी पक्ष में सभी खाद्य पदार्थों में आलू, प्याज, तिलहन, दलहन, ड्राई फ्रूट्स, किराना आदि में अच्छी तेजी आकर बाजार मंदे होंगे। वृष संक्रांति से व्यापारिक वस्तुओं के भावों में गिरावट आयेगी। मास में भारत से पश्चिमी देशों में काफी उपद्रव, खून-खराबा, दंगे आदि से जनता भयभीत हो। मास में संक्रामक रोगों हैजा आदि का बाजार गर्म रहेगा। कोई महामारी भी किसी इलाके में फैल सकती है। यथा-

जेठ बदी एकम् पड़ै रवि मंगल बुधवार।
संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥

ता. 6 मई मिथुने-शुक्र अनाज, चावलों में अच्छी तेजी कारक है। यहां मिथुन राशि में तीन ग्रह काफी दुर्भिक्ष, तेजी कारक, अग्निकाडों का भय तथा सभी प्रमुख बाजारों में अच्छी तेजी का संचार करेगा। यथा-

मिथुन राशि पर शुक्र भौम शनि सहित ग्रह तीन।
राष्ट्र भंग दुर्भिक्ष भय प्रजा प्रपीड़ित दीन॥
शुक्र भौम शनि जिस समय रहे इकठौर।
अग्निकांड दुर्भिक्ष भय महंगाई का जोर॥

ता. 8 मई आर्द्रा मंगल 20 दिन में तिलहन पदार्थों में अच्छी तेजी कारक। सोना-चांदी में अच्छी तेजी मंदी की कोई लाईन चलेगी, रुख देखें। ता. 14 मई वृष की संक्रांति से 10 दिन के अंदर सभी प्रमुख बाजारों में गिरावट आयेगी। यदि आज वर्षा हो तो अन्न किराने की जो वस्तुएं मंदी चल रही हों स्टॉक लाभकारी रहेगा। सुदी 3 आर्द्रा युक्त। आज जहां भी वर्षा हो वहां पर आगे वर्षा की काफी कमी रहेगी। नोट कर लें। ता. 29 मई सुदी 10 शनिवार।

जेठ दशहरा शनैश्चर भयकारी भय भास।
प्रजा शोक जल रोक से हो गोकुल का नाश॥

यह योग वर्षा में रुकावट तथा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का संचार करेगा। विशेष जानकारी के लिए रिपोर्ट मंगा कर पढ़ें। सम्पर्क करें-

शकुन विचार- जेठ बदी एकादशी, द्वादशी बादल गाज।
शुभ संवत् वर्षा घनी मंदा बिकै अनाज॥
जेठी मावस को रहे नभ निर्मल दिन रात।
तो आगे वर्षात में हो उत्तम वर्षात॥
श्रवण धनिष्ठा जेठ बदी मेघ रहे आकाश।
न वर्षे वर्षा अधिक वर्षे वर्षा नाश॥

आषाढ़ मास-(ता. 4 जून से 2 जुलाई तक) इस मास में पांच शुक्रवार तथा शुक्रवारी पूनम तो गुरुवारी मावस है। अत: मास में अच्छी वर्षा का संकेत मिलता है। परन्तु बदी पक्ष की बजाय सुदी पक्ष में अच्छी वर्षा हो। यथा-

गुरुवारी मावस्या या गुरु दिन मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत है वर्षा हो सर्वत्र॥

बदी पक्ष में शुक्र का उदयास्त दुर्भिक्ष तेजी कारक तो बुधास्त घट-बढ़ कारक है। कर्के मंगल मंदी कारक तो मिथुने संक्रांति तेजी का प्रतीक है। कुल मिलाकर मास में घटाबढ़ी अधिक रहेगी। तथा मास में अग्निकांडों में वृद्धि, कोई बड़ा हादशा संभव तथा किसी इलाके विशेष में आगजनी, करफ्यू आदि से जनता परेशान भी रहेगी। बदी पक्ष में वर्षा की कमी रहेगी। ता. 10 जून को यदि चन्द्रमा बादलों में छुपा रहे तो वहां पर आगे रिकार्ड वर्षा होगी। कभी दिखाई दे, कभी छुपा रहे तो वहां पर वर्षा सम। एवं जहां पर चन्द्रमा स्पष्ट रूप से निर्मल दिखाई दे वहां पर वर्षा की नि:संदेह कमी रहेगी। शकुन देखकर आगे की वर्षा का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। ता. 14 जून शुक्रोदय पूर्व में होगा। यहां बुध अस्त चल रहा है। फसलों का हानि, अनाज तेज, वर्षा अथवा युद्ध कारक है। यथा-

जबकि उदय हो शुक्र जी अस्त दशा में बुध।
वर्षे मेघ अकाल या राजाओं में युद्ध॥

ता. 17 जून गुरुवारी मावस रुई के भावों में गिरावट। दो सप्ताह के अंदर हवाएं तूफानी गति से चलेंगी। समुद्री तूफान संभव। मिथुन राशि तीन ग्रहों की सभा भी चलेगी। अनाजों आदि अन्य प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के बिल पास होंगे। यथा-

शनि बुध सूरज साथ जब इक राशि इक सेज।
जौं गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥

ता. 20 जून शनि देव अस्त होंगे। पीछे (14 जून) शुक्रोदय हुआ है। मंदीकारक योग है। यथा-

शुक्रोदय पर जब कभी कोई ग्रह हो अस्त।
क्षेम कुशल वर्षा घनी मंदा धान्य समस्त॥

ता. 29 जून देवशयनी एकादशी तेजीकारक है। शुक्रदेव मार्गी होंगे। प्रथम पांच दिन बाजार मंदे चल कर तेज हों। यदि गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, चावल में बाजार अच्छा मंदा हो तो स्टॉक करके एक मास पश्चात् बेचने से ही अच्छा लाभ हो।

शकुन विचार- साढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज।
अनावृष्टि दो मास तक महंगा बिकै अनाज॥
बदी पंचमी साढ़ में निर्मल रहे आकाश।
ना बादल, ना बिजली कृषि का निश्चय नाश॥

प्रथम श्रावण मास-(ता. 3 जुलाई से 31 जुलाई तक) इस मास में पांच शनिवार अशुभ, दुर्भिक्षकारी हैं। व्यापारिक दृष्टि से तेजीकारक तथा ईशानकोण के देशों में कहीं भारी उपद्रव, दंगे, प्राकृतिक आपदाएं, भूकम्प, बाढ़ आदि का प्रकोप होना संभव है। मास में अनेक प्रकार की बिमारियों का प्रकोप होगा जिससे दवाईयों में तेजी। ता. 3 जुलाई पुष्ये बुध दिन 8 के अंदर सोना-चांदी में मंदी कारक तथा संसद में ऐसा कोई कानून पास हो जिससे जनता में भय, चिन्ता का वातावरण बनेगा। ता. 10 जुलाई बदी 9 शनिवारी-

नौमी सावन बदी में शनिवारी सन्ताप।
मंत्रीमण्डल भंग हो कार्तिक आपे-आप॥

आश्लेषा बुध दिन 10 में गुजरात, सौराष्ट्र के इलाकों में भारी वर्षा कारक। तिलहन, गुड़, खाण्ड अच्छा तेज करेगा। बदी 14 आर्द्रा युक्त- "चौदस आर्द्रा अन्न को संग्रह करो जरूर" अन्न स्टॉक की राय देता है। पूर्व में मंदी में स्टॉक करें। ता. 16 जुलाई कर्के सूर्य अनाजों में तेजी लायेगा। यदि आज आंधी-तूफान आवें तो शुभ नहीं है। आगे वर्षा प्रभावित होगी। ता. 18 जुलाई को चन्द्रदर्शन वर्षा में रुकावटें पैदा करेगा। एवं 20 जुलाई को सिंह राशि में बुध, गुरु योग भी समर्थन करता है। यथा-

जब-जब ही बुध वृहस्पति मिल बैठे इक गेह।
तब-तब ही संसार में वर्षे नाहीं मेह॥

वर्षा न होने से बाजारों में तेजी का वातावरण बनेगा। 24 जुलाई सुदी 7 शनिवारी होने से यदि आज वर्षा हो जाती है तो पैदावार उत्तम होगी।

एवं इसका प्रभाव मार्गशिर मास में मंदी का पड़ेगा। 25 जुलाई को मंगल अस्त तो 26 जुलाई की शनि का उदय होगा। चांदी में खास मंदी तो गुड़, चना, अनाज, अलसी में खास तेजी भी आ सकती है। फिर भी यहां एक सप्ताह बाजार रुख देखकर ही काम करना उचित रहेगा। ता. 31 जुलाई को शनि-शुक्र योग प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में अच्छी तेजी का प्रभाव रखता है। परन्तु साथ में मंगल-गुरु योग भी अच्छी मंदीकारक भी है। अत: जिधर का बाजार चले, बाजार का रुख देखते हुए काम करना चाहिए। लाभ हानि में हमारी किसी भी प्रकार की कोई जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। खुलासा जानने के लिए 150/- भेजकर पुस्तक मंगा लें।

शकुन विचार- सावन रोहिणी नखत में यदि जल ना वर्षाय।
यह लक्षण दुर्भिक्ष का हाहाकार मचाय॥
सावन कृतिका नखत में यदि वर्षा हो जाय।
चार मास वर्षा घणी मंदा धान्य बिकाय॥

द्वितीय श्रावण मास-(ता.1 से 30 अगस्त) मास में वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी। मास में पांच रवि, सोम होने से व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी रहेगी। मास में प्राय: वस्तुओं में थोड़े उतार-चढ़ाव से बाजार चलेंगे। किसी वस्तु में कोई विशेष तेजी की उम्मीद नहीं है। ता. 2 अगस्त आश्लेषा सूर्य दिन 14 के अंदर पूर्वी उत्तरी प्रांतों में उपद्रव। प्राय: सभी प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में घटा-बढ़ी से तेजी, तो शेयर्स में भी चमक आयेगी। ता. 8 अगस्त आर्द्रा शुक्र दिन 10 के अंदर वर्षा, पानी, हर वस्त मात्र चांदी, रुई में अच्छी गिरावट तो अनाजों, दलहन आदि में अचानक अच्छी मंदी का वातावरण बनेगा। ता. 16 अगस्त सिंहे सूर्य काल में अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि, अनाज तेज तो अन्य वस्तुएं घट-बढ़ से मंदी रहेंगी। यहां सिंह राशि में चार ग्रहों का योग वर्षा अथवा युद्ध उपद्रव, दंगे कारक है। यथा-

चार-पांच ग्रहों का बने एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुख पावैं सब लोग॥

ता. 18 अगस्त सुदी एकम् का चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। परन्तु यहां प्रथम बाजार तेज चलकर मंदे होंगे एवं एक मास के अंदर पुन: वहीं भाव आ जायेंगे। सुदी छट का क्षय से रुई, बारदाना आदि में एक मास जनरल लाईन तेज रहेगी। दिन 10 के अंदर बिनौला तेज हो जायेगा। परन्तु धातुएं, तिलहन मंदा होगा। ता. 27 अगस्त को गुरु कन्या राशि में प्रवेश होगा। सुख-सुभिक्षकारी, अनाज सस्ते, गुवार, राई में मंदी की लम्बी लाईन। चैत्र, बैशाख में राजस्थान में छत्र-भंग, गेहूं, घी तेज रहेंगे।

भाद्रपद मास-मास में पांच मंगलवार एवं अमावस्या एवं पूनम दोनों मंगलवारी होने से किसी राज्य के मंत्रीमण्डल में हेर-फेर, दंगें, फिसाद, आपसी द्वेष आदि में बढ़ोत्तरी होगी। गुरु अस्त से पूर्व बाजारों में तेजी रहकर बाजारों में गिरावट शुरू हो जायेगी। अत: मास मंदी प्रधान रहेगा। बदी 2 को पूर्व में बुध का उदय अति वर्षाकारक तथा अनाजों में मंदीकारक। "भादव में बुध का उदय वर्षा खूब करेई' ता. 2 सितम्बर कर्के शुक्र, मार्गी बुध से बाजारों में घटा-बढ़ी। चलती लाईन में परिवर्तन होगा। ता. 4 सितम्बर पुष्ये शुक्र दिन 10 के अंदर प्रमुख धातुओं, रुई, गुड़, हींग, पारा आदि के भावों में अच्छी मंदी संभव है। ता. 8 सितम्बर गुरुदेव अस्त होंगे। हर वस्तु अनाजादि में मंदी करेगा। यहां कर्क राशि में शनि-शुक्र योग भी समर्थक है। यथा-

शुक्र शनैश्चर साथ हो, आगे पीछे चन्द।
सुख, सुभिक्ष, धन, धान्यमय धरती पर आनंद॥

मावस तक भारी मंदी व्यापारिक वस्तुओं में आ सकती है। सावधान! ता. 16 सितम्बर कन्या राशि में तीन ग्रहों का योग समस्त लालवर्ण, तिलहन, दलहन, धातुएं आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजीकारक है। परन्तु गुरु अस्त होने से अच्छी तेजी में संदेह है। अत: प्रथम रुख देखकर ही काम करना उचित रहेगा। ता. 20 सितम्बर सुदी 6 अनुराधा युक्त सुख सुभिक्षकारी है। दुर्भिक्ष जन्य दोषों का शमन करेगी। यथा-

षष्ठी भादव सुदी में अनुराधा नक्षत्र।
अन्य दोष मिट जाये सब हो सुभिक्ष सर्वत्र॥

बुधास्त पूर्व में होगा। रुई, सोना, चांदी में व्यापक घटा-बढ़ी करेगा। सभी प्रमुख शेयरों में भयंकर मंदी तो घी भी मंदा। परन्तु किराना बाजार तेज एवं राजस्थान में व्यापक वर्षा हो सकती है।

मंगलवारी पूनम को सिंहे शुक्र चांदी, रुई में घट-बढ़। तो सोना, लालवर्ण, तिलहन के भावों में वृद्धि करेगा। वर्षा में रुकावट पैदा करेगा। "सिंह शुक्र जब होय भवानी, चालै पवन न वर्षे पानी। " परन्तु यहां दो-तीन दिन वर्षा होती है तो 12 दिन खूब वर्षा भी करेगा। भादव मास में पूर्व या ईशान कोण की वायु जहां चले वहां अच्छी वर्षा की संभावना। अन्य दिशाओं की वायु मास में वर्षा कारक नहीं होगी।

शकुन विचार- भादव नोमी चांदनी वर्षे पड़े अकाल।
एकादशी वर्षे अगर सस्ता हो सब माल॥
भादव शुक्ला अष्टमी निर्मल चन्द्रा सूर।
सस्ता सैंध व सूत, रुई पांच मास भरपूर॥

ता.1 सितम्बर को यदि 15 बजे बाद उत्तर दिशा में बादल दिखाई दे तो मास में (मंदी में) गल्ला माल का स्टॉक करके फागुन में बेचने से उत्तम लाभ होगा।

आसोज मास-(ता. 29 सित. से 28 अक्टूबर तक) मास में गुरुवारी मावस तथा गुरुवार को मास नक्षत्र भी है। जो कि अच्छी वर्षा कारक है।

"मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥"

मास में बदी पक्ष में बाजार गर्म रहेंगे। परन्तु सुदी पक्ष में घटबढ़ से बाजार मंदे रहें। ता. 29 सितं. बदी एकम् बुधवारी "प्रति पत्सर्व मोशेषु बुधे दुर्भिक्षकारिणी" पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ घी, तेलों, तिलहन, दलहन, आलू, प्याज, सब्जियां आदि का बाजार तेज रहेगा। बदी पंचमी रविवारी है। माघ कृष्ण पक्ष में घी में तेजी आयेगी। यथा-

"आश्विन कृष्णा पंचमी, जो होवे रविवार।
माघी मावस को अवश्य घी का तेज बाजार॥"

ता. 4 अक्टूबर गुरु का उदय सप्ताह दस दिन बाजारों में तेजी बनाये रखेगा। परन्तु अनाज, दलहन मंदे होंगे। बदी 11 चित्रा सूर्य दो सप्ताह के अंदर मौसमी बुखार, दस्त आदि की बिमारियों में एकाएक वृद्धि करेगा। एवं बाजार भावों में मजबूती का समर्थन करेगा। ता. 16 अक्टूबर तुला सूर्य एवं केतु योग एक मास के अंदर सभी प्रमुख बाजारों में मंदी आयेगी।

"नीच राशिगत् क्रूर ग्रह पाप ग्रह समवेत।
निश्चय तदगत् वस्तुएं सब मंदी कर देत॥"

सभी प्रमुख शेयर्स, कालीमिर्च में जोरदार मंदी संभव है। सुदी 4 रविवारी-

" आश्विन शुक्ला चतुर्थी यदि आवे रविवार।
घी बेचो अन्न संग्रहो आगे लाभ विचार॥"

ता. 23 अक्टूबर को कन्या राशि में तीन ग्रहों की मीटिंग चलेगी। प्राय: सभी व्यापारिक वस्तुओं के भाव गिरने शुरू हो जाएंगे। कई कई वस्तुओं में जोरदार मंदी भी संभव है। स्टॉक करके तीन मास पश्चात् बेचकर लाभ उठाएं। सुदी 13 को पश्चिम में बुध का उदय कपास तेज करेगा।" आश्विन में बुध का उदय महंगी बिकै कपास।" आज दोपहर से 24 घंटे के अंदर चांदी में जोरदार मंदी आ सकती है। ता. 27 अक्टूबर रात्री में ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहण होगा। चांदी, रुई 15 दिन पूर्व से मंदी। चावल की फसल को हानि। काली, पीली वर्ण की वस्तुओं के भावों में तेजीकारक है। विशेष जानकारी के लिए 150/- का मनीआर्डर भेजकर पुस्तक भविष्यफल प्रकाश सन् 2004 ई. का मंगाकर लाभ उठायें।

शकुन विचार- आश्विन पूनम को अगर बादल बिजली गाज।
नफा मिलेगा चैत्र में संग्रह करो अनाज॥
दशमी, ग्यारस, द्वादशी लागत आश्विन मास।
बिजली, बादल, गाज हो जौ गेहूं का नाश॥

आसोज मास में किसी भी दिन जहां संध्या समय पर्वत के आकार वाले बादल दिखाई दें वहां 24 घंटे के अंदर वर्षा होती है।

कार्तिक मास-(ता. 29 अक्टूबर से 26 नवम्बर तक) मास में पांच शुक्रवार एवं दीपावली एवं पूनम भी शुक्रवारी है। "प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुख तत्र प्रवर्त्तते।" अर्थात् प्रजावृद्धि सुभिक्ष हो एवं सभी सुखी रहें। मास में पशुओं के चारे, फूल झाड़ू आदि में अच्छी तेजी चलेगी। बदी पक्ष

में प्राय: सभी खाद्य पदार्थ वस्तुएं आदि तेज रहेंगी। तो सुदी पक्ष में घटाबढ़ी ज्यादा रहेगी। बदी 3 रविवार को रोहिणी होने से वर्षा में रुकावट पैदा होगी। ता.1 नवं. हस्ते शुक्र दिन 13 के अंदर जो वस्तुएं मंदी होंगी, स्टॉक लाभदायक तथा तेज हो बेचकर नफा लें। तुलायां मंगल दलहन पदार्थों, रुई में अचानक अच्छी तेजी के झटके भी संभव है। यहां कन्या राशि में गुरु-शुक्र भी योग बनेगा। वर्षा में रुकावट या अतिवृष्टि कारक भी है। गुंवार, राई में लाईन परिवर्तन होगा।

''एक जगह गुरु शुक्र हो, बने युद्ध आसार।
अनावृष्टि, अतिवृष्टि से दुख पावे संसार॥''

बदी 7 मंगल का उदय सभी प्रमुख वस्तुओं में तेजी, अग्निभय, कोई बड़ा हादसा व्यापारी वर्ग के लिए पीड़ाकारक एवं शासन की दुष्टनीति से जनता दुखी रहेगी। एवं दक्षिणी प्रदेशों में तीव्र दंगें, हुल्लड़बाजी आदि हो। बदी 11 शनि वक्री होगा। तीन मास महामारी, रोग, प्रजा को कष्ट, जीवों का नाश एवं तिलहन आदि अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी का संचार होगा। ता. 15 नवं. वृश्चिके सूर्य घटबढ़ से बाजार मंदे अथवा लाईन परिवर्तन। सुदी छट तुला राशि में तीन ग्रहों का योग धातुएं मूल पदार्थों में तेजी कारक भी है। अच्छी तेजी भी संभव। सुदी 10 स्वाती शुक्र दिन 10 के अंदर गुड़, रस-पदार्थों के भावों में वृद्धि करेगा। शुक्रवारी पूनम कृतिका नक्षत्र युक्त होने से सुख, सुभिक्षकारी है। बाजारों में मंदी का संचार होगा। आगे बाजारों में 3-4 मास जनरल तौर पर मंदी का वातावरण भी रह सकता है।

शकुन विचार- **कार्तिक मंगसिर पूर्णिमा मेघ रहे आकाश।**
गल्ला, घी संग्रह करो लाभ पांचवें मास॥

कार्तिक मास में किसी भी दिन मेघ गर्जना करे तो आगे अन्न की पैदावार उत्तम होती है। परन्तु तुरन्त अनाज तेज भी हो जाते हैं।

मार्गशीर्ष मास-(ता. 27 नवंबर से 26 दिसम्बर तक) इस मास में पांच रविवार तथा पांच शनिवार है।

''मंगसिर के मास में पांच होय रविवार।
पांच शनैश्चर वार हो तो तेजी होय अपार॥''

के अनुसार मास में सभी प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी चल सकती है। परन्तु तिलहन पदार्थों के भाव में स्थिरता अथवा गिरावट रहे। क्योंकि मास बुध-शनि दोनों साथ-साथ वक्री चलेंगे। सोना-चांदी भी अच्छा तेज हो सकता है। परन्तु अनाजों में मंदी की लम्बी लाईन चल सकती है। बदी 3 आर्द्रा युक्त है-

''मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय।
राजा-प्रजा सुखी रहे मंदा धान्य बिकाय॥''

बदी 3 की वृद्धि-उपद्रव, लड़ाई, झगड़े, युद्ध कारक है।

''मंगसिर पहले पाख में कोई तिथी बढ़ जाए।
कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाये॥''

बदी 14 को सूर्य-बुध-शुक्र योग वर्षा में कमी तथा तेजी कारक है।

''एक राशि पर होय जब बुध, शुक्र और सूर।
वर्षा को कमती करे तेजी हो भरपूर॥
आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु की चाल।
गल्ला, रुई, उर्द, तिल तेजी तिलहन माल॥''

मावस का क्षय-खाद्य पदार्थों में मंदी होकर तेजी। रुई,घी, चांदी, किराना, कालीमिर्चों आदि में तेजी आयेगी।

''मंगसिर पहले पाख में कोई तिथी घट जाय।
झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाय॥''

ता. 13 दिसंबर सुदी 2 चन्द्रदर्शन एक मास में किसी राज्य का मंत्रीमण्डल भंग। व्यापारिक वस्तुओं के ऊंचे-नीचे भाव चलते बाजार सम रहें। सुदी 3 बुध का उदय-

''मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त।
तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त॥''

सुदी 5 गुरुवारी दो पक्षों की है। सुख सुभिक्षकारी है। अनाजों में मंदी का प्रभाव होगा। सुदी 9 को मार्गी बुध होगा। घटा-बढ़ी कारक है। बाजार रुख देखकर काम करें। ता. 26 दिसम्बर रविवारी पूनम प्राय: सभी वस्तुओं में एक तेजी का झटका लाकर बाजार मंदे होंगे। यदि आज रात्री को चन्द्रमा निर्मल दिखाई दे तो अनाजों का स्टॉक आगे लाभ देगा।

शकुन विचार- **शनि, रवि, मंगल, राहु हो गुरु से तीजे थान।**
सुख-सुभिक्ष संसार में गावे मंगल गान॥
पुष्य नक्षत्र में चन्द्रमा पर मण्डल एकत्र।
दूजे या तीजे दिना वर्षा हो सर्वत्र॥

ता. 10 दिसम्बर दोपहर से 11 दिसम्बर तक यदि आकाश में घटा छा जाये तो अनाज, घास, चारा तेज हो जायेगा। एवं चार मास तेज बिक कर फसल पर मंदा होगा।

नोट-संक्रांति लगने से एक दिन पहले किसी वस्तु का भाव संक्रांति के दिन से मंदा रहे तो आगे तेजी का रुख एक मास तक जनरल तौर पर उस वस्तु में रहता है। विपरीत से मंदी का रुख समझना।

यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा सिलसिलेवार, पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक 'भविष्य फल प्रकाश सन् 2004 ई.' को मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अत: व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगा कर पढ़ें-प्रकाशित हो चुकी है।

आवश्यक सूचना-

नोट—यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध, राशि परिवर्तन, वक्री-मार्गी, उदयास्त, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, ग्रहों के नक्षत्र, चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा दूसरा योग मन्दी का हो तो सन्देह में न पड़ें। लाभ-हानि में हमारी कभी भी कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर हजारों व्यापारियों ने हमें प्रशंसा पत्र भेजे हैं। हम उनके आभारी हैं। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा सिलसिलेवार, पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक **भविष्य फल प्रकाश सन् २००४ ई.** को मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अत: व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगा कर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पुर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत् ५५ सालों से लागातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में वर्ष भर की दैनिक तेजी-मन्दी, मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित मौके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की), अनाज, दलहन, किराना, बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी आदि रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, रुई,पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें), महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चैपटर देकर प्रकाशित किया गया है। मूल्य १२५/- प्रति कापी तथा २५/- डाक व्यय अलग। कुल १५०/- होगा। रुपया मनीआर्डर पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टाक आदि कर सकें। आज ही आदेश भेजें। वी.पी. नहीं होगी।

हमारी दूसरी पुस्तक **भविष्य भारती** अर्घकाण्ड सम्बन्धी अद्‌भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में हैं। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फारमूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ४५/- डाक व्यय १५/- अलग होगा। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर भेजना आवश्यक है। दोनों पुस्तकों के लिए १७५/- का मनीआर्डर भेजने पर डाक व्यय फ्री।

१. भविष्यफल प्रकाश पुस्तक के लिए १२५/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजन पर १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जायेगी। यानि १५/- की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। खोरी के पते पर भेजने से डाक काफी लेट प्राप्त होती है। अत: भविष्य में निम्नलिखित पते से पत्र, मनीआर्डर आदि भेजें।

पता—श्री रामावतार गुप्ता ''व्यापार भूषण''
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी,
रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा) **दूरभाष : ०१२७४-२३९४७**

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव

निर्देशक—डॉ. वसंत लाल व्यास (स्वर्ण, रजत प्राप्त, ज्यो. सम्राट), लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा), उ.प्र. (पिन-२८१२०४, सम्पर्क सूत्र-०५६६३-२७३३५३, २७३४९२

"शशिनि खलु कलंकः कंटक पद्मनालम्"

अर्थात् चन्द्रमा में भी कलंक है। कमल के नाल में काँटे हैं। समुद्र अथाह है जल खारा है। विद्वान जितना अधिक है उतना ही निर्धन है। यह तो विधाता का नियम है। दोष तो भगवान राम, कृष्ण, विष्णु में भी पाये गये हैं। प्रिय सज्जनों मेरी अल्प बुद्धि से निर्णय व संकलित लेख में भी दूषण होना जरूरी है। महोदय ज्योतिष शास्त्र का अर्थकाण्ड बड़ा है। दूरदर्शी विद्वान भी पार नहीं पा सकते तो मुझ अल्पज्ञ की बात कहां फिर भी मेरे इस लेख द्वारा ज्योतिष प्रेमी व व्यापारियों को लाभ मिला तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूंगा।

सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख माप्नुयात्॥

चैत्र—इस नव संवत् 2061 का नवीन चन्द्रमा 22 मार्च सन् 2004 ई. चैत्र शुक्ला 2 सोमवार रेवती नक्षत्रन्तर्गत हो रहा है "जो शशि उगे सोम शनि एक अचम्भो जिय जोय छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जू मंहगों होय" व चन्द्रमा की दक्षिण नोंक (श्रृंग) उच्च होगा जो प्रत्येक व्यापारी जिन्सों में तेजी कारक है। वर्षा व आंधी से भी परेशानी कारक है सभी जिन्सों में मन्दी के दौर के साथ तेजी के झटके भी आयेंगे। रुई, सूत, सन, पाट, बारदाना, कपासिया, सींगदाना प्रथम मंदी कर तेजी की ओर गतिशील रहेंगे। अलसी, अरण्डी, सोयाबीन, सूर्यमुखी, बाजरा, शेयर, गेहूं, जौ, चना के भाव गिर कर तेजी ले लेंगे। तुष धान्य में वृद्धि। गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी तो होगी लेकिन रुख मंदी का ही रहेगा। राजनैतिक परिवर्तन, हिंसा तथा भ्रष्टाचार को बल मिलेगा। दक्षिण पूर्वी व पश्चिमी राष्ट्रों में बन्द, उपद्रव व आन्दोलनों को बल मिलेगा। नवीन शेयरों का आगमन विशेष रिपोर्ट से लाभ लें।

बैशाख—21 अप्रैल सन् 2004 ई. को बैशाख मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन 15 मुहूर्त्ती है। उदित समय चन्द्रमा में कुण्डल आकृति होगी। जनता में अशान्ति को बल मिलेगा। प्रत्येक जिन्स में तेजी के साथ-साथ मन्दी का भी दौर रहेगा। सभी प्रकार धान्य, मूंग, उड़द, मोठ, तिल तेज। मजीठ, नमक, कुसुंभा में भी तेजी। चांदी, सोना, रुई, सूत, वस्त्र, बारदाना, जटा, गुड़ में मन्दी का झटका। यदि रात्रि में चन्द्रमा पर मंडल हो तो अन्न संग्रह से लाभ। यान व रेल दुर्घटना घटित होगी। राजनीति में भी परिवर्तन का योग है। जुआर, बाजरा, खली, बिनौला, सीमेन्ट, रसायन, खाद, दवाई में भी तेजी प्रधान रहेगी। नवीन देश व विदेशी शेयरों से भाव विशेष चमक भी बना सकते हैं। अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें।

ज्येष्ठ—20 मई सन् 2004 ई. को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदय समय चन्द्रमा रक्त वर्ण का होगा। इसकी दक्षिण नोंक (श्रृंग) उच्च होगी। जो प्रत्येक जिन्स में तेजी का झटका देगा। रुई, सूत, सूती, ऊनी, रेशमी, बारदाना, जूट, खाण्ड, शक्कर में मन्दी का मान होगा। सोना, चांदी में घटाबढ़ी तो होगी। लेकिन मान मन्दी का होगा। नशे की वस्तु, अफीम में तेजी। नमक, चांदी, पारा, स्टील, कलई, शीशा के भावों में गिरावट। रुई, सूत, सन, सोना में गिरकर सुधार होगा। मघ, अफीम, पोस्त बिसायत खाने में तेजी। हरी सब्जी, दूध, घी, जुआर, कैमीकल, जस्ता में भी तेजी को बल मिलेगा। गर्म हवा, लू, आंधी व अंधड़ से प्रजा को कष्ट। हैजा, उल्टी, दस्त से बालक व वृद्धजनों को कष्ट।

आषाढ़—ता. 19 जून सन् 2004 ई. को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन अग्नि मण्डल में हो रहा है अतः वर्षा अच्छी होगी। प्रजा वर्ग को प्राकृतिक प्रकोप से कष्ट, आंधी, भूकम्प व वर्षा को बल मिलेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर के भाव प्रथम मन्दी ले तेजी का मान करेंगे। रुई, सूत, सन, वस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, शेयर में तेजी। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। वर्षा खण्ड रूप से होगी। कुछ स्थानों पर वर्षा का अभाव होगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, लकड़ी के भाव गिरकर सुधार लेंगे। चीनी, गुड़, शक्कर चावल के भाव भी सुधार ले तेज रहेंगे। सींगदाना, अरण्डी, सोयाबीन के भावों में तेजी। इस मास व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें।

प्रथम श्रावण—ता. 18 जुलाई सन् 2004 ई. को प्र. श्रावण मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन कर्क राशिगत व पुष्य नक्षत्र हो रहा है। उदय समय उसके दोनों श्रृंग बराबर होंगे जो प्रजावर्ग में परेशानियों में राहत व वृष्टि में रुकावट कारक है. भावों में घटाबढ़ी से समता को बल मिलेगा। सोना, चांदी, पीतल, स्टील, गेहूं, अरहर, मूंग, मसूर के भावों में मन्दी व मासान्त में सुधार का योग है। शेयर, कपास, जौ, बाजरा, मक्का के भाव सर्पमुखी चाल में चलकर रुई के भावों में भी मन्दी आकर सुधार वर्षा खण्ड रूप से होगी। चना, मटर, लकड़ी के भाव भी गिरकर सुधार लेंगे। सोंठ, पीपल, इलाइची, फल, शहद, छुआरे, काजू के भावों में तेजी। चीनी, गुड़, शक्कर, सींगदाना, अरण्डी, सोयाबीन के भाव भी तेज। अतः व्यापारी वर्ग रुख देखकर कार्य करें।

द्वितीय श्रावण—ता. 17 अगस्त सन् 2004 ई. को द्वि. श्रावण मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन मघा नक्षत्रान्तर्गत है। जो कटु (कड़वे) पदार्थों में तेजी व सोना, चांदी के भावों व अन्नों के भावों में मन्दी कारक है। रुई पहले मन्दी बाद में तेजी। राजनीति में उथल-पुथल का योग है। जनता में रोग व शोक को बढ़ावा मिलेगा। चन्द्रोदय काल में बादल हो अथवा चन्द्र बिम्ब दिखाई ना दें तो वर्षा अच्छी। जल प्लावन व बाढ़ की स्थिति भी बन सकती है। नमक, मिर्च, हल्दी, जीरा, धनियां, बाजरा, मक्का, मोंठ के भावों में घटाबढ़ी। शेयर के भावों में भी घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। अतः शेयर धारक क्रय विक्रय से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। विशेष तेजी मन्दी के लिए रिपोर्ट मंगवाकर लाभ लें।

भाद्रपद—ता. 16 सितम्बर सन् 2004 ई. गुरुवार हस्त नक्षत्र व कन्या राशि में भाद्र मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन वायु मण्डल में हो रहा है। वायु के वेग के साथ वर्षा, आंधी व अन्धड़ में वृद्धि बनेगी। अनाज सस्ता व रुई तेज। अनाज सस्ता होने पर संग्रह करे व तीसरे मास में विक्रय कर लाभ लें। चौपाये पशुओं को कष्ट कारक। सरसों, तिल, तेल, अलसी, मूंगफली, घी, वेजीटेबिल में आंशिक मन्दी। गेहूं, जौ, चना, मक्का घटाबढ़ी से तेज। आलू, प्याज, लौंग, हींग, हल्दी, मिर्च, लाख, चपड़ा, गुड़, पारा, धनियां, चावल, जटामांसी, मासीठा, कपास, शेयर के भाव सर्पमुखी से तेज होंगे व किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी का झटका। अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें।

आश्विन—ता. 15 अक्टूबर सन् 2004 ई. स्वाति नक्षत्र व तुला राशि अन्तर्गत आश्विन मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है जो लवण आदि क्षार, रसायन, औषधि वस्तु, तिल, तेल, सरसों, रुई, चांदी, सोना में तेजी का झटका देगा। रुई, सूत, शेयर, पोस्त के भावों में समता को बल मिलेगा। सरसों, अलसी, मूंगफली, घी, दूध, चावल, दही के भावों में मन्दी। कपास व कपासिया, खोपरा, मघ, सोंठ, पीतल, पीपलामूल, कपूर, छार, छबीला, लौंग, उड़द, सौंठ, मोंठ के भावों में घटाबढ़ी से तेजी को बल मिलेगा। वर्षा के प्रभाव में कमी अग्निकाण्ड, दुर्घटनाओं में वृद्धि। मौसम में परिवर्तन का योग भी है।

कार्तिक—ता. 13 नवम्बर सन् 2004 ई. ज्येष्ठा नक्षत्र रविवार व धनु राशिगत कार्तिक मास का नवीन चन्द्र उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन महेन्द्र मण्डल में हो रहा है। अतः धान्यों के भावों में गिरावट व गुड़ में घटाबढ़ी। आवरंज में भी मन्दी का योग है। सोना, चांदी, पीतल, सीसा, लोहा, कांसे, ताम्बा, कलई के भावों में तेजी बनेगी। ज्वार, बाजरा,

मक्का, मोंठ में मन्दी का मान। घी, अलसी, सौंगदाना, कपासिया, तिल तेल के भावों में सुधार। धनियां, मिर्च, लौंग, जायफल, इलाइची, जायफल के भावों में वृद्धि। चीनी, गुड़, शक्कर, नमक, मैदा, ज्वार प्रथम मन्दी ले सुधार ले लेंगे।

मार्गशीर्ष—ता. 13 दिसम्बर सन् 2004 ई. को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रमा का उदय हो रहा है। चन्द्रदर्शन सोमवासरी व मूल नक्षत्र व धनु राशि अन्तर्गत हो रहा है। "जो शशि उगे सोम शनि एक अचंभो" से अन्न के भाव प्रथम मन्दी ले सुधार लेंगे व धान्यों के भावों में भी गिरावट बनेगी। सोना, चांदी के भावों में भी मन्दी का मान होगा। लेकिन गोचर ग्रह संयोग से अच्छी तेजी के भी अवसर हाथ लगेंगे। तिलहन, सरसों, पाट, बारदाना के भावों में मन्दी का झटका। अफीम, गुड़, खाण्ड, सरसों तेल, सोना तेजी ले लेंगे। वस्त्र, रुई, रंग में तेजी। मौसम में सर्दी का प्रकोप वर्षा व प्रजा में कष्टों में मास प्रथम राहत विशेष तेजी मन्दी के लिए रिपोर्ट से लाभ लें।

पौष—12 जनवरी सन् 2005 ई. को पौष मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन कुंभ राशिगत व श्रवण नक्षत्र बुधवार को है। अतः चन्द्रदर्शन समय दोनों सींग (शृंग) समान होंगे जो प्रत्येक जिन्स में तेजी का झटका देंगे। शेयर सोना, चांदी में सर्पमुखी चाल से तेजी। चांदी, रुई, सूत, वस्त्र, सन, बारदाना, जूट, खाण्ड, शक्कर में मन्दी। घी तेज, तेल, सरसों, तिल, अफीम, गेहूं, जौ, चना, गुड़, मूंगफली तेज। दालवाना, अनाज, राजमा, लौंग, इलाइची, मोंठ, अरहर में तेजी योग है। मसूर में आंशिक तेजी।

माघ—10 फरवरी सन् 2005 ई. को माघ मास का चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन गुरुवासरी है अतः बाजार में सभी जिन्सों में घटाबढ़ी से तेजी को बल मिलेगा। सोना, चांदी, पीतल, स्टील, धातुओं में तेजी। शेयर बाजार में घटाबढ़ी को बल मिलेगा। रुई, सूत, सन, कपास, बारदाना, प्रथम मन्दी लेकर तेजी बना लेंगे। शीत की वृद्धि से पशु, वृद्ध, बाल गोपालों को कष्ट। गुड़, चीनी, शक्कर, खोपरा के भावों में मन्दी। गोला, मिश्री, धनिया, हल्दी, सुपारी, लौंग, जावित्री, केशर, सौंफ भी तेजी लेंगी लेकिन यह तेजी स्थाई नहीं होगी।

फाल्गुन—11 फरवरी सन् 2005 ई. शुक्रवार को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। चन्द्रोदय 30 मुहूर्त्ती है जो हर व्यापारिक जिन्सों में मंदी का झटका देगा। दक्षिण शृंग उच्च होगा जो रुई, सूत, पाट, बारदाना के भावों में मन्दी को बल प्रदायक है। सूर्य के ताप में वृद्धि से दिन में गर्मी व रात्रि में सर्दी का वातावरण बनेगा। बिहार, उ.प्र., पंजाब, हरियाणा में वर्षा, सरसों, उड़द, मूंगफली, गेहूं, जौ, चना में मन्दी को बल प्राप्त होगा।

सन् २००४ ई. में ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव

जनवरी—ता.१ नव वर्ष शुभ व मंगलमय हो। ता. ३ भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. ६ गुरु व धनु बुध योग भावों में घटाबढ़ी से तेजी को बल देंगे। ता. ९ भाव गिर कर सुधार लेंगे। ता. १४ मकर सक्रांति तेजी कारक है अतः तेजी को बल मिलेगा। ता. २२ भाव उठ कर गिर जायेंगे। ता. २५ भावों में घटाबढ़ी विशेष हो। ता. २९ भावों में तेजी को बल मिलेगा।

फरवरी—ता. १ शेयर बाजार गिर कर तेज होगा। ता. ४ भावों में सुधार। ता. ९ चलती लाईन में आशा कम हो। ता.१२ शीत की सरसहाट में शेयर बाजार नर्म रहे। ता.१४ गिर कर भाव सँभल जायेंगे। ता.१७ चलती लाईन में परिवर्तन। ता. २४ भाव तेज रहेंगे। ता. २८ शेयर बाजार में मंदी का झटका लगे।

मार्च- ता.१ शेयर टूटें ता. ६ भावों में सुधार हो। ता. ९ बाजार गर्म रहेगा लेकिन स्थाई नहीं। ता.१२ भाव उठकर भी गिर जावेंगे। ता. १६ भावों में मंदी का मान हो। ता. २० सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. २२ भाव घटाबढ़ी में लेकिन मंदी विशेष नहीं। ता. २५ भावों में अच्छी तेजी का झटका। ता. २९ भावों में गिरावट का योग है।

अप्रैल-ता. ४ शेयर बाजार में गर्मी को बल, ता. ६ भावों में चमक बने। ता. १० सभी चुनिन्दा शेयरों के भाव आँधी के आम की तरह झड़ जायेंगे। ता. १५ भाव तेजी का मान करेंगे। ता. १९ सोमवती अमावस्या मंदी का झटका देगी सतर्क रहें। ता. २२ भाव सुधार लें। ता. २९ बुध उदय तेजी को बल देगा। ता. ३० घटाबढ़ी से मंदी लेकिन विशेष नहीं रिपोर्ट मगांकर लाभ लें।

मई-ता. २ बुध मार्गी शेयर बाजार काफी अच्छी घटाबढ़ी देंगे। ता. ३ गर्मी के साथ भाव सुधार लें। ता. १० शेयरों में तेजी को बल मिले। ता. १४ वृष संक्रांति क्रूरवासरी है जो बाजार में तेजी को बल प्रदान करायेगी। ता. १८ भावों में मंदी का झटका। ता. २१ मई भावों में सुधार। ता. २८ भाव उठकर झटके के साथ गिरे। ता. ३० गिरे भावों में सुधार।

जून-ता. २ तीन दिन के अंदर मंदी का झटका। ता. ५ शुक्र अस्त भावों में तेजी को बल देंगे। ता. ८ भावों में सुधार करें। ता. १० शेयर बाजार तेज रहेगा। ता. ९ प्रथम मन्दी बना भाव तेजी देंगे। ता. १४ बाजार में गर्मी रहे नये उद्योग शेयर भी बाजार में आये। ता. १८ भावों में घटाबढ़ी विशेष लेकिन मंदी को बल। ता. २२ भावों में सुधार बने। ता. २८ सर्पमुखी चाल में मंदी।

जुलाई-ता. ३ शेयर बाजार अफरा-तफरी का माहौल बनेगा। ता. ७ बाजार दो दिन तक तेज रहेगा। ता. १० वर्षा हो तो मन्दी के बल मिले। ता. १३ भावों में सुधार का योग। ता. १७ भाव उठ कर गिरे। ता. २० गिरे भावों में सुधार, आयरन शेयरों में तेजी का योग। ता. २५ नये व्यवधान से रुकावट, शेयर बाजार गिरे। ता. ३० मन्दी को विशेष बल मिले दो दिन अच्छी घटाबढ़ी हो।

अगस्त-ता. ३ भाव गिर कर, एक सप्ताह तक तेजी का मान करे। ता. ५ तेजी को बल। ता. १० भावों में आंशिक मन्दी का झटका। रसायन, शेयर तेजी लें। ता. १५ बाजारों में बनावटी मन्दी को बल, अस्थिरता का माहौल बने। ता . २० भाव सुधार ले कर गिरे। ता. २२ घटाबढ़ी विशेष हो लेकिन विशेष असर नहीं। ता. २५ मंदी का झटका स्थाई नहीं। ता. २८ भावों में तेजी को बल मिले।

सितम्बर-ता. २ भाव सुधार लेकर तेजी बना लेना चाहते हैं। ता. ५ मन्दी का झटका, सभी चुनिन्दा शेयरों में गिरावट। ता. १० दो सप्ताह तक विशेष घटाबढ़ी का योग। ता. १५ शेयरों के भाव गिरें, नवीन शेयरों का आगमन। ता. २० भावों में तेजी को बल। ता. २५ तेजी की धारणा बने। ता.२७ मन्दी लेकिन विशेष नहीं। ता. ३० भावों में घटाबढ़ी अधिक हो।

अक्टूबर-ता. ३ किसी प्रान्त में दंगे-फसाद से बाजार गिर जायेंगे। ता. १० मंदी को विशेष बल मिले। ता. १२ गिरे भावों में सुधार। ता. १५ भाव सुधार लेकर गिरे। ता. १८ भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. २२ भाव उठकर गिर जायेंगे। ता. २४ तेजी को बल मिले। ता. ३० साय तक विशेष तेजी का योग।

नवम्बर-ता. ३ शेयर बाजार प्रथम मंदी ले, स्थिरता को बल देंगे। ता. ५ भावों का गिरकर सुधार। ता. ८ घटाबढ़ी से तेजी। ता. १० तेजी को ही बल मिले। ता. १३ घटाबढ़ी से उठे भावों में गिरावट। ता. १७ चलती लाईन पलटा ले। ता. १९ सतर्कता से कार्य करें घटाबढ़ी से तेजी। ता. २२ भावों में मंदी का झटका। ता. २६ घटाबढ़ी से भाव स्थिरता को बल देंगे। ता. ३० भावों में मंदी का मान हो विशेष रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

दिसम्बर-ता. २ भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. ५ तेजी सायं तक मंदी में बन्द। ता. ८ भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १५ मंदी सभी चुनिन्दा शेयरों में मन्दी। ता. २० तेजी को बल मिले। ता. २६ भाव उठ कर गिर जायेंगे। ता. ३० भावों में तेजी विशेष चमक भी बन सकती है।

श्री पुरुषोत्तम (अधिक मास) के लक्षण और कर्त्तव्य

एकस्मिन वर्षे अधियुगे अधिक द्वये सति पूर्वोधि मासौ।
प्रथमोधि मासः प्राकृतः बस्त्रये अधिक वन त्याज॥
असंक्रांति मासो अधिक मासौ स्पुट स्यात्।
द्वि संक्रांति मास क्षयोख्यः कदाचित॥ -भास्कराचार्य

ज्योतिष की चन्द्र गणना से जब सूर्य की एक ही संक्रांति में दो अमावस्यायें आ जाती हैं। तब दूसरी अमावस्या वाले अमान्त महीने की वृद्धि होकर वह मास मल (अधिक मास) बन जाता है।

भविष्य पुराण की कथानुसार चन्द्र और सौर मासों के अन्तर को ही अधिक मास कहा गया है। एक समय दुःखी होकर मलमास ने भगवान् विष्णु से प्रार्थना की कि—हे करूणानिधान! क्या आप मुझ अभागे की पीड़ा को जानते हो। क्षण, लव, मुहुर्त, पक्ष, मास, दिन, रात्रि व नक्षत्र व सभी राशियाँ अपने अपने स्वामी की आज्ञा से निर्भय होकर विचरण किया करते हैं। किन्तु हे स्वामी! मुझ अभागे का नाम तो है, लेकिन ना तो मेरा कोई स्वामी है और ना ही कोई भी विवाह मुहुर्त, उत्सव, माँगलिक कार्य मुझमें किये जाते हैं। यहाँ तक देवता गण भी मेरा निरादर किया करते हैं। इसलिये हे नाथ! मैं तो मरना चाहता हूँ। तब मलीय मास की पीड़ा को समझकर भगवान् नारायण ने कहा—मल के रूप निंदनीय मलीय मास आज से मैं तुझे अपना नाम पुरुषोत्तम प्रदान करता हूँ। जो लोग अधिक मास (लौंद) में जप, ध्यान, पूजा, दान, ईश्वर आराधना करेंगे वे इस लोक में सुख भोग कर सद्गति को प्राप्त करेंगे इसलिये आज भी अधिक मास में दान (पुण्यादि कार्यों का बड़ा ही महत्व है।)

उदाहरणार्थ—वर्ष २००४ ई. में श्रावण (सावन) नामक अधिक मास है क्योंकि १६ जुलाई सन् २००४ ई. में स्टै. टाईमानुसार ८।२८ पर कर्क संक्रांति है और अमावस्या १७ सितम्बर सन् २००४ की है व द्वितीया अमावस्या १६ अक्टूबर सन् २००४ ई. की है व सूर्य नारायण भी १६ सितम्बर सन् २००४ ई. को १६।५० पर सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। इस प्रकार सूर्य की एक ही संक्रांति में दो श्रावण मास हो गये। प्रथम अमावस्या से द्वितीय अमावस्या तक मास श्री पुरुषोत्तम मास (लौंद) मलमास बन गया। इस प्रकार सन् २००४ ई. में दो श्रावण मास हैं।

लेकिन भारत वर्ष में महीने गणना चन्द्रमा के हिसाब से की जाती है परन्तु मल मास, क्षय मास के उपाय द्वारा वर्ष को सूर्य के हिसाब से ठीक कर लिया जाता है। लेकिन ऐसा नहीं होता कि मुस्लिम इस्लामी हिजरी में पाँच-पाँच दिन साल की गणना में ही ना आयें और इस प्रकार १०,००० वर्ष में १३६ साल ही गायब हो जायें।

श्रावण रूपी पुरुषोत्तम मास का फल

दुर्भिक्षं श्रावणे युग्मे पृथ्वी नाशः प्रजा क्षयः अथाधिमास फलम्। सम्पूर्ण पृथ्वी पर कलह का वातावरण बने। चोरी, तस्करी, डकैती, लूटपाट, अग्नि काण्ड व दुर्घटनाओं में वृद्धि व रोग से प्रजा को कष्ट मिले। प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, भूस्खलन, बाढ़ आदि से प्रजा का क्षय। प्रजा रोग शोक से घिरी रहे। युद्ध का वातावरण, सैन्य संघर्ष, अनाजों व तेल, शेयर, सोना, आदि धातुओं में मूल वृद्धि, राजनैतिक वातावरण चिन्तनीय रहेगा। मुस्लिम राष्ट्रों में विद्रोह, आंदोलन, बन्द आदि से प्रजा त्रस्त रहेगी।

अधिक मास में करने योग्य कार्य-

तीर्थ श्राद्ध दर्श श्राद्ध प्रेत श्राद्ध सपिण्डनम्।
चन्द्र सूर्य ग्रहे स्नानं मल मासे विधियते॥ -मनुस्मृतौ॥

मल मास में प्राण धातक रोगादि की निवृत्ति के लिये रुद्र, जपादि अनुष्ठान, कपिल षष्ठी आदि व्रत, अनावृष्टि धारण के पुरश्चरण, ग्रहण सम्बधी दान जप, पुत्र जन्म के कृत्य मरण के श्राद्धादि, पुंसवन से सीमांस से संस्कार अवधि समाप्त करने के पूर्वान्त और सीमान्त जैसे संस्कार नियत अवाही करने के पूर्वगत प्रयोग आदि कार्य किये जा सकते हैं।

अधिक मास में न करने योग्य कार्य-

अग्न्याधेय प्रतिष्ठा च यज्ञो दान व्रतानि च।
वेद व्रत वृषोत्सर्ग चूड़ा करण मेखला॥
गमनं देव तीर्थानां विवाहमाभिषेचनम्।
ध्यानं च गृह कर्माणि मल मासे विवर्षयते॥ -गर्ग संहिता॥

अर्थात् कुओं निर्माण, बाग, बगीचा लगाना, देव प्रतिष्ठा, किसी भी प्रायोजन के व्रत-उत्सव, उद्यापन, विवाह, वधू प्रवेश, पृथ्वी, सोना, तुला का दान, सोनयज्ञ, नील वृष का विवाह, ऋषी पूजन, तीर्थ दर्शन, संन्यास, कुआँ पूजन, व्यापार का शुभांरभ व निंदित अन्न का भोजन व नशीले पदार्थों का सेवन मलमास में ना करने चाहिये।

विशेष कर्त्तव्य-

गोवर्धन धर्म वन्दे गोपालं धर्म गोप रूपिणा।
गोकलोत्सव मीशानं गोविन्दं गोपिका प्रिय॥ -श्रीमद् भागवत्॥

विशेष रूप से मल मास में प्रथम शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से द्वितीय कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तक श्री पुरुषोत्तम भगवान् का जप ध्यान, श्री गोवर्धन जी की परिक्रमा, श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण कीर्तन, गौ रक्षा, गौ सेवा, कन्या, विधवा, अनाथ, असहाय, साधु-सन्त, ब्राह्मणों के निष्काम के साथ-साथ स्वयं धर्मानुसार आचरण से स्वयं की देश और समाज के साथ-साथ विश्व का कल्याण होता है। देवी भागवत, भविष्योत्तर पुराण, हेमाद्रि पूजा, पंकज भास्कर, भविष्य पुराण व मनुस्मृती में श्री पुरुषोत्तम मास विशेष वर्णन वर्णित है।

काल सर्प योग की शान्ती का उपाय

काल सर्प योग क्या है—जिन व्यक्तियों की जन्म पत्रिका में राहु व केतु के मध्य सभी ग्रहों का होना काल सर्प योग कहलाता है। यह योग कई प्रकार का होता है व काल सर्प योग एक ऐसा योग है जो पितृ दोष से संबन्धित होता है। जैसे पिता से अलग होना, पिता की पैतृक सम्पत्ति का ना मिलना व इस योग के प्रभाव से मनुष्य के जीवन में हर स्तर पर संघर्ष और तनाव व असफलताओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्तिके जीवन में जिस भाव से काल सर्प योग की वृद्धि होती है उसी भाव से संबधित कठिनाईयों का सामना मनुष्य को करना पड़ता है अतः काल सर्प योग से प्रभावित शान्ती अवश्य करनी या करानी चाहिये। क्योंकि काल सर्प योग से प्रभावित व्यक्ति की हर तरफ निराशा हाथ लगती है नौकरी व पदोन्नति व्यवसाय, घर, परिवार, स्वास्थ पर यह योग विशेष दुष्प्रभावी होता है।

शान्ती के उपाय— १-काल सर्प योग की शान्ती श्री हनुमान जी की कृपा से होती है क्योंकि श्री राम-लक्ष्मण को नाग पाश से हनुमानजी ने मुक्त करवाया था। इसलिए सुन्दरकाण्ड का पाठ, मंगल व शनिवार को व्रत रखकर हनुमानजी को चमेली के तेल में सिन्दूर (चोला) चढ़ावें, भोग लगायें, सुन्दरकाण्ड या बजरंग बाण का पाठ करें व यथाशक्ति "ॐ हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुंम फट्" इस मंत्र का पाठ करें। निश्चय ही लाभ की प्राप्ति होती हैं। (२) जिन व्यक्तियों की जन्म-पत्रिका में काल सर्पयोग है उनको श्रावण या शिवरात्रि के दिन चांदी (ताम्बा) के नाग-नागिन बनवा कर भगवान शंकर की रुद्राभिषेक करना चाहिए व नाग-नागिन को जल में डालकर भगवान् शंकर जी पर चढ़ा देना चाहिए तो कालसर्प की शान्ति होती है। (३) पारद के शिवलिंग बनवा कर घर में प्राण प्रतिष्ठा करायें व विधिवत रुद्राभिषेक करना चाहिए तथा अष्टनागों का भी पूजन करना चाहिए। इसी क्रम में स्वर्ण का सर्प या चांदी का सर्प बनवायें। पंचोपचार से उसकी पूजा करें व निम्नलिखित मंत्र का जाप करें या करायें। **ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अंतरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः स्वाहा॥** कम से कम उक्त मंत्र का ३१००० या सवा लाख जाप करें जप के बाद दशांश हवन करें व पूजन चंदन से करें, रोली, सिन्दुर, गुलाल, कुंकुम से नहीं। (४) घर में वन तुलसी के पौधे लगाने से भी काल सर्प योग वालों को शान्ती प्राप्त होती है। (५) काल सर्प योग से प्रभावित व्यक्ति अपने घर में मोर मुकुट अर्थात मोर के पंखों वाला मुकुट पहने भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा घर में स्थापित करें व नित्य प्रति उसकी पूजा करने से व ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का जाप करने से काल सर्प योग से मुक्ति की प्राप्ती होती है। (६) एकांक्षी नारियल ले कर उसकी चंदन से पूजा करें व ॐ, भ्रा भ्रीं भ्रौं राहवे नमः का १०८ बार जाप करें व काल सर्प योग से प्रभावित व्यक्ति के ऊपर २१ बार उतार कर बहते पानी में बहा देने से भी काल सर्प योग की शान्ती होती है। (७) प्रदोष के दिन ताम्र के नाग नागिन के जोड़े बनवाकर विधिवत उनका पूजन कर काल सर्प से प्रभावित व्यक्ति के ऊपर २१ बार उतार कर जल में दूध, शहद व काले तिल डालकर भगवान आशुतोष के ऊपर चढा देने से भी काल सर्प योग से राहत मिलती है। (८) नाग पंचमी के दिन काले फन धारी सर्प को दूध पिलाने से भी काल सर्प योग से राहत मिलती है। (९)प्रतिदिन सर्प सूक्त का पाठ भी काल सर्प योग में राहत देता है। (१०) विश्व प्रसिद्ध तिरुपति बाला जी के पास काल हस्ती शिव मन्दिर में भी काल सर्प योग की शान्ती कराई जाती है। (११) इलाहाबाद संगम पर व नासिक के पास त्रंयम्बकेश्वर में भी शान्ती कराई जाती है।

सन् २००४ ई. का व्यापार भविष्य व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी लाईनों का ब्यौरा

निर्देशन—डॉ० वसंत लाल व्यास, स्वर्ण, रजत पदक विजेता, श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा) उ०प्र०, पिन-२८१२०४ सम्पर्क सूत्र ०५६६२-२७३३५३, २७३४९२

जनवरी

यह नूतन वर्ष पौष शुक्ला १० गुरुवार से प्रारम्भ होकर माघ शुक्ला १० शनिवार तक रहेगा। ता. २ को बुध उदय हो रहा है व ता. ६ को गुरु सिंह राशि प्रवेश के साथ वक्री हो रहे हैं। **धनु बुर्धस्याभ्यु व सिंह राशि गतो जीवो विकार कुरुते यदा** से सुभिक्ष, क्षेम, रसीले पदार्थ, पेट्रोल, रसायन, घी, तेल, सोयाबीन के भावों में घटाबढ़ी। सभी प्रकार के अनाज, बर्तन आदि का संग्रह कर नौ मास पश्चात् विक्रय करने से लाभ की प्राप्ति। सोने, चांदी के भावों में मन्दी का मान होगा. रुई के दामों में तेजी का झटका लगेगा। ता. ९ को शुक्र का कुंभ राशि में प्रवेश **कुंभ राशि स्थितो शुक्रे** से प्राकृतिक प्रकोप वर्षा, ओला, कोहरा से शीत वृद्धि वृद्ध व बालकों को कष्ट, बाजार में सुस्ती का माहौल रहेगा। शेयर बाजार में हलचल। मन्दी का झटका लगे। ता. १४ को मकर संक्रांति व प्रवेश समय **समानं बुध शुक्रभ्यां** योग से अन्न, रेशम, मेघाजात, किशमिश, पिस्ता, ऊंट, गाय, बैल, सोना, चांदी, सूत चमक बना कर गिर जायेंगे। अरहर, हल्दी, जायफल, लौंग, इलाइची, जावित्री सस्ती बना तेजी ले लेंगी। अनाज, खली, सरसों के भावों में घटाबढ़ी तो होगी लेकिन विशेषतर समता को ही बल मिलेगा। घी का संग्रह कर फाल्गुन में तेजी के विक्रय से लाभ। ता. २२ जनवरी **माघ शुक्ला द्वितीया च शुक्र संयुता** से राजनीति में वातावरण दूषित, आरोप, प्रत्यारोप, पद त्याग व वाद-विवाद का वातावरण। शेयर बाजार में अनिश्चितता का माहौल रहेगा व चन्द्रदर्शन भी शुक्रवार को हो रहा है। सरसों, तिल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, वस्त्र, ऊन के भावों में घटाबढ़ी से आंशिक गिरावट। शेयर बाजार सर्पमुखी चाल से तेजी। रुई, चांदी, सोने में घटाबढ़ी से प्रथम तेजी लेकर आंशिक गिरावट। ता. २४ को सूर्य का श्रवण में प्रवेश से चावल, चांदी, रुई में तेजी का माहौल रहेगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, लौंग, सुपाड़ी व शेयर बाजार १३ दिनों के अन्दर तेजी का संचार होगा। ता. २६ **शुक्रे पूर्वाभाद्रे** से रुई, अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। शेयर बाजार में तेजी का माहौल बनेगा। ता. ३१ अनाजों के भावों में गिरावट का योग है।

शकुन विचार— माघी पूनम को कभी बादल छवै आकाश।
संग्रह करो अनाज का लाभ सातवे मास॥
माघ सुदी सातै पड़े शनि, रवि, चन्द्रवार।
विग्रह भय दुर्भिक्ष से दुख पावै संसार॥

फरवरी

यह मास माघ शुक्ला ११ से प्रारंभ होकर फाल्गुन शुक्ला ९ रविवार तक रहेगा। ता. ३ को दैत्य गुरु शुक्राचार्य जी मीन राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **मीन राशि गते शुक्रे** पृथ्वी पर सुख सुर्भिक्ष में वृद्धि, रुई, चांदी, घी, अनाज, सरसों, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड में मन्दी का वातावरण तथा अधिकांश शेयरों के भावों में भी मन्दी का मान रहेगा व अमावस्या उपरान्त सुधार ले तेजी का वातावरण रहेगा। ता. ६ को सूर्य नारायण का धनिष्ठा में प्रवेश जो कि १५ दिनों के अन्दर सोना, चांदी, मोती, मूंग, मसूड़, गेहूं, अलसी, रुई, आयरन शेयर, रसायन शेयर व खाद्य पदार्थों के शेयरों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १३ कुंभ संक्रांति से जौ, ज्वार, बाजरा, मक्की के भावों में गिरावट। गेहूं, चना, जौ गिरकर सुधार ले लेंगे। सन, जूट, चांदी, सोना, ताम्बा के भाव सम रहेंगे। अलसी, तिल, तेल, सरसों, चावल, रुई, बिनौला, हल्दी, किराना, खाद्य शेयर, गुड़, शक्कर के भावों में तेजी। इस संक्रांति में गिरे भावों की वस्तुओं का संग्रह कर बैशाख में बेचने से लाभ। ता. १९ **शते सूर्ये** योग से १४ दिनों के अन्दर सोना, चांदी, सन, सूत, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, सौंठ, हल्दी, छुआरा, गेहूं, गुड़ के भाव तेजी लेंगे। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी। ता. २१ चन्द्रदर्शन भी रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना, सरसों, मूंगफली में अच्छी तेजी का योग है। अन्न व शेयरों के भावों में भी तेजी बनेगी। **ता. २७ सत, अठ, नव, दश, ग्यारसी फाल्गुन सुदी में जान। कृत्तिका करे सुर्भिक्ष** से अनाजों के भावों में तेजी व अच्छी तेजी के भी चांस हैं। शेयरों में घटाबढ़ी से तेजी अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. २९ को दैत्य गुरु शुक्राचार्य जी मेष राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **दैत्य गुरु यदा मेषे** से सभी धान्य, दालवाना, शेयर तेज। प्राकृतिक प्रकोप, दूध, दही, अनाजों के भावों में तेजी। चांदी के भावों में घटाबढ़ी से अच्छी तेजी व मन्दी के चान्स मिलेंगे। बाजार रुख देखकर कार्य करें।

शकुन विचार— जो राशि उगै सोम शनि एक अचंभो जिय जोय।
छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जू मंहगो होय॥

दैत्य गुरु वा दल एव शुक्रे माघे अथ कुंभे दिन कृत्रयगे पृथ्वी भयं धान्य महर्घता स्यात्तदा जनानायति शायदुःखम।

अर्थात् पृथ्वी पर भय, अन्न तेज, प्राकृति प्रकोप से कष्ट।

मार्च

यह मास फाल्गुन शुक्ला १० सोमवार से आरम्भ होकर चैत्र शुक्ला १० बुधवार तक रहेगा। मास प्रारम्भ में शुक्राचार्य जी मकर राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **दैत्य गुरुर्यदा मेषे सर्व** से जौ, चना, गेहूं, अनाज, घी, चावल के भावों में तेजी। राहु-मंगल-शुक्र युति से सोने, चांदी में विशेष चमक बन सकती है। अतः सतर्कता से कार्य करें। बारदाना, सरसों, तिलहन के भावों में भी भारी घटाबढ़ी का योग है। शेयर बाजार भी गर्म रहेगा। ता. ७ को शनि मार्गी हो रहे हैं जो रुई, चांदी, घी में प्रथम तेजी बना कर गिरावट का योग बना देंगे। ता. १० **मीने बुध** योग से रुई, खाण्ड, गुड़, शक्कर में मन्दी का मान। चांदी में जितनी मंदी उतनी ही तेजी का योग है। ता. १४ सूर्य नारायण का मीन राशि में प्रवेश से तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर, रुई, शेयर व सोने में तेजी का योग। सभी तरह के अनाजों, दालवाना, किराना में घटाबढ़ी से प्रथम मंदी लेकर सुधार बना देंगे। चांदी में १-२ टके की मंदी आयेगी। ता. १७ को बुध उदय हो रहे हैं जो १५ दिनों के अन्दर चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तिल, तेल में तेजी। शेयर बाजार में अनिश्चितता का दौर रहेगा। ता. २१ नव संवत् २०६१ सभी व्यापारी भाईयों को शुभ व मंगलमय हो। वर्ष के राजा सूर्य नारायण जी हैं। वर्षा में कमी, दुग्ध उत्पादन में कमी, मनुष्यों में रोग शोक में वृद्धि। चोरी, डकैती, अग्निकाण्ड व सड़क दुर्घटनाओं में वृद्धि व राजनीति में वाद-विवाद से राजनीति दूषित हो। ता. २८ वृष के शुक्र से रुई, कपास में अच्छी मंदी का झटका। सोने, चांदी में पहले घटाबढ़ी। अंत में तेजी अनाज के भावों में मंदी का संकेत। ता. ३० चौदह दिनों के अंदर अलसी, सरसों, एरण्ड, मोती लाख, सज्जी, रुई, चाँदी, जौ, चना, चावल के भावों में विशेष घटाबढ़ी से तेजी का योग है। सीमा पर सैन्य प्रदर्शन किसी प्रांत में दुर्घटना योग है। व्यापारी वर्ग सतर्कता से कार्य करें।

शकुन विचार— होली जलने के समय यदि बादल हो जाय।
जौ, गेहूँ, रोली लगै मँहगो भाव विकाय॥
रवि, शनि, मंगल होली आवै। डंक कहै मोहि फागुन भावै॥
उल्का पात करै मुछ सारी। घर-घर रोय नर नारि॥

अप्रैल

यह मास चैत्र शुक्ला ११ गुरुवार से आरंभ होकर वैशाख शुक्ला १० शुक्रवार तक रहेगा। ता. १ को गुरु वक्री हो रहे हैं जो सभी प्रकार के धान्य व गेहूं, दालवाना, बर्तन आदि के स्टॉक का संकेत दे रहे हैं अतः स्टॉक कर नौ महीने पश्चात् बेचने से लाभ। सोने, चांदी, शेयर में भारी मन्दी का झटका व बुध वक्री से नारियल, सुपारी, किराना के भावों में तेजी। ता. ७ **अप्रैल रोहिण्यां देव गुरौ** से १२ दिनों के अन्दर सोना, ताम्बा, चांदी, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, दाख, सुहारी, सुपारी, ऊन के भावों में मन्दी व किसी-किसी जिन्स में विशेष मन्दी का झटका। ता. ९ को बुध अस्त हो रहे हैं जो अन्न के भावों में मन्दी व सभी शेयरों के भाव आंधी के आम की तरह गिर जायेंगे अतः सतर्कता से कार्य करें। ता. १३ मेष संक्रांति से गेहूं, जौ, चना, धान्य, हाथी दांत, लाख,

मोम, मजीठ, केसर सिंदूर के भावों में तेजी व किसी में चमक का योग बने। ता. १७ **मृगे भौम** से तिल, चांदी में तेजी। रुई गिरकर संभल जायेगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में घटाबढ़ी व ता. १९ को सोमवती अमावस्या भी मंदी कारक है। इसका प्रभाव तीन दिन पूर्व व एक सप्ताहन्त तक रहता है। ता. २२ मीन में बुध का प्रवेश जो रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में मंदी का योग बना देंगे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी से सुधार। बिनौला के भावों में तेजी व ता. २६ को बुध उदय से रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अफीम, ताम्बा, कुसुंभा, मजीठ, गेरू, लाल मिर्च में तेजी। चांदी के भावों में समता को ही बल मिलेगा। ता. ३० जनरल लाईन में घटाबढ़ी से सायं तक तेजी। सोने-चांदी में सुधार।

शकुन विचार— पौष माघ बैशाख या सावन या आषाढ़।
भयकरी बुध का उदय, अस्त होय सुख बाढ़॥
जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मन्दी रहे, मंहगाई हट जाय॥

॥ चतुर्दशी क्षय, छठ वृद्धि ॥

मई

यह मास बैशाख शुक्ला ११ से आरम्भ होकर ज्येष्ठ शुक्ला १२ तक रहेगा। ता. २ बुध मार्गी हो रहा है जो चमड़ा, उच्च वर्णों के अभक्ष्य पदार्थ व मांस चमड़े से बनी वस्तुओं में तेजी का वातावरण बनेगा। ता. ४ खग्रास चन्द्रग्रहण है जिससे जौ, गेहूं, चना, बाजरा, मूंग, मसूड़, अनाजों के संग्रह से लाभ मिलेगा तथा रुई, कपास, सूत, गेहूं, अलसी के भावों में घटाबढ़ी से प्रथम मन्दी दे तेजी का वातावरण बनेगा। घी, तेल, गुड़, खाण्ड, रस पदार्थों, दूध, दही, शहद के भावों में मन्दी का झटका देगा। अन्य जिन्सों में भाव मध्यम रहेंगे। पांच या छः महीने के अन्दर अनाजों में तेजी। रूपा, राई, मेथी, जस्ता के संग्रह के पश्चात् ४ महीने पश्चात् विक्रय से लाभ मिले। ता. ९ को बुध मेष राशि में प्रवेश करने जा रहे हैं जो मूंगा, मोती, जवाहरात तथा शेयर सोना, चांदी, चना, जौ, तिल, तेल, सरसों, राई, घी, गुड़ में मंदी का झटका। किसी-किसी जिन्स में मन्दी का वातावरण। चौपाये पशुओं के भाव भी तेज रहेंगे। सूर्य कृत्तिका योग से १५ दिनों के अन्दर घी, रुई, राई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं,जौ, चना, मूंग, मोंठ, चावल, राई, सरसों में सर्पमुखी चाल से तेजी का योग बन रहा है। ता. १४ को वृष संक्रांति क्रूर वासरी है जो घी, रस, पदार्थों में शेयर, गुड़, रस, रसीले फल, सोना, चांदी, तिल तेल, सरसों में आंशिक बढ़त ले तेजी का मान करेगी व गेहूं, जौ, चना में मंदी का झटका देगी। शेयर बाजार भी गर्म रहेगा। ता. २२ अलसी में गिरावट। धातु, चावल, आयरन, शेयर, सोना, चांदी, जस्ता में तेजी व ता. २५ को तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, घी तेज। गेहूं, चना, जौ, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सुपाड़ी, मिर्च, राई में तेजी। चांदी में मन्दी का मान होगा। ता. २८ वृष के शुक्र, रुई, कपास में अच्छी मन्दी देंगे। सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी। अनाजों में मंदी का मान रहे। वायु प्रकोप व अग्निकाण्ड, लू, हैजा के प्रकोप से प्रजा त्रस्त रहे।

शकुन विचार— द्वितीया तृतीया जेठ सुदी आवै आर्द्रा रिक्ष।
वर्षे तो कर्षे नमी दर्से दुःख दुर्भिक्ष॥
जेठ दशहरा शनैचर भयकारी भय मास।
प्रजा शोक जल रोग से हो गोकुल का नाश॥

जून

यह मास ज्येष्ठ शुक्ला १३ मंगलवार से आषाढ़ शुक्ला १३ बुधवार तक रहेगा। ता. २ बुध वृष संयोग से १५ दिनों के अन्दर प्रायः सभी जिन्सों में घटाबढ़ी से मंदी का प्रकोप। रुई, चांदी में भी गिरावट बनेगी। गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल, रस पदार्थों में तेजी। शेयर बाजार में भी विशेष घटाबढ़ी का योग है। अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. ५ को पश्चिम में शुक्र अस्त हो रहे हैं। अतः सोना, चांदी, गुड़, सूत, कपड़ा, घी, तेल तिल, सरसों में सुधार। पाट, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, उड़द, मूंग, मोंठ, चना व बाजरा व नारियल जलीय उत्पन्न पदार्थों में तेजी का माहौल बनेगा। ता. ९ रुई, चांदी, शक्कर में तेजी। शेयर बाजार गिर कर सुधार लेगा। ता. ४ को सूर्यनारायण मिथुन राशि में प्रवेश कर रहे हैं व **भूमि पुत्रो यदा कर्के** योग से भी गुड़, शक्कर, खाण्ड, गन्ना, गेहूं, रस पदार्थ तेज रहने का संकेत है। अनाज भी तेज रहेंगे। रुई में विशेष गिरावट। चांदी में ३० टका मंदी का चान्स चौपाये पशु भी तेज रहेंगे। लू व गर्म हवाओं का जोर रहेगा आंशिक वर्षा भी हो सकती है। ता. १७ पन्द्रह दिनों के अन्दर रुई, चांदी, सरसों में गिरावट। सरसों में घटाबढ़ी हो सकती है। ता. १९ आर्द्रा नक्षत्र व **मिथुने बुध योग** से उड़द, जौ, चना तेज। गेहूं, तिल, मूंग, मोंठ के भावों में नमी आयेगी। सोना तेज रहेगा। शेयर दोपहर तक गिरकर सायं तेजी से बन्द होंगे। ता. २६ पुनर्वसु बुध ८ दिनों में चांदी, रुई, कपास, सूत, अलसी, मूंग, मोती, गेहूं, चावल, जौ, चना के भावों में तेजी ले लेंगे। ता. २९ को शुक्र मार्गी हो रहे हैं जो १ महीने के अन्दर सभी व्यापारिक जिन्सों, शेयर बाजार, चावल, घी, तेल में तेजी व किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी का योग है।

शकुन विचार— बुधो मिथुन राशिस्थौ महर्घं च चतुस्पदाम्।
तदा वायु विर्जयानी यान्मेपश्य प्रचुरो भवेत्॥

२६ जून २००४॥

बदी बाढ़ै सुदी घटे तिथि क्रूरवार संक्रांति।
छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा नितान्त॥

जुलाई

यह मास आषाढ़ शुक्ला १४ गुरुवार से आरम्भ होकर प्रथम श्रावण शुक्ला १५ शनिवार तक रहेगा। ता. १ को व्यापार ग्रह बुध कर्क राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **निशापातेश्च तनयः कर्क राशौ** सुर्भिक्ष में कमी प्रजा को दुःख में वृद्धि साथ ही बुध-सूर्य-शनि योग से **रवि मंगल बुध राहु** योग से अग्निकाण्ड व यह योग महाविनाश कारक योग है। बाजारों का रुझान तेजी की ओर अग्रसित रहेगा। अनाज, तिलहन अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. १० चांदी, रुई में मंदी। अन्न तेज। १५ दिनों के अन्दर तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली के दामों में तेजी। ता. १६ कर्क संक्रांति अनाजों के भावों में मंदी का झटका देगी। ता. १८ चन्द्रदर्शन आॅवरेज में मंदी का झटका देगा। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी तथा रुई में घटाबढ़ी से मंदी। ता. २० को बुध सिंह में प्रवेश कर रहे हैं **सिंह राशौ बुधस्याच्चे** से चना, सोना, देवदारु, रुई, ऊन, खट्टे पदार्थ, लकड़ी, पत्थर, कोयला में तेजी का मान। रस पदार्थ, गुड़, चीनी खाण्ड के भावों में मन्दी का झटका। ता. २५ को मंगल अस्त व ता. २६ को शनि उदय हो रहे हैं जो सुर्भिक्ष कारक है। व अनाज, सोना, चांदी, सन, वस्त्र, सूत में तेजी। रुई में भाव आंशिक मंदी का झटका देगा। ता. ३१ शुक्राचार्य जी का मिथुन राशि में व भौमदेव का सिंह राशि में प्रवेश। रुई, कपास, वायदा व्यापार बारदाना, अरंडी, सन, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार में मंदी का झटका। चांदी, सोना, तांबा, लोहा आदि धातुवाना, आयरन, शेयर, चाय, वस्त्र, गुड़, खाण्ड, शक्कर, लाल वस्त्र, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं में तेजी। गेहूं, चना, जौ, चावलों में तेजी का संचार हो व प्रथम श्रावण मास ५ शनि योग अच्छा नहीं है व श्रावण अधिक मास १८ जुलाई में हो रहा है। **श्रावणे दुर्भिक्ष युग्मे पृथ्वी नाश प्रजा क्षयः** अर्थात् पृथ्वी पर कलह कारक व वातावरण दूषित हो। चोरी, तस्करी, लूटपाट, हिंसा, आन्दोलन, प्रदर्शन, अग्निकाण्ड, सड़क दुर्घटनाओं व प्राकृतिक-प्रकोप से प्रजा में दुःख व रोग, शोक में वृद्धिकारक है व अनाजों, दलहनों, तिलहन में तेजी कारक है।

शकुन विचार— बदी बाढ़ै सुदी घटै, तिथि क्रूरवार संक्रांति।
छत्र भंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा नितान्त॥
आषाढ़ बदी सुदी आठै निर्मल रहे आकाश।
चन्द्रदेव दे दर्श तो वर्षा का नाश॥

अगस्त

यह मास द्वि. श्रावण कृष्ण १ रविवार से भाद्रपद कृष्णा २ मंगलवार तक रहेगा। ता. २ को आश्लेषा सूर्ये से १४ दिनों के अन्दर सोना, चांदी, बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चावल, चना, गुड़, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भावों में तेजी का संकेत। ता. ८ को शुक्र का आर्द्रा में प्रवेश। तिल, चाय, शेयर, लोहा, रुई, अनाज, लाहा, सरसों में मन्दी का वातावरण व कर्क संक्रांति भी सोमवती अमावस्या श्रावणी अर्थात् **सोमवती तीनउ बुरी सावन कार्तिक माह** से सभी जिन्सों में मन्दी का संकेत अर्थात् व्यापारी वर्ग बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। अनाजों, चावल, गुड़, घी, रसीले पदार्थों में तेजी कारक है। ता. २२ बारह दिन में धान्य व बिनौला के भावों में तेजी। सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत के

भावों में मन्दी व इस मास में चन्द्रदर्शन भौमवासरी योग भी गेहूं, जौ, चना, बाजरा, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा व गुड़, शक्कर में तेजी कारक है। वर्षा की मात्रा में असमान्यता कहीं अति वर्षा से परेशानी व प्रजा को कष्ट। ता. २७ **कन्या राशी गुरौ योग** से वर्षा उत्तम सभी धान्य में मन्दी। सोना-चांदी, ताम्बा, गेहूं, लाल चन्दन, मजीठ, लाल मिर्च, घी, तिल तेल पदार्थ, पशुओं के भावों में तेजी। चांदी में पहले ४ दिन में २, ३ टका की मंदी। रुई में ८ दिन में मंदी का झटका फिर तेजी। अतः रुख देखकर कार्य करें व नफा लें।

शकुन विचार— श्रावण रोहिणी नखत में यदि वर्षा हो जाय।
कार्तिक सुदी एकादशी तक जल वर्षाय॥
कन्या राशि गते जीव मेघवृष्टिस्तथोत्तया।
सुर्भिक्ष सर्व धान्यान्तामारोग्यं लभते जनाः॥
शुक्ल पक्ष सावन में कभी कोई तिथि का नाश।
छत्र भंग का योग है आगे कार्तिक मास॥

सितम्बर

यह मास भाद्रपद कृष्णा ३ से आरम्भ होकर आश्विन कृष्णा २ तक रहेगा। ता. १ को ही कर्क राशि में शुक्र का प्रवेश सोना, रुई, अलसी, एरण्ड, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी का माहौल बनेगा। चांदी, गेहूं, जौ, अरहर में मन्दी लेकिन शनि योग के कारण तेजी की अवधारणा रहेगी। अतः सतर्कता से कार्य करें। ता. ४ को **पुष्ये शुक्राः** से रुई, सन, ऊन, रेशम व धान्य के भावों में तेजी का संकेत। चांदी में गिरे भावों में सुधार व पारा, शिंगरफ, गुड़, खाण्ड, शक्कर में गिरावट का योग है। ता. ८ को गुरु अस्त हो रहे हैं व सिंह राशि में चतुर्ग्रही योग धन नाश युद्ध **सिंहे नृणां मरण लोक विनाशं** से प्रजा को कष्ट व दुःख। ता. ११ से २३ दिनों के अन्दर गुड़, खाण्ड, शक्कर, घोड़ा व चौपाये पशुओं के भावों में वृद्धि। रुई में घटाबढ़ी। घी, शक्कर, कपास, सरसों में तेजी। शेयरों में घटाबढ़ी से मंदी। पाट, सूत, सन, लोहा, चांदी, ताम्बा तेज। ता. १६ कन्या संक्रांति से कपूर, केसर, कस्तूरी, चन्दन, सुगन्धित द्रव, रुई में तेजी। गेहूं, जौ, चावल, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मसूर, जस्ता, लोहा, ताम्बा में घटाबढ़ी। सरसों, मूंगफली, तिल, अलसी में तेजी का योग। ता. २८ **दैत्य गुरु यदा सिंहे से व सिंह शुक्र जब होय भवानी** से १५ दिनों में गेहूं, जौ, बाजरा, गुड़, खाण्ड, नमक, हरण, घास, लकड़ी, हल्दी, धनियां सन क्षार में तेजी।

शकुन विचार— भादों की छठ चांदनी जो अनुराधा होय।
उबड़-खाबड़ बोय दें अन्न घनेरा होय॥
चार पांच ग्रहों का बनै एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावैं सब लोग॥

अक्टूबर

यह मास आश्विन कृष्णा ३ शुक्रवार से आरम्भ होकर कार्तिक कृष्णा ३ रविवार तक रहेगा। **कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाय। एक चीज की बात क्या सब चीज घट जाय॥** से लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में मंदी का झटका लगेगा। ता. १५ चन्द्रदर्शन शुक्रवासरी है जो सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र, ऊन में मंदी का झटका, किसी-किसी जिन्स में भारी गिरावट। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी। अच्छी तेजी का भी लाभ मिले व संक्रांति भी शनिवारी है व इस दिन वर्षा हो तो तिल, तेल, मूंग, उड़द, मूंज का संग्रह करें। पांचवे महीने में बेचने से लाभ। ता. १२ तुला राशि में बुध का प्रवेश योग से **तुलायाते दिवानाथे धान्य हेम परिचय** से रुई, चांदी में मन्दी, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, श्रीफल, सुपाड़ी के भाव गिर कर तेजी बना लेंगे। ता. २३ शुक्राचार्य जी कन्या राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **कन्या राशिगते शुक्रे** से चावलों में तेजी। अगर चमक भी बन जाये तो आश्चर्य नहीं। चांदी घटाबढ़ी से तेज हो। गेहूं, जौ, चना, गुड़, धान्य, ऊन, रेशमी वस्त्र भाव में सुधार कर तेजी की ओर बढ़ें। चावलों में विशेष तेजी का योग। ता. २७ अक्टूबर चन्द्रग्रहण है **उपरागौ यदा मेषे** योग से लोगों के कष्ट में वृद्धि प्रदायक है। दुर्घटनायें अधिक हों। प्रजा में भय व्याप्त हो। ता. २३ से १५ दिनों के अन्दर रुई, सूत, रेशम, सोना, चांदी, गुड़, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, गुगल के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. ३१ को बुध वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहे हैं। इस योग से घी, तेल, सरसों, गेहूं, अफीम, अनाज के भावों में मन्दी का झटका देगा। व्यापारी वर्ग सतर्कता से कार्य करें।

शकुन विचार— आश्विन शुक्ला चतुर्थी यदि आवै रविवार।
घी बेचो अन्न संग्रहो आगे लाभ विचार॥
अमावस्या गुरुवार दिन या गुरु मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धान्त है वर्षा हो सर्वत्र॥

नवम्बर

यह मास कार्तिक कृष्णा ४ सोमवार से आरम्भ होकर मार्गशीर्ष कृष्णा ३ मंगलवार तक रहेगा। ता. १ शुक्र का हस्त में प्रवेश रुई, चावल, चांदी में मंदी का झटका देगा। यहां अन्न के भावों में मन्दी हो तो संग्रह से लाभ। खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी हो व ता. ३ भौम का तुला राशि में प्रवेश **भूमि पुत्रोस्तुले** से सभी प्रकार के अनाज, अलसी, रुई, बिनौला, मूंगफली, मूंग, उड़द, दलहन गुड़ में तेजी को बल मिलेगा। ता. ८ शनि वक्री हो रहे हैं जो १५ दिनों के अन्दर चांदी व अनाजों के भावों में मन्दी का झटका दे समता को बल देंगे। ता. १२ शुभ दीपावली स्वाति **दीपक जो वैर, खेल विशाखा गाय** से किसी स्थान पर दंगे फसाद व कर्फ्यू की स्थिति बने। शेयर बाजार में मंदी का झटका व सोने के भावों में तेजी। चांदी भी आलस्य त्याग तेजी लेगी। ता. १५ वृश्चिक संक्रांति सोमवासरी है जो गेहूं, जौ, चना, चावल, तिल, तेल, सरसों, सोना, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल, आयरन व रसायन, शेयर, हल्दी, मिर्च, नमक के भावों में तेजी। दूध, दही के भाव भी उठ जायें तो आश्चर्य नहीं। जूट, सूती वस्त्र, सन, गाय, भैंस के भावों में मंदी का झटका। ता. १८ शुक्राचार्य जी का तुला राशि में प्रवेश **यदा दैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्त्तते** से रुई में मन्दी, चांदी, सोने में घटाबढ़ी। गुड़, रस पदार्थों में तेजी कारक है। ता. १९ **अनुराधा नक्षत्र सूर्ये** से १४ दिनों के अन्दर जौ, चना, धान्य, ऊन में तेजी। पशुओं के भावों में सुधार। गेहूं, अलसी, मिर्च में गिरावट, सोना, चांदी भी उठकर गिर जायेंगे। ता. २८ रुई, कपास, वस्त्र, सूत में मंदी का संकेत। प्रजा में सुख-दुःख की समानता रहेगी। किसी प्रान्त अथवा देश में भी भूकम्प व प्राकृतिक प्रकोप से धन जन का क्षय। राजनीति दूषित हो किसी भ्रष्टाचारी की पकड़ से राजस्व वृद्धि।

शकुन विचार— कार्तिक मावस के दिना स्वाति नखत विचार।
गिरे कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥
मंगसिर पहले पाख में, कोई तिथि घट जाय।
झगड़ा और फसाद नित लोगों में अधिकाय॥

दिसम्बर

यह मास मार्ग. कृष्णा ४ बुधवार से आरंभ होकर पौष कृष्णा ५ शुक्रवार तक रहेगा। ता. १ विशाखा के मंगल दो सप्ताह के अन्दर रुई, वस्त्र, कपास, गेहूं के भावों में सुधार कर तेजी बना देंगे। ता. ४ को बुध अस्त हो रहे हैं। मौसम में वर्षा व ओला से शीत वृद्धि, पर्वतीय क्षेत्रों में वर्फवारी व भावों में लगभग सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी को बल मिलेगा। ता. ४ शुक्राचार्य जी वृश्चिक राशि में प्रवेश कर रहे हैं। **वृश्चिके च गते शुक्रे** से अनाजों में मन्दी का झटका जनता में विश्वास, प्रसन्नता, सन्तोष व सुख की वृद्धि करेंगे। गुड़ में घटाबढ़ी तो शेयर भी प्रथम मंदी त्याग तेजी को बल देंगे। ता. १३ को चन्द्रदर्शन है आगे महीने में तेजी का संकेत देता है अतः व्यापारी बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. १६ को मंगल का वृश्चिक राशि में प्रवेश, गुड़, रुई, सोना, सन, चांदी व धातुओं के भाव में तेजी। क्रूर ग्रह योग अर्थात् शुक्र भौम योग से तेजी को बल मिलेगा। सर्दी का प्रकोप बढ़े। ता. २८ पू.षा. में सूर्य का प्रवेश १४ दिनों के अन्दर तिल, तेल, सरसों, अलसी, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गल, चमड़ा, कपूर, ऊन, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी में तेजी। प्रजा में रोग-शोक की वृद्धि व राजनेताओं में सुख। कुशल क्षेम वृद्धि व वर्ष २००४ की तेजी-मंदी दीपिका से भी सफल व्यापारी लाभ ले सकते हैं। इस पुस्तक की प्राप्ति के लिए हमें लिखें अथवा स्वयं मिलें व व्यापार व लाभ में वृद्धि लें हमारा पूर्ण सहयोग आपके साथ हैं।

शकुन विचार— जो शशि उगै सोम शनि एक अचम्भो जिय जोय।
छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जूं मंहगो होय॥
मार्गशीर्ष के मास में पांच होय रविवार।
पांच शनैश्चर हो तो तेजी होय अपार॥

चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार वाणी सं. २०६१ वि.

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि" दूरा (आगरा), उ.प्र. पिन:२८३११०

चैत्र शु. २ चन्द्रे

संवत् 2061 वि. चैत्र शुक्ल 2 चन्द्रवार को चन्द्र दक्षिण शृंग करके दिखलाई देगा। जिसका वस्तुओं पर इस प्रकार प्रभाव पड़ेगा। कमलगट्टा, गूगल, चन्दन,धान, सिंघाड़ा, मोती, लाख, चपड़ा, पाट, वारदाने में भीषण तेजी आ सकती है। चांदी, सोना, शेयर, ताम्बा, गेहूं, चना, जौ, मटर,प्रियंगु, मखाने, दाख, किशमिश के भावों में सस्तापन अवश्य हो। पश्चिमी राष्ट्रों जनधन की विशेष हानि हो। में इजरायल, ईराक में विनाश हो।

दक्षिण शृंग

वैशाख शु. २ बुधे

संवत् 2061 वि. वैशाख शुक्ल 2 बुधवार को चन्द्रदर्शन समशृंग से होगा। चांदी-सोना में मंदी होकर एकदम तेजी होती है। 15 दिन में सर्वधान्य, सर्वरस, सोना, चांदी, लोहा, पारा, रांगा, शीशा, ताम्बा, गुड़, घी, खटाई, काली मिर्च, नमक, ऊन, काला तिल, तीसी, रेंडी, मेंथी में तेजी होकर मंदापन आता है। लाल रंग, लाल मिर्च, लाल चन्दन, इलायची,लौंग, दिखाई देती है। सुपारी, वारदाने में अच्छी तेजी

सम शृंग

ज्ये. शु. १ गुरौ

संवत् 2061 वि. ज्येष्ठ शुक्ल 1 गुरुवार को चन्द्र दक्षिण शृंग से होगा। नारियल, कपूर, हींग, हिंगुल अच्छी तेजी हो। केरल, पांडिचेरी, गोआ में वृष्टि योग बनते हैं। मासान्त में चावल, चना, जौ, मोंठ, मसूर, अरहर पर मंदापन होकर एकदम तेजी हो। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, पारा, रांगा, शीशा, स्टेशनरी का सामान, कागज आदि पर अच्छी तेजी होती है। रुई, ऊन, कपास, कपड़ा, अफीम, भांग, गांजा पर मंदापन होता है।

दक्षिण शृंग

आषाढ़ शु. १ शुक्रे

संवत् 2061 वि. आषाढ़ शुक्ल 1 शुक्रवार को चन्द्रोदय उत्तर शृंग से होगा। रक्त पदार्थ, नारियल, दाख, किशमिश, गुड़ में मंदापन हो। सीमावर्ती देशों से शत्रुता बढ़ सकती है। चना, तूवर, मोंठ, पाट, वारदाने, जूट, ऊन, कपास में घटाबढ़ी हो सकती है। चन्द्रोदय तिथि से 15 दिन बाद धान्य, तीसी, सरसों, तेल, दाख, गुड़, खाण्ड, सुपारी, रुई, सूत, ऊन में कुछ तेजी होती है।

उत्तर शृंग

प्र.श्रावण शु. १ रवि

संवत् 2061 वि. प्रथम श्रावण शुक्ल 1 रविवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। मूंग, सब्जी, लहसुन, प्याज, चावल, धान्य, गुड़, ईख, खाण्ड, शक्कर, चीनी पर तेजी होती है। 10 दिन के भीतर, सोना, चांदी, पारा, रांगा, शीशा, लोहा,पीतल, चावल, सिंघाड़ा, कवलगट्टा, नारियल, फल, सूखे मेवे, रुई, सूत, रेशम, कपड़ा, कपूर, चन्दन, सुगन्धित वस्तुएं, चना, अरहर, उड़द, मोंठ आदि मंदे होकर तेज होते हैं।

उत्तर शृंग

द्वि.श्रावण शु. १ भौमे

संवत् 2061 वि. द्वितीय श्रावण शुक्ल 1 मंगलवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। 8 दिन में तिल, उड़द अरहर तेज हों। मूसलाधार वर्षा के योग बन रहे हैं। विद्युत पात से जन धन का कहीं-कहीं बिनाश होता है। चांदी, लोहा, मशीनरी का सामान, विद्युत सामग्री, गेहूं, तीसी, सरसों, लाल मिर्च, सन, पाट, वारदाना पर साधारण तेजी होती है। भारत के पश्चिमी भाग में भूकम्प की संभावना है। 20 दिन पश्चात् अमचूर, खटाई, नींबू, देवदारु, सूत, कपड़ा, लोहा, मशीनरी का समान में घोर तेजी हो। गेहूं, चना, चांदी, तीसी, तिल, तेल, गुड़ के भाव कुछ गिर जाते हैं। पाक सीमा पर जबर्दस्त हरकतें कर सकता है।

उत्तर शृंग

भाद्रपद शु. २ गुरौ

संवत् 2061 वि. भाद्रपद शुक्ल 2 गुरुवार को चन्द्रोदय उत्तर शृंग से हो रहा है। इस मास में तूवर, चावल, मोंठ, चना, देवदारु, सूत, कपड़ा, सर्वरस, चांदी, सोना, रुई, शेयर, ईख, गुड़, खाण्ड तेज हो। खण्डवृष्टि, वायु संचार का योग दिखाई देता है। राजस्थान में वर्षा की कमी, बंगला देश, पाक, पंजाब में विद्रोह हो सकता है। रुई, चांदी, सोना, ताम्बा, लोहा, पीतल, स्टील, रांगा घोर तेजी। दाख, किशमिश, लौंग, सुपारी, मखाने, चिरौंजी, अगर, तगर में अच्छी तेजी होकर मंदापन हो।

उत्तर शृंग

आश्विन शु. २ शुक्रे

संवत् 2061 वि. आश्विन शुक्ल 2 शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। चांदी, गहने, बर्तन, कपड़ा, लाल चन्दन, चावल, गेहूं, सरसों, तिल, ज्वार, बाजरा, जीरा, धनियां पर अच्छी तेजी होती है। मसान्त में मजीठ, कवलगट्टा, गूगल, लौंग, सुपारी, सोना, चांदी, लोहा, तेल, घी, सरसों, रेवड़ी, सुपारी, मूंग, मूंज, बांस, नील, अफीम, रेशम, कपास, रुई पर तेजी होकर मंदापन होता है।

उत्तर शृंग

कार्तिक शु. २ सूर्ये

संवत् 2061 वि. कार्तिक शुक्ल 2 रविवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर में मंदापन होता है। ठंड कुछ बढ़ जाती है। गेहूं, बाजरा, ज्वार, गुड़, खाण्ड, पाट, वारदाने, हल्दी, हरड़, बहेड़ा, हींग, क्षार, कथीर, कत्था में सस्तापन होता है। गुजरात, महाराष्ट्र में कहीं-कहीं वर्षा होगी। 10 दिन के भीतर गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, धातु, जौ, चावल, गेहूं, चना, मटर, अरहर में कुछ तेजी हो। कपास, सूत, केशर, रुई, लाख, चपड़ा, पाट, वारदाने, दाख, किशमिश में कुछ तेजी होगी।

उत्तर शृंग

मार्गशीर्ष शु. २ चन्द्रे

संवत् 2061 वि. मार्गशीर्ष शुक्ल 2 चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। सोना, चांदी, पारा, रांगा, शीशा, लोहा, गुड़, खाण्ड, तेल, घी वेजीटेबल, हींग, हल्दी, लाख, गुग्गल, कपूर, रुई, कपास, ऊन में घोर तेजी होती है। पूर्व-पश्चिम दिशा में युद्ध की स्थिति तत्काल ही बन सकती है। चावल, सरसों, तिली, जौ, चीड़, दाख, किशमिश, चिरौंजी, मखाने पर तेजी होती है। घी, तेल, पीपरामूल, लाख, चपड़ा, गुग्गल, हल्दी में तेजी होती है। व्यापारी लाभ उठावें।

उत्तर शृंग

पौष शु. २ बुधे

संवत् 2061 वि. पौष शुक्ल 2 बुधवार को द्वितीया का चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। इस मास में धान्य, अन्न पर घोर तेजी होती है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, जस्ता पर मंदापन अवश्य ही होता है। तेल, गुड़, मादक वस्तुओं में कुछ तेजी होती है। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि, उपलवृष्टि के प्रायः योग हैं। पशु-पक्षी, बालक, वृद्ध व पुरुषों को पीड़ा होगी। गेहूं, चना, मटर, अरहर, मूंग, मसूर, मोंठ, उड़द पर तेजी होती है। मासान्त में पीपरामूल, गुड़, कपास, लाल, चपड़ा, कपास, पाट, वारदाने पर अच्छी तेजी आती है।

उत्तर शृंग

माघ शु. २ गुरौ

संवत् 2061 वि. माघ शुक्ल 2 गुरुवार को चन्द्रोदय सम शृंग से होगा। गेहूं, जौ, चावल, तीसी, अरहर, उड़द, मोंठ, चावल, चीनी, दाख, किशमिश, छुहारे पर अच्छी तेजी हो। खंडवृष्टि, शीत लहर चले। कराई, भूसा, मूंगा, मोती पर मंदापन आकर एकदम तेजी होती है। कृषि में कहीं-कहीं हानि की भी संभावना है। पाक की ओर से हरकतें सीमा पर हो सकती हैं। तेल, सरसों, घी, तीसी तेज हों। मासान्त में चपड़ा, कपूर, लाख, गुग्गुल, हींग, हल्दी, मखाने, चिरौंजी पर तेजी हो।

सम शृंग

फाल्गुन शु. २ शुक्रे

संवत् 2061 वि. फाल्गुन शुक्ल 2 शुक्रवार को चन्द्र दक्षिण शृंग से होगा। इस मास में मूंग, मसूर, रुई, तीसी, कपास, ऊन, मेथी, लौंग, काली मिर्च, बड़ी इलाइची के भाव गिर सकते हैं। कराई, भूसा, पत्थर, काष्ठ के भाव भी तेज होकर मंदे होंगे। गेहूं, चना, उड़द, घी, तेजपात, कालीमिर्च, मखाने, दाख, किशमिश अगर, तगर पर घोर तेजी बन सकती है।

दक्षिण शृंग

सन् २००४-५ ई. में सरसों के स्पेशल चांस

खरीदना— *अप्रैल*-२ से १८ तक, *मई*-३ से १७ तक, *जून*-८ से २० तक, *जुलाई*-९ से १८ तक, *अग.*-१० से २० तक, *सितं.*-५ से १५ तक, *अक्टू.*-५ से १५ तक, *नवं.*-१८ से २० तक, *दिसं.*-४ से १० तक, *जन.*-२ से १४ तक, *फर.*-५ से १६ तक, *मार्च*-८ से २० तक। बेचना— *अप्रैल*-१९ से ३० तक, *मई*-१८ से २९ तक, *जून*-२१ से ३० तक, *जुलाई*-११ से १८ तक, *अग.*- २१ से ३० तक, *सितं.*-१६ से २२ तक, *अक्टू.*-१६ से २५ तक, *नवं.*- २१ से २८ तक, *दिसं.*-१९ से २५ तक, *जन.*-१५ से २२ तक, *फर.*-१७ से २५ तक, *मार्च*-२१ से २८ तक।

सन् २००४-५ ई. में जीरा स्पेशल चांस

खरीदना— *अप्रैल*-२ से २० तक, *मई*-५ से १६ तक, *जून*-१० से २४ तक, *जुलाई*-४ से १८ तक, *अग.*-२ से २२ तक, *सितं.*-३ से २४ तक, *अक्टू.*-२ से १२ तक, *नवं.*-१ से १८ तक, *दिसं.*-४ से २० तक, *जन.*-१ से १० तक, *फर.*-३ से १४ तक, *मार्च*-८ से २० तक। बेचना— *अप्रैल*-२२ से २८ तक, *मई*-१७ से ३० तक, *जून*- २५ से ३० तक, *जुलाई*-२० से ३० तक, *अग.*-२३ से २९ तक, *सितं.*-२५ से ३० तक, *अक्टू.*-१४ से २८ तक, *नवं.*-२० से ३० तक, *दिसं.*-२१ से २७ तक, *जन.*-११ से २६ तक, *फर.*-१५ से २८ तक, *मार्च*-२१ से ३० तक।

ग्रहों का अधिकार-प्रभाव

लेखक: ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक,
कार्यालय-सारड़ा बाजार, मेढ़ता सिटी, जिला-नागौर (राज.)-341510

भूमण्डल में ब्रह्माण्ड स्थित ग्रहों का ज्योतिषीय दृष्टि से निम्नांकित अधिकार प्रभाव होता है। जिसका प्रयोग जन्म-पत्रिका पठन एवं फलादेश की बेला में करना चाहिए।

सूर्य: राजाओं, उमराव मजिस्ट्रेट, प्रधानों, हर एक सिविलियन, बड़े उच्च लाखों मनुष्यों पर अधिकार है।

चन्द्रमा: साधारण प्रजा खासकर स्त्रियों प्रजा की टोलियों देश की खबरों पर अधिकार है।

मंगल: फौजी, सिपाहियों, सर्जन, दरिया व खुश्की के लश्करों, अमलदार, खटपट, अग्निकाण्ड, भूकम्प आतंकवादी, झगड़े, फिसादों पर सत्ता यानि अधिकार है।

बुध: अखबार, छापेखाने, अन्य देश के सफीरों (दूतों), हुनर (कला) वाले नये उद्योगों साहित्य पर होता है।

गुरु: धर्म व धर्म गुरुओं, धर्म बावत संतों, वकीलों, वकीलों के मुंशी, बेकारी व व्यापारियों, कोर्ट, हर कोर्ट, दरबार, असम्बली आदि पर अधिकार है।

शुक्र: पेन्टर, जितारा, (तस्वीर बनाने वाला), गवैया (गायक), एक्टर लग्न, नाना प्रकार के गाने बजाने वाले यंत्र एवं सौंदर्य साधनों पर अधिकार है।

शनि: घर के मालिकों, भूमि के मालिकों, वैद्य, कोलसा, भूमि के मध्य का धन आदि मिलने की सत्ता है। न्यायालयों के परिक्षेत्र में विशेष अधिकार है।

ज्योतिषीय फलादेश में इन घटकों का ध्यान रखना आवश्यक है। जिससे ग्रह के भावानुसार स्थिति को देखकर फलादेश करना चाहिए। विशेषकर दशम भाव तथा चतुर्थ भाव में इनका प्रभाव ज्यादा प्रभावी होता है। विशेष जानकारी हेतु स्वयं मिलें या जन्म पत्रिका की फोटो प्रति प्रश्न तथा ११००/-, का डी.डी. एडवांस जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

अचानक धन प्राप्ति के योग ज्योतिष में

जातक जब से समझदार बनता है, तब से धन प्राप्ति की ओर नजर रखता है तथा इच्छा जाहिर करता है कि उसे धन कहां से कैसे मिलेगा। इसी क्रम में जातक की कुण्डली में धन प्राप्ति के योगों में अचानक आकस्मिक धन प्राप्ति का योग भी होता है। उसे पढ़ना चाहिए। अचानक धन प्राप्ति का साधन, लोटरी का नवम्बर खुलना, गुप्त गढ़ा धन मिलना, सट्टा बाजारी, प्रतियोगिता, मान-सम्मान, पैतृक सम्पदा या रास्ते में गिरा धन या भेंट पूजा आदि के माध्यम से अर्थात् स्वयं का अर्जित न होकर अन्य से स्वयं प्राप्त होना आदि प्राप्ति के योग को अचानक धन प्राप्ति के योग में माना जाता है। व्यापार में बड़ा आर्डर मिल जाना, खोया हुआ धन पुनः प्राप्त होना या अन्य स्रोत से स्थाई आमदन योग यथा कमीशन आदि भी हैं। ज्योतिष में कुण्डली का अध्ययन करते समय भावों का बोध होना चाहिए पहले भाव को लग्न भी कहते हैं। जन्म पत्रिका पठन में पंचम भाव या पंचम स्थान से यह जानकारी प्राप्त की जाती है। पंचमेश का शुभ स्थानों पर बैठना, शुभ ग्रहों से युक्ति करना, शुभ ग्रह की पंचम स्थान पर शुभ दृष्टि होना उपस्थित योगों के लिए आवश्यक होता है। जैसे पंचम स्थान पर चन्द्रमा बैठा है तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को प्रायः लॉटरी आदि में अकस्मात धन की प्राप्ति होती है। कुण्डली में धन लाभ कमाने वाले मुख्य इन दोनों का कारक ग्रह है। बृहस्पति और अकस्मात् फल देने वाले ग्रह हैं। राहु एवं केतु अन्य कुण्डली में द्वितीय भाव, एकादश भाव, द्वितीयेश, एकादशेश, गुरु, राहु एवं केतु की स्थिति जितनी अधिकाधिक अच्छी होगी, उतनी ही अधिक स्थिति अकस्मात (अचानक) धन प्राप्ति की होगी। इस प्रकार अकस्मात धन प्राप्ति के योग निम्नांकित बनते हैं।

(१) यदि द्वितीयेश और चतुर्थेश शुभ ग्रह के साथ नवम भाव में शुभ राशि गत होकर बैठे हों तो जातक को भूमि में गढ़ी हुई सम्पदा मिलती है। इसमें दशाएं व गोचर में ग्रहों की विभिन्न राशि पर विचरण भी देखना आवश्यक होता है। (२) यदि एकादशेश और चतुर्थेश परस्पर शुभ ग्रह हों। मित्र हों। एकादशेश और चतुर्थगत हो और चतुर्थेश शुभ ग्रहों के साथ हो तो भूमि में गढ़ा धन जातक को मिलता है। (४२ वर्ष बाद में) (३) लग्नेश, द्वितीयेश तथा द्वितीयेश लाभस्थ हो तो थोड़ा-थोड़ा धन गुप्त या लॉटरी आदि से प्राप्त होता रहता है। (४) गुरु एवं चन्द्र की युक्ति कर्क राशि में दूसरे, चौथे, पांचवें, नवें, ग्यारहवें भाव में हो तो आकस्मिक धन प्राप्ति योग बनता है। (५) नवम् भाव में राहु हो तथा नवमेश बलवान हो, कुण्डली में तुला या मकर लग्न को विशेष फल मिलता है। (६) चन्द्रमा से तीसरे, छठें, दसवें और ग्यारहवें स्थानों में शुभ ग्रह हो तो ससुराल से भी विशेष सहयोग मिलता है। (७) गुरु नवम भाव में कर्क या धनु राशि का हो तो मकर का मंगल चन्द्रमा के साथ दशम भाव में हो तो यह योग होता है। (८) द्वतीय भाव में मंगल तथा गुरु की युति हो तो मिलता है। (९) धनेश अष्टम भाव में तथा अष्टमेश धन भाव में हो तो विशेष लाभ मिलता है। इनको विशेष सम्मान मिलेगा। (१०) दशमेश एवं धनेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तो घुड़ सवारी का, लाटरी या जमीन पर अचानक धन प्राप्ति होगी।

उपर्युक्त योगों के अतिरिक्त ग्रहों का षडबल नवांश में ग्रह स्थिति, षोडस वर्गों में ग्रह स्थिति, अष्टक वर्गों में अधिकतम शुभांक, महादशाएं, अन्तर दशाएं, प्रत्यन्तर दशाएं एवं गोचर स्थानों में विचरण ग्रहों की स्थिति का भी ध्यान रखकर फलादेश किया जाना चाहिए। तभी हमें सही सार्थकता प्राप्त होगी। इनमें कालसर्प योग, अनिष्ट योग आदि भी बाधित होते हैं। उनका निदान कर लेना चाहिए। विशेष जानकारी हेतु स्वयं आकर सम्पर्क करें तो फल कथन बताया जा सकता है।

सुख की खान वास्तु द्वारा निर्माण

पं. गोपाल शर्मा बी.ई. आचार्य सेवाराम जयपुरिया

भारत में धरती हमारी मां के समान मानी गई है और मां सदैव अपने बच्चों के सुखों की वृद्धि के लिये अपने सुख-दुःख का भी ध्यान नहीं रखती। इसीलिये वास्तुशास्त्र में मान्यता है कि जब व्यक्ति अपने भूखण्ड पर भवन का निर्माण करना चाहता है तो उसे भी धरती के सुख का ध्यान रखना चाहिये ताकि उस भूखंड पर बना भवन उसे तथा उसकी आने वाली पीढियों को पूरी सुरक्षा, समृद्धि व सुविधा प्रदान कर सके।

उसके लिये हमें वास्तु द्वारा निर्माण के मूल नियमों के अतिरिक्त शास्त्रानुसारेण भूमि शयन, भू-रुदन, भू-हास्य और भूमि के रजस्वला होने की जानकारी भी होनी चाहिये।

भू-हास्य-अर्थात् भूमि का हंसना-पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, गुरुवार, पुष्य श्रवण नक्षत्रों में पृथ्वी हंसती है। अतः प्रत्येक शुभ कार्यों में भूमि का हास्य शुभ व अनुकूल माना गया है।

भू-रुदन-अर्थात् भूमि का रोना, मास की अन्तिम घड़ी, वर्ष का अन्तिम दिन, अमावस्या तिथि, होलिका दहन दिवस एवम् प्रत्येक मंगलवार को भूमि-रुदन होता है अतः शुभ कार्य भूमि-रुदन में वर्जित माने गये हैं

भू-रजस्वला-स्त्री के समान भूमि भी रजस्वला होती है इसमें दो प्रमुख सिद्धान्त मान्य हैं।

सूर्य सक्रांति से १, ५, १०, ११, १६, १८ तथा १९वें दिन भूमि रजस्वला मानी जाती हैं।

पंचमी को मंगलवार, षष्टी को रविवार, सप्तमी को शुक्रवार हो तो इससे आगे के तीन दिन पृथ्वी रजस्वला होती है।

समस्त शुभ कार्यों में, यज्ञादि में, मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा में भू-रज समय त्याज्य होता है।

भूमि शयन-यह भी दो प्रकार का होता है।

१ सूर्य के नक्षत्र से दिन का (चन्द्र नक्षत्र) ५, ७, ९, १२, १९ और २६वां हो तो भूमि शयन माना जाता है।

उदाहरणतया- जिस दिन भूमि खोदनी है उस दिन;

(१) यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में हो तो, चन्द्रमा मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, उत्तरा फाल्गुनी, मूल और उ.भाद्रपद में हो तो पृथ्वी शयन होता है अतः इस दिन भूमि को कदापि न खोदें।

(२) इस विषय में मतान्तर से सूर्य की सक्रान्ति के दिन से ५, ७, ९, ११, १५, २०, २२, २३ एवं २८वें दिन भूमि शयन होता है।

सामान्यतः वास्तुशास्त्रानुसार भूमि को निम्न समय में नहीं खोदना चाहिये।

(१)भूमि शयन हो

(२) भू-रजस्वला

(३) भू-रुदन

(४) रविवार व मंगलवार के दिन

(५) बृहस्पति, शुक्र एवं चन्द्रमा के नीच राशिगत या अस्तंगत होने पर

(६) निम्नलिखित योगों में- बज्रयोग, व्याघात, शूल, व्यतिपात, गण्ड, अतिगण्ड, विष्कुम्भ एवं परिघ योग।

(७) गृहस्वामी की जन्म राशि से सूर्य चन्द्रमा, गुरु, शुक्र निर्बल हो या अस्त हो या नीचगत हो तो सूर्य की दृष्टि से गृहस्वामी को कष्ट होता है।

(८) चन्द्र निर्बल हो तो गृहस्वामिनी को कष्ट होता है।

(९) गुरु निर्बल हो तो सुख की कमी रहती है।

(१०) शुक्र निर्बल हो तो धन की कमी हो जाती है।

(११) चर लग्नों में (मेष, कर्क तुला व मकर)

(१२) रिक्ता तिथियां- (चतुर्थी, नवमी व चतुर्दशी) व अमावस्या को भी भूमि पर निर्माण कार्य का प्रारंभ नहीं करना चाहिये।

इसी प्रकार देव शयनी एकादशी को भी गृह निर्माण/गृहारम्भ, विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा आदि शुभ कार्य नहीं करते। (देव शयनी एकादशी-शास्त्रानुसार आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक देव सोते हैं।)

इसी प्रकार हमारे देश में बच्चे को सर्वप्रथम भूमि पर बिठाने का मुहूर्त भी होता है जिसे भूम्योपवेशन मुहूर्त कहते हैं।

तिथि-२, ३, ५, ७, १०, १२, १४ (दोनों पक्षों की)

वार-सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार तथा शुक्रवार

नक्षत्र-अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, रेवती और अभिजीत।

लग्न-२,५,८,११ (वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ)

जन्म से पांचवे महीने में, चार लग्नों में, मंगल बली में, वाराह भगवान की पूजा करके बालक को सर्वप्रथम पृथ्वी पर बिठाना चाहिये।

बिठाने से पहले निम्न मंत्र का उल्लेख करने से पृथ्वी माता के समान शिशु की दीर्घ जीवन पर्यन्त रक्षा करती है।

रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शिशुम्।
आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

भूमि खरीदने का मुहूर्त

पूर्वा तीनों मृग. पुन. श्लेषा मघा विशाख।
अनुराधा मूल रेवती ग्यारह नखत हैं खास॥
शुक्ल प्रतिपदा छोड़कर नन्दा पूर्णानाम।
अमावस्या भी त्यागिए भूमि क्रय के काम॥

ये ग्यारह नक्षत्र और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तथा अमावस्या को छोड़कर नन्दा (५, ११) पूर्णा (५, १०, १५) का भूमि खरीदना विशेष शुभ होता है। तथा भद्रा (२,७, १२) तथा जया (३,८,१३) मध्यम है। तथा रिक्ता तिथियां (४, ९, १४) त्याज्य हैं।

एक समय पाताल लोक से भूदेवी अर्थात् पृथ्वी का उद्धार मानव कल्याण के लिये भगवान् वाराह ने किया था तब भूदेवी ने वाराह भगवान् से बारम्बार प्रणाम करके कहा-कि देवेश कृपया आपकी प्रसन्नता के लिये मन्त्र बताये जिससे मनुष्य के सुखों तथा परमधाम की प्राप्ति होती है। तब वाराह भगवान् ने प्रसन्न होकर भूदेवी को परम गोपनीय मंत्र बताया। वह मंत्र इस प्रकार है।

''ॐ नमः श्रीवाराहाय धरण्युद्धारणाय स्वाहा''

अतः पृथ्वी की अभिलाषा रखने वाले मनुष्य को इहलोक में सदा ही इस मंत्र का जाप करना चाहिये। इच्छित जमीन की प्राप्ति में आने वाले प्रत्येक विघ्नों के निवारण का यह सरल परन्तु अचूक उपाय है।

विशेष-ज्योतिष शास्त्र में वास्तु के सिद्धान्तों का विस्तारपूर्वक वर्णन है जैसे कि-

१. दक्षिण द्वार का मकान स्त्रियों के लिये विशेषकर मंदा होता है। और पुरुष भी इस मकान में कोई विशेष सुख नहीं पाते इसलिये मुख्य द्वार दक्षिण में बनाना आखिरी विकल्प होना चाहिये। वास्तु शास्त्र के अध्ययन मनन के पिछले ९ वर्षों के व्यवहारिक अनुभव के आधार पर दक्षिण दिशा में भी दक्षिण-पूर्व/दक्षिण का दरवाजा हो सकता है, परन्तु दक्षिण-पश्चिम के दरवाजे वाले मकान का क्रय करना या उसमें रहना अच्छा नहीं है। इसमें गृहस्वामी प्रायः घर से बाहर रहता है तथा धन/स्वास्थ्य की हानि होने की प्रबल संभावना बनी रहती है।

२. आठवें भाव में बैठा हुआ शनि भवन के लिये बहुत ही अशुभ फल देता है जब मकान बनने लगे तो उस परिवार में मृत्यु का आवागमन प्रारम्भ हो जाता है। ऐसी स्थिति में शनि राहु केतु की स्थितिनुसार अनुसार फल देगा।

अतः ऐसी परिस्थिति में अशुभ फलों को कम करने के लिये जातक को अपने जन्मदिन के पश्चात् प्रतिवर्ष ८ किलो साबुत काले उड़द बहते पानी में जल प्रवाह करना लाभप्रद रहता है।

किसी भी प्रकार की वास्तु जिज्ञासा की शांति के लिये कृप्या निम्नलिखित पते पर संपर्क करें।

इन्स्टीट्यूट ऑफ वास्तु एवं जॉयफुल लीविंग
बी-292, सरस्वती विहार, आउटर रिंग रोड, प्रीतम पुरा,
नई दिल्ली-110034 फोन न० 27030966, 27030967,
27020736, 20065048, 35354200 फैक्स: 27028228

अविवाहित वर/कन्या के लिए उत्तम है उत्तर पश्चिम (वायव्य कोण)

पं. केवल आनन्द जोशी, प्रख्यात ज्योतिषी/वास्तुविद, सेक्टर-8/879, आर.के.पुरम, नई दिल्ली-22 दूरभाष : 9810202780, 20100993

वैसे तो जीवन में अनेक प्रकार की परेशानियां और आये दिन के क्लेश कष्ट आदि हैं। पर कभी-कभी छोटी-छोटी बातें भी भयंकर कष्ट का कारण बन जाती हैं। सांसारिक जीवन में समाज व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में और नियम कानून और निर्देश के निहित अर्थों के लिए शास्त्र और वेदादि ग्रंथ बने जिनमें वास्तु शास्त्र भी एक वैदिक अध्ययन है। देवताओं के वास्तुकार और शिल्पी स्वयं भगवान् ब्रह्मा ने विश्वकर्मा का रूप धारण किया। उनके ही अवैध गर्भ से भगवान् वास्तु देव की उत्पत्ति हुई। वैसे तो वास्तुदेव को अजेय शिल्पी और पारंगत भवन निर्माता और इन्द्रासन जैसे अभेद्य दुर्ग-महल के रचने वाले विश्वकर्मा के पुत्र वास्तुदेव ने सिर्फ प्रासाद महल किले या पाताल लोक का सृजन किया बल्कि पर्णकुटी, आश्रम और साधारण दो चार सदस्यों के परिवार के एक मंजिला और दुमंजिला घर की भी परिकल्पना की है। नियम संयम से विचलित हो जाने के कारण किसी वास्तु देवता को स्वर्ग से पृथ्वी में धकेल दिया गया और यह वरदान दिया कि जहां भी मनुष्यों और पशु पक्षी गण आदि का घर बनेगा वहीं पर तुम्हारा सम्पूर्ण शरीर आत्मसात हो जायेगा और तुमको स भी लोग अपने अपने घर पूजेंगे। यह भी एक रहस्य होगा कि चारों दिशाओं का सही अनुपात रखकर वास्तुदेव के सिर पैर और मर्मस्थलों का ध्यान रखकर जो गृहस्थ अपना छोटा या बड़ा जैसा भी संभव हो घर बनायेगा तो सुखी रहेगा। यदि वास्तुदेव के मर्म स्थलों का ध्यान नहीं रखकर गलत दिशा में पाक-शाला, बैठक या शयनकक्ष, प्रार्थना गृह और घर के पुत्र-पौत्र हेतु अतिरिक्त बनायेगा या उनका उपयोग गलत दिशा से होता तो सम्बन्धित सदस्य या घर के मुखिया को तद विषयक परेशानियां उत्पन्न होंगी। इनका समाधान तभी होगा जब वास्तु दोष समाप्त होगा या उसका उपाय, निराकरण विधिवत होगा। यह सूत्र ही आज के वास्तुशास्त्र यानि आर्किटेक्ट में ध्यानाकर्षण कर रहा कि आखिर दैनिक जीवन की असंगत परेशानियों का कारण क्या है कहां से निराकरण है।

वास्तु शास्त्र के अन्तर्गत एक सद्गृहस्थ के यहां विवाह योग्य वर-कन्या का भी प्रसंग आता है। ऐसा ही प्रसंग वास्तु दोष से जुड़ा हुआ है। आज के समय में मध्यमवर्गीय और उच्चवर्गीय परिवारों में बच्चों के विवाह की समस्या अधिक विकराल बनती जा रही है। यह सच है कि प्रबल विवाह योग के दौरान भी वर और कन्या के लिए जब उपयुक्त वर या कन्या नहीं मिलती है तो घर के मुखिया की चिन्ता बढ़ जाती है। वास्तुशास्त्र यहां पर इसलिए भी उपयोगी सिद्ध होता है कि हर परिवार की ईकाई किसी न किसी प्रकृति संतुलन के सिद्धान्त से जुड़ी है। चार दिशाओं के दरम्यान खींची गई चार अन्य दिशायें इस परिवार रूपी ब्रह्माण्ड के संतुलन में सहायक होती हैं। जैसे ईशान कोण पर गुरु ग्रह का निवास होता है तो उत्तर दिशा कुबेर यानि धन के देवता की है। वायव्य का स्वामी चन्द्र है जिसे हम अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा यश और ख्याति तथा वर्ग से जोड़ते हैं। पश्चिम दिशा का स्वामी शनि है जो कि आत्मशक्ति कर्म और अचल सम्पत्ति से जुड़ा है। नैऋत्य का स्वामी राहु है जो पराक्रम को बढ़ाता है। झंझटों से मुक्ति दिलाता है। जबकि मंगल दक्षिण दिशा में सुख-आराम और मांगलिक जीवन से जोड़ता है। आग्नेय यानि अग्नि कोण शुक्र के आधीन है जो खान-पान के जरिये प्रजनन शक्ति को पुष्ट करता है यही पूर्व दिशा का है जो इन्द्र देवता यानि सूर्य के अधीन है। ईशान कोण के बाद सबसे उत्तम वायव्य कोण ही होता है जिसमें आवास करने से अध्ययन करने या फिर कार्यालय आदि खोलने से जातकों को बाह्य जीवन में प्रवेश का अवसर मिलता है। एक विवाह योग्य कन्या के लिए शयन और कार्यालय में कार्य करने हेतु अगर वायव्य या उत्तर दिशा पर स्थापित कर दिया जाये और उत्तर दिशा में ही शिव पार्वती या राम सीता का चित्र रख दिया जाये तो कन्या या पुत्र के विवाह का मंगलमय समय विचारे हुए कार्यक्रम के अनुसार आ ही जायेगा।

उत्तर और वायव्य कोण इस कारण भी शिल्प शास्त्र के अनुसार मान्य है कि ये दोनों दिशा शुद्ध और गतिशील मानी गई हैं। चूंकि उत्तर दिशा कुबेर का स्थान है और घर कनिष्ठ सदस्य यानि पुत्र या कन्या आज लक्ष्मी या कुबेर स्वरूप हैं। अगर बचपन से इनके लिए उत्तर या वायव्य कोण का चयन किया जायेगा तो इनकी शिक्षा प्रशिक्षण का कार्य भी निरंपद गुजरेगा। बल्कि उच्च स्तर के उपयोगी विषय में बालकों को प्रवीणता मिलेगी। कन्या रत्न वास्तव में रत्न स्वरूप साबित होंगी। क्योंकि आज के समय में दोनों के लिए समान अवसर उपलब्ध हैं।

वैकल्पिक व्यवस्था का भी यहां पर सुझाव देना जरूरी है। क्योंकि कई घरों में जहां इतने सारे कमरे न होकर मात्र एक या दो कमरे ही उपलब्ध हैं वहां के लिए यही सुझाव दिया जा सकता है कि उत्तर या वायव्य कोण का निर्धारण करके चारपाई या पलंग वहां पर लगा देना चाहिए। मान लो एक कमरा पश्चिम और एक कमरा दक्षिण में लगा है। ऐसे आवास में जहां वर या कन्या का शयन कक्ष है वहां की उत्तर-पश्चिम दिशा की दीवार को शयन के लिए चुनना चाहिए।

वास्तु नियमानुसार तभी चला जा सकता है जब घर बनाने के लिए पर्याप्त जगह हो और उसी के अनुसार शहर या आवासीय परिसर का मास्टर प्लान भी बना हो। आज के समय में व्यावसायिक कोण को मद्देनजर रखते हुए ही किसी भी आवासीय क्षेत्र का प्लान बना होता है। सौभाग्य वश किसी-किसी को उचित दिशा में प्रवेश मार्ग, सड़क, सीवर और आंगन आदि सहित मकान बनाने का अवसर मिलता है जबकि किसी को एकदम विपरीत दिशा में अपने आवास बनाने पड़ जाते हैं।

उत्तर और वायव्य कोण दिशाओं की प्रमुखता के साथ-साथ आज के समय में सूर्यमुखी मकान चुनने भी जरूरी हैं। सूर्यमुखी मकान वह होते हैं जो पूर्व-पश्चिम की अधिक लम्बाई लिए होते हैं। चन्द्रमुखी मकान वे होते हैं जो दक्षिण की ओर अधिक लम्बाई लिए होते हैं। एकदम वर्गाकार प्लाट मिलना दुर्लभ नहीं तो असंभव जरूर है।

नोट-वास्तु शास्त्र और अपने आवास-दुकान आदि का वास्तु विश्लेषण करवाने हेतु आप निःसंकोच सम्पर्क करें। बहुत ही अल्प पारिश्रमिक पर सही-सही विवेचना सलाह और तरक्की के उपाय बताए जाते हैं। कृपया पत्र-व्यवहार जवाबी लिफाफा भेजेंगे तभी होगा। पत्र-कूरियर से भेजें, साधारण डाक मिलती नहीं है।

भवन निर्माताओं हेतु वास्तुचित्रण

आदर्श आवास-1 (नारद संहितानुसार)

आदर्श आवास-1 विश्वकर्मा के अनुसार मानचित्र

दिशा-स्वामी, ग्रह-देवता चक्र

पृष्ठ २० का शेष ......

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा
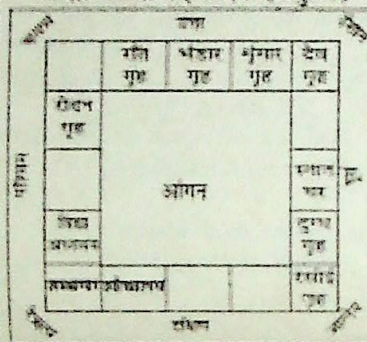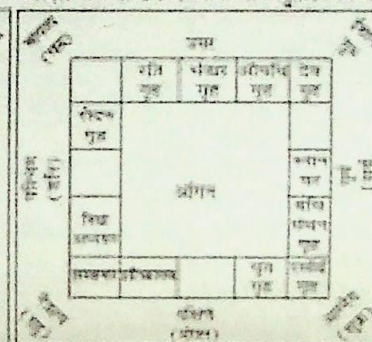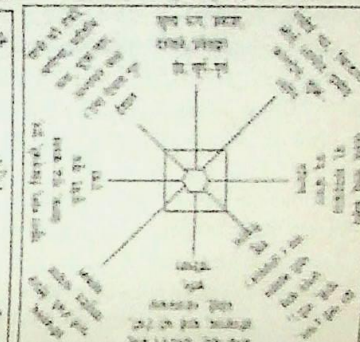
अप्रैल—बारहवें स्थान का मंगल भूमि, भवन, जमीन आदि हेतु विवाद कारक है। स्वयं को क्रोध वृद्धि रहकर स्वजनों से तनाव व खिंचाव चलेगा। व्यापारिक कामों में अवरोध, ऋण चिन्ता एवं मानसिक उद्वेग की वृद्धि रहेगी। राज्यादि कानूनी कामों से परेशानी प्रद समय रहेगा।

मई—गत समय में किये गये परिश्रम व भागदौड़ का लाभ बनेगा। लेन-देन के कामों में आर्थिक उपार्जन बनकर मनोहर्ष बढ़ेगा। पारिवारिक व सामाजिक जनों के बीच प्रशंसा व प्रसिद्धि बढ़ेगी। घर में कोई मांगलिक उत्सव का कार्य भी उक्त समय में बनेगा। आर्थिक भार में कमी रहेगी।

जून—स्त्री स्वास्थ्य की न्यूनता से मानसिक चिन्ता, मिथ्या भ्रमण एवं दी गई रकमों के आगमन में रुकावटें रहेंगी। गृह सदस्यों का सामंजस्य श्रेष्ठ रहने से स्वयं में धैर्यता उत्तम रहेगी। जबकि अनावश्यक अपव्यय की विशेषता रहेगी। स्वयं को भी आलस्य वृद्धि रहेगी।

जुलाई—कानूनी कामों और व्यापारिक कामों में अवरोध, पारिवारिक जनों से विरोध एवं झंझट बढ़कर मानसिक संतुलन में गिरावट बनेगी। यात्रादि कामों में हानि एवं चोर-चपेट से नुकसान के योग हैं। अतः सतर्कता रखना हितकारी रहेगा। अपनी बोल-चाल पर भी नियंत्रण रहेगा।

अगस्त—तीसरे स्थान का शनि प्रभाव वृद्धि करवा कर राज कार्यों व सामाजिक जनों पर प्रभाव बढ़ायेगा एवं शत्रुजनों को भय बनेगा। स्वयं को स्वास्थ्य हीनता और अपव्यय की वृद्धि रहेगी। अनावश्यक भ्रमण, स्त्री, संतान हेतु चिन्ता और आय कामों में अवरोध रहेंगे।

सितम्बर—देह में वात व्याधि का प्रकोप, मानसिक रूप से खिन्नता एवं स्वयं को क्रोधाधिक्यता रहेगी। अनावश्यक भ्रमण से समय का दुरुपयोग रहेगा। मास उत्तरार्द्ध में नवीन आय संबंधी व्यावसायिक योजना बनकर मनोद्वेग की न्यूनता होगी व उत्साह बढ़ेगा।

अक्टूबर—नवीन कार्यों से आर्थिक लाभ, मित्रों व स्वजनों का सहयोग एवं देह स्वस्थता रहकर मनोबल की वृद्धि होगी। राज्यादिक कर्मचारियों व उच्चाधिकारी वर्ग से श्रेष्ठ मेलन बनेगा। भूमि-भवन आदि के निर्माण का लाभ होगा। नवीन रहवासी सुख बढ़ेगा।

नवम्बर—आस-पड़ोस के व्यक्तियों से आकस्मिक विरोध व विवाद, राजकीय परेशानियां, घरेलू खर्च की अधिकता एवं मिथ्या भ्रमण कार्यों की विशेषता रहेगी। मासांत में नवीन व्यक्तियों से संपर्क बढ़कर व्यापारादि कामों में सुधार होगा।

दिसम्बर—छठे स्थान पर मंगल का भ्रमण शत्रुओं में भय वृद्धि एवं स्वयं को पारिवारिक व सामाजिक शुभ सम्मान कारक है। क्रय विक्रय कामों से श्रेष्ठ अर्थोपार्जन, नवीन व्यापार हेतु योजना, स्वयं के आत्म विश्वास की वृद्धि और कार्यक्षमता की बढ़ोत्तरी होगी।

जनवरी २००५ ई.—जन्म राशि पर शनि के आगमन से मन में अशांति, निजी जनों से उलझनें एवं अनेक रोष पैदा होकर राज्यादिक परेशानी रहेगी। जबकि व्यापारादि कार्य यथावत रहकर अर्थोपार्जन उत्तम रहेगा। नवीन व्यवसाय का प्रचार-प्रसार विशेष रहकर अर्थ लाभ रहेगा।

फरवरी—क्रोधाधिक्यता, आर्थिक रुकावटें, आय की अपेक्षा व्यय की वृद्धि एवं राज्यादिक परेशानियां बढ़कर मानसिक अशांति व उद्वेग रहेगा। अपने ही स्वजनों से बार-बार टकराव व तनाव रहेगा। आय के कामों में अवरोध व आकस्मिक हानि संभव है।

मार्च—स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहते हुए भी भाग-दौड़ व यात्रादि कामों की अधिकता रहेगी। कारोबार में रिश्ते-नातेदारों का सहयोग भी होगा किन्तु स्वयं के मनोबल में गिरावट रहेगी। कानूनी कामों एवं जमीन, भूमि, भवन के कामों में परेशानियां बढ़ेगी।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल—आय के स्रोत बढ़ने से आत्मबल की वृद्धि एवं पारिवारिक, सामाजिक लोगों से मधुर संपर्क बढ़कर मान-सम्मान वृद्धि रहेगी। उत्तम रहवास, खान-पान एवं वस्त्रादि का श्रेष्ठ लाभ रहेगा। राज्यादि कानूनी कामों में सफलता एवं विजय रहेगी।

मई—मंगल द्वादशस्थ से स्वास्थ्य में गड़बड़ी, स्वकीय स्वभाव में चिड़चिड़ापन, बार-बार की क्रोध की उत्तेजना से अपने ही बने बनाये कामों में बिगाड़ादि हानि संभव है। जबकि व्यापारादि कार्यों से आय साधना यथावत लाभप्रद रहेगी।

जून—शत्रुओं की गुप्त चालों का दुष्प्रभाव रहेगा। नीच विचारक व्यक्तियों के समागम से आर्थिक हानि एवं मिथ्या भ्रम होकर आंतरिक घुटनशीलता चलेगी। स्वास्थ्य स्थिति में भी बार-बार न्यूनता रहने से देह शिथिलता प्रायशः बनी रहेगी।

जुलाई—मास में नवीन मित्र से मधुर संपर्क बढ़कर उच्चाधिकारियों से श्रेष्ठ सम्मेलन एवं राजकीय स्थानों पर प्रभाव वृद्धि होगी। आय के नवीन साधन होकर उत्तम अर्थोपार्जन तथा आत्मबल की वृद्धि होगी। शत्रु पराजित होंगे तथा भयभीत बनेंगे।

अगस्त—क्रय-विक्रय संबंधी नवीन व्यवसाय प्रगति होगी। बड़े व प्रभावशाली लोगों से संपर्क बढ़ेगा जिससे कार्यक्षेत्र एवं समाज में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। दाम्पत्य सुख श्रेष्ठ एवं स्त्री-संतानादि का श्रेष्ठ सहयोग बनेगा। कारोबार में उन्नति रहेगी।

सितम्बर—जन्म राशि पर शनि का भ्रमण मिथ्या ही अहंकार वृद्धि करवाकर स्वजनों व रिश्ते-नातेदारों से तनावकारी फलप्रद है। यद्यपि व्यवसायिक कामों के द्वारा आर्थिक लाभ प्रगतिप्रद रहेगा। राजकीयादि कामों में प्रभाव की विशेषता रहेगी।

अक्टूबर—नवीन व्यवसायिक योजना बनकर रुकावट, स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता तथा पारिवारिक जनों में मतभेद होकर विवादकता बनेगी। यद्यपि स्थायी व्यवसायों व राज्यादिक कामों से आर्थिक लाभ रहेगा। भागदौड़ व यात्रादि भ्रमण कार्य विशेष रहेंगे।

नवम्बर—चतुर्थ स्थान के मंगल से रक्त विकार आदि दोषों से स्वास्थ्य हीनता चलेगी। शत्रुजन प्रभावी होंगे और राजकीयादि कानूनी कामों से परेशानियां बढ़कर मानसिक अस्थिरता व उद्वेग रहेंगे। अनेक नवीन भ्रम पैदा होकर अशांति बढ़ेगी।

दिसम्बर—मास पूर्वार्द्ध में गत मासानुसार नेष्टफल रहेंगे। यात्रादि में चौर भय व शत्रुओं से झगड़े की संभावना बनी रहेगी। उत्तरार्द्ध में उच्चाधिकारियों एवं नवीन मित्र सहयोग से आय कामों में वृद्धि के साथ राजकीय स्थानों पर प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी।

जनवरी २००५ ई.—शनि का द्वादश स्थान पर आना मानसिक द्वन्द्व, आंतरिक घुटन व अस्थिरता फलप्रद है किन्तु व्यवसायादि कामों के द्वारा अर्थोपार्जन के कार्य श्रेष्ठ रहेंगे। स्त्री, संतानादि का श्रेष्ठ सुख तथा सहयोग रहेगा। मांगलिक खर्च बढ़ेगा।

फरवरी—मिले-जुले फल रहेंगे। स्वजनों से कई बार तनाव होकर पुनः मेलजोल बनेगा। व्यापारिक कामों में अनेक रुकावटों के बावजूद मासांत में अर्थ लाभ और कानूनी कामों में सफलता बनेगी। शत्रुओं में भयवृद्धि रहकर स्वयं की प्रसिद्धि बढ़ेगी।

मार्च—मित्र वर्ग का सहयोग, आर्थिक आय के कार्यों से लाभ व शत्रु पराजित होने से मनोबल सतेज होगा। नवीन विकासशील व्यवसायिक कार्य की योजना बनकर सफलता बनेगी। मानसिक हर्ष बढ़कर उत्सव जन्य कामों का घर में आयोजन होगा।

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल—भाई-बन्धु व मित्रों से सुसहयोग बनकर अनेक महत्वपूर्ण कामों की सिद्धि होगी। स्वयं के स्वास्थ्य में बीच-बीच में न्यूनता अवश्य बनेगी। व्यापारिक कामों में श्रेष्ठ प्रगति रहकर आत्मबल की वृद्धि रहेगी। स्त्री, संतानादि के प्रति सामान्यत: चिन्ता रहेगी।

मई—मास में रिश्ते-नातेदारों का समागम, घर में उत्सव पूर्ण मांगलिक आयोजन एवं भाई-बन्धु, मित्रों का श्रेष्ठ सहयोग रहेगा। परिवार व सामाजिक जनों के मध्य मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी। व्यापारिक कामों में प्रशंसात्मक आर्थिक प्रगति होगी। दाम्पत्य सुख श्रेष्ठ रहेगा।

जून—पूर्वार्द्ध में व्यवसायिक स्थिति मजबूत तथा मनोबल वृद्धि रहेगी। उत्तरार्द्ध में १२वें स्थान का मंगल अनावश्यक खर्च की वृद्धि, स्वास्थ्य में न्यूनाधिक्यता और निजी निकटवर्त्ती व्यक्तियों से मतभेद उभर कर मानसिक तनाव व खिंचाव बनेगा।

जुलाई—यात्रादि कामों में हानि व स्वास्थ्य का पाया निर्बल चलेगा। कानूनी व राजकीयादि कामों में विघटन होकर आर्थिक हानि रहेगी। स्वयं को प्रतिशोध की भावनाओं के साथ अनावश्यक क्रोध की अभिवृद्धि रहेगी। आय कामों में अवरोध चलेंगे।

अगस्त—आकस्मिक कामों में परिवर्तन बनकर आर्थिक आय बढ़ेगी तथा पारिवारिक सामाजिक तनावों में सुधार होगा। स्वजनों के आगमन का हर्ष होगा तथा आंतरिक विरोधों से विमुक्ति बनेगी। कानूनी व राजकीय स्थिति में प्रभावशाली परिवर्तन से मनोबल बढ़ेगा।

सितम्बर—शनि साढ़े साती का प्रारंभ होगा, फिर भी लोगों में प्रशंसा व प्रसिद्धि बढ़ेगी। भाई-बन्धु एवं मित्रों का सफलतम सहयोग बनेगा। व्यापार कामों में नई सूझ-बूझ से प्रगति होगी। स्वास्थ्य में उत्तम सुधार रहकर कार्य क्षमता में बढ़ोत्तरी होगी। मुद्रा प्रसन्न रहेगी।

अक्टूबर—नवीन कौटुम्बिक, रिश्तेदारी जन्य कोई संपर्क बढ़ेगा। जिससे घर में हर्ष का वातावरण बनेगा। अर्थोपार्जन के कामों में सफलता रहेगी। मित्रों व भागीदारों का श्रेष्ठ सहयोग व उत्साह बर्द्धन से आत्मविश्वास की वृद्धि रहेगी। स्वास्थ्य अनुकूल प्राय: चलेगा।

नवम्बर—पूर्वार्द्ध में मानसिक चंचलता व कार्यक्षमता श्रेष्ठ रहेगी। जिससे आय साधन प्रगतिकारक रहेंगे। मास के उत्तरार्द्ध में चतुर्थ रवि बुध से देह में आलस्यता, कामों में लापरवाही तथा स्वयं में अनावश्यक स्वाभिमान की वृद्धि रहेगी। घरेलू खर्च भी इस समय बढ़ा हुआ रहेगा।

दिसम्बर—चतुर्थ मंगल से व्यवहार में कठोरता एवं क्रोधवृद्धि रहकर स्वजनों से अनायास तनाव बढ़ेगा। व्यापारिक कामों में रुकावटें तथा अनियमितता चलेगी। बेकार के कामों में भ्रमण-यात्रा एवं मिथ्या खर्च होकर मनोसंताप बढ़ेगा।

जनवरी २००५ ई.—अपनी ही कार्यशैली के कारण अनेक शत्रुओं के बढ़ जाने से आंतरिक घुटन व तनाव रहेगा। अनावश्यक जोश में किये गये लेन-देन अथवा व्यापारिक कामों में हानि रहेगी। मनोबल में गिरावट तथा भयवृद्धि चलेगी।

फरवरी—स्वास्थ्य में सुधार व कार्य शैली में शुभ परिवर्तन होकर लोगों से व्यवहारिकता बढ़ेगी। पुरानी दी गई रकम के आने का हर्ष होगा। राजकीय कामों में चतुरता पूर्ण व्यवहार रहकर सफलता बनेगी। स्त्री-संतानादि का श्रेष्ठ सुख बनेगा।

मार्च—नवीन कार्य योजना सफल बनकर आय स्त्रोत की वृद्धि होगी। नये रिश्तेदारों का श्रेष्ठ संपर्क भी बढ़ेगा तथा सामाजिक व पारिवारिक जनों में प्रतिष्ठा बनेगी। धार्मिक निर्माणादि कार्यों में रुचि बढ़ने से स्वजनों में प्रशंसा व प्रसिद्धि बढ़ेगी।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल—बारहवें स्थान का गुरु मानसिक चिन्ता व स्वजनों से अलगाववादी विचार कारक है। आय के हर प्रकार से किये जाने वाले कामों में असफलता एवं हानि रहेगी। कामों, भूल व अन्धानुकरण करने की प्रवृत्ति रहेगी। जिससे प्रतिष्ठा हानि संभव है।

मई—शारीरिक थकान, कामों में अरुचि, मन में अशांति व खर्च की अधिकता रहकर घरेलू प्रपंच बढ़े रहेंगे। राजकीय व कानूनी कामों में उलझनें तथा मान-सम्मान पर ठेस से आंतरिक क्षोभ बना रहेगा। स्त्री-संतानादि के स्वास्थ्य हेतु चिन्ताएं रहेंगी।

जून—दूरगामी रिश्तेदारों के सुसज्जन से संपर्क बढ़कर आर्थिक सहयोग बनेगा। जिससे व्यापारिक कार्य में गति बनेगी। तथा अर्थोपार्जन में सुधार होगा। स्वजनों से फिर भी मतभेद व तनाव चलेगा। किन्तु स्वयं में आत्मबल की वृद्धि होगी व हौसला बढ़ेगा।

जुलाई—स्त्री स्वास्थ्य हेतु मनोचिन्ता, शत्रुजनों की कार्यगति से सामान्य अवरोध किन्तु आंशिक अर्थ उपार्जन रहने से मनोबल बना हुआ रहेगा। धार्मिक कृत्यों व आयोजनों में संपर्क बढ़ेगा। राजकीयादि कामों में उतार-चढ़ाव प्रायश: रहेगा।

अगस्त—बारहवें स्थान पर मंगल गुरु की युति से स्व-स्वास्थ्य में गड़बड़ी व रक्त निर्बलता बढ़ेगी। औषधोपचार आदि में व्ययाधिक्यता चलेगी। मासांत में शत्रुवर्ग प्रभावी होकर अनेक रुकावटें पैदा करेंगे। जिससे मानसिक व्यथा बढ़ेगी तथा क्रोधवृद्धि भी रहेगी।

सितम्बर—जन्मराशि पर गुरु का भ्रमण शत्रुओं में भयवृद्धि करके पराजित करने का फलप्रद रहेगा। राजनैतिक व्यक्तियों से शुभ संपर्क बढ़ेगा। जिससे राजकीय स्थानों व उच्चाधिकारियों पर प्रभाव की वृद्धि होगी तथा स्वयं को आत्मबल बढ़ेगा। परिजनों का भी सहयोग बनेगा।

अक्टूबर—व्यापार कामों में सुधार, स्वास्थ्य में उठाव व शत्रुओं पर विशेष प्रभाव बढ़कर वे भयभीत होंगे। स्वयं के व्यवसायों से आर्थिक लाभ बढ़ेगा। भाई, बन्धु व मित्रों से मधुर संपर्क सुधर कर सहयोग बनेगा। नवीन कार्य योजना सफल रहेगी।

नवम्बर—लेन-देन व कारोबारी कामों में प्रगति तथा देह सुडौलता बनकर कार्य-क्षमता की वृद्धि रहेगी। गत समय की देनदारी चुकाने के प्रभाव से व्यापार क्षेत्र व सामाजिक जनों में इज्जत मान बढ़ेगा। दाम्पत्य सुख की बढ़ोत्तरी तथा संतानों की प्रगति होगी।

दिसम्बर—भूमि-भवनादि की खरीद अथवा निर्माण होकर रहवास सुख बढ़ेगा। पारिवारिक जनों में मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यवसायिक कामों की प्रगति होकर आर्थिक लाभ होगा और व्यवहार कुशलता का प्रभाव बढ़ेगा। शत्रुजनों में भय रहेगा।

जनवरी २००५ ई.—दशम शनि से राजनीतिज्ञों से शुभ संपर्क की वृद्धि तथा ठेकेदारी जन्य कामों के हेतु रुझान बढ़ेगा। भाई-बन्धु, मित्रों व स्त्री का सहयोग रहकर व्यवसायों में वृद्धि होगी। वाहन व भौतिक सुख के साधन बढ़ेंगे। आय के स्त्रोत श्रेष्ठ रहकर अर्थोपार्जन उत्तम रहेगा।

फरवरी—गोचर ग्रहानुसार चतुर्थ स्थान का मंगल भूमि-भवनादि कामों में विवाद, स्वयं को रक्त विकारादि अस्वस्थता पारिवारिक कलह एवं क्रोध की वृद्धि कारक है। अत: खान-पान व स्वभावादि पर नियंत्रण रखना हितकारक रहेगा। इस समय में संतान प्रगति में भी बाधा रहेगी।

मार्च—प्रथम सप्ताह बाद ग्रहों की उग्रता समाप्त होकर घर-गृहस्थी के विवाद सुलझेंगे तथा व्यापार कामों में गति बढ़कर आर्थिक लाभ रहेगा। स्वकीय स्वास्थ्य उत्तम चलेगा तथा मानसिक शांति बनकर हर्ष व मनोबल बढ़ेगा। स्त्री स्वास्थ्य न्यून रहेगा।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल—मंगल अष्टम में है अत: देह में शिथिलता और स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहते हुए भी पारिवारिक कामों की पूर्ति व व्यावसायिक कामों से आर्थिक लाभ रहेगा। राजकीय कामों में परेशानी. यात्रादि भ्रमण कार्यों में व्यय की अधिकता चलेगी। भाई-बन्धु व मित्रजनों से आंतरिक तनाव रहेगा।

मई—लेन-देन व आय कामों में प्रगति, नवीन व्यक्तियों से उत्तम संपर्क तथा शत्रुजनों पर प्रभाव की वृद्धि बनेगी। अपनी श्रेष्ठ सूझ-बूझ व कार्यशैली से कार्य क्षेत्र व पारिवारिक जनों में प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। अर्थोपार्जन प्रगति रहने के कारण आत्मबल सतेज रहेगा।

जून—परिश्रम विशेष, आय-व्यय की समानता और स्त्री-पुत्रादि के लिए स्वास्थ्य चिन्ता रहेगी। कौटुम्बिक जनों से मेल व सहयोग रहकर नई रिश्तेदारी का शुभत्व बनेगा। मित्रों, स्वजनों एवं पारिवारिक जनों के द्वारा समाज में प्रशंसा वृद्धि रहेगी। स्वयं का मनोबल सतेज रहकर कार्यक्षमता विशेष बढ़ेगी।

जुलाई—स्थान अथवा कार्य परिवर्तन के विचार, गुप्त शत्रु बढ़े, स्त्री स्वास्थ्य में कमजोरी किन्तु स्थायी व्यापारों से अर्थ लाभ रहेगा। स्वयं का स्वास्थ्य श्रेष्ठ, भूमि-भवन की खरीद के सुखद योग और घर में उत्सवादि आयोजन रहकर तेज खर्च रहेगा। संतानादि के कामों में उन्नति रहेगी।

अगस्त—राजकीय कामों व स्थानों में प्रभाव वृद्धि, उच्चाधिकारी वर्ग से उत्तम सम्मेलन, आत्म विश्वास सतेज और व्यवसायिक कामों में अर्थोपार्जन श्रेष्ठ रहेगा। मित्रों व स्वजनों पर स्वयं का दबदबा व प्रभाव रहेगा। खान-पान व वस्त्रादि के भौतिक सुखों का शौक बढ़कर उनके प्रति व्यय वृद्धि भी रहेगी।

सितम्बर—गुरु का बारहवें स्थान पर आना पारिवारिक व्यक्तियों, रिश्तेनातेदारों से टकराव व खिंचाव कारक है। लेन-देन कामों में अनायास हानि, सोचे समझे गये कामों में भी सहयोगियों द्वारा विपरीत ढंग से करने पर आशा के विपरीत असफलता होने से मनोबल में गिरावट एवं अशांति रहेगी।

अक्टूबर—अपने निजी व्यक्तियों के द्वारा अनेक मान हानि कारक अफवाह व आरोप, स्वयं को अकल्पित भय, शत्रुवर्ग के प्रभाव की वृद्धि एवं आय के साधनों में अवरोध बनेंगे। रहन-सहन व खान-पान में अनियमितता वश देह में रोगोपद्रव प आंतरिक घुटन रहेगी।

नवम्बर—पारिवारिक व सामाजिक स्वजनों से तनाव, राजकीय कानूनी कामों में अड़चनें, व्यवसायिक कामों में रुकावट व हानि तथा लेन-देन के कामों में आय साधनों पर रोक से तंगी रहेगी। घरेलू सदस्यों को बार-बार स्वास्थ्य हीनता से मानसिक चिन्ताएं बढ़ी रहेंगी।

दिसम्बर—स्वयं के व्यवहारादि में परिवर्तन चिड़चिड़ापन तथा आंतरिक क्रोध बढ़ेगा। आर्थिक तनाव से मानसिक चिन्ताएं व परिवार संचालन में अवरोध रहेंगे। उत्तरार्द्ध मास में किसी प्रभावशाली व्यक्ति विशेष का सहयोग बनकर आंशिक सुधार होगा। किन्तु मन में अशांति रहेगी।

जनवरी २००५ ई.—स्वयं के मनोबल में गिरावट रहते हुए भी व्यापारादि कामों में परिश्रम विशेष रहकर सुधार होगा। कानूनी कामों में सहयोग से सफलता भी बनेगी। किन्तु स्वयं को मानसिक अस्थिरता व उद्वेग बढ़े रहेंगे। भाई-बन्धुओं व स्वजनों से टकराव चलेगा।

फरवरी—स्वयं के स्वास्थ्य में सुधार, स्त्री-संतान व पारिवारिक जनों के क्लेश व कलह में परिवर्तन होकर कार्य वृत्ति में बढ़ोतरी रहेगी। जबकि कार्य क्षेत्र व सामाजिक स्थानों पर प्रशंसनीय प्रभाव बढ़ेगा। दौड़-धूप विशेष से आर्थिक लाभ व ऋणादि से विमुक्ति होगी।

मार्च—मास उत्तरार्द्ध में चतुर्थ स्थान का मंगल स्वयं को चोट-चपेट का भय एवं शत्रुवृद्धि कारक है। किन्तु अर्थोपार्जन के कार्य श्रेष्ठ रहकर मनोबल में सतेजता रहेगी। भूमि-भवन का लाभ रहेगा। घरेलू सदस्यों के सहयोग से कामों में सुधार व राजकीय कामों में सफलता रहेगी।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल—शनि अष्टम में रहते हुए भी शत्रुओं में भय तथा उन पर प्रभाव वृद्धि, राजकीय कामों में प्रगति, भूमि-भवन के विवादों से छुटकारा तथा अर्थोपार्जन के कामों से लाभ रहेगा। स्वजनों मित्रों का सहयोग रहकर नवीन कार्य योजना बनेगी। दाम्पत्य सुख की वृद्धि व संतति की प्रगति रहेगी।

मई—स्वयं को पेट संबंधी रोगों का प्रकोप, कामों में अवरोध, गुप्त शत्रुओं का मानसिक भय तथा खुद की याददास्त में कमी रहकर भूलवश लेन-देन में हानि रहेगी। स्थान व कार्य परिवर्तन की जिज्ञासा बढ़ेगी। निजी व्यक्तियों का समागम रहकर समाज में मान इज्जत की वृद्धि रहेगी।

जून—सम्पत्ति विवाद से परेशानियां बढ़कर अनेक चिन्ताओं का उदय, अनायास ही स्वजनों से अव्यवहार होकर तनाव की वृद्धि रहेगी। व्यापार कामों के लिए विशेष परिश्रम व भागदौड़ रहेगी। मासांत में द्रव्य का उपार्जन श्रेष्ठ होकर आत्मबल की वृद्धि रहेगी।

जुलाई—अनेक विवादग्रस्त विषयों का निबटारा होने से मानसिक हर्ष, पारिवारिक व घरेलू सदस्यों के सहयोग से व्यवसायिक कामों में प्रगति, कानूनी कामों की अड़चनें दूर होकर सफलता बनेगी। मास में श्रेष्ठ अर्थोपार्जन बनकर मानसिक स्थिति में प्रसन्नता बढ़ेगी।

अगस्त—स्वयं में साहस वृद्धि होकर कार्यक्षमता बढ़ेगी। संतान कार्यों में प्रगति तथा राजकीयादि कानूनी कामों में सफलता का हर्ष रहेगा। जबकि सामान्य स्वास्थ्य हीनता व दौड़-धूप के साथ यात्रादि श्रम कार्य विशेष रहेंगे। मासांत में मानसिक अस्थिरता व चिन्ताओं का उदय रहेगा।

सितम्बर—सामाजिक व पारिवारिक बने गुप्त शत्रु भयभीत रहेंगे। नवम शनि के प्रभाव से व्यवसायिक कामों में नवीन परिवर्तन होगा जिससे आर्थिक उपार्जन श्रेष्ठ होगा और लेन-देन के कामों में उत्तम सुधार होकर व्यापार क्षेत्र में प्रशंसा एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि रहेगी।

अक्टूबर—पूर्वार्द्ध मास में मानसिक हर्ष के साथ उत्सव आयोजन, सभान कार्य-कर्त्ताओं में मान-सम्मान तथा रिश्ते-नातेदारों का समागम रहेगा। उत्तरार्द्ध में १२वां सूर्य परिवार के घरेलू सदस्यों में मतभेद एवं विवाद आदि झंझट कारक है। जिससे मनोद्वेग बढ़ेगा।

नवम्बर—शत्रुवर्ग प्रभावशाली होगा। स्वयं के मनोबल में गिरावट तथा वाहनादि के चालन से दुर्घटनादि चोट भय रहेगा। बारहवें स्थान पर मंगल का गोचर भ्रमण देह में रक्तविकार या रक्तचापादि रोगोत्पातकारी है। स्वयं को क्रोध वृद्धि रहकर स्वजनों से मिथ्या तनाव चलेगा।

दिसम्बर—अनावश्यक व्यय वृद्धि, यात्रा प्रवास कामों में परेशानी तथा अपने निजी व्यक्तियों द्वारा शत्रु तुल्य व्यवहार से मनोस्थिति विचलित रहेगी। मासांत में गलतफहमियां दूर होकर शांति बनेगी और व्यवसायिक कामों में श्रेष्ठ गति बढ़कर उत्तम अर्थोपार्जन होगा।

जनवरी २००५ ई.—स्वयं में उत्तम बुद्धि चातुर्य बढ़कर व्यवसायों में नवीनता, राजकर्मचारियों से मधुर संपर्क एवं स्वजनों के सहयोग से अर्थोपार्जन कामों में लाभ बढ़ेगा। भूमि, जमीन-जायदाद आदि के कानूनी कामों में सफलता बनकर राजकीय विजय बनेगी।

फरवरी—लोगों से श्रेष्ठ संपर्क बढ़ेगें। स्त्री-संतान आदि का सुख रहेगा तथा व्यापार स्थानों पर स्वयं का श्रेष्ठ प्रभाव बढ़कर आर्थिक लाभ होगा। तबियत नर्म-गर्म रहने से श्रम-साधना की कमी चलेगी। घर में मांगलिक कामों का आयोजन रहकर खर्च वृद्धि रहेगी।

मार्च—रवि बुध का चतुर्थ होना घरेलू क्लेश व कलह का कारक है किन्तु व्यापारिक कामों में प्रगति, राजनैतिक जनों से संपर्क एवं स्वयं के आत्मबल की वृद्धि रहेगी। पुरानी लेनदारी के आगमन का हर्ष, रिश्तेदारों व मित्रों के सहयोग से समाज परिवार में मान-सम्मान व इज्जत वृद्धि रहेगी।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल—स्वयं में मनोबल की वृद्धि, लोगों से व्यवहार कुशलता बढ़कर स्वार्थ सिद्धि के कामों में सफलता तथा शत्रुजनों में भय वृद्धि रहेगी। राजकीय स्थानों तथा समाज परिवार में प्रभावशालीनता बढ़ेगी। नये व्यक्तियों से भी संपर्क बढ़कर व्यावसायिक लाभ की वृद्धि रहेगी।

मई—व्यवसाय कार्यों में नवीन परिवर्तन, स्वास्थ्य में श्रेष्ठता तथा प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क से आत्म विश्वास की वृद्धि रहेगी। कानूनी कामों में प्रगति आर्थिक उपार्जन श्रेष्ठ तथा स्त्री संतानादि का सुख उत्तम रहेगा। समाज परिवार में इज्जत वृद्धि रहेगी।

जून—मास पूर्वार्द्ध में व्यवसायों में सफलता, घरेलू सहयोग एवं देह स्वस्थता रहेगी। उत्तरार्द्ध में मंगल अष्टम स्थान पर आ जाने से आकस्मिक रोगोपद्रव स्वास्थ्य हीनता तथा शत्रु वर्ग प्रभावी बनकर राज्यादि कामों में रुकावटें होने से मनो विकलता बढ़ेगी।

जुलाई—कौटुम्बिक व रिश्ते-नातेदारों से विवाद व अनबन होकर क्रोध की अधिकता रहेगी। समान कार्य-कर्त्ताओं से अनावश्यक शत्रुता बढ़कर व्यवसायों में रुकावट तथा स्वयं को स्वास्थ्य हीनता चलेगी। स्त्री-संतानादि के प्रति अनेक चिन्ता बढ़कर मन अशांत रहेगा।

अगस्त—स्वयं के स्वास्थ्य में सुधार, व्यापारिक स्थानों पर बनी भ्रम स्थिति का निराकरण एवं घरेलू सदस्यों के साथ व्यवहारों में सुधार होकर मानसिकता में बदलाव आएगा। मासांत में अनेक सहयोग हो कर आर्थिक लाभ व प्रगति बढ़ेगी।

सितम्बर—घर-गृहस्थी के कामों की विशेषता रहकर व्यस्तता चलेगी। स्वजनों का समागम व नई रिश्ते-नातेदारी बनकर मानसिक हर्ष बढ़ेगा। व्यावसायिक कामों में नवीन शैली बनकर उत्तम अर्थोपार्जन होगा। जिससे मनोबल सतेज होगा व स्वजनों में सम्मान वृद्धि रहेगी।

अक्टूबर—अष्टम स्थान का शनि अनेक शत्रु वृद्धि, व्यवहार में कठोरता से हानि तथा क्रोधवृद्धि होकर मानसिक संतापकारी फलप्रद है। मास में अनेक घरेलू उपद्रव, झगड़े, तनाव होकर हानि, स्थान परिवर्तन, भूमि-भवन परिवर्तन एवं मानसिक अशांति व विकलता रहेगी।

नवम्बर—शारीरिक अस्वस्थता, व्यापारिक कामों में अवरोध, विशेष श्रम करने पर आंशिक लाभ तथा शत्रुवर्ग प्रभावी होकर मनोबल पर ठेस रहेगी। भाई-बन्धु, मित्र व रिश्तेदारों से अनावश्यक विवाद एवं सम्मान हानि रहेगी। स्त्री-संतान की अस्वस्थता रहेगी।

दिसम्बर—मास में स्वास्थ्य व व्यवहार में सुधार होकर आय-व्यय समान प्राय: रहेगा। व्यवसायिक शत्रुजनों के रहते हुए भी अर्थोपार्जन रहेगा। राजकीय स्थानों पर उच्चाधिकारियों से श्रेष्ठ संपर्क बढ़कर कानूनी कामों में सफलता रहेगी। दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा।

जनवरी २००५ ई.—पूर्वाद्ध मास में स्वास्थ्य में न्यूनता, मानसिक उच्चाटन एवं कामों में अवरोध रहेगा। उत्तरार्द्ध में मनोबल तेज रहकर नवीन व्यवसायिक योजना में सफलता, शत्रु पराजित एवं अर्थोपार्जन की नई लाईन बनकर मानसिक हर्ष व उत्साह बढ़ेगा।

फरवरी—राजकीय कामों में सफलता, लोगों से सुसंपर्क और समाज परिवार में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। घर में मांगलिक कार्य होकर रिश्ते-नातेदारों का समागम रहेगा। व्यापारिक कामों में आर्थिक रूपी प्रगति के साथ कार्यक्षेत्र में प्रभाव वृद्धि रहेगी।

मार्च—भाई-बन्धु-मित्रों का सहयोग, घरेलू वातावरण में हर्ष, व्यावसायिक कामों से लाभ व कानूनी कामों में सफलता रहकर आत्मविश्वास की वृद्धि रहेगी। जमीन-जायदाद संबंधी कामों की उलझनें दूर होकर भूमि लाभ के संयोग रहेंगे।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल—अष्टम गुरु के दुष्प्रभाव से स्वजनों से तनाव, व्यावसायिक कामों में अवरोध, मनोबल की कमी और आर्थिक संकट रहकर मानसिक अस्थिरता एवं उच्चाटन रहेगा। राजकीय कामों में भागदौड़ व परिश्रम विशेष से सफलता की संभावना रहेगी।

मई—उच्चाधिकारियों से द्वेष, पुराने विवाद पुन: उभरकर मानसिक संताप एवं भाई-बन्धु-मित्रों आदि से मिथ्या विवाद रहेगा। व्यापारिक कामों में रुकावटें तथा विपरीत निर्णय के कारण हानि रहेगी। लेन-देन के कामों में बार-बार विवादकता रहेगी।

जून—सामाजिक व पारिवारिक कामों में परिश्रम विशेष रहकर परेशानियां किन्तु प्रभाव वृद्धि रहेगी। स्वकीय निजी व्यक्तियों से मनमुटाव, स्त्री-संतान के स्वास्थ्य हेतु चिन्ताएँ तथा आय-साधनों में बाधकता रहने से आंतरिक घुटनशीलता प्राय: बराबर रहेगी।

जुलाई—कार्य व्यस्तता बढ़कर अर्थोपार्जन कामों में सुधार, स्त्री-संतान व स्वयं के स्वास्थ्य में सबलता किन्तु अपव्यय विशेष रहेगा। रिश्ते-नातेदारों के बार—बार आवागमन से समय एवं आय कामों में अवरोध रहने से मानसिक कलुषिता चलेगी। सम्मान श्रेष्ठ रहेगा।

अगस्त—मंगल गुरु का अष्टम में योग स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता, निजी व्यक्तियों से शत्रुता व विवाद रहकर क्रोध की अभिवृद्धि रहेगी। खान-पान, रहन-सहन की अनियमितता के दुष्प्रभाव से रोगोत्पात एवं अनावश्यक खर्च की सतेजता रहेगी। स्त्री-संतानादि सहयोग से आय उत्तम रहेगी।

सितम्बर—गुरु के परिवर्तन से रिश्ते-नातेदारों व मित्रादि स्वजनों से संपर्कों में सुधार होकर मानसिक शांति बढ़ेगी। नवीन व्यवसायों के लिए जिज्ञासा बढ़कर आय के कामों की प्रगति होगी। घरेलू व्यक्तियों के सहयोग से राजकीय आदि कानूनी कामों में सफलता रहेगी।

अक्टूबर—शारीरिक स्वस्थता श्रेष्ठ रहेगी। भाई-बन्धुओं के सहयोग से व्यापारिक कामों में उन्नति रहेगी। स्वयं में आत्मविश्वास की जागृति होकर सामाजिक व पारिवारिक व्यक्तियों के बीच मान-सम्मान की वृद्धि होगी। बुद्धि चतुरता से उत्तम अर्थोपार्जन होगा।

नवंबर—शत्रुजन परास्त होंगे। उच्चाधिकारियों से संपर्क बनकर राज्यादि कामों में विजय तथा पुराने बिगड़े हुए कामों में प्रशंसनीय सुधार होकर आर्थिक लाभ रहेगा। नवीन व्यावसायिक योजना बनेगी। स्त्री-संतानादि के सहयोग से आर्थिक उन्नति होगी।

दिसम्बर—आय के नये स्त्रोत बनेंगे। पुराने भूमि, भवन, जायदाद संबंधी विवादों का निपटारा होगा। व्यापारिक कामों में विशेष परिश्रम बनकर द्रव्य लाभ रहेगा। स्वयं के मनोबल में वृद्धि होकर धार्मिक उत्सवादि के आयोजनों में सहयोग रहेगा।

जनवरी २००५ ई.—संताप पक्ष की प्रगति से मन में हर्ष वृद्धि रहेगी। लेन-देन के कामों में अर्थोपार्जन होगा। पारिवारिक व्यक्तियों पर स्वयं का उत्तम प्रभाव बढ़कर इज्जत मान रहेगा। उच्च राज्याधिकारियों से सुसंपर्क होकर शत्रुवर्ग में भय वृद्धि रहेगी।

फरवरी—स्वयं में श्रेष्ठ मनोबल की जागृति होकर अनेक उत्सवादि आयोजन होंगे जिससे समाज व परिवार में प्रतिष्ठा वृद्धि व प्रशंसा बढ़ेगी। व्यवसायों की बढोत्तरी होकर अर्थ लाभ उत्तम होगा। कानूनी कामों में मित्रों व समान कार्यकर्त्ता जनों का सहयोग बनकर सफलता व विजय बनेगी।

मार्च—मास में मंगल बारहवें स्थान पर गोचर भ्रमण वश देह में रोगवृद्धि, यात्रादि भ्रमण कामों में परेशानी एवं व्यापारिक कामों में अवरोध रहेगा। आय-व्यय में समानता प्रायश: रहेगी। घरेलू स्वजनों का यद्यपि श्रेष्ठ सहयोग रहेगा फिर भी मानसिक अस्थिरता तथा अशांति बनी रहेगी।

कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल—मंगल का चतुर्थ भ्रमण स्वास्थ्य में न्यूनता, क्रोध की वृद्धि तथा जमीन-जायदाद संबंधी विवादकता चलेगी। अनावश्यक घरेलू खर्च की अधिकता से मानसिक अशांति तथा व्यवसायिक कामों में आय की कमी चलेगी। पारिवारिक जनों के प्रति मानसिक भ्रम का उदय होगा।

मई—पत्नी-संतानादि गृह सदस्यों के स्वास्थ्य हेतु मानसिक चिन्तनशीलता के साथ खर्च की अधिकता रहेगी। राजकीय कानूनी कामों में दौड़-धूप बढ़कर परेशानियां रहेंगी। मासांत में व्यापारिक कामों में श्रेष्ठ परिवर्तन बनकर उत्तम अर्थोपार्जन होगा।

जून-[illegible]र्वाद्ध में क्रोध वृद्धि व घरेलू क्षणिक विवाद होंगे किन्तु उत्तराद्ध मास में स्वजनों से वैचारिक रूपी सुधार बनकर मानसिक सन्तोष बढ़ेगा। व्यवसायों के कामों में लाभ तथा कानूनी कामों में परिश्रमी स्थिति बढ़कर विजय बनेगी। दाम्पत्य सुख की वृद्धि रहेगी।

जुलाई—रिश्ते-नातेदारों से श्रेष्ट संपर्क बढ़ेंगे जिससे स्वजनों के बीच मान-सम्मान की वृद्धि होगी। मनोचिन्ता में कमी आकर आत्मविश्वास की जागृति होगी और कार्य क्षेत्रों का प्रभाव बढ़कर उत्तम आर्थिक लाभ बनेगा। जमीन-जायदाद आदि झगड़ों का निपटारा होगा।

अगस्त—उच्च राजकीय अधिकारियों के सहयोग से शत्रु वर्ग में भय वृद्धि, व्यापारिक कामों में नवीन मोड़ के साथ आर्थिक प्रगति तथा स्वजनों व मित्रों का सहयोग बनकर सामाजिक, पारिवारिक स्थानों पर मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी। स्वयं में आत्मबल की विशेषता रहेगी।

सितम्बर—अष्टम स्थान का गुरु स्वजनों से विरोध, रिश्तेदारों से तनाव और नवीन राज्यादिक परेशानी फलप्रद है। व्यापार कार्यों में रुकावटें, स्वयं को क्रोधाधिक्यता रहकर वाणी में कठोरता और मित्रादि स्वजनों से शत्रुता बढ़ेगी। स्वयं को मानसिक अशांति प्राय: चलेगी।

अक्टूबर—आय के कामों में रुकावट, लेन-देन कामों में विवाद व हानि तथा अपने निजी व्यक्तियों द्वारा मान-सम्मान पर ठेस व शत्रु तुल्य व्यवहार से मनोबल में गिरावट आकर मानसिक उद्वेग बढ़ेंगे। स्त्री, संतान एवं स्वयं के स्वास्थ्य में निर्बलता चलने के योग हैं।

नवम्बर—मंगल का नौंवे स्थान पर परिवर्तन करने से घरेलू व्यक्तियों से चले आ रहे विवाद व मनमुटाव में सुधार होकर रहन-सहन व खान-पान में उत्तम बदलाव बनेगा, किन्तु स्वास्थ्य स्थिति में कमजोरी व वात-व्याधि का प्रकोप रहेगा। पारिवारिक कामों में प्राय: रुकावटें चलेंगी। आय में अवरोध।

दिसम्बर—किसी नवीन रिश्तेदारी के बनने से स्वयं के मनोविचार में बदलाव व हर्ष बढ़ेगा। जिससे मनोबल की जागृति होगी। इच्छित मनोरथ का लाभ होगा तथा व्यापार के कामों में अनायास आकस्मिक रूप से आर्थिक लाभ होने से मासांत में मांगलिक आयोजन व तेज व्यय रहेगा।

जनवरी २००५ ई.—उच्चाधिकारियों व प्रभावशाली व्यक्तियों से नवीन संपर्क बनकर समाज परिवार में श्रेष्ठ इज्जत की वृद्धि होगी। तथा शत्रुवर्ग भयभीत बनेंगे। गुप्त शत्रुओं की चालों का ज्ञान होकर उनसे बचाव बनेगा। व्यापारिक कामों में सुधार व श्रेष्ट आय रहेगी।

फरवरी—स्वयं को वात-व्याधि अथवा उदर रोग पीड़ा का संताप रहेगा। आय के सभी स्रोतों में रुकावटें तथा स्वमित्रों, बान्धवों द्वारा शत्रुवत व्यवहार से मानसिक रूपी चिन्तनशीलता बढ़ेगी। भूमि-जायदाद आदि बंटवारें में हानि रहेगी। खान-पान की अनियमितता बढ़ेगी।

मार्च—आकस्मिक रूप से आये तनावों के कारण सवयं को मानसिक अस्थिरता व उच्चाटन बढ़ा हुआ रहेगा। व्यापारिक कामों में रुकावटें, घर-गृहस्थी में स्वजनों के सहयोग रहते हुए भी सामाजिक तनाव व प्रतिष्ठा हेतु कष्ट रहेगा। राजकीय पक्ष के सहयोग से लाभ रह सकेगा।

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

अप्रैल—पारिवारिक व गृहस्थी कामों में खर्च की प्राय: अधिकता रहेगी। स्वयं को सामान्य स्वास्थ्य हीनता रहते हुए भी व्यवसाय कामों में परिश्रम विशेष रहकर अर्थलाभ रहेगा। स्वयं का आत्मबल सतेज रहकर साहस वृद्धि व शत्रुओं पर प्रभावकता रहेगी।

मई—चतुर्थ गोचर में मंगल शनि का भ्रमण पारिवारिक जनों से वाद-विवादकारी एवं स्वयं को क्रोध वृद्धिप्रद है। रक्तविकार अथवा रक्तचाप जन्य रोगों का प्रकोप रहकर आय कामों में रुकावट तथा अर्थोपार्जन में कमी रहेगी। कानूनी कामों की उलझनों से मानसिकता अस्थिरता चलेगी।

जून—व्यवसायिक व राज्यादिक कामों में विशेष भागदौड़ करने पर भी असफलता दृष्टिगोचर रहेगी। संपर्कित जनों के साथ मिथ्या विवाद बनकर होते हुए कामों में रुकावट तथा हानि संभव है। स्वयं को आंतरिक घुटनशीलता बढ़कर मानसिक संकल्प-विकल्प से विशेष अस्थिरता रहेगी।

जुलाई—घरेलू व स्वजनों से बने विवादों में सुधार होकर स्वयं के प्रभाव की बढ़ोत्तरी बनेगी। यात्रादिक शुभ संयोग बनकर आर्थिक लाभ होगा। भूमि-भवन की विक्रय स्थिति का लाभ रहेगा और स्वयं की मानसिकता में परिवर्तन होकर मनोहर्ष व उत्साह बढ़ेगा।

अगस्त—अत्यधिक कार्य व्यग्रता बढ़कर व्यस्तता रहेगी। परिश्रमी दौड़-धूप व यात्राएं होंगी फिर भी माह में आय-व्यय की समानता रहेगी। राजकीय उच्च पदासीन लोगों से संपर्क बढ़ेगा। घर में मांगलिक अथवा धार्मिक उत्सवों का आयोजन होकर मनोशांति बढ़ेगी।

सितम्बर—शनि का ढैया समाप्त होने से नवीन व्यापार के व्यवसाय का शुभारंभ होकर मन में उत्साह एवं हर्ष की वृद्धि होगी। संतानादि व भाई-बन्धु वर्ग का सहयोग रहकर पारिवारिक जनों में प्रतिष्ठा वृद्धि के साथ-साथ प्रशंसा बढ़ेगी। घरेलू जीवन में सुख का संचार होगा।

अक्टूबर—शत्रुजन परास्त व भयभीत होंगे। नये व्यापार कामों की सफल योजना बनेगी। मित्रों एवं स्वजनों के आर्थिक सहयोग से कार्य प्रगति होगी। कोई रहवासी परिवर्तन अथवा निर्माण से मनोबल में सतेजता बढ़कर कार्यक्षमता की वृद्धि होगी।

नवम्बर—अष्टम स्थान का मंगल गुप्त शत्रुओं द्वारा हानि तथा स्वयं की नासमझीवश घरेलू कलह-क्लेश व विवाद पैदा होकर अनावश्यक क्रोध की वृद्धि रहेगी। जिससे अशांति का वातावरण चलेगा। व्यवसायादि कामों में अरुचि व अनियमितता होकर अर्थ हानि संभव है।

दिसम्बर—मास पूर्वार्द्ध में स्वयं व पारिवारिक सदस्यों में स्वास्थ्य हीनता का दौर चलेगा। उत्तरार्द्ध मास में स्वयं की बुद्धि चतुरता से सुधार होकर व्यापारादि कामों में परिवर्तन तथा शुभ समाचार प्राप्ति के कारण हर्ष की वृद्धि होगी। पत्नी की निर्बलता प्राय: चलेगी।

जनवरी २००५ ई.—दूरदेशीय लम्बी यात्रा जन्य सुखद देशाटन करने का संयोग बनेगा। व्यापारिक व किसी विशेष आय-व्यय कार्य द्वारा आर्थिक लाभ होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बनकर मांगलिक उतसवादिकों में सहयोग होगा। स्त्री-संतानादि की प्रगति से मनोत्साह रहेगा।

फरवरी—घर के सदस्यों का शुभ सहयोग का लाभ रहेगा। कामों की अधिकता रहकर व्यस्तता बढ़ेगी। व्यवसायों में नया मोड़ बनकर आर्थिक प्रगति रहेगी। राजकीय कर्मचारीगणों के सहयोग से शत्रु परास्त होंगे तथा स्वयं के आत्मविश्वास में नव जागरण बनेगा।

मार्च—स्वयं का बुद्धि चातुर्य बढ़कर घर में भौतिक सुख-साधनों की बढ़ोत्तरी रहेगी। समाज व पारिवारिक जनों में प्रभाव बढ़कर मान-सम्मान की वृद्धि होगी। स्वयं की देह में सबलता व स्वस्थता होकर कार्यक्षमता बढ़ेगी। राजकीय कामों में विजय बनेगी।

सभी व्यापार में लाभ की आशा की जा सकती है। 28-10-2002 को इन्डैक्स 2828 या 20-12-2002 को 3377, 24 अप्रैल 2003 बी.एस.ई. इन्डैक्स 2937 होकर अब 4277 के स्तर पर पहुंचकर फिर एक बार नीचे 2601 या 2099 के स्तर को टच कर सकता है। सन् 2004 में 4677 या 5005 ऊंचे से ऊंचे भाव 19-11-2005 या फिर 15-7-2005 को ए.सी.सी. 399, रिलाइंस 551 के स्तर बनने की संभावना है।

(7)(827-D)7-12-2004 से 11 फरवरी 2005 के बीच शेयर्स में भारी तेजी। बी.एस.ई. इन्डैक्स 555-999 Point अच्छी तेजी बन सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। 23-3-2005 को नीचे भाव हो सकते हैं।

(8) 16 जुलाई 2005 के 3 महीने पूर्व से घटबढ़ से शेयर्स-मार्किट में तूफानी तेजी का दौर चल सकता है। 18-7-2003 से 3 अगस्त के बीच भयंकर मंदी आ सकती है। फिर भी बाजार जैसे चले, वैसा व्यापार करें। नोट-जो चीनी 2003 में 1150-1205 वाली एवं 2004-2005 के साल में 1899-2099 के भाव चीनी के हो सकते है।

(9)11 दिसंबर 2005 के एक महीने पूर्व से भयंकर तेजी आ सकती है। हमेशा बाजार रुख देखकर व्यापार करें। नोट-जो ग्वार Cluster Seeds 11-9-2002 को 2051 के भाव थे, अभी 900 वो नीचे में 541 या 755, ऊंचे में 2 वर्ष में 1599 या 2799। उड़द जो कुछ साल पहले 2915 थे, अब अगस्त 2003 में 915-1059 वो ऊंचे में 3 वर्ष में कभी 2727 या 3479, चना 2001 में 2300 थे वो नीचे जनवरी 2004 में कभी 799-1099 होकर ढ़ाई साल में चना 2100-2599 के भाव बनने की संभावना है। ज्यादा सही भगवान जानें।

शेयर्स मार्केट में तेजी की तारीखें

1. 29 जुलाई 2003 से 5 अगस्त 2003 के बीच 111 प्वाइंट की तेजी आ सकती है। (573 डी)
2. 1 सितम्बर से 11 सितम्बर 2003 तक तेजी।
3. 27-10-2003 से 1 नवंबर तक तेजी।
4. 29 दिसम्बर 2003 से 7 जनवरी 2004 तक, 205 प्वाइंट की बढ़ोतरी हो सकती है।
5. 9 जून 2004 से 21 जून तक, 205 प्वाइंट की जोरदार उछाला आ सकता है।
6. 27 जून से 1 जुलाई 2004 तक अच्छी तेजी, तो बाद में कुछ दिन मंदी चल सकती है।
7. 11 से 17 जुलाई तक तेजी, तो बाद में 5 दिन मंदी आवेगी। व्यापार में किसी प्रकार कोई गारंटी नहीं होगी।
8. 27-11-2004 से 9-12-2004 तक तेजी चल सकती है।
9. 21 दिसम्बर 2004 से 3 जनवरी 2005 तक अच्छी तेजी।
10. 11 जनवरी 2005 से 18 जनवरी 2005 तक अच्छी तेजी आ सकती है।
11. 23 से 29 जनवरी 2005 तक अच्छी तेजी आ सकती है।

सावधानी से व्यापार करें। लोयेस्ट भाव बनने की पहचान, शेयर्स कब खरीदें आदि की जानकारी ग्राफीकल सदस्य बनकर पी.पी. फोन-0751-5040389, 2433610, 2335045, 2367182 दिन में इस वास्ते जानकारी लें।

शेयर्स मार्केट मंदी की तारीखें

1. 17 जुलाई 2003 से 23 जुलाई तक 155 प्वाइंट की मंदी बन सकती है। यदि यहां मंदी नहीं तो 23 जुलाई से 5-7 दिन में मंदी आकर बाद में 5-7 दिन में अच्छी तेजी आवेगी। (573 डी)
2. 15 अक्टूबर से 20 तक जोरदार मंदी का झटका लग सकता है।
3. 18 नवंबर से 23 तक मंदी।
4. 7 दिसम्बर 2003 से 14 दिसम्बर तक जोरदार मंदी, फिर भी लाइन यदि तेजी की चली तो जोरदार तेजी चलेगी।
5. 27 जनवरी 2004 से 5 फरवरी तक मंदी अथवा 5-7 फरवरी से 5 दिन में मंदी चलेगी। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।
6. 21 फरवरी 2004 से 25 फरवरी तक जोरदार मंदी तो बाद में अच्छी तेजी आवेगी।
7. 29 मार्च 2004 से 5 अप्रैल तक मंदी अथवा 12 अप्रैल तक जोरदार मंदी चल सकती हैं।
8. 25 अप्रैल से 30-4-2004 तक मंदी।
9. 16 मई 2004 से 23 मई तक भारी मंदी, बाद में 15 दिन अच्छी तेजी चल सकती है।
10. 16 अगस्त से 21 अगस्त तक मंदी।
11. 5-9-2004 से 11 तक मंदी, 27 सितम्बर से 11 अक्टूबर 2004 तक मंदी, यदि यहां मंदी नहीं आई तो आगे 5-7 दिन में मंदी आवेगी।
12. 21-10-2004 से 25 तक मंदी तो बाद में 7-11 दिन 305 प्वाइंट की तेजी बन सकती है।
13. 15-11-2004 से 21 नवम्बर तक मंदी आवेगी।
14. 25-11-2004 से 30-11-2004 तक तेजी, ये तेजी 9 दिसम्बर तक भी चल सकती है।

पृष्ठ 15 का शेष...

विशिष्ट राजनेताओं का भविष्य संक्षिप्त में वि.सं. २०६१

श्रीमान् ए.पी.जे. कलाम महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकारः आपका स्वास्थ्य २० अप्रैल से २५ जून २००४ तक शनि के कारण बिगड़ेगा। शासन व्यवस्था में नवीनता का ऐतिहासिक योग बनेगा। भारत का वर्चस्व विश्व में बढ़ेगा। विदेश यात्रा के चार योग भंग होंगे। बालकों के प्रिय राष्ट्रपति कहलायेंगे। संविधान की सुरक्षा अनुपालन में शुभदायक है।

प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी जी वाजपेयीः वर्तमान प्रधानमंत्री काल ५ वर्ष का समय समस्याओं की लहर में पूर्ण करेंगे। वर्ष २००५ स्वास्थ्य के लिए शुभदायक नहीं है। रोगभय तथा अपमान जनक घटनाओं से गुजरना पड़ेगा। लेकिन शैक्षिक एवं साहित्यिक दृष्टि से मान बढ़ेगा। मानव उपाधियां प्राप्त होंगी। भाजपा के संगठन में समस्याएं बढ़ेंगी। वायुयान की अधिक यात्रा शुभदायक नहीं रहेगी। परिवार में अशांति रहेगी।

उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणीः गृह विवाद बढ़ेगा। प्रतिपक्ष से मान हानि योग बनता है। नवीन नेताओं से सम्पर्क बढ़ेगा। दिनांक ३० अप्रैल से २७ जुलाई तक का समय रहेगा तथा स्थानीय वाहन की दुर्घटना योग तीन बार होंगे। दिनांक २० सितम्बर से २० नवम्बर २००४ ई. तक स्वास्थ्य में सुधार नजर नहीं आता। राजनैतिक वर्चस्व घटेगा। कोई लीग मदद हेतु नहीं आयेंगे। वर्ष सामान्य रहेगा। न्यायालय मामला बनेगा।

श्रीमती सोनिया गांधीः वर्ष २००३ की स्थिति कर्तरी योग युक्त है, परन्तु अप्रैल ०४ के पश्चात् समय अनुकूल आयेगा। केन्द्रीय सरकार में वर्चस्व बढ़ेगा। रा.-गुरु-श. के कारण राजयोग बनेगा। आगामी चुनावों में पार्टी का भी वर्चस्व बढ़ेगा। प्रधानमंत्री पद पर आसीन योग है। मई २००४ में वायुयान दुर्घटना से बचें। मई के अंतिम सप्ताह में अचानक बीमारी योग भी बनता है। मिली-जुली सरकार में आपका प्रभाव चमकेगा। नया समझौता योग भी बनेगा।

श्रीमती राबड़ी देवीः आपका भविष्य केतु के कारण अशुभ है। आगामी समय में पराश्रयी जीवन जी कर समय पति बल का लाभ से विवाद पक्ष से छूटेगी। व्यवहारिक दृष्टि से आपका वर्चस्व घटेगा। दिनांक २४ अप्रैल से १६ जून २००४ तक विशेष आपत्ति योग तथा पारिवारिक परेशानियां रहेंगी। शुक्र तथा राहु के कारण अपराधिक मामलों में अग्रगामी रहेंगी।

सुश्री जयललिताः इनका वर्चस्व १८ अक्टूबर २००५ तक शुभ दायक रहेगा। इन्हें गुप्त शत्रुओं का प्रभाव वर्ष २००४ में बढ़ेगा। राजनीति क्षेत्र में एक नया मोड़ कायम करेंगी। न्यायालयों में विजय श्री का योग मंगल-गुरु-बुध के कारण बनेगा। स्थानीय पार्टी में आपका सम्मान भी बढ़ेगा। हवाई हमला योग अचानक यात्रा के दौरान अगस्त से नवम्बर २००४ मध्य बनता है। विपक्ष द्वारा परेशानियों से मानसिक चिंता रहेगी।

श्रीमान् मुलायम सिंह यादवः आपका समय अगस्त २००३ से मई २००५ तक अच्छा रहेगा। सत्ता पक्ष, राजपक्ष में अपना पद बरकरार रहेगा। नवोदित राजनेता का सहयोग मिलेगा। वाहन दुर्घटना के वर्ष २००४ में तीन अवसर योग हैं। सावधान रहें तो ठीक रहेगा। स्त्री पक्ष द्वारा मान-सम्मान में कमी का वातावरण अप्रैल २००४ में बनेगा। रक्षक भक्षक योग भी बनता रहे।

श्रीमती प्रियंकाः आपका भविष्य मई २००४ से जून २००६ तक अच्छा रहेगा। पारिवारिक तथा राजनैतिक तेज छबि बनायेंगी। मकान ढहने या पानी में बहने का संयोग भी जुलाई से अक्टूबर २००४ तक बनता है। सावधान रहें।

महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंह जी शेखावतः आपको ५वां राहु, छठवें मंगल, ७वें शनि, ९वें गुरु, १०वें केतु राजपक्ष में विशेष सफलता दिलायेगा। पत्नि पक्ष से बीमारी से परेशानी तथा शोक का वातावरण भी मई से सितम्बर २००४ के मध्य बनता है। राष्ट्रपति पद का भावी योग बनता है। आपका स्वास्थ्य दिनांक १० दिसम्बर २००४ से २४ फरवरी २००५ तक खराब रहेगा। वाहन में अचानक रोगोपद्रव बनेगा। भविष्य उज्वल है।

डॉ. प्रवीण तोगड़ियाः वर्ष २००४-२००५ में इनका वर्चस्व बढ़कर एकाएक घटेगा। सामाजिक मर्यादा योग अच्छा रहेगा। विकट समस्याओं का समाधान होगा। गुजरात में मान-सम्मान बढ़ेगा। राम मन्दिर निर्माण में अग्रणी रूप में कीर्ति प्राप्त करेंगे। दिनांक ३० मई से १३ जुलाई २००४ तक समय प्रतिकूल रहेगा।

सुश्री मायावतीः वर्ष २००४ में न्यायालयों का चक्र शनि ग्रह के कारण लगायेंगी। कीर्ति में कमी आयेगी। केन्द्र सरकार में हिस्सेदार बनने का योग बनता है। जनमत हक में रहेगा। भ्रष्टाचार के कारण दण्डित होने का योग नवम्बर २००४ से फरवरी २००५ के मध्य बनता है। भूमिगत जीवन जीने का योग बनता है।

श्रीमती वसुन्धरा राजे सिन्धियाः शनि, गुरु, मंगल के कारण राजपद की प्राप्ति योग बनता है। राजस्थान के भावी मुख्यमंत्री का योग भी वर्ष २००४ से २००५ मध्य बनता है। आपका मान-सम्मान भी होगा। सत्ता पक्ष की पकड़ भी श्रेष्ठ रहेगी। मिश्रित सरकार का गठन करने में अवसर प्राप्त होगा। माह सितम्बर से दिसम्बर २००४ तक समय प्रतिकूल रहेगा। वाहन दुर्घटना तथा रक्षक भक्षक योग से भी सावधान रहें।

श्री अशोक जी गेहलोतः स्वयं का भाग्य अच्छा है। वर्ष २००४ में विशेष सम्मान की प्राप्ति होगी। पार्टी का वर्चस्व कम होगा। लग्न में शनि तथा मंगल के कारण नेतृत्व का लाभ रहेगा। आपका वर्चस्व भारत सरकार में भी बढ़ेगा। गुरु ग्रह ५वां आपका विवेक बढ़ायेगा। लाभदायक रहेगा।

खेल जगत का भविष्यः वर्ष २००५ से २०१२ तक भारत का खेल जगत नयी कामयाबी अर्जित करेगा। पश्चिमोत्तर देशों में अपना वर्चस्व जमेगा तथा लाभ भी अच्छा रहेगा।

सिनेमा जगतः शनि, राहु, केतु, शुक्र के कारण सिनेमा जगत में अश्लीलता बढ़ेगी। सेक्सी योग ज्यादा रहेगा तथा हीरोइनें विवाह की ओर प्रेरित होंगी। टीवी का प्रयोग भी वर्ष २००५ में कम होगा। आध्यात्म की ओर लोग बढ़ेंगे।

विश्व के सभी जानेमाने राजनीतिज्ञों एवं अन्य व्यवसायों आदि के हस्त स्कैन प्राप्त कर उनकी हस्त रेखाओं का तुलनात्मक अध्ययन एवं अन्य हस्त रेखाओं का गूढ़ ज्ञान द्वारा मालूम हो सकता है कि अमुक रेखाओं वाला व्यक्ति आई.पी.एस. न्यायधीश, अभिनेता, डाक्टर, इंजिनियर, अधिवक्ता या राजनीतिज्ञ बनेगा। इसके अलावा प्रैक्टीकल पंचागुली साधना करके विश्व विख्यात भविष्यवक्ता बन सकता है। उसके लिए यह पुस्तक पूर्ण शोधमय सिद्ध होगी। उपलबध कराने वाली पुस्तक है तथा 431 पृष्ठ की है। **मूल्य : २०० रुपये मात्र**

अमरजी प्रकाशन

पता-25-बी, डी.डी.ए. फ्लैट, शाहपुर जाट, नई दिल्ली- 49

टेलीफैक्स: 26491118, 26496759 मोबाईल: 9810537006

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति भी वेदों के तरह अतिप्राचीन है यह एक मात्र ऐसी पद्धति है जिसके द्वारा किसी भी रोग को जड़ से नष्ट किया जा सकता है। अनुभूत आयुर्वेद, में लेखक ने हजारों रोगियों को अपने अनुभव सिद्ध औषधियों के द्वारा रोगमुक्त किया है। इस ग्रंथ में जड़ी-बूटियों को लेकर औषधि निर्माण किया जाता है। जिस औषधि के प्रयोग से रोगी रोगमुक्त हो जाता है। अनेक गोपनीय औषधि के नुस्खे जो अपने वंशधरों के माध्यम से डॉ. द्विवेदी जी ने विरासत में प्राप्त किया है। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए रोजमर्रा के जीवन में आने वाले जड़ी-बूटी के आधार पर असाध्य से असाध्य रोगों पर काबू पाया जा सकता है। **मूल्य : १३० रुपये मात्र**

योग साधना द्वारा जटिल रोगों का उपचार भी सरल बन जाता है तथा बड़े-बड़े असाध्य रोग योग साधना द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य निरोगी काया में बदल जाता है। इस पुस्तक में लेखक के पिछले तीस वर्ष के पूर्ण अनुभव द्वारा पाठकों को भिन्न-भिन्न व्यायामों को चित्रों के माध्यम एवं सरल भाषा में लिखा गया है। आधुनिक युग में बालकों के अच्छे संस्कार एवं शरीर को मजबूत बनाने के लिए ये पुस्तक रामबाण सिद्ध होगी।

मूल्य : १२० रुपये मात्र

इस पुस्तक में हमारे परामर्श द्वारा जिन्होंने रत्न धारण कियें हैं, वह धनहीन से धनवान बन गयें। जिन्होंने परामर्श को नहीं माना वह धनवान होते हुए धनहीन हुए। उसकी पूरी जानकारी इस पुस्तक में उन्हीं के संदेशों द्वारा दिया गया है। जो जातक लम्बी बिमारी के कारण कई वर्षों से चिकित्सालयों में रोग ग्रस्त रहें। उन्हें आराम नहीं मिला। उन्हें रत्न धारण करने से असंख्य असाध्य रोगी शीघ्र स्वस्थ्यप्रद हुए हैं। लेखक ने अपने दावे के साथ पाठकों के सामने चुनौती के रूप में प्रस्तुत किया है। उन्हीं लोगों के पते एवं दूरभाष नं. इसी पुस्तक में अंकित है।

मूल्य : १२० रुपये मात्र

अथ व्यापार-विमर्श.सम्वत् २०६१ वि.

वि. सं. २०६१ की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

लेखक एवं संपादक- चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, सह संपादक- पं. गजेन्द्र जैन, उत्तराधिकारी- आयुर्वेद मार्तण्ड ज्योतिष रत्न
पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द चौधरी राज वैद्य ज्योतिष रत्न कार्यालय:- पो. फर्रुखनगर-१२२५०६,
गुड़गांव फोन नं.-कार्या.-निवास: ०१२४-२३७५२१८, २३७५३७७ E-mail: jyotish_ratan@yahoo.com

मेरे बाबाजी(स्व. प. जैनी जीयालाल चौधरी जी) ने १२८ वर्ष पूर्व असली पंचांग के नाम से एक पंचांग प्रकाशित किया था। तभी से व्यापारिक तेजी-मंदी पर मेरे बाबाजी एवं पिताश्री अपने विचार लिखते आ रहें हैं। और समय समय पर इस विषय पर अनेकों शास्त्र (पुस्तकें) व्यापार, विज्ञान, योगरत्नाकर, वार्षिक व्यापार भविष्य फल आदि लिखकर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। अब मैं पं. महेन्द्र कुमार जैन एवं मेरा पुत्र चि. पं. गजेन्द्र जैन अपने पूर्वजों के बताये मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रत्येक पक्षों महीनों में आने वाले प्रबल ग्रह योग, तिथि वार, नक्षत्र संयोग, संक्रांति बैठना, चन्द्रदर्शन, ग्रह दृष्टि आदि का ध्यान रखकर जो तेजी-मंदी के विचार लिखते हैं, वह वायदा और हाजिर का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए वरदान रूप में सही होते हैं। इस लेख में जो विचार लिखे हैं उसमें कई एक बार एक ही स्थान पर एक वस्तु की तेजी के साथ मंदी भी लिखी हो तो घबराना नहीं, ऐसे समय पर व्यापार का रुख देखकर कार्य करें। क्योंकि एक दिन में एक ग्रह जो तेजी कारक व दूसरा मंदी कारक हो तो बाजार में तेजी की जगह मंदी या मंदी की जगह तेजी लिखे के विपरीत होता है। और जो हमने तेजी-मंदी लिखी है वह एक दिन पहले व बाद में भी आ सकती है। कारण ग्रह का परिवर्तन दिन के शुरू व दिन के अन्त समय में होने से ऐसा होता है। अत: लेख के साथ-साथ मार्किट की चाल को भी भली प्रकार समझ कर व्यापार करें तो निश्चित विशेष लाभ कमाओगे।

अथ चैत्र शुक्ल पक्ष फल विचार

वि.सं. २०६१ का आरंभ रविवार से हो रहा है, चन्द्र दर्शन ३० मु. व पूर्णिमा सोम की है। तिथि की वृद्धि हुई है। प्लूटो वक्री, बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शु. पड़वा को उभा. है वर्षा की कमी बनी रहेगी, कृष्ण पक्ष में ति.क्षय: शु. की वृद्धि प्रजा को कल्याणकारी है। पूर्णिमा में सोमवार भी प्रजा में सुख शांति देगा। **शुक्ल पक्ष-शु. २ सोम**- चन्द्र दर्शन -अन्न, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा। रुई, सूत, कपड़े, चांदी तेज होकर रहेगी। **शु. ३ मंगल**-तिथि वृद्धि सभी जरूरी वस्तुओं में मंदा करेगी। **शु. ४ गुरु**-कृतिका में शुक्र -हींग, जीरा,धनिया, सुपारी, सूत कपड़ा, चावल अन्न, सरसों, तिल, तेल आदि में मंदा बने। **शु. ५ शुक्र**-अश्विनी मेष में बुध-गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, अलसी, दूध, घी, शेयर में तेजी। गुड़, शक्कर, सरसों तेल, तिल, गोला, चांदी में मंदा रहे। **शु. ६ शनि**-रोहिणी में मंगल-रुई, सूत, कपास, शेयर, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रेशम, हींग, मिर्च, सरसों तेल आदि में तेजी। जहां-तहां प्रजा में बिमारी फैलेगी। **शु. ७ रवि**-वृष में शुक्र -रुई, चांदी, शेयर में मंदा। गेहूं, जौ, चना, मटर आदि वस्तुएं तेज होंगी। **शु. ९ मंगल**-रेवती में सूर्य-मोती, रत्न, फल-फूल, नमक, सुगन्धित पदार्थ, मूंग, उड़द, चावल, रुई, चांदी, सरसों आदि में तेजी आएगी। **शु.११ गुरु**-वक्री पू.फा. १ में गुरु-अन्न में मंदा करेगा। **शु. १५ सोम**-पूर्णिमा प्रजा में सुख शांति करेगी।

विशेष योग

चैत्र श्वेत पष तिथि बढ़े, घटे श्याम पष सोय। अन्न बढ़े सुख करे, शाख सवाई जोय॥
चैत्र शुक्ल पख प्रतिपदा, दिवस दिवाकर होय। जल नहीं बरसे गगन से, अन्न चर्चरा जोय॥

अथ बैशाख मास फल विचार

मास में पांच मंगल हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, शुक्ल में वृद्धि होकर क्षय हुआ है। चन्द्र दर्शन ३० मु. बुध का है। संक्रांति मेष ३० मु. भूखी व पूर्णिमा दोनों मंगलवारी हैं। बुध वक्री मार्गी, पश्चिम अस्त, पूर्व उदय और सूर्य, बुध, मंगल ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच मंगल प्रजा में भय उत्पन्न करेंगे। कहीं अग्नि कांड हो। शु. तृतीया को रोहिणी नहीं है, अत: संसार में आपा-धापी का वातावरण बनेगा। **शु. ५ शनिवारी**-नारियल, सुपारी, लाल पदार्थ, कांसी, तांबा आदि वस्तुओं में तेजी करेगी। **कृष्ण पक्ष-कृ.१मंगल**-वक्री बुध-रुई तेज होकर मंदी।

गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, कपूर, अलसी तेल, तिल, अरण्डी, बिनौला, शेयर आदि में तेजी करेगा। **कृ. ३ गुरु**- रोहिणी में शुक्र-सोना, तांबा, जस्ता, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा। जहां-तहां उपद्रव हो। तिथिक्षय भी मंदा लाऐगी। **कृ. ९ मंगल**- अश्विनमेष में सूर्य-रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, तेल, तिल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नारियल, सुपारी, बादाम, सभी प्रकार के फलों में तेजी बनेगी। अन्न एवं दालों में मंदा आयेगा। **कृ. १३ शनिवार**-मृगसिर में मंगल-रुई मंदी होकर तेज। सभी प्रकार के लाल पदार्थों, मिर्च आदि में अच्छी तेजी बनेगी। **कृ. ३० सोमवती अमावस** को रेवती नक्षत्र देश व जनता के लिए शुभ, बहुत सी जरूरी वस्तुओं में मंदा आऐगा। **शुक्ल पक्ष-शु. २ बुध**-चन्द्रदर्शन-चारा, घास, उड़द, तिल, तेल, अन्न, घी, मोठ में तेजी। गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, चांदी आदि सफेद वस्तुओं में घट-बढ़। देश के दक्षिण-पश्चिम में कोई बड़ी घटना घटे। **शु. ५ शनि**-मृगशिर में शुक्र-गेहूं, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, घी आदि में मंदा। चावल, खाण्ड, सरसों, लाल मिर्च आदि वस्तुएं तेज। जहां-तहां तेज वायु के साथ वर्षा हो। कहीं दुर्भिक्ष भी बने। **शु. ७ मंगल**-भरणी में सूर्य-मिथुन पर मंगल-अलसी, तांबा, पीतल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सरसों, गेहूं, जौ, चना, गोला, तिल, मिर्च, धातु, चावल, मोठ, अरहर आदि वस्तुऐं तेज। चांदी में घट-बढ़ हो। जहां-तहां हैजे आदि से प्रजा को कष्ट हो। **शु. १० शुक्र**-बुध मार्गी-रुई घट-बढ़ से तेज। लकड़ी, फर्नीचर आदि में तेजी। रस पदार्थ, तिलहन व सभी सुगन्धित द्रव्य आदि में मंदा रहेगा। **शु. १३ सोम**-तिथि क्षय-सभी जरूरी वस्तुओं में तेजी बनेगी। **शु. १५ मंगल**-खग्रास चन्द्र ग्रहण -तेल पदार्थ, मूंग, रुई, सूत, कपास, गेहूं, अलसी, सरसों, उड़द, रूपा, जस्ता, राई, मेथी, लाल वस्तुओं में तेजी चलेगी। **नोट**- यह तेजी लम्बी होगी। व्यापार में अच्छी घट-बढ़ होगी। सावधान्! रुख देखें। स्त्री-पुरुष, गणमान्य लोगों को कष्ट। रोम, अरब, आर्यवत आदि देशों में प्राकृतिक विपदा से जन-हानि संभव है।

विशेष योग

चार ग्रहो का बना, एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से, दुःखी रहे सब लोग॥
आखें तीज बिन रोहिणी, चले चर्चरी वायु।
चौथाई सम्वत घटे, बारह आना थाय॥
शुक्ल पक्ष बैशाख सर, मंगल या शनिवार।
भरणी मृगशिर हस्त ये, कोई नक्षत्र विचार॥
महिंगे पीपल, नारियल, वस्त्र, सुपारी संग।
तांबा, कांसी, धातु सब, अकरे हो इक संग॥
शनि-मंगल एकत्र हुए, भूखी संक्रांति भोमवार।
आग लगे आंधी चले नित, झगड़ों से प्रजा रहे बिमार॥

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार

मास में पांच बुध व पांच गुरु हैं, कृष्ण पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी है। अमावस बुध की, चन्द्रदर्शन ४५ मु. व पूर्णिमा गुरु की। संक्रांति वृष शुक्रवारी ४५ मु. भूखी बैठी है। गुरु मार्गी, शुक्र वक्री और सूर्य- शुक्र- बुध ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच बुध अशुभ, पांच गुरु उत्तम हैं। कृ. एकम बुधवारी खण्ड वृष्टि दुर्भिक्षकारी व महंगाई को बढ़ाएगी। जहां-तहां बिमारी फैलेगी। कृतिका का सूर्य तांत्रिकों, अग्निहोत्री, कुम्हार, नाई, ज्योतिषी एवं व्याकरणाचार्य को कष्ट देगा। शु. एकम गुरुवारी उत्तम पैदावार करेगी। शु. १० शनिवारी वर्षा की कमी, प्रजा में शोक का वातावरण बनाऐगी। जहां-तहां अफरा-तफरी मचेगी। शुक्र मंगल शनि की युति देश में अग्नि कांड, दुर्भिक्ष, महंगाई के साथ-साथ राज विग्रह करेगा। **कृष्ण पक्ष- कृ. १ बुध**- गुरु मार्गी -रुई में मंदा आकर तेजी बने। चांदी, अलसी, सरसों, गेहूं आदि अन्न में तेजी होकर मंदा बने। तम्बाकू में मंदा आएगा। **कृ. २ गुरु** - मिथुन में शुक्र- रुई, बारदाना, सिंगदाना, कपास, सूत, कपड़ा, तेलबाना में मंदा। चांदी में घट-बढ़ होगी। **कृ. ४ शनि**-आर्द्रा में मंगल- नमक व सभी क्षारों में मंदा। रुई, सूत, कपास, अलसी, अरण्डी, सरसों, तिल, तेल, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न में तेजी आएगी। **कृ. ५ रवि**-अश्विनी मेष में बुध- पशु, मोती, तिल में मंदा आकर तेज। गुड़, शक्कर, रुई, सूत, सोना आदि में मंदा। सभी अनाज व दालों और दूध, घी में तेजी बनेगी। **कृ. ६ सोम**-कृतिका सूर्य- सफेद पदार्थ, जौ, चावल, गेहूं, मूंग, मोठ, राई, सरसों, सोना, चांदी आदि में तेजी बने। तांत्रिक, अग्निहोत्री, कुम्हार, नाई, ज्योतिषी, व्याकरणाचार्य को कष्ट होगा। **कृ. ११ शुक्र** - सूर्य वृष में चौपाए पशु- हाथी, घोड़ा, ऊंट, मोटरगाड़ी, रुई, सूत, कपास, सोना आदि तेज। चांदी में घट-बढ़ चले। **कृ. १३ सोम**- तिथि वृद्धि शुक्र वक्री- धान्य पदार्थ, रुई, गेहूं, चना आदि में मंदा। तेल, तिल, घी, सरसों, चांदी शेयर आदि में तेजी बनेगी। **कृ. ३० बुध**- अन्नादि वस्तु मंदी रहेगी। **शुक्ल पक्ष-शु. १ बुध**- चन्द्रदर्शन- रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी घट-बढ़कर मंदी रहे। तेल, तिल, सरसों, कपड़ा, चारा, घास, उड़द, मूंग आदि अन्नों में तेजी बनेगी। जहां-तहां उपद्रव होंगे। **शु. ३ शनि**- भरणी में बुध- सभी प्रकार के अनाजों में घट-बढ़ चलेगी, देश में जहां-तहां आपसी झगड़े बढ़ें और विग्रह फैलेगा। **शु. ५ सोम**-रोहिणी में सूर्य- चावल आदि सभी धान्य, अलसी, सरसों, राई, दाख, गुड़, खाण्ड, सुपारी, जूट, सभी तिलहनों में जोरदार तेजी। चांदी में मंदा। सेठ, साहूकार, योगी, कृषक, जलचरों को कष्ट होगा। **शु. ९ शुक्र**- वक्री शुक्र, पुनर्वसु में मंगल-घास, चारा में अच्छी तेजी। तिल, तेल, सरसों, रुई, कपास, चांदी, नमक, क्षार पदार्थ तेज होंगे। चौपाए पशु विशेषकर भैंसों में बिमारी फैलेगी। **शु. १२ सोम**-कृतिका में बुध-वर्षा कम, पैदावार कम, जहां-तहां झगड़े फैलें। चांदी मंदी, रुई तेज, अन्न में घट-बढ़ होगी। **शु. १४ बुध**-वृष में बुध-रुई में मंदी बनकर तेज हो। तेल, सूत, कपास, मटर, गेहूं, चना आदि में तेजी। जहां-तहां अग्नि कांड व झगड़ों से प्रजा में भय बने। **शु. १५ गुरु**- अन्नादि पदार्थों में मंदा आऐगा।

विशेष योग

ज्येष्ठ बदी एकम पड़ै, जब कभी बुध।
संक्रामण रोगों का, रहे गर्म बाजार॥
वृष राशि के रवि करै, सुख सम्पदा सुकाल।
दूध, दही, घी में रहे महंगाई की चाल॥
दुतिया, तृतीया जेठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष।
वर्षे तो कर्षे नहीं, दरसै दुःख दुर्भिक्ष॥
जेठ दशहरा शनैश्चर, भयकारी भय मास।
प्रजा शोक, जलरोक से, हो गोकल को नास॥
शुक्र, भौम, शनि जिस समय होवे इकठौर।
अग्नि कांड, दुर्भिक्ष, विग्रह, महंगाई का जौर॥

अथ आषाढ़ मास फल विचार

मास में पांच शुक्र हैं। कृष्ण पक्ष में तिथिक्षय, शुक्ल पक्ष में तिथि की वृद्धि होकर घटी है। मावस गुरु की, चन्द्रदर्शन ४५ मु. शनि का, पूर्णिमा शुक्र की, संक्रांति मिथुन ४५ मु. सोम की भूखी बैठी है। शुक्र पश्चिम में अस्त, पूर्व में उदय, बुधास्त पूर्व में पश्चिम में उदय, शनि अस्त, शुक्रमार्गी हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध ने राशि परिवर्तन किया है। कृ. २ व ९ शुक्रवारी प्रजा को सुख देंगे। पांच शुक्र भी श्रेष्ठ हैं। कृ. १४ को रोहिणी राजा-प्रजा दोनों को कष्ट देगा। सभी गल्ला तेज करेगा। कर्क का मंगल २ मास सभी धान्य में तेजी रखेगा। सूर्य के पीछे मंगल होने से वर्षा की खेंच से प्रजा में व्याकुलता बनेगी। **कृष्ण पक्ष-कृ. २ शुक्र**-पड़वा का क्षय-बहुत सी जरूरी वस्तुओं में मंदा बनाएगी। **कृ. ३ शनि**-शुक्रास्त पश्चिम-रुई, सूत, कपास, घी, तेल, अलसी, अरण्डी, बिनौला, सफेद वस्तुओं में मंदा, पर चांदी में तेजी होगी। पशुओं में बिमारी, प्रजा को कष्ट। गुजरात कर्नाटक आदि प्रदेशों में फसलों को नुकसान हो, वर्षा हो। **कृ. ५ सोम**-मृग. में सूर्य, रो. में बुध, बुधास्त पूर्व में - जलोत्पन्न पदार्थ, नारियल सभी प्रकार के फल, रुई, सूत, रेशमी वस्त्र, चन्दन, कपूर, सोना, चांदी, कस्तूरी आदि में तेजी। रुई, चांदी में घट-बढ़ से मंदा। पशुओं में बिमारी फैले, तेज वायु के साथ वर्षा भी हो। **कृ. ७ बुध**-वक्री रोहिणी में शुक्र- सोना, तांबा, जस्ता, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा। कहीं उपद्रव भी हो। **कृ. ११ रवि**- मृगशिर में बुध- सभी अन्न, सरसों, अलसी, बिनौला तेलादि में मंदा। रुई आदि में तेजी बनेगी। **कृ. १२ सोम**- संक्रांति मिथुन, कर्क में मंगल, शुक्रोदय पूर्व में-रुई, सूत, सोना, चांदी, चावल, गेहूं, चना, सरसों, तांबा, पीतल, जस्ता, मिर्च, सुपारी, घी, तेल आदि वस्तुओं में तेजी। गर्मी जोरदार पड़ेगी। संसार में भारी तनाव बढ़ेगा। कहीं खून भी बह सकता है। **कृ. १३ मंगल**-पुनर्वसु में शनि-सभी अनाज, रुई, पदार्थों में तेजी। तिल तेल, सरसों, तिलहन पदार्थ मंदे। पंजाब, सिन्ध आदि प्रदेशों में प्रजा को बिमारी से कष्ट हो। **कृ. ३० गुरु**- आज मृगशिर नक्षत्र बहुत सी वस्तुओं में मंदी करेगा। **शुक्ल पक्ष- शु. २ शनि**- चन्द्रदर्शन, पुष्य में मंगल-अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सूत, कपड़ा, सोना, चांदी, तेल, रुई में तेजी बनेगी। सोना-चांदी में घट-बढ़ चले। आपसी तनाव में वृद्धि हो। जहां-तहां नये-नये उपद्रव व अग्नि कांड से प्रजा में भय बने। **शु. २ रवि**-सूर्य बुध आर्द्रा में, शनि अस्त-व्यापारिक वस्तुओं में दोतरफा लाईन बनेगी। घट-बढ़ अधिक हो। वकीलों व प्रजा को कष्ट। आपसी द्वेष बढ़ेगा। धान्य सम्पदा को नुकसान हो। सोना, शेयर, रुई में मंदा बने। **शु. ८ शनि**- पुनर्वसु में बुध-रुई, सूत, कपास, सण में मदी बनेगी। **शु. ११ मंगल**- शुक्र मार्गी-रुई, सोना, चांदी, मंदी होकर तेज। घी, अन्न, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, रुई में मंदी का योग है। एकादशी तेजीकारक है, अतः रुख देखकर कार्य करें। **शु. १२ बुध**-बुधोदय पश्चिम-रुई, चांदी, कपास में मंदा। चांदी, चौखा, घी, तेल, अरण्डी, सरसों, सभी अन्न में तेजी आवेगी। **शु. १४ गुरु**-कर्क में बुध-रुई, कपड़ा, अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में मंदा। चांदी में घट-बढ़। सरसों, मूंगफली तेल, गुड़, दूध आदि रस पदार्थ में तेजी बनेगी। प्रजा को कष्ट होगा।

विशेष योग

आषाढ बदी दूज नौमी, जब शुक्र की आय।
तभी पैदावार उत्तम हो, प्रजा आनंद मनाय॥
आषाढ़ बदी चौदस दिन, होय रोहिणी योग।
करफ्यू अरु कंट्रोल से, दुःखी रहें सब लोग॥
कर्क राशि में भौम का, जब होता है वास।
गेहूं, गल्ला, धान्य, सब तेज रहे दो मास॥
राहु से तीसरे स्थान, क्रूर ग्रह सुखकार।
पंचमी बुध आषाढ़ की, सुखी रहे संसार॥

अथ प्रथम श्रावण मास फल विचार

मास में पांच शनि, कृष्ण पक्ष में तिथि घट कर बढ़ी है। शुक्ला में तिथि क्षय हुआ है। सं. कर्क शुक्रवारी १५ मु. उठी धापी है। मावस पुनों शनि की, चन्द्रदर्शन ३० मु. रवि का है। शनि उदय, मंगल अस्त हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास के पांच शनि, प्रजा को बिमारी देंगे। दवाईयों की कीमतें बढ़ेंगी। कृ. १२ को रोहिणी, कार्तिक सुदी ११ को वर्षा करेगा। रवि को पुष्य देश में धन-सम्पदा की कमी लाऐगा। मंगल अस्त अन्न नाश करता है। जलयान, नाविकों को कष्ट होगा। कृ. ९ शनिवारी प्रजा को संताप देगी। किसी देश-प्रदेश का मंत्रीमंडल आगे गंगास्नान तक भंग होगा। प्रजा को पीड़ा व पशुओं में क्षय रोग होगा। **कृष्ण पक्ष- कृ. १ शनि**-पुष्य में बुध-सभी अन्न, सोना, चांदी, कपड़ा, सूत, मूंगा, मोती आदि धातु में मंदा। रुई में घट-बढ़ से मंदी। प्रजा में भय व चिन्ता बनेगी। **कृ. ३ सोम**-पुनर्वसु में सूर्य-उड़द, मूंग, मोठ, चावल, मसूर, नमक, लाख, नील, माजूफल, कपूर, लौंग, नारियल, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी। सेवक-सेविकाओं को कष्ट झेलना होगा। **कृ. ४ मंगल**-जरूरी वस्तुओं में मंदा बनेगा। गेहूं, जौ, चना आदि अन्न में **कृ. ९ शनि**-ऽश्लेषा में मंगल-रुई, चांदी मंदी। तेजी। सर्प, टिड्डी आदि कीटों से लोगों को कष्ट होगा। **कृ. १० रवि**-ऽश्लेषा में बुध-गुड़, सरसों, खाण्ड, तेल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी में तेजी आएगी। **कृ. ११ मंगल**-तिथि वृद्धि बहुत सी वस्तुओं में मंदा लाऐगी। **कृ. १४ शुक्र**-कर्क में सूर्य-अगर आज वर्षा हो तो दक्षिण के प्रदेशों में झगड़ा बनेगा। चांदी, नारियल, तेल, तिल, मजीठ आदि वस्तुओं में मंदा आएगा। **शुक्ल पक्ष- शु. १ रवि**-चन्द्रदर्शन-अन्न, चांदी, सोना, सरसों आदि तेज। रुई में घट-बढ़ से मंदी बने। प्रजा बिमार रहे। कहीं झगड़े भी बनेंगे। **शु. २ सोम**-पुष्य में सूर्य-तिल तेल, गुड़, ज्वार, सुपारी, सोंठ, मोम, हींग, हल्दी, जूट, वस्त्र, शीसा, सोना, चांदी, नारियल में तेजी। रुई तेज होकर मंदी रहे। साधु-संतों, नाविकों को कष्ट उठाना पड़ेगा। **शु. ३ मंगल**-मघा-सिंह में बुध-सोना, तांबा, पीतल, रुई, सूत, कपड़ा, कपूर, खाण्ड आदि में तेजी। ऊन, गेहूं, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों आदि में मंदी आकर तेज हो। **शु. ४ बुध**-मृगशिर में बुध-गेहूं, चना, मूंग, मोठ, चना, घी आदि में मंदा। गुड़, शक्कर, चावल, खाण्ड आदि में तेजी। प्रजा को कष्ट झेलना पड़ेगा। **शु. ९ सोम**-शनि उदय-रुई में मंदी आकर तेजी। सभी तिलहन मंदे। लोहा, जस्ता, सीसा, काली वस्तु, फर्नीचर, लकड़ी, रस, लाल वस्तु, लोहा आदि में तेजी बनेगी। **शु. १३ शुक्र**-चतुर्दशी का क्षय-बहुत सी जरूरी वस्तुओं में तेजी करेगी। **शु. १५** -पूर्णि. मघा सिंह में मंगल, मिथुन में शुक्र-सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु, लाल पदार्थ, अलसी, सरसों, गुड़, शक्कर, रुई, अरण्डी आदि में तेजी। बारदाना, सिंगदाना, रुई, सूत, कपास में मन्दा बनेगा।

विशेष योग

नौमी सावन बदी में, शनिवारी संताप।
मंत्रीमंडल भंग हो, कार्तिक आपै आप॥
सावन साते शनैश्चरी, पृथ्वी हो जलपूर।
चौदस आर्द्रा युक्त, अन्न संग्रह करो जरूर॥
जब जब बुध बृहस्पति, मिल बैठे इक गेह।
तबही संसार में, बरसै नहीं है मेह॥
बुध के घर में शनि ग्रह, जब कभी उदय हो।
प्रजा पीड़ित धान्य महंगा, पशुओं का क्षय हो॥

अथ द्वितीय श्रावण मास फल विचार

मास में पांच रवि पांच सोम हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि शुक्ला में क्षय हुआ है। मावस पूर्णिमा व संक्रांति सिंह सोम की ३० मु. धापी उठी है। चन्द्रदर्शन ३० मु. मंगल का है। बुध वक्री पश्चिम अस्त, प्लूटो मार्गी, सूर्य-गुरु ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच रवि-सोम १० दिन पीछे अन्न, सफेद वस्तु, तेल, तिल, काली वस्तु, मूंग, गोला आदि तेज। पशुओं को पीड़ा व आंखों की बिमारी फैलेगी। कन्या का गुरु बहुत सी वस्तुओं में मंदी लाएगा। इन्हें संग्रह करो। आगे लाभ अवश्य मिलेगा। शुक्ल तिथि क्षय आगे कार्तिक तक छत्र भंग का योग दर्शा रही है। शुक्र शनि चन्द्र की युति शुभ सुभिक्षकारी है, पर सिंह पर रवि शशि मंगल बुध गुरु की युति नाशकर्ता, दुर्भिक्षकारी है। पूनों को श्रवण नक्षत्र का अभाव अगली पैदावार कम होगी। **कृष्ण पक्ष- कृ. २ सोम**-ऽश्लेषा में सूर्य-अलसी, तिल, तेल, गुड़, शेयर, नील, ज्वार, अरण्डी, मिर्च, सोना, चांदी, बिनौला आदि में तेजी। ईशान कोण के प्रदेशों में उपद्रव हो। **कृ. ३ मंगल**-पू.फा. में बुध-सभी प्रकार के अनाज में मंदा। किसी स्थान विशेष पर झगड़ा होने से प्रजा में भय बने। **कृ. ८ रवि**-आर्द्रा में शुक्र-सभी प्रकार का अन्न मंदा। तेज हवा के साथ वर्षा हो। **कृ. १० मंगल**-वक्री बुध-रुई तेज होकर मंदी। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला, गेहूं, जौ, चनादि अन्न, तांबा, लोहा, पीतल, जस्ता आदि धातु में तेजी बनेगी। **कृ. १३ शुक्र**-उ.फा. में गुरु-रुई आदि में पहले तेजी, पीछे मंदा। सभी प्रकार का अन्न मंदा, पैदावार भी उत्तम रहे। **कृ. ३० रवि**-वक्री मघा बुध-गेहूं, जौ, चना, सूत, कपास, कपड़ा, बारदाना आदि में तेजी बने। वर्षा कम हो। **कृ. ३० सोम**-संक्रांति सिंह-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी, अरण्डी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, राई, सोना, चांदी, शेयर आदि में तेजी बने। **शुक्ल पक्ष-शु. १ मंगल**-चन्द्रदर्शन-अन्न, सोना, चांदी में घट-बढ़। गुड़, खाण्ड, तेल, कपास, सरसों आदि में तेजी। **शु. ५ शनि**-पू.फा. में मंगल-देश में जहां-तहां बिमारी का प्रकोप बढ़े, वर्षा कम। सरसों, तेल, तिल, गुड़, खाण्ड, नमक, लोहा, मूंगफली, अरण्डी, घी आदि में तेजी बने। **शु. ६ रवि**-पुन. में शुक्र-सोना, चांदी, रुई, कपास में मंदा। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर आदि में तेजी। किसी महान सपूत का देहांत आगे गंगास्नान तक संभव है या सत्ता संघर्ष चलकर सत्ता परिवर्तन होगा। प्रजा में भय बने। **शु. १२ शुक्र**-कन्या में गुरु-मजीठ, नारियल में घटबढ़ हो। सरसों, अलसी, तेल, घी, रस पदार्थ, गुड़ आदि में मंदा। इस मंदी में संग्रह करो। अवश्य आगे लाभ मिलेगा। सोना, सुपारी तेज। किराने की कई वस्तु के भाव में मंदा रहेगा। उनको संग्रह करो नफा अवश्य मिलेगा। **शु. १५ सोम**-पू.फा. में सूर्य-सोना, चांदी, घी, तेल, अरण्डी, सुपारी, अफीम, जूट, रुई, सूत, कपास, गेहूं, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे।

विशेष योग

सावन बदी एकादशी, रोहिणी सवत जान।
मृगशिर में दुर्भिक्ष का, सब लक्षण अनुमान॥
शुक्ल पक्ष सावन कभी, कोई तिथि का नाश।
छत्र भग का योग है, आगे कार्तिक मास॥
शुक्र शनिश्चर साथ हो, आगे पीछे चन्द्र।
सुख, सुभिक्ष, धन धान्यमय, पृथ्वी पर आनंद॥
रवि, शशि, कुंज, बुध,गुरु मिले सिंह पर पांच।
भूमण्डल होता तभी, दुःख का अभिनय मंच॥

अथ भाद्रपद मास फल विचार

मास में पांच मंगल, मावस व पुनों मंगल की, चन्द्रदर्शन ३० मु. व संक्रांति कन्या गुरुवारी ३० मु. उठी धापी है। कृष्ण पक्ष में तिथि घटकर वृद्धि हुई है। शुक्ल में तिथि क्षय हुआ है। बुधोदयास्त पूर्व में व मार्गी, बृहस्पति अस्त हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि ने राशि परिवर्तन किया है। पांच मंगल मास में प्रजा को बिमार करेंगे। बहुत सी वस्तुओं में तेजी बनेगी। कृ. पड़वा का क्षय किसी गणमान्य व्यक्ति का साथ खत्म करे। भौमवती अमावस प्रजा में उत्पात मचाऐंगे। किसी प्रांत की सरकार में परिवर्तन हो। शु. ४ शनिवारी भयंकर तेजी करे। शु. ६ को अनुराधा देश में हानि करे। सिंह में चार ग्रह प्रजा की नैतिकता पर चोट करेगी। **कृष्ण पक्ष- कृ. २ मंगल**- बुधोदय पूर्व-चांदी घटबढ़ से तेज। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तिल तेल, सरसों, मिर्च के भाव बढ़ेंगे। **कृ. ३ बुध**-कर्क शुक्र-घी, तेल, गोला, गुड़, खाण्ड, शक्कर सभी रस पदार्थ तेज। अनाजों में मंदा व पैदावार उत्तम रहेगी। **कृ. ४ गुरु**-बुध मार्गी-रुई, सूत, कपास, जस्ता, पीतल में मंदी आकर तेजी बने। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेलादि में मंदा रहेगा। **कृ. ६ शनि**-पुष्य में शुक्र-सभी अन्न, रुई, सूत, कपास, रेशमी वस्त्र, लाख, पारा, हींग आदि में मंदा बने। **कृ. ७ रवि**-कर्क में शनि-रुई, सूत, कपास में अच्छी तेजी बनेगी। प्रजा रोगी, प्राकृतिक आपदाओं से देश विदेश में भारी नुकसान, आपसी द्वेष बढ़े। कई प्रांतों की सरकार भंग हो। **कृ. ९ बुध**-गुरु अस्त-रुई, अन्न, सरसों, तेल, तिल आदि में मंदा। चांदी में तेजी। देश-विदेश में शांति वार्ता चले। **कृ. १२ शनि**-देश के किन्हीं भाग पर उत्पात मचे। पशुओं को पीड़ा, वर्षा कम। गुड़ ,खाण्ड, सरसों आदि में तेजी बने। **कृ. १४ सोम**-उ.फा. में सूर्य-ज्वार, जौ, गुड़, चीनी, जूट, कपास, हल्दी, हींग, हरड़, क्षार पदार्थ, कत्था, सोना, चांदी, लोहा, सुपारी आदि में तेजी बने। **कृ. ३० मंगल**-किसी प्रांत की सरकार की घण्टी बजे। सत्ता संघर्ष बढ़े। उत्पात से प्रजा में भय बने। सभी प्रकार का अन्न तेज हो। **शुक्ल पक्ष- शु. १ बुध**-पू.फा.में बुध-सभी अनाजों में मंदा, जहां-तहां युद्ध का वातावरण बने, प्रजा में भय फैले। **शु. २ गुरु**-संक्रांति कन्या-कन्या में मंगल, चन्द्रदर्शन-ऽश्लेषा में शुक्र-सरसों, अरण्डी, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, शेयर आदि

में मंदा। बहुत सी वस्तुओं में घट-बढ़ हो। मजीठ, माल किराना, मेवा, लाल वस्तु, नारियल, सुपारी आदि में तेजी आएगी। नैऋत्य दिशा के प्रांतों में उग्रवाद की कोई बड़ी घटना घटे। **शु. ६ सोम**-बुधास्त पूर्व में-रुई, सूत, कपास घट-बढ़ से मंदी। सोना, अलसी, गेहूं आदि में तेजी। चोरी आदि उपद्रव से आम जन परेशान रहेगा। **शु. ८ बुध**-सभी जरूरी वस्तुओं में तेजी बनेगी। **शु. १० गुरु**-उ.फा. में बुध-रुई, सूत, कपास, चांदी में घट-बढ़ से मंदी। मसूर, उड़द, तेलादि पदार्थ तेज हो। **शु. १२ शनि**-कन्या में बुध-सोना, खाण्ड, शक्कर, गुड़, गेहूं, जौ, चना, पीतल आदि धातु तेज। चांदी, सरसों आदि में मंदा रहे। **शु. १३ रवि**-हस्त में सूर्य-कपड़ा, गेहूं, सरसों, चना, गेहूं, गुड़, खाण्ड, हल्दी, हींग, नमक आदि में तेजी। **शु. १५ मंगल**-मघा सिंह में मंगल-सोना आदि सभी लाल वस्तु, मिर्च, तेल, मूंगफली, सरसों, तांबा, पीतल, गुंवार, बाजरा आदि में तेजी। रुई में मंदा रहेगा।

विशेष योग

शुक्र-शनि साथ में, आगे पीछे चन्द्र।
सुख, सुभिक्ष, धन-धान्यमय पृथ्वी पे आनंद॥
चार ग्रहों का बना, एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से, दुःखी रहें सब लोग॥
भादो की छट चांदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरों होय॥
कृष्ण पक्ष पानी गिरे, शुक्ल में नहीं आश।
भादो मावस वार भौम, युद्ध भय नाश॥

अथ आश्विन मास फल विचार

मास में पांच बुध पांच गुरु हैं। मावस पुनों गुरु की, चन्द्रदर्शन १५ मु. शुक्र का. सं. तुला शनिवारी ३० मु. उठी धापी है। नेपच्यून मार्गी, गुरु उदय, बुधोदय पश्चिम में। सूर्य, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल में क्षय- प्रजा के लिए शुभ नहीं। पांच बुध गुरु उत्तम हैं। गेहूं, चना, गोला, सूत, रसकस तेज होगा। कृ. १ बुध-सभी अनाजों को तेज करेगा। कृ. ५ रविवार- घी आदि में मंदा करे। बदी १३ से अन्न मंदा हो पर तुला का सूर्य तेज करेगा। शु. ३ शनिवारी- सभी धान्य तेज। देश में जहां-जहां उपद्रव फैलेंगे। जन हानि हो, प्रजा में भय बने। **कृष्ण पक्ष- कृ. २ गुरु**-हस्त में बुध-सभी अनाजों में मंदा और वस्तुओं में घटबढ़ होगी। **कृ.४ शनि**-हस्त में मंगल-अन्न, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक में तेजी। पैदावार कम रहे। **कृ. ५ रवि**-गुरु उदय-रुई, सूत, कपास, सोना आदि में मंदा। चांदी में तेजी। छोटे बच्चों में बिमारी फैले। **कृ. ९ शुक्र**-चित्रा में बुध-रुई, सूत, कपास में घट-बढ़ से तेज। अन्न तेज, चांदी में घट-बढ़ होगी। विद्वानों को कष्ट उठाना पड़ेगा। **कृ. १० शनि**-पू.फा. में शुक्र-घी, गुंवार, बाजरा, जौ, चना, मूंग, उड़द आदि में मंदी आवे। **कृ. ११ रवि**-चित्रा में सूर्य-गेहूं, चना, कपास, अरहर, सूत, केसर, लाल कपड़ा, चांदी, गुड़, रुई आदि में तेजी। ज्वरादि रोगों से प्रजा को कष्ट होगा। **कृ. १३ मंगल**-तुला में बुध-सभी प्रकार का अन्न, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनौला, मिर्च आदि में मे मंदा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, अफीम, बारदाना में तेजी बने। देश में जहां-तहां झगड़ों-विग्रह से प्रजा में भय बने। **कृ. १४ बुध**-हस्त में गुरु-गोला, खाण्ड, घी, तेल, मोती, मूंगा, चांदी, रुई, हल्दी, सभी अन्न में अच्छी मंदी बने। **नोट**- इस पक्ष की तिथि वृद्धि आगे मार्गशीर्ष में सभी प्रकार का गल्ला तेज रखेगी। **शुक्ल पक्ष- शु. १ शुक्र**-चन्द्रदर्शन-गेहूं, चना, चावल, सरसों, तेल, तिल, ऊन, लौंग आदि में अच्छी घट-बढ़ चलेगी। **शु. ३ शनि**-तुला में सूर्य, स्वाती में बुध-सोना, तांबा, अलसी, आवला, सरसों, नारियल, सुपारी आदि में तेजी। पशुओं में रोग फैले। जहां-तहां उपद्रव अग्निकांड हो। गणमान्य लोगों को कष्ट होगा। **शु. ८ गुरु**-उ.फा. में शुक्र-सोना, चांदी में घट-बढ़। सभी धान्यों व रुई में तेजी बने, फसल में नुकसान हो। **कृ. १० शनि**-स्वाती में सूर्य, चित्रा में मंगल, कन्या में शुक्र-सभी प्रकार का अन्न, गेहूं, जौ, चावल, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र, चना, मटर, पीतल, तांबा आदि में अच्छी तेजी बनेगी। फसल में नुकसान हो। बिमारी फैले। **शु. ११ रवि**-विशाखा में बुध-सभी अन्न व गुड़ादि पदार्थों में मंदा बने। **शु.१३ मंगल**-बुधोदय पश्चिम में- रुई, चांदी मंदी। घी, तेल, अरण्डी, सरसों, अलसी में तेजी। कहीं भूकम्प से नुकसान होगा। **शु. १४ बुध**-पुष्य में शनि-सभी अनाजों में अच्छी मंदी, पैदावार उत्तम। पश्चिम देशों व नेताओं में आपसी तनाव बढ़ेगा। **शु. १५ गुरु**-ग्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण-देश में चौरियों की वारदात बढ़ेगी। उज्जैन, कावेरी, नर्मदा आदि क्षेत्र की जनता को कष्ट होगा।

विशेष योग

आश्विन कृष्ण पंचमी, जो आवे रविवार।
माघ मास में अवश्य, घी का तेज बाजार॥
बदी बढ़े सुदी घटे, तिथ क्रूर वार संक्रांति।
छत्र भंग अरू अवर्षण, पीड़ित प्रजा नितान्त॥
सुर गुरु मंगल शुक्र का, एक नखत पर वास।
अन्न भाव मंदा रहे, लाभ तीसरे मास॥
आश्विन शुक्ल चतुर्थी, यदि होवे रविवार।
घी बेचो अन्न संग्रहो, आगे लाभ विचार॥
आश्विन पूनम चांद ग्रस, चावल अकरा जोय।
रुई कपास कपूर घृत, चांदी तम होय॥

अथ कार्तिक मास फल विचार

मास में पांच शुक्र, मावस पूनों दोनों शुक्र की, चन्द्रदर्शन ३० मु. शनि का, संक्रांति वृश्चिक ३०मु. बैठी धापी सोम की है। शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय हुआ है। हर्षल वक्री, मंगल उदय, शनि वक्री हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में ५ शुक्र श्रेष्ठ हैं। पर प्रजा बिमार रहेगी। शु. एकम शनिवारी गुड़, तेल, सरसों में अच्छी तेजी करेगी। गुरु शुक्र की युक्ति संसार में तनाव बढ़ाएगी, वर्षा भी होगी। तुला में चार ग्रहों की युक्ति उत्तम नहीं। पंचमी का क्षय सभी अनाजों में तेजी करेगी। **कृष्ण पक्ष-कृ. ३ रवि**-वृश्चिक में बुध-सोना, पशु, तेज। घी, तेल, अन्न, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, गुवार, तेल, सरसों, अलसी में मंदा। रुई में अच्छी घट-बढ़ होगी। **कृ. ४ सोम**-हस्त में शुक्र-रुई, चांदी में मंदा। अन्न, गुड़, खाण्ड, सोना आदि में घट-बढ़। प्रजा बिमार रहे। **कृ. ५ मंगल**-तुला में मंगल, अनुराधा में बुध-अन्न, गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर, गुंवार, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, बिनौला, रस पदार्थ, सभी धातु, तांबा, पीतल आदि में तेजी बनेगी। **कृ. ७ गुरु**-मंगल उदय-व्यापारियों को पीड़ा होगी, अन्नादि वस्तु मंदी। सरकारी नीति परिवर्तन से प्रजा में विरोध, देश में एकाएक चौरियों की घटनाएं बढ़ेगी। **कृ. ८ शुक्र**-विशाखा में सूर्य-चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, चना, सरसों, तिल आदि में तेजी। देश के दक्षिण पूर्व में उपद्रव हो। **कृ. ११ सोम**-शनि वक्री-रुई मंदी या तेज होकर मंदी। सूत, कपड़ा, मंदा। सोना, चांदी, मानक, मोती, सुपारी, अन्न, पशु आदि में तेजी बने। उत्तर दिशा में उत्पात व झगड़े होंगे। **ध्यान दें**- इस समय जो वस्तु मंदी या तेज हुई वह वस्तु शनि मार्गी के समय निश्चित विपरीत भाव बनेंगे। **कृ. ३० शुक्र**-स्वाती में मंगल, ज्येष्ठा में बुध, चित्रा में शुक्र-रुई, कपास, कपड़ा, धातु, पीतल आदि धातु, गुड़, शक्कर सभी अनाजों में तेजी। चांदी में घट-बढ़ होगी। पशुओं में बिमारी फैले। देश में कहीं झगड़े का वातावरण तैयार होगा। **शुक्ल पक्ष- शु. १ शनि**-चन्द्रदर्शन-अलसी, सरसों, लोहा आदि धातु, सूत, कपड़ा, सोना, चांदी, सभी अन्न व रस पदार्थों में मंदा आएगा। **शु. ३ सोम**-संक्रांति वृश्चिक- इस समय सभी प्रकार की लाल वस्तु मंदी मिले तो अवश्य संग्रह करो। आगे निश्चित लाभ मिलेगा। चांदी, तांबा, पीतल, जस्त, ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी। **शु.४ मंगल**-सभी जरूरी वस्तुओं के भाव में वृद्धि होगी। **शु. ६ बुध**-तुला में शुक्र-रुई, चांदी तेज होकर मंदी। गुड़, शक्कर, सोना आदि में मामूली तेजी। अन्न में मंदा। प्रजा में आपसी विरोध बढ़ेगा। **शु. ७ गुरु**-वक्री पुन. में शनि-रुई व सभी अनाजों में तेजी। सभी तिलहनों में मंदी रहेगी। पंजाब, सौराष्ट्र, सिन्ध आदि प्रांतों की प्रजा पर वज्रपात (कष्ट) होगा। **शु. ८ शुक्र**-चांदी, चावल, सूत, अफीम, गेहूं, जौ, चना, तेज। सोना मंदा रहेगा। भक्तों को कष्ट होगा। **शु. १२ मंगल**-स्वाती में शुक्र-सभी अनाज मंदे। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों तेलादि वस्तुओं में तेजी बनेगी। प्रजा में असंतोष बढ़ेगा। **शु. १३ बुध**-मूलधन में बुध-चांदी में मंदा। रुई, सूत, कपास में अच्छी घट-बढ़ होगी। किसी नये कानून को लेकर प्रजा व सरकार आमने सामने हो। बच्चों को इस समय विशेष कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

विशेष योग

कार्तिक कृष्ण पंचमी, जब ही आर्द्रा होय।
तभी वर्षा कम, चारा तेज बिकाय॥
क्रूर-क्रूर ग्रह परस्पर, जब सम ससम योग।
अनावृष्टि संसार में, भय पीड़ा रोग॥
एक जगह गुरु-शुक्र हो, बने युद्ध आसार।
अनावृष्टि अतिवृष्टि से, दुःखी रहे संसार॥
चार ग्रहों का बना, एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से, दुःखी रहें सब लोग॥

अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार

मास में पांच शनि पांच रवि हैं। मावस शनिवारी पूनों रविवारी है। चन्द्रदर्शन ३० मु. सोम का, सं.धन की बुधवारी ३० मु. बैठी भूखी है। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। बुध वक्री मार्गी पश्चिम अस्त, पूर्व में उदय हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच

शनि-रवि दोनों नेष्ट हैं। देश में उग्रवाद उपद्रव झगड़े रोग बहुत बढ़ेंगे। घी, तेल, सूत, कपास, कृष्ण पक्ष में तेज होगा। शुक्ल पक्ष में सभी धान्य पदार्थ, गल्ला आदि में अच्छी तेजी बनेगी। भूखी धन संक्रांत शुभ नहीं। मूंग, मोठ, ज्वार, बाजरा आदि रस पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी। **कृष्ण पक्ष-कृ. ३ मंगल**-वक्री बुध-रुई, सूत, कपास में तेजी होकर मंदी बने। सभी मेवा, तिलहन, गुड़, शकर आदि में तेजी। **कृ. ५ गुरु**-ज्येष्ठा सूर्य, विशाखा मंगल-रुई, सूत, कपास आदि में घट-बढ़ होगी। चावल, सरसों, वस्त्र, अफीम, सोना, चांदी, गेहूं, गुड़, शकर, पारा, लौंग आदि में तेजी और रस पदार्थों में मंदा बनेगा। **कृ. ६ शुक्र**-विशाखा में शुक्र- अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, रुई, सूत, कपास में मंदा। व्यापार में उथल-पुथल अच्छी होगी। व्यापारियों में चिन्ता बनेगी। **कृ. ८ रवि**-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी में तेजी आकर मंदा बने। शेयर, हैशियन, बारदाना में मंदा। रुई आदि वस्तुओं का संग्रह करो अवश्य नफा मिलेगा। बड़े लोगों व गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट होगा। **कृ. ९ सोम**-वक्री ज्येष्ठ वृश्चिक बुध-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूंग, गवार, चावल, चांदी, घी, पशु, सभी अन्न, तेलबाना व सोना में मंदी आवे। ढांडों में बिमारी फैले। **कृ. ११ बुध**-रुई, सूत, कपास आदि वस्तु में अच्छी तेजी निकलेगी। **कृ. १४ शनि**-वृश्चिक में शुक्र-सभी प्रकार का गल्ला, धान्य में तेजी। चांदी तेज होकर मंदी या मंदी होकर तेजी होगी। अलसी, कपास, शेयरों में घट-बढ़ चले। टिड्डी आदि कीड़ों से फसलों को भारी नुकसान, कृषकों को भारी कष्ट होगा। **शुक्ल पक्ष-शु. २ सोम**- चन्द्रदर्शन-अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़ा आदि में तेजी बने। चांदी तेज होकर मंदी रहे। **शु. ३ मंगल**-अनुराधा में शुक्र-रुई में तेजी। गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, क्षार पदार्थों में मंदा बने। पशुओं में बिमारी फैले, कहीं उपद्रव फैले, कहीं भूकम्प से हानि हो सकती है। **शु. ४ बुध**-संक्रांति धन-सभी अनाज मंदा। रुई, कपास, तिल, तेल, सोना, चांदी आदि में तेजी आवेगी। मालवा में उपद्रव भड़केगा। **शु. ५ गुरू**- वृश्चिक में मंगल, बुधोदय पूर्व में-रुई, सूत, कपास, तांबा, पीतल, जस्ता, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, लाल मिर्च आदि में तेजी। सोना में घट-बढ़ हो। नेताओं में खैंचातानी चले। राज की तरफसे प्रजा को पीड़ा हो। **शु. ८ रवि**- वक्री अनुराधा में बुध-रुई, सूत, सण, कपड़ा, सोना आदि में मंदा बने। **शु. ९ सोम**- मार्गी बुध-रस पदार्थ, बिनौला, गुड़, शकर, अरण्डी में तेजी। रुई घट-बढ़ कर तेज, प्रजा में भय बने। सभी धान्य पदार्थों में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. १० मंगल**-अनुराधा में मंगल-सभी लाल वस्तु व अनाजों में तेजी, पशु बिमार रहे। **शु. १४ शनि**- ज्येष्ठा में शुक्र- सोना, चांदी, घी, तेल, चावल आदि मंदा। अन्न एक बार तेज रहेगा।

विशेष योग

अगहन शनि पांच है, पांच रवि है लार।
रोग झगड़े जग विषै, तेजी बने अपार॥
अगहन में धनु रवि, इसका रखो ध्यान।
मूंग, मोठ, जुवार, बाजरा तेज रहे मिहान॥
कारी पंचमी मघा युक्त, करे वर्षा की हान।
एकादशी बुध रुई, सूत कपड़ा तेज बखान॥
बुधवार को जब कभी, हो सूर्य संक्रांत।
रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड अरु तिलहन तेज नितांत॥

अथ पौष मास फल विचार

मास में पांच सोम पांच मंगल हैं। मावस सोम की, पूनों व चन्द्रदर्शन मंगल का ३० मु. है। सं. मकर गुरुवारी १५ मु. बैठी धापी है। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। शुक्ल में घटकर बढ़ी है। मास में पांच सोम उत्तम, पांच मंगल नेष्ट, प्रजा को बिमार रखेंगे। मास में रुई, चांदी सभी प्रकार का गल्ला, सफेद वस्तु, लाल वस्तु निश्चय से तेज होगी। मूंग, मोठ, जुवार, बाजरा में मंदा आएगा। जहां-तहां झगड़े बनेंगे, रोग फैले। भैसों में अज्ञात बिमारी फैले। इस मास घी का संग्रह करो, आगे लाभ मिलेगा। **कृष्ण पक्ष- कृ. २ मंगल**-तिल, तेल, गुग्गल, हल्दी, कपूर, ऊनी वस्त्र, जूट, चांदी, सरसों, खाण्ड, चीनी, कपूर आदि वस्तु तेज। सर्दी भी जोरदार पड़ेगी। **कृ. ४ गुरु**-मूंग, मोठ, बाजरा, आदि में अच्छा मंदा आवेगा। **कृ. ५ शुक्र**-चित्रा में गुरु-सभी प्रकार का अन्न व चांदी में मंदी। रुई, सूत, कपास में घट-बढ़ हो। पैदावार उत्तम जहां-तहां वर्षा होगी। **कृ. ७ सोम**-प्रजा व पशुओं में बिमारी फैले। विशेषकर भैंसों पर विपदा पड़े। **कृ. ८ मंगल**-मूल धन में शुक्र-जौ, गेहूं, चना, गुड़, शकर, खाण्ड, घी, चांदी, शेयर, लोहा आदि तेज। रुई, सूत, कपास में घट-बढ़, फसलों में नुकसान हो। **कृ. ९ मूल**-धन में बुध-सोना, चांदी में कुछ मंदा। रुई, सूत, कपास में घट-बढ़ होकर तेज। बच्चे बिमार हों। राज व प्रजा में विरोधाभास देखना पड़ेगा। **कृ. १३ शनि**-घी में विशेष मंदा बने। संग्रह करो आगे विशेष लाभ मिलेगा। सभी प्रकार का गल्ला, धान्य अनाजों में तेजी बनेगी। **कृ. ३० सोम**-उ.षा. में सूर्य-ज्येष्ठा में मंगल-उड़द, मूंग, जूट, सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, बांस, सरसों, तिल तेल, चीनी, हल्दी में तेजी बने। चांदी में मंदा आवे। सोमवती अमावस मंदा करे अतः व्यापार का रुख जानकर व्यापार करें। **शुक्ल पक्ष-शु. १ मंगल**-चन्द्रदर्शन-नोट-इस पक्ष में सफेद वस्तु, चांदी, रुई अवश्य तेज होगी। **शु. २ बुध**-घी, मूंग आदि में तेजी अवश्य बनेगी। **शु. ४ गुरु**-संक्रांति मकर, वक्री मिथुन में शनि-सरसों, तिल, अलसी, तेल, गुड़, खाण्ड, शकर, उड़द, अन्न, लोहा, माल किराना में अच्छी तेजी बनेगी। बहुत सी वस्तुओं में अच्छी घट-बढ़ चलेगी। **शु. ५ शुक्र**-पू.षा. में शुक्र-उड़द, मूंग, तेल, तिल, सरसों, गुड़, शकर, नमक व क्षार पदार्थों में मंदा आएगा। **शु. ६ शनि**-पू.षा. में बुध-गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, बाजरा आदि में मंदा। गुड़, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला में तेजी आएगी। **शु. ११ गुरु**-सोना व सभी प्रकार की लाल वस्तुओं में तेजी बनेगी। नोट-यह तेजी फाल्गुन तक आ सकती है। **शु. १३ रवि**-श्रवण में सूर्य-उड़द, मूंग, जूट, सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, सोना आदि में तेजी बनेगी। **शु. १४ सोम**-उ.षा. में बुध, बुधास्त पूर्व में- रुई, चांदी में घट-बढ़ से मंदी। सोना, गेहूं, अलसी आदि में तेजी। नेता गणमान्य व्यक्ति और बच्चों को पीड़ा होगी। **शु. १५ मंगल**-सभी प्रकार के अनाजों में मंदी आएगी।

विशेष योग

पौष अमावस सोम की, पू.षा. हुआ नक्षत्र।
घर-घर बाजे बधावड़ा, सुखी रहे सर्वत्र॥
राहु, केतु, भौम, रवि, शनि से पंचम स्थान।
एके अथवा अधिक फल, दुःख दुर्भिक्ष महान॥
पौष मास में तीज या सुदी, चौथ घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग, घी, विक्रेता नट जाय॥
पौष सुदी एकादशी, जो हो कृतिका नक्षत्र।
लाल वस्तुओं में रहै, खूब लाभ सर्वत्र॥

अथ माघ मास फल विचार

मास में पांच बुध पांच गुरु हैं। मावस मंगलवारी, पूर्णिमा व चन्द्रदर्शन गुरु का ३० मु. और संक्रांति कुंभ शनिवारी ३० मु. बैठी भूखी हुई है। कृ. पक्ष में तिथि क्षय शुक्ल पक्ष में वृद्धि हुई हैं। गुरु वक्री, शुक्रास्त पूर्व में हुआ है। सूर्य, बुध, शुक्र, मंगल व प्लूटो ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच बुध गुरु दोनों उत्तम हैं। पर पश्चिम दिशा में गुजरात आदि प्रदेशों में झगड़े उत्पात से जन हानि होगी। देश-प्रदेश व संसार की राजनीति में भारी खैंचातानी मचेगी। किसी बड़े नेता का देहांत भी होगा। घी, तेल, गल्ला, अनाज आदि वस्तुएं तेज होंगी। **नोट**-ग्रह योग से अगला वर्ष अत्यंत नेष्ट हो। रुई, नारियल, सफेद वस्तु तेज होगी। आगे तीन मास अन्न, गल्ला विशेष होगा। **कृष्ण पक्ष-कृ. १ बुध**-मकर में बुध, उ.षा. में शुक्र- अलसी, सरसों, अरण्डी, रसकस, गुड़, शकर, खाण्ड में मंदा। अन्न में घट-बढ़। जहां-तहां बिमारी से प्रजा को कष्ट हों। **शु. ३ शुक्र**-मकर में शुक्र-गुड़, खाण्ड, घी, सभी अन्न में तेजी। रुई, चांदी में घट-बढ़ हो। पैदावार कम हो। **कृ. ४ शनि**-मूल धन में मंगल-रुई, सूत, कपास, घी, तेल, तेलबाना, घास, कोयला, लकड़ी, फर्नीचर, सरसों, बिनौला, अरण्डी और सभी धातुओं में तेजी बनेगी। विद्वानों व गणमान्य लोगों को कष्ट होगा। **कृ. ७ मंगल**-बर्फगिरने से फसलों को नुकसान होगा। गुड़, शकर, चावल, चना, गेहूं में तेजी बनेगी। **कृ. ८ बुध**-गुरु वक्री-रुई, जौ, चना, गेहूं, घी, दूध आदि में मंदा। चांदी तेज हो। देश में सुभिक्ष का वातावरण बने। **कृ. ११ शनि**-धनिष्ठा में सूर्य, श्रवण में शुक्र-मूंग, मसूर, नील, रुई, अलसी, तिलहन आदि वस्तुओं में तेजी। सोना चांदी में घट-बढ़। गुड़, शकर, खाण्ड, मूंग, गोला आदि में मंदी बनेगी। **कृ. १३ सोम**-मूल-धन में प्लूटो-कई एक वस्तुओं की एक नई लाईन बनेगी। **कृ. १४ मंगल**-सभी अन्न रसपदार्थ व धातुओं में तेजी बनेगी। **शुक्ल पक्ष- शु. १ बुध**-धनिष्ठा में बुध-रुई, सूत, कपास में घट-बढ़। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता और अनाज में मंदा रहेगा। **शु. २ गुरु**-रुई आदि में अवश्य मंदा आएगी। गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में घट-बढ़। चना, जौ, उड़द, अलसी, मूंग, मसूर आदि तेज होगी। **शु. ४ शनि**-संक्रांति कुंभ-गेहूं, जौ, चना, जुवार, बाजरा, मूंग, सरसों, खाण्ड आदि में मंदा। नमक, घी, तेल, मूंगफली, अरण्डी आदि में तेजी आएगी। **शु. ५ रवि**-कुंभे बुध-घी, तेल, रसकस, शकर आदि में घट-बढ़ से मंद। सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि मंदी होगी। **शु. ८ बुध**-धनिष्ठा में शुक्र-मसीन, मूंग, मोठ, सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, उड़द आदि में तेजी, गेहूं में घट-बढ़ अच्छी चलेगी। **शु. ९ गुरू**-पू.षा. में मंगल, शुक्रास्त पूर्व में, शतभिषा में बुध-सभी अन्न, सोना, चांदी, सण, घास, चारा, घी, तेल में तेजी। सभी अन्न में मंदा। देश के नेताओं में आपसी खैंचातानी बढ़े। पश्चिम में विग्रह फैले, समुद्री तूफान से जन हानि संभव है। **शु. ११ शतभिषा में सूर्य**-सरसों, चना, जूट, कपड़ा, तेल, नील, हींग, जायफल, छुवारे, हल्दी आदि में तेजी बने। **शु. १३ सोम**-कुंभ में शुक्र-रुई, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मूंग, ज्वार, बाजरा, सफेद वस्तु, रस पदार्थों में मंदी अच्छी

आएगी। शु. १५ गुरु पू.भा. बुध-अन्न व धातु में मंदा। रुई, सूत में घट-बढ़ हो। कहीं-कहीं झगड़े बनेंगे।

विशेष योग

माघ मास प्रतिपदा को, वार होय बुधवार।
तीन मास तेजी रहे, भावी वर्ष विचार॥
माघ मास चतुर्थी को, जो आवे शनिवार।
चोर अग्नि भय धान्य क्षय, अति दुर्भिक्ष विचार॥
माघ सुदी सप्तमी, मंगलवार की होय।
तो निश्चय जानो, नाज किराणों होय॥
श्वेत अष्टमी माघ की, कृतिका ऋष संयुक्त।
फ ल्गुन खोती गड़बड़े, श्रावण अन्न धन भुक्त॥
रिक्ता तिथि मावस, हुई शनिवारी संक्रांति।
दोनों योग निकम्मे, तेजी हो बहु भांति॥

अथ फाल्गुन मास फल विचार

मास में पांच शुक्र हैं। मावस गुरु की पूनों शुक्र की, चन्द्रदर्शन ३० मु. शनि का, संक्रांति मीन सोम १५ मु. बैठी धापी है। बुध वक्री मार्गी, उदयास्त पश्चिम में हुआ है। शनि मार्गी और सूर्य, बुध, मंगल, शुक्र, राहु, केतु ने राशि परिवर्तन किया है। कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय: हुआ है। मास में पांच शुक्र शुभ, राजा प्रजा दोनों सुखी रहे। कृष्ण पंचमी मंगल को घी, गेहूं, धान्य पदार्थों में तेजी करेगी। सूर्य शुक्र की युति भी सभी जरूरी वस्तुओं में तेजी करेगी। सूर्य राहु बुध शुक्र की युति और मीन का राहु, प्रजा को चैन से नहीं रहने देगा। प्रजा नाना प्रकार के उत्पातों का सामना करना पड़ेगा। आगे आने वाले समय में संसार में अस्थिर का वातावरण बनेगा और कई स्थानों पर दुर्भिक्ष पड़ेगा। **कृष्ण पक्ष-कृ. ३ रवि**-घी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी में तेजी बनेगी। **कृ.५ मंगल**-मीन में राहु-घी, गेहूं आदि धान्यों में अच्छी तेजी। रुई, सूत, कपास, बिनौला, घी, तेल, अरण्डी, सरसों आदि में तेजी। गेहूं, चना, गुड़, शक्कर मंदा रहेगा। तेज वायु चले। **कृ. ७ गुरु**-उ.फा. में बुध-चांदी में घट-बढ़ चलेगी। **कृ. ८ शुक्र**-पू.भा. में सूर्य-सोना, चांदी, गेहूं, चना, उड़द, घी, रुई, रेशम, गुग्गल, पीपल, मूल, सूत, सरसों, तिल तेल, ज्वार, बाजरा आदि में तेजी बनेगी। **कृ.९ शनि**- जरूरी वस्तुओं में मंदा बनेगा। **कृ.११ रवि** -हस्ते वक्री गुरु-गोला, खाण्ड, घी, तेल, मोती, मूंग, मानक ,चांदी, रुई, हल्दी आदि में मंदा बनेगा। **कृ. १२ सोम**-उ.षा. में मंगल-घी, गुड़ आदि में कुछ मंदा। रुई, राई, सरसों तेल, उड़द, मूंग आदि में कुछ तेजी बनेगी। **कृ. १४ बुध**-पू.भा. शुक्र-रुई, सूत, कपास [illegible]। अन्नादि में मंदा बनेगा। **कृ. ३० गुरु**-बहुत सी जरूरी वस्तुओं में [illegible] आएगा। **शुक्ल पक्ष- शु. २ शनि**-मकर में मंगल, रेवती में बुध, चन्द्रदर्शन-सोना, रुई, कपास, रसादि पदार्थ, तांबा, गुड़, खाण्ड, सभी सुगन्धित वस्तुएं, चन्दन, कस्तूरी, मिर्च, लौंग, लाल पदार्थ आदि में तेजी। तिलहन पदार्थ, अलसी, सरसों, घी, तेल में घट-बढ़ चलेगी। **शु. ७ गुरु**-उ.फा में सूर्य, मीन में शुक्र-बिनौला, कपास, अरण्डी, तेल, तिल, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मंदा। सभी रस पदार्थ, धान्य, तेल, सोना, चांदी, रुई आदि में तेजी बनेगी। **शु. १० रवि**-बुध वक्री,उ.भा में शुक्र-गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, रुई, कपास, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक, कपूर, सोना, चांदी में मंदा। रुई मंदी होकर तेज हो। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला, मूल पदार्थ तेज होंगे। **शु. ११ सोम**-बुधास्त पश्चिम, शनि मार्गी हींग, मिर्च, तेल, सरसों तेजी। सभी सफेद वस्तु मंदी। ५ दिन बाद तेज। शेयर, हैशियन, बारदाना में मंदा। रुई में विशेष लाभ। शनि वक्री के समय जो वस्तु मंदी वह अवश्य तेज और जो तेज हुई थीं उसमें मंदा आएगा। **शु. १५ शुक्र**-मीनें राहु- देश व समस्त संसार के प्राणी को आगे काफी समय तक घोर दु:ख रहेगा। कई स्थानों पर दुर्भिक्ष पड़ेगा।

विशेष योग

फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा, जो पू.फा. नक्षत्र।
सभी दोष दु:ख दूर, सुखी सुभिक्ष सर्वत्र॥
सुर्यदेव भृगुनाथ का, एक राशि पर साथ।
पकड़ा देती है फसल, महंगाई को हाथ॥
वक्री चाल चलते हुए, शनि मार्गी हो जाय।
चालू रूख व्यापार का, एक दम पलटा खाय॥
पूर्ण जब उ.फा. रहे, पूनम फाल्गुन मास।
रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड, तिलहन, धान्य विनाश॥
काली पाचै मंगल की, मीन राहु की चार।
धान्य भाव गड़बड़े, पड़े दुर्भिक्ष की मार॥

अथ चैत्र कृष्ण पक्ष फल विचार

चैत्र मास में पांच शनि, पांच रवि हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि हुई है। मावस शुक्र की, चन्द्रदर्शन १५ मु. व पूनों दोनों रवि की, संक्रांति मेष बुधवारी ३० मु. बैठी है। बुधोदय पूर्व में, बुध मार्गी और सूर्य, मंगल, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में तिथि क्षय, वृद्धि पक्षानुसार उत्तम है। पांच शनि- रवि दोनों मंत्र फलकारक हैं। पक्ष में गेहूं, जौ, चना, धातु, तांबा, पीतल, जस्त, सोना, चांदी, अफीम आदि तेज होंगे। जहां-तहां बीमारी फैलेगी। आने वाले नये सं.वि.२०६२ में अच्छे उतार-चढ़ाव देखेंगे। **कृष्ण पक्ष-कृ. १ शनि**-श्रवण में मंगल-गेहूं, जौ, चना, सभी धातु, तांबा, पीतल, जस्त, सोना, चांदी, अफीम आदि में अच्छी तेजी आएगी। देश में जहां-तहां प्रजा बीमार होगी। **कृ. २ रवि**-प्लूटो वक्री, वक्री उ.भा. में बुध-चांदी में अच्छी घट-बढ़ चले। लोगों में आपसी विद्वेष बढ़ेगा। **कृ. ६ गुरु**-रेवती में सूर्य शुक्र-कपास, सूत, रुई, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों में मंदा। मोती, रत्न, फल-फूल, नमक, अरहर, मूंग, चावल, लाख, अन्न व गन्ध पदार्थों में तेजी बनेगी। **कृ. १० सोम**-वक्री हस्ते ३ गुरु-गोला, खाण्ड, घी, मूंग, मोती, मानक, चांदी, हल्दी में मंदा आएगा। **कृ.११ मंगल**-सभी रस पदार्थ, रुई, अन्न, तिलहन बाजार में मन्दा बनेगा। **कृ. १२ बुध**-बुधोदय पूर्व-रुई तेज, चांदी घट-बढ़ से तेज, सोना मंदा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, लाल मिर्च, सरसों आदि में तेजी। वायु के साथ वर्षा हो। **कृ. ३० शुक्र**-कई एक जरूरी वस्तुओं में मन्दा बनेगा।

विशेष योग

चैत्र बदी पांचै दिन, वार हुआ बुधवार।
गेहूं अरु घी में, तेजी बारम्बार॥
श्रवण नखत पर, जब कभी हो कोई ग्रह क्रूर।
अन्न भाव महंगा रहे, गेहूं तेज जरूर॥